GST

Hindi GST - Greek Aligned

संस्करण 44.1

[hi]

कॉपीराइट और लाइसेंसिंग

Hindi GST - Greek Aligned
तारीख: 2023-09-12
संस्करण: 44.1
द्वारा प्रकाशित: BCS

unfoldingWord® Hebrew Bible
तारीख: 2022-10-11
संस्करण: 2.1.30
द्वारा प्रकाशित: unfoldingWord

unfoldingWord® Greek New Testament
तारीख: 2023-09-26
संस्करण: 0.34
द्वारा प्रकाशित: unfoldingWord

License

Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International (CC BY-SA 4.0)

This is a human-readable summary of (and not a substitute for) the full license found at http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/.

You are free to:

- **Share** — copy and redistribute the material in any medium or format
- **Adapt** — remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

Under the following conditions:

- **Attribution** — You must give appropriate credit, provide a link to the license, and indicate if changes were made. You may do so in any reasonable manner, but not in any way that suggests the licensor endorses you or your use.
- **ShareAlike** — If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.

No additional restrictions — You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

Notices:

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.

विषयसूची

रूत **4**
एज्रा **8**
नहेम्याह **19**
एस्तेर **36**
ओबद्याह **43**
योना **46**
मरकुस **49**
लूका **68**
यूहन्ना **99**
1 कुरिन्थियों **123**
2 कुरिन्थियों **139**
इफिसियों **149**
फिलिप्पियों **154**
कुलुस्सियों **158**
1 थिस्सलुनीकियों **162**
2 थिस्सलुनीकियों **166**
1 तीमुथियुस **168**
2 तीमुथियुस **172**
तीतुस **176**
फिलेमोन **179**
याकूब **180**
1 पतरस **184**
2 पतरस **188**
1 यूहन्ना **191**
2 यूहन्ना **195**
3 यूहन्ना **196**
यहूदा **197**
योगदानकर्ताओं **199**
Hindi GST - Greek Aligned योगदानकर्ताओं 199

रूत

Chapter 1

1उस समय के दौरान न्यायी लोग इस्राएल पर राज्य करते थे, वहां उस देश में अकाल पड़ा। इस्राएल देश के यहूदा क्षेत्र में बैतलहम के नगर को एक व्यक्ति ने
छोड़ दिया और कुछ समय के लिए मोआब देश में रहने के लिए चला गया। उसकी पत्नी और उसके दो बेटे उसके साथ गए। 2उस व्यक्ति का नाम एलीमेलेक
था और उसकी पत्नी का नाम नाओमी था। उसके दो बेटों के नाम महलोन और किल्योन थे। वह यहूदा के बैतलहम के एप्राती के वंश से थे। वो मोआब की भूमि
पर आये और वहां रहे। 3तब नाओमी के पति एलीमेलेक की मृत्यु हो गई, और नाओमी के साथ सिर्फ उसके दो बेटे थे जो उसके साथ थे। 4बेटों ने मोआबी
स्त्रियों से विवाह किया। एक स्त्री का नाम ओर्पा था और दूसरी स्त्री का नाम रूत था। पर जब वो उस क्षेत्र में दस वर्ष तक रह चुके थे, 5महलोन और किल्योन
भी मर गए। इसलिए फिर नाओमी अपने बेटों एवं पति के बिना अकेली रह गयी।

6एक दिन जबकि नाओमी मोआब में थी, उसने सुना कोई कह रहा है कि यहोवा ने अपने लोगों की सहायता की थी और अभी इस्राएल में बहुतायत से भोजन
है। इसलिए वह अपनी दोनों बहुओं के साथ बैतलहम लौटने को तैयार हुई। 7उन्होंने उस स्थान को छोड़ दिया जहाँ वो रह रहे थे और यहूदा के देश के लिए
वापसी यात्रा की शुरुआत करी। 8जब वो चल रहे थे, नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, “तुम दोनों को मुड़ना चाहिए और अपनी माता के घर वापस लौट
जाना चाहिए। मैं यहोवा से याचना कर रही हूँ कि वह तुम्हारे साथ वैसा ही विश्वासयोग्य रहे जैसा विश्वासयोग्य वह हमारे मरे हुए पतियों के लिए और मेरे लिए है।
9मैं यहोवा से मांग रही हूँ कि वह तुम दोनों को एक और पति पाने की अनुमति दे जिनके साथ तुम्हारा एक सुरक्षित घर हो।” तब उसने उनमें से प्रत्येक को चूमा,
और वे ज़ोर से रोयीं। 10उन दोनों ने कहा, “नहीं, हम आपके साथ आपके सम्बन्धियों के पास वापस जायेंगीं।”

11पर नाओमी ने कहा, “नहीं, मेरी पुत्रियों, घर लौट जाओ। मेरे साथ आने से तुम्हें कुछ लाभ न होगा! मेरे लिए यह संभव नहीं कि मेरे और पुत्र हों जो कि तुम्हारे
पति बन सकें। 12तुमको वापस लौट जाना चाहिए, मेरी बेटियों । मेरे लिए बहुत देर हो गई है कि मैं अपने लिए एक और पति करूँ। भले ही मैं सोचूं कि मेरा एक
और पति हो, और आज रात को मेरा विवाह भी हो जाए और अधिक पुत्र भी हो जाएँ, 13तुम उनके बड़े होने तक इंतज़ार नहीं करोगी, तुम तब तक अविवाहित
नहीं रह सकतीं! नहीं, मेरी पुत्रियों! यहोवा ने मेरे जीवन में पीड़ा देकर मुझे मारा है। पर तुम्हारे जीवनों को ऐसे पीड़ादायक होने की ज़रूरत नहीं जैसे मेरा
जीवन।”

14तब रूत और ओर्पा फिर ज़ोर ज़ोर से रोयीं। ओर्पा ने अपनी सास को चूम कर अलविदा कहा और चली गयी, परन्तु रूत नाओमी के साथ रही। 15नाओमी ने
उससे कहा, “देख! तेरी जिठानी अपने सम्बन्धियों और अपने देवताओं के पास वापस जा रही है! उसके साथ वापस जा!”

16परन्तु रूत ने उत्तर दिया, “नहीं! कृपया आपको छोड़ने और मुझे वापस जाने के लिए मत ज़ोर दें! जहाँ आप जाओगी, उधर मैं भी जाऊँगी। जहाँ आप रहोगी,
उधर मैं भी रहूँगी। आपके सम्बन्धी मेरे सम्बन्धी होंगे, और मैं उन परमेश्वर की आराधना करुँगी जिस परमेश्वर की आप आराधना करती हो। 17जहाँ आप मरेंगीं
वहाँ मैं भी मरूँगी और वो मुझे वहीँ दफ़नायेंगे। अगर मैं मरने से पहले आपको छोडूं तो यहोवा मुझे कठोरता से दण्डित करे।” 18जब नाओमी को एहसास हुआ
कि रूत उसके साथ ही बने रहना चाहती है, तो उसने उससे घर लौटने का आग्रह बंद कर दिया।

19अत: उन दोनों स्त्रियों ने चलना ज़ारी रखा जब तक कि वे बैतलहम के नगर नहीं पहुँचीं,। जब वे वहाँ पहुँचीं, तो शहर में हर कोई उन्हें देख कर उनके बारे में
ज़ोर से बातें करने लगा। शहर की स्त्रियों ने आश्चर्य से कहा, “यह विश्वास करना कठिन है कि यह नाओमी है!” 20नाओमी ने उनसे कहा, “तुमको मुझे नाओमी
नहीं कहना चाहिए, क्योंकि इसका अर्थ है ‘सुखद’। इसकी बजाय, मुझे मारा कहो, क्योंकि इसका अर्थ है ‘कड़वा।’ सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मेरे जीवन को बहुत
कड़वा बना दिया है। 21जब मैं यहाँ से छोड़ कर गयी, मेरे पास सब कुछ था जो मैं चाहती थी, परन्तु यहोवा मुझे वापिस ले कर आये बिना किसी वस्तु के। मुझे
नाओमी मत कहो। यहोवा ने मेरा विरोध किया है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरे साथ बुरी तरह बर्ताव किया है।”

22इसलिए इस तरह से नाओमी अपनी बहु रूत के साथ घर लौट आई जो मोआब की स्त्री थी। जब वे बैतलहम पहुँचे तो जौ की कटाई की अभी शुरुआत ही
हुई थी।

Chapter 2

1वहां पर एक व्यक्ति था जो नाओमी के मृत पति का सम्बन्धी था। वह धनी और महत्वपूर्ण था, और एलीमेलेक के वंश का सदस्य था। उसका नाम बोअज़ था।

2रुत (मोआब की स्त्री) ने नाओमी से कहा, “मुझे खेतों में जाने दे कि कटाई करने वाले फसल की जो बालियाँ छोड़ देते हैं उनको मैं उठा लूँ। मैं किसी भी कटाई
करने वाले के पीछे जाऊँगी जो मुझे अनुमति देगा।” नाओमी ने उत्तर दिया, “जा मेरी पुत्री।”

[3]तब रूत चली गयी। जब वह खेतों में पहुंची, उसने फसल की कटाई करने वालों का पीछा किया और अनाज उठाया। ऐसा हुआ कि खेतों का वो भाग बोअज़ का था एलीमेलेक का सम्बन्धी।

[4]तब बोअज शहर से लौटा था। उसने कटाई करने वालों का अभिनन्दन किया और कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ रहें!" उन्होंने उत्तर दिया, "यहोवा तुझे आशीष दें!"

[5]तब बोअज ने रूत को देखा, और अपने सरदार से पूछा, "वह युवती किसके साथ है?" [6]सरदार ने उत्तर दिया, "वह मोआब से एक जवान स्त्री है जो नाओमी
के साथ वहाँ से लौट आई है। [7]उसने मुझसे कहा, 'कृपया मुझे वो अनाज लेने दे जो कटाई करने वाले छोड़ देतें हैं।' उसने बहुत सवेरे से लेकर अभी तक काम किया है जैसे कि वह अब थोड़े समय के लिए शरणस्थान के नीचे आराम कर रही है।"

[8]तब बोअज ने रूत से कहा, "युवा स्त्री! कृपया मेरी सुनो। तुझे अनाज एकत्र करने के लिए किसी और खेत में या कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं। मेरी
दासियों के संग यहीं रह। [9]देख जहाँ पुरुष कटाई कर रहे हैं, वहाँ मेरी दासियों के साथ चलना। मैंने कटाई करने वालों से कहा है कि तुझे न सताएँ। जब तुझे प्यास लगे तो जाना और उन बर्तनों से पानी लेना जिसे पुरुषों ने भरा है ।"

[10]तब उसने बोअज़ के सामने चेहरा ज़मीन से छुआ कर घुटने टेके। उसने ज़ोर से चिल्ला कर कहा "तू मेरे प्रति इतना दयालु क्यों है? मुझे नहीं लगता था कि तू
मुझ पर इतना ध्यान देगा क्योंकि मैं परदेशी हूँ!" [11]बोअज ने उत्तर दिया, "लोगों ने मुझे वह सब कुछ बताया जो तूने अपने पति के मरने के बाद अपनी सास के
लिए किया है। उन्होंने मुझे बताया कि तूने अपने माता-पिता और अपनी जन्मभूमि को छोड़ दिया, और यहाँ उन लोगों के बीच रहने के लिए आई जिन्हें तू पहले
नहीं जानती थी। [12]मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा, जो कुछ तूने किया है, उसका पूरी तरह से तुझे फल दें। हाँ, यहोवा इस्राएल के परमेश्वर, जिनका तू सुरक्षा के लिए विश्वास करती है, पूरी तरह से प्रतिफल देंगे ।"

[13]उसने उत्तर दिया, "श्रीमान, मुझे आशा है कि मैं तुझे आनन्दित रखूँगी। तूने मुझ पर दया करके शान्ति दी है, तेरी दासी, और अभी तक मैं तो तेरी एक दासी में से भी नहीं हूँ ।"

[14]जब खाने का समय आया, बोअज ने उससे कहा, "यहाँ आ और कुछ खाना ले। इस रोटी को ले और सिरके में डुबा कर खा।" तब जब वह कटाई करने वालों के साथ बैठ गई, तब उसने उसे कुछ भुना हुआ अनाज दिया। वो जितना खाना चाहती थी उसने खाया और कुछ बचा भी लिया।

[15]इसके बाद जब वह कार्य पर वापस जाने के लिए खड़ी हुई, बोअज ने अपने सेवकों को आदेश दिया, "भले ही वह उन अनाज के पूलों में से जो तुमने काटे हैं
कुछ अनाज एकत्र करे, उसे रोकने का प्रयास मत करना। [16]इससे भी ज़्यादा, मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ अनाज के डंठल गठरियों से बाहर खींचो और उनको ज़मीन पर छोड़ दो ताकि वो उन्हें उठा ले और उसको डांटना नहीं।"

[17]ऐसे रूत ने शाम तक खेत में अनाज एकत्र किया। जौ की बालें जो उसने एकत्र की थीं, भूसी से अलग करने के लिए छाँटा। वो जौ एक बड़ी टोकरी भरने के
लिए पर्याप्त थी। [18]वह उसे वापस शहर ले कर गई और अपनी सास को दिखाया उसने कितना एकत्र किया था। उसने अपनी सास को भुना हुआ अनाज भी दिया जो दोपहर के भोजन से बचा था।

[19]उसकी सास ने उससे पूछा, "आज तूने यह सब अनाज कहाँ एकत्र किया? किसके खेत में तूने कार्य किया? मैं प्रार्थना करती हूँ कि परमेश्वर उस मनुष्य को
आशीर्वाद दे जिसने तुझ पर इतनी दया की।" तब रूत ने उसे उस व्यक्ति के बारे में बताया जहाँ वह काम कर के आयी थी । उसने कहा, "जहाँ मैंने आज काम
किया उन खेतों के मालिक का नाम बोअज है।" [20]नाओमी ने अपनी बहू से कहा, "यहोवा उसे आशीष दें! यहोवा ने हम जीवितों के प्रति विश्वासयोग्यता दिखाते हुए अपना कार्य करना बन्द नहीं किया, और हमारे पतियों के प्रति भी जो मर गए हैं ।" तब उसने कहा, "वह व्यक्ति एलीमेलेक का निकट सम्बन्धी है, वास्तव में, वह हमारे परिवार की देखभाल करने के लिए उत्तरदायी लोगों में से एक है।"

[21]तब रूत ने, जो मोआब की स्त्री थी, कहा, "उसने मुझसे यह भी कहा, 'मेरे मजदूरों के साथ तब तक रह जब तक कि वे खेत से मेरे सारे अनाज को ले नहीं आते।'"

[22]नाओमी ने अपनी बहु रूत को उत्तर दिया, "मेरी पुत्री, तेरे लिए ये अच्छा होगा अगर तू उसकी दासियों के साथ उसके खेत में जाए, क्योंकि यदि तू किसी और के खेत में जाएगी तब कोई व्यक्ति तुझे हानि पहुँचा सकता है।"

[23]अत: रूत ने बोअज की दासियों के साथ काम किया। उसने अनाज के सिरों को इकट्ठा किया जब तक मजदूरों ने जौ और गेहूँ दोनों की कटाई खत्म नहीं की। उस समय के दौरान, उसने नाओमी के साथ रहना जारी रखा।

Chapter 3

[1]एक दिन, नाओमी ने रूत से कहा, "मेरी पुत्री, मैं तेरे लिए एक सुरक्षित घर और एक अच्छे पति का प्रबन्ध करना चाहती हूँ। [2]इस समय तू बोअज़ की दासियों
के साथ काम कर रही है। जैसा की तू जानती है, वो हमारा निकट सम्बन्धी है। इसलिए ध्यान से सुन। आज रात को वह उस स्थान पर होगा जहाँ वे जौ को छाँटेंगे। वे अनाज को भूसी से अलग करेंगे।

3स्नान कर और कुछ इत्र लगा। अपनी पूरी ऊपरी पोशाक पहन। फिर उस स्थान पर जा जहाँ वे अनाज को छाँटते हैं। परन्तु उसे तेरे वहाँ होने का पता न चले
जब तक वह खाना और पीना समाप्त न कर ले। 4जब वह सोने के लिए लेटे, ध्यान दे कि वह कहाँ सोता है। तब उसके पास जाना, उसके पैरों से कपड़ा हटाना,
और वहां लेट जाना। जब वह उठेगा, तब तुझे बता देगा कि क्या करना है।”

5रूत ने उत्तर दिया, “मैं वह सब कुछ करूँगी जो तूने मुझे करने के लिए कहा है।”

6तब वह उस स्थान पर गई जहाँ वे अनाज छांटते थे। वहाँ उसने सब कुछ किया जो उसकी सास ने उसे करने के लिए कहाँ था।

7जब बोअज ने खाना पीना समाप्त कर लिया, तब उसे अच्छा लग रहा था। वह अनाज के ढेर के बहुत दूर अन्त तक चला गया, वहाँ लेट गया, और सो गया।
तब रूत छिपकर उसके पास पहुंची। उसने उसके पैरों का कपड़ा हटाया और वहाँ लेट गई।

8रात के मध्य में, वह अचानक उठ गया। वह बैठ गया और महसूस किया कि एक स्त्री उसके चरणों में लेटी हुई है। 9उसने उससे पूछा, “तू कौन है?” उसने उत्तर
दिया, “मैं तेरी दासी रूत हूँ। क्योंकि तू मेरे मृत पति के परिवार के प्रति उत्तरदायी लोगों में से एक हैं, कृपया मुझसे विवाह करके मुझे सुरक्षित कर।”

10बोअज ने उत्तर दिया, “मेरी प्रिय, यहोवा तुझे आशीष दें! पहले ही, तू अपनी सास के लिए बहुत ईमानदार थी, पर अब और ज़्यादा ईमानदारी दिखा रही है कि
तू विवाह के लिए किसी जवान का पीछा नहीं कर रही है चाहे वह अमीर हो या गरीब। 11अब, मेरी प्रिय, जो कुछ तूने माँगा वह सब मैं करूँगा। डर मत, क्योंकि
इस शहर के सभी लोगों को पता है कि तू एक सम्मानित स्त्री है।

12हालाँकि, जबकि मैं नाओमी के निकट सम्बन्धियों में से एक हूँ, और, इसलिए, तुम दोनों के लिए ज़िम्मेदार हूँ, एक और व्यक्ति है जो तुम्हारे लिए मेरी तुलना
में अधिक ज़िम्मेदार है क्योंकि वह नाओमी का अधिक निकटतम सम्बन्धी है। 13तू रात भर के लिए यहीं रह। कल सुबह मैं उस व्यक्ति को तेरे बारे में बताऊँगा।
यदि वह कहता है कि वह तेरा ख्याल रखेगा, तो ठीक है, वह तुझ से विवाह कर सकता है। परन्तु यदि वह तेरा ख्याल रखने को तैयार नहीं है, तो मैं सत्यनिष्ठा से
वादा करता हूँ कि, निश्चित रूप से जैसे यहोवा जीवित है,मैं तुझ से विवाह करूँगा और खुद तेरा ध्यान रखूँगा। इसलिए यहीं ठहरी रह जब तक सुबह न हो।”

14तब बोअज़ ने और कहा, "यह सबसे अच्छा होगा यदि कोई न जाने कि एक स्त्री यहाँ आयी थी। इसलिए वह बहुत सवेरे तक उसके चरणों में लेटी रही और
फिर पर्याप्त प्रकाश हो जाने से पहले जाने के लिए उठ गई कि लोग उसको पहचान लेंगे।” 15तब बोअज ने उससे कहा, “मेरे पास अपनी चादर ला और इसे
फैला।” जब उसने ऐसा किया, तो उसने उसमें उदारता से जौ को डाला और उसे उसकी पीठ पर रख दिया। फिर वह शहर चली गई।

16जब रूत घर पहुँची, तो उसकी सास ने उससे पूछा, “क्या यह तू है, मेरी पुत्री?” तब रूत ने उसे सब कुछ बताया जो बोअज ने कहा था और उसके लिए
किया। 17उसने नाओमी से यह भी कहा, “उसने मुझे यह सब जौ दिया, यह कहते हुए, ‘मैं नहीं चाहता कि तू अपनी सास के पास खाली हाथ जाए।’” 18तब
नाओमी ने कहा, “मेरी पुत्री,अब यहाँ प्रतीक्षा कर, जब तक हम देखें कि क्या होता है। वो व्यक्ति निश्चित रूप से आज इसका ख्याल रखेगा।”

Chapter 4

1इस दौरान, बोअज शहर के द्वार के अंदर उस जगह पर गया जहाँ लोग अपनी आधिकारिक व्यापारिक गतिविधियां करते थे। वह वहाँ जा कर बैठ गया। पहले
से, वह निकटतम सम्बन्धी जिसका वर्णन बोअज ने किया था, साथ आया। बोअज ने उसे नाम ले कर पुकारा, और कहा “इधर आओ और बैठ जाओ।” तब वह
व्यक्ति वहाँ जा कर बैठ गया। 2बोअज ने फिर शहर के दस अच्छे इज़्ज़तदार बुजुर्गों को एकत्र किया और उनसे कहा "कृपया यहाँ बैठ जाईये ताकि आप लोग
हमारी बातचीत के गवाह बन सकें " । तब वे बैठ गए।

3तब बोअज ने अपने सम्बन्धी से कहा, “क्या तू जानता था कि वो खेत जो हमारे सम्बन्धी एलीमेलेक के हैं वो बिकाऊ हैं? नाओमी जो अभी हाल ही में मोआब
से लौटी है उसे बेच रही है? 4मैंने सोचा कि मुझे तुझे बताना चाहिए ताकि तू यहाँ इन आदरणीय जनों के सामने जो गवाह बनने के लिए तैयार हुए हैं उसका
अधिकार ले सके। अगर तू उसको परिवार में वापस खरीदना चाहता है, तो ऐसा कर। पर यदि तू उसको वापस खरीदना नहीं चाहता, तो मुझे बता, क्योंकि तू
एलीमेलेक का निकटतम सम्बन्धी है, और तेरे बाद अगला मैं हूँ । व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैं इसे ले लूँगा!”

5तब बोअज ने उससे कहा, “जब तू नाओमी से भूमि खरीदता है, तो तुझे रूत से भी विवाह करना होगा,मोआब से हमारे सम्बन्धी की विधवा, ताकि उसके बेटा
हो सके जो संपत्ति का उत्तराधिकारी हो और उसके मरे हुए पति के नाम को जारी रख सके ।” 6तब निकटतम सम्बन्धी ने कहा, “तब मैं उसे वापस नहीं खरीद
सकता। अगर मैंने ऐसा किया, मैं अपने पुत्र की विरासत को बर्बाद कर दूंगा। तुम मेरी जगह खेत के लिए और उस महिला के लिए उत्तरदायी हो सकते हो, मैं
इसे नहीं कर सकता। ”

7उस समय, इस्राएल में यह प्रथा थी कि, जब दो लोग आपस में कुछ भी छुड़ाने या अदला-बदली करने के लिए सहमत होते थे, तब एक व्यक्ति अपनी एक
चप्पल उतार कर दूसरे व्यक्ति को दे देता था। ये एक तरीका था जिससे वे इस्राएल में लेन-देन पूरा करते थे । 8इसलिए सम्बन्धी ने बोअज से कहा, “तू स्वयं ही
भूमि खरीद ले!” और उसने अपनी एक चप्पल उतारी और बोअज को दे दी।

9तब बोअज ने आदरणीय जनों और अन्य सभी लोगों से जो वहां पर थे कहा, “आज सबने देख लिया है कि मैंने एलीमेलेक, किल्योन और महलोन की सारी
सम्पत्ति नाओमी से खरीद ली है। 10मैं महलोन की विधवा मोआब की स्त्री रूत को भी अपनी पत्नी होने के लिए ले रहा हूँ । यह इस क्रम में है कि वह पुत्र को

जन्म दे सके जो कि महलोन का पुत्र समझा जाए। वो संपत्ति का उत्तराधिकारी होगा और परिवार का नाम अपने सम्बन्धियों के बीच में और यहाँ अपने गृहनगर में जारी रखेगा। आज तुमने इन बातों को देख लिया है और सुन लिया है, और किसी को भी जो उनके बारे में पूछता है बता सकते हो।”

11सारे आदरणीय जन और दुसरे लोग जो नगर द्वार पर बैठे थे,सहमत हुए और कहा, “हाँ, हमने देखा है और सुना है । हम प्रार्थना करते हैं कि यहोवा इस स्त्री
को अनुमति दे, जो तेरे घर में आएगी, राहेल और लिआ के समान बनाए, जिन्होंने हमारे पूर्वजों को जन्म दिया और हमारे लोगों इस्राएल का आरम्भ किया।
हमारी मंशा है हमें आशा है कि तू एप्राता के वंश में सम्पन्न हो और यहाँ बैतलहम में प्रसिद्ध हो जाए। **12**हम प्रार्थना करते हैं कि तेरा परिवार तेरे पूर्वज पेरेस,
तामार और यहूदा के पुत्र के परिवार के समान हो जाए, उन वंशजों के कारण जो यहोवा तुझे और इस युवा स्त्री को देगा।”

13तब बोअज ने रूत को अपनी पत्नी बनाया और उसके पास गया। यहोवा ने उसे गर्भवती होने में सक्षम बनाया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया।
14बैतलहम की स्त्रियों ने नाओमी से कहा, “यहोवा की स्तुति कर! अब उन्होंने तुझे एक पुरुष दिया है, जो तेरे परिवार की रक्षा करेगा। हमारी मंशा है कि पूरे
इस्राएल भर में लोग उसका नाम जाने।” **15**तेरी बहू, जो तुझे प्यार करती है और जो, यदि तेरे सात पुत्र भी होते तो उनसे बेहतर है, उसने उसे जन्म दिया है।
इसलिए, वह तुझे फिर से जवान महसूस कराएगा, और जब तू बूढ़ी हो जाएगी, तब वह तेरा ध्यान रखेगा।”

16तब नाओमी ने बच्चे को उठाया और उसे कस के पकड़ा,और उसके लिए दूसरी माँ बन गई। **17**आस-पास रहने वाली स्त्रियों ने कहा, “ऐसा लगता है कि
नाओमी के पास अब एक पुत्र है!” और उन्होंने उसे ओबेद नाम दिया। बाद में, ओबेद यिशै का पिता हुआ, जो दाऊद का पिता था।

18पेरेस के वंशजों की सूची इस प्रकार है: पेरेस का पुत्र हेस्रोन था। **19**हेस्रोन का पुत्र राम था। राम का पुत्र अम्मीनादाब था। **20**अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था।
नहशोन का पुत्र सलमोन था। **21**सल्मोन का पुत्र बोअज था। बोअज का पुत्र ओबेद था। **22**ओबेद का पुत्र यिशै था। यिशै का पुत्र दाऊद था।

एज्रा

Chapter 1

1पहले साल के दौरान जब कुस्रू ने फ़ारसी साम्राज्य पर शासन किया, तो उसने कुछ ऐसा किया जिससे एक भविष्यद्वाणी पूरी हुई जिसे यिर्मयाह ने बोला था।
यहोवा ने कुस्रू को यह सन्देश लिखने के लिए प्रेरित किया, और फिर कुस्रू ने अपने पूरे साम्राज्य में इस सन्देश की घोषणा करवाई:

2"मैं, राजा कुस्रू, फारसी साम्राज्य पर शासन करता हूँ, और मैं यह कहता हूँ: कि यहोवा, परमेश्वर जो स्वर्ग में है, उसने मुझे पृथ्वी पर बड़े राज्यों पर शासक
बनाया है। अब उसने मुझे {सुनिश्चित करूँ कि उसके लोगों ने} यहूदा के यरूशलेम में उसके लिये एक मन्दिर बनाने के लिये नियुक्त किया है। 3परमेश्वर से
संबंधित तुम सब लोग यहूदा में यरूशलेम को जा सकते हो ताकि यहोवा के लिए इस मन्दिर का पुनर्निर्माण किया जाए, परमेश्वर जो यरूशलेम में है, जो
इस्राएल का परमेश्वर है। और परमेश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करे! 4और जो लोग इस्त्राएलियों की बन्धुआई में रहने वाले स्थान में रह रहे हों, और जिनके पूर्वज
यहाँ बंधुआई में आए थे, वे जानेवालों को चाँदी और सोना भेंट में दें। उन्हें यहूदियों को {निश्चित} सामान भी देना चाहिए {जिसकी उन्हें यरूशलेम की यात्रा के
लिए आवश्यकता होगी}। वे उन्हें कुछ पशुओं के झुंड और धन की भेंटें भी दें, ताकि वे यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के निर्माण में सहायक हो।"

5तब परमेश्वर ने कुछ याजकों और लेवियों को और यहूदा और बिन्यामीन के {गोत्रों के} कुलों के अगुवों में से {कुछ} को यरूशलेम लौटने के लिए प्रेरित किया।
जिन लोगों को परमेश्वर ने प्रेरित किया, वे यरूशलेम लौटने और वहाँ उसके लिए मन्दिर बनाने के लिए तैयार हो गए। 6उनके कई पड़ोसियों ने उन्हें यात्रा के लिए
चाँदी और सोने की वस्तुएँ, पशुधन और आपूर्ति देकर उनकी मदद की। उन्होंने उन्हें अन्य मूल्यवान उपहार भी दिए, और उन्हें मन्दिर के निर्माण के लिए वस्तुएँ
खरीदने के लिए धन दिया। 7राजा कुस्रू उन मूल्यवान वस्तुओं को बाहर निकाल लाया जो राजा नबूकदनेस्सर {के सैनिकों} ने यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर से
ले ली थीं और अपने देवताओं के मन्दिरों में (बाबेल में) रखी थीं। 8फारस के राजा कुस्रू ने अपने खजाँची मिथ्रदात को आज्ञा दी, कि वह इन सब वस्तुओं को
बाहर निकाले, और उनमें से प्रत्येक को यहूदा के प्रधान शेशबस्सर {के उस दल को दे दे, जो लौट जाने पर था}। 9यह उन वस्तुओं की सूची है {जो कुस्रू ने दान
की थी}: 30 सोने के परात, 1000 चाँदी के परात, 29 अन्य परात, 1030 सोने के कटोरे, 410 वैसे ही चाँदी के कटोरे, और 1000 अन्य वस्तुएँ। 11सब
मिलाकर, कुस्रू ने शेशबस्सर को चाँदी और सोने की 5400 वस्तुएँ दीं, ताकि जब वह और अन्य बाबेल से यरूशलेम को लौटे तो उन्हें अपने साथ ले जाए।

Chapter 2

1बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर {की सेना} ने कई इस्राएलियों को पकड़ लिया था और उन्हें बाबेल ले गया था। {कई वर्षों बाद,} कुछ इस्राएली यहूदा लौट गए।
कुछ यरूशलेम को लौट गए, और कुछ यहूदा में अन्य स्थानों में लौट गए। वे उन नगरों में गए जहाँ उनके पूर्वज रहते थे। लौटने वाले समूहों की सूची यह है।
2लौटने वाले लोगों के अगुवों में जरुब्बाबेल, येशुअ, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम और बानाह थे।

यहूदा लौटने वाले लोगों के समूह की सूची आगे दी गई है।

3परोश के वंशजों में से 2, 172

4शपत्याह के वंशजों में से 372

5आरह के वंशजों में से 775

6पहत्मोआब के वंशज येशुअ और योआब के परिवारों में से 2, 812

7एलाम के वंशजों में से 1, 254

8जत्तू के वंशजों में से 945

9जक्कई के वंशजों में से 760

10बानी के वंशजों में से 642

11बेबै के वंशजों में से 623

12अजगाद के वंशजों में से 1, 222

13अदोनीकाम के वंशजों में से 666

14बिगवै के वंशजों में से 2, 056

15आदीन के वंशजों में से 454

16आतेर के वंशजों में से 98, जो हिजकिय्याह के वंशजों में से था

17बेसै के वंशजों में से 323

18योरा के वंशजों में से 112

19हाशूम के वंशजों में से 223

20गिब्बार के वंशजों में से 95

21{वे लोग जिनके पूर्वज यहूदा के इन नगरों में रहते थे:}

बैतलहम में से 123

22नतोपा में से 56

23अनातोत में से 128

24अज्मावेत में से 42

25किर्यत्यारीम, कपीरा और बेरोत में से 743

26रामाह और गेबा में से 621

27मिकमाश में से 122

28बेतेल और आई में से 223

29नबो में से 52

30मग्बीस में से 156

31एलाम में से 1, 254

32हारीम में से 320

33लोद, हादीद और ओनो में से 725

34यरोही में से 345

35सना में से 3, 630

36लौटने वाले याजकों में ये थे:

यदायाह के वंशज में से 973 (अर्थात् वे जो येशुअ के वंशज थे)

37इम्मेर के वंशज में से 1, 052

38पशहूर के वंशज में से 1, 247

39हारीम के वंशज में से 1, 017

40लौटने वाले लेवीयों में ये थे:

येशुअ और कदमीएल के वंशज में से 74, जो होदव्याह के परिवार से थे

[41]128 गवैये जो आसाप के वंशज थे

[42]139 द्वारपाल जो द्वारपालों शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज थे

[43]ये मन्दिर में काम करने सेवक जो लौटे आए थे। वे इन पुरुषों के वंशज थे: सीहा, हसूपा, तब्बाओत, [44]केरोस, सीअहा, पादोन, [45]लबाना, हगाबा, अक्कूब
[46]हागाब, शल्मै, हानान [47]गिद्देल, गहर, रायाह, [48]रसीन, नकोदा, गज्जाम, [49]उज्जा, पासेह, बेसै, [50]अस्ना, मूनीम, नपीसीम, [51]बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
[52]बसलूत, महीदा, हर्शा, [53]बर्कोस, सीसरा, तेमह, [54]नसीह, और हतीपा।

[55]राजा सुलैमान के सेवकों के ये वंशज यरूशलेम को लौट आए: सोतै, हस्सोपेरेत, परुदा, [56]याला, दर्कोन, गिद्देल, [57]शपत्याह, हत्तील, पोकेरेत-सबायीम, और
आमी। [58]कुल मिलाकर, मन्दिर के सेवकों और सुलैमान के सेवकों के 392 वंशज लौट आए।

[59]एक और समूह था जो बाबेल के तेल्मेलाह, तेलहर्शा, करूब, अद्दा और इम्मेर में से यहूदा लौट आया था। पर वे यह साबित नहीं कर सके कि वे सच्चे
इस्राएली थे। [60]इस समूह में 652 लोग थे जो दलायाह, तोबियाह और नकोदा के वंशज थे। [61]इस समूह के याजकों के वंशजों में हबायाह के गोत्र, हक्कोस के
गोत्र और बर्जिल्लै के गोत्र के लोग थे। बर्जिल्लै ने एक स्त्री से विवाह किया था जो गिलाद क्षेत्र की बर्जिल्लै की वंशज थी। उसने अपने लिए अपने ससुर के गोत्र
का नाम अपना लिया था। [62]उस समूह के लोगों ने उन दस्तावेजों में खोज की, जिनमें सभी गोत्रों के पूर्वजों के नाम थे, पर उन्हें इन पुरुषों के नाम नहीं मिले।
इसलिए उन्होंने उन्हें उस काम को नहीं करने दिया जो याजकों किया करते थे। [63]राज्यपाल ने उनसे कहा कि उन्हें पवित्र पत्र डालने के द्वारा यहोवा से परामर्श
करने के लिए एक याजक से परामर्श लेने की आवश्यकता पड़ेगी {, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या वे पुरुष सच्चे इस्राएली थे}। {यदि पत्र से पता चलता है
कि वे पुरुष इस्राएली थे,} तो उन्हें याजकों को दिए जाने वाले बलिदानों में से उनका भाग खाने की अनुमति दी जाएगी।

[64]कुल मिलाकर, 42360 इस्राएली यहूदा लौट आए थे। [65]वहाँ 7, 337 सेवक और 200 गवैये भी थे, दोनों पुरुष और स्त्रियाँ, जो लौट आए थे। [66]इस्राएली
अपने साथ बाबेल से 736 घोड़े, 245 खच्चर, [67]435 ऊँट, और 6,720 गदहे लाए थे।

[68]जब वे यरूशलेम में यहोवा के भवन में पहुँचे, तो गोत्रों में से कुछ अगुवों ने मन्दिर को फिर से उसी स्थान पर जहाँ पुराना मन्दिर था बनाने के लिये आवश्यक
धन दिया। [69]उन्होंने अपनी योग्यता अनुसार अधिक से अधिक धन दिया। उन्होंने कुल मिलाकर 61,000 सोने के सिक्के, 5000 चाँदी के टुकड़े और याजकों
के लिए 100 वस्त्र दिए।

[70]ये याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, मन्दिर के सेवक, और अन्य लोग थे, जो {यहूदा के प्रान्त के} नगरों और गाँवों में रहने के लिए लौट आए थे। वे उन स्थानों
पर बस गए जहाँ उनके पूर्वज रहते थे।

Chapter 3

[1]जब इस्राएली {वापस आए और} उनके अपने-अपने नगरों में रहने लगे, तो उस वर्ष की शरद ऋतु में, वे सभी यरूशलेम में इकट्ठे हुए। [2]तब योसादाक का पुत्र
येशुअ और उसके संगी याजक और शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और उसके सहायक सब मिलकर इस्राएल के परमेश्वर की वेदी बनाने लगे। उन्होंने ऐसा
इसलिए किया कि वे उस पर होमबलि चढ़ा सकें। वे व्यवस्था की उन बातों का पालन करना चाहते थे जिसे भविष्यद्वक्ता मूसा ने लिखा था जो परमेश्वर ने उसे
दी थीं। [3]यद्यपि वे उन लोगों से डरते थे जो पहले से ही उस क्षेत्र में रह रहे थे, उन्होंने वेदी को उसी स्थान पर फिर से बनाया जहाँ पिछली वेदी थी। वे प्रतिदिन
सुबह और शाम को उस पर यहोवा के लिए बलिदानों को चढ़ाने लगे। [4]{इन बलिदानों को चढ़ाने के पंद्रह दिनों के बाद,} लोगों ने झोपड़ियों का पर्व मनाया।
{मूसा ने उन्हें यह आज्ञा दी थी कि वे इसे परमेश्वर की दी हुई विधियों के अनुसार करें।} प्रतिदिन याजक उस दिन के लिए आवश्यक बलिदानों को चढ़ाते थे।
[5]तब से, उन्होंने नित्य होमबलि और {अन्य आवश्यक} भेंटों को चढ़ाया। नए चाँद के त्योहार और अन्य त्योहारों के लिए {ये थे} जिन्हें उन्होंने प्रति वर्ष यहोवा को
आदर देने के लिए विशेष समयों के रूप में मनाया। वे यहोवा के लिए अन्य भेंटों को भी केवल इसलिए ले आए क्योंकि वे चाहते थे {, इसलिए नहीं कि उन्हें इन्हें
लाना आवश्यक था}। [6]पर यद्यपि उन्होंने पतझड़ के आरम्भ में यहोवा के लिये होमबलि लाना आरम्भ कर दिया था, तौभी उन्होंने अभी तक मन्दिर का
पुनर्निर्माण आरम्भ नहीं किया था। [7]इस कारण इस्राएलियों ने राजमिस्त्रियों और बढ़ई को {निर्माण कार्य करने के लिए} काम पर रखा। उन्होंने सोरी और
सीदोनी के नगरों के लोगों से देवदारु के वृक्षों से लट्ठे भी खरीदे। उन्होंने उन लोगों को बदले में भोजन, दाखरस और जैतून का तेल दिया। वे लोग लट्ठों को
लबानोन के पहाड़ों से {भूमध्य सागर के तट तक} ले आए और फिर उन्हें तट के किनारे याफा तक ले आए। राजा कुस्रू ने कहा था कि वे ऐसा कर सकते हैं।
{तब वे लट्ठों को भीतरी मार्ग द्वारा याफा से यरूशलेम तक ले आए।}

[8]इस्राएलियों ने यरूशलेम में लौटने के बाद दूसरे वर्ष की वसंत ऋतु में मन्दिर का पुनर्निर्माण शुरू किया। शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल, योसादाक का पुत्र
येशुअ, और उनके संगी याजक अगुवे और लेवीय, और जितने लोग यरूशलेम को लौट गए थे, उन सब ने इस काम में सहायता की। उन्होंने बीस वर्ष या उससे
अधिक आयु वाले लेवियों को मन्दिर के पुनर्निर्माण के काम की निगरानी करने के लिए नियुक्त किया। [9]येशुअ, उसके पुत्रों, और उसके अन्य कुटुम्बियों, और
कदमीएल और उसके पुत्रों ने मिलकर मन्दिर के काम की देखरेख करने में सहायता की। वे सब यहूदा के वंशज थे। जो लोग हेनादाद के वंशज थे, और उनके
पुत्र और उनके कुटुम्बी, जो सब लेवीय भी थे, उनके साथ आ जुड़े। [10]जब राजमिस्त्रियों ने मन्दिर की नेव डालने का काम समाप्त किया, तब याजक ने अपने
वस्त्र पहने लिए, और अपने स्थान पर तुरहियों को बजाने के लिए खड़े हो गए। तब आसाप के वंशज लेवीय ने यहोवा की स्तुति करने के लिए अपनी झांझों को

बजाया। {कई वर्षों पहले,} राजा दाऊद ने आसाप और अन्य गवैयों को ऐसा ही करने के लिए कहा था। 11उन्होंने यहोवा की स्तुति की और उसे धन्यवाद दिया,
और उन्होंने उसके विषय में यह गीत गाया:

“वह हमारे लिए बहुत ही भला है!

वह इस्राएल के साथ अपनी बनाई वाचा की विश्वासयोग्यता का आदर करता है {, और वह हम से प्रेम करेगा} सदैव।" तब सब लोग ऊँची आवाज से चिल्लाने
लगे। उन्होंने यहोवा की स्तुति की क्योंकि उन्होंने उसके मन्दिर की नींव को डालना समाप्त कर लिया था। 12बहुत से बुजुर्ग याजकों, लेवियों, और परिवारों के
अगुवों ने स्मरण किया कि पहला मन्दिर कैसा था। जब उन्होंने सेवकों को इस मन्दिर की नींव डालते देखा तो वे ऊँची आवाज से रोने लगे {क्योंकि उन्हें लगा कि
नया मन्दिर पहले मन्दिर जितना सुंदर नहीं होगा}। पर अन्य लोग आनन्द के मारे ऊँची आवाजों में चिल्लाने लगे। 13चूँकि चिल्लाना बहुत अधिक ऊँचा था,
इसलिए कोई नहीं बता सकता था कि कौन चिल्ला रहा है और कौन रो रहा है। शोर इतना अधिक था कि दूर-दूर के लोग भी इसे सुन सकते थे।

Chapter 4

1यहूदा और बिन्यामीन {के गोत्रों के लोगों} के शत्रुओं ने सुना कि वे बाबेल से लौट आए हैं और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये मन्दिर का निर्माण कर रहे
हैं। 2तब वे राज्यपाल जरुब्बाबेल और अन्य गोत्रों के अगुवों के पास गए, और उनसे कहा, हम भवन के निर्माण में तुम्हारी सहायता करना चाहते हैं।
आखिरकार, हम उसी परमेश्वर की आराधना करते हैं जिसकी तुम करते हो। जब से अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन हमें यहाँ लाया है, तब से हम उसके लिए
बलिदानों को चढ़ाते आए हैं।”

3परन्तु जरुब्बाबेल, येशुअ और यहूदी गोत्रों के अन्य अगुवों ने उत्तर दिया, “हम अपने परमेश्वर के लिए मन्दिर बनाने में तुम्हारी सहायता नहीं लेंगे। नहीं, केवल
हम ही इसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिए बनाएंगे, क्योंकि फारस के राजा कुस्रू ने हमें ऐसा ही करने की आज्ञा दी है।”

4तब {इस्राएलियों के लौटने से पहले} जो लोग उस देश में रह रहे थे उन्होंने यहूदियों को हताशा करने और डराने का प्रयास किया ताकि वे मन्दिर का निर्माण
बंद कर दें। 5यहूदियों को मन्दिर के काम को करते रहने से रोकने के लिए उन्होंने सरकारी अधिकारियों को घूस दी। उन्होंने यह सब उस समय तक किया जब
कुस्रू फारस का राजा था, और ठीक उस समय तक किया जब दारा फारस का राजा नहीं बन गया।

6तब दारा के पुत्र क्षयर्ष के राजा होने के पहले वर्ष में यहूदियों के शत्रुओं ने यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर में रहनेवालों के विषय में उसे शिकायत से भरा हुआ
एक पत्र लिखा {इसमें कहा गया कि वे सरकार के विरुद्ध बलवा करने की योजना बना रहे थे।}

7बाद में, जब अर्तक्षत्र फारस का राजा था, तब बिशलाम, मिथ्रदत, ताबेल और उनके साथियों ने उसे एक पत्र लिखा। उन्होंने किसी से अपने लिए अरामी भाषा
में अरामी वर्णमाला का उपयोग करते हुए पत्र लिखवाया।

8उच्च आयुक्त रहूम और प्रांतीय सचिव शिमशै ने राजा अर्तक्षत्र को यह पत्र लिखा कि यरूशलेम में क्या घटित हो रहा था।

9उन्होंने कहा कि यह पत्र उच्च आयुक्त रहूम, प्रांतीय सचिव शिमशै, और उनके सहयोगियों, न्यायियों और अन्य सरकारी अधिकारियों की ओर से भेजा गया
था, जो एलाम जिले में शूशनी, और फारस, एरेकी, बाबेली से थे। 10{उन्होंने यह भी लिखा कि वे प्रतिनिधित्व करते हैं} अन्य लोगों के समूह का जिन्हें महान
और प्रतापी ओस्नप्पर ने निर्वासित किया था और सामरिया के नगरों में और फ़रात नदी के पश्चिम वाले शेष प्रांतों में रहने के लिए भेजा था। 11जो पत्र उन्होंने
उसे भेजा उसमें उन्होंने यह लिखा:

यह पत्र राजा अर्तक्षत्र के लिए है। यह फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त में तेरी सेवा करने वाले अधिकारियों की ओर से भेजा गया है।

12"महामहिम, हम चाहते हैं कि तुझे यह विदित हो कि जो यहूदी तेरे क्षेत्रों से यहाँ आकर यरूशलेम नगर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। वे लोग दुष्ट हैं और तेरे
विरुद्ध बलवा करना चाहते हैं। वे अब {उस नगर की} दीवारों का पुनर्निर्माण कर रहे हैं और {उसके भवनों की} नींवों की मरम्मत कर रहे हैं। 13तेरे लिए यह
जानकारी महत्वपूर्ण है कि यदि वे इस नगर का पुनर्निर्माण करते हैं और इसकी दीवारों का निर्माण कर लेते हैं, तो वे किसी भी तरह के करों को देना बंद कर
देंगे। परिणामस्वरूप, तेरे खजाने में धन की कम हो जाएगी।

14अब, क्योंकि हम तेरे प्रति निष्ठावान हैं, और क्योंकि हम नहीं चाहते कि तेरे अपमान हो, इन कारणों से हम तुझे यह जानकारी भेज रहे हैं। 15हम तुझे सुझाव
देते हैं कि तू अपने पूर्ववर्तियों द्वारा रखे गए अभिलेखों में से {अपने अधिकारियों को आदेश दें} खोज करे। {यदि तू ऐसा करता है,} तू पाएगा कि इस नगर के
लोगों ने सदैव अपने शासकों के विरुद्ध बलवा किया है। तू जान लेगा कि इन लोगों ने बहुत समय तक राजाओं और प्रान्तों के शासकों के लिए परेशान खड़ी की
है। इस शहर के अगुवों ने बलवा आरम्भ कर दिया है। यही कारण है कि {बाबेल की सेना} ने इस नगर को नष्ट कर दिया था। 16हम चाहते हैं कि तू यह जान ले
कि यदि वे इस नगर को फिर से बना लेते हैं, और इसकी दीवारों का निर्माण कर लेते हैं, तो तू फ़रात नदी के पश्चिम वाले इस प्रान्त के किसी भी व्यक्ति को
अपने अधीन नहीं रख पाएगा।”

17{इस पत्र को पढ़, उसने} राजा ने {बाद में} उन्हें यह उत्तर भेजा:

“हे रहूम, उच्च आयुक्त, और शिमशै, जो प्रांतीय सचिव, और सामरिया में और फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त के अन्य भागों में रहने वाले तेरे साथियों को मैं अपनी शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।

18मेरे अधिकारियों ने उस पत्र को ध्यान से पढ़ा है जो तुमने मुझे भेजा था। 19तब मैंने अपने अधिकारियों को अभिलेखों की खोज करने का आदेश दिया। मुझे
पता चला है कि यह सच है कि यरूशलेम के लोगों ने सदैव अपने शासकों के विरुद्ध बलवा किया है, और यह नगर बलवा करने वाले और परेशानी पैदा करने
वाले लोगों से भरा हुआ है। 20बीते समय में, सामर्थी राजाओं ने यरूशलेम पर शासन किया। उन्होंने फ़रात नदी के पश्चिम वाले पूरे प्रान्त पर भी शासन किया।
उन्होंने वहाँ के लोगों को हर तरह के करों को देने के लिए मजबूर किया।

21इसलिए तू उन लोगों को आज्ञा दे कि वे नगर का पुनर्निर्माण करना बन्द कर दें। उन्हें फिर से आरम्भ करने की अनुमति तभी दी जाएगी जब मैं उन्हें बताऊँगा
कि वे इसका पुनर्निर्माण कर सकते हैं। 22इस काम को शीघ्रता से कर, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वे लोग मेरे हितों को नुकसान पहुँचाने के लिए कुछ भी ऐसा
करें।”

23जैसे ही सन्देशवाहकों ने राजा अर्तक्षत्र से रहूम और प्रांतीय सचिव शिमशै और उनके सहयोगियों को पत्र पढ़ कर सुनाया, वे शीघ्रता से यरूशलेम में यहूदियों
के पास गए, और उन्होंने उन्हें पुनर्निर्माण बंद करने के लिए मजबूर कर दिया। 24इसका परिणाम यह हुआ कि यहूदियों ने यरूशलेम में मन्दिर का पुनर्निर्माण बंद
कर दिया। उन्होंने दारा के फारस का राजा बनने के दूसरे वर्ष तक मन्दिर के पुनर्निर्माण के प्रति और कोई काम नहीं किया।

Chapter 5

1उस समय दो भविष्यद्वक्ता यरूशलेम और यहूदा के अन्य नगरों में रहने वाले यहूदियों को परमेश्वर की ओर से सन्देश दे रहे थे। ये भविष्यद्वक्ता हाग्गै और इद्दो
का पुत्र जकर्याह थे। उन्होंने अपने सन्देश को उस परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हुए दिया जिसकी इस्राएली आराधना करते थे। 2तब शालतीएल के पुत्र
जरुब्बाबेल और योसादाक के पुत्र येशुअ ने बहुत से लोगों की यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के पुनर्निर्माण को आरम्भ करने अगुवाई दी। और परमेश्वर के
भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह उनके साथ थे और उनकी सहायता कर रहे थे।

3पर तब फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त का राज्यपाल तत्तनै और शतर्बोजनै अपने कुछ अधिकारियों के साथ यरूशलेम गए और लोगों से कहने लगे, "तुम्हें
इस भवन को बनाने की आज्ञा किस ने दी है?" 4उन्होंने यहूदियों से उन लोगों के नाम बताने को भी कहा जो इस मन्दिर को बनाने का काम कर रहे थे।

5तौभी, परमेश्वर की दृष्टि यहूदी अगुवों के ऊपर थी, और उनके शत्रुओं ने उन्हें नहीं रोका। इसके स्थान पर, शत्रुओं ने राजा दारा को एक सूचना भेजी और उसके
द्वारा भेजे जाने वाली राजाज्ञा की प्रतीक्षा की {जो या तो उसकी अनुमति और सुरक्षा प्रदान करेगी ताकि यहूदी अगुवे मन्दिर के संबंध में अपना काम पूरा कर
सकें, या फिर अपना काम पूरी तरह से बंद कर दें}।

6यह उस सूचना की एक प्रति है जिसे नदी-से-पार वाले प्रान्त के राज्यपाल तत्तनै, शतर्बोजनै, और उनके सहयोगियों, नदी-से-पार वाले प्रान्त के उनके
अधिकारियों ने राजा दारा के पास भेजी थी। 7जब उन्होंने उसके पास सूचना भेजी, तो उस में उन्होंने यह लिखा:

“राजा दारा, हम आशा करते हैं कि तू कुशल क्षेम से है।

8हम चाहते हैं कि तू यह जान ले कि हम यहूदा प्रान्त में महान परमेश्वर के मन्दिर में गए थे। लोग इसका निर्माण बड़े-बड़े पत्थरों से कर रहे हैं और दीवारों में
लकड़ी की कड़ियाँ जोड़ रहे हैं। वे इस काम को अत्याधिक सावधानी से कर रहे हैं और इसमें सफल होते चले जा रहे हैं।

9इस कारण हमने यहूदी अगुवों से पूछा, 'कि किसने तुम्हें इस मन्दिर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी है?' 10ताकि हम तुझे सूचित कर सकें, कि हमने उनसे उनके
नाम भी पूछें हैं। हम तुझे उन लोगों के नाम भेज रहे हैं जो उनके अगुवे हैं।

11और उन्होंने हमें उत्तर में यह बताया है। उन्होंने कहा, 'कि हम स्वर्ग और पृथ्वी के रचने वाले परमेश्वर की आराधना करते हैं। हम उसके मन्दिर का पुनर्निर्माण
कर रहे हैं, जिसे इस्राएल के एक महान राजा ने कई वर्षों पहले बनाया था। उसने इसका निर्माण एक भव्य भवन के रूप में किया था। 12परन्तु हमारे पूर्वजों ने
ऐसे काम किए जिससे परमेश्वर जो स्वर्ग में है, अत्याधिक क्रोधित हुआ। इसलिए परमेश्वर ने बाबेल के राजा, नबूकदनेस्सर, एक कसदी को उन पर जय पाने
दिया। उसकी सेना ने उस मन्दिर को नष्ट कर दिया, और वे बहुत से इस्राएलियों को बाबेल ले गए।

13यद्यपि, अपने पहले वर्ष के दौरान जब कुस्रू ने बाबेल के राजा के रूप में शासन किया, उसने राजाज्ञा दी थी कि हम लोग परमेश्वर के इस मन्दिर का
पुनर्निर्माण कर सकते हैं। 14परमेश्वर के मन्दिर में कुछ सोने और चाँदी के प्याले थे। नबूकदनेस्सर उन्हें यरूशलेम के मन्दिर से उठाकर बाबेल के अपने मन्दिर में
ले आया था। राजा कुस्रू ने भी उस मन्दिर में से उन कटोरे को हटाकर शेशबस्सर नाम के एक व्यक्ति को दे दिया था, जिसे उसने यहूदा का राज्यपाल ठहराया
था। 15राजा ने उससे कहा कि इन वस्तुओं को ले जा और जाकर यरूशलेम के मन्दिर में रख दे। उसने यह भी आदेश दिया कि यहूदियों को उस स्थान पर
मन्दिर का पुनर्निर्माण करना चाहिए जहाँ वह पहले खड़ा हुआ था। 16तब शेशबस्सर यरूशलेम में आया और मन्दिर की नींव डालने वालों के कार्यों का निरीक्षण
किया। और उस समय से, लोग मन्दिर को बनाने का काम कर रहे हैं, पर उन्होंने इसे अभी तक समाप्त नहीं किया है।'

17इसलिए, हे महामहिम, कृपया अपने अधिकारियों को बाबेल में उस स्थान में खोज करने का आदेश दे जहाँ तू राजकीय अभिलेखों को रखता है। ताकि वह यह पता लगाएँ कि क्या यह सच है कि राजा कुस्रू ने यहूदियों को यरूशलेम में परमेश्वर के इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करने का आदेश दिया था या नहीं। तब तू हमें बता सकता है कि हमें इस विषय में क्या करना चाहिए।"

Chapter 6

1तब राजा दारा ने किसी को आज्ञा दी कि वह उस स्थान में खोज करे जहाँ उसने बाबेल के महत्वपूर्ण अभिलेख रखे हुए थे। 2उन्हें मादै नामक प्रान्त के गढ़ वाले नगर अहमता में एक कुण्डलपत्र मिला {जिसमें वह जानकारी थी जिसे वे जानना चाहते थे}। इस कुण्डलपत्र में ऐसा कहा गया था:

3"जब कुस्रू ने अपने साम्राज्य पर शासन किया, तब उसने परमेश्वर के मन्दिर के विषय में जो यरूशलेम में था, एक राजाज्ञा निकाली थी। उसने कहा कि यहूदियों को उसी स्थान पर एक नया मन्दिर बनाना चाहिए जहाँ वे बलिदानों को पहले चढ़ाया करते थे। यह मन्दिर 27 मीटर ऊँचा और 27 मीटर चौड़ा बनाया जाना चाहिए। 4उसने उन्हें बड़े पत्थरों से मन्दिर का निर्माण करने के लिए कहा था। पत्थरों की तीन परतें {नीचे डालने के बाद}, {मजदूरों को} नई लकड़ी की एक परत {उनके ऊपर} रखनी चाहिए। इस पर आने वाली लागत के लिए राजकोष से पैसा दिया जाएगा। 5उसने सोने और चाँदी की वस्तुओं के बारे में भी आदेश दिया जो परमेश्वर के मन्दिर से संबंधित थीं। नबूकदनेस्सर ने इन्हें यरूशलेम के मन्दिर से ले लिया था और बाबेल ले आया था। कुस्रू ने यहूदियों से कहा कि वे इन्हें ले जाएँ और वापस यरूशलेम के मन्दिर में रख दें। उसने उनसे कहा कि वे प्रत्येक को मन्दिर में उसके मूल स्थान पर वापस रख दें।"

6{इसे पढ़ने के बाद, राजा दारा ने यरूशलेम में यहूदियों के शत्रुओं के अगुवों के पास यह सन्देश भेजा:} "यह सन्देश तुम्हारे लिए है, तत्तनै, फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त का राज्यपाल, तेरे लिए, शतर्बोजनै, और तेरे सभी साथियों, उस प्रान्त के अधिकारियों के लिए: इस काम से अपने को अलग रखो! 7उन्हें परमेश्वर के उस मन्दिर के पुनर्निर्माण का कार्य करते रहने दिया जाए। यहूदियों के राज्यपाल और उनके अगुवों को इस नए मन्दिर के निर्माण में अपने लोगों की अगुवाई उसी स्थान पर बनाने के लिए करने दी जाए जहाँ पहले वाला मन्दिर था। 8इसके अतिरिक्त, मैं तुम्हें परमेश्वर के इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करते समय यहूदियों के इन अगुवों की मदद करने की आज्ञा देता हूँ। तुझे इन लोगों को धन देना सुनिश्चित करना होगा ताकि वे निर्माण कार्य करते रहें। इसके लिए जो कर तू फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त में इकट्ठा करता है, उसे मेरे राजकोष में से ले सकता है। 9यरूशलेम के याजक तुझे बताएँगे कि उन्हें किन वस्तुओं की आवश्यकता है। इसमें बछड़े और मेढ़े और मेम्ने शामिल हो सकते हैं जो स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को होमबलि के रूप में चढ़ाए जाते हैं। इसमें गेहूँ, नमक, दाखमधु और जैतून का तेल भी {उन बलिदानों को चढ़ाएँ जाने के लिए} शामिल हो सकता है। उन्हें ये वस्तुएँ प्रतिदिन दे। 10यदि तू ऐसा करेगा, तो वे ऐसे बलिदानों को चढ़ा सकेंगे जो स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, और वे प्रार्थना करेंगे कि परमेश्वर मुझे और मेरे पुत्रों को आशीष दे।

11इस राजाज्ञा का पालन न करने वाले हर किसी को मैं यह आदेश देता हूँ। मेरे सैनिक उसके घर से एक कड़ी निकालेंगे {और उसके एक छोर को नुकीला करेंगे}। फिर वे उस व्यक्ति को उसके ऊपर टांग देंगे {और उसके शरीर में इसके नुकीले सिरे को आरपार कर देंगे} और उस कड़ी को हवा में लटका देंगे। तब वे उस व्यक्ति के घर को तब तक नष्ट करते रहेंगे जब तक कि वह एक कूढ़े का ढेर मात्र नहीं रह जाता, क्योंकि उसने आज्ञा नहीं मानी। 12परमेश्वर ने स्वयं यरूशलेम को उस स्थान के रूप में चुना है जहाँ पर लोग उसका आदर करेंगे। वह किसी भी राजा या किसी भी जाति से बचा रहे जो इस राजाज्ञा को बदलने या यरूशलेम में उस मन्दिर को नष्ट करने का प्रयास करता है! मैं, दारा, ने इस राजाज्ञा को दिया है। तुझे इसका पूरी तरह से पालन करना चाहिए।"

13फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रांत का राज्यपाल तत्तनै, और शतर्बोजनै और उनके साथियों ने राजा दारा के सन्देश को पढ़ा और तुरन्त उसकी आज्ञा का पालन किया। 14इसलिए यहूदी अगुवे मन्दिर के पुनर्निर्माण के काम को करते रहे। भविष्यद्वक्ता हाग्गै और इद्दो के पुत्र जकर्याह द्वारा सुनाए सन्देश ने उन्हें बहुत ज्यादा उत्साहित किया। लोग मन्दिर को बनाते रहे, ठीक वैसे ही जैसा कि उनके परमेश्वर ने उन्हें बनाने की आज्ञा दी थी, और जैसा कि फारसी राजाओं कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र ने आदेश दिया था। 15राजा दारा के शासन के छठे वर्ष के अदार महीने के तीसरे दिन उन्होंने इस भवन का निर्माण पूरा कर लिया।

16तब इस्राएल के लोग, याजक, लेवीय, और बाबेल से लौटे हुए सब लोगों ने इस भवन के समर्पण के उत्सव को आनन्दपूर्वक मनाया। 17इस मन्दिर को समर्पित करने के समारोह के समय, उन्होंने 100 बछड़ों, 200 मेढ़ों और 400 मेम्नों का बलिदान चढ़ाया। उन्होंने 12 बकरों को भी भेंट के रूप में बलिदान में चढ़ाया ताकि परमेश्वर सब लोगों के पापों को क्षमा करे, क्योंकि इस्राएल में इतने ही गोत्र थे। 18तब यहूदी अगुवों ने याजकों और लेवियों को समूहों में बांट दिया जो बारी-बारी से यरूशलेम में परमेश्वर के भवन में सेवा करते थे। उन्होंने यह उसी अनुसार किया जिसे मूसा ने व्यवस्था में {कई वर्षों पहले} लिखा था।

19पहले महीने के चौदहवें दिन, बाबेल से लौटने वाले यहूदियों ने फसह का पर्व मनाया। 20{बलिदानों को चढ़ाने के लिए योग्य होने के लिए,} सभी याजकों और लेवियों ने पहले से ही उचित अनुष्ठान करके अपने आप को शुद्ध कर लिया था। तब उन्होंने अन्य याजकों के लिए, और अपने लिए और उन सभी के लाभ के लिए मेम्नों को बलिदान में चढ़ाया जो बाबेल से लौटे थे। 21बाबेल से लौटेने वाले इस्राएलियों ने अपने आप को अपने चारों ओर के अशुद्ध लोगों से अलग कर लिया था {जिनकी संस्कृति, भाषा और आराधना भिन्न थी। और इसलिए वे अब सक्षम थे} इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आराधना कर सकते थे {, और फसह का भोजन खा सकते थे}। 22उन्होंने अख़मीरी रोटी के पर्व को सात दिनों तक आनन्द से मनाया। वे आनन्दित हुए क्योंकि यहोवा ने उनके प्रति अश्शूर के राजा के रवैये को बदल दिया था। परिणामस्वरूप, राजा ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के मन्दिर के पुनर्निर्माण में उनकी सहायता की।

Chapter 7

1कई वर्षों बाद, जब अर्तक्षत्र फारस का राजा था, एज्रा {बाबुल से यरूशलेम चला गया। वह} हिल्किय्याह के पुत्र अजर्याह के पुत्र सरायाह का वंशज था। 2हिल्किय्याह शल्लूम का पुत्र था, जो सादोक का पुत्र था, जो अहीतूब का वंशज था। 3जो अमर्याह का वंशज था, जो अजर्याह का पुत्र या, जो मरायोत का वंशज था, 4जो जरहयाह का पुत्र था, जो उज्जी का पुत्र था, जो बुक्की का पुत्र था, 5जो अबीशू का पुत्र था, जो पीनहास का पुत्र था, जो एलीआजर का पुत्र था, जो हारून, {प्रथम} प्रधान याजक का पुत्र था। 6एज्रा एक ऐसा व्यक्ति था जो मूसा की व्यवस्था को अच्छी तरह जानता था। ये वे कानून थे जिन्हें इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने इस्राएलियों को दिए थे। {एज्रा के बाबेल छोड़ने के बाद} राजा ने लोगों से कहा कि वह जो कुछ भी मांगे वह उसे दे। इन विषयों में उसके परमेश्वर यहोवा ने उस पर अत्याधिक कृपादृष्टि की थी।

7मंदिर में काम करने वाले कुछ इस्राएली, कुछ याजक, कुछ लेवीय, कुछ गवैये, कुछ द्वारपाल, और कुछ लोग एज्रा के साथ यरूशलेम गए। यह समय सातवें वर्ष में फारस के राजा अर्तक्षत्र का था। 8एज्रा (और उसके साथ वाला समूह) सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम पहुँचा जब अर्तक्षत्र राजा था।

9इस पर ध्यान दें: वे पहले महीने के पहले दिन बाबेल से निकले। वे उस वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन सुरक्षित यरूशलेम पहुँचे। परमेश्वर ने निश्चय ही उन पर अत्याधिक कृपादृष्टि बनाई रखी। 10{अपने पूरे जीवन में,} एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अध्ययन करने और उसका पालन करने के तरीके को समझने के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया था। उसने उन व्यवस्थाओं में से सब कुछ को इस्राएलियों को {कई वर्षों तक} सिखाया।

11राजा अर्तक्षत्र ने याजक और शास्त्री एज्रा को यह आज्ञा दी थी जिसने इस्राएल को दी हुई व्यवस्था के विषय में यहोवा की आज्ञाओं का अध्ययन किया था।:

12"यह पत्र राजाओं में महानतम अर्तक्षत्र की ओर से है। मैं इसे एज्रा याजक को दे रहा हूँ, जिसने स्वर्ग में वास करने वाले परमेश्वर की व्यवस्था {इस्राएलियों को दी} का सावधानी से अध्ययन किया है । नमस्कार। मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों को जानें।

13मैं आज्ञा देता हूँ कि मेरे राज्य में रहने वाला कोई भी इस्राएली यदि वह जाना चाहे तो तुम्हारे साथ यरूशलेम जा सकता है। इसमें याजक और लेवीय भी शामिल हैं।

14{यहाँ कुछ और प्रबन्ध किए गए हैं।} मैं और मेरे सात सलाहकार तुझे यह देखने के लिए भेज रहे हैं कि यहूदा और यरूशलेम के लोग तेरे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर रहे हैं या नहीं। 15हम तुझ से यह भी कह रहे हैं कि मैं और मेरे सलाहकारों द्वारा दिए जाने वाला चाँदी और सोना अपने साथ ले जा। हम चाहते हैं कि तू इसे इस्राएल के परमेश्वर को भेंट के रूप में चढ़ाए जिसका यरूशलेम में एक मंदिर है। 16तू और चाँदी और सोना भी अपने साथ ले जो बाबेल {के लोग} का सारा प्रान्त तुझे दे। साथ ही वह धन भी अपने साथ ले जिसे इस्राएलियों और याजकों ने कहा है कि वे यरूशलेम में उनके परमेश्वर के भवन के निर्माण के लिए भेंट में चढ़ाने के लिए तुझे खुले मन से देंगे। 17और तब तू तुरन्त इस धन को लेकर उन बछड़ों, मेढ़ों, और मेम्नों को मोल लेना, जिन्हें याजक तेरे परमेश्वर के भवन की वेदी पर भेंट चढ़ाएँगे जो यरूशलेम में है। और अन्न और दाखमधु भी मोल ले जो इन भेंटों के साथ चढ़ाया जाता है।

18यदि {उन सभी चीजों को खरीदने के बाद} कोई चाँदी या सोना बचता है, तो तू और तेरे साथी इसका उपयोग उन सब वस्तुओं को मोल लेने के लिए कर सकते हैं जो तुझे महत्वपूर्ण लगती हैं। उन वस्तुओं को मोल ले जिन्हें तू जानता है कि तेरा परमेश्वर तुझसे चाहता है कि तू उन्हें खरीदे। 19हम ने तुझे तेरे परमेश्वर के मन्दिर में याजकों के उपयोग के लिये कुछ मूल्यवान वस्तुएँ भी दी हैं। उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के पास ले जा। 20यदि तेरे मन्दिर के लिए तुझे किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता है तो राजकीय खजाने से उन वस्तुएँ के लिए धन {तुझे अनुमति है} को ले।

21और मैं, राजा अर्तक्षत्र, व्यक्तिगत रूप से फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त के सभी कोषाध्यक्षों को यह आदेश देता हूँ: एज्रा एक याजक है जिसने सावधानी से स्वर्ग में वास करने वाले परमेश्वर की व्यवस्था का अध्ययन किया है। यदि उसका कुछ भी निवेदन है, तो उसे शीघ्रता से दो। 22उसे सवा तीन दशांश टन चाँदी, 500 ढेर तक गेहूँ, दो और एक का पाँचवाँ हिस्सा किलोलीटर दाखमधु, जैतून का तेल की भी इतनी ही मात्र, और जितना नमक वह मांगता है उतना दो। 23यह सुनिश्चित कर कि तू उस सब का प्रबन्ध करे जो स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को अपने मन्दिर के लिए चाहिए। हम निश्चय ही नहीं चाहते कि परमेश्वर मुझ से या मेरे वंशजों से (जो बाद में राजा होंगे) क्रोधित हो। 24हम तुझे यह भी आज्ञा देते हैं कि किसी भी याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, या मन्दिर के सेवकों से कर नहीं लेना। {उन्हें करों को देने में छूट है क्योंकि} वे परमेश्वर के इस मंदिर में काम करते हैं। 25एज्रा, तेरे पास तेरे परमेश्वर की बुद्धि है। इसका उपयोग ऐसे पुरुषों को नियुक्त करने के लिए कर जो विवादों को सुलझा सकते हों और फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रांत में लोगों के लिए व्यवस्था की व्याख्या कर सकते हों। उन्हें ऐसा उनके लिए करना चाहिए जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्थाओं को जानते हैं, और तुझे उन सभी को उन लोगों को सिखाना चाहिए जो उन्हें नहीं जानते हैं। 26तेरे परमेश्वर की व्यवस्था या मेरी सरकार के कानून का पालन नहीं करने वाले प्रत्येक को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। तू निर्णय कर सकता कि उन्हें प्राण दण्ड दिया जाए या उन्हें देश निकाला दिया जाए या उनकी सारी संपत्ति ले ली जाए या उन्हें कैद में डाल दिया जाए।"

27तब मैं, एज्रा, ने कहा, यहोवा की स्तुति करो, उस परमेश्वर की जिसकी आराधना हमारे पूर्वजों ने की! उसने राजा को यरूशलेम में अपने मंदिर का आदर करने के लिए प्रेरित किया है। 28परमेश्वर मेरे प्रति इतना अधिक दयालु रहा कि राजा और उसके सलाहकार और उसके सभी सामर्थी अधिकारी मेरी मदद करने के लिए तैयार थे। जब परमेश्वर ने इस तरह से मेरी मदद की, तो इससे मुझे हियाव मिला। मैं इस्राएल के कुछ अगुवों को अपने साथ यरूशलेम लौटने के लिए राजी कर सका।"

Chapter 8

1जब अर्तक्षत्र फारस का राजा था तब बाबेल से मेरे साथ यरूशलेम लौटने वाले घरानों के अगुवों के नामों की सूची यह है:

2हारून के पोते पीनहास के घराने के वंशजों में से गेर्शोम आया।

हारून के पुत्र ईतामार के घराने के वंशजों में से दानिय्येल आया।

राजा दाऊद घराने के वंशजों में से हत्तूश आया, 3शकन्याह का एक वंशज आया।

जकर्याह और उसके 150 पुरुष परोश के धराने के वंशजों से आए।

4जरहयाह का पुत्र एल्यहोएनै और उसके घराने के 200 अन्य पुरुष पहत्मोआब के वंशजों से आए।

5यहजीएल का पुत्र और उसके घराने के 300 पुरुष शकन्याह के वंशजों से आए।

6योनातान का पुत्र एबेद और उसके घराने के 50 अन्य पुरुष आदीन के वंशजों से आए।

7अतल्याह का पुत्र यशायाह और उसके घराने के 70 अन्य पुरुष एलाम के वंशजों से आए।

8मीकाएल का पुत्र जबद्याह और उसके घराने के 80 अन्य पुरुष शपत्याह के वंशजों से आए।

9यहीएल का पुत्र ओबद्याह और योआब के घराने के वंशजों में से 218 और पुरुष आए।

10योसिव्याह का पुत्र और शलोमीत के घराने के वंशजों में से 160 अन्य पुरुष आए।

11बेबै का पुत्र जकर्याह और उसके घराने के वंशजों में से 28 और पुरुष {एक दूसरे व्यक्ति से जिसका नाम था} बेबै से आए।

12हक्कातान का पुत्र योहानान और उसके घराने के वंशजों में से 110 अन्य पुरुष अजगाद से आए।

13एलीपेलेत, यूएल, और शमायाह नामक तीन पुरुष, और अदोनीकाम के घराने के वंशजों में में 60 अन्य पुरुष आए, जो जरूब्बाबेल के साथ पहले नहीं लौटे थे।

14ऊतै, जक्कूर और बिगवै के घराने के वंशजों में से 70 अन्य पुरुष आए।

15एज्रा ने कहा, “मैंने सब यहूदियों को बाबेल से अहवा की ओर बहने वाली नहर के पास इकट्ठा किया। हमने अपने तम्बू गाड़े और तीन दिन वहीं रहे। उस समय में मैंने {नामों की सूचियाँ पढ़ीं और} पाया कि हमारे साथ इस्राएली और याजक तो जा रहे थे, पर कोई लेवीय नहीं था। 16तब मैंने एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, और एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम नामक एक अन्य पुरुष को जो लोगों के अगुवे थे, बुलवा भेजा। मैंने योयारीब और एलनातान {नामक तीसरे व्यक्ति} को भी बुलाया, जो शिक्षक थे। 17मैंने उन सभी को इद्दो के पास भेज दिया, जो कासिप्या नामक स्थान पर रहने वाला लेवीयों का एक अगुवा था। मैंने उन से कहा, कि इद्दो से और मन्दिर के उन सेवकों से क्या कहना है जिसे उसने भी वहाँ देखा था। मैं चाहता था कि वे मन्दिर में काम करने के लिए {हमारे साथ जाने के लिए} कुछ लोगों को भेजें।

18क्योंकि परमेश्वर की हम पर कृपादृष्टि थी, वे हमारे पास शेरेब्याह नाम एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति और उसके 18 पुत्रों और अन्य रिश्तेदारों को ले आए। वह महली का वंशज था, जो इस्राएल के पुत्र लेवी का पोता था। 19उन्होंने हमारे पास हशब्याह और यशायाह और उसके 20 भाइयों और उनके पुत्रों को भी भेजा। दोनों पुरुष मरारी {लेवी के पुत्र} के वंशज थे। 20उन्होंने मन्दिर में काम करने के लिए 22 पुरुषों को भी भेजा। राजा दाऊद और उसके अधिकारियों ने लेवियों की सहायता के लिए उनके पूर्वजों को नियुक्त किया था। मैंने उन सभी पुरुषों के नाम सूचीबद्ध किए।

21वहाँ अहवा नहर के तट पर, मैंने हम सभी को उपवास (और प्रार्थना) करने की घोषणा की। मैंने उनसे कहा कि हमें अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करना चाहिए। हमने प्रार्थना की कि यात्रा के दौरान परमेश्वर हमारी रक्षा करें और हमारे बच्चों और हमारी संपत्ति की भी रक्षा करें। 22पहले हमने राजा से कहा था कि हमारा परमेश्वर उन सभी का ध्यान रखता है जो सच में उस पर भरोसा रखते हैं, पर उसका कोप उन पर अत्याधिक भड़कता है जो उसकी बात मानने से इनकार करते हैं। इसलिए मैं राजा से यह कहने के लिए लजाता था कि जब हम मार्ग में यात्रा पर हों तो हमारे शत्रुओं से हमारी रक्षा के लिए सैनिकों और घुड़सवारों को भेज दिया जाए। 23इसलिए हमने उपवास किया और परमेश्वर से हमारी रक्षा करने के लिए कहा। हमने उससे प्रार्थना की, और उसने हमारी प्रार्थना का उत्तर दिया।

24मैंने शेरेब्याह और हशब्याह और दस अन्य लेवीय के साथ याजकों के अगुवों में से 12 को चुना। 25मैंने उन्हें चाँदी और सोने की भेटें और अन्य मूल्यवान वस्तुओं को यरूशलेम पहुँचाने के लिए ठहराया। राजा और उसके सलाहकारों और अन्य अधिकारियों, और बाबेल में रहने वाले इस्राएलियों ने हमारे परमेश्वर के

मन्दिर के लिए ये योगदान दिया था। 26जब मैंने उन याजकों को ये विभिन्न वस्तुएँ दीं, तब मैंने प्रत्येक वस्तु को तौला। इनका कुल योग यह था: लगभग ढाई
दशांश टन चाँदी, चाँदी से बनी वस्तुएँ जिनका वजन कुल मिलाकर तीन और एक तिहाई दशांश टन, तीन और एक तिहाई दशांश टन सोना था, 27सोने के 20
कटोरे जिनका कुल वजन लगभग साढ़े आठ किलोग्राम था, और दो पात्र जो चमकीले सुन्दर पीतल के बने हुए थे जो सोने जितने मूल्यवान थे। 28मैंने उन
याजकों और लेवियों से कहा, 'तुम यहोवा के लिए विशेष रूप से अलग किए हुए हो। ये मूल्यवान वस्तुएँ उसी तरह उसके लिए विशेष महत्व की हैं। लोगों ने
आप ही चाँदी और सोना को स्वेच्छा से यहोवा को, जिस परमेश्वर की आराधना हमारे पूर्वज करते थे, भेंट में चढ़ाने के लिए दिया। 29इसलिए उनकी सावधानी
से रक्षा करो। जब हम यरूशलेम में पहुँचें, तब उन्हें अग्रणी याजकों और लेवियों और इस्राएल के अन्य अगुवों के सामने तौलना। {वे फिर उन्हें रखेंगे} नए मंदिर
के भण्डारगृहों में।'

30इस कारण याजकों और लेवियों ने चाँदी, सोने, और भेंट में चढ़ाए जाने वाली अन्य मूल्यवान वस्तुएँ मुझ से ले लीं ताकि वे उन्हें यरूशलेम के भवन में ले जा
सकें।

31पहले महीने के बारहवें दिन हमने अहवा नहर से कूच किया और यरूशलेम की ओर यात्रा करने लगे। हमारे परमेश्वर ने हमारी देखभाल की, और जब हम
यात्रा कर रहे थे, तब उसने हमारे शत्रुओं और डाकुओं को हम पर हमला करने से रोका। 32यरूशलेम में पहुँचने के बाद हमने तीन दिन विश्राम किया। 33फिर
हम चौथे दिन मन्दिर गए। वहाँ मन्दिर के कुछ अगुवों ने तौल कर चाँदी, सोना और अन्य वस्तुओं को ले लिया। इन अगुवों में से दो, ऊरिय्याह का पुत्र मरेमोत
और पीनहास का पुत्र एलीआजर याजक थे, और दो, येशुअ का पुत्र योजाबाद और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह लेवीय थे। 34उन्होंने सब कुछ गिन लिया, और
लिखा कि प्रत्येक वस्तु का वजन कितना था, और प्रत्येक वस्तु को लेते समय ही उसका विवरण लिखा।

35हम जो बाबेल में बँधुआई में गए थे, पर अब बँधुआई से लौट आए थे, ने अपने परमेश्वर को होमबलि की भेटें चढ़ाईं: सभी इस्राएलियों के लिए, 12 बैल, 96
मेढ़े और 77 मेम्ने। हमने उन सभी लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए 12 बकरियों की भी बलि दी। ये सब बलिदान वेदी पर ही यहोवा के लिए भेंट
चढ़ाते समय पूरी तरह से जला दिए गए थे।

36बाबेल से लौटने वाले हम में से कुछ ने उस पत्र को ले लिया जो राजा ने हमें फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त के राज्यपालों और अन्य अधिकारियों को देने के
लिए दिया था। {पत्र को पढ़ने के बाद} उन्होंने अपनी योग्यता अनुसार हम इस्राएलियों और परमेश्वर के मन्दिर के लिए हर संभव सहायता की।”

Chapter 9

1"इसके बाद यहूदी अगुवे मेरे पास आकर कहने लगे, 'कि बहुत से इस्राएली, और यहाँ तक कि कुछ याजकों और लेवियों ने भी उस काम को करना नहीं छोड़ा
जो इस देश में रहने वाले दूसरे लोग करते हैं। वे उसी घिनौने काम को कर रहे हैं जिसे ये लोग करते हैं। ये कनानी, हित्ती, परिज्जी, यबूसी, अम्मोनी, मोआबी,
मिस्री और एमोरी लोगों के समूह हैं। 2विशेष रूप से, कुछ इस्राएली पुरुषों ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं हैं, और उन्होंने अपने पुत्रों को भी
ऐसा ही करने की अनुमति दी है। इसलिए हम, जो परमेश्वर के पवित्र लोग हैं, अब यहाँ रहने वाले अन्य समूहों से भिन्न नहीं हैं। वास्तव में, हमारे कुछ अगुवे और
अधिकारी इस तरह के काम में परमेश्वर से विश्वासघात करने वालों में सबसे आगे रहे हैं!'

3जब मैंने यह सुना, तो मैंने अपना वस्त्र और बागा फाड़ डाला। मैंने अपने सिर और दाढ़ी में से कुछ बालों को नोच डाला। फिर मैं बैठ गया। मैं अचंभे में था।
4बहुत से यहूदी अभी भी विदेशी स्त्रियों से विवाह नहीं करने के लिए दी गई परमेश्वर की आज्ञा का आदर करते थे, और वे इस बात से परेशान थे कि बँधुओं में
से कुछ ने इसकी अवज्ञा की थी। जब मैं उस दिन के शेष समय में चुपचाप बैठा रहा तो वे मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गए।

5पर जब शाम को बलिदान चढ़ाने का समय आया, तो मैं वहाँ चुपचाप नहीं बैठा रहा। उन फटे हुए वस्त्रों को अभी भी पहिने हुए, मैं घुटनों के बल खड़ा हो गया,
और अपने हाथों को यहोवा, मेरे परमेश्वर, की ओर प्रार्थना में फैला दिया, 6और मैंने यह प्रार्थना की: 'हे मेरे परमेश्वर, मैं बहुत ज्यादा लज्जित हूँ, यहाँ तक कि तेरे
सामने प्रार्थना करने के लिए भी। निश्चय ही, हम इस्राएलियों द्वारा किए गए पाप बहुत बड़े हैं। यह ऐसे हैं कि मानो हमारे पाप हमारे सिर से भी ऊपर पहुँच गए
हैं। जहाँ तक उन पापों को करने के प्रति हमारे दोष की बात है, यह ऐसा है कि मानो वह स्वर्ग पर चढ़ गए हों। 7हमारे पूर्वजों के समय से लेकर अब तक हम
अत्याधिक दोषी रहे हैं। यही कारण है कि परमेश्वर ने अन्य देशों के राजाओं की सेनाओं से हमें और हमारे राजाओं और हमारे याजकों को पराजित होने दिया।
उन्होंने हमारे कुछ लोगों को मार डाला, उन्होंने कुछ को कैद कर लिया, उन्होंने कुछ को लूट लिया, और उन्होंने सभी को अपमानित कर दिया जैसे हम आज
पाए जाते हैं।

8पर पिछले कुछ दिनों में, हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तूने हम पर कृपा प्रगट की है। तूने हम में से कुछ को जीवित रहने दिया है। तूने हमें इस पवित्र स्थान पर
सुरक्षित अवस्था में पहुँचाया है। तूने हमारी आत्माओं को बेदार किया है और हमें कुछ स्वतंत्रता दी है, भले ही फारसी राजा अभी भी हमारा स्वामी है। 9हाँ, हम
तो गुलामों के समान हैं, फिर भी तूने हमें त्यागा नहीं। इसके स्थान पर, तूने फारस के राजाओं को हम पर दया दिखाने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने हमें कुछ
स्वतंत्रता दी है और हमें तेरे नष्ट किए गए मंदिर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी है। उन्होंने हमें यहाँ यहूदा प्रांत और यरूशलेम शहर में सुरक्षित रहने की भी
अनुमति दी है।

10हे हमारे परमेश्वर, अब हम और क्या कह सकते हैं? तूने हमारे लिए जो कुछ किया, उतना होने पर भी हमने तेरी आज्ञाओं को नहीं माना। 11वे आज्ञाएँ जो तूने
तेरे सेवक भविष्यद्वक्ताओं को हमारे लिए दिया था। उन्होंने हम से कहा था कि जिस भूमि पर हम अधिकार करेंगे, वह वहाँ रहने वाले लोगों के घिनौने कामों के
कारण अशुद्ध भूमि है। उन्होंने कहा था कि उन लोगों द्वारा किए गए डरावने कामों ने उस देश के एक छोर से दूसरे छोर को गंदगी से भर गया। 12उन्होंने कहा था

कि हमें अपनी पुत्रियों की उनके पुत्रों के साथ विवाह में नहीं देना है! हमें अपने पुत्रों को उनकी पुत्रियों के साथ विवाह में देना चाहिए! हमें कभी भी उन लोगों के
कल्याण के लिए भला करने का प्रयास नहीं करना चाहिए! उन्होंने कहा था कि अगर हम इन निर्देशों का पालन करेंगे तो हमारा देश सामर्थी होगा। हम भूमि पर
उगने वाली अच्छी फसलों का आनंद लेंगे, और भूमि सदैव के लिए हमारे वंशजों की हो जाएगी।

13पर तूने हमें इसलिए दण्ड दिया क्योंकि हम बुरे काम करने में बड़े दोषी ठहरे। तौभी, तूने हमें उतना दण्ड नहीं दिया, जितना हमें मिलना चाहिए था। मैं ऐसा
इसलिए कहता हूँ क्योंकि, हे हमारे परमेश्वर, तूने हम में से कुछ को बचाए रखा है। 14यद्यपि, हम में से कुछ फिर से तेरी आज्ञाओं की अवहेलना कर रहे हैं। हम
उन लोगों के समूह की स्त्रियों से विवाह कर रहे हैं जो घिनौने कामों को करते हैं। यदि हम ऐसा ही करते रहे, तो हम तुझे इतना अधिक क्रोधित कर देंगे कि तू हमें
पूरी तरह से नष्ट कर देगा।

15हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तू सर्वदा सही काम करता है! क्योंकि तू उदार है, तूने हम में से कुछ को आज तक बचाए रखा है। हम मान लेते हैं कि हम तेरी
आज्ञा की अवहेलना के दोषी हैं और इसलिए हमने जो किया है, उसके कारण हम प्रार्थना में तेरे सामने आने के योग्य नहीं हैं।'"

Chapter 10

1एज्रा मन्दिर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना कर रहा था और रो रहा था, वह [लोगों के किए हुए पापों को] अंगीकर कर रहा था। जब वह ऐसा कर ही रहा था,
तो इस्राएलियों की एक बड़ी भीड़, पुरुष और स्त्री, बच्चे, उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए, क्योंकि वे भी बहुत ही ज्यादा व्याकुल थे।

2तब एलाम के घराने में से यहीएल का पुत्र शकन्याह बोल उठा। उसने एज्रा से यह कहा: "हमने अपने परमेश्वर की आज्ञा की अवहेलना की है। हम में से कुछ ने
ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं हैं। वे अन्यजातियों में से आती हैं जो हमारे आसपास रहती हैं। पर हम अब भी आशा {कर सकते हैं कि यहोवा
दया करेगा} हम इस्राएलियों पर। 3मैं यह सुझाव देता हूँ। हम उन लोगों के साथ जो परमेश्वर की आज्ञा का आदर करते हैं वही करेंगे जो तू हमें करने के लिए
कहेगा। हम वही करेंगे जो परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था में हमें बताया है। हम अपने परमेश्वर के साथ करार बाँधेंगे। हम सभी अपनी विदेशी पत्नियों को तलाक
देने और उन्हें उनके बच्चों के साथ अपने से दूर कर देंगे। 4चूँकि यह तेरा दायित्व है कि तू हमें बताए कि क्या करना है, आगे कैसे बढ़ना है, और हियाव कैसे
बाँधना है, और क्या करना आवश्यक है। हम तेरा समर्थन करेंगे।"

5तब एज्रा ने कार्यवाही की और चाहा कि याजक, लेविये, और अन्य सभी इस्राएलियों के अगुवे गंभीरता से घोषणा करें कि वे वही करेंगे जो शकन्याह ने कहा
था कि उन्हें करना चाहिए था। इसलिए उन सभी ने ऐसा करने की प्रतिज्ञा ली। 6तब एज्रा मन्दिर के सामने से चलकर उस कोठरी में गया जहाँ एल्याशीब का पुत्र
यहोहानान रहता था। जब वह वहाँ गया तो उसने न तो कुछ खाया और न ही कुछ पीया। वह अब भी शोक कर रहा था क्योंकि बाबेल से लौटने वाले कुछ
इस्राएलियों ने अपने विश्वासयोग्यता के कारण परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं किया था।

7तब अगुवों ने यहूदा प्रान्त और यरूशलेम नगर के सब लोगों के पास सन्देश भेजा। उन्होंने उनसे कहा कि बाबेल से लौटने वाले सभी को तुरन्त यरूशलेम आना
होगा। 8अगुवों ने तीन दिनों के भीतर नहीं आने वालों के लिए जुर्मानों की घोषणा की। वे उनकी सारी संपत्ति ले लेंगे, और वे उन्हें इस्राएलियों की मण्डली से
बाहर कर देंगे। 9इस कारण तीन दिनों के भीतर, अर्थात् नौवें महीने के 20वें दिन, यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों के सभी लोग यरूशलेम में इकट्ठे हुए। वे मन्दिर
के सामने आँगन में बैठे थे। वे काँप रहे थे क्योंकि भारी वर्षा हो रही थी और {क्योंकि वे चिंतित थे कि उन्हें दण्डित किया जाएगा} उस कारण से जो उन्होंने किया
था।

10तब एज्रा उठ खड़ा हुआ और उन से कहा, तुम में से कितनों ने परमेश्वर की आज्ञा न मानने का काम किया है। तुमने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो
इस्राएली नहीं हैं। ऐसा करके तुमने हम इस्राएलियों को पहले से कहीं अधिक अपराधी ठहराया है। 11पर अब, यहोवा के सामने अपना पाप अंगीकार करो,
जिस परमेश्वर की आराधना तुम्हारे पूर्वज किया करते थे, और उसकी आज्ञा के अनुसार करो। अपनी विदेशी पत्नियों को तलाक देकर अन्यजातियों से अलग हो
जाओ।"

12पूरी भीड़ ने ऊँची आवाज में चिल्लाते हुए उत्तर दिया, "हाँ, हमें वही करना चाहिए जो तूने कहा है। 13पर हम एक बहुत बड़ा समूह हैं, और भारी वर्षा हो रही
है। हम इस वर्षा में बाहर नहीं खड़े हो सकते हैं। और चूँकि हम में से बहुतों ने इस पाप को किया है, इसलिए चीजों को फिर से ठीक करने में बहुत अधिक समय
लगेगा। 14इसलिए हमारे अगुवों को यह निर्धारित करने दे कि हम सभी को क्या करना चाहिए। हर एक शहर में हर किसी से कहा जाए कि जिसने ऐसी स्त्री से
विवाह किया जो इस्राएली नहीं है तो वह तेरे द्वारा निर्धारित समय पर यहाँ आए। वे अपने नगर से बुर्जुगों और न्यायियों के साथ आएँ। यदि हम ऐसा करते हैं, तो
हमने जो कुछ किया है उसके कारण हमारा परमेश्वर हमसे क्रोधित होना बंद कर देगा।"

15भीड़ में से असाहेल का पुत्र योनातान और तिकवा का पुत्र यहजयाह ही इस बात से असहमत थे, और मशुल्लाम और लेवी के वंशज शब्बतै ने उनका साथ
दिया। 16पर बाबेल से लौटे सभी लोगों ने कहा कि वे ऐसा ही करेंगे। तब एज्रा ने उनके घराने के अनुसार ऐसे पुरुषों को चुन लिया जो अगुवे थे और उनके नाम
लिख लिए। दसवें महीने के पहले दिन ये लोग इस विषय की जाँच करने के लिए इकट्ठे हुए। 17अगले वर्ष के पहले महीने के पहले दिन तक वे यह निर्धारित कर
चुके थे कि किन पुरुषों ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं थीं।

[18]कुछ याजकों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था। ये योसादाक के पुत्र येशुअ और उसके भाइयों के कुछ वंशज थे। उनके नाम मासेयाह, एलीएजेर, यारीब
और गदल्याह थे। [19]उन्होंने गम्भीरता से अपनी पत्नियों को त्यागने की प्रतिज्ञा की, और उनमें से हर एक ने अपने पापों के लिए प्रायश्चित के लिए एक एक मेढ़े
का बलिदान किया।

[20]इम्मेर के घराने में हनानी और जबद्याह।

[21]हारीम के घराने में से मासेयाह, एलिय्याह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

[22]पशहूर के घराने में से एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

[23]विदेशी स्त्रियों में विवाह करने वाले लेवियों में योजाबाद, शिमी, केलायाह (जिसका दूसरा नाम कलीता था), पतह्याह, यहूदा और एलीएजेर थे।

[24]वहाँ पर संगीतकार एल्याशीब था। मन्दिर के पहरेदारों में शल्लूम, तेलेम और ऊरी थे।

[25]इस्राएलियों के अन्य नामों की सूची यह है {जिन्होंने विदेशी पत्नियों से विवाह किया था}:

परोश के घराने में रम्याह, यिज्जियाह, मल्किय्याह, मिय्यामीन, एलीआजर, मल्किय्याह और बनायाह थे।

[26]एलाम के घराने में से मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलिय्याह थे।

[27]जत्तू के घराने में से एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अज़ीज़ा थे।

[28]बेबै के घराने में यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै थे।

[29]बानी के घराने में से मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब और शाल और यरेमोत थे।

[30]पहत्मोआब के घराने में से अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे थे।

[31]हारीम के घराने में से एलीएजेर, यिश्शियाह, मल्किय्याह, शमायाह, शिमोन, [32]बिन्यामीन, मल्लूक और शेमर्याह थे।

[33]हाशूम के घराने में से मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी थे।

[34]बानी के घराने में मादै, अम्राम, ऊएल, [35]बनायाह, बेदयाह, कलूही, [36]वन्याह, मरेमोत, एल्याशीब, [37]मत्तन्याह, मत्तनै और यासू थे।

[38]बिन्नूई के घराने में से शिमी, [39]शेलेम्याह, नातान, अदायाह, [40]मक्नदबै, शाशै, शारै, [41]अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह, [42]शल्लूम, अमर्याह और यूसुफ थे।

[43]नबो के घराने में यीएल, मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, यद्दई, योएल और बनायाह थे। [44]उन सब पुरुषों ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया था जो इस्राएली नहीं थीं।
उनमें से कुछ ऐसी स्त्रियाँ थीं जिन्होंने बच्चे जन्में थे।

नहेम्याह

Chapter 1

1मैं हकल्याह का पुत्र नहेम्याह हूँ। {मैं ही इस विवरण को लिख रहा हूँ।}

मेरी कहानी किसलेव के महीने में राजा अर्तक्षत्र के शासन {फारसी साम्राज्य पर} के बीसवें वर्ष के दौरान आरम्भ होती है। मैं शूशन नामक राजधानी वाले शहर
में था। 2मेरे भाइयों में से एक, हनानी, यहूदा प्रान्त के कुछ अन्य लोगों के साथ मुझ से मिलने आया था। मैंने उनसे उन यहूदियों के बारे में पूछा जो बँधुवाई से छूट थे और {कई वर्षों पहले} यहूदा में बचे रहे थे जब सैनिकों ने कई यहूदियों को {बाबेल जाने के लिए} मजबूर किया था। मैंने यरूशलेम शहर का {हालत} के बारे में भी पूछा।

3उन्होंने मुझ से कहा, “कि बँधुआई से छूटकर आने वाले यहूदी और यहूदा के प्रान्त में बचे रहने वालों की दशा बहुत बुरी है। {बाबेल के सैनिकों ने} यरूशलेम की दीवार को {शहर में घुसने के लिए} तोड़ दिया है, और {उन्होंने} इसके सभी फाटकों को जला दिया। {वहाँ रहने वाले} लोग बिना बचाव के हैं।”

4जब मैंने इन बातों के बारे में सुना, तो मैं बैठ गया और रोने लगा। मैं कई दिनों तक विलाप करते रहा। मैं बिना भोजन के रहा, और मैंने स्वर्ग में वास करने वाले परमेश्वर से प्रार्थना की।

5मैंने कहा, “हे यहोवा, तू वही परमेश्वर है जो स्वर्ग में विराजमान है। तू महान और भययोग्य परमेश्वर है। तुझ से प्रेम रखने वालों के लिए और तेरी आज्ञाओं का
पालन करने वालों के लिए तू सदा अपने प्रतिज्ञाओं को सच्चाई से पूरा करता है। 6अब कृपया मेरी ओर कान लगा और मेरी प्रार्थना को सुन जिसे मैं अब तुझ से
कर रहा हूँ, जैसा कि मैं निरन्तर तेरे चुने हुए लोगों, इस्राएल के लोगों के लिए करता हूँ। मुझे उन पापों को अंगीकार करना चाहिए जो हम, इस्राएल के लोगों ने
तेरे विरुद्ध किए हैं। दोनों मैंने और मेरे परिवार ने भी पाप किया है। 7हमने तेरे साथ अत्याधिक दुष्टता की है। {कई वर्षों पहले} तूने अपने सेवक मूसा के द्वारा हमें अपनी व्यवस्था दी। पर हम ने तेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया।

8उस प्रतिज्ञा की सुधि ले जो तूने अपने सेवक मूसा से की थी। तूने उस से कहा था कि, यदि हे इस्राएल तू मेरी आज्ञाओं को न मानें, तो मैं तुझे तेरे देश में से
निकाल दूँगा और तुझे अन्य जातियों के बीच में बसा दूँगा। 9परन्तु यदि तुम फिर से मेरे प्रति विश्वासयोग्य हो जाओ और मेरी आज्ञाओं को फिर से मानना आरम्भ करो, तब मैं तुम्हें {यहूदा के तुम्हारी जन्मभूमि में} वापस ले आऊँगा। यही वह स्थान है जहाँ {से} मैंने स्वयं के वैभव को दिखाने के लिए पूरे संसार में चुना है। मैं ऐसा करूँगा चाहे तुम कितनी ही दूर क्यों न चले गए हों।’

10हम तो तेरी चुनी हुई प्रजा हैं, जिन्हें तूने {मिस्र की गुलामी से} छुड़ाया है। {तूने ऐसा आसानी से किया क्योंकि} तू बहुत सामर्थी है। 11हे मेरे प्रभु, मेरी प्रार्थना
पर और {मेरे संगी इस्राएलियों} की प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। हम तेरा आदर करने के लिए उत्सुक हैं। कृपया ऐसा होना दे कि राजा {उस विनती के लिए सहमत हो जिसे मैं शीघ्र उससे करने वाला हूँ}। उस समय, मैं राजा की {मेज} पर {एक महत्वपूर्ण अधिकारी जो दाखमधु परोसता था} था।

Chapter 2

1मैंने चार महीनों तक ऐसे ही प्रार्थना की। फिर एक दिन नीसान के महीने में, अर्तक्षत्र के राज्य के बीसवें वर्ष में, कुछ घटित हुआ। {जब परोसने का समय हुआ} दाखमधु, मैंने इसमें से कुछ ली और राजा को दे दी। मैं उसके सामने पहले कभी उदास नहीं हुआ था।

2{राजा के सामने किसी को भी अप्रसन्न नहीं दिखना चाहिए था। पर राजा ने देखा कि मैं उदास लग रहा था।} इसलिए उसने मुझसे पूछा, “तू उदास क्यों है? मैं बता सकता हूँ कि आप बीमार तो नहीं हैं। तू अवश्य ही किसी बात को लेकर अप्रसन्न है। "इससे मैं अत्याधिक डर गया।

3मैंने राजा को उत्तर दिया, " हे महाराजाधिराज, मैं आशा करता हूँ कि राजा {बहुत लंबे समय तक} जीवित रहेगा! {मुझे दु:ख है, पर मैं उदास हुए बिना नहीं रह सकता हूँ।} मैं इसलिए उदास हूँ क्योंकि यरूशलेम शहर, जहाँ मेरे पूर्वजों को दफनाया गया था, उजाड़ पड़ा है। {हमारे शत्रुओं} ने इसके फाटकों को जला दिया है।”

4राजा ने मुझे उत्तर दिया, "तू क्या चाहता है {कि मेरे तेरे लिए करूँ}?" {उसे उत्तर देने से पहले}, मैंने उस परमेश्वर से प्रार्थना की जो स्वर्ग में विराजमान है।

5तब मैंने राजा को उत्तर दिया, "यदि राजा को यह {विचार} अच्छा लगे, और राजा मुझ से प्रसन्न हो, तो मुझे {कृपया} यहूदा, यरूशलेम में जाने की आज्ञा दे। {मैं चाहता हूँ} कि मैं उस शहर का पुनर्निर्माण करने में {अपने लोगों की सहायता करूँ} जहाँ मेरे पूर्वजों को दफनाया गया है।

[6]{मैं आजादी से बोल रहा था क्योंकि यह एक निजी भोजन था,} रानी के साथ जो राजा के बगल में बैठी थी। राजा ने मुझसे पूछा, " तू कब तक दूर रहेगा? "मैंने उससे कहा कि जब तक मुझे जाने दिया जाएगा। यह उसे स्वीकार्य था, और उसने मुझे जाने की अनुमति दी। इसलिए मैंने उसे बताया कि किस दिन {मैं जाना चाहता था}।

[7]मैंने राजा से यह भी कहा, " यदि यह तुझे एक अच्छा {विचार} जान पड़े, तो {कृपया} मुझे नदी से परे {प्रांत} के राज्यपालों के लिए पत्रों {जिसे मैं दिखा सकूँ} को दे। इन पत्रों में, मुझे उनके प्रांत से यहूदा जाने के लिए {सुरक्षित} मार्ग देने के लिए {कृपया उसने कह}। [8]{कृपया} साथ ही {मेरे लिए} आसाप को एक पत्र {लिखे}, वह व्यक्ति जो तेरे राजकीय जंगल की {उस क्षेत्र में} देखभाल करता है। {कृपया कह} उससे कि वह मुझे मन्दिर के पास किले के फाटकों की सहायता के लिए कड़ियों को बनाने के लिए लकड़ी दे। {कृपया} साथ ही शहरपनाह और जिस घर में मैं रहूँगा उसके लिए भी {उसे मुझे लकड़ी देने के लिए कह}।

परमेश्वर मेरे साथ था और मेरी सहायता कर रहा था, और इसलिए राजा मेरे {सभी} {निवेदनों} के लिए सहमत हो गया।

[9]{जब मैं यहूदा की यात्रा पर निकला,} तो राजा ने घोड़ों पर सवार कुछ सैनिकों और सैन्य अधिकारियों को {मेरी रक्षा के लिए} साथ भेजा। जब मैं नदी से परे {प्रान्त} पहुँचा, तो मैं उसके राज्यपालों {से मिलने} के लिए पास गया। मैंने उन्हें वे पत्र दिखाए जो राजा ने मुझे दिए थे, {और उन्होंने मुझे जाने के लिए सुरक्षित मार्ग दिया}।

[10]{जिन लोगों को मैंने अपने पत्र दिखाए उनमें से एक था} होरोनी सम्बल्लत। {वह यहूदा के ठीक पास के क्षेत्र सामरिया का राज्यपाल था।} वह और उसका सहायक, अम्मोनी तोबियाह, बहुत ज्यादा परेशान हो गए जब उन्हें पता चला कि कोई इस्राएल के लोगों की सहायता करने के लिए आया है। {वे यहूदा को फिर से दृढ़ होते नहीं देखना चाहते थे, क्योंकि यह सामरिया के लिए खतरा बन जाएगा।} [11]पर मैंने यरूशलेम के लिए {उनके विरोध के बावजूद} इसे {सुरक्षित} बना दिया। मैं वहाँ तीन दिन रहा,

[12]मैंने यह {सार्वजनिक रूप से} नहीं कहा कि परमेश्वर मुझे यरूशलेम के लिए क्या करने के लिए अगुवाई दे रहा था। इसके बजाय, मैं {चुपके से} रात में {शहर की दीवारों का निरीक्षण करने के लिए} उठा। मैं अपने साथ कुछ ही और पुरुषों को ले कर आया था। {ताकि हम चुपचाप काम कर सकें,} मैं अपने साथ केवल वही पशु लाया था जिस पर मैं सवार था।

[13]उस रात हम तराई के फाटक से निकले और अजगर के सोते से होते हुए कूड़ा फाटक तक गए। हमने यरूशलेम की शहरपनाह का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया। हमने {ध्यान दिया जहाँ हमारे शत्रुओं ने} दीवारों को तोड़ दिया था, और {जहाँ} उन्होंने लकड़ी के फाटकों को जला दिया था। [14]फिर हम सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास आए। {वहाँ का मार्ग इतना अधिक संकरा था कि} जिस पशु पर मैं सवार था उसमें से वह नहीं निकल सकता था। [15]इस तरह हमने {किद्रोन} के नाले {के मार्ग} का अनुसरण किया, {भले ही} यह रात थी। {वहाँ से} हम दीवार पर {ऊपर} देखने में सक्षम थे {और उसकी स्थिति देखी}। {यह मार्ग} हमें {जहाँ से हमने आरम्भ किया था वहीं} वापस ले आया। हमने तराई के फाटक से {शहर} में फिर से प्रवेश किया, और मैं {बिना किसे के देखे घर} वापस चला गया।

[16]शहर के अधिकारी नहीं जानते थे कि मैं कहाँ गया था या मैं क्या कर रहा था। उस समय तक मैंने यहूदी अगुवों, याजकों, अग्रणी नागरिकों, या शहर के अधिकारियों से {इसके बारे में} कुछ नहीं कहा था। {मैंने सम्पर्क नहीं किया था} किसी से काम {के बारे में} कि {दीवारों के पुनर्निर्माण} होना है।

[17]{पर} अब मैंने उनसे कहा, "तुम देख रहे हो कि हम कितनी विकट स्थिति में हैं। तुम तो आप देखते हो कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा है, और {हमारे शत्रुओं} ने उसके फाटकों को जला दिया है। कुछ करना {इसके बारे में} {हमें अवश्य है!} {मैं तुम सभी को चुनौती देता हूँ} यरूशलेम की शहरपनाह के पुनर्निर्माण में मेरे साथ शामिल हों। तब हमें और अधिक शर्मिंदगी महसूस नहीं करनी पड़ेगी।" [18]तब मैंने उन्हें बताया कि कैसे परमेश्वर मेरे साथ है और मेरी मदद कर रहा है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि कैसे राजा ने मुझे आने की अनुमति दी थी।

{जब उन्होंने यह सुना,} उन्होंने कहा, "चलो चलते हैं और निर्माण आरम्भ करते हैं!" उन्होंने परियोजना के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित किया {और स्वयं को इसके लिए समर्पित किया}।

[19]तब होरोनी सम्बल्लत, उसके सहायक अम्मोनी तोबियाह, और अरबी गेशेम ने सुना {कि हमने यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनाना आरम्भ कर दिया है}। उन्होंने निर्दयतापूर्वक हमें ठट्ठों में उड़ाया। उन्होंने कहा, "जो तुम कर रहे हो उससे कुछ नहीं होने वाला है! {पर} तुम्हें राजा के विरुद्ध {उस तरह से} विद्रोह नहीं करनी चाहिए!"

[20]पर मैंने उन्हें {दृढ़ता से} उत्तर दिया। मैंने कहा, "स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर ही वह है जो हमें इस परियोजना को पूरा करने में सक्षम करेगा। हम उसके चुने हुए लोग हैं। हम पुनर्निर्माण आरम्भ करने जा रहे हैं। पर यरूशलेम में जो कुछ घटित हो रहा है उससे तुम्हारा कोई लेना देना नहीं है।”

Chapter 3

[1]{ये उन लोगों के नाम हैं जिन्होंने यरूशलेम के चारों ओर की दीवार को फिर से बनाने में सहायता की।} एल्याशीब महायाजक और उनके संगी याजकों ने भेड़ फाटक का पुनर्निर्माण आरम्भ किया। उन्होंने इस फाटक की {पूरी दीवार को प्रतीकात्मक रूप में समर्पित करने के लिए परमेश्वर को समर्पित किया।} फिर उन्होंने भेड़ फाटक के दरवाजे उसके स्थान में खड़े किए। उन्होंने 100 सैनिकों के गुम्मट तक और {उससे परे} हननेल के गुम्मट तक की दीवार को फिर से बनाया। फिर उन्होंने दीवार के उस हिस्से को भी {परमेश्वर को} एक दीवार के रूप में समर्पित कर दिया।

2उससे आगे, यरीहो के लोगों ने {दीवार का एक भाग} फिर से बनाया।

उससे आगे, इम्री के पुत्र जक्कूर ने {दीवार का एक हिस्सा} फिर से बनाया।

3हस्सना के पुत्रों ने मछली फाटक को फिर से बनाया। उन्होंने इसे कड़ियों {लकड़ी} के ढ़ाँचे के साथ खड़ा किया, उन्होंने इसके दरवाजों को उसके स्थान में खड़ा किया, और उन्होंने इसके पल्ले और बेंड़े {फाटक में ताले लगाने के लिए} लगाए।

4इसके बाद, ऊरिय्याह के पुत्र और हक्कोस के पोते मरेमोत ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की।

उसके आगे बेरेक्याह के पुत्र और मशेजबेल के पोते मशुल्लाम ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की।

इसके बाद, बाना के पुत्र सादोक ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की।

5इसके बाद, तकोआ के कुछ लोगों ने {दीवार के एक भाग} की मरम्मत की। पर तकोआ के अग्रणी नागरिक उस काम को करने में अत्याधिक घमण्ड महसूस कर रहे थे जिसे {यहूदा के अगुवों ने उन्हें करने के लिए कहा था}।

6पासेह के पुत्र योयादा और बसोदयाह के पुत्र मशुल्लाम ने पुराने फाटक की मरम्मत की। उन्होंने इसे कड़ियों {लकड़ी} के ढ़ाँचे के साथ खड़ा किया, उन्होंने इसके दरवाजों को उसके स्थान में खड़ा किया, और उन्होंने इसके पल्ले और बेंड़े {फाटक में ताले लगाने के लिए} लगाए।

7इसके बाद, गिबोन {शहर} से मलत्याह, मेरोनोती {शहर} से यादोन, और गिबोन के और मिस्पा {शहर} के अन्य लोगों ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की। उन्होंने नदी से परे {प्रांत} के राज्यपाल के निवास स्थान तक इसकी मरम्मत की।

8इसके बाद, हर्हयाह के पुत्र उज्जीएल ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की। वह सुनारों में से एक था, {सोने से बनने वाले गहने और अन्य वस्तुओं को बनाने वाले श्रमिक}।

इसके बाद, हनन्याह ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की। वह इत्रों को बनाने वाले श्रमिकों में से एक था। उन्होंने यरूशलेम की शहरपनाह को चौड़ी शहरपनाह जैसा फिर से बनाया।

9इसके बाद, हूर के पुत्र रपायाह ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की। रपायाह ने यरूशलेम के आधे जिले पर शासन किया।

10इसके बाद, हरुमप के पुत्र यदायाह ने उसके घर के पास {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की।

उसके आगे हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की।

11हारीम के पुत्र मल्किय्याह और पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने भट्टियों के गुम्मट समेत {दीवार के} एक और भाग की मरम्मत की।

12इसके बाद, हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम ने {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की। शल्लूम ने यरूशलेम जिले के {अन्य} आधे हिस्से पर शासन किया। उसकी पुत्रियाँ उसके साथ मरम्मत का काम करती थीं।

13हानून और जानोह {शहर} के कुछ लोगों ने तराई के फाटक की मरम्मत की। उन्होंने फाटक को फिर से बनाया, उन्होंने इसके दरवाजे उसके स्थान पर खड़े किए, और उन्होंने इसके दरवाजों को उसके स्थान में खड़ा किया, और उन्होंने इसके पल्ले और बेंड़े {फाटक में ताले लगाने के लिए} लगाए। उन्होंने 1500 फीट की दीवार की भी मरम्मत कूड़ा फाटक तक की।

14रेकाब के पुत्र, मल्किय्याह ने कूड़ा फाटक की मरम्मत की। मल्किय्याह ने बेथक्केरेम जिले पर शासन किया। उसने फाटक का पुनर्निर्माण किया, उसने उसके दरवाजों को उसके स्थान में खड़ा किया, और उसने इसके पल्ले और बेंड़े {फाटक में ताले लगाने के लिए} लगाए।

15कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने सोता फाटक की मरम्मत की। शल्लूम ने मिस्पा जिले पर शासन किया। उसने फाटक को फिर से बनाया और उसके ऊपर छत डाली, उसने उसके दरवाजों को उसके स्थान में खड़ा किया, और उसने इसके पल्ले और बेंड़े {फाटक में ताले लगाने के लिए} लगाए। शलेह नामक कुण्ड के पास उसने राजभवन के वाटिका के पास की दीवार की भी मरम्मत की, जहाँ तक सीढ़ियाँ थीं, जो दाऊदपुर से नीचे उतरती थीं।

16इसके बाद, अजबूक के पुत्र नहेम्याह ने दाऊद {के शहर} में कब्रों के साम्हने तक लोगों के बनाए हुए जलकुण्ड और सैन्य छावनियों तक {दीवार की} मरम्मत की। नहेम्याह ने बेतसूर के आधे जिले पर शासन किया।

17इसके बाद, कुछ लेवियों ने {दीवार के कुछ भाग की} मरम्मत की। उनमें से एक बानी का पुत्र रहूम था। इसके बाद, कीला के आधे जिले पर शासन करने वाले हशब्याह ने अपने जिले के लोगों की ओर से {दीवार के एक भाग की} मरम्मत की।

18{कुछ अन्य लेवियों ने} अगली {दीवार के भाग} की मरम्मत की। इसके बाद, कीला जिले के दूसरे आधे भाग पर शासन करने वाले हेनादाद के पुत्र बव्वै ने {दीवार के अधिकांश भाग} मरम्मत की।

19इसके बाद, येशुअ के पुत्र एजेर ने {दीवार के} दूसरे भाग की मरम्मत की। एजेर ने मिस्पा {नगर} पर शासन किया। {उसने आरम्भ किया} सीढ़ियों के सामने एक स्थान से जो शस्त्रों को रखने के भण्डारगृह तक जाता था, {और उसने समाप्त किया} उस स्थान पर जहाँ दीवार थोड़ी नीचे झुकती है।

20इसके बाद, जब्बै के पुत्र बारूक ने बड़े उत्साह के साथ एक और भाग की मरम्मत की, जो दीवार के सिरे से लेकर महायाजक एल्याशीब के घर के दरवाजे तक जाती थी।

21इसके बाद, ऊरिय्याह के पुत्र मरेमोत और हक्कोस के पोते ने एल्याशीब के घर के दरवाजे से लेकर उस भवन के सिरे तक दूसरे भाग की मरम्मत की।

22इसके बाद, {यरूशलेम} के आसपास के क्षेत्र के कुछ याजकों ने {दीवार के एक भाग} की मरम्मत की।

23इसके बाद, बिन्यामीन और हशशूब ने अपने घर के सामने {एक भाग} की मरम्मत की।

मासेयाह के पुत्र और अनन्याह के पोते अजर्याह ने उसके घर के पास के अगले {भाग} की मरम्मत की।

24इसके बाद, हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने अजर्याह के घर से लेकर शहरपनाह तक की प्राचीर तक एक और भाग की मरम्मत की। 25{इसके बाद,} ऊजै के पुत्र पालाल {ने एक भाग की मरम्मत की}। उसने दीवार में सिरे के साम्हने के स्थान को भरना आरम्भ किया {जहाँ} प्रहरीदुर्ग उस ऊपरी महल से ऊँचा है जिसे राजा {सुलैमान ने बनवाया था}। वह आँगन के पास है जहाँ पहरेदार रहते हैं। इसके बाद, परोश का पुत्र पदायाह {ने एक भाग की मरम्मत की}।

26मन्दिर के सेवक जो ओपेल {पहाड़ी} पर रहते थे {ने दीवार की मरम्मत की} वहाँ तक जहाँ तक जल फाटक का पूर्वी भाग है, {जहाँ है} एक ऊँचा गुम्मट।

27इनके बाद, तकोइयों ने ओपेल {पहाड़ी} की दीवार तक बहुत ऊँचे प्रहरीदुर्ग के साम्हने से एक और भाग की मरम्मत की।

28याजकों के एक समूह ने घोड़ेफाटक से आरम्भ करके {दीवार} मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के साम्हने {भाग} की मरम्मत की।

29इनके बाद, इम्मेर के पुत्र सादोक ने अपके घर के साम्हने मरम्मत की।

तब पूर्वी फाटक के द्वारपाल शकन्याह के पुत्र शमायाह ने अगले {भाग} की मरम्मत की।

30उसके बाद, शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के छठवें पुत्र हानून ने दूसरे भाग की मरम्मत की।

उनके बाद, बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने उन कमरों के साम्हने {भाग} की मरम्मत की {जहाँ} वह रहता था।

31मल्किय्याह, जो सुनारों में से एक {और} था, ने अगले {भाग} की मरम्मत की वहाँ तक जहाँ तक मंदिर के सेवकों और व्यापारियों द्वारा उपयोग किए जाने वाला भवन था। वह भवन ठहराए हुए फाटक के साम्हने था। उसने {दीवार को फिर से बनाया} वहाँ तक जहाँ तक कि {इस भवन} की कोने वाली पहिरौठी कोठरियाँ थीं।

32कुछ {अन्य} सुनारों ने, कुछ व्यापारियों के साथ, कोने की कोठरियों से भेड़ फाटक तक {दीवार के अंतिम भाग} की मरम्मत की।

Chapter 4

1जब सम्बल्लत ने सुना कि हम {शहर} दीवार बना रहे हैं, तो वह आग बबूला हो गया, और उसने यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाया।

2उसने {अन्य प्रान्तीय} अधिकारियों और सेना के अधिकारियों से बात की। उसने कहा, “ये कमजोर यहूदी कुछ भी कर पाने में सक्षम नहीं होंगे! वे कभी भी बहाल नहीं कर पाएँगे {शहर! उनका परमेश्वर} उनकी सहायता नहीं करेगा। उन्हें नहीं पता है कि मरम्मत करने में कितना समय लगेगा {वह दीवार। एक ही तरीका है} जिसमें वे पत्थरों को कचरे के ढेरों में से निकाल कर प्राप्त कर सकते {हैं}। और {वैसे भी} {बाबेल के लोगों} ने {शहर को जला दिया, इसलिए वे} पत्थर शायद कमजोर हैं। "

3अम्मोनी तोबियाह सम्बल्लत के पास ही खड़ा था। उसने यह कहकर यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाया, “ठीक है! वे जिस दीवार का निर्माण कर रहे हैं {इतनी कमजोर है} कि यदि लोमड़ी भी {उसके ऊपर} चढ़े तो वह गिर जाएगी!"

4{जब मैंने सुना कि वे क्या कह रहे हैं, तो मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की और कहा, "हे हमारे परमेश्वर, सुन {उस तरीके को} वे हमें ठट्ठों में उड़ा रहे हैं! {हमें रोकने के उनके प्रयासों को विफल कर,} दें ताकि {अन्य} लोग उन्हें ठट्ठों में उड़ा सकें! उनके शत्रुओं को उन्हें बँधुवा बनाने दें और उन्हें एक विदेशी भूमि पर जाने के लिए मजबूर कर! 5{वे दोषी हैं, और उन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है।} उनका दोष उनसे न हटा, और उनके पाप को अनदेखा न कर! {मैं यह कह रहा हूँ} क्योंकि वे दूसरों को भी उन लोगों पर रिस दिला रहे हैं जो दीवार बना रहे हैं!

6पर हम दीवार बनाते रहे, {और कुछ समय बाद,} हमने पूरे शहर के चारों ओर की दीवार को आवश्यक ऊँचाई से लगभग आधा बना दिया। इसे पूरा करने के
लिए सभी ने ठान लिया था।

7पर जब सम्बल्लत, तोबियाह, अरब {की भूमि के} लोगों, अम्मोन {देश के} लोगों, और अशदोद के लोगों ने सुना कि हम यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत
करने और उसके सुराखों को भरने के काम में लगे हुए हैं, तो वे अत्याधिक क्रोधित हो गए। 8उन सब ने मिलकर यरूशलेम के लोगों के पास आने और लड़ने की
योजना बनाई। वे शहर के अंदर के लोगों को भ्रमित {और विभाजित} करना चाहते थे। 9पर हमने अपने परमेश्वर से {हमारी रक्षा करने के लिए} प्रार्थना की, और
हमने उन पर सब समय नजर रखने के लिए {दीवारों पर} पहरुओं को तैनात कर दिया।

10तब यहूदा के लोग कहने लगे, “जो लोग {पत्थरों} को ढो रहे हैं उनका बल घटता चला जा रहा है। कचरा बहुत ज्यादा है। हम दीवार को फिर से बना कर
{समाप्त} करने में सक्षम नहीं हो रहे हैं।”

11तब हमारे शत्रुओं ने यह कहना {आरम्भ} किया, " इससे पहले कि {यहूदी} यह जाने कि हम आ रहे हैं, हम उन पर धावा {बोल} देंगे और उन्हें मार डालेंगे
और {दीवार पर} चलने वाला उनका काम बंद कर देंगे! "

12और जब कुछ यहूदी जो {हमारे शत्रुओं} के पास रहते थे, वे {यरूशलेम में} आए, तो उन्होंने बार-बार हमसे यह विनती की, " हमारे {पुरुषों को} लौटने दे {घर
ताकि} वे {हमारी रक्षा कर} सकें! "

13पर मैंने दीवार के पीछे उन स्थानों पर {पहरुओं} को तैनात कर दिया जहाँ वे कम थे या जहाँ पर ज्यादा सूराख थे। मेरे पास प्रत्येक परिवारिक समूह से लोग
तलवारें, बर्छियाँ और धनुष और तीरों के साथ खड़े किए हुए {पहरुए} थे। 14मेरे द्वारा {सब कुछ} का निरीक्षण कर लेने के बाद, मैंने मुख्य नागरिकों और शहर
के अधिकारियों और कई अन्य लोगों को बुलाया, और मैंने उनसे कहा, " हमारे शत्रुओं से ना डरो! प्रभु महान् और भययोग्य है, {इसलिए} सोचो कि {वह क्या
कर सकता है}। और अपने परिवारों, अपने पुत्रों और पुत्रियों, अपनी पत्नियों और अपने घरों की {रक्षा} के लिए लड़ो! "

15जब हमारे शत्रुओं को पता चला कि हमें {उनकी योजना} के बारे में पता चल गया है, तो उन्हें अहसास हुआ कि परमेश्वर ने उन्हें {अचानक से आक्रमण करने
से} रोक रखा है। {उन्होंने हम पर आक्रमण नहीं करने का निर्णय लिया।} इसलिए हम सब दीवार पर {काम करने} के लिए लौट गए। प्रत्येक व्यक्ति {उसी}
कार्य {को पहले की तरह} करता रहा। 16पर उसके बाद, मेरे {केवल} आधे सेवकों ने ही {दीवार पर} काम किया। उनमें से अन्य आधे बर्छियों, ढालों, धनुषों
और तीरों, और झिलमों से लैस {खड़े हुए पहरुए} थे। अधिकारी कर्मचारियों और पहरुओं के पीछे {सभी को प्रोत्साहित करने और आक्रमण की स्थिति में
आदेश देने के लिए} {खड़े थे}। 17जो लोग दीवार बना रहे थे और भारी बोझ को ढोने वालों के पास {सदैव} उनके हथियार होते थे {ताकि वे आक्रमण की
स्थिति में लड़ने के लिए तैयार रहें}। 18प्रत्येक राजमिस्त्री अपनी कमर में बँधी हुई तलवार के साथ काम करता था। {यदि हमें संकेत की आवश्यकता पड़ती है}
तो मेरी बगल में नरसिंगे को फूँकने के लिए किसी एक को {मैंने तैनात किया}।

19तब मैंने मुख्य नागरिकों, नगर के अधिकारियों, और बहुत से अन्य लोगों से कहा, " हम एक बहुत ही विशाल क्षेत्र में काम कर रहे हैं, और हम दीवार पर एक
दूसरे से बहुत दूर रहते हैं। 20पर जहाँ कहीं तुम {पुरुष} को नरसिंगा बजाते हुए सुनो, उस स्थान पर हमारे चारों ओर इकट्ठा हो जाओ। हमारा परमेश्वर हमारे लिए
लड़ेगा!”

21इसलिए हम {दीवार के पुनर्निर्माण पर} काम करते रहे। आधे पुरुषों ने {पहरुओं के रूप में सेवा की} और अपने शस्त्रों को {हर} समय तैयार रखा। 22उस
समय, मैंने लोगों से यह भी कहा, "प्रत्येक {काम करने वाले} और उसके सेवक को यरूशलेम के भीतर रात बितानी चाहिए {और यदि वे शहर से बाहर रहते हैं
तो घर न जाएँ}। {इस तरह} शहर में रात में बहुत सारे रक्षक होंगे {यहाँ तक कि}, और वे {अभी भी} दिन के समय {दीवार पर} काम कर सकते हैं। 23{उस
समय} हममें से किसी ने भी अपने कपड़े नहीं उतारे थे। मैंने नहीं, और मेरे भाइयों, मेरे सेवकों, और मेरे निजी अंगरक्षकों ने भी नहीं। हम में से प्रत्येक के पास
{सदैव} हमारे शस्त्र {हमारे साथ} होते थे, {यहाँ तक कि जब हम सफाई के लिए पानी के पास जाते थे}।

Chapter 5

1{लगभग इसी समय,} बहुत से पुरुषों और उनकी पत्नियों ने इस बात के बारे में कटुता भरी शिकायत की कि उनके साथी यहूदी उनके साथ क्या कर रहे हैं।

2उनमें से कुछ ने यह कहना आरम्भ किया, “हमारे पास कई बच्चे हैं। हमें उन {सभी} को खिलाने के लिए {बहुत सारे} भोजन की आवश्यकता है। "

3दूसरों ने कहा, " हमें किसी को अपने खेत, दाख की बारियाँ और घर देने की प्रतिज्ञा करनी पड़ी है, यदि हम उस पैसे का भुगतान नहीं करते हैं जिसे {उसने}
हमें उधार दिया है। हमें उस समय में भोजन खरीदने के लिए {पैसे उधार लेने} लेने पड़े थे जब भोजन मिलना कठिन था।”

4फिर भी दूसरों ने कहा, "हमारे खेतों और हमारी दाख की बारियों पर हमें उन करों का {भुगतान} करने के लिए पैसे उधार लेने पड़े हैं जिसे हमें राजा ने
{भुगतान करने की आज्ञा दी थी}। 5{इस तरह बुरी बातें घटित हुईं हैं।} हम अपने बच्चों को गुलामी में बेच रहे हैं। सच्चाई तो यह है कि, हमने अपनी कुछ पुत्रियों
को भी बेच दिया है। हमारे लेनदारों ने खेतों और दाख की बारियों {हमने ऋण के लिए गिरवी रखने के लिए प्रतिज्ञा की थी} को ले लिया है, इसलिए हम और
कुछ {भी} नहीं कर सकते थे। परन्तु हम यहूदी हैं, ठीक उन लोगों की तरह जो हमारे साथ इन कामों को कर रहे हैं!”

[6]जब मैंने ये बातें सुनीं तो मुझे अत्याधिक गुस्सा आया जिसके बारे में वे शिकायत कर रहे थे। [7]मैंने बहुत ज्यादा सोचा कि क्या करूँ। तब मैंने मुख्य नागरिकों और नगर के अधिकारियों के विरुद्ध आरोप लगाए। मैंने लोगों के एक बड़े समूह को उन पर लगे आरोपों को {सुनने के लिए} बुलाया। मैंने इन अगुवों से कहा, “तुम अपने ही संगी यहूदियों से {ऋण पर} ब्याज ले रहे हो। {तुम जानते हो कि मूसा की व्यवस्था में इसकी मनाही है}।”

[8]मैंने उनसे कहा, " जब भी हमारे संगी यहूदियों को अपने आप को {अन्य} राष्ट्रों के लोगों की गुलामी में बेचना पड़ा है, हम उन्हें अपनी शक्ति {के अनुसार} खरीद कर वापस लाए हैं। पर तुम तो वास्तव में अपने संगी यहूदियों को ही गुलामी में बेच रहे हैं ताकि तुम उस धन को पा सको जो तुमने उन्हें दिया था। ये कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें हम वापस खरीद रहे हैं! "वे जानते थे कि ये आरोप सही थे, इसलिए प्रतिक्रिया में वे कुछ भी नहीं कह सकते थे।

[9]तब मैंने उनसे कहा, “तुम जो कर रहे हो वह गलत है! तुम्हें निश्चय ही परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए और वही करना चाहिए जो सही है! नहीं तो हमारे शत्रु हमारा और भी ठट्ठा करेंगे। [10]मैं आप, और मेरे संबंधी और मेरे सेवक धन और अनाज {बिना ब्याज लिए किसी को भी उधार देते रहे हैं}। हम सभी को कर्ज पर ब्याज लेना बंद कर देना चाहिए। [11]उन्हें उनके खेत, दाख की बारियाँ, जैतून के वाटिकाएँ और घर वापस लौटा दो। ऐसा तुरंत करो! और धन, अनाज, दाखमधु, और जैतून के तेल पर जो तुमने उन्हें उधार में दिया है, उसका 12% वार्षिक {ब्याज जो तुम इकट्ठा कर रहे हो} वापस लौटा दो।"

[12]इन अगुवों ने उत्तर दिया, “हाँ, हम वही करेंगे जो तुम कहोगे। हम {उनके खेतों, दाख की बारियों, जैतून की वाटिकाओं, और घरों को} लौटा देंगे। और हम उनसे {ब्याज} {लेना} बंद कर देंगे। "

तब मैंने याजकों को बुलाया, और अगुवों को {परमेश्वर के साम्हने} शपथ दिलाई कि वे वही करेंगे जो उन्होंने करने की प्रतिज्ञा की थी। [13]मैंने अपने वस्त्र की सिलवटों को हिलाते हुए फटका और उनसे कहा, " जो कोई इस शपथ को नहीं मानेगा इसी रीति से परमेश्वर उसको उसके सब कुछ से फटक दे। हाँ, वह व्यक्ति अपना सब कुछ खो दे!”

तब वहाँ उपस्थित हर एक ने यह कहा, "हम सहमत हैं!" और उन्होंने यहोवा की बढ़ाई की। उसके बाद यहूदियों में से किसी ने भी ऋण की रहन के लिए घर या खेत नहीं लिए, और उनमें से किसी ने भी आगे लिए ब्याज नहीं लिया।

[14]यहाँ कुछ और बात भी है जिसे मैंने लोगों की सहायता के लिए किया। {फारस के} राजा, अर्तक्षत्र, ने मुझे {उसके शासन के} बीसवें वर्ष से यहूदा {प्रांत} का राज्यपाल नियुक्त किया था। उसके द्वारा मुझे नियुक्त करने के बारह वर्षों में अपने शासन के बत्तीसवें वर्ष तक, मैंने राज्यपाल के भोजन भत्ते को स्वीकार नहीं किया, और अपने संबंधियों को {मैंने इसे खिलाने के लिए भी उपयोग नहीं किया}। {मैं जानता था कि लोग गरीब थे और इसके लिए भुगतान नहीं कर सकते थे।} [15]मुझसे पहले के राज्यपालों ने लोगों के लिए जीवन अत्याधिक कठिन बना दिया था। उन्होंने माँग की थी कि लोग उन्हें प्रतिदिन रोटी और दाखमधु और चाँदी के चालीस शेकेल प्रदान करें। यहाँ तक कि उनके सेवकों ने भी लोगों का उत्पीड़न किया था। परन्तु मैंने परमेश्वर का आदर और सम्मान किया, और इसलिए मैंने उन पर अन्धेर न किया। [16]मैंने अपने आप को दीवार के {पुनर्निर्माण} के काम में समर्पित कर दिया। {मेरे संबंधियों और मैंने} कोई सम्पत्ति नहीं खरीदी, {यद्यपि हम इसे सस्ते में प्राप्त कर सकते थे क्योंकि निर्धन इसे बेचने के लिए अत्याधिक हताश थे}। मैंने अपने सभी सेवकों को {दीवार पर} काम करने के लिए भी नियुक्त किया।

[17]{राज्यपाल के रूप में,} मैं 150 यहूदी अगुवों और शहर के अधिकारियों को भोजन खिलाने के लिए {उत्तरदायी था}। मैंने {यहूदी} आगंतुकों के साथ भी मुलाकातें की जो आस-पास के देशों से आए थे। [18]प्रत्येक दिन {मैंने अपने सेवकों से कहा} कि वे हमारे लिए एक बैल, छह अच्छी भेड़ें, और विभिन्न प्रकार की मुर्गियों को तैयार करें। इनके लिए मैंने आप भुगतान किया। मैं प्रत्येक दस दिन में एक बार भरपूरी के साथ विभिन्न तरह की दाखमधु को भी लेकर आता था। पर {मैं जानता था कि} लोग जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे, और इसलिए {इन सभी चीजों का मैंने अपने खर्च पर भुगतान किया}। मैंने राज्यपाल का भोजन भत्ता स्वीकार नहीं किया।

[19]हे मेरे परमेश्वर, मेरे बारे में सोच, और यहूदा के लोगों के प्रति की गई मेरी सारी भलाई के लिए मुझे प्रतिफल दे।

Chapter 6

[1]जब सम्बल्लत, तोबियाह, अरबी गेशेम, और हमारे अन्य शत्रुओं को पता चला कि हमने शहरपनाह के पुनर्निमाण को पूरा कर लिया है, और यह कि अब इसमें कोई सूराख शेष नहीं बचा था। {पर हम ने अभी तक फाटकों में पल्लों को नहीं लगाया था।} [2]तब सम्बल्लत और गेशेम ने मुझे {एक संदेश भेजा जिसमें} कहा गया था, "हम किसी एक गाँव में ओनो के मैदान में तुझसे भेंट करना चाहते हैं।" पर {मैं जानता था कि वे ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि} वे मुझे हानि पहुँचाना चाहते थे।

[3]इसलिए मैंने सन्देशवाहकों को उन्हें यह बताने के लिए भेजा, “जिस काम को मैं {यहाँ} कर रहा हूँ वह अत्याधिक महत्वपूर्ण है। {जब यह चल रहा है} मैं यात्रा करने में सक्षम नहीं हूँ। मेरे पास काम को रोकने और उसे छोड़ने का कोई कारण नहीं है ताकि मैं तुमसे भेंट कर सकूँ। "

[4]उन्होंने मुझे यही सन्देश को चार बार भेजा, और {हर बार} मैंने उन्हें इसी कारण से मना कर दिया।

[5]तब सम्बल्लत ने अपने सेवकों में से एक को पाँचवीं बार उसी विनती के साथ मेरे पास भेजा। इस बार सन्देश लिखा गया था, पर उसे मुहरबन्द नहीं किया गया था। सम्बल्लत {ने पत्र को बिना मुहर लगाए ऐसे ही छोड़ दिया ताकि अन्य लोगों को पता लगा सकें कि उसने क्या कहा है, क्योंकि वह मुझ से उससे मिलने के

लिए दबाव बनाना चाहता था}। 6पत्र में ऐसे कहा गया था, " {हमारे चारों ओर के} देशों में {रहने वाले लोग} कह रहे हैं, और गेशेम पुष्टि करता है कि {कि यह सच है}, कि तुम और यहूदी {राजा अर्तक्षत्र के विरुद्ध} विद्रोह करने की योजना बना रहे हो। इसलिए तुम दीवार का पुनर्निर्माण कर रहे हो। {वे ये भी} कह रहे हैं कि तुम स्वयं यहूदियों के राजा बनने की मनसा रखते हो। 7{ये लोग} यह भी {कह रहे हैं कि} तुमने यरूशलेम में अपने बारे में इस बात की घोषणा करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को नियुक्त किया है। वे कह रहे हैं कि, 'यहूदियों का {अब} एक {अपना} राजा है!' राजा अर्तक्षत्र इन समाचारों को अवश्य सुनेगा, {और जब ऐसा होगा, तो वह तुझ पर अत्याधिक क्रोधित होगा}। इसलिए हमें वास्तव में एक दूसरे के साथ भेंट करनी चाहिए और {इस बारे में} बात करनी चाहिए। "

8मैंने उसे यह कहते हुए {एक सन्देश} वापस भेजा, “तू जो कह रहा है उनमें से कोई भी बात सच नहीं है। तू तो केवल उन्हें अपने मन से गढ़ रहा है।”

9मुझे पता था कि वे सभी हमें केवल डराने {का प्रयास कर} रहे थे। उन्होंने सोचा था कि, " {यहूदी बहुत ज्यादा भयभीत हो जाएँगे जिससे} वे {दीवार बनाने का} काम करना बंद कर देंगे, और वे कभी भी {पुनर्निर्माण} को पूरा नहीं कर पाएँगे। "इसलिए {मैंने प्रार्थना की, " हे परमेश्वर,} मुझे हियाव दे।

10{लगभग इसी समय} मैं दलायाह के पुत्र और महेतबेल के पोते शमायाह से भेंट करने गया। {मैं उससे उसके घर पर मिलने गया था, क्योंकि} वह {अपना घर} नहीं छोड़ रहा था। वह एक याजक था, और वह यह दिखाने का प्रयास कर रहा था कि यहूदी अगुवों के लिए सार्वजनिक रूप से बाहर जाना सुरक्षित नहीं था। उसने मुझसे कहा, "{हम यहाँ भी सुरक्षित नहीं हैं।} हमें मन्दिर में जाने और दरवाजों को बंद करने की आवश्यकता है, क्योंकि लोग तुझे मारने का प्रयास कर रहे हैं। किसी रात में वे आकर तुझे मार डालेंगे।”

11मैंने उत्तर दिया, " मैं उस तरह का व्यक्ति नहीं हूँ जो काम छोड़ कर भाग जाए! इसके अतिरिक्त, मैं राज्यपाल हूँ, {और सभी मुझे जानते हैं,} इसलिए मैं मन्दिर में छिपने का {प्रयास करके} अपनी जान नहीं बचा सकता। मैंने ऐसा करने से मना कर दिया!"

12अचानक मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर ने शमायाह को मेरे लिए भविष्यद्वाणी से भरा हुआ सन्देश नहीं दिया था। इसके बजाय, वह इन बातों को इसलिए कह रहा था क्योंकि तोबियाह और सम्बल्लत ने उसे {ऐसा कहने के लिए} रिश्वत दी थी। 13{उन्होंने} उसे विशेष रूप से {ऐसी बातें कहने} के लिए पैसे दिए थे जो मुझे डरा दें। वे आशा कर रहे थे कि वे मुझसे {मेरी जिम्मेदारियों को छोड़ने और मन्दिर में छिपने के द्वारा} पाप करा सकते थे। {यदि मैंने ऐसा किया होता,} तो उन्होंने मेरी प्रतिष्ठा को नष्ट और मुझे बदनाम कर दिया होता।

14{इसलिए मैंने प्रार्थना की,} “हे मेरे परमेश्वर, तोबियाह और सम्बल्लत के साथ ठीक वैसा ही व्यवहार कर कि जैसा उन्होंने किया है। महिला भविष्यद्वक्तिन नोअद्याह और अन्य सभी भविष्यद्वक्ताओं के लिए भी ऐसा ही कर जो मुझे डराने का {प्रयास} कर रहे हैं।

15हमने एलूल महीने के पच्चीसवें {दिन} में 52 दिनों तक {इस पर काम करने के बाद} दीवार का {पुनर्निर्माण} किया।

16जब हमारे सभी शत्रुओं को पता चला कि हमने इतने कम समय में पुनर्निर्माण पूरा कर लिया है, तो उन्होंने महसूस किया कि ऐसा अवश्य ही {हमारे} परमेश्वर की सहायता से ही हुआ है। इससे हमारे चारों ओर के देशों के लोगों ने अपने सारे आत्म विश्वास को खो दिया। 17इस समय में, यहूदा के मुख्य नागरिक तोबियाह को {मेरे बारे में जानकारी देने के लिए} कई पत्र लिख रहे थे, और वह {निर्देशों के साथ} उन्हें पत्र वापस भेज रहा था। 18तोबियाह का विवाह {समाज के एक शक्तिशाली और प्रभावशाली सदस्य} आरह के पुत्र शकन्याह की पुत्री से हुआ था। उसके पुत्र यहोहानान का विवाह बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम {एक अन्य शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्ति} की पुत्री से हुआ था। और इसलिए, उन कारणों से, यहूदा में बहुत से लोगों ने तोबियाह के प्रति {निष्ठावान रहने की} शपथ खाई थी। 19{जो लोग तोबियाह के प्रति निष्ठावान थे} भी {आए और} मुझे बताया कि वह कौन से अच्छे काम कर रहा था, और तब वे उसे {प्रतिउत्तर में} में जो कुछ मैंने कहा होता था उसका समाचार देते थे। तोबियाह ने मुझे डराने के प्रयास में कई पत्रों को भी भेजा था।

Chapter 7

1जब हम शहरपनाह को फिर से बना चुके, और फाटकों में पल्लों को लगा चुके, तब हमने द्वारपालों और गवैयों और लेवियों को उनके कामों के लिए ठहरा दिया। 2मैंने यरूशलेम पर शासन करने के लिए दो लोगों, मेरे भाई हनानी और {यरूशलेम में} राजगढ़ के सेनापति हनन्याह {मेरी सहायता के लिए} को नियुक्त किया। मैंने हनन्याह को इसलिए नियुक्त किया क्योंकि वह भरोसेमंद व्यक्ति था, और उसने अधिकांश लोगों की तुलना में परमेश्वर के प्रति अधिक भक्ति और आदर दिखाया था।

3मैंने उनसे कहा, “यरूशलेम के फाटकों को दिन का उजाला होने तक ना खोलें। {इस तरह हम देख पाएंगे कि हमारे शत्रु क्या कुछ कर रहे हैं।} द्वारपाल {द्वारों} को बंद कर दें और जब वे अभी भी पहरा दे रहे हों तब {रात में घर जाने से पहले फाटकों के} द्वारों पर बेंड़ों को लगा दें। मैंने उनसे यह भी कहा, "कि यरूशलेम में रहने वाले पुरुष अपने अपने पड़ोस में चौकस रहें।

4यरुशलेम शहर का एक बहुत बड़ा क्षेत्र था, पर {उस समय} शहर में बहुत ज्यादा लोग नहीं रहते थे, और उन्होंने अभी तक {अपने लिए} घरों को नहीं बनाया था। 5इसलिए {यरूशलेम को फिर से लोगों से भरने की दिशा में पहले कदम के रूप में}, परमेश्वर ने मुझे मुख्य नागरिकों और शहर के अधिकारियों और अन्य लोगों {शहर में रहने वाले} को उनके परिवार के इतिहास के अनुसार पंजीकृत करने के लिए एक साथ इकट्ठा करने के लिए प्रेरित किया। मुझे उन लोगों के पहले समूह के अभिलेख वाली एक पुस्तक भी मिली जो बँधुआई से {यरूशलेम को} लौटे थे। उन अभिलेखों में ऐसा कहा गया था।

6“ये यहूदा के लोगों के {नाम} हैं जो बँधुआई से घर वापस लौटे थे। बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर {उनके पूर्वजों को} दूर {बाबेल} ले गया था। पर वे यरूशलेम और यहूदा के {अन्य स्थानों में} लौट गए। वे {उन्हीं} शहरों में लौट आए जहाँ उनके {पूर्वज रहते थे}।

7लौट आने वाले लोग जरुब्बाबेल, येशुअ, नहेम्याह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिगवै, नहूम और बानाह के पीछे चल रहे थे।

{यह सूची} {प्रत्येक} इस्राएल {लौटे हुए गोत्र} के पुरुषों की गिनती की है:

8परोश {के कुल} से 2172 पुरुष;

9शपत्याह {के कुल} से 9372 पुरुष;

10आरह {के कुल} से 652 पुरुष;

11पहत्मोआब {के कुल} से 2818 पुरुष; जो येशुअ और योआब के वंशज् हैं;

12एलाम {के कुल} से 1254 पुरुष;

13जत्तू {के गोत्र} से 845 पुरुष;

14जक्कई {के गोत्र} से 760 पुरुष;

15बिन्नूई {के गोत्र} से 648 पुरुष;

16बेबै {के गोत्र} से 628 पुरुष;

17अजगाद {के गोत्र} से 2322 पुरुष;

18अदोनीकाम {के गोत्र} से 667 पुरुष;

19बिगवै {के गोत्र} से 2067 पुरुष;

20आदीन {के गोत्र} से 655 पुरुष;

21आतेर {के गोत्र} से 98 पुरुष जो हिजकिय्याह के वंशज् थे;

22हशूम {के गोत्र} से 328 पुरुष;

23बेसै {के गोत्र} से 324 पुरुष;

24हारीफ {के गोत्र} से 112 पुरुष;

25गिबोन {के गोत्र} से 95 पुरुष;

26{कुछ अन्य} पुरुष {भी लौटे, जिनके पूर्वज इन शहरों में रहते थे}:

बैतलहम और नतोपा से 188 पुरुष;

27अनातोत से 128 पुरुष;

28बेतजमावत से 42 पुरुष;

29किर्यत्यारीम, कपीरा और बेरोत से 743 पुरुष;

30रामाह और गेबा से 621 पुरुष;

31मिकमाश से 122 पुरुष;

32बेतेल और आई से 123 पुरुष;

33एक {छोटे शहर} नबो के नाम से पुकारे जाने वाले से 52 पुरुष;

34एक {छोटे शहर} एलाम के नाम से पुकारे जाने वाले से 1254 पुरुष;

35हारीम से 320 पुरुष;

36यरीहो से 345 पुरुष;

37लोद हादीद और ओनो से 721 पुरुष;

38सना से 3930 पुरुष;

39ये याजक भी लौटे:

यदायाह {के कुल} से 973 पुरुष जो येशुअ के वंशज् हैं;

40इम्मेर {के कुल} से 1052 पुरुष;

41पशहूर {के कुल} से 1247 पुरुष;

42हारीम {के कुल} से 1017 पुरुष

43ये लेवीय भी लौट आए:

येशुअ और कदमीएल {के कुल} से 74 पुरुष, ये सभी होदवा के वंशज् थे।

44{पवित्र} गायक मण्डली के 148 सदस्य {भी लौटे}। ये सभी आसाप के कुल के थे।

45138 {मन्दिर} द्वारपाल {भी लौटे}। वे शल्लूम के कुल में से थे, और आतेर के गोत्र में से, तल्मोन के कुल में से, अक्कूब के कुल से, हतीता के कुल में से, और शोबै के कुल में से थे।

46मन्दिर में काम करने वालों में से भी कुछ लौट आए। वे सीहा के कुल में से, और हसूपा के घराने में से, और तब्बाओत के घराने में से थे, 47केरोस का कुल,
सीआ का कुल, पादोन का कुल, 48लबाना का कुल, हगाबा का कुल, शल्मै का कुल, 49हानान का कुल, गिद्देल का कुल, गहर का कुल, 50रायाह का कुल,
रसीन का कुल, नकोदा का कुल, 51गज्जाम का कुल, उज्जा का कुल, पासेह का कुल, 52बेसै का कुल, मूनीम का कुल, नपूशस का कुल, 53बकबूक का कुल,
हकूपा का कुल, हर्हूर का कुल, 54बसलीत का कुल, महीदा का कुल, हर्शा का कुल, 55बर्कोस का कुल, सीसरा का कुल, तेमह का कुल, 56नसीह का कुल, और
हतीपा का कुल।

57मजदूरों के कुछ वंशज् जिन्हें राजा सुलैमान {ने पहले जबरन भर्ती किया था भी लौटे}।

ये सोतै के कुल में से थे, और सोपेरेत के कुल में से, और परीदा के कुल में से थे। 58याला का कुल, दर्कोन का कुल, गिद्देल का कुल, 59शपत्याह का कुल,
हत्तील का कुल, पोकरेत-सबायीम का कुल, और आमोन का कुल। 60कुल मिलाकर, {मन्दिर} के मजदूरों और {जबरन भर्ती किए गए} मजदूरों {जो लौटे} के 392 वंशज थे।

61एक अन्य समूह भी लौट आया {जो कि शहरों} तेल्मेलाह, तेलहर्शा, करूब, अद्दोन और इम्मेर {बाबेल में} से आया था। पर वे यह प्रमाणित नहीं कर सके कि वे इस्राएलियों के वंशज् हैं।

62ये 642 पुरुष दलायाह के कुल, और तोबियाह के कुल, और नकोदा के कुल में से थे।

63कुछ याजक {भी लौट आए जो} हबायाह के कुल, हक्कोस के कुल और बर्जिल्लै के कुल में से थे। बर्जिल्लै ने एक स्त्री से विवाह किया था जो गिलाद के क्षेत्र के बर्जिल्लै नाम के एक पुरुष की वंशज् थी। उसने अपनी पत्नी का पारिवारिक नाम अपना लिया था। 64इन {याजकों} ने उन अभिलेखों की खोज की जिनमें
इस्राएल के पूर्वजों के नाम थे, पर उन्हें अपने परिवारों के नाम नहीं मिले। {वे याजक बनने के योग्यता नहीं रखते थे क्योंकि वे अपने परिवार के इतिहास का पता नहीं लगा सके थे,} इसलिए उन्हें याजकों के {अधिकारों और दायित्वों} को रखने की अनुमति नहीं थी। 65राज्यपाल ने उनसे कहा कि वे बलियों और याजकों के
लिये रखे हुए भोजन में से कुछ भी न खाएँ। उन्हें तब तक प्रतिक्षा करनी होगी जब तक कि याजक {मन्दिर के प्रभारी} अपने दायित्वों को निभाना आरम्भ नहीं कर देते हैं और {परमेश्वर} से पूछ सकते हैं कि {इस स्थिति में} क्या करना है। 66कुल मिलाकर, 42360 लोग {यहूदिया लौटे}।

67वहाँ भी 7337 पुरुष सेवक और स्त्री सेविकाएँ, और 245 पुरुष गायक और महिला गायक थे।

[68]{इस्राएली भी बाबेल से 736 घोड़े, 245 खच्चर, [69]435 ऊँट, और 6720 गदहे लाए थे।

[70]पूर्वजों के कुलों के कुछ अगुवों ने {मन्दिर के पुनर्निर्माण के} कार्य के लिए {भेंटें} दीं।

राज्यपाल ने कोषागार में से 8 किलो से अधिक सोना, {मन्दिर में इस्तेमाल होने के लिए} 50 कटोरे, और 530 अंगरखे याजकों के लिए दिए।

[71]पुर्वजों के कुलों के कुछ अगुवों ने {मन्दिर} के कोषागार में {मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिए} कुल 153 किलोग्राम सोना और 1460 किलोग्राम चाँदी भी दी।

[72]और शेष लोगों ने याजकों को {कुल} 153 किलोग्राम सोना, 1330 किलोग्राम चाँदी, और 67 अंगरखे दिए।” [73]इस प्रकार याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये,
{मन्दिर} कर्मचारी, और बहुत से साधारण लोगों ने {यहूदिया के उन} शहरों {और नगरों} में रहना {आरम्भ} किया जहाँ उनके {पूर्वज रहते थे}। ये सब लोग
इस्राएली थे। सातवें महीने तक {सब} इस्राएली उनके अपके शहरों को जाकर रहने लगे थे।

Chapter 8

[1]जल फाटक के पास बने चौक में लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। उन्होंने शास्त्री एज्रा से उस व्यवस्था की पुस्तक का चर्मपत्र निकाल ले आने के लिए कहा
जिसे मूसा ने {लिखा था}, और जिसे यहोवा ने इस्राएलियों को {इसकी विधियों और आज्ञाओं का पालन करने के लिए} दिया था। [2]शास्त्री एज्रा, {जो मन्दिर में
बलिदान चढ़ाकर परमेश्वर की सेवा करता था,} व्यवस्था को बाहर निकाल लाया {और इसे प्रस्तुत किया} सभी लोगों के सामने, पुरुषों और स्त्रियों दोनों को,
और जो {बच्चे} इसके पढ़े जाने पर इसे समझ सकते थे। उसने इसे {उसी वर्ष के} सातवें महीने के पहले दिन किया। [3]इस तरह से वह उस पुस्तक को सुबह के
पूरे समय जलफाटक के पास वाले चौक में ऊँची आवाज में पढ़ता रहा। उसने इसे सभी लोगों के सामने पढ़ा, दोनों पुरुषों और स्त्रियों और {बच्चों} के सामने,
जो इसके पढ़े जाने पर {आयु में} इसे समझ सकते थे। और सभी लोगों ने उन विधियों को ध्यान से सुना जो {कुण्डल पत्र पर} लिखे गए थे। [4]शास्त्री एज्रा
लकड़ी के एक {ऊँचे} चबूतरे के ऊपर खड़ा था जिसे लोगों ने इसी उद्देश्य के लिए बनाया था। उसकी दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह,
हिल्किय्याह और मासेयाह खड़े थे। उसके बाईं ओर पदायाह, मीशाएल, मल्किय्याह, हाशूम, हशबद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े थे। [5]एज्रा सभी लोगों से
ऊपर {चबूतरे पर खड़ा था} ताकि हर कोई उसे देख सके। उस ने कुण्डलपत्र को खोला, और ऐसा करते समय सब लोग उठ खड़े हुए।

[6]तब एज्रा ने यहोवा, महान परमेश्वर की स्तुति की, और सब लोगों ने हाथ उठाए {यह दिखाने के लिए कि वे उसके साथ प्रार्थना कर रहे थे}। {उसकी प्रार्थना के
अंत में} उन्होंने कहा, "हम सहमत हैं!" तब उन सबने भूमि पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया, और यहोवा की आराधना की। [7]तब येशुअ, बानी, शेरेब्याह,
यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान, पलायाह, इन सब लेवीयों ने, {मूसा की} व्यवस्था का अर्थ वहाँ खड़े लोगों
को समझाया। [8]उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था के कुण्डल पत्र से स्पष्ट रूप से पढ़ा, और उन्होंने इसका अर्थ समझाया, ताकि लोग समझ सकें कि {एज्रा और
अन्य} क्या पढ़ रहे थे।

[9]तब लोग व्यवस्या की बातें सुनकर उदास होते हुए रोने लगे। तब नहेम्याह {जो राज्यपाल था}, याजक और शास्त्री एज्रा, और लेवीय जो लोगों को अर्थ समझा
रहे थे, उन्होंने सब लोगों से कहा, आज एक पर्व का दिन है जिसमें तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की आराधना करनी चाहिए। इसलिए शोक मत करो या न ही
रोओ! ”

[10]तब नहेम्याह ने उनसे कहा, “{अब} घर जाओ, कुछ अच्छा भोजन खाओ, और कुछ मीठा पियो। और इसमें से कुछ उन लोगों के साथ साझा करें जो {चिकने
भोजन और मीठे रस} का खर्च उठाने में सक्षम नहीं हैं, क्योंकि आज हमारे प्रभु की {आराधना करने के लिए} एक अलग किया हुआ पवित्र दिन है। इसलिए
शोक मत करो, क्योंकि जो आनन्द यहोवा देता है वह तुम्हें दृढ़ करेगा।”

[11]लेवियों ने उन लोगों से भी {जो रो रहे थे} रुकने के लिए कहा, “आज का दिन पवित्र है! इसलिए, चुप रहो। विलाप न करो।"

[12]इस कारण सब लोग खाने और पीने और जो कुछ उनके पास था उसे बाँटने के लिए {घर} गए। और वे अत्याधिक आनन्दित थे, क्योंकि वे उन शब्दों का
{अर्थ} समझ चुके थे जिन्हें {एज्रा ने पढ़ा था और} दूसरों ने उन्हें समझाया था।

[13]इसके बाद अगले दिन, सब लोगों के कुलों के अगुवों, और याजकों और लेवीयों, ने शास्त्री एज्रा से मुलाकात की। वे व्यवस्था का {अध्ययन} ध्यान से करना
चाहते थे {जिसे यहोवा ने मूसा को दिया था}। वे इसे {अच्छी रीति} समझना चाहते थे। [14]उन्होंने सीखा कि व्यवस्था में कहा गया था कि यहोवा ने मूसा से कहा
था कि सातवें महीने में एक पर्व के समय इस्राएलियों को झोपड़ियों में रहने की आज्ञा दे। {ऐसा इसलिए हुआ कि उन्हें स्मरण रहे कि उनके पूर्वज मिस्र छोड़ने के
बाद जंगल में से जाते हुए झोपड़ियों में रहे थे।} [15]{उन्होंने} यह भी {सीखा} कि उन्हें अपने सब नगरों और यरूशलेम में सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करनी
चाहिए कि लोगों को पहाड़ियों पर जाना चाहिए और डालियों को काटना चाहिए। ये जैतून, तैलवृक्ष, मेंहदी, खजूर और छायादार वृक्षों में से हों। उन्हें इन डालियों
को लाना होगा और {त्योहार के समय रहने के लिए} झोपड़ियाँ बनानी होंगी। चर्मपत्र ने यही निर्देश दिया गया था।

[16]इस कारण वे लोग {नगरों और डालियों को काटकर लाने के लिए} निकल गए और {उन्हें} अपने लिए झोपड़ियाँ बनाने के लिए ले आए। उन्होंने {अपने घरों
की} {चौरस} छतों पर, अपने आंगनों में, मन्दिर के आंगनों में, जलफाटक के निकट चौक में, और एप्रैम के फाटक के निकट चौक में झोपड़ियों को बनाया।
[17]बाबुल से लौटने वाले सभी इस्राएलियों ने झोपड़ियाँ बनाईं और {एक सप्ताह तक} उनमें रहे। जब से नून के पुत्र यहोशू ने {उन्हें इस क्षेत्र में आने के लिए
अगुवाई दी थी}, तब से अब तक इस्राएली लोगों ने कभी भी इस तरह का पर्व नहीं मनाया था। ऐसा वे {पहली} बार कर रहे थे। और लोग अत्याधिक आनन्दित

थे। 18उस सप्ताह प्रति दिन ऊँची आवाज में {एज्रा ने} परमेश्वर की व्यवस्था के चर्मपत्र से {लोगों को} पढ़कर सुनाया। उन्होंने सात दिनों तक पर्व मनाया।
आठवें दिन, उन्होंने सभी लोगों को एक साथ आने को कहा {ताकि वे पर्व की समाप्ति पर एक समारोह को आयोजित कर सकें}। कुण्डलपत्र में यही निर्देश दिया
गया था।

Chapter 9

1दो दिन के बाद, इस्राएली फिर इकट्ठे हुए। {यह दिखाने के लिए कि उन्हें अपने पापों के लिए पछतावा है,} वे भोजन खाए बिना रहे, उन्होंने टाट {से बने कपड़े}
पहने, और उन्होंने अपने {सिरों पर} मिट्टी डाली। 2इस्राएल के वंशजों ने परदेशियों के सब वंशजों से अपने आप को अलग किया। वे वहीं खड़े हुए और अपने
पापों और उन दुष्ट कार्यों को अंगीकार किया जो उनके पूर्वजों ने किए थे। 3वे एक स्थान पर खड़े रहे और तीन घंटे तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था के
कुण्डल पत्र में से {किसी को सुनते रहे}। तब उन्होंने और तीन घंटे तक अपके पापों का अंगीकार किया, और दण्डवत् किया और अपने परमेश्वर यहोवा की
आराधना की।

4{कुछ} लेवीए सीढ़ियों पर खड़े हो गए, जिनमें येशुअ, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी नाम का एक अन्य {व्यक्ति} और कनानी शामिल थे।
और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को ऊँचे आवाज में {उदासी से भरकर} पुकारा। 5तब कुछ लेवीय बोले। उनके नाम येशुअ, कदमीएल, बानी, हशब्नयाह,
शेरेब्याह, होदिय्याह, शबन्याह और पतह्याह थे।

उन्होंने कहा, “खड़े हो जाओ और अपने परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो, जो सदैव {से} है और सदैव {रहेगा}! हे यहोवा, हम तेरे महिमामय नाम की स्तुति करते
हैं! तेरा नाम सभी चीजों से अधिक महत्वपूर्ण है जो अच्छी और अद्भुत हैं! 6तू यहोवा है, और तेरे आगे कोई नहीं। तूने आकाश को बनाया जो सब से ऊपर है,
और जो कुछ आकाश में रहता है {पृथ्वी के ऊपर} बनाया है। तूने पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है सब को बनाया, और तूने समुद्र और जो कुछ उन में है सब
को बनाया है। तू ही है जो सभी जीवित प्राणियों को जीवित होने का कारण है। वह सब कुछ जो अकाश {पृथ्वी के ऊपर} में {जीवित है} तेरी आराधना करते हैं।

7तू यहोवा है! तू ही वह परमेश्वर है जिसने अब्राम को चुना और उसे ऊर {शहर} से बाहर लाया, जहाँ कसदी लोग {रहते} थे। तूने उसका नाम बदलकर अब्राहम
कर दिया। 8तूने देखा कि वह अपने भीतरी मन में तेरे प्रति विश्वासयोग्य था। तूने उसके साथ {लहू के साथ वाचा} प्रतिज्ञा बाँधी थी, कि तू {उसे} और उसके
वंशजों को भूमि देगा। यह वह देश था जहाँ कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, यबूसी और गिर्गाशी {रहते} थे। और तूने वही किया जिसकी तूने प्रतिज्ञा की थी,
क्योंकि तू {सदैव} वही करता हो जो सही है।

9तूने देखा कि कैसे {मिस्रियों} ने मिस्र में हमारे पूर्वजों के साथ दुर्व्यवहार किया। जब वे लाल सागर के किनारे थे, तब तूने उनकी दुहाई {सहायता के लिए
पुकारते हुए} सुनी। 10तू जानता था कि {मिस्र के अगुवे} {हमारे पूर्वजों} के साथ अत्याधिक अभिमान के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे। इसलिए तूने फिरौन और
उसके अधिकारियों और मिस्रियों के सब लोगों के लिए आश्चर्यकर्म दिखाए। {इनसे प्रमाणित हुआ कि तू ही सच्चा परमेश्वर है।} तूने अपना नाम बड़ा किया, और
यह आज तक बड़ा है! 11तूने समुद्र को {अपनी प्रजा इस्राएल} के सामने दो भागों में बाँट दिया, और वे सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से {चले} थे। पर तूने {मिस्र
की सेना के सैनिक को} पानी के नीचे डूबो दिया। वे डूब गए जैसे पत्थर गहरे पानी में डूब जाता है! 12दिन के समय तूने {आपके लोगों} को एक बादल {जो एक
विशाल खम्बे की तरह लग रहा था} के द्वारा अगुवाई की। रात में तूने उन्हें आग {जो एक विशाल खम्बे की तरह दिखती थी} के द्वारा अगुवाई की। इसने उनके
उस पथ पर उजियाला किया जिस पर चलना था। 13जब {हमारे पूर्वज} सीनै पर्वत पर थे, तब तूने उन्हें दर्शन दिया और स्वर्ग से बातें कीं। तूने उन्हें सीधे निर्देश
और भरोसेयोग्य व्यवस्थाएँ दी। तूने उन्हें भली विधियाँ और आज्ञाएँ दीं। 14तूने उन्हें अपने सब्त {विश्राम के दिन} के बारे में सिखाया। इसे {सप्ताह के अन्य दिनों
से} अलग रखा गया है। तूने अपने दास मूसा के द्वारा लोगों को आज्ञाएँ, विधियाँ, और व्यवस्थाएँ दीं। 15जब वे भूखे थे, तब तूने उन्हें स्वर्ग से रोटी दी। जब वे
प्यासे थे, तब तूने उन्हें चट्टान से पानी पिलाया। तूने उनसे कहा कि जाकर {कनान की} भूमि को अपने अधीन कर लो, जिसे देने की प्रतिज्ञा तूने शपथ खाकर
की थी।

16पर हमारे पूर्वज अभिमानी और हठी थे। तूने जो आज्ञा उन्हें दी थी, उसे उन्होंने {मानने ले} इन्कार कर दिया। 17उन्होंने तेरी बात मानने से इनकार कर दिया।
उन्होंने उन सभी आश्चर्यकर्मों पर विचार नहीं किया जो तूने उनके लिए किए थे। वे हठीले हो गए और तेरे विरुद्ध बलवा करने लगे। उन्होंने {उन्हें} वापस {मिस्र
में} ले जाने के लिए एक अगुवे को नियुक्त किया, जहाँ वे {फिर से} दासत्व की दशा में रहें! पर तू तो ऐसा परमेश्वर है जो हमें क्षमा करते है। तू तो {हमारे प्रति}
अनुग्रहकारी और दयालु है। तू विलम्ब से क्रोध करने वाला है। इसके बजाय, तू विश्वासयोग्यता से {हमें} बहुत प्रेम करता है। इसलिए तूने {हमारे पूर्वजों} को
{मरुभूमि में} अकेला नहीं छोड़ा। 18वास्तव में {तूने उन्हें अकेला नहीं छोड़ा}, यद्यपि उन्होंने अपने लिए एक मूर्ति बना ली थी जो एक बछड़े के {जैसी थी}।
उन्होंने {मूर्ति के बारे में} कहा, 'यही हमारा ईश्वर है, जो हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया है।' ऐसा करके उन्होंने तेरा अत्याधिक अपमान किया। 19पर क्योंकि तू
सदैव दया से भरकर करता है, तूने उन्हें मरुभूमि में अकेला नहीं छोड़ा। दिन के समय, बादल का खम्बा {जो एक विशाल खम्बे की तरह दिखता था} उनके ऊपर
से उनकी अगुवाई उस पथ के लिए करता था जिस पर {तू उन्हें ले जाना चाहता था}। और रात के समय, खम्बे वाली आग {जो अत्याधिक विशाल दिखती थी}
उनके सामने उस पथ पर उजियाला किया करती थी जिस पर उन्हें चलना होता था। 20तूने उन्हें निर्देश देने के लिए अपनी भली आत्मा दी। जब वे भूखे थे तब तू
उन्हें निरन्तर मन्ना देता रहा, और जब वे प्यासे थे तब तूने उन्हें पानी पिलाया। 21चालीस वर्षों तक तूने मरुभूमि में उनकी देखभाल की। इस समयाविधि में, उनके
पास वह सब कुछ था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। उनके कपड़े खराब नहीं हुए। उनके पैर नहीं फूले, {यद्यपि वे लगातार चलते रहे थे}। 22तूने {हमारे पूर्वजों
को} राजाओं की {जिन्होंने शासन किया} {बड़े सेना} कई लोगों को हराने में सहायता प्रदान की। {ऐसा करके,} तूने {हमारे पूर्वजों} को {इस भूमि के} हर भाग
में बसने दिया। उन्होंने उस भूमि पर अधिकार कर लिया जिस पर राजा सीहोन ने हेशबोन {के शहर} से शासन किया था और वह भूमि जिस पर राजा ओग ने

बाशान {क्षेत्र} में शासन किया था। 23तूने {हमारे पूर्वजों} को इतने अधिक बच्चे दिए कि वे {आकाश में} तारे की तरह थे। तू उन्हें इस भूमि में ले आया, जिसके लिए तूने उनके माता-पिता से कहा था कि वे इसमें दाखिल हों और इसे अपने अधिकार में लें {ताकि वे वहाँ रह सकें}।

24उनकी सन्तानें भीतर गई और भूमि को ले लिया। तूने उन्हें वहाँ रहने वाले लोगों को हराने में योग्य किया। वे कनान के {वंशज} थे। तूने उन्हें उनके राजाओं और वहाँ {रहने वाले} सभी लोगों पर विजयी होने के लिए योग्य किया। वे उन लोगों के साथ जो चाहें वही कर सकते थे। 25{हमारे पूर्वजों ने} उन शहरों को अपने अधिकार में कर लिया जिनके चारों ओर दीवारें थीं। उन्होंने उपजाऊ खेतों पर अपना अधिकार कर लिया। उन्होंने उन घरों पर अपना अधिकार कर लिया जो पहले से ही सभी प्रकार की अच्छी चीजों से भरे हुए थे, और उन कुओं पर जिसे पहले से ही किसी ने खोदा हुआ था। उन्होंने बहुत सी दाख की बारियों और जैतून के वृक्षों और फलों के वृक्षों की वाटिकाओं को अपने अधिकार में ले लिया। उन्होंने वह सब खा लिया जिसे वे चाहते थे और वे हृष्ट-पुष्ट हो गए। उन्होंने उन {सभी} अच्छी चीजों का आनन्द लिया जो तूने {उनके लिए} की थीं।

26पर वे तेरे विरुद्ध हो गए। उन्होंने तेरी व्यवस्था को मानने से इन्कार कर दिया। उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला जिन्होंने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे तेरी {आज्ञापालन की} ओर लौट आएँ। उन्होंने {कहा और} बहुत बुरे काम {तेरे विरुद्ध} किए। 27इस तरह तूने उनके शत्रुओं को उन्हें पराजित करने दिया। परन्तु जब उनके शत्रुओं ने उन्हें दु:ख दिया, तब उन्होंने तुझे पुकारा। तूने उनकी अपने स्वर्ग से सुनी, और क्योंकि तू अत्याधिक दयालु है, तूने उनकी सहायता करने के लिए लोगों को भेजा। उन {अगुवों} ने उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाया।

28पर जब {फिर से} शांति {का समय} था, {हमारे पूर्वजों} ने फिर से बुरे काम किए जिनसे तू {घृणा} करता है। इसलिए तूने उनके शत्रुओं को उन पर विजय पाने और उन पर शासन करने की अनुमति प्रदान दी। लेकिन {जब भी} वे तेरे पास लौट कर आए और तुझे फिर से {अपनी सहायता के लिए} पुकारा, तूने उनकी अपने स्वर्ग से सुनी। तूने उन्हें कई बार बचाया, क्योंकि तू सदैव दया करता है। 29तूने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे {फिर से} तेरी व्यवस्था का {पालन} करने के लिए लौंट आएँ। पर वे अभिमानी {और हठी} हो गए। उन्होंने तेरी आज्ञाओं को नहीं माना। उन्होंने तेरी विधियों की अवज्ञा करके पाप किया, यद्यपि एक व्यक्ति उनका पालन करके जीवित रहता है। उन्होंने जानबूझकर उन बातों को अनदेखा किया जिसे तूने उन्हें करने की आज्ञा दी थी। वे हठी हो गए और उन्होंने मानने से इन्कार कर दिया।

30तू उनकी लम्बे समय तक सहता रहा। तूने उन्हें तेरे भविष्यद्वक्ताओं को दी हुई तेरी आत्मा {संदेशों} के द्वारा चेतावनी दी। पर उन्होंने {उन संदेशों को} नहीं सुना। इसलिए एक बार फिर से तूने आस-पास के राष्ट्रों {की सेनाओं} से उन्हें पराजित होने दिया। 31पर क्योंकि तूने अत्याधिक दया दिखाई, इसलिए तूने उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं किया। तूने उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ा। हाँ, तू बहुत अत्याधिक अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है!

32हमारा परमेश्वर, तू तो महान और सामर्थी और भययोग्य है! तू {सदैव} {अपनी} प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है और {सैदव} विश्वासयोग्यता के साथ {हमें} प्रेम करता है! इसलिए अब {हम प्रार्थना कर रहे हैं}: हमारी परेशानियों को अनदेखा न कर। हमारे राजाओं, हमारे अगुवों, हमारे याजकों, हमारे भविष्यद्वक्ताओं, हमारे पूर्वजों, और तेरे सारे लोग जिन्होंने कठिनाइयों का अनुभव किया है, पर ध्यान लगा। जब से अश्शूर के राजाओं {की सेनाओं}ने {हम पर विजय} प्राप्त की, तब से लेकर अब तक हम इन कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। हम आज भी उनका अनुभव कर रहे हैं। 33{हम जानते हैं कि} तूने हमारे साथ ये सब होने देने में निष्पक्षता से काम किया है। हाँ, तूने {हमें} वैसा ही व्यवहार किया जिसके {हम} योग्य थे। पर हमने बुरे काम किए हैं। 34{बीते समय में,} हमारे राजाओं, हमारे अगुवों, हमारे याजकों और हमारे {अन्य} पूर्वजों ने तेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया। उन्होंने तेरी आज्ञाओं या चेतावनियों को नहीं सुना जिसे तूने उन्हें दिया था। 35उनके अपने राजा थे। वे तेरे द्वारा प्रदान की गई इस विशाल और उपजाऊ भूमि में बहुत अच्छी चीजों का {आनन्द} लेते थे। पर {तौभी,} उन्होंने तेरी सेवा नहीं की। उन्होंने बुरे कामों को करना बंद नहीं किया।

36हमारी परिस्थिति पर ध्यान दे! आज हम इस देश में गुलामों {की तरह} रहते हैं जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था। तूने उन्हें यह भूमि इसलिए दी कि वे यहाँ उगने वाली सभी अच्छी चीजों का आनन्द ले सकें। पर अब हमारी ओर ध्यान दे! हम इस भूमि पर गुलाम {की तरह} हैं। 37जिन राजाओं को तूने हम पर शासन करने की अनुमति दी है वे यहाँ उगने वाली {सब} अच्छी चीजों का आनन्द ले रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमने पाप किया है। वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर शासन करते हैं। वे जैसा चाहें वैसा करते हैं। हम अत्याधिक पीड़ा को महसूस करते हैं। 38इस सब के कारण, हम {इस्राएली} एक सच्चा समझौता कर रहे हैं। हम इसे एक कुण्डलपत्र पर लिख रहे हैं। हम अपने अगुवों, लेवियों और याजकों {के नाम} लिखेंगे। तब हम उस कुण्डलपत्र पर मुहर लगा देंगे।”

Chapter 10

1ये उन लोगों {के नाम} हैं जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किए:

हकल्याह का पुत्र राज्यपाल नहेम्याह; शास्त्री सिदकिय्याह।

2{समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले याजकों में ये लोग थे:}

सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह; 3पशहूर, अमर्याह, मल्किय्याह; 4हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक; 5हारीम, मरेमोत, ओबद्याह; 6दानिय्येल, गिन्नतोन, बारूक; 7मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन; 8माज्याह, बिलगै, और शमायाह। वे याजकों {के नाम} हैं {जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किए}।

9इन लेवीयों {ने समझौते पर हस्ताक्षर किए}:

आजन्याह का पुत्र येशुअ, हेनादाद के कुल में से बिन्नूई, कदमीएल,

10उनके सहयोगियों {में से कुछ} ने {समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिनमें ये हैं}: शबन्याह, होदिय्याह, केलीता, पलायाह, हानान,

11मीका, रहोब, हशब्याह; 12जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह, 13होदिय्याह, बानी और बनीनू।

14इस्राएली अगुवे ये थे {जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किए}:

परोश, पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी, 15बुन्नी, अजगाद, बेबै, 16अदोनिय्याह, बिगवै, आदीन, 17आतेर, हिजकिय्याह, अज्जूर, 18होदिय्याह, हाशूम, बेसै,
19हारीफ, अनातोत, नोबै, 20मग्पीआश, मशुल्लाम, हेजीर, 21मशेजबेल, सादोक, यद्दू, 22पलत्याह, हानान, अनायाह, 23होशे, हनन्याह, हश्शूब, 24हल्लोहेश,
पिल्हा, शोबेक, 25रहूम, हशब्ना, मासेयाह, 26अहिय्याह, हानान, आनान, 27मल्लूक, हारीम और बानाह।

28शेष लोग {जो इस गंभीर समझौते में सम्मिलित हुए थे। इनमें} याजक, लेवीय, द्वारपाल, गायक, और {मन्दिर} के कर्मचारी सम्मिलित थे। {इसमें सम्मिलित थे} वे सभी जो केवल इस्राएल के परमेश्वर की आराधना करने के लिए और उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए सहमत थे, अपनी पत्नियों और अपने पुत्रों और पुत्रियों के साथ जो यह समझने के लिए {काफी बड़े} थे कि वे क्या कर {रहे थे}।
29वे {सभी} अपने अगुवों के साथ सम्मिलित हो गए, जो महत्वपूर्ण लोग थे, और उन सभों ने मिलकर उस {सारी} व्यवस्था का पालन करने के लिए एक गंभीर समझौता किया जिसे परमेश्वर ने अपने सेवक मूसा के द्वारा दिया था। वे सहमत थे कि वे उन सभी बातों का कठोरता से पालन करेंगे जिनकी हमारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी थी, हाँ, उन {सभी} निर्देशों का।
30यह वह है जिसे {उन्होंने करने की प्रतिज्ञा ली}: "हम अपनी पुत्रियों को {विवाह में} इस देश {में रहने वाले} लोगों को नहीं देंगे {जो यहोवा की आराधना नहीं करते हैं}। हम अपने पुत्रों को उनकी पुत्रियों के साथ विवाह नहीं करने देंगे।
31अन्य समूहों के लोग {जो रहते हैं} इस देश में सब्त के दिनों में बेचने के लिए अपने माल और सभी प्रकार के भोजन ला सकते हैं। पर हम सब्त {दिन} या किसी अन्य पवित्र दिन पर उनसे कुछ भी नहीं खरीदेंगे। प्रत्येक सातवें वर्ष, हम अपने {खेतों} को विश्राम करने देंगे {और किसी फसल को नहीं लगाएंगे। उसी वर्ष} हम किसी को भी किसी अन्य व्यक्ति को {उन पर कुछ भी बकाया} वापस नहीं करने देंगे।
32हम में से प्रत्येक ने इस प्रतिज्ञा पर भी सहमति जताई कि मन्दिर के लिए आवश्यक {सामग्रियों} के लिए हम {प्रत्येक} वर्ष 4 ग्राम चाँदी का भुगतान करेंगे।
33{यहाँ उन सामग्रियों की एक सूची दी गई है।} {पवित्र} रोटी जो {परमेश्वर के सामने} रखी जाती है। वह अनाज जो प्रतिदिन {वेदी पर जलाया जाता है}। {वे पशु जो} प्रतिदिन {वेदी पर} पूरी तरह से जला दिए जाते हैं। सब्त के दिनों के लिए पवित्र भेटें और प्रत्येक नए चाँद और अन्य {त्योहारों} को मनाने के लिए जिसे {परमेश्वर} ने हमें मनाने के लिए कहा था। {अन्य} भेटें जो {परमेश्वर को} समर्पित हैं। इस्राएलियों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए {पशुओं का} बलिदान किया जाना चाहिए। मन्दिर के {देखरेख} के काम के लिए और कुछ भी और {जिसकी आवश्यकता है}।

34हमने इस विषय का पता लगाने के लिए चिट्ठी डाली कि कब याजकों, लेवियों, और हर एक कुल के {शेष} लोगों को मन्दिर में लकड़ी का भेंट लानी है। प्रत्येक कुल इसे प्रत्येक वर्ष अपने ठहराए हुए समय पर लाएगा। हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी पर {बलिदान} जलाने के लिये लकड़ी का {लेवीय उपयोग करेंगे}। उसने व्यवस्था में यह आज्ञा दी थी {जिसे उसने मूसा के द्वारा दिया था}।
35हम साथ ही प्रत्येक वर्ष अपनी {फसल} से पहले {अनाज} को और अपने सभी वृक्षों से {पैदा होने वाले} सारे पहले फल को मंदिर में {एक भेंट} के रूप में लाएंगे।
36हम और भी कुछ करेंगे जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है। हम अपने पहलौठे पुत्रों को मन्दिर में {समर्पण के लिए}, और हमारे पहलौठे बछड़ों और भेड़ों और बकरियों को {बलिदान के रूप में} मन्दिर में सेवा करने वाले याजकों के पास लाएंगे।
37हम याजकों के लिए सामान भी लाएंगे जिसे {वे} मन्दिर में भण्डारण कर सकते हैं। इनमें वह पहला अनाज सम्मिलित होगा जिसकी हम {कटाई} करते हैं, पहला आटा जो हम {गूँधते} हैं, {हमारे} वृक्षों में से पहले फल, और नया दाखमधु और जैतून का तेल {जिसे हम पैदा करते हैं}। हम अपनी फसल का भी 10 प्रतिशत लेवियों के पास लाएंगे। हम हमारे द्वारा काम जाने वाले उन सभी नगरों में से उन्हें यह 10 प्रतिशत इकट्ठा करने का अनुमति देंगे।
38हारून के वंशजों में से एक याजक, लेवियों के साथ रहेगा और तब उनकी {निगरानी} करेगा जब वे उस दस प्रतिशत को इकट्ठा करेंगे। तब लेवीयों को जो कुछ मिला है उसका 10 प्रतिशत मन्दिर में लाना चाहिए। {याजक इसे रखेंगे} भण्डार गृहों में और यह {उनकी} सहायता करेगा।
39इस तरह से काम होगा। इस्राएली और लेवीय अपने अन्न, दाखमधु और जैतून के तेल की भेंटों को उन भण्डारों गृहों में ले आएँगे। यहीं पर {याजक} मंदिर के लिए साजवट का सामान रखेंगे। और यहीं पर याजकों, द्वारपालों और उस समय सेवा करने वाले गायकों के लिए {भोजन सामग्री को रखेंगे}।

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम मन्दिर की देखभाल करते रहेंगे।”

Chapter 11

1इस तरह {इस्राएली} अगुवे यरूशलेम में {अपने परिवारों के साथ} बस गए। शेष लोगों ने चिट्ठी डाली कि दस में से एक परिवार यरूशलेम में रहने के लिये चुने। वह शहर {परमेश्वर के लिए} अलग किया था। शेष नौ परिवार {अन्य} नगरों में रहते थे।
2लोगों ने {परमेश्वर से कहा} उन सभी को आशीर्वाद दिया जिन्होंने स्वेच्छा से यरूशलेम में रहने के लिए प्रार्थना की थी।

3ये उन प्रान्तीय अधिकारियों के {नाम} हैं जो यरूशलेम में बस गए थे। परन्तु यहूदा के नगरों में, सब अपने-अपने नगरों में अपनी-अपनी पारिवारिक संपत्ति पर रहते थे। इसमें इस्राएली, याजक, लेवीय, मन्दिर के सेवक और सुलैमान के सेवकों के वंशज सम्मिलित हैं।
4परन्तु यहूदा के कुछ लोग और बिन्यामीन के कुछ लोग वहीं रह गए और यरूशलेम में रहने लगे।

यहाँ उन अगुवों के {नाम} हैं जो यरूशलेम में रहते थे।

यहूदा के वंशजों में से अतायाह, जो उज्जिय्याह का पुत्र था, जो जकर्याह का पुत्र, अमर्याह का पुत्र, शपत्याह का पुत्र, महललेल का पुत्र, पेरेस का एक वंशज था।

5दूसरा मासेयाह था जो बारूक का पुत्र था, जो कोल्होजे का पुत्र, हजायाह का पुत्र, अदायाह का पुत्र, योयारीब का पुत्र, जकर्याह का पुत्र था, यह शीलोई के वंशजों में से एक था। 6पेरेस के वंशजों में से कुल मिलाकर 468 पुरुष यरूशलेम {के शहर} में रहते थे। ये लोग {अत्याधिक} शूरवीर और युद्ध में कुशल थे।

7बिन्यामीन के वंशज ये हैं {जिसने यरूशलेम में रहने का निश्चय किया था}।

उन में से एक सल्लू मशुल्लाम का पुत्र था, जो योएद का पुत्र, पदायाह का पुत्र, कोलायाह का पुत्र, मासेयाह का पुत्र, इतीएह का पुत्र, यशायाह का पुत्र था।

8उनकी सहायता करने वाले दो व्यक्ति गब्बै और सल्लै थे। कुल मिलाकर 928 लोग {बिन्यामीन के गोत्र से यरूशलेम में बस गए थे}। 9उनका अगुवा जिक्री का पुत्र योएल था। हस्सनूआ का पुत्र यहूदा {अधिकारी था जो} यरूशलेम में अधिकार में दूसरे स्थान पर था।

10याजक {जो यरूशलेम में बस गए थे} में योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन थे। 11दूसरा याजक हिल्किय्याह का पुत्र सरायाह था, जो मशुल्लाम का पुत्र, सादोक का पुत्र, मरायोत का पुत्र, अहीतूब का पुत्र था। वह मन्दिर के प्रभारी था। 12उनके अन्य 822 सहयोगियों ने {यरूशलेम में बस गए और} मन्दिर के लिए काम किया। यरूशलेम में बसने वाला एक और याजक यरोहाम का पुत्र अदायाह था, जो पलल्याह का पुत्र, अमसी का पुत्र, जकर्याह का पुत्र, पशहूर का पुत्र, मल्किय्याह का पुत्र था। 13उनके अन्य 242 सहयोगी, उनके पूर्वजों के कुलों के अगुवों सहित, {यरूशलेम में बस गए}। {एक और याजक जो वहाँ बस गया}, अजरेल का पुत्र अमशै था, जो अहजै का पुत्र, मशिल्लेमोत का पुत्र, और इम्मेर का पुत्र था। 14उनके अन्य 128 सहयोगी जो बलवान पुरुष थे {यरूशलेम में बस गए}। उनका अगुवा हग्गदोलीम का पुत्र जब्दीएल था।

15लेवियों में से एक {जो यरूशलेम में बस गया} हश्शूब का पुत्र शमायाह था, जो अज्रीकाम का पुत्र, हशब्याह का पुत्र, बुन्नी का पुत्र था। 16और दो और शब्बतै और योजाबाद थे, जो मन्दिर के बाहर के काम की निगरानी करते थे और लेवियों के अगुवे थे। 17एक अन्य लेवी {जो यरूशलेम में बस गया} मत्तन्याह था, जिसने मन्दिर की गायन मण्डली को निर्देशित किया जब वे परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रार्थनाओं को गाते थे। वह मीका का पुत्र था, जो जब्दी का, आसाप का पुत्र था। उसका सहायक गायन निर्देशक बकबुक्याह था। एक और लेवीय अब्दा था, जो शम्मू का पुत्र, गालाल का पुत्र, यदूतून का पुत्र था। 18कुल मिलाकर, 284 लेवीय {यरूशलेम} में, {परमेश्वर के लिए} अलग किए गए शहर में बस गए थे।

19द्वारपालों {जो यरूशलेम में बस गए} में अक्कूब, तल्मोन और उनके 172 सहयोगी थे जो फाटकों के रखवाले थे।

20शेष सब इस्राएली जिनमें याजक और लेवीय भी हैं, यहूदिया के सब नगरों में उनके अपने निज भाग में रहते थे। 21{मन्दिर} के कर्मचारी ओपेल {यरूशलेम में पहाड़ी} पर रहते थे; और सीहा और गिश्पा उनकी देखरेख करते थे।

22लेवियों की देखरेख करने वाला व्यक्ति जो यरूशलेम में रहता था, वह बानी का पुत्र उज्जी था, जो हशब्याह का पुत्र, मत्तन्याह का पुत्र, मीका का पुत्र था। उज्जी आसाप के वंशजों में से एक था। ये मन्दिर {सेवाओं} में संगीत की जिम्मेदार रखने वाली गायक थे। 23अब {फारस के} राजा ने गायकों के लिए {कि उन्हें राजकीय सहायता प्रदान की जाएगी} कहा था। राजा ने कहा था कि मन्दिर की सेवाओं में गायन के कार्य को बनाए रखने के लिए उन्हें जो कुछ भी चाहिए वह उन्हें दिया जाए। 24पतह्याह {इस्राएलियों} से संबंधित किसी भी विषय के लिए {फारस के} राजा का {राजदूत} था। वह मशेजबेल का पुत्र था, जो यहूदा के पुत्र जेरह के वंशजों में से एक था।

25यहूदा के कुछ वंशज यरूशलेम में नहीं बसे थे। वे अपने खेतों के पास {नगरों और} गाँवों में रहते थे। इनमें किर्यतअर्बा और उसके पड़ोसी गाँव, दीबोन {का शहर} और उसके पड़ोसी गाँव थे, और यकब्सेल {का नगर} और उसके पड़ोसी गाँव थे। 26{यहूदा के कुछ वंशज} येशुअ {के नगर}, मोलादा, बेत्पेलेत {नगर के} में भी रहते थे, 27{नगर} हसर्शूआल, और बेर्शेबा {शहर} और उसके पड़ोसी गाँव। 28{कुछ} सिकलाग {शहर में}, मकोना {शहर} और उसके पड़ोसी गाँवों में भी {रहते थे}, 29एन्रिम्मोन {के नगर}, सोरा {के नगर}, यर्मूत {के नगर}, 30जानोह और अदुल्लाम {के नगर} और आस-पास के गाँव, लाकीश {के शहर} और आस-पास के खेतों, और अजेका {नगर} और आस-पास के गाँवों में।

{वे सभी} लोग {यहूदा के इलाके में, उस क्षेत्र में} बस गए जो बेर्शेबा {दक्षिण में} और हिन्नोम की तराई {उत्तर में} के बीच पाया जाता है। 31कुछ लोग जो बिन्यामीन के वंशज थे {इन शहरों और नगरों में बस गए}: गेबा, मिकमाश, अय्या, बेतेल और उसके पड़ोसी गाँव, 32अनातोत, नोब, अनन्याह, 33हासोर, रामाह, गित्तैम, 34हादीद, सबोईम, नबल्लत, 35लोद, ओनो और कारीगरों की तराई तक रहते थे। 36कुछ लेवीय जो पहले यहूदा के {इलाके} में {गए और बस गए} रहते थे {उस भूमि में जो बिन्यामीन के पुराने गोत्र से संबंधित थी}।

Chapter 12

1ये उन याजकों और लेवियों {के नाम} हैं जो शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और यहोशू {महायाजक} के साथ {बाबेल से} लौटे थे। याजकों में सरायाह,
यिर्मयाह, एज्रा, 2अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश, 3शकन्याह, रहूम, मरेमोत, 4इद्दो, गिन्नतोई, अबिय्याह, 5मिय्यामीन, माद्याह, बिल्गा, 6शमायाह, योयारीब, यदायाह,
7सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और यदायाह।

वे सभी पुरुष उस समय के याजकों, उनके सहयोगियों के अगुवे थे, जब यहोशू {महायाजक था}।

8लेवियों {जो लौटे थे} में येशुअ, बिन्नूई, कदमीएल, शेरेब्याह, यहूदा और मत्तन्याह थे। मत्तन्याह और उसके साथियों ने {परमेश्वर को} धन्यवाद देने के लिए {गीत
गाने वाले लोगों} की अगुवाई की। 9उनके सहयोगी बकबुक्याह और उन्नो आराधना सभाओं में उनके सामने {खड़े} थे {और ऐसे गायक दल की अगुवाई की जो
गीतों की प्रतिक्रियाओं में गाते थे}। 10यहोशू {महायाजक} योयाकीम का पिता था। योयाकीम एल्याशीब का पिता था। एल्याशीब योयादा का पिता था।
11योयादा योनातान का पिता था। योनातान यद्दू का पिता था।

12जब योयाकीम {महायाजक} था, तब ये याजक अपने कुलों के अगुवे थे। मरायाह सरायाह के कुल का अगुवा था। हनन्याह यिर्मयाह के कुल का अगुवा था।
13मशुल्लाम एज्रा का {कुल का अगुवा} था।

यहोहानान अमर्याह का {कुल का अगुवा} था।

14योनातान मल्लूकी का {कुल का अगुवा} था। यूसुफ शबन्याह का {कुल का अगुवा} था। 15अदना हारीम का {कुल का अगुवा} था। हेलकै मरायोत का {कुल
का अगुवा} था। 16जकर्याह इद्दो का {कुल का अगुवा} था। मशुल्लाम गिन्नतोन का {कुल का अगुवा} था। 17जिक्री अबिय्याह का {कुल का अगुवा} था। पिलतै
मिन्यामीन का {कुल का अगुवा} और मोअद्याह का {कुल} था। 18शम्मू बिल्गा का {कुल का अगुवा} था। यहोनातान शमायाह का {कुल का अगुवा} था।
19मत्तनै योयारीब का {कुल का अगुवा} था। उज्जी यदायाह का {कुल का अगुवा} था। 20कल्लै सल्लै का {कुल का अगुवा} था।

एबेर आमोक का {कुल का अगुवा} था।

21हशब्याह हिल्किय्याह का {कुल का अगुवा} था। नतनेल यदायाह का {कुल का अगुवा} था।

22एल्याशीब, योयादा, योहानान, और यद्दू {महायाजकों} के समय में {कुछ शास्त्रियों ने} लेवियों के कुलों के अगुवों {के नाम} लिखे। फारस के राजा दारा के
समय में उन्होंने याजकों के कुलों के अगुवों {के नाम} लिखे।

23एल्याशीब के पुत्र योहानान {महायाजक} के समय तक {शास्त्रियों} ने लेवियों के कुलों के अगुवों {के नाम} अपनी अभिलेख पुस्तकों में लिखे। 24हशब्याह,
शेरेब्याह और कदमीएल का पुत्र येशुअ लेवीयों के अगुवे थे {जिन्होंने एक गायक दल का निर्देशन किया}। उनके साथी उनके सामने {खड़े हुए} {एक दूसरे
गायक दल का निर्देशन कर रहे थे}। गायकों ने {परमेश्वर} की स्तुति की और धन्यवाद एक दूसरे के सामने खड़े होकर दिया। राजा दाऊद, वह व्यक्ति था जिसने
परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता के साथ की, ने इसी बात के लिए निर्देश दिया था। 25मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब
द्वारपाल थे। वे फाटकों के पास भण्डारगृहों पर {खड़े} पहरा देते थे। 26उन्होंने उस {काम} को उस समय किया जब येशुअ का पुत्र और योसादाक का पोता
योयाकीम {महायाजक} था। उन्होंने इसे {फिर से} उस समय किया जब नहेम्याह ने राज्यपाल के रूप में {सेवा की} और एज्रा ने याजक और शास्त्री के रूप में
{सेवा की}।

27जब {हमने} यरूशलेम के चारों ओर की दीवार को समर्पित किया, तब हमने उन सभी स्थानों से लेवियों को बुलवा भेजा {जहाँ} वे {रह रहे} थे। हम उन्हें
आनन्दित और धन्यवाद देने और झाँझ और सारंगी और तार वाले अन्य वाद्यों यन्त्रों के साथ गाकर दीवार को समर्पित करने में सहायता करने के लिए यरूशलेम
ले आए। 28हमने उन लेवियों को बुलवाया जिन्हें {एक साथ} गीत गाने {का अभ्यास} था। वे यरूशलेम के पास के क्षेत्रों से आए, जहाँ वे शहर के चारों ओर बसे
हुए थे। वे {यरूशलेम के दक्षिण-पूर्व} नतोपा {के गांव} के आसपास के स्थानों से भी आए थे। 29वे {उत्तरपूर्व के तीन स्थानों} यरूशलेम, बेतगिलगाल और गेबा
और अज्मावेत के आसपास के क्षेत्रों से भी आए थे। उन गायकों {को हमने बुलवाया} क्योंकि उन्होंने यरूशलेम के पास रहने के लिए गाँव बनाए थे। 30याजकों
और लेवियों ने स्वयं को {परमेश्वर के प्रति} ग्रहणयोग्य बनाने के लिए अनुष्ठान किए। फिर उन्होंने अन्य लोगों, फाटकों और शहरपनाह को शुद्ध करने के लिए
{उस जैसे ही} अनुष्ठान किए। 31तब मैंने यहूदा के अगुवों को शहरपनाह के शिखर पर इकट्ठा किया। मैंने उन्हें दो बड़े दलों को {अगुवाई करने के लिए} नियुक्त
किया, जो {परमेश्वर का} धन्यवाद करते हुए शहरपनाह के ऊपर {शहर के चारों ओर} जुलूस निकालेंगे। {जैसे ही उन्होंने शहर की ओर मुँह किया, एक दल} दाईं
ओर कूड़ा फाटक की ओर चला। 32होशायाह और यहूदा के आधे अगुवे उस दल के पीछे-पीछे जुलूस लिए चले। 33{जिन लोगों ने उस दल के साथ जुलूस में
भाग लिया} उनमें अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, 34यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह और यिर्मयाह थे। 35याजकों की कुछ सन्तानों ने संगीत वाद्ययंत्र बजाते हुए {उस
दल के साथ जुलूस निकाला} इनमें योनातान का पुत्र जकर्याह था, जो शमायाह का पुत्र, मत्तन्याह का पुत्र, मीकायाह का पुत्र, जक्कूर का पुत्र, आसाप का पुत्र
था। 36{जकर्याह के} कुछ सहयोगियों ने भी {जुलूस निकाला और संगीत वाद्ययंत्रों का बजाया}। वे शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै, माऐ, नतनेल, यहूदा और
हनानी थे। वे सभी {एक ही तरह} के वाद्य यंत्र बजा रहे थे जिसे राजा दाऊद, जिसने परमेश्वर की सेवा बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ की थी, {लेवी संगीतकारों
को कई वर्षों पहले बजाने के लिए कहा था}। इस दल की आगे शास्त्री एज्रा {जुलूस लिए चला} था। 37जब इस दल के लोग सोता फाटक पर पहुँचे, तो वे उन
सीढ़ियों से ऊपर {क्षेत्र को दाऊद के नगर के रूप में जाना जाता है} चले गए जो उनके सामने थीं। फिर वे दाऊद के {राजकीय} महल के स्थान से होते हुए

शहरपनाह के शिखर पर गए, और फिर पूर्व में {मन्दिर के किनारे} जलफाटक तक गए। 38उन लोगों का दूसरा दल जो {गा रहा था और} {यहोवा} को धन्यवाद
कर रहा था ने शहरपनाह के शिखर पर बाईं ओर जुलूस निकाला। मैं आधे लोगों के साथ उनके पीछे चला। हमने भट्ठों के गुम्मट से चौड़ी दीवार तक जुलूस
निकाला। 39वहाँ से एप्रैम के फाटक, पुराने फाटक, मछली फाटक, हननेल के गुम्मट, और सौ सिपाहियों के गुम्मट से होकर भेड़फाटक तक {हमने जुलूस
निकाला}। हमने उस फाटक के पास पहुँच कर जुलूस को समाप्त किया जो {मन्दिर क्षेत्र में जाता है}। 40दोनों दल मन्दिर में {पहुँच} कर {गा रहे थे और}
धन्यवाद दे रहे थे। वे {अपने स्थान पर} खड़े रहे। मैं वहाँ नगर के उन आधे अधिकारियों के साथ था जो मेरे साथ आए थे। 41{मेरे दल} में एल्याकीम, मासेयाह,
मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह नामक याजक थे। वे सभी तुरहियाँ को बजा रहे थे। 42{और दूसरे जो तुरहियों को बजा रहे थे} उनमें
मासेयाह, शमायाह, एलीआजर, उज्जी, यहोहानान, मल्किय्याह, एलाम और एजेर थे। गीत गाने वालों ने यिज्रह्याह के साथ गाया जो उनका अगुवा था। 43लोगों
ने उस दिन कई बलिदानों को चढ़ाया। वे {सब} आनन्दित हुए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें बहुत अधिक प्रसन्न किया था। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों और बच्चों ने
भी आनन्द मनाया, इस कारण यरूशलेम में उत्सव की आवाज ऐसी ऊँची थी कि लोग दूर-दूर तक सुन सकते थे।

44उस दिन {हमने} पुरुषों को भण्डारगृहों का प्रभारी नियुक्त किया। यहीं वह स्थान था जहाँ पर {याजकों} ने धन और भोजन और अनाज और दशमांश रखा
था। {लोग} इन वस्तुएँ को शहरों के पास के खेतों से याजकों और लेवियों के भण्डारों में से लाए, जैसे कि मूसा ने व्यवस्था में आज्ञा दी थी। यहूदा {के लोगों} ने
यह सब इसलिए किया क्योंकि वे याजकों और लेवियों द्वारा {मन्दिर में} सेवा करने के कारण अत्याधिक प्रसन्न थे। 45याजकों और लेवियों ने चीजों को शुद्ध
करने के लिए अनुष्ठान करके परमेश्वर की सेवा की। जैसे राजा दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान ने घोषणा की थी वैसे ही गवैयों और द्वारपालों ने {भी अपना
काम} किया। 46{हमने यह सब किया} क्योंकि बीते दिनों में ऐसा ही होता था, जब दाऊद {राजा} था और आसाप {मन्दिर के संगीतकारों का प्रभारी} था। वहाँ
पर गायकों की अगुवाई करने वाला कोई था, और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करने के लिए गीत गाए। 47उस समय जब जरुब्बाबेल {राज्यपाल}
था, सभी लोगों ने उस भोजन के लिए योगदान दिया जिसकी गायकों और मन्दिर के द्वारपालों को प्रतिदिन आवश्यकता होती थी। उन्होंने ऐसा ही उस समय
किया जब नहेम्याह {राज्यपाल} था। उन्होंने लेवियों को {अपनी फसल का} दसवाँ हिस्सा दिया, और लेवियों ने {उसका} याजकों को, जो {पहले महायाजक}
हारून के वंशज थे।

Chapter 13

1तब किसी ने लोगों को एक चर्मपत्र में से ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाया {जिसमें वह व्यवस्था थी जिसे परमेश्वर ने मूसा को दिया था}। उन्होंने सीखा कि
{व्यवस्था} कहती है कि अम्मोनी या मोआबी {लोगों के समूहों} में कभी भी कोई {जब वे परमेश्वर की आराधना करने के लिए इकट्ठे होते हैं तो} {इस्राएलियों} में
सम्मिलित नहीं होना चाहिए। 2{व्यवस्था ने यह कहा} क्योंकि {अम्मोन और मोआब के लोगों} ने इस्राएलियों को कोई भोजन या पानी नहीं दिया था {जब वे
मिस्र छोड़ने के बाद उनके क्षेत्रों में से यात्रा कर रहे थे}। इसके बजाय, उन्होंने बिलाम को धन का भुगतान किया ताकि वह इस्राएलियों को शाप दे। परन्तु हमारे
परमेश्वर ने इस्राएल को श्राप देने के उस प्रयास को आशीष में बदल दिया। 3इस कारण लोगों ने उस व्यवस्था का पालन किया। उन्होंने उन सभी लोगों को अपने
से दूर कर दिया जिनके पूर्वज दूसरे देशों से आए थे।

4जब एल्याशीब {महा} याजक बना तब उसने मन्दिर के भण्डारगृहों पर नियन्त्रण कर लिया। अब उसका सम्बंधी तोबियाह था। 5उसने {तोबियाह} को एक बड़े
कमरे में रहने की अनुमति दी जिसका उपयोग याजकों के सामान को रखने के लिए किया जाता था। इनमें अन्नबलि और धूप, मन्दिर का साजो-सामान, और
अन्न, दाखमधु और जैतून के तेल का दशमांश भी था। {परमेश्वर} ने {लोगों को} उन्हें लेवियों, गवैयों और द्वारपालों के पास लाने की आज्ञा दी थी। इस कमरे में
याजकों के लिए भेटें भी रखी जाती थीं। 6उस समय मैं यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में जब अर्तक्षत्र बाबेल का राजा था, तब मैं {राजा
को यह बताने के लिए कि मैं क्या कर रहा था} वापस चला गया था। जब मैं वहाँ कुछ समय रहा, तब मैंने राजा से कहा कि मुझे {यरूशलेम में} लौटने की
अनुमति दें।

7जब मैं यरूशलेम पहुँचा, तो मुझे पता चला कि एल्याशीब ने तोबियाह के लिए मन्दिर के क्षेत्र में इस कमरे का उपयोग करने की अनुमति देकर बुराई की थी।
8इससे मुझे बहुत अधिक दु:ख हुआ। मैंने तोबियाह का सारा सामान उस कमरे से बाहर फेंक दिया। 9फिर मैंने उस कमरे को {याजकों को शुद्ध करने के लिए
एक अनुष्ठान करने के लिए} आदेश दिया और इसे फिर से शुद्ध कर दिया गया। मैंने साथ ही {आदेश दिया} उस कमरे में मन्दिर के साजो-सामान और
अन्नबलियाँ और धूप {को} वापस {जहाँ वे थीं} वहीं रखीं जाएँ।

10मुझे यह भी पता चला कि {मन्दिर} की सेवाओं के लिए जिम्मेदार गायक और अन्य लेवीय यरूशलेम को छोड़ कर चले गए हैं। वे अपने खेतों में लौट आए थे
क्योंकि लोगों ने उन्हें {अपनी फसल का 10 प्रतिशत} देना बंद कर दिया था, {क्योंकि तोबियाह ने भण्डारगृह पर कब्जा जमा लिया था}। 11तब मैंने शहर के
अधिकारियों को डाँटा। मैंने उनसे कहा, "तुमने मन्दिर {के काम की} अनदेखी की है!" तब मैं {लेवियों और गवैयों को} वापस मन्दिर में ले आया और उनसे कहा
कि वे अपना काम {फिर से} करें। 12तब सारे यहूदा {के लोग} अन्न, दाखमधु और जैतून के तेल का दशमांश {मन्दिर} के भण्डारगृहों में {एक बार फिर} लाने
लगे। 13मैंने कुछ {पुरुषों} को भण्डारगृहों का प्रभारी नियुक्त किया। ये शेलेम्याह याजक, सादोक शास्त्री, और पदायाह लेवीय थे। मैंने उनकी सहायता के लिए
जक्कूर के पुत्र हानान और मत्तन्याह के पोते को भी नियुक्त किया। मैंने इन {पुरुषों} को इसलिए नियुक्त किया क्योंकि {सभी} जानते थे कि वे भरोसे के योग्य
और अपने सहयोगियों को {निष्पक्षता से भेटों को} वितरित करेंगे।

14"मेरे परमेश्वर, कृपया मुझे इसके लिए आशीष दे। हाँ, उन भले कामों के लिए आशीष दे जो मैंने तेरे मन्दिर और मन्दिर की सेवाओं के लिये किए हैं!”

15उन्हीं दिनों में, मैंने सब्त के दिन यहूदिया में {कुछ लोगों को} देखा {जो काम कर रहे थे}। कुछ दाखमधु को बनाने के लिए दाख रौंद रहे थे। दूसरे अपना
अनाज लेकर गधों पर लाद रहे थे। अन्य लोग भी दाखमधु {की बोरियाँ}, अँगूरों की टोकरियाँ, अंजीर, और बहुत सी अन्य वस्तुओं को गदहों पर लादकर सब्त
के दिन यरूशलेम में ला रहे थे। मैंने उन्हें चेतावनी दी कि वे {सब्त के दिन} {यहूदिया के लोगों को भोजन वस्तु} न बेचें। 16मैंने सोर {शहर} के कुछ लोगों को भी
देखा जो वहाँ {यरूशलेम} में रहते थे और सब्त के दिन यहूदा के लोगों को बेचने के लिए मछली और अन्य वस्तुएँ यरूशलेम में ला रहे थे। 17इसलिए मैंने यहूदी
मुख्य नागरिकों को फटकार लगाई। मैंने उनसे कहा, "यह तो बहुत बुरा काम है जो तुम कर रहे हो! तुम सब्त के दिन को कुछ ऐसा बना रहे हैं जिसे {परमेश्वर
कभी नहीं चाहता था} कि वह हो। 18तुम जानते हो कि तुम्हारे पूर्वजों ने भी ऐसा ही किया था, और परमेश्वर ने हमारे देश के ऊपर बड़ी मुसीबत लाने के {द्वारा}
इसे शहर को {दण्डित} किया! पर {अब} तुम भी सब्त के दिन की {व्यवस्था} को तोड़ रहे हो। तुम {एक बार फिर से} {परमेश्वर} को इस्राएल {राष्ट्र} के प्रति
क्रोधित करने पर हो। {वह हमें दण्डित करेगा} और भी अधिक!"

19इसलिए मैंने {द्वारपालों} को आज्ञा दी कि जब शुक्रवार की शाम अंधेरा होने लगे तो शहर के फाटकों को बंद कर दें। मैंने उन्हें आज्ञा दी कि वे शनिवार की
शाम तक फाटक न खोलें। मैंने अपने कुछ पुरुषों को भी फाटकों पर तैनात कर दिया था {ताकि वे यह सुनिश्चित करें कि} कोई भी सब्त के दिन {उस समय के
बीच में शहर} में बेचने के लिए सामान ना लाए। 20एक या दो बार सभी तरह की वस्तुएँ बेचने वाले व्यापारियों और दुकानदारों ने रात को {सब्त के दिन से
पहले} शहर के बाहर डेरे डाले। {कुछ अगले दिन} बेचने के लिए {आशा कर रहे थे}। 21मैंने उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे कहा, "तुम्हारे लिए शुक्रवार की रात को
शहरपनाह के बाहर डेरा डालना व्यर्थ है। यदि तुम फिर से ऐसा करते हो, तो मैं तुम्हें बलपूर्वक गिरफ्तार कर लूँगा!" उसके बाद, वे सब्त के दिनों में आगे से नहीं
आए।

22मैंने लेवियों को भी आज्ञा दी कि वे स्वयं को {अनुष्ठान करने के लिए} शुद्ध करें और फिर शहर के फाटकों की रखवाली {तैनात होते हुए} करें। मैं चाहता था
कि वे सुनिश्चित करें कि {व्यापारियों को उस पवित्र दिन में शहर में प्रवेश करने की अनुमति न देकर} सब्त के दिनों को पवित्र रखा जाए।

"मेरे परमेश्वर, कृपया मुझे भी ऐसा करने के लिए आशीष दे! और मेरे प्रति दयालु रह, क्योंकि तेरी करूणा बहुत बड़ी है।"

23उन्हीं दिनों में, मुझे यह भी पता चला कि बहुत से यहूदी पुरुषों ने अशदोद {शहर} से, और अम्मोनी और मोआबी {लोगों के समूह} स्त्रियों से विवाह किया था।
24इस कारण उनके बच्चों में से आधे विदेशी भाषा बोलते थे, और वे इब्रानी बोलना नहीं जानते थे। वे जिस भी भाषा को बोलते थे {उनके} विदेशी {माता-पिता
बोलते थे}। 25इसलिए मैंने उन पुरुषों को फटकार लगाई। मैंने {परमेश्वर से कहा} उन्हें शाप देने के लिए। मैंने उनमें से कुछ को {मेरी मुट्ठियों से} मारा। मैंने उनके
बाल नुचवाए। तब मैंने उन्हें यह जानते हुए कि परमेश्वर सुन रहा है एक गंभीर प्रतिज्ञा करने के लिए विवश किया। मैंने उनसे प्रतिज्ञा ली कि वे फिर कभी अपनी
पुत्रियों को विदेशी पुरुषों से विवाह नहीं करने देंगे। मैंने उनसे यह प्रतिज्ञा की कि वे और उनके पुत्र विदेशी स्त्रियों से विवाह नहीं करेंगे। 26{मैंने उनसे कहा,} "
तुम जानते हो कि इस्राएल के राजा सुलैमान ने {मूर्तियों की पूजा करने वाली विदेशी स्त्रियों से विवाह करके} पाप किया था! तुम जानते हो कि वह अन्य राष्ट्रों के
किसी भी राजाओं में से बड़ा था। परमेश्वर ने उस से प्रेम किया, और परमेश्वर ने उसे इस्राएल के {सारे लोगों पर} राजा ठहराया। पर उसकी विदेशी पत्नियों ने
उसे भी पाप में डाल दिया! 27तुम्हारे बारे में यह सुनकर {मैं दुखी हूँ}! तुमने {मूर्तियों की पूजा करने वाली} विदेशी पत्नियों से विवाह किया है। तुमने हमारे
परमेश्वर के विरुद्ध बहुत बड़ा पाप किया है!"

28एक व्यक्ति जो योयादा का पुत्र था और महायाजक एल्याशीब का पोता था, उसने होरोनी सम्बल्लत {हमारे शत्रु} की पुत्री से विवाह किया था। इसलिए मैंने
इस पुरुष को {यरूशलेम} छोड़ने के लिए मजबूर किया।

29"मेरे परमेश्वर, इन {पुरुषों} ने याजकपद को शर्मसार किया है। {उन्होंने तोड़ा है} याजक और लेवियों की वाचा को। उन्हें दण्डित कर क्योंकि वे इसके योग्य हैं!
"

30मैंने {याजकों} से वह सब कुछ ले लिया जो दूसरे देशों और धर्मों से आया था। मैंने याजकों और लेवियों के लिए भी नियम स्थापित किए {ताकि वे जान सकें}
कि उन में से प्रत्येक को कौन सा काम करना है। 31{मैंने} लोगों के लिए {वेदी पर जलाने के लिए} निर्धारित समय पर लकड़ी की भेटें लाने के लिए {ठहराया},
और {पूरे वर्ष की प्रत्येक फसल की} कटाई में से पहले भाग को ठहरा दिया।

"हे परमेश्वर, कृपया ध्यान दे कि मैंने {ये सभी काम किए हैं}, और मुझे {उन्हें करने के लिए} आशीष दे।"

एस्तेर

Chapter 1

1यह {उसकी कहानी है} जो उस समय घटित हुआ जब {एक राजा जिसका नाम} क्षयर्ष था {फारस की भूमि पर} शासन करता था। इस राजा क्षयर्ष के
साम्राज्य में 127 प्रांत थे और इसमें भारत के बीच के सभी क्षेत्र {पूर्व में} और इथियोपिया {पश्चिम में}सम्मिलित थे। 2उस समय राजा क्षयर्ष अपने साम्राज्य की
शूशन, {फारस की राजधानी} से शासन कर रहा था। 3तीसरे वर्ष के दौरान, जब क्षयर्ष अपने साम्राज्य पर शासन कर रहा था, तब उसने अपने सभी
अधिकारियों के लिए और उसके लिए काम करने वाले प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति के लिए एक भोज का आयोजन किया। उसने धनी जमींदार, और प्रांतों के
अधिकारियों और उन अधिकारियों को भी आमंत्रित किया, जो फारस और मादै {के राज्यों} की {संयुक्त} सेना में सेवा दे रहे थे। राजा स्वयं {भोज की मेजबानी
करने के लिए}वहाँ उपस्थित था। 4क्षयर्ष ने अपने मेहमानों का जमकर मनोरंजन किया, क्योंकि वह प्रदर्शित करना चाहता था कि उसका साम्राज्य अत्याधिक
समृद्ध था और वह एक अत्याधिक धनी और शक्तिशाली राजा था। {भोज छह महीने तक चला। 5उन छह महीनों के अंत में, {उसके बाद भोज समाप्त हो गया
था,} राजा ने एक {दूसरे} भोज का आयोजन किया। यह भोज शूशन में शाही राज गढ़ के सभी लोगों के लिए था, जिसमें धनी और गरीब दोनों सम्मिलित थे।
उसने इस भोज को अपने महल की वाटिका के आंगन में आयोजित किया। यह पूरे एक सप्ताह तक चलता रहा। 6{आंगन में} संगमरमर के खंभों पर चांदी के
छल्ले से लगे सफेद और बैंगनी रंग के डोरियों से सफेद और नीले पर्दे लटक रहे थे। मेहमानों को सोने और चांदी से बने सोफे पर बैठाया गया। ये पच्चीकारी
किए हुए फर्श पर रखे हुए थे जो लाल संगमरमर, सफेद संगमरमर और मोती से मिलकर बना था, और जिसकी किनारियाँ काले संगमरमर से घिरी हुई थीं।
7परिचारिकों ने सोने के प्यालों में शराब परोसी। {राजा इतना अधिक समृद्ध था कि उसके पास इन प्यालों में से कई थे,} और उनमें से कोई भी एक जैसा नहीं
था। राजा के परिचारिकों ने मेहमानों को बड़ी मात्रा में उसकी अपनी राजकीय शराब परोसी। 8क्षयर्ष ने अपने मेहमानों को एक विशेष सौभाग्य दिया था। उसने
शराब परोसने वाले परिचारिकों के पालन के लिए इस नियम को दिया: "किसी के लिए पीना आवश्यक नहीं है यदि वह नहीं चाहता है।" सभी मेहमान जितना
चाहें उतना कम या ज्यादा पी सकते थे। 9{जबकि राजा आंगन में पुरुषों का मनोरंजन कर रहा था,} रानी वशती, {उसकी पत्नी,} स्त्रियों के लिए एक भोज को
आयोजित कर रही थी। उसने राजकीय महल के अंदर इसका आयोजन किया, जहाँ राजा क्षयर्ष रहता था। 10सातवें दिन, जब राजा क्षयर्ष शराब पीने के कारण
अच्छा महसूस कर रहा था, तो उसने उन सात {बधित} सेवा टहल करने वालों को बुलाया, जो उसकी सेवा व्यक्तिगत रूप से करते थे। (उनके नाम महूमान,
बिजता, हर्बोना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस थे।) 11रानी वशती एक बहुत ही सुंदर स्त्री थी। क्षयर्ष लोगों को और राजकीय दरबार में सेवा करने वाले
अधिकारियों को दिखाना चाहता था कि वह कितनी अधिक सुंदर थी। इसलिए राजा ने अपने सात व्यक्तिगत् सेवकों से कहा कि रानी वशती को उसके पास ले
आओ। उसने उनसे कहा कि वह अपना राजमुकुट पहनकर आए। 12परन्तु जब सेवा टहल करने वालों ने आकर रानी वशती को बताया कि राजा ने क्या आज्ञा
दी है, तो उसने आने से इनकार कर दिया। {सेवा टहल करने वालों ने राजा को इसकी सूचना दी, और} राजा बहुत अधिक क्रोधित हो गया। 13राजा की यह
आदत थी कि वह कुछ परामर्शदाताओं से परामर्श लेता था जो कानून को जानते थे और अच्छे निर्णय ले सकते थे। इसलिए उसने उन परामर्शदाताओं से बात
की, जो कामों को करने का सही तरीका जानते थे। 14राजा के सबसे करीबी परामर्शदाताओं में कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना, और ममूकान
थे। ये सातों अधिकारी फारस और मादै {के राज्य} के विभिन्न स्थानों से थे। वे राजा को व्यक्तिगत रूप से परामर्श देते थे। वे साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली
अधिकारी थे। 15राजा ने उनसे कहा, “मैंने उन सेवा टहल करने वालों को एक आदेश के साथ रानी वशती के पास भेजा था, परन्तु उसने मेरी बात नहीं मानी।
कानून के अनुसार, हमें उसके साथ क्या करना चाहिए? " 16तब ममूकन ने राजा को उत्तर दिया, {इतना जोर से बोलना कि जिसे} वह और उसके अधिकारी
दोनों सुन सकें। उसने कहा, " रानी वशती ने केवल राजा के विरुद्ध ही नहीं, अपितु सभी प्रांतों के सभी अधिकारियों और लोगों के समूहों के विरुद्ध भी गलत
काम किया है जहाँ राजा क्षयर्ष राज्य करता है। 17यह ऐसा होगा। महारानी ने जो किया उसके बारे में पूरे साम्राज्य की स्त्रियाँ सुनेंगी। वे कहेंगे, 'राजा क्षयर्ष ने
अपने सेवकों को रानी वशती को उसके पास लाने की आज्ञा दी थी, परन्तु वह नहीं आई! {इसलिए यदि रानी भी राजा की अवज्ञा कर सकती है, तो मुझे अपने
पति की आज्ञा क्यों माननी चाहिए?} 'तब स्त्रियाँ अपने पति को सम्मान देना बंद कर देंगी। 18"यहाँ तक कि आज, जब फारस और मादै की अग्रणी स्त्रियाँ
सुनेंगी कि रानी ने क्या किया। तो वे {उनके पतियों की, यहाँ तक कि उनके) राजा के अधिकारी होने पर भी आज्ञा की अवहेलना करने लगेंगी। वे उनके साथ
निरादर के साथ व्यवहार करेंगी, और इससे उनके पति उनसे क्रोधित हो जाएंगे। यह अपने आप में ही बहुत बुरा होगा, {चाहे यह समाचार कहीं भी और अधिक
न फैले}। 19" यदि यह तुझे प्रसन्न करता है {ऐसा करने से}, हे राजा, तो तुझे व्यक्तिगत रूप से एक राजकीय राजाज्ञा देनी चाहिए और इसे फारस और मादै के
शास्त्रियों को कानूनों में जोड़ना चाहिए, जिसे कोई भी नहीं बदल सकता है। {यह राजाज्ञा ऐसा कहे} कि वशती तेरे सम्मुख फिर कभी नहीं आ सकती। तब तुझे
अपनी रानी बनने के लिए एक अलग स्त्री का चुनाव करना चाहिए, जो तेरी बात माने। 20"इस तरह से, यद्यपि तेरा साम्राज्य बहुत बड़ा है, तथापि इसमें हर कोई
तेरी राजाज्ञा के बारे में सुनेगा {और जानेगा कि यदि कोई पत्नी अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करती है, तो उसे दूर किया जा सकता है और तलाक दिया
जा सकता है, जैसा कि तूने वशती के साथ किया है।" तब सभी स्त्रियाँ अपने पति का सम्मान करेंगी और उसकी आज्ञा का पालन करेंगी। यह साम्राज्य में हर
पति के लिए सच ठहरेगा। ” 21यह राजा और उसके अधिकारियों को एक अच्छा विचार प्रतीत हुआ। इसलिए राजा क्षयर्ष ने ममूकान के परामर्श का पालन
किया। 22राजा ने अपने साम्राज्य के हर प्रांत में पत्रों को भेजा। उसने हर प्रांत की उसकी अपनी वर्णमाला और प्रत्येक व्यक्ति समूह की अपनी भाषा का
उपयोग करते हुए लिखा। पत्रों में कहा गया कि पुरुषों को अपनी पत्नी और बच्चों पर स्वामी होना चाहिए। उसने यह भी कहा कि एक पति को अपनी पत्नी को
अपनी मूल भाषा में आदेशों को देने में योग्य होना चाहिए {और यह कि उसे इसे समझना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए}।

Chapter 2

1कुछ समय बाद, जब राजा क्षयर्ष का गुस्सा कम हो गया, तो उसने वशती को याद करना आरम्भ कर दिया। परन्तु जब उसने उसकी आज्ञा की अवहेलना की
थी, तो उसने एक राजाज्ञा दी थी कि वह फिर कभी उसके सम्मुख में नहीं आ सकती। 2तब राजा की सेवा टहल करने वालों में से कुछ जवान पुरुषों ने उससे
कहा, "{हे महाराजाधिराज, तुझे एक नई पत्नी लानी चाहिए} अपने लिए। तू अपने सेवकों से कह सकता है कि वे उन जवान कुँवारियों की खोज करें जो
अत्याधिक सुंदर हैं। 3"इसके अतिरिक्त, तू अपने साम्राज्य के प्रत्येक प्रांत में अधिकारियों को हर उस कुँवारी को यहाँ तेरी राजधानी शूशन में लाने के लिए
नियुक्त कर सकता है जो अत्याधिक सुंदर है। वे राजकीय संरक्षक, हेगे की सुरक्षा में कुवारियों के हरम में रह सकती हैं, जो वहाँ रहने वाली जवान स्त्रियों की
देखरेख करता था। वह उनके लिए सौंदर्य उपचार प्राप्त करने की व्यवस्था करता था। 4" तब तू निर्णय ले सकता है कि तुझे कौन सी जावन स्त्री सबसे ज्यादा
पसंद है, और तू वशती के स्थान पर उसे रानी बना सकता है।" राजा को उनका दिया सुझाव पसंद आया, इसलिए उसने वैसा ही किया। 5उस समय, राजधानी
शूशन में मोर्दकै नाम का एक यहूदी पुरुष रहता था। वह बिन्यामीन के गोत्र से था। उसके पिता का नाम याईर था, उसके दादा का नाम शिमी था और उसके
परदादा का नाम कीश था। 6कई वर्षों पहले, बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने कीश को यरूशलेम से निर्वासित कर दिया था और उसे कुछ अन्य बंदियों के साथ
बाबेल ले आया था। नबूकदनेस्सर ने उन्हें यरूशलेम से उसी समय ले लिया था जब वह यहूदा के राजा यकोन्याह को यरूशलेम से दूर ले गया और उसे बाबेल ले
आया। 7अब मोर्दकै अपनी चचेरी बहन की देखभाल कर रहा था, जो एक अनाथ थी। उसका {इब्रानी} नाम हदास्सा था, और उसका {फारसी} नाम एस्तेर था।
जब उसके पिता और माता की मृत्यु हो गई, तब मोर्दकै ने उसे अपनी पुत्री के रूप में गोद ले लिया था। एस्तेर अब एक युवा स्त्री थी, और वह असाधारण रूप से
आकर्षक थी। 8और इस तरह से ऐसा हुआ: कि सन्देशवाहक {पूरे साम्राज्य में} चले गए और राजा द्वारा बोले गए नए कानून की घोषणा की। उसी समय,
अधिकारीगण {जिन्हें राजा ने प्रत्येक प्रांत में नियुक्त किया था) कई {सुंदर} जवान स्त्रियों को राजधानी शूशन में लाए और उन्हें हेगे की देखरेख में रखा। वह
वही आदमी था जो जवान स्त्रियों की देखरेख करता था {वह कुंवारी लड़कियों के हरम में रहता था}। {क्योंकि एस्तेर असाधारण रूप से आकर्षक थी,}
अधिकारीगण उसे भी राजा के महल में लाए और उसे हेगे के देखरेख में रखा। 9हेगे एस्तेर से बहुत अधिक प्रभावित हुआ, और उसने उसके साथ कृपा भरा
व्यवहार किया। उसने एस्तेर के लिए शीघ्रता से सौंदर्य उपचार और भोजन के आवंटन की व्यवस्था की। उसने राजा के महल से सात महिला सेविकाओं को भी
चुना और उन्हें उसकी निजी परिचारिकाओं के रूप में नियुक्त किया। उसने एस्तेर और उसकी परिचारिकों को कुंवारियों के हरम में बने उत्तम कमरों में भेजा।
10मोर्दकै ने एस्तेर को चेतावनी दी थी कि वह किसी को यह न बताए कि वह किन लोगों के समूह से थी। इसलिए उसने किसी को नहीं बताया कि वह एक
यहूदिन थी या उसके संबंधी कौन हैं। 11मोर्दकै जानना चाहता था कि एस्तेर का क्या हालचाल है और उसके साथ क्या कुछ हो रहा था। इसलिए वह प्रत्येक
दिन, कुंवारियों के हरम के आंगन के सामने घुमता था। इस तरह वह उन लोगों से पूछ सकता था जो हरम में जा रहे और इसमें से बाहर आ रहे थे कि उसका
हालचाल क्या था। 12हरम की प्रत्येक जवान स्त्री, एक समय में एक, राजा क्षयर्ष के पास {यौन संबंध बनाने के लिए} जाती थी और उसकी रखैलों में एक बन
जाती थी}। परन्तु अपनी बारी आने से पहले, प्रत्येक स्त्री को सौंदर्य उपचार के लिए एक पूरा वर्ष, उन उपचार तकनीकों का उपयोग करने के लिए मिलता था
जो {फारस में} स्त्रियों के लिए विकसित की गई थीं। इस तरह सौंदर्य उपचार पूरा होता था: पहले छह महीनों तक, गन्धरस मिले हुए जैतून के तेल के साथ{एक
स्त्री की परिचारिका प्रतिदिन उसके शरीर को रगड़ती थी}। अगले छह महीनों तक, स्त्रियों के लिए बनाए गए इत्र और मलहम के साथ {उसकी परिचारिक
प्रतिदिन उसके शरीर को रगड़ती थी}। 13इस तरीके से वे एक जवान स्त्री को राजा के पास जाने {और उसके साथ यौन संबंध बनाने} {और उसकी रखैलियों में
एक हो जाने} के लिए तैयार करती थीं। वह कुंवारियों के हरम से जो भी कपड़े और गहने ले जाना चाहती थी, ले जा सकती थी और राजा के महल में जाने पर
उन्हें पहन सकती थी। 14राजा के सेवक शाम को उसे {राजा के निजी कमरों में} ले आते थे। अगली सुबह, वे उसे दूसरे हरम में ले आते थे, वह जो रखैलियों के
लिए है। वहाँ शशगज नाम का एक व्यक्ति उसे अपने अधिकार में ले लेता था, क्योंकि वह {बधित} राजकीय सेवा टहल करने वाला था, जो रखैलियों की
देखभाल करता था। {जवान स्त्री अपने शेष जीवन भर वहीं रहती थी।} वह तब तक राजा के पास नहीं जाती थी, और राजा को फिर तब तक नहीं देखती थी
जब तक वह उसे उसके नाम से नहीं बुलाता था क्योंकि उसने उसके साथ रहने का आनन्द प्राप्त किया था। 15अंत में, {वह शाम आई जब} यह एस्तेर की बारी
थी, जिसे राजा के पास जाने के लिए मोर्दकै ने अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। वह मोर्दकै के चाचा अबीहैल की पुत्री थी। जब एस्तेर राजा के पास गई, तो
उसने केवल वहीं माँगा जिसे कुंवारियों के हरम के प्रभारी राजकीय सेवा टहल करने वाले हेगे ने सिफारिश किया था कि उसे क्या पहनना चाहिए। एस्तेर को
जिसने भी देखा वह सब उससे बहुत प्रभावित हुए। 16राजा के सेवक एस्तेर को वर्ष के दसवें महीने (तेबेत का महीना) में उसके राज्य {फारस के राजा के रूप
में) के सांतवे वर्ष में राजा क्षयर्ष के राजमहल में लेकर आए। 17राजा ने अन्य स्त्रियों की तुलना में एस्तेर से अधिक प्रेम किया। उसने किसी भी अन्य जवान स्त्री
{जो उसकी रखैलियाँ बन गई थीं} की तुलना में उससे अधिक दयालुता भरा और अधिक कृपापूर्ण व्यवहार किया। इसलिए राजा क्षयर्ष ने उसके सिर पर एक
राजकीय मुकुट रख दिया, और उसने उसे वशती के स्थान पर रानी बना दिया। 18तब राजा ने एक बड़े भोज का आयोजन किया और अपने सारे अधिकारियों
और सेवकों को आमंत्रित किया। यह एस्तेर का {रानी बनने के लिए} उत्सव भोज था। उसने घोषणा की कि यह उसके साम्राज्य के सभी प्रांतों में लोगों के लिए
उत्सव मनाने का समय होगा {जब उन्हें करों का भुगतान नहीं करना होगा}, और उसने उदारता से {लोगों को} उपहार दिए। 19{बाद में,} क्षयर्ष के अधिकारी
{शूशन में} और अधिक कुँवारियों को लाए । इस समय के दौरान, मोर्दकै {राजा के लिए काम कर रहा था, और वह} राजा के फाटक पर बैठता था। 20एस्तेर ने
अभी भी किसी को नहीं बताया था कि वह किन लोगों के समूह से है, क्योंकि मोर्दकै ने उसे किसी को न बताने के लिए चेतावनी दी थी। वास्तव में, वह मोर्दकै
के सभी निर्देशों का पालन करती रही, जैसा कि उसने तब किया था जब वह उसके घर में बड़ी हो रही थी। 21उस समय में, जब मोर्दकै राजा के फाटक पर
{अपना कार्य} कर रहा था, राजा के दो प्रहरी, जो {राजा के निजी कमरों में} जाने वाले द्वार के मार्ग की रक्षा करते थे {राजा के साथ} नाराज हो गए। उन्होंने
राजा क्षयर्ष की हत्या करने की योजना बनाई। उनके नाम बिगताना और तेरेश थे। 22परन्तु मोर्दकै ने पता लगा लिया कि वे क्या योजना बना रहे थे। उसने रानी
एस्तेर को इसके बारे में बताया, और उसने राजा को बताया। उसने वर्णन किया कि मोर्दकै ने उसे जानकारी दी थी। 23इसलिए राजा के अधिकारियों ने मोर्दकै
की रिपोर्ट की जाँच की और पाया कि यह सच थी। इस कारण राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि उन दो पुरुषों को लकड़ी के खंभे से लटका दिया जाए
{जब तक कि वे मर नहीं जाते}। राजा के शास्त्रियों ने राजा की उपस्थिति में राजकीय इतिहास में इसका विवरण लिपिबद्ध किया।

Chapter 3

1कुछ समय बाद, राजा क्षयर्ष ने {अपने अधिकारियों में से एक} हम्मदाता के पुत्र, हामान को ऊँचा पद दिया, जो अगाग का वंशज था। राजा ने हामान को एक
बहुत ही महत्वपूर्ण पद दिया, जो उसके अन्य अधिकारियों की तुलना में अत्याधिक महत्वपूर्ण था। 2राजा {यह दिखाना चाहता था कि उसने हामान को एक
महत्वपूर्ण पद दिया था। इसलिए उसने} अपने सभी अन्य सेवकों को आज्ञा दी, जो राजा के फाटक पर रहते थे कि वे हामान को सम्मानित करने के लिए भूमि
पर झुकते चले जाएँ {जब भी वह वहाँ से निकलता था}। परन्तु मोर्दकै ने हामान के सामने झुकने से इनकार कर दिया, {क्योंकि एक यहूदी के रूप में वह याहवे
के अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना नहीं करता था}। 3राजा के फाटक पर उपस्थित अन्य सेवकों ने {देखा कि मोर्दकै ने झुकने से इनकार कर दिया है, और
उन्होंने} उससे पूछा, "तू राजा की आज्ञा की अवहेलना क्यों कर रहा है?" 4मोर्दकै ने उन्हें बताया कि वह एक यहूदी था, {और यहूदी केवल याहवे की आराधना
करते हैं}। अन्य सेवकों ने मोर्दकै को प्रतिदिन चेतावनी दी {कि यदि वह राजा की आज्ञा की अवहेलना करता रहेगा और उसके सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी का
सम्मान न करेगा तो उसे कठोर दंड दिया जाएगा}। परन्तु मोर्दकै ने अभी भी झुकने से इनकार कर दिया। इसलिए उन्होंने हामान को इसके बारे में यह देखने के
लिए बता दिया कि क्या वह मोर्दकै को {क्योंकि वह एक यहूदी था} न झुकने की अनुमति देगा। 5जब हामान ने देखा कि मोर्दकै उसके सामने नहीं झुकेगा, तो
वह क्रोधित हो गया। 6दूसरे सेवकों ने हामान से कहा कि {मोर्दकै उसके सामने नहीं झुक रहा था क्योंकि} मोर्दकै एक यहूदी था। इसलिए हामान ने निर्णय लिया
कि केवल मोर्दकै को मारना ही पर्याप्त नहीं होगा। हामान ने निर्णय लिया कि वह क्षयर्ष के पूरे साम्राज्य में सभी यहूदियों को मारने का प्रयास करेगा। 7इसलिए
हामान ने अपने सेवकों के द्वारा एक पूर (अर्थात्, एक चिट्ठी) डलवाई, जबकि उसने {यहूदियों को मारने के लिए सबसे अच्छे महीने को और महीने के सबसे
अच्छा दिन को निर्धारित करते हुए} देखा। उन्होंने यह पहले महीने, नीसान के महीने में किया, बारहवें वर्ष में, जब क्षयर्ष {ने फारस के राजा के रूप में) शासन
किया। चिट्ठी ने उस वर्ष के बारहवें महीने, अदार के महीने को, {हामान के लिए अपनी योजना को पूरा करने का समय} चुना। 8तब हामान राजा क्षयर्ष के पास
गया और कहा, "महामहिम, तेरे साम्राज्य में अन्य लोगों के बीच रहने वाले लोगों का एक निश्चित समूह है। वे हर प्रांत में हैं। उनके पास कानूनों की अपनी ही
सूची है, और इसलिए वे तेरे कानूनों का पालन नहीं करते हैं। तेरे लिए यह अच्छा नहीं है कि तू उन्हें अपने साम्राज्य में रहने दें। 9"हे राजा, यदि तू इस योजना का
अनुमोदन करता है, तो यह कहते हुए एक राजाज्ञा लिख कि सभी यहूदियों को मरना होगा। {जब वे मर जाएंगे, तो हम उनकी सारी वस्तुएँ को ले सकते हैं, और
उस से} मैं तेरे राजकीय खजाने में डालने के लिए 300 टन चाँदी तेरे प्रशासकों को दूँगा। " 10राजा ने {हामान की कही हुई बात को पसंद किया। इसलिए उसने}
हामान को वह अंगूठी दी, जो उसने पहनी थी, जिस पर उसकी आधिकारिक मुहर थी। {इसके साथ ही, हामान कानून बना सकता था मानो कि वह स्वयं राजा
था।} हामान, अगागी हम्मदाता का पुत्र, यहूदियों का शत्रु बन गया था। 11राजा ने हामान से कहा, "तू अपने लिए धन रख सकता है, और तू उन लोगों के साथ
जो करना चाहता है, वह कर सकता है।" 12उसी वर्ष के पहले महीने के तेरहवें दिन, हामान ने राजकीय शास्त्रियों को बुलाया, और उसने उनसे एक पत्र
लिखवाया। उसने उन्हें राजकीय अधिकारियों, प्रत्येक प्रांत के राज्यपालों और प्रत्येक लोगों के समूह के अगुवों को इसकी प्रतियाँ भेजने के लिए कहा। शास्त्रियों
ने पत्र का अनुवाद किया ताकि यह प्रत्येक प्रांत को उनकी अपनी वर्णमाला में और प्रत्येक व्यक्ति समूह को उसकी अपनी भाषा का उपयोग करके भेजी जा
सके। यह दिखाने के लिए कि वह राजा के अपने अधिकार के अधीन पत्र को भेज रहा था, हामान ने पत्र की प्रत्येक प्रति को उस अंगूठी से मुहरबन्द कर दिया
जिस पर राजा की आधिकारिक मुहर थी। 13हरकारों ने साम्राज्य के प्रत्येक प्रांत के अधिकारियों को पत्र पहुँचाया। पत्रों ने एक ही निश्चित दिन में बच्चों और
स्त्रियों सहित सभी यहूदियों को पूरी तरह से नष्ट करने के लिए कहा। वह वर्ष का बारहवें महीने का तेरहवाँ दिन, अदार का महीना था {उसी वर्ष में}। पत्रों ने यह
भी कहा कि जो लोग यहूदियों को मारते हैं, वे उनका सब कुछ ले सकते थे। 14पत्र में अधिकारियों को कहा गया कि वे प्रतियाँ को ऐसे स्थान पर चस्पा करें जहाँ
हर कोई उन्हें देख सके। इस तरह से हर एक प्रांत के सभी लोगों को पता चल जाएगा कि राजा ने यह आज्ञा दी थी, और वे तैयार हो जाएंगे {पत्र में कहे अनुसार
करने के लिए} जब वह दिन आएगा। 15राजा ने जैसी आज्ञा दी थी, हरकारों ने {पत्र के साथ साम्राज्य के प्रत्येक प्रांत के लिए} शीघ्रता की। एक अग्रदूत ने भी
शूशन राजगढ़ घोषणा की कि पत्र में क्या कहा गया था। राजा और हामान ने आराम किया और एक साथ दाखमधु पी। परन्तु शूशन में रहने वाला हर कोई {जो
होने वाला था उसे लेकर}अत्याधिक परेशान था।

Chapter 4

1जब मोर्दकै को हामान की योजना के बारे में पता चला {सभी यहूदियों को मारने के लिए, तो उसने दु:ख के संकेत के रूप में} अपने कपड़े फाड़े और अपने
ऊपर खुरदरा टाट डाल लिया और आपने ऊपर राख फेंकी। फिर उसने शहर के केंद्र, {राजा के महल की ओर} की ओर पीड़ा में रोते हुए चलना आरम्भ कर
दिया। 2परन्तु जो कोई भी टाट का कपड़ा पहने हुए होता था, उसे राजा के फाटक के भीतर जाने की अनुमति नहीं होती थी। इसलिए जब मोर्दकै फाटक के
पास पहुँचा, तो उसे बाहर ही रहना पड़ा। 3साम्राज्य के हर प्रांत में, वे पत्र जिनमें यहूदियों को नष्ट करने के लिए कहा गया था (जब सार्वजनिक रूप से घोषित
किया गया। तब} यहूदियों ने इसके बारे में सुना, तो उन्होंने अत्याधिक विलाप किया। वे बिना भोजन किए और ऊँची आवाज में रोए। उनमें से बहुतों ने अपने
ऊपर टाट भी डाल लिया और अपने ऊपर राख डाली और भूमि पर लेट गए। 4एस्तेर की महिला परिचारक अपने संरक्षकों के साथ आईं और उसे बताया {कि
मोर्दकै फाटक के बाहर टाट ओढ़े हुए बैठा था। जब उसने इसके बारे में सुना,} तो रानी एस्तेर स्वयं बहुत अधिक डर गई। उसने टाट की जगह मोर्दकै को पहनने
के लिए कुछ अच्छे कपड़े भेजे, परन्तु उसने उन्हें पहनने से मना कर दिया। 5राजा ने एस्तेर के लिए कुछ राजकीय संरक्षक को व्यक्तिगत रूप से नियुक्त किया
था। इसलिए एस्तेर ने उनमें से एक हताक नामक आदमी को बुलाया। उसने उससे कहा कि वह बाहर जाकर मोर्दकै से बात करे और पता लगाए कि वह इतना
अधिक व्याकुल क्यों है {कि वह राजा के फाटक पर टाट ओढे बैठा है}। 6इस कारण हताक मौर्दकै{के साथ बात करने के लिए} बाहर गया, जो राजा के फाटक
के सामने मैदान में था। 7मोर्दकै ने हताक को सब कुछ बताया जिसे हामान {यहूदियों के लिए} करने की योजना बना रहा था। उसने यह भी बताया कि हामान ने
राजा को कहा था कि वह इसके लिए उसके खजाने में से कितना धन देगा {यदि राजा आदेश देता है कि लोग} सभी यहूदियों को मार डालें। 8मोर्दकै ने हताक
को उस पत्र की एक प्रति भी दी जिसे अग्रदूतों ने ऊँची आवाज में शूशन में पढ़ा था और कहा था कि लोगों को सभी यहूदियों को मारना चाहिए। उसने हताक
को एस्तेर को पत्र दिखाने के लिए कहा ताकि वह सटीकता से जान सके कि उसने क्या कहा। उसने उससे यह भी कहा कि वह राजा के पास जाकर व्यक्तिगत

रूप से विनती करे और अपने लोगों को नाश होने से बचाने के लिए उससे दया दिखाने के लिए आग्रह करे। [9]इसलिए हताक एस्तेर के पास वापस लौट आया और उसे बताया कि मोर्दकै ने उससे क्या कहा था। [10]तब एस्तेर ने हताक को इस संदेश के साथ मोर्दकै के पास वापस जाने के लिए कहा: [11]"{राजा के सामने जाने के बारे में} एक कानून है जो कि {राज्य में हर किसी}, पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर लागू होता है। यदि कोई भी महल के भीतरी आंगन में जाता है, {जहाँ राजा उन्हें देख सकता है}, और राजा ने उन्हें नहीं बुलाया होता, तो वह व्यक्ति मार दिया जाता है। केवल यदि राजा अपने सोने वाले राजदण्ड को उन तक आगे बढ़ाता है, तभी वे जीवित रहेंगे। पूरे साम्राज्य में हर कोई इस कानून को जानता है। {इसलिए मैं राजा के पास नहीं जा सकती हूँ और उससे नहीं बोल सकती हूँ जैसा कि तूने निवेदन किया है।} एक महीने से अधिक समय से राजा ने मुझे नहीं बुलाया है, {और यदि मैं बिना बुलाए चली जाती हूँ, तो मैं मौत के घाट उतारी जा सकती हूँ]। " [12]तब {हताक} वापस मोर्दकै के पास चला गया और उसे बताया कि एस्तेर ने क्या कहा था। [13]मोर्दकै ने {हताक से} एस्तेर को यह बताने के लिए कहा: “ केवल यह कल्पना न कर क्योंकि तू राजा के महल में रहती है इसलिए तू सुरक्षित रहेगी जब वे अन्य सभी यहूदियों को मारेंगे। [14]“यदि तू अभी कुछ नहीं बोलती, तो किसी अन्य स्थान से कोई न कोई यहूदियों को छुड़ाएगा, परन्तु तू और तेरे संबंधी नहीं बच पाएंगे। कौन जानता है कि, शायद यह केवल ऐसे समय के लिए हुआ कि तू रानी बनी है। [15]{हताक द्वारा एस्तेर को बताने के बाद}, उसने उससे मोर्दकै के पास वापस जाने के लिए कहा और उससे यह कहने के लिए कहा: [16]“सभी यहूदियों को इकट्ठा कर, जो यहाँ शूशन में रहते हैं और उन्हें उपवास करने और मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए कह। उनसे कह कि तीन दिन और तीन रात कुछ भी न खाएँ या पिएँ। मेरी महिला परिचारकें और मैं भी उसी तरह उपवास करेंगे। तीन दिनों के अंत में, मैं राजा के पास {बात करने के लिए} जाऊँगी, भले ही ऐसा करना कानून के विरुद्ध ही क्यों नहीं है। मैं ऐसा करूँगी, चाहे इसके लिए मुझे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े। ”
[17]इसलिए{हताक द्वारा मोर्दकै को बताने के बाद}, वह चला गया और उसने वह सब किया जिसे करने के लिए एस्तेर ने उससे कहा था।

Chapter 5

[1]तीन दिन के बाद, एस्तेर {और उसके सेवकों ने एक भव्य भोज तैयार किया। फिर उसने} अपने राजकीय वस्त्र पहने, और वह {चली गई और} राजा के घर के सामने, राजमहल के भीतरी आंगन में जाकर खड़ी हो गई। राजा राजकीय महल में, राजकीय सिंहासन पर बैठा हुआ था, और कमरे के प्रवेश द्वार की ओर मुँह किए हुए था। [2]जैसे ही राजा ने रानी एस्तेर को वहाँ आँगन में खड़े देखा, वह उसे देखकर अत्याधिक प्रसन्न हुआ। इसलिए उसने अपने सोने वाले राजदण्ड को उसकी ओर आगे बढ़ाया, {यह दिखाने के लिए कि वह सुरक्षित रूप से उससे मिल सकती थी}। इसलिए एस्तेर {सिंहासन के पास} आई और राजदण्ड की नोक को छुआ। [3]तब राजा ने उससे पूछा, “हे रानी एस्तेर, तू यहाँ क्यों आई है? तू क्या चाहती है? {मुझे बता, और} मैं तुझे कुछ भी दूँगा जिसे तू मांगती है, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो। " [4]एस्तेर ने उत्तर दिया, " हे राजा, यदि यह तुझे प्रसन्न करे, तो हामान के साथ आज उस भोज के लिए आ जो मैंने तेरे लिए तैयार किया है। " [5]राजा ने अपने सेवकों से कहा, " {जाओ और} हामान को ले आओ और उसे शीघ्रता से ले आओ ताकि हम वह कर सकें जिसे एस्तेर ने हमें करने के लिए कहा है! "इसलिए राजा और हामान उस भोज में गए, जिसे एस्तेर {और उसके सेवकों} ने {उनके लिए} तैयार किया था। [6]जब वे दाखमधु पी रहे थे, तब राजा ने एस्तेर से कहा, “अब तू कृप्या मुझे बता कि तू {वास्तव} क्या चाहती है। मैं तुझे कुछ भी दूँगा {जिसे तू मांगती है}, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो। मैं जो कह रहा हूँ वही मेरा तात्पर्य है। [7]एस्तेर ने उत्तर दिया, " मैं {वास्तव} में यह चाहती हूँ: [8]यदि तू मुझ से प्रसन्न है, और यदि तू प्रसन्न है, तो हे राजा, जिसे मैं चाहती हूँ, उसे देने के लिए, कृप्या हामान के साथ {एक और} भोज में आ, जिसे मैं कल तेरे लिए तैयार करूँगी। मैं तब तेरे प्रश्न का उत्तर दूँगी।” [9]हामान {उस दिन} अत्याधिक प्रसन्नता को महसूस कर रहा था जब वह वहाँ {भोज पर} से गया। परन्तु फिर उसने मोर्दकै को राजा के फाटक पर बैठे देखा। मोर्दकै हामान के प्रति सम्मान दिखाने या उसके सामने डर से काँपने के लिए खड़ा नहीं हुआ। इसने हामान को मोर्दकै के प्रति क्रोधित कर दिया। [10]परन्तु {यद्यपि} हामान {अत्याधिक क्रोधित था, उसने} अपने आप को इसे दिखाने से रोक दिया कि वह क्रोधित था। {इसकी अपेक्षा,} वह घर गया और अपनी पत्नी जेरेश के साथ अपने मित्रों को इकट्ठा किया, [11]और उसने उनके आगे इस बात का घमंड दिखाया कि वह कितना अधिक धनी था और उसके कितने पुत्र थे। {उसने} साथ ही यह{घमंड} भी किया कि कैसे राजा ने उसे कई बार पदोन्नत किया था और उसे अपने सभी अन्य अधिकारियों और प्रशासकों से ऊपर वाला पद दिया। [12]तब हामान और अधिक जोड़ते हुए कहा, “और इतना ही काफी नहीं है! मैं ही केवल एक व्यक्ति था जिसे राजा के साथ उस भोज में जाने के लिए आमंत्रण मिला था जिसे रानी एस्तेर ने {हमारे लिए आज} तैयार किया था। और उसने कल मुझे केवल राजा के साथ {एक और भोज में शामिल होने के लिए} आमंत्रित किया है।
[13]तब हामान ने कहा, "परन्तु मैं तब तक प्रसन्न नहीं रह सकता, जब तक मैं उस यहूदी, मोर्दकै को राजा के फाटक पर बैठा हुआ देखता रहूँ {और वह मुझे सम्मान देने से इनकार करता रहे}।" [14]इसलिए हामान की पत्नी जेरेश और उसके मित्र जो वहाँ थे, ने सुझाव दिया कि, “तेरे सेवक 25 मीटर ऊँचा खम्बा खड़ा करें। तब कल सुबह राजा से बोल और उससे कह कि तू मोर्दकै को इस पर लटकाना चाहता है। तब {फिर मोर्दकै को फाँसी दे देने के बाद,} तू अच्छे प्रसन्न मन के साथ राजा के साथ भोज में जा सकता है।” हामान ने सोचा कि यह एक अच्छी योजना है, इसलिए उसने {अपने सेवकों को} खम्बा खड़ा करने के लिए कहा।

Chapter 6

[1]उस रात राजा सोने में असमर्थ हुआ। इसलिए उसने {उसकी सेवा करने वाले राजकीय जवानों} को राजकीय इतिहास वाली पुस्तकों को लाने के लिए कहा। उनमें से एक {जवान इतिहास की पुस्तकों को ले आया और} उन्हें राजा के सामने ऊँची आवाज में पढ़ना आरम्भ किया। [2]इतिहास की पुस्तकों ने बताया कि बिगताना और तेरेश, दो राजकीय प्रहरी, जो {राजा के व्यक्तिगत् कमरों में जाने वाले} प्रवेश द्वार की रक्षा करते थे, राजा क्षयर्ष की हत्या करने की योजना बना रहे थे। इतिहास की पुस्तकों ने यह भी बताया कि मोर्दकै ने {उनकी साजिश की खोज की थी और} राजा को इसके बारे में बताया था। {ऐसा करने से, मोर्दकै ने राजा की जान बचाई थी। " [3]तब राजा ने पूछा, " मेरे जीवन को बचाने के लिए मैंने मोर्दकै को किस बड़े तरीके से सम्मानित किया था? "उसकी सेवा करने वाले जवानों ने उत्तर दिया, " किसी ने भी उसके लिए कुछ नहीं किया। " [4]उसी क्षण, हामान ने राजा के घर के बाहरी आंगन में प्रवेश किया। वह राजा को यह बताने के लिए आया था कि वह मोर्दकै को उस खम्बे पर लटकाना चाहता है जिसे उसने मोर्दकै के लिए खड़ा किया था। राजा {मोर्दकै को सम्मानित करने के सर्वोत्तम

तरीके के बारे में किसी से सम्मति लेना चाहता था, इसलिए उसने} पूछा, “वहाँ आंगन में बाहर कौन है?” 5जवान पुरुषों ने उत्तर दिया, " हे राजा, हामान आँगन
में खड़ा है। "राजा ने कहा, " उसे अंदर ले आओ। " 6जब हमान अंदर आया, तो राजा ने उससे पूछा, " मुझे उस पुरुष के लिए क्या करना चाहिए जिसे मैं
वास्तव में सम्मान देना चाहूँ? "हामान ने इसे स्वयं के लिए सोचा, " निश्चित रूप से मैं वह पुरुष हूँ जिसे राजा किसी और से भी अधिक सम्मान देना चाहेगा! "
7हामान ने राजा को उत्तर दिया, " यदि तू वास्तव में किसी को सम्मान देना चाहता है, 8तो अपने सेवकों से कह कि वे तेरे राजकीय वस्त्रों में से एक को ले आएँ
जिसे तू पहले ही पहन चुका हो। वे एक घोड़ा भी ले आएँ जिस पर तूने खुद पहले से ही सवारी कर ली हो और इसके सिर पर एक राजकीय मुकुट रख {यह
दिखाने के लिए कि यह तुझ से संबंधित है}। 9"तब, {तेरी ओर से,} तेरे सबसे अधिक कुलीन अधिकारियों में से एक उस पुरुष को लबादा और घोड़ा भेंट में दें।
तेरे सेवक उस पुरुष को वस्त्र पहनाएँ जिसे तू वास्तव में {लबादे के साथ} सम्मान देना चाहता है। वे उस पुरुष को घोड़े पर बैठाएँ और तब शहर के सार्वजनिक
चौक से घोड़े को लेकर जाएँ। वे {सबके लिए} उनके सामने ऊँची आवाज में चिल्लाएँ, " राजा यह कर रहा है क्योंकि वह वास्तव में इस पुरुष को सम्मानित
करना चाहता है! " 10राजा {को यह योजना पसंद आई, इसलिए उस} ने हामन को उत्तर दिया, " शीघ्रता से जा! लबादे और घोड़े को ले जा और वही करो जो
तूने अभी अभी यहूदी मोर्दकै के लिए वर्णित किया है। वह {मेरे सेवकों में से एक है जो} महल के फाटक पर बैठता है। सुनिश्चित करना कि तू ठीक वही सब कुछ
करे जिसे तूने कहा है।” 11तब हामान {ने वही किया, जिसकी आज्ञा राजा ने दी थी, उस} ने लबादे और घोड़े को ले लिया। उसने मोर्दकै को लबादा पहनाया,
उसे घोड़े पर बैठाया, और फिर घोड़े को शहर के सार्वजनिक चौक से होते हुए लेकर चला। जब उसने यह किया, तो वह सबके सामने चिल्लाया, "राजा ऐसा कर
रहा है क्योंकि वह वास्तव में इस पुरुष को सम्मानित करना चाहता है!" 12तब मोर्दकै राजा के फाटक पर {अपने स्थान पर} वापस चला गया। परन्तु हामान ने
{अपने} सिर को ढकते हुए {क्योंकि उसने अत्याधिक अपमानित महसूस किया}, अपने घर जाने में शीघ्रता की। 13हामान ने {इकट्ठा किया} उसके सभी मित्रों
को {एक बार फिर से एक साथ। उसने} उन्हें और अपनी पत्नी जेरेश को वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था {उस दिन। उसके कुछ मित्र भी} उसके
परमर्शदाता {, और उन्होंने} और उसकी पत्नी जेरेश ने उसे बताया, “मोर्दकै ने तुझे हराना आरम्भ कर दिया है। चूंकि वह यहूदी लोगों में से एक है, तू उसके
विरुद्ध जय नहीं पाएगा। इसकी अपेक्षा, वह निश्चित ही तुझे हरा देगा। ” 14जब वे अभी भी एक दुसरे से बात कर ही रहे थे, {कुछ} राजकीय संरक्षक हामान को
शीघ्रता से भोज में ले जाने के लिए पहुँच गए, जिसे एस्तेर {और उसके सेवकों} ने तैयार किया था।

Chapter 7

1इस तरह राजा और हामान {दूसरे} भोज में गए जिसे रानी एस्तेर {ने उनके लिए प्रबन्ध किया था}। 2उस दूसरे भोज में, जब वे दाखमधु पी रहे थे, राजा ने
एस्तेर से फिर पूछा, "हे रानी एस्तेर, अब कृप्या मुझे बता कि तू वास्तव में क्या चाहती है। {मुझे बता,} और मैं इसे तेरे लिए करूँगा। {तू जो कुछ भी मांगेगी, मैं
तूझे दूँगा, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो।” 3तब रानी एस्तेर ने कहा, " यदि तू मुझ से प्रसन्न है तो, हे राजा, मुझे आशा है कि मैं तुझसे जो कुछ भी मांगूँगी
उसे तू करने के लिए तैयार हो जाएगा। कृप्या ऐसे होने दे कि मैं जीवित रहूँ, और कृप्या मेरे लोगों को बचा ले। मैं यही मांगती हूँ। 4{मैं तुझसे आग्रह कर रही हूँ}
क्योंकि किसी ने मेरे लोगों को और मुझे {हमारे शत्रुओं के} हाथ में दे दिया है, और वे हमें पूरी तरह से नाश करने वाले हैं। यदि किसी ने पुरुषों और {यहाँ तक
कि} स्त्रियों को दास बनाने के लिए बेचा होता, तो मैंने तुझे इसके बारे में कुछ नहीं कहा होता, क्योंकि उसके साथ, हे राजा तुझे परेशान करना पर्याप्त रूप से
महत्वपूर्ण नहीं होता। 5तब राजा क्षयर्ष ने रानी एस्तेर को उत्तर दिया, “ऐसा किसने किया है? ऐसा काम करने की हिम्मत करने वाला पुरुष कहाँ है? 6एस्तेर ने
उत्तर दिया, "वह पुरुष जो हमारा विरोधी शत्रु है, यह दुष्ट हामान है!" इससे हामान राजा और रानी की उपस्थिति में भयभीत हो गया। 7राजा इतना अधिक
क्रोधित हुआ कि वह उठ गया और दाखमधु के भोज को छोड़ कर चला गया। वह महल की वाटिका में {बाहर} चला गया {यह निर्धारित करने के लिए कि क्या
करना चाहिए}। परन्तु हामान अपनी जान बचाने के लिए रानी एस्तेर से आग्रह करने के लिए {भीतर} ही रह गया, क्योंकि उसने जान लिया था कि राजा उसे
मारना चाहता था। 8{जब वह अपने जीवन के लिए विनती कर रहा था,} तब हामान एस्तेर के अत्याधिक निकट घुटने टेकने लगा क्योंकि वह एक {भोज वाले}
सोफे पर {टेक लगाकर बैठी हुई} थी। जब राजा महल की वाटिका से उस कमरे में लौटा, जहाँ वे दाखमधु पी रहे थे, {उसने यह देखा}। राजा ने आश्चर्य से कहा,
"वह मेरी उपस्थिति में और मेरे ही घर में रानी का बलात्कार करने का प्रयास कर रहा है!" जैसे ही राजा ने यह कहा, {उसके कुछ सेवकों ने} हामान के चेहरे को
ढक दिया {एक संकेत के रुप में कि उसे मार दिया जाएगा}। 9तब हर्बोना, जो राजा की व्यक्तिगत सेवा करने वाले संरक्षकों में से एक थे, ने कहा, “हे राजा!
हामान ने अपने घर पर पच्चीस मीटर ऊँचा एक खम्भा भी खड़ा किया है क्योंकि वह मोर्दकै को उस पर लटकाना चाहता है। परन्तु मोर्दकै ने तेरी जान बचाई थी।
” राजा ने कहा, "हामान को उस पर लटका दो!" 10इसलिए उन्होंने हामान को खम्बे पर लटका दिया जो उसने मोर्दकै के लिए खड़ा किया था। तब राजा
अत्याधिक क्रोध करने से रुक गया।

Chapter 8

1उसी दिन, राजा क्षयर्ष ने रानी एस्तेर को वह सारी संपत्ति दी जो हामान से संबंधित थी। वह यहूदियों का शत्रु था। एस्तेर ने राजा को बताया कि मोर्दकै {उसका
चचेरा भाई था और वह उसके पिता की} तरह था। जब उसे इसका पता चला, {तो राजा ने मोर्दकै को उसके पास आने के लिए बुलवाया}। 2{जब राजा ने
हामान को मौत की सजा सुनाई,} राजा ने हामान से उस अंगूठी को वापस ले लिया था जिस पर राजा की आधिकारिक मुहर थी {और राजा उसे फिर से पहने
हुए था। "राजा ने अब अंगूठी को उतार लिया और मोर्दकै को दे दिया, {यह दिखाने के लिए कि मोर्दकै के पास कार्य करने के लिए राजा के अधिकार वाली
सामर्थ्य होगी।} एस्तेर ने मोर्दकै को उन सारी संपत्तियों का प्रभारी भी रखा जो हामान से संबंधित थीं। 3फिर एस्तेर राजा से बात करने के लिए दुबारा उसके
पास आई । {उसे यह दिखाने के लिए कि वह अत्याधिक हताशा के साथ आग्रह कर रही थी,} एस्तेर ने घुटने टेक दिए और अपना चेहरा ठीक उसके पैरों के
ऊपर रख दिया। उसने रोते हुए यहूदियों को नाश करने वाली अगागी हामान की भयानक योजना को रोकने के लिए उससे विनती की। 4राजा ने एस्तेर की ओर
अपना सोने वाला राजदण्ड बढ़ा दिया, इसलिए वह {फर्श से} उठी और राजा को देखते हुए खड़ी हुई। 5तब एस्तेर ने कहा, " हे महामहिम, यदि तू सोचता है कि
यह काम करना सही है, और यदि तू मुझ से प्रसन्न हैं, तो कृप्या एक नया पत्र उस पत्र को निरस्त करने के लिए लिख जिसे हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान ने

भेजा था। उसके पत्रों ने तेरे पूरे साम्राज्य में प्रत्येक स्थान के सारे यहूदियों को नाश करने की बात की है। 6"{मैं ऐसा} इसलिए {कह रही हूँ} क्योंकि मैं अपने
लोगों के साथ होने वाले भयानक काम को नहीं देख सकती हूँ जो उनके साथ घटित होने वाला है। वे मेरे संबंधी हैं। मैं लोगों को उन्हें नाश करते हुए देखना सहन
नहीं कर सकती हूँ। 7राजा क्षयर्ष ने रानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै को उत्तर दिया, "जैसा कि तुम जानते हो कि, मैंने एस्तेर को सारी संपत्ति दी है जो हामान से
संबंधित थी, और मेरे सेवकों ने हामान को एक लकड़ी के खम्भे पर लटका दिया है क्योंकि वह सारे यहूदियों को मारना चाहता था।" 8"{तुम यह भी जानते हो
कि} कोई भी उस पत्र को निरस्त नहीं कर सकता है जिस पर मेरा नाम और जिस पर मेरी आधिकारिक मुहर लगी है, {वैसा पत्र जिसे हामान ने लिखा है}।
इसलिए तुझे यह करना चाहिए। जैसा तुम सबसे उत्तम सोचते हो, यहूदियों की सहायता के लिए {एक नया पत्र} लिखा जाए। {मैं तुझे अनुमति देता हूँ कि} तुम
उस पर मेरा नाम लिखो और उसे {पत्र को} अंगूठी के साथ मुहरबन्द करो जिस पर मेरी आधिकारिक छाप है।" 9इसलिए राजा ने अपने शास्त्रियों के लिए भेजा।
{वे आए और} उन्होंने एक पत्र लिखा जिसमें सब कुछ बताया गया जो मोर्दकै ने उन्हें {लिखने के लिए} बताया था। {उन्होंने इस पत्र को लिखा} तीसरे महीने के
तेईसवें दिन, सीवान के महीने में, {बारहवें वर्ष में यह लिखा गया जिस में क्षयर्ष ने फारस के ऊपर राजा के रूप में शासन किया}। पत्र ने यहूदियों को {साम्राज्य
में} संबोधित किया, परन्तु साथ ही उन्होंने {पत्र की प्रतियाँ} राजकीय अधिकारियों और प्रत्येक प्रांत में राज्यपालों और अगुवों को भी भेजा। {क्षयर्ष के}
साम्राज्य के 127 प्रांत थे, जो {पूर्व में} भारत से लेकर {पश्चिम में} इथियोपिया तक फैले हुए थे। शास्त्रियों ने प्रत्येक प्रांत में रहने वाले{लोगों} की अपनी भाषा में
और प्रत्येक समूह की उनकी अपनी वर्णमाला का उपयोग करके लिखा। उन्होंने {विशेषकर} यहूदियों को उनकी अपनी वर्णमाला में और उनकी अपनी भाषा में
लिखा। 10मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के नाम {पत्र की प्रत्येक प्रति पर} से हस्ताक्षर किए, और उसने उस अंगूठी के साथ {प्रत्येक को} मुहरबन्द कर दिया जिस पर
राजा की आधिकारिक मुहर थी। घोड़े पर सवार हरकारों ने पत्रों को पहुँचाया। उन्होंने तेज घोड़ों पर सवारी की जो केवल राजा की सेवा के लिए थे। इन घोड़ों का
जन्म राजा के अपने अस्तबलों में हुआ था। 11{पत्र की प्रत्येक प्रति} ने कहा कि राजा पूरे साम्राज्य में यहूदियों को एक साथ इकट्ठा होने और स्वयं की सुरक्षा
करने के लिए लड़ने की अनुमति देता है। {राजा का पत्र} साथ ही {उन्हें अनुमति देता है} किसी भी व्यक्ति या प्रांत से सशस्त्र लोगों के किसी भी समूह को पूरी
तरह से नाश करने के लिए जो उन पर आक्रमण करेगा। {पत्र} साथ ही {अनुमति देता है}कि स्त्रियों और बच्चों को मारे {उनमें से जो उन पर आक्रमण करेंगे},
और लोगों की संपत्ति लेने के लिए {जिनको वे मारते हैं}। 12{पत्र ने सभी यहूदियों को} पूरे साम्राज्य के प्रत्येक प्रांत में एक ही दिन में {ऐसा करने के लिए
अनुमति दी}, बारहवें महीने के तेरहवें दिन, {उसी वर्ष में} अदार के महीने में। 13{पत्र ने अधिकारियों से कहा} कि प्रत्येक प्रांत में पत्र की प्रतियाँ प्रदर्शित करें,
जहाँ हर कोई उन्हें देख सकता था ताकि लोगों को पता चल सके कि राजा ने यह आज्ञा दी थी, और जिससे कि यहूदी उस दिन के आने पर अपने शत्रुओं से
लड़ने के लिए तैयार हो जाएँ। 14राजा ने पत्रों को यथाशीघ्र वितरित करने के लिए हरकारों को आज्ञा दी। {उसने उन्हें अपने वेग से चलने वाले घोड़ों पर भेजा}।
राजा के अधिकारियों ने भी नए कानून की घोषणा {और पत्र की प्रतियों का प्रदर्शन} राजधानी शहर शूशन में किया। 15राजा ने मोर्दकै को {पहनने के लिए
विशेष वस्तुएँ दीं कि वह अब उसका सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी था। उसने उसे} एक नीला और सफेद राजकीय वस्त्र, एक बड़ा सोने वाला मुकुट और महीन
सन से बना बैंगनी रंग वाला एक वस्त्र दिया। मोर्दकै ने इन्हें पहन लिया और महल से चला गया। {जब} शूशन के लोगों ने {उसे देखा, तो वे} आनन्द से भरकर
चिल्लाए। 16शूशन में यहूदी अत्याधिक आनन्दित थे, और अन्य लोगों ने उन्हें सम्मान दिया। 17हर एक प्रांत में और हर एक शहर में, जहाँ भी {हरकारे} राजा की
राजाज्ञा की घोषणा करते हुए पत्र को लाए, यहूदियों ने अत्याधिक आनन्द किया और बड़े उत्सवों को मनाया। साम्राज्य में अन्य समूहों के कई लोग यहूदियों से
अत्याधिक डर गए, इसलिए वे आप यहूदी बन गए।

Chapter 9

1{उसी वर्ष के} बारहवें महीने अर्थात् अदार के महीने, के तेरहवें दिन, हर किसी के लिए वह करने का समय था जिसे राजा के पत्रों ने कहा था जिसमें उसने उन्हें
उस काम को करने की राजाज्ञा दी थी। यहूदियों के शत्रुओं ने उस दिन यहूदियों को नाश कर देने की अपेक्षा की थी। परन्तु इसके ठीक उलट ही हुआ। इसके
स्थान पर, यहूदियों ने अपने शत्रुओं को नाश कर दिया। 2पूरे साम्राज्य में, यहूदी उनके अपने नगरों में उन लोगों के विरुद्ध उनसे बचने के लिए एक साथ इकट्ठे हो
गए, जो उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहते थे। कोई भी उनके विरुद्ध लड़ने में सक्षम नहीं था, क्योंकि साम्राज्य में हर कोई उनसे अत्याधिक डरता थे, {इसलिए किसी
ने भी यहूदियों पर आक्रमण करने वाले किसी की भी सहायता नहीं की}। 3प्रत्येक प्रांत के सभी अगुवे, राजकीय अधिकारीगण, राज्यपाल और राजा के लिए
काम करने वाले सभी लोगों ने यहूदियों की सहायता की, क्योंकि वे मोर्दकै से अत्याधिक डर गए थे। 4वे मोर्दकै से डरते थे क्योंकि वह एक अत्याधिक महत्वपूर्ण
राजकीय अधिकारी था। पूरे साम्राज्य में, हर कोई उसके बारे में सुन रहा था कि वह कितना अधिक महान था, क्योंकि मोर्दकै अधिक से अधिक प्रभावशाली
होता जा रहा था। 5{उस दिन उन्हें अपनी सुरक्षा करने की अनुमति दी गई थी}, यहूदियों ने अपने हथियार उठा लिए थे और अपने सारे शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई
लड़ी। यहूदियों ने उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दिया। वे वह सब कुछ करने में सक्षम थे जो वे अपने शत्रुओं के विरुद्ध करना चाहते थे। 6राजधानी शूशन में यहूदियों
ने 500 लोगों को मार डाला। 7{यहूदियों} ने हामान के दस पुत्रों को भी मार डाला। उसके पुत्रों के नाम ये थे} पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, 8पोराता, अदल्या,
अरीदाता, 9पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता, 10यहूदियों के शत्रु हम्मदाता के पुत्र हामान के ये दस पुत्र थे। यहूदियों ने उन्हें मार डाला, परन्तु उन्होंने उन
वस्तुओं को नहीं लिया जो उनकी थीं। 11दिन के अंत में कोई भीतर आया और उसने राजा को सूचना दी कि राजधानी शूशन में यहूदियों ने कितने लोगों को मार
डाला है। 12राजा ने रानी एस्तेर से कहा, "यहाँ राजधानी शूशन में ही यहूदियों ने 500 लोगों को मार डाला है, जिसमें हामान के दस पुत्र भी सम्मिलित हैं। मेरे
शेष साम्राज्य में, उन्होंने इससे भी अधिक को मारा होगा! अब, इससे अधिक तुझे और क्या चाहिए? मुझे बता, और मैं तेरे लिए वह भी करूँगा। मैं तेरे लिए वह
सब करूँगा, जो तू कहेगी, इसलिए कृप्या मुझे बता कि तू क्या चाहती हैं।" 13एस्तेर ने उत्तर दिया, "यदि तुझे यह एक अच्छी योजना प्रतीत होती है, तो हे राजा,
कृप्या यहूदियों को जो शूशन में {यहाँ रहते हैं} कल फिर से ऐसा ही करने की अनुमति दें जो तूने उन्हें आज करने की दी है। इसके अतिरिक्त, {तेरे सेवकों} को
{हामान के दस पुत्रों की लाशों को लकड़ी के खंभे पर लटकाने की आज्ञा दे।" 14राजा ने वही किया जैसा {एस्तेर} कहा था। उसने {यहूदियों को अनुमति देते
हुए} शूशन में एक राजाज्ञा निकाली {कि उसके अगले दिन फिर से वे अपने शत्रुओं से लड़ें}, और {उसने अपने सेवकों को हामान के दस पुत्रों की {लाशों} को
लटकाने का आदेश दिया। 15और इसलिए अदार महीने के चौदहवें दिन, जो यहूदी शूशन में रहते थे, वे फिर से एक साथ इक्ट्ठे हो गए और शूशन में 300 {और
अधिक} पुरुषों को मार डाला। परन्तु (एक बार फिर से) उन्होंने उन वस्तुओं को नहीं लिया जो उन पुरुषों की थीं। 16साम्राज्य के अन्य हिस्सों में जो यहूदी {रहते}

थे, जो अपने जीवनों को बचाने के लिए लड़ने के लिए एक साथ {अदार महीने के तेरहवें दिन}इक्ट्ठे हो गए थे, ने अपने शत्रुओं को विफल कर दिया और 75,
000 लोगों को {उस दिन}मार डाला। परन्तु उन्होंने उनकी वस्तुओं को नहीं लिया जो उनके शत्रुओं की थीं। 17अदार महीने के तेरहवें दिन, {अपने शत्रुओं को
विफल करने के बाद}, उन्होंने चौदहवें दिन विश्राम किया। उन्होंने आनन्दपूर्वक चौदहवें दिन को त्योहार मनाने के लिए समर्पित किया। 18परन्तु यहूदी जो शूशन
में {रहते} थे {अपने शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने के लिए} {अदार} महीने के तेरहवें और चौदहवें दिन में एक साथ इकट्ठे हो गए थे। उन्होंने पंद्रहवें दिन विश्राम किया।
उन्होंने उस दिन को आनन्द मनाने के लिए समर्पित किया। 19इसलिए गाँवों में रहने वाले ग्रामीण यहूदी इस छुट्टी का पालन अदार के महीने के चौदहवें दिन
(पंद्रहवें दिन की अपेक्षा) करते हैं। वे इसे आनन्द सहित मनाते और ऐसा एक-दूसरे को उपहार देकर करते हैं। 20मोर्दकै ने वह सब कुछ लिखा जो घटित हुआ
था। तब उसने पूरे साम्राज्य में सभी यहूदियों को प्रत्येक उस स्थान पर पत्र भेजे, जहाँ वे रहते थे। 21उसने अदार महीने के चौदहवें और पंद्रहवें दिन {एक छुट्टी
की} स्थापना की। उसने यहूदियों से कहा कि वे प्रतिवर्ष इसका पालन किया करें। 22क्योंकि ये वे दिन थे जब यहूदियों ने विश्राम किया था और अब उन्हें और
अधिक अपने शत्रुओं से नहीं लड़ना था। यह वह महीना था जब उनके लिए सब कुछ बदल गया था। वे बहुत अधिक व्यथित हो गए थे {क्योंकि उनके शत्रु उन्हें
नष्ट करने वाले थे}। परन्तु तब वे {अपने सभी शत्रुओं से सुरक्षित होने के बाद} बहुत अधिक आनन्दित हो गए। {इस कारण मोर्दकै ने उन्हें कहा} उन दिनों को
आनन्द से मनाने और ऐसा एक दूसरे को उपहार देने के द्वारा किया करें। {मोर्दकै} ने {उनसे यह भी कहा कि} उन्हें उन दिनों में निर्धनों की सहायता करनी
चाहिए। 23यहूदी पहले से ही इस तरह से उन दिनों का उत्सव मना रहे थे। इसलिए वे {तत्परता से} ऐसा करने के लिए सहमत हुए, जिसे मोर्दकै ने उन्हें करने के
लिए निर्देश दिया था। 24{वे उन दिनों को स्मरण करने के लिए मनाते हैं} कि कैसे अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान ने, सभी यहूदियों के शत्रु ने उन्हें नष्ट करने का
प्रयास किया था। उसने यहूदियों पर आक्रमण करने और उन्हें पूरी तरह से नष्ट करने के लिए एक पूर (अर्थात् चिट्ठी) डाली थी। {यह पता लगाने के लिए कि
सबसे अच्छा दिन कौन सा होगा} 25{वे साथ ही यह स्मरण करेंगे कि एस्तेर ने राजा के सामने आने का कैसे साहस किया था{यद्यपि उसने उसे नहीं बुलाया}।
तब राजा ने {मोर्दकै को अनुमति दी} एक पत्र को {पूरे साम्राज्य में} भेजकर यह कहा कि राजा हामान के द्वारा यहूदियों को नाश करने के लिए हामान की ही
बुरी योजना को पलट देगा। राजा ने अपने सेवकों को हामान को लकड़ी के खंभे पर टांगने का आदेश दिया। जब शूशन में यहूदियों ने उसके दस पुत्रों को मार
डाला, तो राजा के सेवकों ने उनके शरीरों को भी लटका दिया था। 26{फारसी} शब्द {" चिट्ठी "के लिए} " पूर" है। इसीलिए {यहूदियों} ने इस उत्सव का नाम
पूरीम रखा। उन सभी आश्चर्यजनक बातों के कारण जिसे उन्होंने अभी अभी अनुभव किया था और क्योंकि {तब मोर्दकै ने} उन्हें {इस छुट्टी का पालन करने के
लिए कहा था} लिखा था, 27यहूदियों ने उन दो दिनों को छुट्टियों के रूप में मनाने के लिए स्थापित किया और उनका पालन इस तरह से करने के लिए सहमति
बनाई, जिस तरह से {मोर्दकै ने} उन विशेष दिनों में करने के लिए उन्हें कहा था। वे सहमत हुए कि वे और उनकी पीढ़ियाँ और हर कोई जो यहूदी लोगों का
हिस्सा बन गया है {पूरीम के इस त्योहार को} प्रत्येक वर्ष इसे सदैव मनाए। 28इसीलिए प्रत्येक पीढ़ी में प्रत्येक यहूदी परिवार {और उसके बाद} इन दिनों को
छुट्टियों के रूप में प्रत्येक उस स्थान पर मनाते हैं, जहाँ वे रहते हैं। यहूदी समुदाय और उसके वंशज सदैव पूरीम के इस त्योहार का विश्वासयोग्यता से पालन
करेंगे। 29तब रानी एस्तेर, जो अबीहैल की पुत्री है, ने यहूदी मोर्दकै {की सहायता से} पूरीम के बारे में एक दूसरा पत्र लिखा। क्योंकि एस्तेर रानी थी, वह यहूदियों
को पुरीम {उसके पत्र में} के बारे में {जिसे मोर्दकै ने लिखा था} आज्ञा देने में सक्षम थी। 30उन्होंने क्षयर्ष के पूरे साम्राज्य में सभी यहूदियों को {इस दूसरे} पत्र की
प्रतियाँ भेजीं। इसने उन्हें प्रोत्साहित किया कि {उनकी स्थिति अब} शान्तिपूर्ण और सुरक्षित थी। 31{इस दूसरे पत्र में,} यहूदी मोर्दकै और रानी एस्तेर ने पुष्टि की
कि पूरीम को {अदार के महीने} के {चौदहवें और पंद्रहवें} दिनों में मनाया जाना चाहिए। {उन्होंने यह भी पुष्टि की} कि यहूदियों को उपवास और विलाप के समय
को निरन्तर बनाए रखना चाहिए जिसे यहूदियों ने अपने और अपने वंशजों के लिए स्थापित किया था। 32एस्तेर ने पूरीम को {यहूदियों के लिए छुट्टी के रूप में}
स्थापित करने के लिए एक राजाज्ञा निकाली, और {राजकीय शास्त्रियों} ने इसे {कानूनों की} पुस्तकों में लिखा।

Chapter 10

1तब राजा क्षयर्ष ने अपने पूरे साम्राज्य में, एक कर लगाया {सभी के ऊपर, यहाँ तक कि जो रहते थे} {भूमध्य सागर} के द्वीपों के ऊपर। 2{राजा के शास्त्रियों}
ने उन सभी बड़े कामों को मादै और फारस की राजकीय इतिहास की पुस्तकों में लिपिबद्ध किया, जिसे राजा क्षयर्ष ने पूरा किया था क्योंकि वह बहुत अधिक
सामर्थी था। {उन्होंने}उसमें सभी बड़े कामों को पूरी तरह से {लिखा} जिन्हें मोर्दकै ने {किया}, क्योंकि राजा ने उसे एक महत्वपूर्ण पद पर पदोन्नत किया था।
3यहूदी मोर्दकै ऐसा करने में सक्षम था क्योंकि वह राजा क्षयर्ष के बाद साम्राज्य का सबसे सामर्थी व्यक्ति था। वह अपने लोगों के बीच में एक अगुवा भी था।
उसके सभी साथी यहूदी उसका सम्मान करते थे। उसने यह सुनिश्चित करने के लिए {कठिन} परिश्रम किया कि यहूदी सदैव समृद्ध रहें।

ओबद्याह

Chapter 1

1यह वह सन्देश है जिसे हमारे परमेश्वर यहोवा ने ओबद्याह को एदोम के लोगों के विषय में दिया है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से यह कहा:

“मैंने अन्य राष्ट्रों में एक सन्देशवाहक भेजा है,

जो उन्हें एदोम पर आक्रमण करने के लिए तैयारी करने और जाने के लिए कह रहा था।”
2{अब यहोवा एदोम के लोगों से यह कहता है:}

"मेरी बात सुनो—मैं तुझे शीघ्र ही सबसे कमजोर बना दूँगा

और {पृथ्वी पर} सबसे तुच्छ राष्ट्र बना दूँगा।

3तेरी राजधानी वाला शहर पहाड़ों की चट्टानों में ऊँचा है,

और तुझ में अत्याधिक घमण्ड है।

तू सोचता है कि तू वहाँ सुरक्षित है – और यह कि कोई भी सेना तुझे नहीं जीत सकती है।

परन्तु तू अपने आप को धोखा देता है।

4चाहे तू तारों के बीच जहाँ उकाब रहते हैं या उससे भी अधिक ऊँचे स्थान पर रहे,

तौभी तू उन आक्रमणकारियों से सुरक्षित नहीं रहेगा जिन्हें मैं तेरे पास भेज रहा हूँ। मैं, यहोवा, यह {तुझे} घोषणा करता हूँ।

5जब चोर रात में किसी के घर में घुस जाते हैं और उन्हें लूट लेते हैं,

तब वे निश्चित रूप से केवल वही चीजें चुराते हैं जिन्हें वे चाहते हैं।

और जो लोग अँगूरों को चुनते हैं वे सदैव कुछ न कुछ अँगूरों को दाखलताओं पर छोड़ देते हैं।

पर {, उनके विपरीत,} आक्रमण करने वाले तेरे देश को पूरी तरह से नष्ट कर देंगे!

6एसाव के वंशज, आक्रमण करने वाले ये लोग पूरी तरह से वह सब कुछ छीन लेंगे जो तेरे पास है।

वे उन मूल्यवान चीजों को भी ढूंढ़ लेंगे {और ले लेंगे} जो तूने छिपाई हैं।

7तेरे सभी सहयोगी तेरे विरूद्ध हो जाएँगे, और वे तुझे तेरा देश छोड़ने के लिए विवश करेंगे।

जिनके साथ अब तू शान्ति के साथ रहता है, वे तुझे धोखा देंगे और तुझे हरा देंगे।

तेरे साथ खाना खाने वाले अब तुझे फंसाने की योजना बना रहे हैं।

हे एदोम के लोग तुम इस बात को कुछ भी नहीं समझते हो।

8मैं, यहोवा, उस समय घोषित करूँगा,

मैं निश्चय ही {यहाँ तक कि} एदोम के {प्रसिद्ध} बुद्धिमान पुरुषों को नष्ट कर दूँगा। उन चट्टानों में रहने वाले किसी को भी पता नहीं चलेगा कि अब क्या करना है।

9एदोम की सेना के सैनिक भयभीत हो जाएँगे।

तब जब तेरी सेना युद्ध करना बन्द कर देगी, तब आक्रमण करने वाले तुम सब लोगों को नष्ट कर डालेंगे जो एदोम के देश में रहते हैं।”

10“{यह सब इसलिए होगा क्योंकि} तूने अपने संबंधियों के साथ क्रूरता से भरा हुआ व्यवहार किया जो याकूब {, तेरे पूर्वज एसाव के जुड़वाँ भाई} के वंशज हैं।

इसलिए अब सब तुझ पर लज्जित होंगे, और आक्रमणकारी तुझे सदा के लिये नाश करेंगे।

11उस समय जब परदेशी इस्राएली के धन को ले गए, तब तूने उनकी सहायता के लिए कुछ नहीं किया था।

परदेशियों ने यहूदा के सब नगरों को जीत लिया, और यहाँ तक कि वे यरूशलेम से जो कुछ चाहते थे उसे उन्होंने ले लिया।

और तू उन विदेशियों की तरह उतना ही बुरा था {, क्योंकि तूने सहायता के लिए कुछ नहीं किया}।

12इस्राएलियों पर आने वाली विपत्ति के विषय में तुझे घमण्ड नहीं करना चाहिए था।

जब उनके शहर उजड़ गए तब तुझे आनन्दित नहीं होना चाहिए था।

जब वे दुखित थे तब तुझे उन्हें ठट्ठों में नहीं उड़ाना चाहिए था।

13वे मेरे लोग हैं, इसलिए जब वे इस भयानक विपत्ति का अनुभव कर रहे थे तब तुझे उनके नगर के फाटकों में प्रवेश न करना चाहिए था।

हाँ, तुझे! तुझे उन्हें दुखित देखकर आनन्द नहीं मनाना चाहिए था।

तुम स्त्रियों को उनकी बहुमूल्य धन-सम्पत्ति नहीं छीननी चाहिए थी।

14जो इस्राएली भागने का प्रयास कर रहे थे उनमें से कुछ को मारने के लिए तुम्हें चौराहों पर खड़ा नहीं होना चाहिए था।

तुझे उनमें से दूसरे लोगों को नहीं पकड़ना चाहिए था जो बच गए थे (और उन्हें उनके दुश्मनों के हाथ में दे देना) जब वे उन विपत्तियों का सामना कर रहे थे।”

15“{तुझे इस्राएलियों की सहायता करनी चाहिए थी,} क्योंकि वह समय शीघ्र ही आ रहा है, जब मैं, यहोवा, सब राष्ट्रों का न्याय करूँगा और उन्हें दण्ड दूँगा।

मैं तेरे साथ {एदोम के लोगों} भी वैसा ही करूँगा जैसा तूने दूसरों के साथ किया है।

वही {बुराई} जो तूने दूसरों को दिखाई वही तेरे ऊपर आएगी।

16{हे इस्राएलियों, एदोम के लोगों को तेरे साथ ये बुरे काम नहीं करने चाहिए थे,} क्योंकि जिस प्रकार तूने यरूशलेम में दु:ख भोगा, उस पहाड़ी पर जहाँ पर मेरा पवित्र मन्दिर है,

इसी प्रकार मैं और सब राष्ट्रों को दण्ड देता रहूँगा।

मैं उन्हें कठोर दण्ड दूँगा और उन्हें पूरी तरह से पृथ्वी पप से ओझल कर दूँगा।

17पर यरूशलेम में कुछ लोग बच जाएँगे,

और यरूशलेम पवित्र स्थान बन जाएगा।

तब इस्राएली एक बार फिर उस भूमि पर अधिकार कर लेगा जो उनकी है।

18इस्राएल के लोग आग के समान होंगे, और एदोम के लोग सूखी घास के समान होंगे।

वे एदोम के लोगों को नाश करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे आग सूखी घास को भस्म कर देती है।

एदोम के वंश में से कोई भी जीवित नहीं बचेगा।

यह निश्चित रूप से घटित होगा क्योंकि मैं, यहोवा, ने कहा है कि यह होकर रहेगा।”

19यहूदिया के दक्षिणी जंगल में रहने वाले इस्राएली एदोम की भूमि पर अधिकार जमा लेंगे।

पश्चिमी तलहटी में रहने वाले इस्राएली फीनीके के क्षेत्र पर अधिकार जमा लेंगे।

इस्राएली उन क्षेत्रों पर भी अधिकार जमा लेंगे जो {एप्रैम के गोत्र} के थे और जो सामरिया {के शहर} से {उत्तर की ओर} घिरे हुए थे।

बिन्यामीन के गोत्र के लोग यरदन नदी के पूर्व के क्षेत्र पर अधिकार जमा लेंगे।

20इस्राएल {के राज्य} से बड़ी सँख्या में लोगों को कैद कर लिया गया था और उन्हें उनके घरों से निकाल कर ले जाया गया था। वे कनान की भूमि पर रहते थे।
{परन्तु वे लौट आएँगे, और} वे उस भूमि को अपने अधिकार में ले लेंगे और उस भूमि पर अपना अधिकार {उत्तर} के सारफत तक जमा लेंगे।

बहुत से लोगों को कैद कर लिया गया और यरूशलेम से ले जाया गया। वे अब सपाराद में रहते हैं। वे लौट {आएँगे और} और यहूदिया के दक्षिणी वाले जंगलों के नगरों पर अधिकार जमा लेंगे।

21{बाद में} इस्राएल के सैन्य अगुवों {एदोम की भूमि पर जय प्राप्त करेंगे, वे} {तब} यरूशलेम में ऊँचाई से एदोम पर शासन करेंगे।

और यहोवा उनका राजा होगा।

योना

Chapter 1

1यह एक दिन हुआ कि यहोवा ने योना भविष्यद्वक्ता से कहा, अमित्तै का पुत्र। यह है जो यहोवा ने कहा।, 2“मैंने देखा है कि नीनवे के लोग लगातार वो काम कर रहे हैं जो बहुत बुरे हैं। इसलिए चलता रह। नीनवे को जा, अश्शूर का वो विशाल राजधानी शहर, और लोगों को घोषणा कर कि मैं उनको उनके पापों की सजा देने की योजना बना रहा हूँ ।” 3तो योना गया, पर विपरीत दिशा में, बहुत दूर तर्शीश शहर की ओर, ये सोच कर कि वह वहां यहोवा से दूर हो जाएगा। वह याफा शहर के बंदरगाह पर पहुंचा और एक जहाज पाया जो तर्शीश जाने के लिए तैयार था। जहाज के कप्तान ने उससे पैसे देने के लिए कहा और उसने उसे दे दिए। तब उसने जहाज में प्रवेश किया ताकि जहाज के कर्मी दल के साथ तर्शीश जा सके ताकि यहोवा से दूर हो जाए।

4पर यहोवा ने समुद्र के ऊपर प्रचंड हवा बहाई, और ऐसा विशाल तूफ़ान उठा कि लहरें जहाज को तोड़ कर अलग करने को थीं । 5नाविक डरे हुए थे और प्रत्येक ने जिस देवता की वो पूजा करता था जोर जोर से प्रार्थना करी कि वो देवता उन्हें उस तूफ़ान से बचा लें। उन्होंने यहाँ तक कि माल को जहाज से समुन्द्र में फेंका जिससे कि जहाज हल्का हो जाए। ऐसा करके, उन्हें उम्मीद थी कि जहाज आसानी से पलटेगा नहीं और डूबेगा नहीं। परन्तु योना जहाज के सबसे निचले हिस्सों में चला गया था, और लेट गया था, और गहरी नींद सो रहा था।

6तब कर्मी दल का कप्तान नीचे गया जहाँ योना सो रहा था। उसने योना को जगाया और उससे कहा, “तेरे साथ ज़रूर कुछ दिक्कत है कि ऐसे तूफ़ान में भी सो रहा है! उठ जा!जोर देकर उस ईश्वर से प्रार्थना कर जिसकी तू पूजा करता है! शायद वह ईश्वर हमारे बारे में सोचे और हमें बचा ले!”

7तब नाविकों में से एक ने औरों से कहा, “हमें चिट्ठियाँ डालने की ज़रूरत है, ताकि यह तय हो किसकी वजह से ये भयानक बात हमारे साथ हुई है!” तो उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं और चिट्ठी ने योना की ओर संकेत दिया।

8तब नाविकों में से एक ने उससे कहा, “तुझे हमें ज़रूर बताना होगा कि किसने हमारे साथ यह भयानक बात होने के लिए डाली है। “तू किस तरह का काम करता है?” “तू कहाँ से आया है?” “तू किस देश से है?” “किन लोगों के समूह से तू सम्बन्ध रखता है?” 9योना ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं एक इब्रानी हूँ। मैं यहोवा की पूजा करता हूँ, एक सच्चा परमेश्वर जो स्वर्ग में रहता है। एक वही है जिसने समुद्र और धरती दोनों को बनाया है। 10नाविक जानते थे कि योना यहोवा से दूर जाने की कोशिश कर रहा था वो करने से बचने के लिए जो यहोवा ने उसे करने को कहा था क्यूंकि वो ये उन्हें पहले से बता चुका था।” लेकिन अब जब उन्हें पता चला वो यहोवा था जो समुद्र को नियंत्रित कर रहा था वो घबरा गए। तब नाविकों में से एक ने योना से कहा, “तूने ये भयानक बात की है! अब हम सब मरने को हैं तेरी वजह से!”

11तूफान और भी बुरा होता गया, और लहरें ऊंचीं होती गयीं। इसलिए नाविकों में से एक ने योना से पूछा, “हमें तेरे साथ क्या करना चाहिए ताकि समुद्र शान्त हो जाए और हमें धमकाना छोड़ दे?” 12योना ने उनको उत्तर दिया, “मुझे उठाओ और समुद्र में फ़ेंक दो। यदि तुम ऐसा करोगे तो समुद्र शान्त हो जाएगा और तुम्हें धमकाना छोड़ देगा। यह काम करेगा क्यूंकि मुझे पक्का है कि ये भयंकर तूफ़ान तुम्हारे पास आया है क्यूंकि मैं वहां नहीं गया जहाँ यहोवा ने मुझे जाने को कहा था।”

13परन्तु नाविक ऐसा नहीं करना चाहते थे। इसके बदले, उन्होंने कठिन प्रयास किया कि जहाज को किनारे पर वापस ले आएं। परन्तु वे ऐसा नहीं कर पाए, क्यूंकि लहरें उनके विरुद्ध और बड़ी और ताकतवर होती जा रहीं थीं।

14आखिरकार, सब के सब नाविकों ने यहोवा से प्रार्थना करी “हे यहोवा, आप हो जिन्होंने ये सब बातें जो हमारे साथ हुईं हैं उनको नियंत्रित किया ये तूफ़ान और चिट्ठियों समेत जो हमने डालीं। इसलिए आपसे प्रार्थना है. हे यहोवा, इस आदमी की वजह से कृपया हमें मत मरने दीजिये. और आप हमें मारना भी नहीं क्यूंकि हम उसको मार रहें हैं जिसने हमारे साथ कुछ गलत नहीं किया।” 15तब उन्होंने योना को उठाया और सुमद्र में फ़ेंक दिया। तुरंत समुद्र शान्त हो गया। 16जब ऐसा हुआ, तो नाविक बहुत आश्चर्यचकित हुए कि यहोवा कितना शक्तिशाली है। उन्होंने यहोवा को बलिदान चढ़ाया, और सत्यनिष्ठा से वादा किया कि वे उसकी ही आराधना करेंगे।

17इस दौरान, यहोवा ने एक विशाल मछली उत्पन्न करी योना को निगलने के लिए,और योना मछली के भीतर तीन दिन और तीन रात तक था।

Chapter 2

1जब वह बड़ी मछली के भीतर था, योना ने यहोवा से प्रार्थना की, परमेश्वर जिनकी वह आराधना करता था। 2यह है जो उसने कहा,

“जब मैं गहराई से उदास था, मैंने यहोवा से मुझे बचाने के लिए प्रार्थना की, और उन्होंने किया। भले ही मैं मछली के पेट में था जहाँ मैंने सोचा मैं मर जाऊँगा, फिर भी वहां पर भी आपने मेरी आवाज सुनी और मेरी बात सुनी जब मैंने आपसे प्रार्थना की मुझे मदद करने के लिए।

3आपने मुझे गहरे पानी में डाल दिया था, समुद्र के बीच में जहाँ धाराएं भंवर की तरह मुझे चारों ओर से लिपटी थी। उन सभी भयानक लहरों ने जिनको आपने
मेरे ऊपर से बहाया।

4मैंने सोचा, 'आपने मुझे दूर फ़ेंक दिया है; आप परवाह नहीं करते कि मुझे एक क्षण देख भी लो। फिर भी मुझे कुछ आशा थी कि मैं आपके पवित्र मंदिर को
देखूँगा।

5पानी मेरे चारों ओर था, मेरे जीवन को समाप्त करने के निकट गहरे पानी ने मुझे चारों ओर से घेर लिया था; समुद्री सिवार मेरे सिर के चारों ओर लिपट गए थे।

6मैं नीचे गया उस जगह तक जहाँ समुद्र तल से पर्वत उभरते हैं। मैंने सोचा मानो धरती एक जेल हो जहाँ से भागने का मेरे लिए कोई संभव तरीका नहीं।

परन्तु आपने, यहोवा परमेश्वर, जिनकी मैं आराधना करता हूँ, मुझे बचाया मरे हुओं की जगह पर जाने से!

7जब मैं लगभग मारा हुआ था, मैंने आपके विषय में सोचा, हे यहोवा। कि मैं आपसे सहायता माँगूँ और आपने अपने पवित्र स्थान से,जहाँ आप रहते हो आपने
मेरी प्रार्थना स्वीकार करी।

8वे जो बेकार मूर्तियों की पूजा करते हैं आपको अस्वीकार करते हैं, उसको जो उनके लिए हमेशा विश्वासयोग्य रहेगा।

9परन्तु मैं ऐसा नहीं करूँगा। किन्तु,मैं आपको बलिदान चढ़ाऊंगा आपको अपनी आवाज से धन्यवाद सुना कर। मैं वो करूँगा जो मैंने सत्यनिष्ठा से करने का
वादा किया। हे यहोवा, आप ही एकमात्र सच्चे परमेश्वर हो जो लोगों को बचाते हो ।"

10तब यहोवा ने विशाल मछली को आदेश दिया कि योना को बाहर उगल दे, और मछली ने योना को सूखी भूमि पर उगल दिया।

Chapter 3

1तब यहोवा ने योना से फिर कहा। यह है जो यहोवा ने कहा: 2"चलता जा! नीनवे को जा, अश्शूर का राजधानी नगर, और उन लोगों को प्रचार कर जो वहां रहते
हैं वो सन्देश जो मैंने तुझे प्रचार करने को कहा है ।"

3इस समय, योना चलता रहा और नीनवे को गया, जैसा कि यहोवा ने उसे करने को कहा था । इस समय नीनवे अत्यंत विशाल शहर था, विश्व के विशालतम
शहरों में से एक। वह इतना विशाल था कि एक व्यक्ति को तीन दिन तक चलना पड़ता था पूरी तरह से इससे होकर जाने में । 4जब योना पहुँचा, उसने चलना
शुरू किया शहर में से होकर लगभग एक दिन।तब उसने शहर के लोगों को घोषणा की, "अब से लेकर चालीस दिन, परमेश्वर नीनवे को नष्ट कर देगा!"

5नीनवे के लोगों ने परमेश्वर से सन्देश पर विश्वास किया जिसकी योना ने घोषणा की थी। उन्होंने निर्णय किया कि हर किसी को उपवास करना चाहिए और
अपने शरीर पर मोटे कपड़े पहनने चाहिए ये दिखाने के लिए कि जो बुरे काम वो कर रहे थे उसके लिए उन्हें खेद है। इसलिए शहर में प्रत्येक ने ऐसा ही किया,
सबसे महत्वपूर्ण लोगों से लेकर सबसे कम महत्वपूर्ण लोगों तक।

6जब नीनवे के राजा ने उस सन्देश के विषय सुना जिसे योना प्रचार कर रहा था, वह अपने सिंहासन से उठ गया। उसने अपने शाही वस्त्रों को उतार दिया, उनके
बदले में मोटे कपड़े पहन लिए और ठण्डी राख के ढेर पर बैठ गया। उसने ये सब ये दिखाने के लिए किया कि उसे भी उन बुरे कार्यों के लिए खेद है जिनको वह
कर रहा था। 7तब उसने दूत भेजे नीनवे के लोगों को घोषणा करने के लिए: "राजा और उसके रईसों ने यह हुक्मनामा दिया है कि ना कोई भी व्यक्ति या कोई
भी जानवर कोई भी भोजन खाये या कोई भी पानी पिए। यहाँ तक कि गायें और भेड़ चरने न पाएं। 8प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जानवर को अपने शरीर पर मोटे
कपड़े पहनने जरुरी हैं। प्रत्येक को उत्साह के साथ परमेश्वर से प्रार्थना जरूर करनी है और, प्रत्येक को बुरे कार्यों को करने से जरूर रुकना चाहिए जो कि वे कर
रहे हैं और जो हिंसा करने वाले कार्य जो वे और लोगों के साथ कर रहे हैं। 9यदि प्रत्येक इन बातों को करता है, ये संभव है कि ये परमेश्वर अपना मन बदल लें
और हमारे ऊपर कृपालु हो। वह हमारे ऊपर इतना क्रोधित होने से तरस खा सकते हैं इस प्रभाव के साथ कि हम नहीं मरेंगे।"

10तो लोगों ने उन बातों को किया और बुरे कार्यों को करना बंद किया जो कि वे कर रहे थे।परमेश्वर ने ये सब देखा। इसलिए परमेश्वर ने उन पर दया की और
उन्हें नष्ट न किया जैसा पहले उन्होंने कहा था कि वह करेंगे। भले ही उन्होंने यह कहा था, उन्होंने यह नहीं किया।

Chapter 4

1योना के लिए, ये बहुत गलत था कि परमेश्वर ने नीनवे को नष्ट नहीं किया। वो इसके बारे में बहुत क्रोधित हुआ। 2उसने यहोवा से प्रार्थना की, "हे यहोवा, यह
बिलकुल वैसा ही है जो मैंने कहा, होगा, इससे पहले मैंने घर छोड़ा । मैं जानता हूँ कि आप वो परमेश्वर हो, जो बहुत दयालुता और करुणा से सब लोगों से
व्यवहार करते हो। आप बुराई करने वालों पर शीघ्र ही क्रोधित नहीं होते हैं। आप लोगों को बहुत ज्यादा प्यार करते हैं,और आप लोगों पर कृपालु होना ज्यादा
पसंद करते हैं उन्हें दंड देने की अपेक्षा। कारण जो कि मैं तर्शीश को भागा इस ही बात को होने से रोकना था, क्यूंकि मैं चाहता था कि आप नीनवे को दंड दें।
3तो अब, यहोवा, कृपया मुझे मार डालें, क्योंकि मैं जीवित रहने की अपेक्षा मरना पसंद करूँगा यदि आप नीनवे को नष्ट नहीं करते हैं तो।"

4यहोवा ने उत्तर दिया, “क्या तेरे लिए यह क्रोधित होना सही है कि मैंने नीनवे को नष्ट नहीं किया?”

5योना ने उत्तर नहीं दिया परन्तु शहर से बाहर निकल कर चला गया और बैठ गया कम दूरी पर शहर की पूर्व दिशा की ओर। वहां उसने एक छोटा आश्रय बनाया
खुद को सूर्य से छाया में रखने के लिए। वह आश्रय के नीचे रहा और प्रतीक्षा की ये देखने के लिए शहर को क्या होगा। 6तब यहोवा परमेश्वर एक पौधे को बड़ी
शीघ्रता से उगाया योना के सिर के ऊपर धूप से छाया देने के लिए। यहोवा ने यह किया योना को अपना बुरा व्यवहार परिवर्तन करने को सहायता करने के लिए।
योना इस पौधे को पाकर बहुत खुश था जिसने उसे सूर्य से छाया दी । 7तब, सुबह में अगले दिन, परमेश्वर ने एक कीड़ा भेजा उस पौधे को इतना चबाने के लिए।
कि वो पौधा मुरझा गया। 8तब, सूर्य चढ़ने के कुछ ही समय बाद, परमेश्वर ने एक गर्म हवा भेजी उत्तर दिशा से बहने के लिए। सूर्य बहुत गर्म होकर योना के सर
पर चमका, और योना को बेहोशी अनुभव हुई। वह मरना चाहता था, और उसने कहा, “मेरे लिए मरना भला होगा जीवित रहने की तुलना में!”

9तब परमेश्वर ने योना से कहा, “क्या ये तेरे लिए सही है क्रोधित होना उस विषय में जो पौधे को हुआ?” योना ने उत्तर दिया, “हाँ, यह सही है मेरे लिए क्रोधित होना! मैं इतना क्रोधित हूँ कि मैं मरना चाहता हूँ!”

10तब यहोवा ने उससे कहा, “तुझे खुद तो बहुत बुरा लगा जब वो पौधा मर गया, भले ही तूने उसका ध्यान रखने के लिए कार्य नहीं किया, न ही तूने उसको
बढ़ने देने के लिए कुछ किया। वह एक रात में बढ़ गया, और अगली रात समाप्त होने तक वह पूरा मुरझा गया। 11उसी तरह से, लेकिन बहुत अधिक, मेरे लिए
यह दुखी होना सही है विशाल नीनवे शहर को नष्ट करने के बारे में। वहां पर 1,20,000 से अधिक लोग रह रहें हैं जो गलत से सही नहीं जानते। वहां पर अनेक
मवेशी भी हैं। मैंने उन सब को बनाया था, इसलिए ये मेरे लिए सही है उनके लिए चिंतित होना।”

मरकुस

Chapter 1

1यीशु मसीह जो परमेश्वर का पुत्र है, यह उसके विषय में शुभ संदेश का आरम्भ है। 2इस शुभ संदेश का आरम्भ वैसे ही होता है जैसा होने के विषय में यशायाह
भविष्यद्वक्ता ने तब कहा था जब उसने बहुत समय पहले लिखा था, “देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे-आगे भेज रहा हूँ। वह तेरे आगमन के समय के लिए लोगों
को तैयार करेगा। 3वह उसे सुनने वाले लोगों के लिए उजाड़ स्थान में पुकारने वाले की वाणी होगा, जो कहेगा, ‘प्रभु का स्वागत करने के लिए स्वयं को तैयार
करो। उसके आगमन के लिए प्रत्येक वस्तु को व्यवस्थित करो।’” 4जिस दूत के विषय में यशायाह ने लिखा था वह यूहन्ना ही था। लोग उसे “बपतिस्मा देने वाला”
कहते थे। यूहन्ना यरदन नदी के निकट एक उजाड़ क्षेत्र में रहता था। वह लोगों को बपतिस्मा देकर उन पर यह घोषणा कर रहा था कि यदि वे पश्चाताप करते हैं,
तो वह उन्हें बपतिस्मा देगा, और परमेश्वर उनके पापों को क्षमा कर देगा। 5बड़ी संख्या में यहूदिया प्रदेश और यरूशलेम नगर के लोग यूहन्ना की बातें सुनने के
लिए जंगल में चले गए। उसे सुनने वाले लोगों में से बहुत से इस बात से सहमत थे कि उन्होंने पाप किया है। तब यूहन्ना ने उन्हें यरदन नदी में बपतिस्मा दिया।
6यूहन्ना ऊँट के बालों से बने वस्त्र पहनता था और कमर में चमड़े का पटुका बांधता था। जो टिड्डे और शहद उस उजाड़ क्षेत्र में उसे मिले उसने वही खाए। 7वह
प्रचार करता था, “अति शीघ्र ही वह आएगा जो बड़ा महान है। उसकी तुलना में मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं तो इस योग्य भी नहीं कि झुककर उसके जूतों का फीता
खोलूँ। 8मैंने तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है, परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।” 9जिस समय यूहन्ना प्रचार कर रहा था, उसी दौरान यीशु गलील
प्रदेश के एक नगर नासरत से आया। जहाँ यूहन्ना प्रचार कर रहा था, वह वहाँ गया, और यूहन्ना ने उसे यरदन नदी में बपतिस्मा दिया। 10जैसे ही यीशु पानी में से
ऊपर आया, उसने आकाश को खुलते और परमेश्वर के आत्मा को अपने ऊपर उतरते देखा। परमेश्वर का आत्मा कबूतर के समान आकाश से उतरा। 11तब
परमेश्वर ने आकाश में से बात की और कहा, “तू मेरा पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रेम करता हूँ। मैं तुझसे अति प्रसन्न हूँ।” 12तब परमेश्वर के आत्मा ने यीशु को
उजाड़ क्षेत्र में भेज दिया। 13यीशु 40 दिनों तक जंगल में रहा। उस समय के दौरान, शैतान उसकी परीक्षा कर रहा था। उस स्थान में वनपशु भी थे, और स्वर्गदूत
उसकी देखभाल कर रहे थे। 14बाद में, राज्यपाल हेरोदेस अंतिपास के यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बंदीगृह में डाल देने के पश्चात, यीशु गलील प्रदेश में गया।
गलील में, वह परमेश्वर के शुभ संदेश का प्रचार करने लगा। 15वह कह रहा था, “अंतिम समय आ गया है। परमेश्वर शीघ्र ही प्रदर्शित करेगा कि वह राजा है। मन
फिराओ और शुभ संदेश पर विश्वास करो।” 16एक दिन यीशु ने गलील की झील के किनारे से जाते हुए, शमौन और उसके भाई, अन्द्रियास नामक दो पुरुषों को
देखा। वे मछलियाँ पकड़ने के लिए अपना जाल झील में डाल रहे थे। वे मछली पकड़कर और बेचकर धन कमाते थे। 17तब यीशु ने उनसे कहा, “जैसे तुम
मछलियाँ बटोरते रहे हो, वैसे ही मेरे साथ चलो, और मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि मेरे चेले बनाने के लिए लोगों को कैसे इकट्ठा किया जाए।” 18यीशु के यह कहने के
पश्चात, तुरन्त ही उन्होंने काम करना बंद किया, और उसके साथ हो लिए। 19उनके थोड़ा आगे बढ़ने के पश्चात, यीशु ने याकूब और उसके भाई यूहन्ना नामक दो
और पुरुषों को देखा। वे जब्दी नामक व्यक्ति के पुत्र थे। वे सब के सब एक नाव में मछली पकड़ने के जालों को सुधार रहे थे। 20जैसे ही यीशु ने उन्हें देखा, तो
उसने उनसे उसके साथ हो लेने के लिए कहा। इसलिए वे अपने पिता जब्दी को उसके सेवकों के साथ नाव में ही छोड़कर यीशु के साथ हो लिए। 21पतरस,
अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना के साथ यीशु पास ही के कफरनहूम नगर में गया। वहाँ, सब्त के दिन यीशु यहूदी सभास्थल में शिक्षा देने लगा। 22सुनने वाले लोग
उसके सिखाने के तरीके से अचम्भित हुए। उसने एक ऐसे शिक्षक के समान शिक्षा दी जो उन बातों पर निर्भर करता है जिनको वह स्वयं जानता हो। उसने यहूदी
व्यवस्था सिखाने वाले उन लोगों के समान शिक्षा नहीं दी, जो उन अलग-अलग बातों को दोहराते थे जो दूसरों ने सिखाई थीं। 23यहूदियों के प्रचार स्थान में जहाँ
यीशु ने शिक्षा दी, वहाँ एक मनुष्य था जो दुष्टात्मा के वश में था। वह दुष्टात्मा वाला मनुष्य चिल्लाने लगा, 24“हे नासरत के यीशु! हम दुष्टात्माओं को तुझसे कोई
लेना-देना नहीं है! क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं जानती हूँ कि तू कौन है। तू परमेश्वर की ओर से आया पवित्र जन है!” 25यीशु ने उस दुष्टात्मा को यह
कहकर डाँटा, “चुप रह और उस मनुष्य में से बाहर निकल जा!” 26उस दुष्टात्मा ने उस मनुष्य को हिंसक रूप से हिलाया। वह बहुत ऊँचे स्वर में चीखी, और फिर
वह उस मनुष्य में से निकलकर चली गई। 27सब लोग जो आराधनालय में थे वे अचम्भित हो गए। जिसके परिणामस्वरूप, वे आपस में यह कहकर चर्चा करने
लगे, “यह तो कुछ ऐसा है जो हमने पहले कभी नहीं देखा! वह न केवल एक नयी और अधिकारिक रीति से शिक्षा देता है, बल्कि वह तो दुष्टात्माओं को भी
आदेश देता है, और वे उसकी बातों का पालन करती हैं!” 28उन लोगों ने शीघ्र ही सम्पूर्ण गलील प्रदेश में बहुत से अन्य लोगों को वह बताया जो यीशु ने किया
था। 29जब वे यहूदियों के प्रचार स्थान से निकले, तो याकूब और यूहन्ना के साथ यीशु, शमौन, और अन्द्रियास सीधे शमौन और अन्द्रियास के घर गए। 30शमौन
की सास खाट पर इसलिए लेटी हुई थी क्योंकि वह बीमार थी; अर्थात उसे बुखार था। उसी समय किसी ने यीशु से उसके बीमार होने के विषय में बताया।
31यीशु उसके पास गया, और उसका हाथ पकड़कर उठने में उसकी सहायता की। वह तुरन्त ही बुखार से ठीक हो गई और उनकी सेवा करने लगी। 32उसी
शाम, सूर्य के अस्त होने के पश्चात, आसपास के क्षेत्र के लोग यीशु के पास दूसरे कई लोगों को लेकर आए जो बीमार और दुष्टात्माओं के वश में थे। 33ऐसा
लगता था कि मानो उस नगर में रहने वाले सब लोग शमौन के घर के द्वार पर इकट्ठा हो गए हों। 34जो विभिन्न रोगों से बीमार थे उनको यीशु ने चंगा किया। उसने
बहुत सी दुष्टात्माओं को भी लोगों में से निकल जाने के लिए विवश किया। उसने दुष्टात्माओं को उसके विषय में लोगों को बताने नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थीं
कि वह परमेश्वर की ओर से आया पवित्र जन है। 35अगली सुबह भोर में जिस समय अंधेरा ही था यीशु उठा। वह घर से निकलकर नगर से दूर एक ऐसे स्थान
पर चला गया, जहाँ लोग नहीं थे। तब उसने प्रार्थना की। 36शमौन और उसके साथियों ने उसकी खोज की। 37जब वह उन्हें मिल गया तो उन्होंने कहा, “नगर के
सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।” 38यीशु ने उनसे कहा, “हमें इस प्रदेश के अन्य नगरों में जाने की आवश्यकता है ताकि मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ। मैं यहाँ इसी कारण
से आया हूँ।” 39इसलिए वे सम्पूर्ण गलील प्रदेश में गए। जब वे गए, तो यीशु यहूदियों के प्रचार स्थलों में प्रचार करता था और दुष्टात्माओं को लोगों में से बाहर
निकलने के लिए विवश करता था। 40एक दिन एक मनुष्य यीशु के पास आया जिसे कोढ़ नामक एक बुरा चर्मरोग था। वह यीशु के सामने घुटने टिकाकर और

यह कहकर गिड़गिड़ाने लगा, “कृपया मुझे शुद्ध कर, क्योंकि यदि तेरी इच्छा हो तो तू मुझे शुद्ध कर सकता है!” 41यीशु को उस पर तरस आया। उसने अपना
हाथ बढ़ाकर उस मनुष्य को छुआ। फिर उसने उससे कहा, “मेरी यह इच्छा है कि तुझे चंगा करूँ, इसलिए चंगा हो जा!” 42तुरन्त ही वह मनुष्य चंगा हो गया!
अब वह कोढ़ी न रहा! 43जब यीशु उस मनुष्य को विदा कर रहा था तो उसने उसे यह कहकर चेतावनी दी, 44“जो कुछ अभी घटित हुआ है वह किसी से न
कहना। बजाए इसके, याजक के पास जाकर स्वयं को उसे दिखा ताकि वह तेरी जाँच करके देखे कि अब तुझे कोढ़ नहीं है। तब वह भेंट चढ़ा जिसे चढ़ाने की
आज्ञा मूसा ने उन लोगों को दी है जिन्हें परमेश्वर ने कोढ़ से चंगा किया है। यह समुदाय के लिए गवाही ठहरेगा कि अब तुझे कोढ़ नहीं है।” 45उस मनुष्य ने यीशु
की बात का पालन नहीं किया। वह बहुत से लोगों को इस विषय में बताने लगा कि कैसे यीशु ने उसे चंगा किया। जिसके परिणामस्वरूप, यीशु फिर सार्वजनिक
रूप से नगरों में प्रवेश न कर सका, क्योंकि लोगों की भीड़ उसे घेर लेती थी। बजाए इसके, वह नगरों के बाहर ऐसे स्थानों में रहा जहाँ कोई नहीं रहता था। परन्तु
उस सारे प्रदेश से लोग उसके पास आते रहे।

Chapter 2

1कुछ दिन बीतने के बाद, यीशु कफरनहूम नगर में लौट आया। लोगों ने दूसरों तक शीघ्र ही यह समाचार फैला दिया कि यीशु लौट आया है और एक घर में है।
2जहाँ यीशु ठहरा हुआ था वहाँ जल्दी ही बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। वह संख्या इतनी अधिक थी कि घर भर गया था। फिर खड़े होने की जगह भी नहीं
बची, यहाँ तक कि द्वार के आसपास भी जगह न बची। यीशु ने उन्हें परमेश्वर का संदेश सुनाया। 3कुछ लोग घर के निकट यीशु के पास एक मनुष्य को लेकर
आए जो लकवे का मारा हुआ था। चार पुरुष उसे खाट पर उठाए हुए थे। 4वे लोग उस मनुष्य को इकट्ठा हुई उस भीड़ के कारण यीशु के समीप नहीं ले जा सके।
इसलिए वे उस घर की छत पर चढ़ गए, और यीशु के ऊपर छत में एक बड़ा छेद कर दिया। उन्होंने उस लकवे के मारे मनुष्य को उसकी खाट पर उस छेद के
माध्यम से यीशु के सामने उतार दिया। 5जब यीशु ने यह जान लिया कि इन लोगों को विश्वास है कि वह उस मनुष्य को चंगा कर सकता है, तो उसने उस लकवे
के मारे मनुष्य से कहा, “हे मेरे पुत्र, मैंने तेरे पापों को क्षमा कर दिया है!” 6यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले कुछ लोग वहाँ बैठे हुए थे। वे अपने-अपने मन में विचार
करने लगे, 7“यह मनुष्य स्वयं को क्या समझता है, जो ऐसी बातें कर रहा है? वह तो ऐसा बोलकर परमेश्वर का अपमान करता है! कोई भी व्यक्ति पापों को क्षमा
नहीं कर सकता—केवल परमेश्वर ही कर सकता है!” 8उसी समय यीशु ने अपने में जान लिया कि वे क्या सोच रहे हैं। उसने उनसे कहा, “तुम ऐसा क्यों सोच रहे
हो कि मुझे पापों को क्षमा करने का अधिकार नहीं है? 9मेरे लिए इस लकवे के मारे मनुष्य से क्या कहना आसान होगा, ‘मैंने तेरे पापों को क्षमा कर दिया है’ या
‘खड़ा हो! अपनी खाट उठा और चल-फिर’? 10मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि परमेश्वर ने मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार भी प्रदान किया
है।” फिर उसने उस लकवे के मारे मनुष्य से कहा, 11“खड़ा हो! अपनी खाट उठा और घर चला जा!” 12तुरन्त ही वह मनुष्य खड़ा हो गया। जब सब लोग देख
रहे थे उसी समय वह अपनी खाट उठाकर उस घर से बाहर चला गया। वे सब के सब अचम्भित हो गए, और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और कहा, “जो कुछ
अभी हुआ वैसा हमने पहले कभी नहीं देखा!” 13यीशु कफरनहूम नगर से निकला और फिर से गलील की झील के किनारे-किनारे जाने लगा। एक बड़ी भीड़
उसके पास आई, और उसने उन्हें शिक्षा दी। 14जब वह जा रहा था, तो उसने लेवी नामक एक पुरुष को देखा, जिसके पिता का नाम हलफई था। वह अपने
कार्यस्थल में बैठा हुआ था जहाँ वह चुंगी लिया करता था। यीशु ने उससे कहा, “मेरे साथ चल और मेरा चेला हो जा।” वह उठकर यीशु के साथ हो लिया। 15बाद
में, यीशु लेवी के घर में भोजन कर रहा था। बहुत से चुंगी लेने वाले पुरुष—और दूसरे लोग जिनको धार्मिक अगुवे पापी मानते थे—यीशु और उसके चेलों के
साथ भोजन कर रहे थे। वहाँ ऐसे बहुत से लोग थे जो यीशु के साथ हर जगह जा रहे थे। 16जो लोग यहूदी व्यवस्था सिखाते थे और जो फरीसी सम्प्रदाय के
सदस्य थे, उन्होंने देखा कि यीशु पापियों और चुंगी लेने वाले मनुष्यों के साथ भोजन कर रहा है। उन्होंने यीशु के चेलों से पूछा, “वह पापियों और चुंगी लेने वाले
मनुष्यों के साथ क्यों खाता-पीता है?” 17जब यीशु ने वह सुना जो वे पूछ रहे थे, तो उसने यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले उन मनुष्यों से कहा,“स्वस्थ लोगों को वैद्य
की आवश्यकता नहीं होती। इसके विपरीत, जो लोग बीमार हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता होती है। मैं उन लोगों को मेरे पास आने के लिए आमंत्रित करने नहीं
आया जो स्वयं को धर्मी समझते हैं, परन्तु उनको आमंत्रित करने आया हूँ जो जानते हैं कि उन्होंने पाप किया है।” 18अब उस समय पर, यूहन्ना बपतिस्मा देने
वाले के अनुयायी और कुछ ऐसे लोग जो फरीसियों के सम्प्रदाय से जुड़े हुए थे भोजन से परहेज कर रहे थे, जैसा कि वे अक्सर किया करते थे। कुछ लोगों ने
यीशु के पास आकर उससे पूछा, “यूहन्ना और फरीसियों के चेले तो अक्सर भोजन से परहेज करते हैं। तेरे चेले भोजन से परहेज क्यों नहीं करते?” 19यीशु ने
उनसे कहा, “जब कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह करने वाला होता है, तो जब तक वह अपने मित्रों के साथ-साथ रहता है, तो वे निश्चित रूप से भोजन से परहेज
नहीं करेंगे। विवाह का समय दूल्हे के साथ दावत और उत्सव मनाने का समय होता है। यह भोजन से परहेज करने का समय नहीं होता, विशेष रूप से जब दूल्हा
उनके साथ होता है। 20परन्तु किसी दिन, दूल्हा उसके मित्रों से अलग कर दिया जाएगा। तब उन दिनों में, वे भोजन से परहेज करेंगे।” 21यीशु उनसे कहता ही
चला गया, “लोग पुराने वस्त्र का छेद सुधारने के लिए कोरे कपड़े का पैबंद नहीं लगाते। यदि उन्होंने ऐसा किया, उस कपड़े को धोते समय, वह पैबंद सिकुड़
जाएगा, और नये कपड़े का टुकड़ा पुराने कपड़े को और अधिक फाड़ देगा। जिसके परिणामस्वरूप, वह छेद और भी बड़ा हो जाएगा! 22उसी प्रकार से, लोग
नया दाखरस पुराने चमड़े के थैलों में नहीं भरते। यदि उन्होंने ऐसा किया, तो नया दाखरस उन चमड़े के थैलों को इसलिए फाड़ देगा, क्योंकि जब दाखरस उफान
मारेगा तो थैले फैलेंगे नहीं। जिसके परिणामस्वरूप, दाखरस और चमड़े के थैले दोनों बर्बाद हो जाएँगे। इसके विपरीत, लोगों को नया दाखरस चमड़े के नये थैलों
में भरना चाहिए!” 23यहूदियों के विश्रामदिन पर, यीशु अपने चेलों के साथ गेहूँ के खेतों में से होकर जा रहा था। जब वे गेहूँ के खेतों में से होकर जा रहे थे, तो
यीशु के चेले गेहूँ की कुछ बालें तोड़ रहे थे। 24जो वे कर रहे थे उसे देखकर कुछ फरीसियों ने यीशु से कहा, “यह देख! वे विश्रामदिन से सम्बन्धित यहूदी व्यवस्था
को तोड़ रहे हैं। वे ऐसा क्यों कर रहे हैं?” 25यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने दाऊद राजा और उसके लोगों के विषय में जो उसके साथ थे, उस पवित्रशास्त्र को
कभी नहीं पढ़ा जब वे भूखे थे? 26जिस समय पर एब्यातार महायाजक था, उस समय दाऊद ने परमेश्वर के भवन में जाकर रोटियाँ मांगी। महायाजक ने उसे
उनमें से कुछ रोटियाँ दीं जो परमेश्वर के सामने रखी गई थीं। हमारी व्यवस्था के अनुसार, उस रोटी को केवल याजक ही खा सकते थे! परन्तु दाऊद ने उसमें से
कुछ खाया। फिर उसने उसमें से कुछ उन लोगों को भी दी जो उसके साथ थे।” 27यीशु ने आगे उनसे कहा, “परमेश्वर ने मानवजाति के निमित्त विश्रामदिन को
बनाया है। उसने विश्रामदिन को मानवजाति पर बोझ होने के लिए नहीं बनाया। 28इसलिए, स्पष्ट है कि मनुष्य का पुत्र, विश्रामदिन का भी प्रभु है!”

Chapter 3

1एक और यहूदी विश्रामदिन में, यीशु फिर से एक यहूदी सभास्थल में गया। वहाँ पर एक मनुष्य था जिसका हाथ सूखा हुआ था। 2फरीसी सम्प्रदाय के कुछ
लोग उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे कि क्या वह उस मनुष्य को विश्रामदिन में चंगा करेगा, क्योंकि वह उसे कुछ गलत काम करने का दोषी ठहराना चाहते थे।
3यीशु ने उस सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, "यहाँ सबके सामने खड़ा हो जा!" {अतः वह मनुष्य खड़ा हो गया।} 4तब यीशु ने लोगों से कहा, "जो व्यवस्था
परमेश्वर ने मूसा को दी थी, क्या वह विश्रामदिन में लोगों को भलाई करने की अनुमति प्रदान करती है, या बुराई करने की? क्या वह व्यवस्था हमें विश्रामदिन में
लोगों का जीवन बचाने की अनुमति प्रदान करती है, या वह हमें किसी व्यक्ति की सहायता करने से इन्कार करने और उन्हें मरने देने की अनुमति प्रदान करती
है?" परन्तु उन्होंने प्रतिउत्तर नहीं दिया। 5उसने क्रोध में भरकर चारों ओर उन पर दृष्टि की। वह इस कारण बड़ा निराश हो गया कि वे लोग हठीले थे {और उस
मनुष्य की सहायता नहीं करना चाहते थे}। इसलिए,उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ बढ़ा!" जब उस मनुष्य ने अपना सूखा हाथ बढ़ाया, तो वह फिर से
स्वस्थ हो गया! 6फरीसी उस सभास्थल से निकल गए। वे तुरन्त ही हेरोदेस अंतिपास, जो गलील प्रदेश पर शासन करता था, का समर्थन करने वाले कुछ
यहूदियों से मिले। उन्होंने मिलकर योजना बनाई कि यीशु की हत्या कैसे करें। 7यीशु और उसके अनुयायी नगर से निकलकर गलील की झील के पास वाले क्षेत्र
में चले गए। लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे चली आती थी। जो लोग उसके पीछे-पीछे चले आते थे वे गलील और यहूदिया प्रदेशों से, 8यरूशलेम
नगर से, इदूमिया प्रदेश से, यरदन के पूर्वी प्रदेश से, और सोर एवं सीदोन नगरों के आसपास के प्रदेश से आए थे। वे सब लोग यीशु के पास इसलिए आए थे
क्योंकि जो काम वह कर रहा था उन्होंने उसके विषय में सुना था। 9-10क्योंकि उसने बहुत से लोगों को चंगा किया था, इसलिए बहुत से अन्य लोग जिन्हें विभिन्न
प्रकार की बीमारियाँ थीं उसे छूने के लिए आगे झपटते थे। वे विश्वास करते थे कि यदि वे उसे केवल छू लें, तो वह छू लेना ही उनको स्वस्थ कर देगा। इसलिए
उसने अपने चेलों से कहा कि वे उसके लिए एक छोटी नाव को तैयार रखें ताकि जब लोग उसे छूने के लिए आगे झपटें तो वे उसे कुचल न दें। 11जब भी
दुष्टात्माओं ने यीशु को देखा, तो उन्होंने उन लोगों को यीशु के आगे पटक दिया जो उनके वश में थे और उसे पुकार कर कहा, "तू परमेश्वर का पुत्र है!" 12यीशु ने
दृढ़तापूर्वक दुष्टात्माओं को आज्ञा दी कि वे किसी से न कहें कि वह कौन है। 13यीशु पहाड़ों पर चला गया। वहाँ उसने उनको बुलाया जिनको वह अपने साथ ले
जाना चाहता था और वे उसके पीछे-पीछे चले। 14उसने अपने साथ यात्रा करने के लिए बारह पुरुषों को नियुक्त किया, जिन्हें वह प्रचार करने के लिए भी
भेजेगा। उसने उन्हें अपने विशेष प्रतिनिधि कहकर पुकारा। 15उसने उन्हें लोगों में से दुष्टात्माओं को निकलने के लिए विवश करने की सामर्थ्य भी प्रदान की।
16और यीशु ने 12 पुरुषों को नियुक्त किया। उसने शमौन को नियुक्त करके उसका एक नया नाम, पतरस रखा। 17और पतरस के साथ, यीशु ने जब्दी के पुत्र
याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना को भी नियुक्त किया। उसने उन दोनों का उनके भड़कते जोश के कारण नया नाम रखा, 'ऐसे पुरुष जो गर्जन के समान हैं';
18और उसने अन्द्रियास, फिलिप्पुस, बरतुल्मै, मत्ती, थोमा, और हलफई के पुत्र याकूब को नियुक्त किया; और उसने तद्दै, शमौन जेलोतेस, 19और यहूदा
इस्करियोती को नियुक्त किया (जिसने बाद में उसे पकड़वा दिया था)। 20यीशु और उसके चेले एक घर में गए। जहाँ वह ठहरा हुआ था वहाँ फिर से भीड़ इकट्ठा
हो गई। उसके आसपास बहुत से लोगों ने भीड़ लगा ली। यहाँ तक कि उसे और उसके चेलों को भोजन करने का भी समय न मिला। 21जब उसके सम्बन्धियों ने
इस विषय में सुना, तो वे उसे अपने साथ घर ले जाने के लिए आए, क्योंकि कुछ लोग कह रहे थे कि वह पागल है। 22यहूदी व्यवस्था के सिखाने वाले कुछ पुरुष
यरूशलेम नगर के पहाड़ से नीचे आए। उन्होंने सुना कि यीशु लोगों में से दुष्टात्माओं को निकल जाने के लिए विवश करता था। इसलिए वे लोगों से कहने लगे,
"यीशु दुष्टात्माओं पर शासन करने वाले बालजबूल के वश में है। वही है जो यीशु को लोगों में से दुष्टात्माओं को निकलने के लिए विवश करने की शक्ति प्रदान
करता है!" 23इसलिए यीशु ने उन पुरुषों को अपने पास बुलाया। यीशु ने उनसे दृष्टांतों में बातें कीं और कहा, "शैतान ही शैतान को कैसे निकाल सकता है?
24यदि एक ही देश में रहने वाले लोग एक दूसरे के विरुद्ध लड़ेंगे, तो उनका देश एक संयुक्त देश नहीं रहेगा। 25और यदि एक ही घर में रहने वाले लोग आपस में
लड़ेंगे, तो निश्चित रूप से वे एक परिवार के रूप में एक साथ नहीं रह पाएँगे। 26उसी प्रकार से, यदि शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ आपस में लड़ रहे होते, तो
शैतान बलवंत होने के बजाए, शक्तिहीन हो जाता। 27कोई भी जन किसी बलवंत के घर में घुसकर उसकी सम्पत्ति को तब तक नहीं ले सकता, जब तक कि वह
पहले उस बलवंत को बांध न ले। केवल तब ही वह उस व्यक्ति के घर का सामान चुरा सकेगा।" 28यीशु ने यह भी कहा, "इस बात पर ध्यानपूर्वक विचार करो!
लोग शायद कई प्रकार से पाप करें, और शायद वे परमेश्वर के बारे में बुरा बोलें, तब पर भी परमेश्वर उन्हें क्षमा कर सकता है। 29परन्तु यदि कोई जन पवित्र
आत्मा के विषय में बुरी बातें बोलता है, तो परमेश्वर उन्हें कभी क्षमा न करेगा। वह व्यक्ति सदा के लिए पाप को दोषी ठहरेगा।" 30यीशु ने उनसे यह इसलिए
कहा, क्योंकि वे कह रहे थे, "वह किसी दुष्टात्मा के वश में है!" 31जहाँ यीशु शिक्षा दे रहा था वहाँ यीशु की माता और छोटे भाई-बहन आए। जिस समय पर वे
बाहर खड़े थे, उन्होंने किसी को भीतर भेजा कि यीशु को उनके पास आने के लिए कहे। 32यीशु के चारों ओर एक भीड़ बैठी हुई थी। उनमें से कुछ ने उससे
कहा, "सुन! तेरी माता और छोटे भाई-बहन बाहर हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।" 33यीशु ने उनसे पूछा, "मेरी माता कौन है? मेरे भाई-बहन कौन हैं?" 34जो
उसके साथ बैठे हुए थे उन पर चारों ओर दृष्टि करने के बाद, उसने कहा, "यहाँ देखो! तुम ही मेरी माता और मेरे भाई-बहन हो। 35क्योंकि जो लोग उस काम को
करते हैं जो परमेश्वर चाहता है, वे ही मेरे भाई, मेरी बहन, और मेरी माता हैं!"

Chapter 4

1एक और समय पर यीशु गलील की झील के किनारे लोगों को शिक्षा देने लगा। जब वह शिक्षा दे रहा था, तो उसके चारों ओर एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा हो
गई। क्योंकि {वह बहुत ही बड़ी भीड़ थी}, इसलिए वह एक नाव पर चढ़कर पानी में चला गया। भीड़ ने झील के किनारे से ही उसकी शिक्षा को सुना। 2उसने
उन्हें सबक के साथ वाली सरल कहानियों के द्वारा शिक्षा दी। उसने उनसे यह कहा: 3"मेरी सुनो। एक व्यक्ति अपने खेत में बीज बोने निकला। 4जब वह उन्हें
मिट्टी में छितरा रहा था, तो कुछ बीज मार्ग में गिरे। फिर कुछ पक्षियों ने आकर उन बीजों को खा लिया। 5अन्य बीज ऐसी भूमि पर गिरा जहाँ मिट्टी कम थी परन्तु
चट्टानें बहुत थीं। शीघ्र ही मिट्टी में से अंकुर दिखने लगा क्योंकि मिट्टी बहुत गहरी नहीं थी। 6दिन निकलने पर, जब सूर्य की किरणें उस युवा पौधे पर पड़ीं, तो वह
सूखकर इसलिए मुर्झा गया, क्योंकि उथली जड़ों को भूमि में चट्टानों के बीच पानी नहीं मिला। 7जब वह बो रहा था, तो दूसरा बीज ऐसी भूमि पर गिरा जिसमें

कंटीले पौधों की जड़ें थीं। अंकुर बढ़ तो गया, परन्तु कंटीले पौधों ने भी बढ़कर अच्छे पौधे को दबा दिया। इसलिए उस पौधे में से अनाज उत्पन्न नहीं हुआ।
8परन्तु जब वह बो रहा था, तो एक और बीज अच्छी भूमि पर गिरा। जिसके परिणामस्वरूप, वह अंकुरित होकर बड़ा हुआ, और फिर बहुत सारा अनाज उत्पन्न
किया। उस व्यक्ति द्वारा बोए गए बीज में से कुछ पौधों ने 30 गुना अधिक उपज दी। कुछ ने 60 गुना उपज दी। कुछ ने 100 गुना अधिक उपज दी।” **9**तब यीशु
ने कहा, “जो कोई भी सुनने का इच्छुक है, वह जो मैं कह रहा हूँ उसे सुन ले।” **10**बाद में जब केवल 12 चेले और अन्य निकटतम अनुयायी उसके साथ थे, तो
उन्होंने उससे दृष्टांतों के बारे में पूछा। **11**उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें वह संदेश इस बारे में बताया है कि परमेश्वर स्वयं को राजा के रूप में कैसे प्रकट करता है,
परन्तु दूसरों को मैं दृष्टांतों में सुनाता हूँ। **12**जब वे देखेंगे कि मैं क्या कर रहा हूँ, तो वे जान नहीं पाएँगे {कि मैं यह क्यों कर रहा हूँ}। जब वे सुनेंगे कि मैं क्या कह
रहा हूँ, तो वे समझ नहीं पाएँगे कि इसका क्या अर्थ है। ऐसा इसलिए है ताकि कहीं वे पश्चाताप न करें, और कहीं परमेश्वर उन्हें क्षमा न कर दे।” **13**यीशु ने अपने
चेलों से यह भी कहा, “क्या तुम इस दृष्टांत को नहीं समझते? फिर जब मैं तुम्हें दूसरे दृष्टांत सिखाऊँगा तो तुम कैसे समझोगे? **14**जो दृष्टांत मैंने तुमको बताया,
उसमें बीज बोने वाला व्यक्ति किसी ऐसे जन को दर्शाता है जो दूसरों को परमेश्वर का संदेश सिखाता है। **15**जब बीज मार्ग के किनारे गिरा तो कुछ लोग उस
उदाहरण के समान होते हैं। जब वे परमेश्वर का संदेश सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर जो कुछ उन्होंने सुना है उसे भुलवा देता है। **16**कुछ लोग उस बीज के
समान होते हैं जिसे किसान पथरीली मिट्टी में बोता है। जब वे परमेश्वर का संदेश सुनते हैं, तो तुरन्त उसे आनंद के साथ स्वीकार कर लेते हैं। **17**परन्तु उनकी
अपनी जड़ें मजबूत नहीं होती, और उनमें सहनशक्ति की कमी होती है। इस कारण से, जब लोग परमेश्वर के संदेश के कारण उनको सताते हैं, तो वे झट से
विश्वास करना छोड़ देते हैं। **18**कुछ लोग उस मिट्टी के समान होते हैं जिसमें कंटीली झाड़ियाँ होती हैं। ऐसे लोग परमेश्वर का संदेश सुनते तो हैं **19**परन्तु केवल
सांसारिक वस्तुओं की और धनवान बनने की चिंता करते हैं, और परमेश्वर का संदेश भूल जाते हैं। ये बातें व्यक्ति के जीवन को भरकर जो संदेश उस मिला था
उसका गला घोंट देती हैं, और वह व्यक्ति फल उत्पन्न करने में असमर्थ हो जाता है। **20**परन्तु कुछ लोग उस बीज के समान होते हैं जिसे अच्छी भूमि में बोया
गया था। वे परमेश्वर का संदेश सुनकर उसे स्वीकार करते हैं, और वे उस पर विश्वास करते हैं, और वही करते हैं जो परमेश्वर उनसे चाहता है। वे उन अच्छे पौधों
के समान हैं जो 30, 60, या 100 दाने उत्पन्न करते हैं। **21**उसने चेलों को एक और दृष्टांत सुनाया: “निश्चित रूप से लोग तेल का दीया जलाकर घर में इसलिए
नहीं लाते कि उसके ऊपर कुछ रखकर उसका प्रकाश छिपा दें। बजाए इसके, वे उसे दीवट पर रखते हैं ताकि उसका प्रकाश चमके। **22**उसी प्रकार से, जो बातें
छिपी हुई थीं—एक दिन सब लोग उन्हें जान लेंगे—और जो बातें गुप्त में घटित हुई थीं—एक दिन सब लोग उन्हें पूर्ण प्रकाश में देखेंगे। **23**यदि तुम इसे समझना
चाहते हो तो जो कुछ तुमने अभी सुना है उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो।” **24**“जो कुछ तुम मुझे तुमसे कहते हुए सुनते हो उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो,
क्योंकि परमेश्वर तुमको उसी सीमा तक समझने देगा जिस सीमा तक तुम मेरी बातों पर ध्यान देते हो। यहाँ तक कि वह तुमको इससे भी अधिक समझने देगा।
25क्योंकि यदि किसी मनुष्य में कुछ समझ हो, तो वह और भी अधिक पाएगा। परन्तु यदि किसी मनुष्य में समझ न हो, तो जो कुछ भी थोड़ा-बहुत उसके पास
है, वह उसे खो देगा।” **26**यीशु ने यह भी कहा, “जब परमेश्वर स्वयं को राजा के रूप में प्रकट करेगा, तो यह उस मनुष्य के समान है जो भूमि पर बीज छितराया
हो। **27**इसके बाद वह बीजों की चिंता किए बिना प्रतिदिन रात को सोता और जागता था। उस दौरान बीज अंकुरित हुए और इस प्रकार से बढ़े कि वह समझ न
सका। **28**भूमि ने अपने आप से फसल उत्पन्न की। सबसे पहले डंठल दिखाई दिए। फिर बालें दिखाई दीं। फिर बालों में भरी गुठलियाँ दिखाई दीं। **29**जैसे ही
दाना पक गया, तो उसने उसे काटने के लिए लोगों को भेजा क्योंकि कटनी का समय हो गया था।” **30**यीशु ने उन्हें सबक के साथ एक और कहानी सुनाई। उसने
कहा, “जब परमेश्वर स्वयं को राजा के रूप में प्रकट करना आरम्भ करेगा, तो यह किसके समान होगा? इसका वर्णन करने के लिए मैं किस शब्द चित्र का
उपयोग करूँ? **31**यह राई के दानों के समान है, जो भूमि में बोए गए बीजों में सबसे छोटे होते हैं, और पृथ्वी पर पाए जाने वाले बीजों में सबसे छोटे होते हैं।
32बोए जाने के बाद, वे बढ़कर बगीचे को दूसरे पौधों से बड़े हो जाते हैं। उनमें से बड़ी-बड़ी डालियाँ निकलती हैं ताकि उनकी छाया में पक्षी घोंसला बना सकें।”
33जिस समय पर यीशु ने लोगों से परमेश्वर के संदेश के विषय में बातें कीं, तो उसने बहुत से दृष्टांतों का उपयोग किया। उसने उनको उतना बताया जितना
समझने में वे सक्षम थे। **34**जब वह उनसे बातें करता था तो उसने हमेशा सबक वाली कहानियों का उपयोग किया। परन्तु जब वह अपने चेलों के साथ अकेला
था तो उसने उन सभी दृष्टांतों का व्याख्या उनसे की। **35**उसी दिन, जब सूर्य अस्त हो रहा था, तो यीशु ने अपने चेलों से कहा, “आओ हम गलील की झील पार
करके दूसरी ओर चलें।” **36**यीशु पहले से ही नाव में था, इसलिए वे भीड़ को छोड़कर जलयात्रा पर निकल गए। उनके साथ दूसरे लोग भी अपनी-अपनी नावों में
गए। **37**एक बड़ी आंधी आई और लहरें नाव में आने लगीं! नाव में पानी भर जाने का खतरा था। **38**यीशु नाव के पिछले भाग में था। वह गद्दी पर सिर रखकर सो
रहा था। इसलिए चेलों ने उसे जगाया और उससे कहा, “हे गुरु! क्या तुझे इस बात की चिंता नहीं कि हम मरने वाले हैं?” **39**अतः यीशु ने उठकर हवा को डांटा,
और उसने झील से कहा, “चुप रह! शांत हो जा!” हवा का बहना रुक गया, और फिर गलील की झील बहुत शांत हो गई। **40**उसने अपने चेलों से कहा, “तुम क्यों
डरते हो? क्या तुम्हें अभी तक विश्वास नहीं है कि मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ?” **41**वे डर गए थे। वे आपस में कहने लगे, “यह मनुष्य कौन है? यहाँ तक कि हवा
और लहरें भी इसकी आज्ञा मानती हैं!”

Chapter 5

1यीशु और उसके चेले गलील की झील की दूसरी ओर पहुँच गए। जहाँ वे उतरे थे उस स्थान के पास गिरासेन नामक लोग रहते थे। **2**जब यीशु नाव पर से उतरा,
तो कब्रिस्तान की कब्रों में से एक मनुष्य निकलकर आया। वह मनुष्य दुष्टात्माओं के वश में था। **3**वह मनुष्य कब्रिस्तान में से बाहर आया क्योंकि वह कब्रों के
बीच में रहा करता था। लोगों ने उसे रोकने का बहुत बार प्रयास किया। परन्तु वे उसे {धातु की} जंजीरों से भी नहीं रोक पाए। **4**जब भी उन्होंने जंजीरों और
बेड़ियों को काम में लिया, तब-तब वह मनुष्य उनको तोड़ देता था। वह इतना बलवान था कि कोई भी जन उसे नियंत्रित करने में सक्षम नहीं हुआ। **5**वह मनुष्य
रात-दिन अपना समय कब्रिस्तान में लोगों को गाड़े जाने के स्थानों के बीच में व्यतीत करता था। पहाड़ी देश में वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया करता था और स्वयं को
धारवाले पत्थरों से घायल किया करता था। **6**जब उसने दूर ही से यीशु को नाव पर से उतरते देखा, तो वह उसके पास दौड़ा चला आया और उसके आगे घुटने
टिका दिए। **7-8**उस दुष्टात्मा ने ऊँचे स्वर में पुकारकर कहा, “हे यीशु, परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे अकेला छोड़ दे! परमेश्वर के नाम की शपथ ले कि तू मुझे
नहीं सताएगा!” उस दुष्टात्मा ने यह बात इसलिए कही क्योंकि यीशु उससे कह रहा था, “हे अशुद्ध आत्मा, उस मनुष्य में से निकल जा!” **9**यीशु ने उस अशुद्ध

आत्मा से पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उसने प्रतिउत्तर दिया, “मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत सारी दुष्टात्माएँ हैं जो इस मनुष्य में समाई हुई हैं।” 10फिर वे
दुष्टात्माएँ उग्र होकर यीशु से लगातार विनती करती रहीं कि वह उन्हें उस देश से बाहर न भेजे। 11उसी समय, सूअरों का एक बड़ा झुंड पास ही की पहाड़ी पर
चर रहा था। 12इसलिए उन दुष्टात्माओं ने यीशु से यह कहकर याचना की, “हमें सूअरों के पास जाने की अनुमति दे कि हम उनमें समा जाएँ!” 13यीशु ने उन्हें
ऐसा करने की अनुमति दे दी। इसलिए वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति को छोड़कर सूअरों में समा गईं। लगभग 2,000 सूअरों की संख्या वाला वह झुंड खड़ी पहाड़ी
पर से झील में जा गिरा, जहाँ वे डूब गए। 14और जो लोग उन सूअरों को चरा रहे थे, वे दौड़कर नगर और गाँवों में गए, और जो कुछ हुआ था उसका समाचार
दिया। {उन स्थानों में रहने वाले} बहुत से लोग स्वयं देखने को गए कि क्या हुआ था। 15वे सब लोग उस स्थान में आए जहाँ यीशु था। फिर उन्होंने उस मनुष्य को
देखा जिसे पहले दुष्टात्माओं ने वश में किया हुआ था। वह वहाँ कपड़े पहने हुए बैठा था और अब वह ऐसा कोई काम नहीं कर रहा था जिससे लगे कि वह
दुष्टात्माओं के वश में है। जब उन्होंने यह सब देखा तो वे डर गए। 16जिन लोगों ने वह देखा था जो यीशु ने किया था, उन्होंने उन्हें वह सब बताया जो नगर और
गाँवों से आए थे। उन्होंने उन्हें इस विषय में बताया कि उस मनुष्य के साथ क्या हुआ था जो पहले दुष्टात्माओं के वश में था। उन्होंने यह बात भी बताई जो सूअरों
के साथ हुई थी। 17तब लोगों ने यीशु से उनके देश से चले जाने की याचना की। 18जब यीशु चले जाने के लिए नाव पर चढ़ गया, तो पहले जो मनुष्य दुष्टात्माओं
के वश में था, उसने उससे विनती की, “कृपया मुझे तेरे साथ-साथ चलने दे!” 19परन्तु यीशु ने उस मनुष्य को अपने साथ आने न दिया। बजाए इसके, उसने
उससे कहा, “अपने परिवार के पास घर जा और जो-जो काम प्रभु ने तेरे लिए किए हैं उन्हें वह सब बता। ” 20अतः उस मनुष्य ने जाकर उस देश के दस नगरों में
यात्राएँ कीं। जो-जो काम यीशु ने उसके लिए किए थे उसने लोगों को वह सब बताए। जो बातें उस मनुष्य ने बताईं उसे सुनने वाले सब लोग चकित रह गए।
21जब यीशु नाव पर चढ़कर फिर से गलील की झील के पार गया, तो किनारे पर एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठा हो गई। 22यहूदी सभास्थल के सरदारों में से
एक, जिसका नाम याईर था, वहाँ पर आया। जब उसने यीशु को देखा तो उसने उसके पाँवों के आगे घुटने टिका दिए। 23फिर उसने गिड़गिड़ाकर यीशु याचना
की, “मेरी पुत्री बीमार है और मरने पर है! कृपया मेरे घर आकर उस पर अपने हाथ रख। उसे चंगा कर कि वह जीवित रहे!” 24अतः यीशु उसके साथ गया। एक
बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे हो ली, और बहुत से लोग उसके निकट गिरे पड़ते थे। 25भीड़ में एक स्त्री थी जिसे लहू बहने की बीमारी थी। उसे 12 वर्षों से
प्रतिदिन लहू बह रहा था। 26वह बहुत बार अनेक वैद्यों के हाथ से पीड़ित हुई थी। उसी समय, वह अपना सारा धन खर्च करने पर भी ठीक नहीं हुई थी। बजाए
इसके, वह और भी बदतर हो गई थी। 27-28जब उसने सुना कि यीशु लोगों को चंगा करता है, तो वह उसके पीछे-पीछे चलने वाली भीड़ में शामिल हो गई। जैसे
ही वह उसके निकट पहुँची तो उसने उसके वस्त्र को छू लिया। वह सोच रही थी, “यदि मैं केवल उसके वस्त्र ही को छू लूँ, तो मैं इससे चंगी हो जाऊँगी।” 29झट
से उसका लहू बहना बंद हो गया। उसी समय, उसने अपनी देह में जान लिया कि यीशु ने उसे उसकी बीमारी से ठीक कर दिया है। 30यीशु ने भी तुरन्त अपने में
महसूस किया कि उसकी सामर्थ्य ने किसी को चंगा किया है। इसलिए वह पीछे मुड़कर भीड़ से पूछने लगा, “किसने मेरे वस्त्र को छुआ?” 31उसके चेलों ने
प्रतिउत्तर दिया, “तू देख सकता है कि तेरे निकट बहुत से लोग गिरे पड़ते हैं! तो सम्भव है कि बहुत से लोगों ने तुझे छुआ होगा! तो फिर तू क्यों पूछता है कि ‘मुझे
किसने छुआ?’” 32परन्तु यीशु उस व्यक्ति को देखने के लिए चारों ओर ढूँढ़ता ही रहा जिसने उसे छुआ था। 33वह स्त्री बहुत डर गई और कांपने लगी, क्योंकि
वह जानती थी कि जिस समय उसने यीशु को छुआ, उसी समय उसने उसे चंगा कर दिया था। उसने उसके आगे घुटने टिकाकर उसे बता दिया जो उसने किया
था। 34उसने उससे कहा, “हे पुत्री, क्योंकि तूने विश्वास किया था कि मैं तुझे चंगा कर सकता हूँ, इसलिए अब मैंने तुझे चंगा कर दिया है। इस बात को जानकर
शांत रह कि मैंने तुझे तेरी बीमारी से हमेशा के लिए चंगा कर दिया है।” 35जब यीशु उस स्त्री से बातें कर ही रहा था तो कुछ लोग आ पहुँचे जो याईर के घर से
आए थे। उन्होंने याईर से कहा, “तेरी पुत्री अब मर गई है। इसलिए अब गुरु को तेरे घर लाकर परेशान करने की कोई आवश्यकता नहीं है।” 36परन्तु इन पुरुषों ने
जो कहा था उसे सुनकर यीशु ने याईर से कहा, “इस बात से मत डर कि तेरी पुत्री मर गई है! केवल विश्वास रख तो वह जीवित रहेगी!” 37फिर उसने केवल
अपने निकटतम चेलों अर्थात पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ उस घर में जाने की अनुमति दी। उसने और किसी भी जन को अपने साथ आने नहीं
दिया। 38जब वे याईर के घर के निकट पहुँचे, तो यीशु ने देखा कि वहाँ जो लोग थे वे अशांत थे। वे रो रहे थे और ऊँचे स्वर में विलाप कर रहे थे। 39उसने घर में
प्रवेश करके वहाँ पर मौजूद लोगों से कहा, “तुम इतने उदास क्यों हो और रो क्यों रहे हो? बच्ची मरी नहीं है, केवल सो रही है।” 40लोग उस पर हँसने लगे
क्योंकि वे जानते थे कि वह मर गई है। उसने बाकी सब लोगों को घर से बाहर भेज दिया। फिर वह उस बच्ची के माता-पिता और उन तीन चेलों को जो उसके
साथ थे लेकर उस कमरे में गया जहाँ वह बच्ची पड़ी थी। 41उसने उस बच्ची का हाथ पकड़कर उसकी ही भाषा में उससे कहा, “तलीता कूम!” जिसका अर्थ है,
“हे छोटी लड़की, उठ खड़ी हो!” 42एक ही बार में वह बच्ची उठकर चलने-फिरने लगी। (यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि वह चल सकती है क्योंकि वह 12 वर्ष
की आयु की थी।) जब ऐसा हुआ तो जो लोग वहाँ मौजूद थे वे बड़े चकित हो गए। 43यीशु ने यह कहकर उन्हें सख्ती से आदेश दिया, “जो मैंने किया है उसके
विषय में किसी से न कहना!” फिर उसने उनसे कहा कि लड़की को कुछ खाने के लिए दो।

Chapter 6

1यीशु कफरनहूम से निकलकर अपने जन्मस्थान नासरत को चला गया। उसके चेले भी उसके साथ गए। 2यहूदियों के विश्रामदिन में, उसने यहूदियों के प्रचार
करने वाले स्थान में जाकर लोगों को शिक्षा दी। जो उसे सुन रहे थे उनमें से बहुत से लोग चकित रह गए। वे आश्चर्य करने लगे कि उसने यह सारी बुद्धि और
चमत्कार करने की सामर्थ्य कहाँ से प्राप्त की। 3उन्होंने कहा, “यह तो बस एक साधारण सा बढ़ई है! हम इसे और इसके परिवार को जानते हैं! हम इसकी माता
मरियम को जानते हैं! हम इसके छोटे भाइयों याकूब, योसेस, यहूदा, और शमौन को भी जानते हैं! और इसकी छोटी बहनें यहाँ हमारे बीच में ही रहती हैं!” 4यीशु
ने उनसे कहा, “यह निश्चित रूप से सत्य है कि दूसरे स्थानों में लोग भविष्यद्वक्ताओं का आदर करते हैं, परन्तु उनके अपने जन्मस्थान के नगरों में उनका आदर
नहीं करते! यहाँ तक कि उनके कुटुम्बी और उनके घर के लोग भी उनका आदर नहीं करते!” 5यद्यपि उसने वहाँ कुछ बीमारों पर अपने हाथ रखकर उन्हें चंगा
किया, परन्तु वह कोई अन्य चमत्कार नहीं कर पाया। 6वह इस बात पर चकित हुआ कि इतने कम लोगों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु वह उनके गाँवों में जा-
जाकर उनको शिक्षा देता था। 7एक दिन, यीशु ने 12 चेलों को एक साथ बुलाया। फिर उसने उनसे कहा कि वह उन्हें दो-दो करके विभिन्न नगरों में शिक्षा देने के
लिए भेजने वाला है। उसने उन्हें उन लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ्य भी प्रदान की जो दुष्टात्माओं के वश में थे। 8-9उसने उन्हें यह निर्देश भी

दिया कि जब वे यात्रा करें तो सादे जूते पहनें और लाठी साथ ले जाएँ। उसने उनसे कहा कि भोजन न लेना और न कोई थैला लेना जिसमें उनकी यात्रा के लिए
आपूर्ति या कोई धन रखा जाए। उसने उन्हें एक अतिरिक्त कुर्ता भी लेने की अनुमति नहीं दी। 10उसने उन्हें यह निर्देश भी दिया, “यदि कोई जन तुम्हें अपने घर
में ठहरने के लिए आमंत्रित करे, तो जब तक उस नगर से न निकलो तब तक उनके घर में ही रुकना। 11जहाँ कहीं भी लोग तुम्हारा स्वागत न करें और जहाँ कहीं
भी लोग तुम्हारी बातें न सुनें, तो वहाँ से निकलते ही अपने पाँवों की धूल झाड़ दो। ऐसा करके तुम इस बात की गवाही दे रहे होगे कि उन्होंने {न तो तुम्हारा
स्वागत किया और न ही तुम्हारे संदेश को ग्रहण किया}।” 12अत: जब चेले विभिन्न नगरों को गए, तो वे प्रचार करने लगे कि लोग {अपने पापों का} पश्चाताप
करें। 13वे लोगों में से बहुत सी दुष्टात्माओं को भी निकाल रहे थे, और वे बहुत से बीमार लोगों पर जैतून का तेल मलकर चंगा कर रहे थे। 14तब राजा हेरोदेस
अंतिपास ने जो यीशु कर रहा था उसके विषय में सुना। कुछ लोग यीशु के विषय में कह रहे थे, “यह अवश्य ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है! वह मरे हुओं में से
जी उठा है! इसी कारण से उसके पास इन चमत्कारों को करने की सामर्थ्य है!” 15दूसरे लोग कह रहे थे, “यह प्राचीन भविष्यद्वक्ता एलिय्याह है, जिसे फिर से
भेजने की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी।” कई अन्य लोग यीशु के विषय में कह रहे थे, “नहीं, नहीं, यह कोई और ही भविष्यद्वक्ता है, यह उन दूसरे भविष्यद्वक्ताओं
के समान है जो बहुत पहले हुए थे।” 16लोग जो बातें कह रहे थे उसे सुनने के बाद, राजा हेरोदेस अंतिपास ने स्वयं ही से कहा, “उन चमत्कारों को करने वाला
वह व्यक्ति अवश्य ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला होगा! मैंने ही तो अपने सैनिकों को उसका सिर काट देने का आदेश दिया था, परन्तु वह फिर से जी उठा है!”
17क्योंकि बीते समय में राजा हेरोदेस ने यूहन्ना को बंदी बनाकर बंदीगृह में डाल दिया था। उसने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि उसने अपने भाई फिलिप्पुस की
पत्नी, हेरोदियास से विवाह कर लिया था। 18हेरोदेस ने यूहन्ना को बंदीगृह में इसलिए डाल दिया था क्योंकि वह हेरोदेस से कह रहा था, “परमेश्वर की व्यवस्था
तुझे तेरे भाई की पत्नी से विवाह करने की अनुमति देती है।” 19परन्तु क्योंकि हेरोदियास यूहन्ना से बदला लेना चाहती थी, इसलिए वह चाहती थी कि कोई
उसकी हत्या कर दे। परन्तु वह ऐसा इसलिए नहीं कर पाई क्योंकि जिस समय यूहन्ना बंदीगृह में था, हेरोदेस ने यूहन्ना को उससे बचा रखा था। 20हेरोदेस ने ऐसा
इसलिए किया क्योंकि वह यूहन्ना का आदर करता था, और वह जानता था कि वह एक ऐसा धर्मी जन है जिसने स्वयं को परमेश्वर को समर्पित किया हुआ है।
जब भी हेरोदेस यूहन्ना की बातें सुनता था, तो वह बहुत व्याकुल हो जाता था, परन्तु उसे यूहन्ना की बातें सुनना अच्छा भी लगता था। 21यूहन्ना की हत्या होते
देखने का अवसर हेरोदियास को तब मिला जब उन्होंने हेरोदेस को उसके जन्मदिन पर सम्मानित किया। उसने सबसे महत्वपूर्ण अधिकारियों, सबसे महत्वपूर्ण
सेनापतियों, और गलील जिले के सबसे महत्वपूर्ण लोगों को अपने साथ भोजन करने और उत्सव मनाने के लिए आमंत्रित किया। 22जिस समय वे भोजन कर
रहे थे तब हेरोदियास की पुत्री कमरे में आकर राजा और उसके अतिथियों के सामने नाची। उसने राजा हेरोदेस और उसके अतिथियों को इतना प्रसन्न कर दिया
कि उसने उससे कहा, “तेरी जो इच्छा हो मुझसे मांग, और वह मैं तुझे दूँगा!” 23उसने उससे यह प्रतिज्ञा भी की, “जो कुछ तू मांगेगी, वह मैं तुझे दूँगा! यदि तू
मांगेगी तो मैं तुझे अपनी आधी सम्पत्ति और अपना आधा राज्य तक दे दूँगा।” 24इसके बाद, वह पुत्री अपनी माता, हेरोदियास के पास गई और जो राजा
हेरोदेस ने कहा था उसे बताया। उसने अपनी माता से पूछा, “मुझे क्या मांगना चाहिए?” उसकी माता ने प्रतिउत्तर दिया, “राजा से मांग कि वह तुझे यूहन्ना
बपतिस्मा देने वाले का सिर दे दे!” 25वह लड़की फुर्ती से कमरे में गई और अपनी विनती के साथ राजा के सम्मुख में सीधे पहुँच गई। उसने कहा, “मैं चाहती हूँ
कि तू किसी को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काटकर इसी समय परोसने की थाल में रखकर मुझे लाकर देने का आदेश दे!” 26जो उसने मांगा था उसे
सुनकर राजा बहुत व्याकुल हो गया क्योंकि वह जानता था कि यूहन्ना बहुत धर्मी जन था। परन्तु वह उसके निवेदन से इन्कार नहीं कर पाया क्योंकि उसने यह
प्रतिज्ञा की थी कि जो कुछ वह मांगेगी वह उसे देगा, और उसके अतिथियों ने भी उसकी प्रतिज्ञा को सुना था। 27अतः राजा ने उसी समय आदेश दिया कि
जाकर यूहन्ना का सिर काट दो और उसे लड़की के पास ले आओ। तब उस व्यक्ति ने बंदीगृह में जाकर यूहन्ना का सिर काट दिया। 28वह उसे एक परोसने की
थाल में रखकर लेकर आया, और उस लड़की को दे दिया। वह लड़की उसे अपनी माता के पास ले गई। 29जो घटित हुआ था उसे सुनकर यूहन्ना के चेलों ने
बंदीगृह में जाकर यूहन्ना के शव को ले लिया; फिर उन्होंने उसे गाड़ दिया। 30जिन लोगों को यीशु ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना था, वे उन स्थानों से
लौट आए जहाँ उसने उन्हें भेजा था। उन्होंने उसे समाचार दिया कि उन्होंने क्या-क्या किया था और उन्होंने लोगों को क्या-क्या सिखाया था। 31उसने उनसे कहा,
“मेरे साथ ऐसे स्थान को चलो जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहता, ताकि हम एकांत में रहें और थोड़ा विश्राम कर लें!” उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनके पास बहुत
से लोग निरंतर आते रहते थे और फिर चले जाते थे, जिसके परिणामस्वरूप यीशु और उसके चेलों को भोजन करने या कुछ और काम करने का समय नहीं
मिला। 32इसलिए वे स्वयं ही एक नाव पर चढ़कर एक ऐसे स्थान को चले गए जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहता था। 33परन्तु उनको जाते हुए बहुत से लोगों ने देख
लिया। उन्होंने यह भी पहचान लिया कि वे यीशु और उसके चेले थे, और उन्होंने देख लिया कि वे कहाँ जा रहे थे। इसलिए आसपास के नगरों से वे भूमि पर ही
उस स्थान की ओर आगे-आगे दौड़े जहाँ यीशु और उसके चेले जा रहे थे। वास्तव में वे यीशु और उसके चेलों से पहले ही वहाँ पहुँच गए थे। 34जब यीशु और
उसके चेले नाव पर से उतरे तो यीशु ने एक बड़ी भीड़ को देखा। उसे उन पर तरस आया क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों के समान उलझन में थे। इसलिए उसने
उन्हें बहुत सी बातें सिखाईं। 35दोपहर बीतने पर चेलों ने उसके पास आकर कहा, “यह एक ऐसा स्थान है जहाँ कोई नहीं रहता, और बहुत देर भी हो गई है।
36इसलिए लोगों को विदा कर कि वे आसपास के नगरों और गाँवों में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें!” 37परन्तु उसने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, “नहीं, तुम ही उन्हें
कुछ खाने के लिए दो!” उन्होंने उसे प्रतिउत्तर दिया, “यहाँ तक कि यदि हमारे पास एक व्यक्ति के 200 दिन काम करके कमाया गया धन भी हो तौभी हम इस
भीड़ को खिलाने के लिए पर्याप्त रोटी नहीं खरीद सकते!” 38परन्तु उसने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर देखो!” उन्होंने जाकर
देखा और फिर उससे कहा,, “हमारे पास केवल पाँच चपटी रोटियाँ और दो पकी हुई मछलियाँ हैं!” 39उसने चेलों को निर्देश दिया कि वे सब लोगों को हरी घास
पर बैठने के लिए कहें। 40अतः लोग समूहों में बैठ गए। कुछ समूहों में वे 100-100 लोग थे, और दूसरे समूहों में वे 50-50 लोग थे। 41यीशु ने उन पाँच चपटी
रोटियों और दो मछलियों को लिया। उसने स्वर्ग की ओर देखकर उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर वह रोटियों और मछलियों को टुकड़ों में तोड़-
तोड़कर चेलों को देता गया ताकि वे उन्हें लोगों में बाँट दें। 42सब लोगों ने इस भोजन को तब तक खाया जब तक कि वे खाकर संतुष्ट नहीं हो गए! 43फिर चेलों
ने बचे हुए रोटी और मछली के टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भर लीं। 44वहाँ लगभग 5,000 पुरुष थे जिन्होंने रोटी और मछलियाँ खाई थीं। यहाँ तक कि उन्होंने
स्त्रियों और बच्चों को तो गिना भी नहीं। 45तुरन्त ही यीशु ने अपने चेलों से नाव पर चढ़ने और फिर उसके आगे-आगे बैतसैदा नामक नगर को जाने लिए कहा,
जो गलील की झील के पास ही है। उसने रुककर वहाँ उपस्थित बहुत से लोगों को विदा किया। 46लोगों को विदा करके वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ों पर
चला गया। 47जब संध्या हुई, तो चेलों की नाव झील के बीच में थी, और यीशु भूमि पर अकेला था। 48जब चेले नाव खे रहे थे तो उसने देखा कि हवा उनके
विरुद्ध बह रही है। इसके परिणामस्वरूप, उन्हें बड़ी कठिनाई हो रही थी। सुबह में बड़ी भोर को जब अंधेरा ही था, तब वह पानी पर चलते हुए उनके पास

पहुँचा। उसकी मंशा थी कि वह चलते हुए उनसे आगे निकल जाए। 49उन्होंने उसे पानी पर चलते हुए देखा, परन्तु उन्होंने सोचा कि वह कोई भूत है। इसलिए वे
चीखने लगे 50क्योंकि जब उन्होंने उसे देखा तो वे सब के सब डर गए थे। परन्तु उसने उनसे बात की। उसने उनसे कहा, “शांत हो जाओ! डरो मत, क्योंकि यह मैं
हूँ!” 51वह नाव पर चढ़कर उनके साथ बैठ गया, और हवा का बहना बंद हो गया। जो उसने किया था उसके विषय में वे पूरी रीति से चकित हो गए थे। 52यद्यपि
उन्होंने यीशु को रोटी और मछली की मात्रा बढ़ाते हुए देखा था, तौभी वे इसका अर्थ न समझ सके, जैसा कि उन्हें समझना चाहिए था। 53जब वे नाव में होकर
गलील की झील के चारों ओर से आगे बढ़े, तो वे गन्नेसरत नगर के तट पर आए। तब उन्होंने नाव को वहीं बांध दिया। 54जैसे ही वे नाव से उतरे, लोगों ने यीशु
को पहचान लिया। 55इसलिए वे लोगों को यह बताने के लिए सम्पूर्ण जिले में दौड़ गए कि यीशु वहाँ पर है। तब लोगों ने बीमारों को खाटों पर लिटा दिया और
उन्हें उठाकर वहाँ ले गए जहाँ कहीं उन्होंने लोगों को यह कहते सुना कि यीशु वहाँ है। 56जिस किसी गाँव, नगर, या बस्तियों के स्थानों में वह गया, वे लोग वहाँ
के बीमारों को बाजारों में ले आते थे। तब बीमार लोग यीशु से अनुरोध करते थे कि वह उन्हें उसे या उसके वस्त्र के छोर को छूने दे ताकि यीशु उन्हें चंगा कर दे।
जितनों ने उसे या उसके वस्त्र को छुआ, वे सब के सब चंगे हो गए।

Chapter 7

1एक दिन कुछ फरीसी और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले और यरूशलेम से आए हुए लोग यीशु के पास इकट्ठा हुए। 2फरीसियों ने देखा कि यीशु के चेले उनकी
विशेष परम्परा के पालन में अक्सर हाथ धोए बिना ही भोजन कर लेते थे। 3फरीसी और बाकी के सब यहूदी अपने पूर्वजों द्वारा सिखाई गई उनकी परम्पराओं
को सख्ती से पालन करते थे। उदाहरण के लिए, जब तक वे अपने हाथों को एक विशेष रीति से धो नहीं लेते थे तब तक भोजन नहीं करते थे, 4विशेष रूप से
उस समय जब वे बाजारों से सामान खरीदकर लौटते थे। वे सोचते थे कि यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो परमेश्वर उनसे क्रोधित हो जाएगा, क्योंकि क्या मालूम
उन्हें या जो सामान उन्होंने खरीदा हो उसे किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु ने छुआ हो जो परमेश्वर को अस्वीकार्य हो। 5उसी दिन, फरीसियों और यहूदी व्यवस्था का
अध्ययन करने वाले मनुष्यों ने देखा कि उसके कुछ चेले अपने हाथों को विशेष रीति से धोए बिना भोजन कर रहे थे। इसलिए उन्होंने यीशु से प्रश्न करते हुए
कहा, “तेरे चेले हमारे पूर्वजों की परम्पराओं की अवज्ञा करते हैं! यदि उन्होंने हमारी रीति से अपने हाथों को नहीं धोया तो वे भोजन क्यों खा लेते हैं!” 6यीशु ने
उनसे कहा, “यशायाह ने तुम्हारे पूर्वजों को डांटा था, और उसके वचन तुम लोगों का वर्णन बड़े अच्छे से करते हैं जो भले होने का ढोंग करते हैं! उसने इन शब्दों
को लिखा जो परमेश्वर ने कहे थे: ‘ये लोग ऐसे बात करते हैं जैसे कि वे मेरा सम्मान करते हैं, परन्तु वास्तव में वे मेरा सम्मान करने के विषय में बिलकुल भी नहीं
सोचते। 7उनके लिए मेरी आराधना करना बेकार है, क्योंकि वे केवल उन्हीं बातों को सिखाते हैं जो लोग कहते हैं, जैसे कि मानो मैंने उन बातों की आज्ञा दी हो।’
8अपने पूर्वजों के समान, तुम भी उन बातों का पालन करने से इन्कार करते हो जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है। बजाए इसके, तुम केवल उन्हीं परम्पराओं का
पालन करते हो जो दूसरों ने सिखाई हैं।” 9यीशु ने उनसे यह भी कहा, “तुम सोचते हो कि तुम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने से इन्कार करने में चतुर हो,
ताकि तुम अपनी परम्पराओं का पालन कर सको! 10उदाहरण के लिए, तुम्हारे पूर्वज मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा को लिखा था कि ‘अपने पिता और अपनी माता
का आदर करना।’ उसने यह भी लिखा था कि ‘जो व्यक्ति अपने पिता और अपनी माता के विषय में बुरी बातें बोले ऐसे मनुष्य को अधिकारी लोग मृत्युदंड दें।’
11परन्तु तुम लोगों को सिखाते हो कि यदि तुम अपने माता-पिता को अपनी वस्तुएँ देने के बजाए उन्हें परमेश्वर को देते हो तो यह सही बात है। तुम उन्हें अपने
माता-पिता से ऐसा कहने की अनुमति प्रदान करते हो कि ‘जो मैं तुम्हें उपबल्ध करवाने के लिए तुम्हें देने वाला था, अब वह मैंने परमेश्वर को देने की प्रतिज्ञा की
है। इसलिए अब मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता!’ 12इसके परिणामस्वरूप, तुम वास्तव में लोगों से कह रहे हो कि अब उन्हें अपने माता-पिता की सहायता
करने की आवश्यकता नहीं है। 13इस रीति से तुम परमेश्वर की आज्ञा की अवहेलना करते हो! तुम दूसरों को अपनी बातें सिखाते हो और उनसे कहते हो कि उन्हें
उनका पालन करना चाहिए। और तुम ऐसे ही और भी बहुत से काम करते हो।” 14तब यीशु ने फिर से भीड़ को निकट आने के लिए आमंत्रित किया। फिर उसने
उनसे कहा, “तुम सब लोग मेरी बात सुनो! जो बात मैं तुमको बताने वाला हूँ उसे समझने का प्रयास करो। 15जो कुछ भी लोग खाते हैं उसके कारण परमेश्वर
उनको अशुद्ध नहीं समझता। इसके विपरीत, यह वही बात है जो लोगों को अंतर्मन से निकलती है जो परमेश्वर के द्वारा उन्हें अशुद्ध समझने का कारण बनती
है।” 16[जो कुछ तुमने मुझे कहते हुए सुना है उसके विषय में तुम सब को ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए।] 17इसके बाद भीड़ को छोड़कर यीशु अपने चेलों के
साथ एक घर में गया। उन्होंने उससे उस दृष्टांत के विषय में उससे प्रश्न किया जो उसने अभी बोला था। 18उसने उनको प्रतिउत्तर दिया, “क्या तुम समझे नहीं कि
इसका क्या अर्थ है? तुम्हें समझना चाहिए कि जो कुछ भी बाहर से हमारे भीतर प्रवेश करता है, वह परमेश्वर के लिए हमें अस्वीकार्य मानने का कारण नहीं बन
सकता। 19हमारे मनों में प्रवेश करके उसे बिगाड़ने के बजाए, यह हमारे पेट में चला जाता है, और बाद में हमारे शरीर से शौच में बाहर निकल जाता है।” ऐसा
कहने के द्वारा, यीशु यह घोषणा कर रहा था कि परमेश्वर के लिए उनके अस्वीकार्य होने का कारण हुए बिना लोग कोई भी भोजन खा सकते हैं। 20उसने यह भी
कहा, “यह विचार और कार्य ही होते हैं जो लोगों के भीतर से निकलते हैं, जो परमेश्वर के लिए उनके अस्वीकार्य होने का कारण बनते हैं। 21विशेष रूप से, यह
किसी व्यक्ति का सबसे भीतरी अस्तित्व होता है जो उन्हें बुरी बातें सोचने के लिए प्रेरित करता है; वे अनैतिक कार्य करते हैं, वे वस्तुएँ चुराते हैं, वे हत्या करते हैं।
22वे व्यभिचार करते हैं, वे लोभी होते हैं, वे दुर्भावना से कार्य करते हैं, वे लोगों को धोखा देते हैं। वे अशिष्टता से कार्य करते हैं, वे लोगों से ईर्ष्या करते हैं, वे दूसरों
के बारे में बुरी बातें बोलते हैं, वे घमंड करते हैं, और वे मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं। 23लोग इन विचारों को मन में लाते हैं, और फिर इन बुरे कार्यों को करते हैं, और
परमेश्वर के लिए यही उनके अस्वीकार्य होने का कारण बनता है।” 24यीशु और उसके चेले गलील से निकलकर, सोर और सीदोन के नगरों के आसपास के देश
में गए। जिस समय वह एक घर में ठहरा हुआ था, तो वह नहीं चाहता था कि कोई इस बात को जाने, परन्तु लोगों को शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह वहाँ था।
25एक स्त्री ने यीशु के विषय में सुना, जिसकी पुत्री में एक दुष्टात्मा समाई हुई थी। तुरन्त ही वह यीशु के पास आकर उसके पाँवों में गिरी। 26अब वह स्त्री यहूदी
नहीं थी। उसके पूर्वज भी यहूदी नहीं थे। वह स्वयं भी सीरिया जिले के फिनीके प्रांत में जन्मी थी। उसने यीशु से याचना की कि वह उसकी पुत्री में से दुष्टात्मा को
निकाल दे। 27उसने उस स्त्री से कहा, “जो कुछ बच्चे खाना चाहें पहले उन्हें वह खा लेने दे, क्योंकि यह अच्छा नहीं कि कोई उस भोजन को लेकर जिसे माता ने
बच्चों के लिए तैयार किया है छोटे-छोटे कुत्तों के आगे डाल दे।” 28उसने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हे महोदय, जो तू कहता है वह सही है, परन्तु घर के कुत्ते भी तो
मेज के नीचे पड़े-पड़े बच्चों के द्वारा गिराई हुई चूरचार को खाते हैं।” 29यीशु ने उससे कहा, “जो तूने कहा है उसके कारण, घर चली जा। मैंने तेरी पुत्री में से उस

दुष्टात्मा को निकाल दिया है।” 30उस स्त्री ने अपने घर लौटकर देखा कि उसकी लड़की चुपचाप खाट पर लेटी हुई थी और वह दुष्टात्मा निकल गई थी। 31यीशु
और उसके चेले सोर के आसपास के देश से निकलकर उत्तर की ओर सीदोन होते हुए, फिर पूर्व की ओर दस नगरों के क्षेत्र से होते हुए, और फिर दक्षिण की
ओर गलील की झील के पास के नगरों में गए। 32वहाँ, लोग उसके पास एक व्यक्ति को लेकर आए जो बहरा था और बोल नहीं सकता था। उन्होंने यीशु से
विनती की कि वह उसे चंगा करने के लिए उस पर अपने हाथ रखे। 33अतः यीशु उसे भीड़ से दूर ले गया कि वे दोनों अकेले हो जाएँ। फिर उसने अपनी एक-
एक उंगली उस व्यक्ति के कानों में डाली। अपनी उंगलियों पर थूकने के बाद, उसने अपनी उंगलियों से उस व्यक्ति की जीभ को छुआ। 34फिर उसने स्वर्ग की
ओर देखकर आह भरी, और उसकी ही भाषा में उस व्यक्ति के कान में कहा, “इप्फत्तह,” जिसका अर्थ है, “खुल जा!” 35उसी समय वह व्यक्ति साफ-साफ
सुनने लगा। वह स्पष्ट रूप से बोलने भी लगा, क्योंकि जिस कारण से वह बोल नहीं पाता था, वह ठीक हो गया था। 36यीशु ने लोगों से कहा कि जो कुछ उसने
किया है उसके विषय में किसी से कहना। यद्यपि उसने बार-बार उन्हें और दूसरों को इसके विषय में किसी को न बताने का आदेश दिया था, परन्तु वे इसके बारे
में और भी बातें करते रहे। 37जिन लोगों ने इसके विषय में सुना वे बहुत चकित होकर कहने लगे, “जो कुछ उसने किया है वह अद्भुत है! दूसरे आश्चर्यजनक
कार्यों के करने के अलावा, वह तो बहरों को भी सुनने में सक्षम करता है! और जो बोल नहीं सकते उनको वह बोलने में सक्षम करता है!”

Chapter 8

1उन दिनों में, फिर से लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। वहाँ दो दिन रहने के बाद, उनके पास खाने के लिए भोजन नहीं बचा। इसलिए यीशु ने अपने चेलों
को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, 2“तीन दिन से ये लोग मेरे साथ हैं, और उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा है, इसलिए अब मैं उनके लिए बहुत चिंतित
हूँ। 3यदि मैं इनको भूखा ही घर भेज दूँ, तो उनमें से कुछ लोग अपने घर के मार्ग में ही मूर्छित हो जाएँगे। उनमें से कुछ लोग बड़ी दूर-दूर से आए हुए हैं।” 4उसके
चेले जानते थे कि वह यह सुझाव दे रहा था कि वे ही उन लोगों को कुछ खाने के लिए दें, इसलिए उनमें से एक ने प्रतिउत्तर दिया, “इस भीड़ को संतुष्ट करने के
लिए हम सम्भवतः भोजन नहीं खोज सकते। इस स्थान में कोई नहीं रहता!” 5यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ है?” उन्होंने प्रतिउत्तर दिया,
“हमारे पास सात चपटी रोटियाँ हैं।” 6यीशु ने भीड़ को आज्ञा दी, “भूमि पर बैठ जाओ!” जब वे बैठ गए, तो उसने वे सात रोटियाँ लेकर उनके लिए परमेश्वर का
धन्यवाद किया और उनको टुकड़ों में तोड़ा, और उन्हें चेलों को दिया कि वे उसे लोगों को दें। 7उन्होंने यह भी देखा कि उनके पास कुछ छोटी मछलियाँ थीं। अतः
उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने के बाद, उसने अपने चेलों से कहा, “उन्हें ये भी दो।” उनके द्वारा भीड़ को मछलियाँ देने के बाद, 8लोगों ने वह भोजन
खाया, और उन्होंने स्वयं को संतुष्ट करने के लिए भरपेट खाया। छोड़े गए भोजन के टुकड़ों को उसके चेलों ने इकट्ठा करके सात बड़ी टोकरियाँ भर लीं। 9उसके
चेलों ने अनुमान लगाया कि उस दिन लगभग 4,000 लोगों ने भोजन किया है। उसके बाद यीशु ने भीड़ को विदा कर दिया। 10इसके तुरन्त बाद, वह अपने चेलों
के साथ नाव पर चढ़ गया, और वे जलयात्रा करके गलील की झील के पार दलमनूता जिले में गए। 11फिर कुछ फरीसी यीशु के पास आए। वे उससे वादविवाद
करने लगे और दबाव बनाने लगे कि वह कोई चमत्कार दिखाए जिससे प्रकट हो कि उसे परमेश्वर ने भेजा है। 12यीशु ने अपने में गहरी आह भरी, और फिर
उनसे कहा, “तुम मुझसे कोई चमत्कार दिखाने के लिए क्यों कहते हो? मैं तुम्हारे लिए कोई चमत्कार नहीं करूँगा!” 13तब वह उसे छोड़कर चले गए। वह और
उसके चेले नाव पर चढ़ गए और जलयात्रा करके गलील की झील के पार चले गए। 14उसके चेले पर्याप्त भोजन लाना भूल गए थे। विशेष रूप से, उनके पास
नाव में केवल एक चपटी रोटी ही थी। 15जब वे जा रहे थे, तो यीशु ने उन्हें चेतावनी देकर कहा, “सचेत रहो! फरीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से सावधान रहो!”
16उसके चेलों ने उसकी बात को गलत समझा। इसलिए वे आपस में कहने लगे, “उसने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि हमारे पास रोटी नहीं है।” 17यीशु
जानता था कि वे आपस में क्या बात कर रहे हैं, इसलिए उसने उनसे कहा, “तुम पर्याप्त रोटी न होने के बारे में क्यों बात कर रहे हो? जो बात मैंने अभी कही है
तुम्हें उसे समझना चाहिए! तुम विचार नहीं कर रहे हो! 18तुम्हारे पास आँखें तो हैं, परन्तु तुम जो देखते हो उसे समझते नहीं! तुम्हारे पास कान तो हैं, परन्तु जो मैं
कहता हूँ तुम उसे समझते नहीं!” फिर उसने पूछा, “क्या तुम्हें वह स्मरण नहीं जो घटित हुआ था 19जब मैंने पाँच रोटियाँ तोड़कर 5,000 लोगों को खिलाया था?
न केवल सब लोग खाकर संतुष्ट हुए थे, बल्कि वहाँ भोजन बच भी गया था! तुमने छोड़े हुए रोटी के टुकड़ों की कितनी टोकरियाँ इकट्ठा की थीं?” उन्होंने
प्रतिउत्तर दिया, “हमने भरी हुई 12 टोकरियाँ इकट्ठा की थीं।” 20फिर उसने पूछा, “जब मैंने 4,000 लोगों को खिलाने के लिए सात रोटियाँ तोड़ी थीं, तो फिर से
जब सब ने भरपेट खा लिया, उसके बाद रोटी के बचे हुए टुकड़ों की कितनी बड़ी टोकरियों को तुमने इकट्ठा किया था?” उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, “हमने भरी हुई
सात बड़ी टोकरियाँ इकट्ठा की थीं।” 21तब उसने उनसे कहा, “मैं नहीं जानता कि ऐसे कैसे हो सकता है कि तुम अब तक नहीं समझते।” 22वे बैतसैदा नगर में
पहुँचे। लोग एक अंधे व्यक्ति को यीशु के पास लेकर आए और उससे विनती की कि वह उसे चंगा करने के लिए उसे छुए। 23यीशु उस अंधे व्यक्ति का हाथ
पकड़कर उसे नगर से बाहर ले गया। उसने उस व्यक्ति की आँखों पर थूकने के बाद, उस पर अपने हाथ रखे। उसने उससे पूछा, “क्या तू कुछ देखता है?” 24उस
व्यक्ति ने ऊपर देखा, और फिर कहा, “हाँ, मैं लोगों को देखता हूँ! वे इधर-उधर चल-फिर रहे हैं, परन्तु मैं उन्हें साफ-साफ नहीं देख पा रहा हूँ। वे पेड़ों के समान
दिखते हैं!” 25तब यीशु ने फिर से उस अंधे व्यक्ति की आँखों को छुआ। उस व्यक्ति ने बड़े ध्यान से देखा, और उसी घड़ी वह पूरी रीति से चंगा हो गया! वह
सबकुछ साफ-साफ देख सकता था। 26यीशु ने उससे कहा, “नगर में मत जाना!” फिर उसने उस व्यक्ति को उसके घर भेज दिया। 27यीशु और उसके चेले
बैतसैदा से निकलकर कैसरिया फिलिप्पी नगर के निकट के गाँवों में गए। मार्ग में उसने उनसे पूछा, “लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?” 28उन्होंने प्रतिउत्तर
दिया, “कुछ लोग कहते हैं कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है। दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह भविष्यद्वक्ता है। और अन्य लोग करते हैं कि तू पहले वाले
भविष्यद्वक्ताओं में से कोई है।” 29उसने उनसे पूछा, “तुम्हारा क्या कहना है? तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?” पतरस ने उसे उत्तर दिया, “हम विश्वास करते हैं
कि तू ही मसीह है!” 30तब यीशु ने उन्हें सख्ती से चेतावनी दी कि वे किसी से न कहें कि वह मसीह है। 31फिर वह उन्हें शिक्षा देने लगा कि वह, अर्थात मनुष्य
का पुत्र, निश्चय ही बहुत दुःख उठाएगा। वह पुरनियों, प्रधान याजकों, और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों के द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा। यहाँ तक
कि उसे मार डाला जाएगा, परन्तु मरने के बाद तीसरे दिन वह फिर से जीवित हो जाएगा। 32उसने उनसे यह बात स्पष्ट रूप से कह दी। परन्तु पतरस यीशु को
एक ओर ले जाकर इस रीति से बात करने के लिए उसे झिड़कने लगा। 33यीशु ने मुड़कर अपने चेलों की ओर देखा। फिर उसने पतरस को यह कहकर डांटा,
“इस प्रकार से सोचना बंद कर! इस रीति से बात करने के लिए तुझे शैतान प्रेरित कर रहा है! जो परमेश्वर मुझसे करवाना चाहता है उसे करने की इच्छा के

बजाए, तू चाहता है कि मैं वह करूँ जो लोग मुझसे करवाना चाहते हैं।” 34फिर उसने अपने चेलों के साथ भीड़ को इकट्ठा किया कि वे उसकी सुनें। उसने उनसे कहा, “यदि तुम में से कोई मेरा चेला बनना चाहता है, तो तुम्हें केवल वही काम नहीं करना है जिससे तुम्हारा जीवन व्यतीत करना सरल हो जाए। तुम्हें उन अपराधियों के समान पीड़ा सहने के लिए भी तैयार रहना है जिन्हें उन स्थानों पर क्रूस ढोकर ले जाने के लिए विवश किया जाता है जहाँ उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। जो कोई भी मेरा चेला बनना चाहता है उसे ऐसा ही करना है। 35तुम्हें ऐसा इसलिए करना है क्योंकि जो इस बात का इन्कार करके कि वे मुझसे जुड़े हुए हैं अपने जीवन को बचाने का प्रयास करते हैं वे अपना जीवन खोएँगे। जिनकी हत्या इसलिए कर दी जाती है क्योंकि वे मेरे चेले हैं और क्योंकि वे दूसरों को शुभ संदेश सुनाते हैं वे मेरे साथ सर्वदा जीवित रहेंगे। 36लोग इस संसार में वह सबकुछ प्राप्त कर सकते हैं जो वे चाहते हैं, परन्तु यदि वे अनंत जीवन को प्राप्त नहीं करते तो वास्तव में वे कुछ भी प्राप्त नहीं करते! 37इस तथ्य के विषय में ध्यानपूर्वक विचार करो कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो लोग परमेश्वर को दें जिससे कि उन्हें अनंत जीवन प्राप्त हो! 38और इस विषय में विचार करो: बहुत से लोग यह कहने से इन्कार करते हैं कि वे मुझसे जुड़े हुए हैं। इन दिनों में जब बहुत से लोग परमेश्वर से दूर हो गए हैं और पाप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तो वे मेरी बातों को अस्वीकार करते हैं, तो मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र, भी यह कहने से इन्कार कर दूँगा कि वे मुझसे जुड़े हुए हैं जब मैं पवित्र स्वर्गदूतों के साथ और उस महिमा सहित जो मेरे पिता के पास है वापस आऊँगा!”

Chapter 9

1यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से यह भी कहा, “ध्यान लगाकर सुनो! अब तुममें से कुछ जो यहाँ उपस्थित हैं इससे पहले कि परमेश्वर को सामर्थी रूप से शासन करते हुए न देख लें तब तक न मरेंगे!” 2छः दिन बाद यीशु अपने साथ पतरस, याकूब, और याकूब के भाई, यूहन्ना को लेकर एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। जिस समय वे वहाँ ऊपर अकेले थे तो वह उन्हें बहुत अलग रूप में दिखाई दिया। 3उसके वस्त्र चमकीले सफेद हो गए। वह पृथ्वी की किसी भी वस्तु से इतने अधिक सफेद थे कि कोई विरंजन भी वैसा सफेद न कर पाए। 4मूसा और एलिय्याह, ये दो भविष्यद्वक्ता जो बहुत समय पूर्व रहते थे, उनके सामने प्रकट हुए। फिर वे यीशु से बातें करने लगे। 5थोड़े समय के बाद पतरस ने कहा, “हे गुरु, यहाँ होना बड़ा अद्भुत है! इसलिए हमें तीन मंडप बनाने की अनुमति प्रदान कर। जिसमें से एक तेरे लिए होगा, एक मूसा के लिए होगा, और एक एलिय्याह के लिए होगा!” 6उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु नहीं जानता था कि क्या कहे, क्योंकि वह और बाकी के दो चेले बहुत डर गए थे। 7तब एक बादल ने प्रकट होकर उन्हें ढांप लिया। परमेश्वर ने उस बादल में से यह कहकर उनसे बात की, “यह मेरा पुत्र है। यही है जिससे मैं प्रेम करता हूँ। इसलिए, जो वह कहता है तुम्हें उस पर ध्यान देना चाहिए!” 8जब उन तीनों चेलों ने चारों ओर दृष्टि की, तो एकाएक उन्होंने देखा कि केवल यीशु ही उनके साथ है, और एलिय्याह एवं मूसा अब वहाँ नहीं हैं। 9जिस समय वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, तब यीशु ने उनसे कहा कि जो अभी-अभी उसके साथ घटित हुआ है वह बात किसी से न कहना। उसने कहा, “जब मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र, मेरे मरने के बाद फिर से जीवित हो जाऊँ, तब तुम उनसे यह बात कह सकते हो।” 10अतः उन्होंने बहुत समय तक दूसरों को यह बात नहीं बताई। परन्तु उन्होंने आपस में चर्चा की कि इस बात का क्या अर्थ है जब उसने कहा कि वह मरे हुओं में से जी उठेगा। 11उन तीन चेलों ने यीशु से पूछा, “यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्य कहते हैं कि मसीह के पृथ्वी पर आने से पहले एलिय्याह का पृथ्वी पर वापस आना आवश्यक है, {परन्तु हमने अभी-अभी एलिय्याह को देखा है,} तो जो वे सिखा रहे हैं क्या वह गलत है?” 12-13यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यह सच है कि परमेश्वर ने एलिय्याह को पहले आकर सबकुछ जैसा होना चाहिए वैसा करने के लिए भेजने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और हमारे अगुवों ने उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया, जैसा कि वे करना चाहते थे जैसा बहुत समय पहले भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था कि वे करेंगे। परन्तु पवित्रशास्त्र में मेरे, अर्थात मनुष्य के पुत्र के विषय में बहुत कुछ लिखा हुआ है। पवित्रशास्त्र कहता है कि मैं बहुत दुःख उठाऊँगा और लोग मुझे अस्वीकार कर देंगे।” 14उसके बाद यीशु और उसके तीनों चेले वहाँ पहुँच गए जहाँ दूसरे चेले उपस्थित थे। उन्होंने दूसरे चेलों के आसपास एक बड़ी भीड़ को देखा और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले कुछ मनुष्य उनसे वाद-विवाद कर रहे थे। 15यीशु को आते देखकर भीड़ बहुत चकित हो गई। इसलिए वे दौड़कर उसके पास गए और उसे नमस्कार किया। 16यीशु ने उनसे पूछा, “तुम किस विषय पर वाद-विवाद कर रहे हो?” 17भीड़ में से एक व्यक्ति ने उसे उत्तर दिया, “हे गुरु, मैं यहाँ तेरे पास अपने पुत्र को लेकर आया था {ताकि तू उसे चंगा कर दे}। उसमें एक दुष्टात्मा समाया हुआ है जिसके कारण वह बोल नहीं पाता। 18जब भी वह दुष्टात्मा उसे वश में करता है तो उसे नीचे गिरा देता है। वह मुँह से झाग निकालता है, और दाँत पीसता है, और अकड़ जाता है। मैंने तेरे चेलों से उस दुष्टात्मा को निकालने की विनती की थी, परन्तु वे ऐसा नहीं कर पाए।” 19यीशु ने यह कहकर उन्हें प्रतिउत्तर दिया, “हे अविश्वासी लोगों! मैं तुम्हारी विश्वासहीनता से बहुत थक गया हूँ! उस लड़के को मेरे पास लेकर आओ।” 20अतः वे उस लड़के को यीशु पास लेकर आए। जैसे ही उस दुष्टात्मा ने यीशु को देखा, उसने उस लड़के को जोर से झटका, और वह लड़का भूमि पर गिर पड़ा। वह इधर-उधर लुढ़कने और मुँह से झाग निकालने लगा। 21यीशु ने उस लड़के के पिता से पूछा, “इसकी ऐसी दशा कब से है?” उसने प्रतिउत्तर दिया, “ऐसा होना तब आरम्भ हुआ जब वह छोटा बच्चा ही था। 22वह दुष्टात्मा केवल ऐसा ही नहीं करता, बल्कि वह उसे मार डालने के लिए बहुत बार उसे आग में या पानी में फेंक देता है। यदि तू कर सके, तो हम पर दया करके हमारी सहायता कर!” 23यीशु ने उससे कहा, “निःसंदेह मैं कर सकता हूँ! परमेश्वर उन लोगों के लिए कुछ भी कर सकता है जो यह विश्वास करते हैं कि वह ऐसा करने में सक्षम है!” 24उस बालक का पिता तुरन्त चिल्लाया, “मैं विश्वास करता हूँ कि तू ही मेरी सहायता कर सकता है, परन्तु मैं दृढ़तापूर्वक विश्वास नहीं करता। मेरी सहायता कर कि मैं अधिक दृढ़ता से विश्वास करूँ!” 25यीशु ने देखा कि भीड़ बढ़ रही है। उसने उस दुष्टात्मा को झिड़का: “हे दुष्टात्मा, तू इस लड़के को बहरा और बोलने में असमर्थ कर रहा है! मैं तुझे इसमें से निकल जाने की और फिर कभी इसमें प्रवेश न करने की आज्ञा देता हूँ!” 26उस दुष्टात्मा ने चिल्लाकर उस लड़के को हिंसक रूप से हिलाया, और फिर वह उस लड़के में से निकल गया। वह लड़का एक मृत देह के समान हो गया। इसलिए वहाँ पर उपस्थित अधिकांश लोगों ने कहा, “वह मर गया है!” 27हालाँकि, यीशु ने उस लड़के को हाथ से पकड़कर खड़े होने में उसकी सहायता की। फिर वह लड़का खड़ा हो गया। 28बाद में, जब यीशु और उसके चेले एक घर में अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा, “हम उस दुष्टात्मा को निकालने में सक्षम क्यों नहीं हुए?” 29यीशु ने उनसे कहा, “तुम इस प्रकार की दुष्टात्मा को केवल भोजन से परहेज करने और परमेश्वर से प्रार्थना करने के द्वारा ही निकाल सकते हो। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है जिससे तुम उन्हें निकाल सको।” 30यीशु और उसके चेलों ने उस देश से निकलकर, गलील देश से होते हुए यात्रा की। यीशु नहीं चाहता था कि किसी को यह बात मालूम हो कि वह कहाँ है। 31यीशु अपने चेलों को शिक्षा देने के लिए समय चाहता था। वह उनसे कहने लगा,

“किसी दिन मेरे शत्रु मुझे बंदी बना लेंगे, और मैं दूसरे मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया जाऊँगा। वे मनुष्य मेरी हत्या कर देंगे। परन्तु मेरे मरने के बाद तीसरे दिन, मैं फिर से जीवित हो जाऊँगा!” **32**चेले समझ नहीं पाए कि यीशु उनसे क्या कह रहा था, और वे उससे पूछने से डरते थे कि उसके कहने का क्या अर्थ है। **33**उसके बाद यीशु और उसके चेले लौटकर कफरनहूम नगर में आए। जिस समय वे घर में थे, तब यीशु ने उनसे पूछा, “जब हम सड़क पर यात्रा कर रहे थे तब तुम क्या बातें कर रहे थे?” **34**परन्तु चेलों ने प्रतिउत्तर नहीं दिया। वे प्रतिउत्तर देने में लज्जा महसूस कर रहे थे क्योंकि यात्रा करते समय, वे आपस में इस बात पर वाद-विवाद कर रहे थे कि उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कौन है। **35**यीशु बैठ गया। उसने अपने 12 चेलों को अपने पास बुलाया, और फिर उनसे कहा, “यदि कोई जन चाहता है कि परमेश्वर उसे सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति समझे, तो उसे स्वयं को सबसे कम महत्वपूर्ण मानना चाहिए, और उसे बाकी सब लोगों की सेवा करनी चाहिए।” **36**फिर यीशु ने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा कर दिया। उसने उस बालक को गोद में लिया, और फिर उनसे कहा, **37**“जो कोई इस प्रकार के बालक का इसलिए स्वागत करता है, क्योंकि वे मुझसे प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर मानता है कि वे मेरा स्वागत कर रहे हैं। जो कोई मेरा स्वागत करता है, तो वह मानो परमेश्वर का स्वागत कर रहा है, जिसने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है।” **38**यूहन्ना ने यीशु से कहा, “हे गुरु, हमने किसी व्यक्ति को लोगों में से दुष्टात्माएँ निकालते देखा है। वह दावा करता है कि उसे ऐसा करने का अधिकार तुझसे मिला है। इसलिए हमने उसे ऐसा करने से रोका, क्योंकि वह हम चेलों में से एक नहीं था।” **39**यीशु ने कहा, “उसे ऐसा करने से मत रोको। क्योंकि कोई भी व्यक्ति मेरे अधिकार से कोई सामर्थी काम करने के तुरन्त बाद मेरे विषय में बुरी बातें नहीं बोलेगा। **40**जो हमारा विरोध नहीं करते वे उन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं जो हम कर रहे हैं। **41**परमेश्वर निश्चय ही उन लोगों को प्रतिफल देगा जो किसी भी प्रकार से तुम्हारी सहायता करते हैं, यहाँ तक कि यदि वे साधारण रूप से तुम्हें एक कटोरा पानी इसलिए पिलाएँ क्योंकि तुम मेरा, अर्थात मसीह का अनुसरण करते हो!” **42**यीशु ने यह भी कहा, “परन्तु यदि तुम मुझ पर विश्वास करने वाले जन के सामने पाप करने का कारण रखोगे{, तो परमेश्वर तुम्हें कठोर दंड देगा}। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे गले में एक बहुत भारी पत्थर बांधकर तुम्हें समुद्र में फेंक दे, तो यह तुम्हारे लिए उससे बेहतर होगा, जब परमेश्वर तुम्हें मुझ पर विश्वास करने वाले जन के सामने पाप करने का कारण रखने के लिए दंड देगा। **43**इसलिए यदि तुम पाप करने के लिए अपने एक हाथ का उपयोग करना चाहो तो उसका उपयोग मत करना! यहाँ तक कि यदि तुम्हें पाप करने से बचने के लिए अपना हाथ काटकर फेंकना भी पड़े, तो ऐसा कर देना! यह बेहतर है कि तुम अनंतकाल तक जीवित रहो, भले ही पृथ्वी पर रहते हुए तुम्हारे पास एक हाथ न हो। परन्तु यह अच्छा नहीं होगा कि तुम पाप करो और उसके परिणामस्वरूप परमेश्वर तुम्हारी समूची देह को नरक में फेंक दे। वहाँ की आग कभी नहीं बुझती! **44**[वह एक ऐसा स्थान है जहाँ कीड़े उन्हें खाना बंद नहीं करते, और उन्हें जलाने वाली आग कभी नहीं बुझती।] **45**यदि तुम पाप करने के लिए अपने एक पाँव का उपयोग करना चाहो तो अपने पाँव का उपयोग करने से रुक जाना! यहाँ तक कि यदि तुम्हें पाप करने से बचने के लिए अपना पाँव काटकर फेंकना भी पड़े, तो ऐसा कर देना! यह अच्छा है कि तुम {पाप न करो और} अनंतकाल तक जीवित रहो, भले ही पृथ्वी पर रहते हुए तुम्हारे पास एक पाँव न हो। परन्तु यह अच्छा नहीं होगा {कि तुम पाप करो और उसके परिणामस्वरूप} परमेश्वर तुम्हारी समूची देह को नरक में फेंक दे। **46**[जहाँ कीड़े उन्हें खाना बंद नहीं करते, और उन्हें जलाने वाली आग कभी नहीं बुझती।] **47**यदि जो तुम देखते हो उसके कारण तुम पाप की परीक्षा में पड़ो, तो उन वस्तुओं की ओर देखने से रुक जाओ! रुक जाओ यहाँ तक कि यदि तुम्हें पाप करने से बचने के लिए अपनी आँख को निकालकर फेंकना पड़े, तो ऐसा कर देना! केवल एक आँख लेकर उस राज्य में प्रवेश करना बेहतर है जिस पर परमेश्वर शासन करता है, बजाए इसके कि दो आँखें हों और वह तुम्हें नरक में फेंक दे। **48**उस स्थान में वहाँ कीड़े लोगों को हमेशा खाते रहते हैं और वहाँ आग कभी नहीं बुझती। **49**तुम्हें कठिनाइयों को सहन करना होगा ताकि परमेश्वर तुमसे प्रसन्न हो जाए। तुम्हारी कठिनाइयाँ वस्तुओं को शुद्ध करने वाली आग के समान है। तुम्हारा धीरज वैसा ही है जैसे लोग अपने बलिदानों पर नमक डालकर उन्हें शुद्ध करते हैं। **50**नमक भोजन में डालने के लिए उपयोग होता है, परन्तु यदि वह स्वादहीन हो जाए तो तुम फिर से उसे नमकीन नहीं कर सकते। उसी रीति से, तुम्हें परमेश्वर के लिए उपयोगी बने रहना है, क्योंकि यदि तुम बेकार हो गए तो फिर से परमेश्वर के लिए उपयोगी कैसे बनोगे। तुम्हें एक दूसरे के साथ शांति से भी जीवन व्यतीत करना चाहिए।”

Chapter 10

1यीशु अपने चेलों के साथ उस स्थान से निकल गया, और वे यहूदिया देश से होते हुए यरदन नदी के पूर्व की ओर गए। जब उसके पास लोगों की भीड़ फिर से इकट्ठा हो गई, तो जैसा वह नियमित रूप से किया करता था, वैसे ही वह उन्हें फिर से शिक्षा देने लगा। **2**जिस समय यीशु शिक्षा दे रहा था, तो कुछ फरीसी उसके पास आकर पूछने लगे, “क्या हमारी व्यवस्था किसी पुरुष को अपनी पत्नी को तलाक देने की अनुमति प्रदान करती है?” उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा ताकि वे उसकी आलोचना में सक्षम हों, चाहे वह “हाँ” में उत्तर दे या “नहीं” में। **3**यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मूसा ने तुम्हारे पूर्वजों को ऐसे पुरुष के विषय में क्या आज्ञा दी है जो अपनी पत्नी को तलाक देता है?” **4**उनमें से एक ने प्रतिउत्तर दिया, “मूसा ने अनुमति दी है कि ऐसा पुरुष एक त्यागपत्र लिखे ताकि वह उसे विदा कर सके।” **5**यीशु ने उनसे कहा, “ऐसा तुम्हारे हठीले स्वभाव के कारण ही था कि मूसा ने तुम्हारे लिए वह नियम ठहराया। **6**यह स्मरण रखो कि जब परमेश्वर ने सबसे पहले मनुष्यों को रचा, तो उसने एक पुरुष की सृष्टि की, और उस पुरुष की पत्नी होने के लिए उसने एक स्त्री की सृष्टि की। **7**इसी से मालूम होता है कि परमेश्वर ने क्यों कहा कि ‘जब कोई स्त्री-पुरुष विवाह करते हैं, तो उन्हें विवाह के बाद अपने माता-पिता के साथ नहीं रहना चाहिए। **8**बजाए इसके, वे दोनों एक साथ रहेंगे, और वे इतने घनिष्ठ रूप से एक हो जाएँगे कि वे एक ही व्यक्ति के समान हो जाएँगे।’ इसी कारण से, यद्यपि जो लोग विवाह करते हैं पहले वे अलग-अलग व्यक्ति थे, परन्तु विवाह के बाद परमेश्वर उन्हें एक व्यक्ति के रूप में मानता है{, इसलिए वह चाहता है कि वे एक दूसरे से विवाहित बने रहें}। **9**क्योंकि यह सच है कि एक पुरुष को अपनी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहिए। परमेश्वर ने उन्हें एक साथ जोड़ा है, और वह चाहता है कि वे एक साथ रहें!” **10**जब यीशु और उसके चेले घर में अकेले थे, तो उन्होंने उससे इसके विषय में फिर से पूछा। **11**यीशु ने उनसे कहा, “परमेश्वर मानता है कि जो पुरुष अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी स्त्री से विवाह करता है वह व्यभिचार करता है। **12**परमेश्वर यह भी मानता है कि जो स्त्री अपने पति को तलाक देकर दूसरे पुरुष से विवाह करती है वह भी व्यभिचार करती है।” **13**फिर लोग बच्चों को यीशु के पास लेकर आने लगे कि वह उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें आशीष दे। परन्तु उसके चेलों ने उन लोगों को डांटा। **14**जब यीशु ने यह देखा तो वह क्रोधित हो गया। उसने अपने चेलों से कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो! उन्हें मना मत करो! ऐसे ही लोग जो विनम्र और परमेश्वर पर भरोसा करते होंगे जैसे कि ये करते हैं वे ही अपने जीवन में परमेश्वर के शासन का अनुभव कर सकते हैं। **15**इस बात को ध्यान में रखो: जो लोग अपने ऊपर परमेश्वर के शासन का स्वागत बच्चों के समान नहीं करते—वे निश्चित रूप से उस राज्य में जिस पर परमेश्वर शासन करता है प्रवेश नहीं

करेंगे।" 16उसके बाद यीशु ने बच्चों को अपनी गोद में उठा लिया। उसने उन पर अपने हाथ भी रखे और परमेश्वर से उनका भला करने की विनती की। 17जब यीशु अपने चेलों के साथ फिर से यात्रा करना आरम्भ कर रहा था, तब एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया। उसने यीशु के आगे घुटने टिकाकर उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, मैं क्या करूँ जिससे कि मैं अनंतकाल तक परमेश्वर के साथ रह सकूँ?" 18यीशु ने उससे कहा, "तू नहीं जानता कि तू मुझे उत्तम कहकर क्या बोल रहा है! केवल परमेश्वर ही उत्तम है! 19{परन्तु तेरे प्रश्न के उत्तर में,} तू मूसा की आज्ञाओं को तो जानता है: 'किसी की हत्या न करना, व्यभिचार न करना, किसी का सामान न चुराना, किसी बात के विषय में झूठ न बोलना, किसी को धोखा न देना, और अपने माता-पिता के प्रति आदरभाव रखना।'" 20उस मनुष्य ने कहा, "हे गुरु, मैं तो अपने लड़कपन से ही इन सब आज्ञाओं का पालन करता आया हूँ।" 21यीशु ने उसकी ओर स्नेहभरी दृष्टि से देखा। उसने उससे कहा, "एक बात है जो अब तक तूने नहीं की है। घर जाकर अपनी सारी सम्पत्ति बेच दे, और उसके बाद वह धन गरीब लोगों को दे दे। इसके परिणामस्वरूप, तू स्वर्ग में आत्मिक रूप से समृद्ध होगा। जो मैंने तुझसे कहा है, उसके करने के बाद, मेरे साथ हो ले और मेरा चेला बन जा!" 22यीशु के निर्देशों से वह मनुष्य उदास हो गया। वह बड़े दुःख के साथ चला गया, क्योंकि वह अपना धन नहीं दे सकता था। 23यीशु ने चारों ओर के लोगों को देखा। फिर उसने अपने चेलों से कहा, "जो लोग धनी होते हैं उनके लिए स्वयं को परमेश्वर के शासन के अधीन रखना अत्यंत कठिन होता है।" 24जो यीशु ने कहा था उससे चेले चकित हो गए। {वे सोचते थे कि परमेश्वर धनी लोगों का पक्ष लेता है, इसलिए यदि परमेश्वर उनका उद्धार नहीं करता, तो वह किसी का भी उद्धार नहीं करेगा।} यीशु ने फिर से कहा, "हे प्रिय विश्वासियों, तुम जो मेरी देखरेख में हो, किसी भी व्यक्ति के लिए यह निर्णय लेना अत्यंत कठिन होता है कि वह अपने जीवन में परमेश्वर को शासन करने दे। 25ऊँट जैसे बड़े विशाल पशु का सिलाई की सुई के छोटे से छेद से गुजरना असम्भव है। धनी लोगों के लिए यह निर्णय लेना लगभग उतना ही कठिन है कि वे परमेश्वर को अपने जीवन पर शासन करने दें।" 26चेले बड़े विस्मित हो गए। इसलिए उन्होंने यीशु से कहा, "यदि ऐसा है, तो फिर कोई व्यक्ति कैसे उद्धार पाएगा!" 27यीशु ने उन पर दृष्टि की, और फिर उसने कहा, "हाँ, लोगों के लिए स्वयं का उद्धार करना असम्भव है! परन्तु परमेश्वर निश्चित रूप से उनका उद्धार कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर कुछ भी कर सकता है!" 28पतरस ने कहा, "देख, हम तो सबकुछ पीछे छोड़कर तेरे चेले बन गए हैं।" 29यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो: जिन्होंने अपने घरों को, अपने भाइयों को, अपनी बहनों को, अपने पिता को, अपनी माता को, अपने बच्चों को, और अपनी भूमि के टुकड़े को मेरा चेला बनने और शुभ संदेश का प्रचार करने के लिए छोड़ दिया है, 30वे इस जीवन में उसका सौ गुणा प्राप्त करेंगे जितना उन्होंने पीछे छोड़ दिया है। इसमें घर और परिवार के सदस्य: भाई और बहनें और माताएँ और बच्चे, और भूमि के टुकड़े भी शामिल हैं। इसके साथ ही, लोग उनको {यहाँ पृथ्वी पर इसलिए सताएँगे क्योंकि वे मुझ पर विश्वास करते हैं}, परन्तु भविष्यकाल में परमेश्वर के साथ अनंतकाल का जीवन बिताएँगे। 31कई लोग जिनको दूसरे लोग बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं वे परमेश्वर के द्वारा महत्वहीन माने जाएँगे, और कई लोग जिनको दूसरे लोग महत्वहीन मानते हैं वे परमेश्वर के द्वारा बहुत महत्वपूर्ण माने जाएँगे!" 32जब वे यात्रा करते रहे तो कुछ दिनों के बाद, यीशु और उसके चेले यरूशलेम जाने वाले मार्ग पर जा रहे थे। यीशु उनके आगे-आगे जा रहा था। चेले अचम्भित थे और जो अन्य लोग उनके साथ थे वे डरे हुए थे। मार्ग में यीशु 12 चेलों को फिर से एकांत में एक स्थान पर ले गया। फिर वह उन्हें बताने लगा कि उसके साथ क्या होने वाला है। 33उसने कहा, "ध्यान लगाकर सुनो! हम यरूशलेम जा रहे हैं। वहाँ प्रधान याजक और यहूदी व्यवस्था के शिक्षक मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को बंदी बना लेंगे। वे इस बात की घोषणा करेंगे कि मुझे मर जाना चाहिए। उसके बाद वे मुझे रोमी अधिकारियों के पास ले जाएँगे। 34उनके लोग मेरा उपहास करेंगे और मुझ पर थूकेंगे। वे मुझे कोड़े मारेंगे, और उसके बाद वे मुझे मार डालेंगे। परन्तु इसके बाद तीसरे दिन, मैं फिर से जी उठूँगा!" 35मार्ग में, जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने, यीशु के पास आकर उससे कहा, "हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो हम तुझसे हमारे लिए करने को कहें वह तू हमारे लिए करे!" 36यीशु ने उनसे कहा, "वह क्या बात है जो तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?" 37उन्होंने उससे कहा, "जब तू प्रतापी होकर राज्य करे, तो हम में से एक तेरी दाईं ओर बैठे तथा दूसरा तेरी बाईं ओर बैठे।" 38परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "तुम समझते नहीं कि तुम क्या मांग रहे हो।" {फिर उसने उनसे पूछा,} "क्या तुम दुःख उठा सकते हो जैसे मैं दुःख उठाने वाला हूँ? क्या तुम सह सकते हो कि लोग तुम्हारी हत्या कर दें जैसे वे मेरी हत्या करेंगे?" 39उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम ऐसा करने में सक्षम हैं!" तब यीशु ने कहा, "यह सच है कि तुम भी वैसे ही दुःख उठाओगे जैसे मैं दुःख उठाऊँगा, और तुम सह लोगे कि लोग तुम्हारी हत्या कर दें जैसे वे मेरी हत्या करेंगे। 40परन्तु वह मैं नहीं हूँ जो इस बात का चुनाव करता है कि मेरे पास कौन बैठेगा। परमेश्वर उन लोगों को वह स्थान प्रदान करेगा जिन्हें वह पहले से ही चुन लेगा।" 41बाकी के दस चेलों ने बाद में सुना कि यूहन्ना और याकूब ने क्या अनुरोध किया था। {जिसके परिणामस्वरूप,} वे उन पर क्रोधित थे। 42फिर जब यीशु ने उन सब को एक साथ बुलाया, तो उसने उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो लोग गैर-यहूदियों पर शासन करते हैं उन्हें स्वयं को शक्तिशाली दिखाने में आनंद आता है। तुम यह भी जानते हो कि उनके अधिकारियों को दूसरों को आदेश देने में आनंद आता है। 43परन्तु तुम उनके जैसे मत बनो! इसके विपरीत, यदि तुम में से कोई जन महानता को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे स्वयं को दूसरों का सेवक समझना चाहिए। 44और, यदि तुम में से कोई चाहता है कि परमेश्वर उसे सबसे महत्वपूर्ण समझे, तो वह तुम में से बाकी के लोगों के लिए दास का काम करे। 45यहाँ तक कि मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र भी, सेवा करवाने नहीं, परन्तु सेवा करने आया हूँ, और लोगों के पाप के लिए भुगतान के रूप में मरने के लिए आया हूँ, और उन्हें उस दंड से छुड़ाने के लिए मोल लेने के लिए आया हूँ जिसे परमेश्वर ने पापियों के लिए ठहराया है। 46यरूशलेम जाने के मार्ग में यीशु और उसके चेले यरीहो नगर में पहुँचे। फिर, जब वे बड़ी भीड़ के साथ यरीहो से निकल रहे थे, तो एक मनुष्य जो देख नहीं सकता था और अक्सर लोगों से पैसे मांगता था, सड़क के किनारे बैठा हुआ था। उसका नाम बरतिमाई था, और उसके पिता का नाम तिमाई था। 47जब उसने लोगों को यह कहते हुए सुना कि यीशु नासरी जा रहा है, तो वह ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "हे यीशु! तू जो दाऊद का वंशज है, मेरी सहायता कर!" 48बहुत से लोगों ने उसे डांटा और उसे कहा कि चुप रहे। बजाए इसके, वह और भी ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "तू जो दाऊद का वंशज है, मुझ पर दया कर!" 49यीशु ने रुककर कहा, "उसे यहाँ आने के लिए कहो!" उन्होंने उस अंधे मनुष्य को यह कहकर बुलाया, "यीशु तुझे बुला रहा है! इसलिए प्रसन्न हो जा और खड़ा हो और चल!" 50जब वह उछलकर खड़ा हुआ तो उसने अपने वस्त्रों को एक ओर फेंक दिया, और वह यीशु के पास आया। 51यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरी सहायता कैसे करूँ?" उस अंधे मनुष्य ने उससे कहा, "हे गुरु, मैं फिर से देखने में सक्षम होना चाहता हूँ!" 52यीशु ने उससे कहा, "क्योंकि तूने मुझ पर भरोसा किया, इसलिए मैंने तुझे चंगा कर दिया है! इसलिए तू जा सकता है!" तुरन्त ही वह देखने लगा। और वह मार्ग पर यीशु के साथ चला गया।

Chapter 11

1जब यीशु और उसके चेले यरूशलेम के निकट आए, तो वे जैतून पहाड़ के पास बैतफगे और बैतनिय्याह के गाँवों में पहुँचे। तब यीशु ने अपने दो चेलों को उनके
आगे-आगे भेजा। 2यीशु ने उनसे कहा, “हमारे सामने वाले उस गाँव में जाओ। जैसे ही तुम उसमें प्रवेश करोगे, तुम्हें वहाँ एक जवान गधा बंधा हुआ दिखाई देगा।
वह एक ऐसा पशु है जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर मेरे पास ले आओ। 3यदि कोई तुमसे पूछे कि ‘तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?’ तो कहना
कि ‘यीशु को इसकी आवश्यकता है। जैसे ही इसकी आवश्यकता नहीं रहेगी, वह इसे किसी के साथ वापस भेज देगा।’” 4अतः वे दोनों चेले गए, और उन्हें वह
गधा मिल गया। वह एक घर के निकट बंधा हुआ गली में खड़ा था। तब उन्होंने उसे खोल लिया। 5जो लोग वहाँ थे उनमें से कुछ ने यीशु के चेलों से पूछा, “तुम
इस गधे को क्यों खोल रहे हो?” 6जो बातें कहने के निर्देश यीशु ने उन्हें दिए थे उन्होंने उनसे वे बातें कह दीं। इसलिए उन लोगों ने उन्हें गधे को ले जाने की
अनुमति दे दी। 7वे दोनों चेले उस गधे को यीशु के पास ले गए और उस पर अपने कपड़े डाल दिए {ताकि कुछ ऐसा बन जाए जिस पर वह बैठ सके}। उसके
बाद यीशु उस गधे पर बैठ गया। 8कई लोगों ने उसके सामने सड़क पर अपने कपड़े फैला दिए। बाकियों ने पास के खेतों से खजूर के पेड़ों की डालियाँ काट-
काटकर सड़क पर फैला दीं। 9जो लोग उसके आगे-आगे जा रहे थे और उसके पीछे-पीछे आ रहे थे वे सब चिल्ला रहे थे, “परमेश्वर की स्तुति करो!” {और}
“परमेश्वर इस जन को आशीष दे जो उसके प्रतिनिधि के रूप में आया है।” 10{वे यह भी चिल्ला रहे थे,} परमेश्वर तुझे आशीष दे जब तू उस रीति से शासन
करता है जैसे हमारे पूर्वज राजा दाऊद ने शासन किया था!” “जो सबसे ऊँचे स्वर्ग में है उस परमेश्वर की स्तुति करो!” 11यीशु ने उनके साथ यरूशलेम में प्रवेश
किया, और उसके बाद वह मंदिर के आंगन में गया। वहाँ की सब वस्तुओं पर चारों ओर दृष्टि करने के बाद, वह नगर से चला गया क्योंकि दोपहर पहले से ही
बीत गई थी। वह अपने 12 चेलों के साथ बैतनिय्याह के गाँव लौट गया। 12अगले दिन, जब यीशु और उसके चेले बैतनिय्याह से निकल रहे थे, तो उसे भूख
लगी। 13थोड़ी दूरी पर, उसने पत्तों के साथ एक अंजीर के पेड़ को देखा, अतः वह उसके पास यह देखने के लिए गया शायद उसे उस पर अंजीर मिल जाएँ।
परन्तु जब वह उसके निकट आया, तो उस पर पत्तों के अलावा कोई फल न पाया। ऐसा इसलिए था क्योंकि यह वर्ष का वह सामान्य समय नहीं था जब अंजीर
के पेड़ पके हुए अंजीर उत्पन्न करें। 14उसने उस पेड़ से कहा, “अब से कोई भी तेरा फल कभी खाने न पाएगा।” और उसके चेलों ने यह सुना। 15यीशु और
उसके चेले वापस यरूशलेम चले गए और मंदिर के आंगन में प्रवेश किया। उसने वहाँ ऐसे लोगों को देखा जो बलिदान के लिए पशुओं को खरीद रहे थे और बेच
रहे थे। उसने मंदिर के आंगन में से उन लोगों को खदेड़ दिया। उसने उन लोगों की मेजें भी उलट दीं, जो रोमी सिक्कों के बदले में मंदिर के कर वाले पैसे बेच रहे
थे। और उसने उन लोगों की चौकियों को उलट दिया जो खरीदने वालों को बलिदान के लिए कबूतर बेच रहे थे। 16उसने ऐसे किसी भी व्यक्ति को मंदिर के क्षेत्र
से होकर जाने की अनुमति नहीं दी जो बेचने के लिए कुछ भी ले जा रहा था। 17फिर जब वह उन लोगों को शिक्षा दे रहा था, तब उसने उनसे कहा,
“भविष्यद्वक्ताओं में से एक ने पवित्रशास्त्र में लिखा है कि परमेश्वर ने कहा, ‘मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे घर को ऐसा घर कहें जहाँ सब जातियों के लोग प्रार्थना कर
सकें,’ परन्तु तुम डाकुओं ने उसे एक ऐसी गुफा बना दिया है जिसमें डाकू छिपे रहते हैं।” 18यीशु ने जो काम किया था उसके विषय में बाद में प्रधान याजकों
और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों ने सुना। वे योजना बना रहे थे कि वे उसे कैसे मार डालें, परन्तु वे उससे डरते थे क्योंकि वे जान गए थे कि जो बातें वह
सिखा रहा था उससे सम्पूर्ण भीड़ चकित हो गई थी। 19उसी शाम, यीशु और उसके चेले नगर से चले गए {और फिर से बैतनिय्याह में सोए}। 20अगली सुबह
जब वे सड़क पर यरूशलेम की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि जिस अंजीर के पेड़ को यीशु ने श्राप दिया था वह सूख गया था और पूरी तरह से मुर्झा गया
था। 21पतरस को वह बात स्मरण आई जो यीशु ने उस अंजीर के पेड़ से कही थी, और उसने यीशु से कहा, “हे गुरु, देख! यह अंजीर का पेड़ जिसे तूने श्राप
दिया था सूख गया है!” 22यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “तुम्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि जो मैंने मांगा था परमेश्वर ने वही किया! तुम्हें भरोसा करना चाहिए कि जो
कुछ तुम परमेश्वर से करने के लिए कहोगे वह उसे करेगा! 23साथ ही यह भी ध्यान रखो: यदि कोई व्यक्ति पहाड़ से कहे कि ‘उठ जा और स्वयं को समुद्र में डाल
दे,’ और यदि वह संदेह न करे कि जो उसने मांगा है वह घटित होगा, अर्थात, यदि वह विश्वास करे कि ऐसा घटित होगा, तो परमेश्वर उसके लिए वैसा करेगा।
24इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि जब कभी तुम परमेश्वर से प्रार्थना करके कुछ मांगो, तो विश्वास कर लो कि तुम उसे प्राप्त करोगे, और, यदि तुम उस पर भरोसा
करो, तो परमेश्वर उसे तुम्हारे लिए कर देगा। 25अब, मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि जब कभी तुम प्रार्थना करते हो, तो यदि किसी मनुष्य के लिए तुम्हारे मन में
इसलिए द्वेष हो क्योंकि उन्होंने तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है, तो तुम पर आने वाला उनका कर्ज क्षमा कर दो ताकि स्वर्ग में रहने वाला तुम्हारा पिता भी तुम्हारे
पापों के लिए उस पर आने वाला तुम्हारा कर्ज क्षमा कर दे।” 26[परन्तु यदि तुम उनका कर्ज क्षमा न करो, तो तुम्हारा पिता भी, जो स्वर्ग में है, तुम्हारे पापों के
लिए तुम्हारा कर्ज क्षमा नहीं करेगा।] 27यीशु और उसके चेले फिर से यरूशलेम के मंदिर के आंगन में पहुँचे। जिस समय यीशु वहाँ टहल रहा था, तो प्रधान
याजकों, यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों, और पुरनियों का एक दल मिलकर उसके पास आया। 28उन्होंने उससे कहा, “तू इन कामों को किस अधिकार से
करता है? जिन कामों को तूने यहाँ कल किया था उन्हें करने के लिए तुझे किसने अधिकार दिया?” 29यीशु ने उनसे कहा, “मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछूँगा। यदि तुम
मुझे उत्तर दोगे, तो मैं भी तुम्हें बता दूँगा कि इन कामों को करने का अधिकार मुझे किसने दिया है। 30क्या वह परमेश्वर ही था जिसने यूहन्ना को उसके पास आने
वाले लोगों को बपतिस्मा देने का अधिकार दिया था? या वे लोग ही थे जिन्होंने उसे यह अधिकार दिया था?” 31वे आपस में वाद-विवाद करने लगे कि वे क्या
उत्तर दें। उन्होंने आपस में कहा, “यदि हम कहते हैं कि वह परमेश्वर ही था जिसने उसे अधिकार दिया था, तो वह हमसे कहेगा, ‘फिर तो जो यूहन्ना ने कहा था
तुम्हें उस पर विश्वास करना चाहिए था!’ 32दूसरी ओर, यदि हम कहें कि यह लोग ही थे जिन्होंने यूहन्ना को अधिकार दिया था, तब हमारे साथ क्या घटित होगा?”
वे यह कहने से डरते थे कि यूहन्ना को अधिकार कहाँ से मिला था, क्योंकि वे जानते थे कि लोग उन पर बहुत क्रोधित होंगे। वे जानते थे कि सब लोग वास्तव में
विश्वास करते थे कि यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था जिसे परमेश्वर ने भेजा था। 33इसलिए उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते कि यूहन्ना को लोगों को
बपतिस्मा देने का अधिकार किसने दिया।” तब यीशु ने उससे कहा, “क्योंकि तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, इसलिए मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि कल यहाँ
उन कामों को करने का अधिकार मुझे किसने दिया था।”

Chapter 12

1फिर यीशु ने यहूदी अगुवों को एक कहानी बताई जिसमें एक सबक था। उसने कहा, “किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई। उसने उसकी सुरक्षा के लिए उसके
चारों ओर बाड़ भी लगाई। उसने अंगूरों को कुचलने पर उनसे निकलने वाले रस को इकट्ठा करने के लिए एक पत्थर का हौद बनाया। उसने अपनी दाख की बारी
की रखवाली करने के लिए किसी व्यक्ति के बैठने के लिए एक मीनार भी बनाई। उसने उस दाख की बारी को कुछ लोगों को किराए पर दे दिया कि वे उसकी
देखरेख करें और वह दूसरे देश की यात्रा पर चला गया। 2जब अंगूरों की कटनी का समय आया, तो दाख की बारी के स्वामी ने अपनी दाख की बारी की
रखवाली करने वालों के पास एक दास को इसलिए भेजा, क्योंकि वह दाख की बारी की उपज का अपना भाग उनसे लेना चाहता था। 3परन्तु जब वह दास
पहुँचा, तो उन्होंने उस दास को पकड़कर पीटा, और उन्होंने उसे फल में से कुछ नहीं दिया। उसके बाद उन्होंने उसे भगा दिया। 4बाद में स्वामी ने उनके पास
अपने दासों में से किसी दूसरे को भेजा। परन्तु उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसे अपमानित किया। 5बाद में स्वामी ने एक और दास को भेजा। जो लोग
दाख की बारी की देखरेख कर रहे थे उन्होंने उस व्यक्ति की हत्या कर दी। उन्होंने और भी बहुत से दासों के साथ बुरा बर्ताव किया जिनको उसने भेजा था। कुछ
को उन्होंने पीटा और कुछ की उन्होंने हत्या कर दी। 6उस स्वामी के पास अभी भी एक और व्यक्ति था, जो उसका पुत्र था, जिससे वह अत्यंत प्रेम करता था।
इसलिए, अंत में उसने अपने पुत्र को उनके पास भेजा, क्योंकि उसने सोचा था कि वे उसके पुत्र को पहचान लेंगे और उसके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे। 7परन्तु
जब दाख की बारी की देखरेख करने वाले लोगों ने उसके पुत्र को आते देखा, तो वे एक दूसरे से बोले, ‘देखो! यही स्वामी का पुत्र है, जो किसी दिन इस दाख की
बारी का वारिस होगा! इसलिए आओ हम इसे मार डालें ताकि यह दाख की बारी हमारी हो जाए!’ 8उन्होंने स्वामी के पुत्र को पकड़ लिया और उसकी हत्या कर
दी। उसके बाद उन्होंने उसके शव को दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। 9इसलिए मैं तुम्हें बताऊँगा कि दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा। वह आकर उन
दुष्ट लोगों को जो उसकी दाख की बारी की देखरेख कर रहे थे मार डालेगा। तब वह उस दाख की बारी की देखरेख के लिए दूसरे लोगों की व्यवस्था करेगा।
10क्या तुम नहीं जानते कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है? जो लोग भवन बना रहे थे उन्होंने एक पत्थर का उपयोग करने से इन्कार कर दिया। परन्तु प्रभु ने उसी
पत्थर को उसके उचित स्थान पर रखा और वह भवन का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया! 11यह काम प्रभु ने किया है, और हम इसे देखकर अचम्भा करते हैं।”
12तब यहूदी अगुवों ने जान लिया कि जब उसने उन दुष्ट लोगों द्वारा किए गए कामों के विषय में यह कहानी बताई तो वह उन्हीं पर दोष लगा रहा था। इसलिए
यहूदी अगुवों ने उसे बंदी बनाना चाहा, परन्तु वे इस बात से डरते थे कि यदि यहूदी अगुवों ने ऐसा किया तो लोगों की भीड़ क्या करेगी। इसलिए वे उसे छोड़कर
चले गए। 13यहूदी अगुवों ने यीशु के पास कुछ फरीसियों को भेजा {जो सोचते थे कि यहूदियों को केवल वही कर देना चाहिए जो उनके अपने यहूदी अधिकारी
चाहते थे कि लोग चुकाएँ}। उन्होंने हेरोदेस अंतिपास और रोमी सरकार का समर्थन करने वाले दल के कुछ सदस्यों को भी भेजा। वे यीशु को फँसाना चाहते थे;
वे यीशु से कुछ ऐसा कहलवाना चाहते थे जिससे उनमें से कोई समूह उससे क्रोधित हो जाए ताकि वे उसके विरुद्ध आरोप लगा सकें। 14उनके पहँचने पर, उनमें
से एक ने यीशु से कहा, “हे गुरु, हम जानते हैं कि तू केवल वही सिखाता है जो सत्य है। हम यह भी जानते हैं कि तू लोगों के विचारों से प्रभावित नहीं होता।
बजाए इसके, तू सच्चाई से लोगों को सिखाता है कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है कि वे करें; तू उनकी सामाजिक उपाधि के लिए सम्मान प्रकट नहीं करता।
{इसलिए हमें बता कि तू इस मामले के विषय में क्या सोचता है:} क्या यह सही है कि हम रोमी सरकार को कर दें, या न दें? क्या हमें कर देना चाहिए, या हमें
उन्हें कर नहीं देना चाहिए?” 15यीशु जानता था कि वे वास्तव में यह जानना नहीं चाहते कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है कि वे करें। इसलिए उसने उनसे कहा,
“मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे कोई ऐसी बात कहलवाना चाहते हो जिसके लिए तुम मुझ पर दोष लगा सको, {परन्तु मैं वैसे भी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा।} मेरे
पास एक सिक्का लेकर आओ ताकि मैं उसे देखूँ।” 16जब वे उसके पास एक सिक्का लेकर आए, तो उसने उनसे पूछा, “इस सिक्के पर किसका चित्र है? और
इस पर किसका नाम है?” उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, “यह कैसर का चित्र और नाम है{, अर्थात वह व्यक्ति जो रोमी सरकार पर शासन करता है}।” 17यीशु ने उनसे
कहा, “{इस मामले में} जो सरकार का है वह सरकार को दो और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।” जो उसने कहा उससे वे चकित हो गए। 18सदूकियों
के समूह के लोग इस बात से इन्कार करने लगे कि मरने के बाद लोग फिर से जीवित हो जाते हैं। {लोगों के फिर से जीवित होने के विचार का उपहास करके
यीशु को बदनाम करने के लिए, उनमें से कुछ लोगों ने} उसके पास आकर उससे पूछा, 19“हे गुरु, मूसा ने हमें निर्देश दिया है कि यदि कोई पुरुष बिना संतान
उत्पन्न किए मर जाए, तो उस मरे हुए व्यक्ति की विधवा से उसका भाई विवाह कर ले। तब यदि वे दोनों संतान उत्पन्न करें, तो सब लोग यही समझेंगे कि वे उस
मरे हुए व्यक्ति की संतान हैं, और इस रीति से मरे हुए व्यक्ति का वंश बना रहेगा। 20इसलिए यहाँ एक उदाहरण है: एक परिवार में सात भाई थे। सबसे बड़े भाई
ने एक स्त्री से विवाह किया, परन्तु उसने और उसकी पत्नी ने कोई संतान उत्पन्न नहीं की। तब बाद में वह मर गया। 21दूसरे भाई ने {इस व्यवस्था का अनुसरण
करते हुए} उस स्त्री से विवाह कर लिया और उसने भी कोई संतान उत्पन्न नहीं की। तब बाद में वह मर गया। तीसरे भाई ने भी वैसा ही किया जैसा दूसरे भाई ने
किया था। परन्तु उसने भी कोई संतान उत्पन्न नहीं की, और बाद में मर गया। 22अंत में उन सातों भाइयों ने एक-एक करके उस स्त्री से विवाह किया, परन्तु
किसी के भी कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई, और एक-एक करके वे मर गए। बाद में वह स्त्री भी मर गई। 23{इसलिए, जो कुछ लोग कहते हैं यदि वह सच होता,
कि लोग मरने के बाद फिर से जीवित हो जाएँगे,} तो तू क्या सोचता है कि जब लोग फिर से जीवित हो जाएँगे तो वह स्त्री किसकी पत्नी ठहरेगी? ध्यान रहे कि
वह स्त्री उन सातों भाइयों से विवाह कर चुकी थी!” 24यीशु ने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, “तुम लोग निश्चित रूप से गलत हो। तुम नहीं जानते कि पवित्रशास्त्र इस
विषय में क्या शिक्षा देता है। तुम लोगों को फिर से जीवित करने की परमेश्वर की सामर्थ्य को भी नहीं समझते। 25{वह स्त्री उन भाइयों में से किसी की भी पत्नी
इसलिए नहीं ठहरेगी,} क्योंकि जब लोग फिर से जीवित हो जाएँगे, तो पुरुषों के पत्नियाँ रखने और स्त्रियों के पति रखने के बजाए, वे स्वर्ग के दूतों के समान हो
जाएँगे। {और स्वर्गदूत विवाह नहीं करते।} 26परन्तु मुझे लोगों के मरने के बाद फिर से जीवित होने के विषय में बोलने दो। जो पुस्तक मूसा ने लिखी, उस
पुस्तक में उसने उन लोगों के विषय में कुछ कहा है जो मर गए हैं, जिसका मुझे निश्चय है कि तुमने वह पढ़ा होगा। जिस समय मूसा जलती हुई झाड़ी को देख
रहा था, तब परमेश्वर ने उससे कहा, ‘अब्राहम जिस परमेश्वर की आराधना करता है और इसहाक जिस परमेश्वर की आराधना करता है और याकूब जिस परमेश्वर
की आराधना करता है वह मैं ही हूँ।’ {परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि यदि उसने उन मनुष्यों को फिर से जीवित न किया होता तो वह अब तक उनका परमेश्वर न
होता।} 27अब परमेश्वर की आराधना मरे हुए लोग नहीं करते। वे जीवित लोग ही होते हैं जो उसकी आराधना करते हैं। इसलिए जब तुम कहते हो कि मरे हुए
लोग फिर से जीवित नहीं होते, तो तुम अत्यंत गलत हो।” 28यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले एक मनुष्य ने उसकी बातों को सुना। वह जानता था कि यीशु ने
सदूकियों के प्रश्न का उत्तर बहुत अच्छी रीति से दिया था। इसलिए उसने आगे आकर यीशु से पूछा, “सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा कौन सी है?” 29यीशु ने उत्तर दिया,

“सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा यह है: ‘हे इस्राएल के लोगों, सुनो! प्रभु हमारा परमेश्वर, केवल वही हमारा परमेश्वर है। 30तुम्हें प्रभु अपने परमेश्वर से उन सब बातों में जो
तुम चाहते हो और महसूस करते हो, उन सब बातों में जो तुम सोचते हो, और उन सब बातों में जो तुम करते हो, प्रेम करना चाहिए!’ 31अगली सबसे महत्वपूर्ण
आज्ञा यह है: ‘तुम्हें अपने आसपास के लोगों से उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना तुम स्वयं से करते हो।’ इन दो से बढ़कर कोई भी आज्ञा महत्वपूर्ण नहीं है!”
32उस मनुष्य ने यीशु से कहा, “हे गुरु, तूने अच्छे से उत्तर दिया है। तू सच कहता है कि परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है, और यह कि कोई और परमेश्वर नहीं है।
33तूने यह भी ठीक-ठीक कहा है कि उन सब बातों में जो हम चाहते हैं और महसूस करते हैं, उन सब बातों में जो हम सोचते हैं, और उन सब बातों में जो हम
करते हैं, हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। और तूने ठीक-ठीक कहा है कि हमें उन लोगों से जिनके सम्पर्क में हम आते हैं उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना
हम स्वयं से करते हैं। और तूने यह भी ठीक-ठीक कहा है कि भोजन या पशुओं को होमबलि करने या अन्य बलियाँ चढ़ाने की तुलना में इन कामों को करना
परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करता है।” 34यीशु ने जान लिया कि इस मनुष्य ने बुद्धिमानी से उत्तर दिया है। इसलिए उसने उससे कहा, “{मुझे लगता है कि} तू
परमेश्वर को अपने ऊपर शासन करने देने का निर्णय लेने के निकट ही है।” इसके बाद, यीशु को फँसाने के प्रयास में उससे इस प्रकार के और प्रश्न पूछने से
यहूदी अगुवे डरे। 35बाद में, जिस समय यीशु मंदिर के क्षेत्र में शिक्षा दे रहा था, तब उसने लोगों से कहा, “ऐसा क्यों है कि यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्य
कहते हैं—और वे ठीक ही कहते हैं—कि मसीह राजा दाऊद का वंशज है? 36पवित्र आत्मा ने दाऊद को मसीह के विषय में यह कहने के लिए प्रेरित किया था,
‘परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरी दाईं ओर उस स्थान में बैठ, जहाँ मैं तुझे सब लोगों से अधिक आदर प्रदान करूँगा! उस समय तक यहीं बैठा रह जब तक कि
मैं तेरे शत्रुओं को पूर्ण रीति से पराजित न कर दूँ!”’ 37इस कारण, क्योंकि दाऊद स्वयं ही मसीह को ‘मेरे प्रभु’ कहता है, तो मसीह राजा दाऊद के वंश का पुरुष
कैसे हो सकता है? उसे तो दाऊद से बहुत बढ़कर होना चाहिए!” जब वह इन बातों को सिखाता था तो बहुत से लोग उसकी बातों को प्रसन्नतापूर्वक सुनते थे।
38जिस समय यीशु लोगों को शिक्षा दे रहा था, तो उसने उनसे कहा, “चौकस रहो कि तुम उन यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों के समान व्यवहार न करो।
उन्हें अच्छा लगता है कि लोग उनका सम्मान करें, इसलिए वे लोगों को यह दिखाने के लिए कि वे कितने महत्वपूर्ण हैं, लम्बे वस्त्र धारण करते हैं और इधर-उधर
टहलते हैं। उन्हें यह भी अच्छा लगता है कि लोग बाजारों में उन्हें आदरपूर्वक नमस्कार करें। 39उन्हें यहूदी सभास्थल में सबसे महत्वपूर्ण आसनों में बैठना अच्छा
लगता है। उत्सवों में उन्हें ऐसे आसनों में बैठना अच्छा लगता है जहाँ सबसे आदरणीय लोग बैठते हैं। 40वे विधवाओं की सारी सम्पत्ति {भी} चुरा लेते हैं। परन्तु
दूसरे लोगों से ऐसा विचार करवाने के लिए कि वे धर्मी हैं, वे {लोगों के बीच में} लम्बे समय तक प्रार्थना करते रहते हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से उन्हें कठोर दंड
देगा!” 41बाद में, यीशु मंदिर में उन पेटियों के सामने बैठ गया, जिसमें लोग परमेश्वर के लिए दान डाला करते थे। जब वह वहाँ बैठा हुआ था, तो उसने बहुत से
लोगों को उनमें से एक पेटी में पैसे डालते देखा, और उसने ध्यान दिया कि समृद्ध लोगों ने बड़ी मात्रा में पैसे डाले हैं। 42फिर एक गरीब विधवा ने आकर उसमें
ताम्बे के दो छोटे सिक्के डाले, जो मिलकर एक रोमी अधेले के बराबर मूल्य के होते हैं। 43-44यीशु ने अपने चेलों को अपने चारों ओर इकट्ठा करके उनसे कहा,
“सच तो यह है कि उन दूसरे लोगों के पास बहुत धन है, परन्तु उन्होंने केवल उसका छोटा सा भाग ही दिया है। परन्तु इस स्त्री ने, जो बहुत गरीब है, वह सारा
धन डाल दिया है जिससे उसे अपनी आज की आवश्यकताओं के सामान के लिए भुगतान करना था। इसलिए इस गरीब विधवा ने पेटी में बाकी सबसे अधिक
पैसे डाले हैं!”

Chapter 13

1जब यीशु मंदिर में से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, देख कि दीवारों में पत्थर के ये बड़े-बड़े कटे हुए खंड कितने अद्भुत हैं,
और ये भवन कितने आश्चर्यजनक हैं!” 2यीशु ने उनसे कहा, “हाँ, ये भवन जिनको तुम देख रहे हो आश्चर्यजनक हैं{, परन्तु मैं तुम्हें उनके विषय में कुछ बताना
चाहता हूँ}। {विदेशी आक्रमणकारी} इनको पूर्ण रीति से नष्ट कर देंगे, जिसके परणामस्वरूप इस मंदिर क्षेत्र में कोई भी पत्थर दूसरे पत्थर के ऊपर नहीं छोड़ा
जाएगा।” 3जब वे मन्दिर से घाटी के पार होकर जैतून के पहाड़ पर पहुँचे, तो यीशु बैठ गया। जिस समय पतरस, याकूब, यूहन्ना, और अन्द्रियास उसके साथ
अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा, 4“हमें बता कि ये बातें कब घटित होंगी जिसकी योजना परमेश्वर ने बनाई है? हम पर यह प्रकट करने के लिए कौन सी बातें
घटित होंगी कि ये बातें होने वाली हैं?” 5यीशु ने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, “चौकस रहो कि जो कुछ घटित होने वाला है उसके विषय में कोई तुम्हें धोखा न दे! 6बहुत
से लोग आएँगे, और हर एक जन यह दावा करेगा कि वह मैं हूँ। हर एक जन अपने विषय में कहेगा, ‘मैं मसीह हूँ!’ वे बहुत से लोगों को धोखा देंगे। 7जब भी लोग
तुम्हें उन युद्धों के विषय में बताएँ जो हो रहे हैं और जो युद्ध हो सकते हैं, तो स्वयं को परेशान मत होने देना। ये बातें अवश्य ही घटित होंगी। परन्तु जब ये घटित
हों, तो यह मत सोचना कि यह संसार का अंत है! 8विभिन्न देशों में रहने वाले समूह आपस में लड़ेंगे, और विभिन्न सरकारें भी आपस में लड़ेंगी। विभिन्न स्थानों में
भूकम्प आएँगे और अकाल पड़ेंगे। तब पर भी जब ये बातें घटित होंगी, उस समय लोगों ने कष्ट उठाना अभी आरम्भ ही किया होगा। ये पहली बातें जिनको वे
सहते हैं, वे उस पहली पीड़ा के समान होंगी जो एक स्त्री को तब होती है जब वह एक बच्चे को जन्म देने वाली होती है। इसके बाद वे और भी अधिक पीड़ित
होंगे। 9उस समय लोग तुम्हारे साथ जो करेंगे उसके लिए तैयार रहो। क्योंकि तुम मुझ पर विश्वास करते हो, इसलिए वे तुम्हें बंदी बनाकर धार्मिक महासभाओं के
सामने तुम पर मुकद्दमा चलाएँगे। अन्य लोग तुम्हें यहूदी सभास्थल में पीटेंगे। उच्च सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति में लोग तुम पर मुकद्दमा चलाएँगे। जिसके
परिणामस्वरूप, तुम उन्हें मेरे विषय में बताने पाओगे। 10इससे पहले कि परमेश्वर ने जो योजना बनाई है वह उसे पूरा करे, मेरे अनुयायियों को सब जातियों के
लोगों को सुसमाचार सुनाना है। 11जब लोग तुम पर मुकद्दमा चलाने के लिए तुम्हें बंदी बनाएँ, तो यह चिंता मत करना कि तुम क्या बोलोगे। बजाए इसके, जो
परमेश्वर उस समय तुम्हारे मन में डालता है वही बोलना। उस समय बोलने वाले केवल तुम नहीं होगे। वह पवित्र आत्मा ही होगा जो तुम्हारे द्वारा बातें करेगा।
12{दूसरी बुरी बातें जो घटित होंगी:} जो लोग मुझ पर विश्वास नहीं करते, वे अपने भाई-बहनों को बंदी बनाने में दूसरे लोगों की सहायता करेंगे, ताकि सरकार
उन्हें मृत्युदंड दे। कुछ माता-पिता अपने बच्चों को धोखा देंगे और कुछ बच्चे अपने माता-पिता को धोखा देंगे ताकि सरकारी अधिकारी उनके माता-पिता की
हत्या कर दें। 13बहुत से लोग तुम से इसलिए बैर रखेंगे क्योंकि तुम मुझ पर विश्वास करते हो। परन्तु परमेश्वर तुम सब को जो मुझ पर दृढ़ता से भरोसा रखते हैं
बचाएगा {जब तक कि तुम्हारे जीवन का अंत न हो}। 14उस समय के दौरान वह घृणित वस्तु मंदिर में प्रवेश कर जाएगी। वह मंदिर को अशुद्ध कर देगी और उसे
त्याग देने के लिए लोगों को प्रेरित करेगी। जब तुम उसे वहाँ देखो जहाँ उसे नहीं होना चाहिए, तो शीघ्रता से भाग जाना! (जो भी व्यक्ति इस पढ़े वह इस चेतावनी
पर ध्यान दे!) उस समय जो लोग यहूदिया जिले में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। 15जो लोग अपने घरों से बाहर हों, वे कुछ लेने के लिए अपने घरों में प्रवेश न

करें। 16जो खेत में काम कर रहे हों, वे अतिरिक्त कपड़े लेने के लिए अपने घरों को न लौटें। 17जब ऐसा घटित होता है, तो गर्भवती स्त्रियों और जो अपने बच्चों
को दूध पिलाती होंगी इनके लिए यह क्या ही भयानक बात होगी। 18-19उन दिनों में लोग बहुत भारी दुःख उठाएँगे। जिस समय परमेश्वर ने सबसे पहले संसार
की सृष्टि की थी, तब से लेकर अब तक लोगों ने कभी इस प्रकार का दुःख नहीं उठाया, और न ही फिर कभी लोग इस प्रकार से दुःख उठाएँगे। इसलिए प्रार्थना
करो कि यह पीड़ादायक समय सर्दियों में घटित न हो{, जब यात्रा करना कठिन होगा}। 20यदि परमेश्वर ने यह निश्चय न किया होता कि उस समय को घटा दे
जब लोग बहुत दुःख उठाते हैं, तो सब लोग मर जाते। परन्तु उसने उस समय तो घटाने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि उसे उन लोगों की चिंता है जिनको उसने
चुना है। 21-22उस समय लोग झूठ बोलकर कहेंगे कि वे मसीह हैं। और कुछ परमेश्वर की ओर से भविष्यद्वक्ता होने का दावा करते हुए दिखाई देंगे। उस समय
वे अनेकों प्रकार के चमत्कार दिखाएँगे। वे उन लोगों को भी धोखा देने का प्रयास करेंगे जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। इसलिए उस समय यदि कोई तुमसे कहे कि
'देखो, मसीह यहाँ है!', या फिर कोई कहे कि 'देखो, वह वहाँ पर है!', तो इस पर विश्वास न करना! 23सचेत रहो! यह स्मरण रखो कि मैंने इन सब बातों के होने से
पहले ही तुम्हें चेतावनी दे दी है! 24उस समय के बाद जब लोग इस प्रकार से दुःख उठाएँगे, तब परमेश्वर सूर्य को अंधियारा कर देगा और चंद्रमा का प्रकाश न
रहेगा; 25परमेश्वर आकाश के तारों को गिरा देगा, और आकाश की सब वस्तुएँ अपने स्थान से हिलाई जाएँगी। 26तब लोग मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को,
सामर्थी रूप से और प्रतापी रूप से बादलों पर आते हुए देखेंगे। 27तब मैं अपने स्वर्गदूतों को भेजूँगा कि वे उन लोगों को पृथ्वी के दूर-दूर के स्थानों से इकट्ठा करें
जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। 28अब मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात से कुछ सीखो कि अंजीर का पेड़ कैसे बढ़ता है। जब उसकी डालियाँ कोमल हो जाती हैं और पत्ते
निकलने लगते हैं तब तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट ही है। 29उसी प्रकार से, जब तुम उन बातों को घटित होते देखो जिनका मैंने अभी वर्णन किया है,
तब तुम जान लोगे कि मेरे लौटने का समय बहुत निकट है। यह ऐसा होगा कि मानो मैं द्वार पर ही हूँ। 30इस बात को ध्यान में रखो: जब तक ये सब बातें पूरी न
हो लें तब तक यह पीढ़ी न मरेगी। 31{तुम निश्चित हो सकते हो कि ये बातें घटित होंगी जिनकी मैंने भविष्यद्वाणी की है।} पृथ्वी और जो कुछ आकाश में हैं वे
एक दिन नाश हो जाएँगे, परन्तु ये बातें जो मैंने तुमसे कही हैं निश्चित रूप से घटित होंगी। 32परन्तु उस ठीक-ठीक समय को कोई नहीं जानता जब मैं वापस
लौटूँगा। स्वर्ग के दूत भी नहीं जानते। यहाँ तक कि मैं, अर्थात परमेश्वर का पुत्र भी नहीं जानता। केवल मेरा पिता जानता है। 33इसलिए तैयार रहो! हमेशा सचेत
रहो और प्रार्थना करते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं कब वापस लौटूँगा! 34यह इस बात के समान ही होगा। दूर देश जाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति
जब अपने घर से निकलने पर होता है, तो वह अपने दासों से कहता है कि घर का प्रबंध उन्हें करना है। वह हर एक दास को बताता है कि उसे क्या करना है।
फिर वह द्वारपाल से कहता है कि वह उसकी वापसी के लिए तैयार रहे। 35उस मनुष्य को हमेशा तैयार रहना है, क्योंकि वह नहीं जानता कि उसका स्वामी शाम
को, आधी रात को, भोर में जब मुर्गा बांग दे, या सुबह में आकाश में सूर्य का प्रकाश दिखाई देने के बाद लौटेगा। उसी प्रकार से, तुम को भी हमेशा तैयार रहना
है, क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं कब लौटूँगा। 36कहीं ऐसा न हो कि जब मैं अचानक से लौटूँ, तो पाऊँ कि तुम तैयार नहीं हो! 37ये बातें जो मैं तुम चेलों से कह
रहा हूँ वह मैं सबसे कह रहा हूँ: हमेशा तैयार रहो!"

Chapter 14

1यह केवल उससे दो दिन पहले का समय था जब लोग सप्ताहभर चलने वाले उस पर्व को मनाना आरम्भ करेंगे जिसे वे फसह का पर्व कहते थे। उन्हीं दिनों में वे
एक पर्व और मनाते थे जिसे वे अख़मीरी रोटी का पर्व कहते थे। प्रधान याजक और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्य योजना बना रहे थे कि वे यीशु को धोखे
से कैसे बंदी बनाएँ। वे रोमी अधिकारियों के सामने उस पर दोष लगाना चाहते थे ताकि वे उसे मृत्युदंड दें। 2वे आपस में कह रहे थे, "हमें पर्व के समय में ऐसा
नहीं करना चाहिए, क्योंकि यदि हम ऐसा करेंगे तो लोग हम पर क्रोधित हो जाएँगे और वे दंगा मचा देंगे!" 3यीशु बैतनिय्याह गाँव में शमौन के घर में अतिथि था
जिसे पहले कोढ़ था। जिस समय वे भोजन कर रहे थे तब एक स्त्री यीशु के पास आई। वह एक पत्थर का बर्तन लिए हुए थी जिसमें मूल्यवान, सुगंधित इत्र भरा
हुआ था, जो मूल्यवान, सुगंधित जटामांसी से बना था। उसने उस बर्तन को खोलकर सारा सुगंधित इत्र यीशु के सिर पर उंडेल दिया। 4वहाँ पर उपस्थित कुछ
लोगों ने क्रोधित होकर मन ही मन कहा, "यह तो भयानक बात है कि इस स्त्री ने उस सुगंधित इत्र को बर्बाद कर दिया! 5उसे तो एक वर्ष की मजदूरी को दाम में
बेचा जा सकता था और फिर वह पैसा गरीब लोगों को दिया जा सकता था!" उन्होंने उसे झिड़का। 6परन्तु यीशु ने कहा, "उसे डांटना बंद करो! उसने मेरे साथ
वही किया है जो मैं उचित समझता हूँ। इसलिए तुम्हें उसे परेशान नहीं करना चाहिए! 7तुम्हारे बीच में गरीब हमेशा रहेंगे। इसलिए तुम जब चाहो तब उनकी
सहायता कर सकते हो। परन्तु मैं यहाँ तुम्हारे साथ अधिक समय तक नहीं रहूँगा। 8{यह उचित है कि} जो वह कर सकती थी उसने वही किया। यह ऐसा है कि
मानो वह जानती थी कि मैं शीघ्र ही मरने वाला हूँ और उसने मेरी देह को गाड़े जाने के लिए अभिषेक किया है। 9मैं तुमसे यह कहूँगा: समूचे संसार में मेरे
अनुयायी जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार करेंगे, वे यह भी बताएँगे जो उसने किया है, और लोग उसे स्मरण रखेंगे।" 10फिर यहूदा इस्करियोती प्रधान याजकों के
पास यीशु को पकड़ने में उनकी सहायता करने के लिए बातचीत करने गया। {उसने ऐसा किया भले ही} वह 12 चेलों में से एक था। 11जब प्रधान याजकों ने
सुना कि वह उनके लिए क्या करने को तैयार है, तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने वादा किया कि वे बदले में उसे पैसा देंगे। यहूदा सहमत हो गया, और यीशु को
उन्हें सौंपने का अवसर ढूँढ़ने लगा। 12पर्व के पहले दिन जिसे वे अख़मीरी रोटी का पर्व कहते थे, जब वे फसह के लिए मेम्नों को बलि करते थे, तब यीशु के
चेलों ने उससे कहा, "तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर फसह के पर्व के लिए भोजन तैयार करें ताकि हम उसे खाएँ?" 13अतः यीशु ने सब कुछ तैयार करने के
लिए अपने दो चेलों का चुनाव किया। उसने उनसे कहा, "यरूशलेम नगर में जाओ। तुम एक व्यक्ति से मिलोगे जो पानी से भरा एक घड़ा उठाए होगा। उसके
पीछे-पीछे जाना। 14जब वह एक घर में प्रवेश करे, तो उस घर के स्वामी से कहा, 'हमारा गुरु चाहता है कि हम फसह के पर्व का भोजन तैयार करें, ताकि वह
हमारे अर्थात उसके चेलों के साथ उसे खाए। कृपया हमें वह कमरा दिखा दो।' 15वह तुम्हें एक बड़ा कमरा दिखाएगा जो घर की ऊपरी मंजिल पर है। उसमें दरी,
खाने के सोपान, और खाने की मेज होगी, और वह हमारे लिए तैयार होगा कि हम उसमें भोजन खाएँ। तब वहाँ हमारे लिए भोजन तैयार करना।" 16अतः वे
दोनों चेले चले गए। उन्होंने नगर में जाकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा उसने उनसे कहा था। फिर उन्होंने फसह के पर्व के लिए भोजन तैयार किया। 17जब
शाम हुई, तो यीशु 12 चेलों के साथ उस घर में पहुँचा। 18जब वे सब मेज के पास बैठे हुए भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, "इस बात को ध्यान लगाकर सुनो:
तुम में से एक मेरे शत्रुओं को मुझे पकड़ने में सक्षम करेगा। वह तुम में से ही एक है जो इस समय मेरे साथ भोजन कर रहा है!" 19चेले बहुत उदास हो गए, और

एक के बाद एक, हर एक ने यीशु से कहा, “निश्चय ही वह मैं नहीं हूँ जो तुझे पकड़वाएगा, सही है न?” 20तब उसने उनसे कहा, “वह तुम 12 चेलों में से ही एक
है, जो मेरे साथ थाली में रखी चाशनी में रोटी डुबो रहा है। 21यह निश्चित है कि मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र, मर जाऊँ, क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं ने मेरे विषय में यही
लिखा है। परन्तु उस मनुष्य के लिए भयानक दंड होगा जो मुझे पकड़ने में मेरे शत्रुओं की सहायता करेगा! बल्कि, उस मनुष्य के लिए अच्छा तो यह होता कि
उसने कभी जन्म ही न लिया होता!” 22जिस समय वे भोजन कर रहे थे, तब उसने एक चपटी रोटी लेकर उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर उसने
उसे तोड़कर उन्हें दिया और उनसे कहा, “यह रोटी मेरी देह है। इसे लो और खा लो।” 23उसके बाद, उसने दाखरस से भरा कटोरा लेकर उसके लिए परमेश्वर का
धन्यवाद किया। फिर उसने उसे अपने चेलों को दिया और उन सबने उस कटोरे में से पिया। 24यीशु ने अपने चेलों से कहा, “यह दाखरस मेरा लहू है, जो मेरी देह
से बहने वाला है, जब मेरे शत्रु मुझे मार डालेंगे। इस लहू के द्वारा मैं उस वाचा को दृढ़ करूँगा, जो परमेश्वर ने बहुत से लोगों के पापों को क्षमा करने के लिए
बांधी थी। 25मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो: मैं अब उस समय तक दाखरस नहीं पीऊँगा, जब तक कि मैं उसे फिर से तब न पीऊँ, जब परमेश्वर राजा होकर
सब जगह शासन करता है।” 26उनके परमेश्वर की स्तुति में एक गीत गाने के बाद, यीशु और उसके चेले जैतून के पहाड़ की ओर चले गए। 27जब वे अपने मार्ग
ही में थे, तो यीशु ने अपने चेलों से कहा, “जकर्याह भविष्यद्वक्ता ने पवित्रशास्त्र में लिखा है जो परमेश्वर ने मेरे विषय में कहा है, ‘मैं चरवाहे की हत्या कर दूँगा
और उसकी भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगीं।’ ये शब्द सच हो जाएँगे। तुम सब मुझे छोड़कर भाग जाओगे। 28परन्तु जब परमेश्वर मुझे फिर से जीवित कर देगा, तो
मैं तुमसे पहले गलील जिले को जाऊँगा और तुमसे वहीं मिलूँगा।” 29पतरस ने यीशु से कहा, “सम्भवतः बाकी सब चेले तुझे छोड़ भी दें, परन्तु मैं नहीं छोड़ूँगा! मैं
तुझे नहीं छोड़ूँगा!” 30तब यीशु ने पतरस से कहा, “सच तो यह है कि आज ही की रात, मुर्गे के दो बार बांग देने से पहले, तू स्वयं ही मेरे विषय में कहेगा कि तू
मुझे नहीं जानता। ” 31परन्तु पतरस ने दृढ़तापूर्वक प्रतिउत्तर दिया, “यहाँ तक कि यदि वे मेरी हत्या भी कर दें, मैं कभी नहीं कहूँगा कि मैं तुझे नहीं जानता।”
और बाकी के सब चेलों ने भी यही बात बोली। 32यीशु और उसके चेले उस स्थान पर गए जिसे लोग गतसमनी कहते थे। यीशु ने अपने कुछ चेलों से कहा, “जब
तक मैं प्रार्थना करूँ, तब तक तुम यहीं ठहरो!” 33उसने अपने साथ पतरस, याकूब, और यूहन्ना को लिया। यीशु अत्यंत भावनात्मक रूप से व्याकुल हो गया।
34उसने उनसे कहा, “मैं बहुत उदास हूँ। यह ऐसा है कि मानो मैं मरने वाला हूँ। तुम लोग यहीं ठहरो और जागते रहो!” 35यीशु ने थोड़ा आगे जाकर स्वयं को
भूमि पर गिरा दिया। फिर उसने प्रार्थना की कि यदि सम्भव हो, तो उसे दुःख न उठाना पड़े। 36उसने कहा, “हे मेरे पिता, क्योंकि तू सब कुछ करने में सक्षम है,
इसलिए मुझे बचा, ताकि मुझे अब दुःख न उठाना पड़े! परन्तु जो मैं चाहता हूँ वह मत कर। बजाए इसके, जो तू चाहता है वही कर!” 37फिर यीशु उस स्थान में
लौट आया जहाँ उसने पतरस, याकूब, और यूहन्ना को छोड़ा था। उसने उन चेलों को सोता हुआ पाया। उसने उन्हें जगाया और पतरस से, जिसे शमौन भी कहते
हैं, कहा, “हे शमौन! मैं निराश हूँ कि तुम सो गए, और यह कि तुम थोड़े समय के लिए भी न जाग पाए!” 38{और यीशु ने उनसे कहा,} “जो मैं कहता हूँ तुम उसे
करना तो चाहते हो, परन्तु तुम में पर्याप्त सामर्थ्य नहीं है। जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, ताकि जब तुम परीक्षा में पड़ो तो तुम विरोध कर सको!” 39तब
उसने जाकर फिर से वही प्रार्थना की जो उसने पहले की थी। 40जब यीशु लौटकर आया, तो उसने पाया कि वे फिर से सो रहे हैं; वे नींद से इतने बोझिल थे कि
वे अपनी आँखें भी खुली नहीं रख पा रहे थे। क्योंकि वे शर्मिन्दा थे, इसलिए जब उसने उनको जगाया तो वे नहीं जानते थे कि उससे क्या कहें। 41तब यीशु ने
जाकर एक बार फिर से प्रार्थना की। वह तीसरी बार लौटकर आया और उन्हें फिर से सोता हुआ पाया। उसने उनसे कहा, “मैं निराश हूँ कि तुम फिर से सो रहे
हो! तुम पर्याप्त रूप से सो चुके हो। मेरे लिए दुःख उठाने का समय आरम्भ होने वाला है। देखो! कोई व्यक्ति मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को पकड़ने के लिए पापी
मनुष्यों को सक्षम करने वाला है। 42इसलिए उठो! आओ हम चलें! देखो! वह यहीं है जो मुझे पकड़ने के लिए उन्हें सक्षम कर रहा है!” 43जिस समय यीशु यह
बोल ही रहा था, यहूदा आ पहुँचा। भले ही वह 12 चेलों में से एक था, परन्तु वह यीशु को पकड़ने में उसके शत्रुओं को सक्षम करने आया था। उसके साथ
लाठियाँ और तलवारें लिए हुए एक भीड़ भी थी। उन लोगों को यहूदी महासभा के अगुवों ने भेजा था। 44यहूदा ने, जो यीशु के शत्रुओं की उसे पकड़ने में
सहायता कर रहा था, उस भीड़ से पहले ही कह दिया था, “जिस व्यक्ति को मैं चूम लूँ, वह वही है जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो। जब मैं उसे चूम लूँ, तो उसे पकड़ लेना,
और सावधानी से उसकी पहरेदारी करते हुए उसे ले जाना।” 45अतः, जब यहूदा पहुँचा, तो उसने तुरन्त यीशु के पास आकर कहा, “हे मेरे गुरु!” फिर उसने यीशु
को चूम लिया। 46उसके बाद भीड़ ने यीशु को पकड़कर बंदी बना लिया। 47परन्तु उसके एक चेले ने, जो पास ही खड़ा था, अपनी तलवार निकाल ली। उसने
उससे महायाजक के दास पर वार किया, परन्तु वह केवल उस दास का कान ही काट पाया। 48यीशु ने उनसे कहा, “यह आश्चर्य की बात है कि तुम यहाँ मुझे
बंदी बनाने के लिए तलवारें और लाठियाँ लेकर आए हो, कि मानो मैं कोई डाकू हूँ। 49मैं तो कई दिनों तक मंदिर के आंगन में लोगों को शिक्षा देते हुए तुम्हारे
साथ ही था। उस समय तुमने मुझे बंदी बनाने का प्रयास क्यों नहीं किया? परन्तु यह इसलिए घटित हुआ है कि जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में मेरे
विषय में लिखा है, वह घटित हो।” 50तब यीशु के सब चेले उसे छोड़कर भाग गए। 51उस समय एक जवान पुरुष यीशु के पीछे-पीछे चल रहा था। उसने अपने
शरीर पर केवल एक सनी का वस्त्र ही पहना हुआ था। उस भीड़ ने उस जवान पुरुष को पकड़ लिया, 52परन्तु, जैसे ही उसने स्वयं को उनकी पकड़ से खींचा,
उसका सनी का वस्त्र उनके हाथों में ही रह गया, और फिर वह नंगा ही भाग गया। 53जिन मनुष्यों ने यीशु को पकड़ा था, वे उसे उस घर में ले गए, जहाँ
महायाजक रहता था। यहूदी महासभा के सभी सदस्य वहाँ इकट्ठा थे। 54पतरस एक दूरी बनाकर यीशु के पीछे-पीछे गया। वह उस घर के आंगन में गया जहाँ
महायाजक रहता था, और वह वहाँ महायाजक के घर के पहरेदारों के साथ बैठ गया। वह आग के पास स्वयं को गर्म कर रहा था। 55प्रधान याजकों और यहूदी
महासभा के बाकी सदस्यों ने ऐसे लोगों को खोजने का प्रयास किया जो यीशु के विषय में झूठ बोल सकें ताकि वे रोमी अधिकारियों को उसे मृत्युदंड देने के लिए
सहमत कर सकें। वे इसमें सफल नहीं हो पाए। 56बड़ी संख्या में लोगों ने यीशु के विषय में झूठ बोला, परन्तु जो बातें उन्होंने बोलीं वे आपस में मेल नहीं खाती
थीं। 57अंत में, कुछ लोग खड़े हुए और यह कहकर यीशु पर झूठा दोष लगाया, 58“हमने उसे ऐसा कहते हुए सुना था, ‘मैं मनुष्यों के द्वारा बनाए हुए इस मंदिर
को ढा दूँगा, और फिर तीन दिन में किसी की सहायता के बिना मैं दूसरा मंदिर बना दूँगा।’” 59परन्तु इन मनुष्यों ने जो कहा, वह उनमें से बाकी लोगों द्वारा कही
गई बातों से मेल नहीं खाता था। 60तब महायाजक आप ही उनके सामने खड़ा हुआ, और यीशु से कहा, “जो कुछ उन्होंने कहा, क्या तू उसका प्रतिउत्तर न देगा?
जिन सब बातों को वे तुझ पर दोष लगाने के लिए कह रहे हैं, उनके विषय में तू क्या कहता है?” 61परन्तु यीशु चुप ही रहा, और कोई प्रतिउत्तर नहीं दिया। तब
महायाजक ने फिर से प्रयास किया। उसने उससे पूछा, “क्या तू ही मसीह है? क्या तू ऐसा कहता है कि तू ही परमेश्वर का पुत्र है?” 62यीशु ने कहा, “मैं ही हूँ।
इसके अलावा, तुम मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को, पूर्ण रूप से सामर्थी परमेश्वर के बगल में शासन करते हुए देखोगे। तुम मुझे आकाश के बादलों में से नीचे
उतरते हुए भी देखोगे!” 63यीशु की बातों की प्रतिक्रिया में, विरोध जताने के लिए महायाजक ने अपना बाहरी वस्त्र फाड़कर कहा, “हमें निश्चय ही अब इस मनुष्य
के विरोध में साक्षी देने के लिए और गवाहों की आवश्यकता नहीं है! 64तुमने उसके परमेश्वर होने के निन्दात्मक दावे को सुन लिया है!” वे सब के सब इस बात

पर सहमत हो गए कि यीशु दोषी है और मृत्युदंड के योग्य है। 65उसके बाद उनमें से कुछ लोग उस पर थूकने लगे। उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी, और फिर वे उसे मारने लगे, और उससे कहने लगे, “यदि तू भविष्यद्वक्ता है, तो हमें बता कि तुझे किसने मारा!” और जो लोग यीशु की पहरेदारी कर रहे थे उन्होंने उसे हाथों से मारा। 66जिस समय पतरस महायाजक के घर के बाहर आंगन में था, तो महायाजक के लिए काम करने वाली लड़कियों में से एक उसके पास आई। 67जब उसने पतरस को आग के पास स्वयं को गर्म करते हुए देखा, तो उसने उसे बड़े ध्यान से देखा। फिर उसने कहा, “तू भी तो नासरत नगर के रहने वाले उस पुरुष यीशु के साथ था!” 68परन्तु पतरस ने यह कहकर इस बात से इन्कार कर दिया, “मैं नहीं जानता या मुझे समझ नहीं आ रहा कि तू किस बारे में बात कर रही है!” फिर वह वहाँ से हटकर आंगन के फाटक के पास चला गया। 69वह दासी उसे वहाँ देखकर फिर से उन लोगों से बोली जो निकट ही खड़े थे, “यह मनुष्य उन्हीं में से एक है जो उस व्यक्ति के साथ थे जिसे उन लोगों ने बंदी बनाया है।” 70परन्तु उसने फिर से इन्कार कर दिया। थोड़ी देर के बाद, जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने फिर से पतरस से कहा, “{जिस तरीके से तू बात कर रहा है उससे प्रकट होता है कि} तू भी गलील जिले का रहने वाला है। इसलिए यह पक्का है कि तू भी उन मनुष्यों में से एक है जो यीशु के संगी थे!” 71परन्तु वह कहने लगा, “जिस मनुष्य के बारे में तुम बात कर रहे हो मैं उसे नहीं जानता! क्योंकि परमेश्वर जानता है कि मैं सच बोल रहा हूँ, और यदि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो वह मुझे दंड दे!” 72ठीक उसी समय पर मुर्गे ने दूसरी बार बांग दी। तब पतरस को वह बात स्मरण आई जो यीशु ने उससे पहले ही कह दी थी, “मुर्गे के दूसरी बार बांग देने से पहले, तू तीन बार इस बात का इन्कार करेगा कि तू मुझे जानता है।” जब पतरस को मालूम हुआ कि वह यीशु का तीन बार इन्कार कर चुका है, तो वह अत्यंत उदास हो गया। पतरस रोने लगा।

Chapter 15

1सुबह में बड़ी भोर को प्रधान याजक और यहूदी महासभा के सदस्य इस बात को निर्धारित करने के लिए एक साथ इकट्ठे हुए कि रोमी राज्यपाल के सामने यीशु पर कैसे दोष लगाएँ। उनके पहरेदारों ने यीशु के हाथ बांध दिए। वे उसे पिलातुस राज्यपाल के निवास पर ले गए। 2पिलातुस ने यीशु से पूछा, “क्या तू ऐसा कहता है कि तू यहूदियों का राजा है?” यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू स्वयं ही ऐसा कहता है।” 3तब प्रधान याजकों ने दावा किया कि यीशु ने बहुत से बुरे काम किए हैं। 4इसलिए पिलातुस ने उससे फिर पूछा, “क्या तुझे कुछ नहीं बोलना? सुन कि वे लोग तेरे द्वारा किए गए कितने सारे बुरे कामों के विषय में बोल रहे हैं!” 5परन्तु {भले ही यीशु दोषी नहीं था,} उसने और कुछ भी नहीं कहा। जिसका परिणाम यह हुआ कि पिलातुस को बहुत अचम्भा हुआ। 6अब राज्यपाल की यह रीति थी कि वह प्रतिवर्ष फसह के पर्व के समय में बंदीगृह में से एक व्यक्ति को स्वतंत्र करता था। वह रीति के अनुसार उस बंदी को स्वतंत्र कर देता था जिसके लिए लोग निवेदन करते थे। 7उस समय पर वहाँ एक बरअब्बा नाम का व्यक्ति था {जिसे सैनिकों ने} कुछ और मनुष्यों के साथ बंदीगृह में डाला हुआ था। उन मनुष्यों ने रोमी सरकार के खिलाफ विद्रोह के दौरान कुछ सैनिकों की हत्या कर दी थी। 8एक भीड़ ने पिलातुस के पास जाकर उससे किसी व्यक्ति को स्वतंत्र करने की विनती की, ठीक उसी प्रकार से जैसे उसने पहले भी फसह के पर्व के दौरान उनके लिए इस रीति के अनुसार किया था। 9पिलातुस ने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, “क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए उस मनुष्य को स्वतंत्र कर दूँ जिसे तुम यहूदी लोग अपना राजा कहते हो?” 10उसने ऐसा इसलिए पूछा क्योंकि वह जान गया था कि प्रधान याजक क्या करना चाह रहे थे। वे यीशु पर इसलिए दोष लगा रहे थे क्योंकि वे उससे ईर्ष्या करते थे {क्योंकि बहुत सारे लोग उसके चेले बन रहे थे}। 11परन्तु प्रधान याजकों ने भीड़ से आग्रह किया कि वे पिलातुस से निवेदन करें कि वह यीशु के बजाए बरअब्बा को स्वतंत्र कर दे। 12एक बार फिर से, पिलातुस ने उनसे कहा, “यदि मैं बरअब्बा को स्वतंत्र करूँ, तो तुम क्या चाहते हो जो मैं इस मनुष्य के साथ करूँ, जिसे तुम में से कुछ यहूदी अपना राजा कहते हैं?” 13तब वे फिर से चिल्लाए, “अपने सैनिकों को उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दे!” 14तब पिलातुस ने उनसे कहा, “क्यों? उसने क्या अपराध किया है?” परन्तु वे और भी ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगे, “अपने सैनिकों को उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दे!” 15क्योंकि पिलातुस भीड़ को प्रसन्न करना चाहता था, इसलिए उसने उनके लिए बरअब्बा को स्वतंत्र कर दिया। उसके बाद, उसके सैनिकों ने यीशु को चमड़े की पट्टियों से कोड़े मारे, जिन पर उन्होंने धातु और हड्डी के टुकड़े बांधे हुए थे। पिलातुस ने सैनिकों आदेश दिया कि वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जाएँ। 16पिलातुस के सैनिक यीशु को उस महल के आंगन में ले गए जहाँ पिलातुस रहता था। वह स्थान सरकारी मुख्यालय था। तब उन्होंने सैनिकों के पूरे दल को बुलवा लिया जो वहाँ तैनात थे। 17जब सब सैनिक एक साथ इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने यीशु को एक बैंगनी लबादा पहना दिया। उसके बाद उन्होंने उसके सिर पर एक मुकुट रखा, जिसे उन्होंने कंटीली झाड़ियों की टहनियों से बुना था। {उन्होंने इन कामों को उसका उपहास करने और इस बात का ढोंग करने के लिए किया कि वे उसे राजा समझते हैं।} 18तब फिर से उसका उपहास करने के लिए उन्होंने उसे यह कहकर ऐसे नमस्कार किया जैसे वे किसी राजा को नमस्कार करते हैं, “उस राजा की जय हो, जो यहूदियों पर शासन करता है!” 19उन्होंने एक भारी सरकंडे से उसके सिर पर बार-बार मारा, और उस पर थूका। उसका सम्मान करने का ढोंग करने के लिए वे उसके सामने घुटने टिकाकर बैठ गए। 20जब वे उसका उपहास करना समाप्त कर चुके, तो उन्होंने उसका बैंगनी लबादा उतार लिया। उन्होंने उसे उसके ही कपड़े पहना दिए, और फिर वे उसे क्रूस पर ठोंकने के लिए नगर के बाहर ले गए। 21जब यीशु अपना क्रूस उठाकर थोड़ी दूर गया, तो कुरेनी नगर का रहने वाला शमौन नाम का एक व्यक्ति आया। वह सिकंदर और रुफुस का पिता था। जब वह अपने घर को लौट रहा था तो वह नगर के बाहर से होकर जा रहा था। सैनिकों ने शमौन को यीशु की सहायता करने के लिए क्रूस उठाने हेतु विवश किया, क्योंकि यीशु के साथ उनके द्वारा किए गए सारे बुरे बर्तावों से वह थक गया था। 22सैनिक उन दोनों को एक स्थान पर लेकर गए जिसे वे गुलगुता कहते थे। उस नाम का अर्थ है, “खोपड़ी का स्थान।” 23फिर उन्होंने यीशु को गंधरस नाम की दवा मिला हुआ दाखरस देने का प्रयास किया, परन्तु उसने वह पीने से इन्कार कर दिया। 24कुछ सैनिकों ने उसके कपड़े ले लिए। फिर उन्होंने उसे क्रूस पर ठोंक दिया। उसके बाद, उन्होंने उसके कपड़ों के लिए पासे जैसे किसी वस्तु से जुआ खेलकर आपस में उसके कपड़ों को बांट लिया। उन्होंने ऐसा इस बात को निर्धारित करने के लिए किया कि किस जन को कपड़े का कौन सा टुकड़ा मिलेगा। 25जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया तब सुबह के नौ बजे थे। 26उन्होंने क्रूस पर यीशु के सिर के ऊपर एक दोषपत्र लगाया जिस पर किसी व्यक्ति ने यह लिखा था कि वे उसे क्रूस पर क्यों चढ़ा रहे हैं। उस पर लिखा था, “यहूदियों का राजा।” 27उन्होंने दो अन्य बंदियों को भी जो डाकू थे, दूसरे क्रूसों पर ठोंक दिया। उन्होंने एक को यीशु की दाईं ओर क्रूस पर और एक को यीशु की बाईं ओर क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया। 28[और उसे डाकुओं के साथ क्रूस पर चढ़ाकर उन्होंने पवित्रशास्त्र का वह अनुच्छेद पूरा कर दिया, जो कहता है, ‘और उन्होंने उसे दुष्ट लोगों में से समझा।’] 29वहाँ से आने-जाने वाले लोगों ने उस पर अपने सिर हिला-हिलाकर उसका अपमान किया। उन्होंने कहा, “वाह! तूने तो कहा था कि तू मंदिर को ढा कर उसे फिर से तीन दिन

में बना देगा। 30यदि तू ऐसा कर सकता है, तो क्रूस पर से उतरकर स्वयं को बचा!” 31यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों के साथ प्रधान याजक भी यीशु का
उपहास करना चाहते थे। इसलिए वे एक दूसरे से कहने लगे, “लोग दावा करते हैं कि इसने दूसरों को परेशानी से छुड़ाया था, परन्तु यह तो स्वयं को भी नहीं बचा
सकता! 32इसने मसीह होने का और इस्राएली लोगों पर शासन करने वाला होने का दावा किया था। यदि इसकी बातें सच होती, तो इसे अब क्रूस पर से उतर
आना चाहिए! तब हम इसका विश्वास करेंगे!” उसकी दोनों ओर जिन दो व्यक्तियों को क्रूस पर ठोंका गया था उन्होंने भी उसे अपमानित किया। 33दोपहर होने
पर सारे देश में अंधियारा छा गया, और दोपहर के तीन बजे तक अंधकार छाया रहा। 34तीन बजे यीशु ने पुकारकर कहा, “इलाई, इलाई, लमा शबक्तनी?”
जिसका अर्थ है, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” 35वहाँ खड़े लोगों में से कुछ ने जब ‘इलाई’ शब्द सुना, तो उन्होंने इसे गलत समझा
और कहा, “सुनो! वह एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को पुकार रहा है!” 36उनमें से एक भागकर गया और खट्टे दाखरस से एक जुफा को भर लिया। उसने उसे सरकंडे
की नोक पर रखा, और फिर उसे ऊपर उठाया ताकि यीशु को उसमें का दाखरस चूसने का प्रयास करने के लिए कहे। जिस समय वह ऐसा कर ही रहा था, तो
किसी ने कहा, “प्रतीक्षा करो! देखते हैं कि एलिय्याह उसे क्रूस पर से उतारने के लिए आता है या नहीं!” 37और फिर, यीशु के ऊँचे स्वर में चिल्लाने के बाद, सांस
लेना बंद कर दिया और मर गया। 38उसी क्षण, वह भारी, मोटा पर्दा, जो मंदिर के परम पवित्र स्थान को बंद करता था, ऊपर से लेकर नीचे तक दो टुकड़ों में फट
गया। 39वह सूबेदार यीशु के सामने ही खड़ा था जो यीशु को क्रूस पर ठोंकने वाले सैनिकों की निगरानी करता था। जब उसने देखा कि यीशु कैसे मरा था, तो
उसने कहा, “निश्चित रूप से, यह यीशु परमेश्वर का ही पुत्र था!” 40-41वहाँ कुछ स्त्रियाँ भी थीं, जो इन घटित होने वाली बातों को दूर से ही देख रही थीं। वे उस
समय यीशु के साथ ही थीं, जब वह गलील जिले में था, और जिन वस्तुओं की उसे आवश्यकता थी वे उन्होंने ही उसे उपलब्ध करवाई थीं। वे और अन्य बहुत सी
स्त्रियाँ, उसके साथ यरूशलेम नगर में आई थीं। उन्हीं स्त्रियों में से एक मगदला नगर की रहने वाली मरियम भी थी। एक और मरियम थी, जो छोटे याकूब और
योसेस की माता थी। वहाँ सलोमी भी थी। 42-43जब शाम होना निकट ही था, तो अरमतिया नामक नगर का रहने वाला यूसुफ नाम का एक पुरुष वहाँ आया।
वह यहूदी महासभा का एक ऐसा सदस्य था, जिसका सब लोग आदर किया करते थे। वह उन लोगों में से भी था जो उत्सुकता से उस समय की प्रतीक्षा कर रहे
थे जब परमेश्वर अपने राजा को शासन करना आरम्भ करने के लिए भेजेगा। {वह जानता था कि यहूदी व्यवस्था के अनुसार, जिस दिन किसी व्यक्ति की मृत्यु
हुई हो, उसके शव को उसी दिन गाड़ा जाना चाहिए। उसे यह भी मालूम था कि यह तैयारी का दिन था, जिसमें लोग यहूदी विश्रामदिन के लिए सामानों को तैयार
करते थे, और यह कि सूर्य के अस्त होते ही यहूदियों का विश्रामदिन आरम्भ हो जाएगा।} अब शाम होने वाली थी। अतः साहस करके वह पिलातुस के पास
गया, और उससे यीशु के शव को क्रूस से नीचे उतारकर उसे तुरन्त गाड़ने की अनुमति मांगी। 44जब पिलातुस ने यह सुना कि यीशु मर गया है, तो वह अचम्भित
हो गया। इसलिए उसने उस सूबेदार को बुलाया जो यीशु को क्रूस पर चढ़ाने वाले सैनिकों के ऊपर प्रभारी था, और उसने उससे पूछा कि क्या यीशु मर चुका है।
45जब उस सूबेदार ने पिलातुस को बताया कि यीशु मर गया है, तो पिलातुस ने यूसुफ को शव ले जाने की अनुमति दे दी। 46जब यूसुफ ने एक सनी का वस्त्र
मोल ले लिया, तब उसने तथा दूसरे लोगों ने यीशु के शव को क्रूस पर से उतार लिया। उन्होंने उसे सनी के वस्त्र में लपेटा और एक कब्र में रख दिया जिसे पहले
से ही एक चट्टान में से काट कर बनाया गया था। उसके बाद उन्होंने उस कब्र के प्रवेशद्वार के सामने एक बड़ा सपाट पत्थर लुढ़का दिया। 47मगदला की रहने
वाली मरियम और योसेस की माता मरियम देख रहे थे कि उन्होंने यीशु के शव को कहाँ रखा है।

Chapter 16

1शनिवार की शाम को जब यहूदियों का विश्रामदिन समाप्त हो गया, तब मगदला की रहने वाली मरियम, छोटे याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने यीशु के
शव का अभिषेक करने के लिए सुगंधित लेप मोल लिए। {ये स्त्रियाँ यहूदियों की इस गाड़े जाने की प्रथा का पालन करना चाहती थीं}। 2सप्ताह के पहले दिन,
रविवार को बड़ी भोर में, सूर्य निकलने के तुरन्त बाद, वे स्त्रियाँ सुगंधित लेप लेकर कब्र पर गईं। 3मार्ग में वे एक दूसरे से पूछ रही थीं, “कब्र के द्वार को बंद करने
वाले उस भारी पत्थर को लुढ़काने में हमारी सहायता कौन करेगा?” 4वहाँ पहुँचकर उन्होंने दृष्टि उठाई और वे यह देखकर अचम्भित रह गईं कि किसी ने उस
पत्थर को लुढ़का दिया है, क्योंकि वह बहुत बड़ा था। 5उन्होंने कब्र में प्रवेश करके एक जवान पुरुष को देखा। उसने सफेद वस्त्र पहना हुआ था और वह गुफा में
दाईं ओर बैठा हुआ था। इस दृश्य ने उन्हें भयभीत कर दिया! 6उस जवान पुरुष ने उनसे कहा, “भयभीत न हों! मैं जानता हूँ कि तुम नासरत के रहने वाले उस
मनुष्य यीशु को ढूँढ़ रही हो, जिसे उन्होंने क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया था। परन्तु वह फिर से जीवित हो गया है! वह यहाँ नहीं है! देखो! यही वह स्थान है जहाँ
उन्होंने उसके शव को रखा था। 7परन्तु, यहीं ठहरने के बजाए, जाकर उसके चेलों को बताओ! विशेष रूप से, निश्चय ही तुम पतरस को बताना। उनसे कहो,
‘यीशु तुमसे पहले गलील जिले को जा रहा है, और जैसा उसने तुमसे पहले ही कह दिया था, कि तुम उससे वहाँ मिलोगे’।” 8वे स्त्रियाँ बाहर निकलकर कब्र पर से
भाग गईं। वे काँप रही थीं क्योंकि वे डरी हुई थीं, और वे विस्मित थीं। परन्तु उन्होंने इस विषय में किसी से कुछ इसलिए नहीं कहा, क्योंकि वे डरी हुई थीं।
9[सप्ताह के पहले दिन, रविवार की सुबह भोर में, जब यीशु फिर से जीवित हो गया, तब वह सबसे पहले मगदला नगर की रहने वाली मरियम को दिखाई दिया।
यह वही स्त्री है जिसमें से उसने बीते समय में सात दुष्टात्माओं को निकाला था। 10वह उन लोगों के पास गई जो यीशु के साथ थे, उस समय पर वे विलाप कर
रहे थे और रो रहे थे। जो उसने देखा था वह उसने उनको बता दिया। 11परन्तु जब उसने उनको बताया कि यीशु फिर से जीवित हो गया है और उसने उसे देखा
है, तो जो उसने कहा था उन्होंने उस बात पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया। 12उसी दिन बाद में, यीशु अपने दो चेलों को दिखाई दिया, जब वे यरूशलेम से
अपने घरों को आसपास के क्षेत्र में जा रहे थे। वे उसे शीघ्रता से पहचान नहीं पाए क्योंकि वह बहुत अलग दिख रहा था। 13{जब वे उसे पहचान गए,} तो वे दोनों
यरूशलेम को लौट गए। जो कुछ घटित हुआ था वह उन्होंने उसके अन्य अनुयायियों को बताया, परन्तु जो बात उन्होंने सुनी उस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया।
14बाद में यीशु उन ग्यारह चेलों को उस समय दिखाई दिया जब वे भोजन कर रहे थे। उसने उन्हें कड़ाई से डांटा, क्योंकि उन्होंने उन लोगों की बातों पर विश्वास
करने से इन्कार कर दिया था जिन्होंने उसे फिर से जीवित होने के बाद देखा था। 15उसने उनसे कहा, “तुम समूचे संसार में जाकर सब लोगों में शुभ संदेश का
प्रचार करो! 16जो कोई तुम्हारे संदेश पर विश्वास करता है और जो बपतिस्मा लेता है, परमेश्वर उन सब का उद्धार करेगा। परन्तु जो कोई भी तुम्हारे संदेश पर
विश्वास नहीं करता, परमेश्वर उसे दोषी ठहराएगा। 17जो लोग शुभ संदेश पर विश्वास करते हैं वे चमत्कारों को करेंगे। विशेष रूप से, मेरी सामर्थ्य के द्वारा वे
लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। वे उन भाषाओं में बात करेंगे जो उन्होंने नहीं सीखी हैं। 18जब वे किसी साँप को उठा लेंगे या कोई विषैला तरल पदार्थ पी

लेंगे, तौभी उनको हानि नहीं होगी। जिन बीमार लोगों पर वे अपने हाथ रखेंगे उनको परमेश्वर चंगा करेगा।” **19**जब प्रभु यीशु अपने चेलों से यह बातें कह चुका,
उसके बाद परमेश्वर ने उसे स्वर्ग पर उठा लिया। तब यीशु परमेश्वर की दाईं ओर अपने सिंहासन पर बैठ गया, जो उसके साथ राज्य करने के लिए सर्वोच्च प्रतिष्ठा
का स्थान है। **20**और चेले यरूशलेम से निकलकर सब स्थानों में प्रचार करने लगे। जहाँ कहीं भी वे गए, प्रभु ने उन्हें चमत्कार करने में सक्षम किया। ऐसा करके
उसने लोगों पर प्रकट किया कि परमेश्वर का संदेश सच्चा है।]

लूका

Chapter 1

1बहुत से लोगों ने पहले से ही उन बातों के विषय में लिख दिया है जो हमारे मध्य में घटित हुई थीं। 2वे उन बातों का संकलन कर रहे हैं जिनके विषय में हमें उन
लोगों ने बताया था जिन्होंने इन बातों को घटित होते हुए देखा था। वे लोग उस समय से ही वहाँ पर थे जब सब कुछ होना सर्वप्रथम आरम्भ हुआ, और तब से ही
वे उस घटना का प्रचार कर रहे हैं। 3मैंने स्वयं ही हर उस बात की सावधानीपूर्वक जाँच की है जो आरम्भ ही से घटित हुई थीं। अतः मैंने यह निर्णय लिया कि मुझे
तेरे लिए लिए भी एक सटीक ब्यौरा लिखना चाहिए। हे महामहिम, थियुफिलुस, 4मैं चाहता हूँ कि तू जान ले कि जो बातें लोगों ने तुझे यीशु के विषय में बताई हैं
वे सत्य हैं। 5जिस समय हेरोदेस यहूदिया का शासक था, वहाँ पर जकर्याह नाम का एक यहूदी याजक था। वह अबिय्याह का वंशज था, और इसी कारण से वह
मंदिर में उन अन्य याजकों के साथ सेवा करने की अपनी बारी लिया करता था जो कि अबिय्याह के ही वंशज थे। उसकी पत्नी का नाम एलीशिबा था। वह
हारून की वंशज थी {और इसलिए वह भी याजकीय वंश से सम्बन्धित थी}। 6परमेश्वर यह विचार रखता था कि वे दोनों धर्मी थे क्योंकि उन्होंने सर्वदा हर उस
बात का आज्ञापालन किया था जिसका परमेश्वर ने आदेश दिया था। 7परन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी, क्योंकि एलीशिबा सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ थी।
और अब वह और उसका पति सन्तान उत्पन्न करने के लिए बहुत वृद्ध थे। 8जकर्याह के याजकीय समूह का अपनी बारी लेने {यरूशलेम में सेवा करने} का
समय आ पहुँचा। इसलिए परमेश्वर के लिए याजक के रूप में कार्य करने हेतु जकर्याह वहाँ पर उपस्थित हुआ। 9याजकों ने प्रभु के मंदिर में जाने और वहाँ पर
धूप जलाने के लिए जकर्याह का चुनाव किया। उन्होंने उसका चुनाव अपनी सामान्य रीति, अर्थात् चिट्ठियाँ डालने के द्वारा किया {अर्थात् यह निर्धारित करना कि
किसी विशेष कार्य को करने हेतु परमेश्वर किसे चाहता था}। 10जब धूप जलाने का समय आया, तो बहुत से लोग {मंदिर के} बाहर {आँगन में} प्रार्थना कर रहे
थे। 11उसी समय पर, जकर्याह के पास परमेश्वर का स्वर्गदूत आ पहुँचा। वह वेदी के दाहिनी ओर खड़ा हो गया जहाँ पर वह धूप जला रहा था। 12जब जकर्याह
ने स्वर्गदूत को देखा, तो वह घबरा गया और भयभीत हो गया। 13परन्तु उस स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे जकर्याह, {मुझ से} डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। तू
प्रार्थना कर रहा था, और परमेश्वर तेरी प्रार्थना का उत्तर देने जा रहा है। तेरी पत्नी एलीशिबा तेरे लिए एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम यूहन्ना रखना। 14तू
अत्यन्त प्रसन्न होगा, और बहुत से अन्य लोग भी प्रसन्न होंगे जब वह जन्म लेगा। 15तू और वे इसलिए प्रसन्न होंगे क्योंकि तेरा पुत्र परमेश्वर के लिए अत्यन्त
प्रभावशाली होगा। वह कभी भी दाखरस या किसी अन्य मादक पेय को न पीए। उसके जन्म लेने से पहले से ही पवित्र आत्मा उसे प्रभावित करना आरम्भ कर
देगा। 16तेरा पुत्र बहुत से इस्राएलियों को पाप करने से रुक जाने के लिए और फिर से प्रभु उनके परमेश्वर की आज्ञा मानना आरम्भ करने के लिए सहमत कर
लेगा। 17तेरा पुत्र प्रभु के आगे आगे जाएगा, और वह अपनी आत्मा में सामर्थी होगा जिस तरह एलिय्याह भविष्यद्वक्ता था। वह माता-पिता को अपने बच्चों को
पुनः प्रेम करने के लिए प्रेरित करेगा। वह बहुत से लोगों को जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते, उसकी आज्ञा का पालन करने और बुद्धिमानी और धार्मिकता से
जीने के लिए प्रेरित करेगा। वह ऐसा इसलिए करेगा कि प्रभु के लोग उसके आने पर उसके लिए तैयार रहें।" 18तब जकर्याह ने स्वर्गदूत से कहा, "मैं कैसे
सुनिश्चित होऊँ कि जो बातें तूने कही हैं सचमुच घटित होंगी? मैं तो बहुत वृद्ध हूँ, और मेरी पत्नी भी बहुत वृद्ध है, {इसलिए मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन है
कि ये बातें घटित होंगी}।" 19फिर स्वर्गदूत ने उसको उत्तर देते हुए कहा, "मैं जिब्राएल हूँ! मैं परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा रहता हूँ! परमेश्वर ने मुझे तुझे यह
शुभ सन्देश बताने के लिए भेजा है कि तेरे साथ क्या घटित होगा। 20अब सुन! जो मैंने तुझे बताया है वह निश्चित रूप से उस समय पर घटित होगा जो परमेश्वर
ने निश्चित किया है। परन्तु क्योंकि तूने मेरे सन्देश पर विश्वास नहीं किया, इसलिए परमेश्वर तुझे बोलने से रोक देगा। तेरे पुत्र के जन्म लेने के दिन तक तू बोलने में
सक्षम नहीं होगा!" 21{जिस समय जकर्याह और स्वर्गदूत मंदिर में बातें कर रहे थे,} लोग आँगन में जकर्याह के बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने आश्चर्य
किया कि वह मंदिर में इतने लम्बे समय तक क्यों ठहरा हुआ था। 22तब वह मंदिर से बाहर निकला, परन्तु वह उनसे बात करने में सक्षम नहीं था। क्योंकि वह
बोल नहीं सकता था, उसने अपने हाथों से संकेत करके यह समझाने का प्रयास किया कि क्या हुआ था। इससे लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि जिस समय पर
वह मंदिर के भीतर था उसने परमेश्वर की ओर से कोई दर्शन देखा है। 23जब जकर्याह ने उस समय को समाप्त कर लिया जिसमें उसे मंदिर में याजक के रूप में
कार्य करना आवश्यक था, उसने यरूशलेम को छोड़ दिया और अपने घर को वापस लौट गया। 24इसके कुछ समय के पश्चात, उसकी पत्नी, एलीशिबा, गर्भवती
हो गई, और वह पाँच महीने तक बाहर लोगों में नहीं गई। उसने स्वयं से कहा, 25"प्रभु ने मुझे गर्भवती होने के लिए सक्षम किया है। इस रीति से, उसने अपनी
अनुकम्पा को मुझ पर प्रकट किया है। उसका धन्यवाद हो, अब मुझे अन्य लोगों के सामने और अधिक लज्जित नहीं होना पड़ेगा।" 26जब एलीशिबा छः महीने
की गर्भवती थी, परमेश्वर ने जिब्राएल स्वर्गदूत को गलील प्रान्त के नासरत नाम के एक नगर में भेजा। 27परमेश्वर ने उसे वहाँ एक कुँवारी से बात करने के लिए
भेजा जिसका नाम मरियम था। {उसके माता-पिता ने यह वायदा किया हुआ था कि} वह यूसुफ नाम के एक पुरुष से विवाह करेगी, जो कि राजा दाऊद का
वंशज था। 28जहाँ पर मरियम थी स्वर्गदूत आया और उससे कहा, "नमस्कार, हे आशीषित! तू परमेश्वर के लिए अत्यन्त विशिष्ट है!" 29परन्तु जब उसने यह
कहा, तो वह असमंजस में पड़ गई। उसे यह समझने का प्रयास करना पड़ा कि इस अभिवादन का क्या अर्थ हो सकता है। 30तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे
मरियम, परमेश्वर तुझे आशीषित करने की इच्छा रखता है, इसलिए भयभीत न हो! 31अब सुन। तू गर्भवती होगी, और तू एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम
यीशु रखना। 32वह महान होगा, और वह परम प्रधान परमेश्वर का पुत्र होगा। परमेश्वर प्रभु उसे अपने लोगों पर राजा बनाएगा, जैसे उसका पूर्वज दाऊद था।
33वह इस्राएल के लोगों पर सदैव राजा बना रहेगा। वह उन पर सर्वदा शासन करेगा!" 34तब मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "परन्तु मैं एक कुँवारी हूँ। तो यह कैसे
हो सकता है?" 35स्वर्गदूत ने उत्तर देकर कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा। परम प्रधान परमेश्वर की सामर्थ तुझ पर पड़ने वाली छाया के समान होगी।
इसलिए जिस बालक को तू जन्म देगी वह पवित्र होगा। वह परमेश्वर का पुत्र होगा। 36यह भी सुन ले। तेरी कुटुम्बिनी एलीशिबा भी गर्भवती है, और वह एक पुत्र
को प्राप्त करने वाली है। क्योंकि वह बहुत वृद्ध है, लोगों ने सोचा था कि वह सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती है। परन्तु इस समय पर वह लगभग छः महीने की
गर्भवती है। 37इसलिए तू देख, कि परमेश्वर कुछ भी कर सकता है!" 38तब मरियम ने कहा, "ठीक है। मैं प्रभु की आज्ञा का पालन करने की इच्छुक हूँ। परमेश्वर

उन बातों को कर सकता है जिनका मेरे साथ घटित होने का वर्णन तूने किया है।” तब वह स्वर्गदूत उसके पास से चला गया। 39इसके तुरन्त पश्चात ही, मरियम
तैयार हो गई और जितना शीघ्र उससे हो सका उस नगर के लिए यात्रा की जो यहूदिया के पहाड़ी इलाकों में था, जहाँ पर जकर्याह रहता था। 40उसने जकर्याह
के घर में प्रवेश किया और उसकी पत्नी, एलीशिबा को नमस्कार किया। 41जैसे ही एलीशिबा ने मरियम को नमस्कार करते सुना, तो एलीशिबा के अंदर के
बालक ने अचानक हलचल की।उसी क्षण पवित्र आत्मा ने इलीशिबा को बोलने के लिए प्रेरित किया। 42उसने ऊँचे स्वर से पुकारकर मरियम से कहा, “परमेश्वर
ने तुझे आशीषित किया है किसी अन्य स्त्री से बढ़कर आशीषित किया है, और उसने उस बालक को भी आशीषित किया है जिसे तू उत्पन्न करेगी! 43मैं इस
योग्य नहीं, कि तू, मेरे प्रभु की माता, मुझ से मिलने के लिए आए! 44मैं यह सब इसलिए जानती हूँ क्योंकि जैसे ही मैंने सुना कि तू मुझे नमस्कार करती है, तो
मेरे गर्भ के शिशु ने हिलना-डुलना आरम्भ कर दिया क्योंकि वह बहुत उत्साहित था! 45तू धन्य है क्योंकि तूने विश्वास किया था कि जो प्रभु ने तुझ से कहा था कि
पूरा होगा।” 46फिर मरियम ने यह कहने के द्वारा परमेश्वर की स्तुति की: “आह, मैं कैसे प्रभु की स्तुति करती हूँ 47और मैं परमेश्वर के विषय में अत्यन्त आनन्दित
अनुभव करती हूँ, वही जो मुझे बचाता है! 48मैं आनंदित हूँ क्योंकि वह मेरे प्रति अनुग्रहकारी रहा, भले ही मैं अधिक महत्व नहीं रखती थी। इसकी कल्पना तो
करो—कि अब से, भविष्य के आने वाले दिनों में रहने वाले सब लोग कहा करेंगे कि परमेश्वर ने मुझे आशीषित किया है। 49वे ऐसा इसलिए कहेंगे क्योंकि
परमेश्वर ने, जो सामर्थी और पवित्र है, मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं। 50वह हर जगह सभी समयकालों में उन लोगों के प्रति बड़े ही दयापूर्ण भाव से व्यवहार
करता है जो उसका भय मानते हैं। 51उसने लोगों पर यह प्रकट किया है कि वह अत्यन्त सामर्थी है। उसने उन लोगों को भगा दिया है जो अपने आप में घमण्ड
करते हैं। 52उसने शासकों को शासन करने से रोक दिया है, परन्तु जो दीन हैं उसने उन लोगों का सम्मान किया है। 53उसने लोगों को जो भूखे थे उनके तृप्त होने
तक अच्छा भोजन खिलाया है, परन्तु उसने धनवानों को बिना कुछ दिए ही निकाल बाहर किया है। 54उसने इस्राएल की, अर्थात् उन लोगों की सहायता की है
जो उसकी सेवा करते हैं। बहुत समय पहले उसने हमारे पूर्वजों से यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उन पर दयावन्त रहेगा। उसने उस प्रतिज्ञा को पूरा किया और उसने
अब्राहम और उससे उत्पन्न हुए वंशजों के प्रति सदा ही दयापूर्ण रीति से व्यवहार किया है। 55-56मरियम लगभग तीन महीने तक एलीशिबा के साथ रही। उसके
पश्चात, वह घर वापस चली गई। 57जब एलीशिबा के अपने बच्चे को जन्म देने का समय आया, तो उसने एक पुत्र को जन्म दिया। 58जब उसके पड़ोसियों और
कुटुम्बियों ने इस विषय में सुना कि उसे एक पुत्र देने के द्वारा किस प्रकार से परमेश्वर उस पर कृपालु हुआ है, तो वे एलीशिबा के साथ अत्यन्त प्रसन्न हुए।
59आठ दिनों के पश्चात, बालक का खतना करने के लिए लोग एक साथ इकट्ठा हुए {यह प्रकट करने के लिए कि वह परमेश्वर को समर्पित है}। {इसी के साथ-
साथ यह उस बालक का नाम रखने का भी समय था।} लोग उस बालक का नाम जकर्याह रखना चाहते थे क्योंकि वह उसके पिता का नाम था। 60परन्तु उसकी
माता ने कहा, “नहीं, {उसका नाम जकर्याह नहीं रखा जाएगा।} उसका नाम यूहन्ना रखा जाएगा!” 61अतः उन्होंने उस से कहा, “परन्तु यूहन्ना नाम तो तेरे
कुटुम्बियों में से किसी का भी नहीं है!” 62फिर उन्होंने उसके पिता को उससे यह पूछने के लिए अपने हाथों से चिन्ह दिखाए कि वह संकेत करे कि वह अपने पुत्र
का क्या नाम रखना चाहता है। 63अतः उसने संकेत किया कि वे उसे लिखने के लिए एक पटिया उपलब्ध करवाएँ। {जब उन्होंने उसे वह उपलब्ध करवाई,} तो
उसने उस पर लिखा, “उसका नाम यूहन्ना है।” इस बात ने उन सब लोगों को स्तब्ध कर दिया जो वहाँ पर उपस्थित थे! 64तुरन्त ही, जकर्याह फिर से बोलने में
सक्षम हो गया, और उसने परमेश्वर की स्तुति करना आरम्भ कर दिया। 65{जब} आसपास रहने वाले लोगों ने {इन बातों के विषय में सुना, तो उन्होंने} परमेश्वर
के लिए बड़ी श्रद्धा का अनुभव किया। {जो घटित हुआ था उन्होंने उसके विषय में बहुत से लोगों को बताया,} और यह बात यहूदिया के सम्पूर्ण पहाड़ी इलाकों
में रहने वाले लोगों में फैल गई। 66इन बातों के विषय में जिसने सुना हर कोई उनके विषय में विचार करता रहा। उन्होंने सोचा, “निश्चित रूप से यह बालक बड़ा
होकर कोई अति विशिष्ट जन बनेगा!” {उन्होंने ऐसा इसलिए सोचा} क्योंकि {वे देख पा रहे थे कि} परमेश्वर सामर्थी रूप से उसके जीवन में उपस्थित था। 67उस
बालक के पिता, जकर्याह, के फिर से बोलने में सक्षम होने के पश्चात, पवित्र आत्मा ने जकर्याह को प्रेरित किया और वह परमेश्वर की ओर से इन बातों को बोलने
लगा: 68“प्रभु की स्तुति करो, परमेश्वर की जिसकी हम इस्राएली लोग आराधना करते हैं, क्योंकि वह हमें, जो उसके लोग हैं, स्वतंत्र करने के लिए आ गया है।
69उसने एक ऐसे जन को भेजा है जो हमें सामर्थी रूप से बचाएगा, एक ऐसा जन जो दाऊद का वंशज है, जिसे उसने राजा होने के लिए चुन लिया है। 70(बहुत
समय पहले परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को यह कहने के लिए प्रेरित किया था कि वह इन कामों को करेगा।) 71{परमेश्वर इस छुड़ाने वाले को इसलिए
भेज रहा है} कि हमें हमारे शत्रुओं से सुरक्षित करे, और हर उस जन की सामर्थ से {वह हमें छुड़ा लेगा} जो हम से द्वेष रखते हैं। 72परमेश्वर ने ऐसा इसलिए
किया है क्योंकि वह हमारे पूर्वजों के प्रति विश्वासयोग्य रहा है और इसी कारण से पवित्र प्रतिज्ञा को पूरा कर रहा है जो उसने उनसे की थी। 73यह वह शपथ है
जो उसने हमारे पूर्वज अब्राहम के साथ सत्यनिष्ठा से इस विषय में शपथ खाई थी कि वह हमारे साथ क्या करेगा। 74उसने शपथ खाई थी कि वह हमारे शत्रुओं
की सामर्थ से हमें छुड़ाएगा ताकि उनसे भयभीत हुए बिना हम उसकी सेवा कर सकें। 75इसके परिणामस्वरूप, जब तक हम जीवित हैं, तब तक हम सही रीति
से जीवन को ऐसे लोगों के रूप में जीएँ जो पूर्णरूप से उसके हैं।” 76{फिर जकर्याह ने अपने शिशु पुत्र से कहा,} “और जैसा कि तेरे लिए, हे मेरे बच्चे, तू परम
प्रधान परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता होगा। तू प्रभु के आगमन से पूर्व ही अपने कार्य को आरम्भ करेगा ताकि तू लोगों को उसके लिए तत्पर रहने के लिए तैयार
कर सके। 77तू परमेश्वर के लोगों को बताएगा कि वह उनके पापों को क्षमा करने के द्वारा उनको बचाना चाहता है। 78परमेश्वर हमें इसलिए बचाना चाहता है
क्योंकि वह तरस खाने वाला और दयावान है। इसी कारण से हमारी सहायता करने के लिए वह स्वर्ग से इस उद्धारकर्ता को भेज रहा है। 79यह उद्धारकर्ता उन
लोगों पर सत्य को प्रकट करेगा जो उसे नहीं जानते हैं, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जो उसे बिलकुल भी नहीं जानते हैं। वह हमें दिखाएगा कि परमेश्वर को
प्रसन्न करनेवाले तरीके से कैसे जियें। 80समय बीतने के साथ-साथ, जकर्याह और एलीशिबा का शिशु बालक बढ़ता गया और आत्मिक रूप से बलवन्त होता
गया। फिर वह एक निर्जन क्षेत्र में रहने के लिए चला गया। वह उस समय भी वहीं पर रह रहा था जब उसने सार्वजनिक रूप से परमेश्वर की प्रजा, इस्राएलियों
पर प्रचार करना आरम्भ किया था।

Chapter 2

1साथ ही उस समय के दौरान, कैसर औगस्तुस ने, {जो सम्पूर्ण रोमी साम्राज्य पर शासन करता था,} आदेश निकाला कि उसके साम्राज्य में रहने वाले प्रत्येक
व्यक्ति को अपना पंजीकरण करवाना होगा {अर्थात उसका नाम वहाँ रहने वाले लोगों की एक आधिकारिक सूची में होना आवश्यक है}। 2यह पहली बार था

जब रोमियों ने उनके साम्राज्य में रहने वाले हर एक जन के नामों का संकलन किया था। यह उन्होंने उस समय के दौरान किया था जब क्विरिनियुस सीरिया
प्रान्त का राज्यपाल था। 3इसलिए हर एक जन को पंजीकरण करवाने के लिए अपने घराने के गृहनगर में जाना ही था। 4यूसुफ ने भी, मरियम के संग, जिसकी
उससे मंगनी हो चुकी थी और वह गर्भवती थी, अपने घराने के गृहनगर को जाने के लिए यात्रा की। क्योंकि यूसुफ दाऊद का वंशज था, इसलिए गलील प्रदेश के
नासरत नगर को छोड़कर उन्होंने यहूदिया प्रदेश के, बैतलहम नगर के लिए यात्रा की, जिसे दाऊद के नगर के रूप में भी जाना जाता था। यूसुफ और मरियम
वहाँ सार्वजनिक अभिलेख में पंजीकृत होने के लिए गए। 5-6जब वे बैतलहम पहुँचे, तो जहाँ पर सामान्यतः आगंतुक ठहरा करते थे उस स्थान में उनके ठहरने के
लिए कोई जगह उपलब्ध नहीं थी। इसलिए उनको एक ऐसे स्थान में ठहरना पड़ा जहाँ पर रात में पशु सोया करते थे। जिस समय पर वे वहाँ थे तभी मरियम का
जन्म देने का समय आ गया और उसने अपनी प्रथम सन्तान, एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसे कपड़े की चौड़ी लीरों में लपेटकर वहाँ पर लिटा दिया जहाँ पर
खलिहान के अंदर पशुओं के लिए चारा रखा जाता था। 7-8उस रात कुछ चरवाहे बैतलहम के पास खुले मैदान में डेरा डाले हुए थे। वे वहाँ पर अपनी भेड़ों की
देखभाल कर रहे थे। 9अचानक से उन्होंने प्रभु की ओर से आए हुए एक स्वर्गदूत को अपने सामने खड़े हुए देखा। प्रभु की ओर से एक अनुग्रहकारी प्रकाश उनके
चारों ओर चमक उठा। वे अत्यन्त भयभीत हो गए। 10परन्तु स्वर्गदूत ने उनसे कहा, “भयभीत न हो! ध्यानपूर्वक सुनो, क्योंकि मैं तुम को बड़ा शुभ सन्देश बताने
के लिए आया हूँ! यह सन्देश सभी लोगों के लिए है, और हर एक को आनन्दित होना चाहिए! 11वे आनन्दित होंगे क्योंकि आज, राजा दाऊद के गृहनगर,
बैतलहम में, वह व्यक्ति उत्पन्न हुआ है जो तुम को {तुम्हारे पापों से} बचाएगा! वही मसीह, प्रभु है! 12और वहाँ तुम्हारे लिए एक चिन्ह है। {यदि तुम बैतलहम
जाओ,} तो वहाँ तुम एक शिशु को कपड़े की पट्टियों में लिपटा हुआ और पशुओं के चारा खाने के स्थान में लेटा हुआ पाओगे।” 13अचानक से स्वर्गदूतों का एक
विशाल समूह दूसरे स्वर्गदूत के साथ स्वर्ग से प्रकट हुआ। वे सब के सब यह कहते हुए परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे, 14“सारे स्वर्गदूत सबसे ऊँचे स्वर्ग पर
परमेश्वर की स्तुति करो! और पृथ्वी पर उन सारे लोगों में {परमेश्वर के और एक दूसरे के साथ} शान्ति स्थापित हो जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं!” 15जब
स्वर्गदूत उनको छोड़कर और स्वर्ग को लौट गए, तो चरवाहों ने एक दूसरे से कहा, “हमें इसी समय बैतलहम को जाना चाहिए और इस आश्चर्यजनक बात को
देखना चाहिए जो घटित हुई है, जिसके विषय में प्रभु ने हम को बताया है!” 16अतः वे शीघ्रता से गए, और जब उनको {वह स्थान जहाँ} मरियम और यूसुफ
{ठहरे हुए थे} मिल गया, तो उन्होंने शिशु को पशुओं के चारा खाने के स्थान में लेटा हुआ देखा। 17उसको देख लेने के पश्चात, जो परमेश्वर ने उस शिशु के विषय
में उन पर प्रकट किया था उन्होंने सब को बता दिया। 18सभी लोग जो सुन रहे थे सोचने लगे कि जो चरवाहों ने उन्हें बताया वह अद्भुत था। 19परन्तु मरियम ने
इन सब बातों को ध्यानपूर्वक स्मरण किया और उनके विषय में लगातार विचार करती रही। 20वे चरवाहे {जहाँ पर उनकी भेड़ें थीं उन मैदानों को} लौट गए। वे
इस विषय में बातें करते रहे कि परमेश्वर कितना महान है और उन सब बातों के लिए उसकी स्तुति करते रहे जो उन्होंने सुनीं और देखी थीं। सारी बातें ठीक उसी
प्रकार से हुईं जैसे कि उस स्वर्गदूत ने उनके होने के लिए बताया था। 21उस शिशु के जन्म लेने के पश्चात आठवें दिन, उन्होंने उसका खतना किया और उसका
नाम यीशु रखा। यह वही नाम था जो उस स्वर्गदूत ने मरियम के उसका गर्भ धारण करने से पूर्व ही उसे देने के लिए उनको बोला था। 22मरियम और यूसुफ ने
उतने दिनों तक प्रतीक्षा की जितने संस्कारिक रीति से शिशु को जन्म देने के उपरान्त उसके फिर से शुद्ध होने के लिए मूसा की व्यवस्था में आवश्यक थे। फिर वे
उसे लेकर यरूशलेम को आए ताकि वे उसे प्रभु के लिए {मंदिर में} समर्पित करें। 23उन्होंने यह प्रभु की व्यवस्था का आज्ञापालन करने के लिये किया, जो कहता
है, कि जितने पहिलौठे नर संतान उत्पन्न हों, तू उन सभी को प्रभु के लिए पृथक करना। " 24वहाँ उन्होंने बलिदान चढ़ाया जिसे नए जन्मे पुत्र के माता-पिता को
चढ़ाने के लिए प्रभु की व्यवस्था कहती है, “दो पण्डुक, या कबूतर के दो बच्चे।” 25उस समय पर वहां यरूशलेम में एक व्यक्ति था जिसका नाम शमौन था। वह
वही करता था जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता था और परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया करता था। वह इस्राएल के लोगों को प्रोत्साहित करने हेतु परमेश्वर
द्वारा मसीह को भेजने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। पवित्र आत्मा उसे निर्देशित कर रहा था। 26पवित्र आत्मा ने पहले से ही उस पर यह प्रकट किया
हुआ था कि उसके मरने से पूर्व, प्रभु अपने मसीह को भेजेगा और वह उसे देखने पाएगा। 27अतः पवित्र आत्मा ने शमौन की मंदिर के आँगन में जाने के लिए
अगुवाई की। उस समय पर वह वहीं पर उपस्थित था जब यूसुफ और मरियम शिशु यीशु को लेकर आए ताकि वे उसके लिए उस संस्कार को कर सकें जिसकी
आज्ञा परमेश्वर ने व्यवस्था में दी हुई है। 28{जब शमौन ने यीशु को देखा तो,} उसने उसे अपनी गोद में उठाया और परमेश्वर का धन्यवाद दिया, और फिर उसने
कहा, 29“हे प्रभु, तूने मेरे साथ किए हुए अपने वायदे को पूरा किया है, और अब मैं तुझ से संतुष्ट हूँ कि मुझे मरने दे। 30क्योंकि मैंने उस जन को देख लिया है
जिसे तूने लोगों को बचाने के लिए भेजा है, 31वह जन जिसे तू ने सब लोगों के देखने के लिए तैयार किया है। 32वह एक ऐसे उजियाले के समान होगा जो तेरे
सत्य को दूसरी जातियों पर उजागर करेगा। वह यह प्रकट करेगा कि तेरी प्रजा, इस्राएल के लिए तेरी योजना कितनी महिमामय है।” 33जो बातें शमौन ने यीशु के
विषय में कहीं उन पर उसके माता और पिता विस्मित हो गए। 34फिर शमौन ने उनको आशीषित किया, और यीशु की माता, मरियम से कहा, “जो मैं कहता हूँ
उस पर अच्छे से ध्यान दे: परमेश्वर ने यह निर्धारित किया है कि, इस बालक के कारण, इस्राएल में रहने वाले बहुत से लोग परमेश्वर को अस्वीकार कर देंगे और
बहुत से स्वयं को परमेश्वर के अधीन कर देंगे। वह {परमेश्वर की ओर से} एक ऐसा चिन्ह ठहरेगा जिसका बहुत से लोग विरोध करेंगे। 35जहाँ तक तुम्हारी बात है,
{लोग उसके साथ जिन क्रूर कामों को करेंगे वह तुम को इतना दुःखी कर देगा कि} यह ऐसा लगेगा कि जैसे कोई तलवार तुम्हारी अन्तरात्मा को छेद रही है।
{परन्तु यह इसलिए आवश्यक है} ताकि वह बहुत से लोगों के गुप्त विचारों को उजागर कर सके।” 36वहाँ {मंदिर के आँगन में} हन्नाह नाम की एक
भविष्यद्वक्तिनी भी उपस्थित थी। वह बहुत वृद्ध थी। वह फनूएल की पुत्री थी, जो आशेर के गोत्र का था। एक युवती के रूप में, वह विवाह में सात वर्ष तक रही
थी, {और फिर उसके पति की मृत्यु हो गई थी}। 37उसके पश्चात, वह 84 वर्षों से अधिक से विधवा के रूप में रह रही थी। ऐसा लगता था कि जैसे वह सर्वदा
मंदिर में ही रहा करती थी, और रात और दिन {हर समय} उपवास और प्रार्थना करते हुए परमेश्वर की आराधना किया करती थी। 38उसी समय पर, हन्नाह
{यूसुफ और मरियम और शिशु के पास} पहुँची। हन्नाह {उस शिशु के लिए} परमेश्वर का धन्यवाद देने लगी। तत्पश्चात, वह कई अन्य लोगों से यीशु के विषय में
बातें करती रही जो साथ ही उस मसीहा की {परमेश्वर के द्वारा भेजने की} प्रतीक्षा कर रहे थे जो इस्राएल के लोगों को स्वतंत्र करेगा। 39यूसुफ और मरियम के
उन सब कामों को समाप्त कर लेने के पश्चात जो प्रभु की व्यवस्था के अनुसार {प्रथम पुत्र के माता-पिता के लिए} आवश्यक थे, वे गलील प्रान्त में स्थित अपने
नगर, नासरत को लौट गए। 40जैसे-जैसे वह बालक बढ़ता गया, वह बलवन्त और अत्यन्त बुद्धिमान होता गया, और परमेश्वर उसके जीवन में उपस्थित था।
41प्रत्येक वर्ष यीशु के माता-पिता फसह का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम की यात्रा किया करते थे। 42अतः जब यीशु 12 वर्ष की आयु का था, तब उन सब ने
इकट्ठे होकर यरूशलेम की यात्रा की जब {फसह के} पर्व का समय था। 43जब पर्व को मनाने के दिन समाप्त हो गए, तो यीशु के माता-पिता घर लौटने लगे,
परन्तु उनका पुत्र, यीशु, पीछे यरूशलेम में ही रह गया। उसके माता-पिता यह नहीं जानते थे {कि वह अभी भी वहीं पर था}। 44उन्होंने सोचा कि वह उन अन्य

लोगों के साथ होगा जो उनके साथ यात्रा कर रहे थे। परन्तु एक दिन चलने के पश्चात, उन्होंने उसे अपने कुटुम्बियों और मित्रों के मध्य में खोजना आरम्भ किया।
45जब वह उनको नहीं मिला, तो वे उसे ढूँढ़ने के लिए यरूशलेम को लौट गए। 46{मरियम और यूसुफ के यरूशलेम से निकल जाने के} तीन दिनों के पश्चात,
यीशु उनको मंदिर में मिला। वह यहूदी धार्मिक शिक्षकों के मध्य में बैठा हुआ था। वह उनको शिक्षा देते हुए सुन रहा था और वह उनसे प्रश्न भी पूछ रहा था।
47सभी लोग जिन्होंने उसकी बातें सुनीं, जो उसने कही थीं वे इस बात से अचम्भित थे कि उसने कितनी अच्छी तरह से समझ लिया और उसने कितनी अच्छी
तरह {शिक्षकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों} का उत्तर दिया। 48जब उसके माता-पिता ने उसे देखा, तो वे बहुत चकित हुए। उसकी माता ने उससे कहा, “हे मेरे पुत्र, तुझे
हमारे साथ ऐसा नहीं करना चाहिए था। मेरे बात सुन! तेरी खोज करते हुए तेरा पिता और मैं बहुत चिन्तित थे!” 49उसने उनसे कहा, " मैं अचम्भित हूँ कि तुम्हें
मेरी खोज करने की आवश्यकता पड़ी। मैंने सोचा था कि तुम जानते होंगे कि मुझे {उसके विषय में जानने के लिए} अपने पिता के घर पर रहना आवश्यक है।”
50परन्तु जो कुछ उसने उनसे कहा उसका अर्थ वे नहीं समझ पाए। 51फिर वह उनके साथ नासरत को लौट गया, और वह सर्वदा उनकी बातों को मानता रहा।
जो घटित हुआ था, उन सब बातों के विषय में उसकी माता गहराई से सोचती रही। 52जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, यीशु समझदार होता गया, और वह कद में भी
बढ़ता गया। परमेश्वर और लोग भी उसको अधिकाधिक पसंद करने लगे।

Chapter 3

1{इतिहास का यह अगला भाग उस समय घटित हुआ} जब तिबिरियुस कैसर को {रोमी साम्राज्य} पर शासन करते हुए लगभग पन्द्रह वर्ष हो गए थे। उस समय
पर, पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया प्रान्त का राज्यपाल था, और हेरोदेस अन्तिपास गलील जिले पर शासन कर रहा था, और उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और
त्रखोनीतिस के क्षेत्रों पर शासन कर रहा था, और अबिलेने क्षेत्र पर लिसानियास शासन कर रहा था। 2{यरूशलेम के मंदिर में} हन्ना और कैफा महायाजक थे।
उस समय के दौरान, परमेश्वर ने जकर्याह के पुत्र यूहन्ना से निर्जन क्षेत्र में बात की {उस समय वह वहीं रहा करता था}। 3यूहन्ना ने यरदन नदी के आसपास के
सम्पूर्ण इलाके में यात्रा की। {जो लोग उसकी सुनने के लिए उसके पास आए उन पर} वह घोषणा करता गया, “यदि तुम चाहते हो कि परमेश्वर तुम्हारे पापों को
क्षमा करे, तो तुम को जीवन जीने की अनुचित रीतियों को अस्वीकार करना होगा। तब मैं तुम को बपतिस्मा दूँगा!” 4{जब यूहन्ना ने इस प्रकार से प्रचार किया
तो,} वह बातें सच हो गईं जो यशायाह भविष्यद्वक्ता ने बहुत समय पहले एक पुस्तक में लिखी थीं: “निर्जन क्षेत्र में, कोई जन {लोगों को} पुकार रहा होगा: ‘प्रभु
को स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार करो! उसके आगमन के समय के लिए स्वयं को तैयार करो!’ 5{जब कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति किसी विशेष सड़क से
होकर आने वाला हो तो,} लोग सब गड्ढों को भर देते हैं और सब उभरे हुए स्थानों को समतल कर देते हैं। वे उस सड़क को सीधी कर देते हैं जो कहीं से भी टेढ़ी-
मेढ़ी हो, और वे सब बाधाओं को चिकना कर देते हैं। {इसी प्रकार से, परमेश्वर यह सुनिश्चित करेगा कि कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो मसीह के लिए तैयार हैं।} 6तब
हर एक जन लोगों को बचाने के परमेश्वर के मार्ग को जान लेगा।” 7लोगों के बड़े समूह निकल कर {उस निर्जन स्थान पर जहाँ यूहन्ना था} आ रहे थे ताकि वह
उनको बपतिस्मा दे। अतः यूहन्ना ने उनसे कहा, “तुम लोग विषैले साँपों के समान डरपोक और खतरनाक हो! तुम ऐसा विचार रखते हो कि यदि मैं तुम को
बपतिस्मा दे दूँ, तो जब परमेश्वर पापियों को दण्ड देगा तब वह तुम को छोड़ देगा। {परन्तु मैंने ऐसा नहीं कहा!} 8तुम को उन कामों को करने की आवश्यकता है
जिससे प्रकट हो कि तुम ने अपने पिछले पापपूर्ण जीवन जीने के तरीके को वास्तव में अस्वीकार कर दिया है! और स्वयं से यह कहना भी आरम्भ न करो कि,
‘{निश्चित रूप से परमेश्वर हमें इसलिए दण्ड नहीं देगा, क्योंकि} हम अब्राहम के वंशज हैं!’ {यह परमेश्वर को प्रभावित नहीं करता है।} मैं तुम को आश्वस्त करता
हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों को अब्राहम के वंशजों में परिवर्तित कर सकता है! 9तुम ऐसे फल वाले वृक्षों के समान हो जो अच्छा फल उत्पन्न नहीं करते। परमेश्वर
उस मनुष्य के समान है जो अपनी कुल्हाड़ी का मुँह उन पेड़ों की जड़ पर रखता है, और उन्हें काटकर आग में फेंकने के लिए तैयार है। यदि तुम लगातार पाप
करते रहे तो परमेश्वर भी तुम को इस रीति से दण्ड देने के लिए तैयार है।” 10तब भीड़ {में से कई लोगों} ने उससे पूछा, “तो परमेश्वर किस प्रकार के कामों को
चाहता है कि हम करें?” 11उसने उनको उत्तर दिया, “यदि तुम में से किसी के पास दो कुरते हों, तो तुम को उनमें से एक उसे दे देना चाहिए जिसके पास एक भी
कुरता नहीं है। यदि तुम में से किसी के पास बहुतायत से भोजन है, तो जिनके पास नहीं है तुम को उन्हें कुछ भोजन दे देना चाहिए।” 12कुछ चुंगी लेने वाले भी
आए, जो चाहते थे कि यूहन्ना उनको बपतिस्मा दे। उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, क्या करें {जो परमेश्वर हम से चाहता है}?” 13उसने उनसे कहा, “जितना धन रोमी
सरकार {लोगों से} वसूलने के लिए तुम से कहती है उससे ज्यादा अधिक मत वसूलो!” 14वहाँ कुछ ऐसे पुरुष भी थे जो सैनिक थे। यहाँ तक कि वे उससे पूछने
लगे, “और हमारे विषय में क्या? परमेश्वर क्या चाहता है कि हम करें?” उसने उनसे कहा, "लोगों को हानि पहुँचाने की धमकी देकर या उन पर {कुछ अनुचित
करने का} झूठा आरोप लगाकर तुम्हें धन देने के लिए विवश मत करो। एक सैनिक के रूप में तुम जितना धन कमाते हो उससे संतुष्ट रहो।” 15लोग प्रतीक्षा कर
रहे थे {बहुत लम्बे समय से मसीह के आने की। परन्तु अब वे यूहन्ना को लेकर काफी आशान्वित हो रहे थे}। उन्हें लगता था कि वह मसीह हो सकता है। 16परन्तु
उन सब से यूहन्ना ने कहा, “{मैं मसीह नहीं हूँ।} वह आ रहा है, और वह मुझ से बहुत बढ़कर है। वह इतना महान है कि मैं उस दास की तरह बनने के योग्य भी
नहीं हूँ कि {जब वह घर में आए तो} उसके जूतों के फीते खोल पाए! जब मैंने तुम्हें बपतिस्मा दिया, तो मैंने केवल पानी का उपयोग किया। परन्तु {जब मसीह
आएगा तो,} वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा, जो तुम्हारा न्याय करेगा और तुम्हें शुद्ध करेगा। 17{मसीह इसे उसी प्रकार से करने के लिए तैयार है, जिस
प्रकार से} एक किसान अपने सूप का उपयोग करने के लिए तैयार होता है। किसान अच्छे गेहूँ को अनुपयोगी भूसे से अलग करता है। वह गेहूँ को
सावधानीपूर्वक भण्डार में रखता है, परन्तु भूसे को वह उसके भस्म हो जाने तक जलाता है। {यह दर्शाता है कि कैसे मसीह उन लोगों को इकट्ठा करेगा जो
परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, और वह उन लोगों को दण्ड देगा जो परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं।}” 18इस प्रकार के बहुत से विभिन्न तरीकों के द्वारा, यूहन्ना ने
लोगों से {पाप करना बंद कर देने और स्वयं को परमेश्वर के अधीन करने के लिए} आग्रह किया, जब वह उन्हें {परमेश्वर की ओर से} शुभ सन्देश सुनाए जा रहा
था। 19यहाँ तक कि यूहन्ना ने राजा हेरोदेस को बहुत सारे दुष्ट कामों के लिए फटकार भी लगाई जो हेरोदेस ने किए थे। परन्तु जब यूहन्ना ने हेरोदेस को अपने
भाई की पत्नी हेरोदियास से विवाह करने के लिये फटकार लगाई, जबकि उसका भाई जीवित ही था, 20तो हेरोदेस ने एक और दुष्ट काम किया। उसने अपने
सैनिकों से कहकर यूहन्ना को बंदीगृह में डाल दिया। 21परन्तु हेरोदेस के ऐसा करने से पूर्व ही, जब यूहन्ना बहुत से लोगों को बपतिस्मा दे ही रहा था, तब यूहन्ना ने
यीशु को भी बपतिस्मा दिया। तत्पश्चात, जब यीशु प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया। 22तब पवित्र आत्मा, एक कबूतर के रूप में उतरा और यीशु पर
ठहर गया। तब परमेश्वर ने स्वर्ग से {यीशु से} बात की। उसने कहा, “तू मेरा एकलौता पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रेम करता हूँ। मैं तुझ से अति प्रसन्न हूँ!" 23उसी

समय पर यीशु ने परमेश्वर के लिए अपने कार्य को आरम्भ किया। वह लगभग 30 वर्ष की आयु का था। यह यीशु की वंशावली है: लोग यीशु को यूसुफ का पुत्र
समझते थे। यूसुफ एली का पुत्र था। 24एली मत्तात का पुत्र था। मत्तात लेवी का पुत्र था। लेवी मलकी का पुत्र था। मलकी यन्ना का पुत्र था। यन्ना यूसुफ का पुत्र
था। 25यूसुफ मत्तित्याह का पुत्र था। मत्तित्याह आमोस का पुत्र था। आमोस नहूम का पुत्र था। नहूम असल्याह का पुत्र था। असल्याह नग्गई का पुत्र था।
26नग्गई मात का पुत्र था। मात मत्तित्याह का पुत्र था। मत्तित्याह शिमी का पुत्र था। शिमी योसेख का पुत्र था। योसेख योदाह का पुत्र था। 27योदाह यूहन्ना का
पुत्र था। यूहन्ना रेसा का पुत्र था। रेसा जरुब्बाबेल का पुत्र था। जरुब्बाबेल शालतीएल का पुत्र था। शालतीएल नेरी का पुत्र था। 28नेरी मलकी का पुत्र था। मलकी
अद्दी का पुत्र था। अद्दी कोसाम का पुत्र था। कोसाम एल्मदाम का पुत्र था। एल्मदाम एर का पुत्र था। 29एर येशू का पुत्र था। येशू एलीएजेर का पुत्र था। एलीएजेर
योरीम का पुत्र था। योरीम मत्तात का पुत्र था। मत्तात लेवी का पुत्र था। 30लेवी शमौन का पुत्र था। शमौन यहूदा का पुत्र था। यहूदा यूसुफ का पुत्र था। यूसुफ
योनान का पुत्र था। योनान एलयाकीम का पुत्र था। 31एलयाकीम मलेआह का पुत्र था। मलेआह मिन्नाह का पुत्र था। मिन्नाह मत्तता का पुत्र था। मत्तता नातान
का पुत्र था। नातान दाऊद का पुत्र था। 32दाऊद यिशै का पुत्र था। यिशै ओबेद का पुत्र था। ओबेद बोअज का पुत्र था। बोअज सलमोन का पुत्र था। सलमोन
नहशोन का पुत्र था। 33नहशोन अम्मीनादाब का पुत्र था। अम्मीनादाब अदमीन का पुत्र था। अदमीन अरनी का पुत्र था। अरनी हेस्रोन का पुत्र था। हेस्रोन पेरेस
का पुत्र था। पेरेस यहूदा का पुत्र था। 34यहूदा याकूब का पुत्र था। याकूब इसहाक का पुत्र था। इसहाक अब्राहम का पुत्र था। अब्राहम तेरह का पुत्र था। तेरह
नाहोर का पुत्र था। 35नाहोर सरूग का पुत्र था। सरूग रऊ का पुत्र था। रऊ पेलेग का पुत्र था। पेलेग एबेर का पुत्र था। एबेर शिलह का पुत्र था। 36शिलह केनान
का पुत्र था। केनान अरफक्षद का पुत्र था। अरफक्षद शेम का पुत्र था। शेम नूह का पुत्र था। नूह लेमेक का पुत्र था। 37लेमेक मथूशिलह का पुत्र था। मथूशिलह
हनोक का पुत्र था। हनोक यिरिद का पुत्र था। यिरिद महललेल का पुत्र था। महललेल केनान का पुत्र था। 38केनान एनोश का पुत्र था। एनोश शेत का पुत्र था।
शेत आदम का पुत्र था। आदम परमेश्वर से उत्पन्न हुआ था।

Chapter 4

1यूहन्ना के उसे बपतिस्मा देने के पश्चात, यीशु यरदन नदी से बाहर निकल कर वापस आया। पवित्र आत्मा उसे पूर्णरूप से सशक्त कर रहा था। फिर पवित्र
आत्मा उसे जंगल में ले गया। 2यीशु 40 दिनों तक जंगल में रहा। वह जिस समय पर वहाँ पर था, शैतान लगातार उसकी परीक्षा करता रहा। उस सम्पूर्ण समय
के दौरान, यीशु ने कुछ भी नहीं खाया। अतः जब 40 दिन बीत गए, तो उसे बहुत भूख लगी। 3तब शैतान ने यीशु से कहा, “यदि तू सच में परमेश्वर का पुत्र है, तो
इस पत्थर को आदेश दे कि रोटी बन जाए {तेरे खाने के लिए}!” 4यीशु ने उत्तर दिया, “{नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा, क्योंकि} पवित्रशास्त्र कहता है, ‘मनुष्यों को
जीवित रहने के लिए केवल रोटी से भी बढ़कर कुछ और चाहिए।’” 5फिर शैतान यीशु को {एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर} ऊपर ले गया और पल भर में उसे
संसार के सारे देश दिखा दिए। 6तब शैतान ने यीशु से कहा, “मैं तुझे इन सारे देशों पर शासक बना दूँगा और तू उनकी सारी सम्पदा का अधिकारी होगा। मैं ऐसा
कर सकता हूँ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे इन सब को नियंत्रित करने की अनुमति प्रदान की है, और इसलिए मैं जिस किसी को भी चाहूँ उसे मैं दे सकता हूँ। 7तुझे
केवल इतना ही करना है कि झुककर मुझे दंडवत कर। फिर मैं तुझे उन सब पर शासन करने दूँगा!” 8परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, “{नहीं, मैं तुझे दंडवत नहीं
करूँगा, क्योंकि} पवित्रशास्त्र कहता है, ‘तू केवल प्रभु अपने परमेश्वर को दंडवत करना। केवल वही एकमात्र है जिसकी तुझे सेवा करनी है!’” 9फिर शैतान यीशु
को यरूशलेम ले गया। उसने उसे मंदिर के सबसे ऊँचे भाग पर बैठा दिया और उससे कहा, “यदि तू सच में परमेश्वर का पुत्र है, तो यहाँ से नीचे कूद जा। 10तुझे
चोट नहीं लगेगी, क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, ‘परमेश्वर तेरी रक्षा करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को आदेश देगा।’ 11और पवित्रशास्त्र यह भी कहता है, ‘जब तू
गिरेगा स्वर्गदूत तुझे अपने हाथों में उठा लेंगे, ताकि तुझे चोट न लगे।’” 12परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, “{नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा, क्योंकि} पवित्रशास्त्र यह भी
कहता है: ‘प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न लेना’।” 13अतः शैतान ने इन सभी तरीकों के द्वारा यीशु की परीक्षा करने का प्रयास करना समाप्त कर लिया, तो
उसके पश्चात, शैतान किसी अन्य समय की प्रतीक्षा करने के लिए यीशु के पास से चला गया {जब वह फिर से यीशु की परीक्षा करने का प्रयास कर पाए}।
14इसके पश्चात, यीशु {उस निर्जन इलाके को छोड़कर और} गलील जिले में लौट आया। पवित्र आत्मा उसे सशक्त कर रहा था। उस सम्पूर्ण प्रदेश में, लोगों ने
यीशु के विषय में सुना और उसके विषय में अन्यों को भी बताया। 15वह लोगों को उनके यहूदी सभास्थलों में शिक्षा दिया करता था। {जिसके परिणामस्वरूप,}
सभी लोग उसकी प्रशंसा किया करते थे। 16फिर यीशु नासरत नगर को गया, जहाँ पर वह पला-बढ़ा था। जैसा कि वह आमतौर पर यहूदियों के विश्रामदिन पर
किया करता था, वह यहूदियों के सभास्थल पर गया। {उचित समय पर,} वह {शास्त्रों में से कुछ ऊँचे स्वर से} पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। 17{यीशु उन कुछ वचनों
को पढ़ना चाहता था जो} यशायाह भविष्यवक्ता {ने बहुत पहले बोले थे। इसलिए उसने} उस पुस्तक को माँगा जिसमें ये वचन लिखे हुए थे, और एक
आराधनालय के सेवक ने उसे वह थमा दी। यीशु ने उस पुस्तक को खोला और उस स्थान पर गया जहाँ से वह पढ़ना चाहता था। {और उसने ये वचन पढ़े:}
18“प्रभु का आत्मा मुझे सशक्त कर रहा है, क्योंकि उसने विशेष रूप से मुझे उन लोगों पर परमेश्वर के शुभ सन्देश की घोषणा करने के लिए नियुक्त किया है जो
दीन हैं। उसने मुझे इसलिए भेजा है कि जो बंदीगृह में हैं उन लोगों पर घोषणा करूँ कि वे स्वतंत्र किए जाएँगे, और जो अंधे हैं उनको बताऊँ कि वे फिर से देखने
पाएँगे। उसने मुझे इसलिए भेजा है कि उन लोगों को छुड़ाऊँ जिनको अन्य लोग कुचल रहे हैं, 19और घोषणा करूँ कि यह वह समय है जब परमेश्वर लोगों के
प्रति कृपालु रूप से व्यवहार करेगा। 20तब उसने पुस्तक को बंद कर दिया और सेवक को वापस दे दिया, और वह {लोगों को शिक्षा देने के लिए} बैठ गया।
यहूदी सभास्थल में उपस्थित हर एक जन उसे बड़े ध्यानपूर्वक देख रहा था। 21उसने उनको यह कहकर शिक्षा देना आरम्भ किया, “मैंने पवित्रशास्त्र के इस
अनुच्छेद को अभी सच कर दिया है, जब तुम ने मुझे इसे पढ़ते हुए सुना।” 22वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों ने उसका अनुमोदन किया और वे उन अद्भुत बातों पर
चकित हुए जो उसने कही थीं। उनमें से बहुतों ने एक दूसरे से कहा, "{यह आश्चर्य की बात है कि वह इस प्रकार से बोल सकता है!} यह व्यक्ति केवल यूसुफ का
पुत्र ही तो है!" 23उसने उनसे कहा, “निश्चित रूप से तुम में से कुछ लोग मुझ पर वह कहावत उद्धृत करेंगे जो कहती है, ‘हे वैद्य, स्वयं को चंगा कर!’ {इस बात से
तुम्हारा अर्थ यह होगा कि, ‘लोगों ने हम से कहा है कि} तूने कफरनहूम नगर में चमत्कार किए थे। {यदि तू चाहता है कि हम विश्वास करें कि तू एक भविष्यद्वक्ता
है, तो} उसी प्रकार के चमत्कारों को यहाँ अपने गृहनगर में भी कर!’” 24फिर उसने कहा, “यह निश्चित रूप से सत्य है कि भविष्यद्वक्ता के स्वयं के गृहनगर में
रहने वाले लोग यह स्वीकार नहीं करते कि वह एक भविष्यद्वक्ता है। 25इस विषय में विचार करो: जब एलिय्याह भविष्यद्वक्ता जीवित था वहां उस समय के

दौरान इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं। उस समय वहां तीन वर्ष और छः महीने तक वर्षा नहीं हुई। इससे पूरे देश में चारों ओर भयंकर अकाल पड़ा। 26तौभी
परमेश्वर ने एलिय्याह को इस्राएल में रहने वाली किसी विधवा की सहायता करने के लिए नहीं भेजा। बजाए इसके, परमेश्वर ने उसे सीदोन नगर के निकट के
कस्बे सारपत में भेजा, कि वहाँ एक {गैर-इस्राएली} विधवा की सहायता करे। 27जब एलीशा भविष्यद्वक्ता जीवित था वहाँ उस समय पर भी इस्राएल में बहुत से
कोढ़ी थे। परन्तु एलीशा ने उनमें से किसी को भी चंगा नहीं किया। बजाए इसके, उसने केवल नामान को चंगा किया, जो सीरिया देश का रहने वाला {एक गैर-
इस्राएली व्यक्ति} था।" 28जब यहूदी सभास्थल में उपस्थित सब लोगों ने उसे इन बातों को कहते हुए सुना, तो वे अत्यन्त क्रोधित हो गए। 29इसलिए उन्होंने
खड़े होकर यीशु को पकड़ लिया, और उसे घसीटते हुए नगर से बाहर ले गए। वे उसे उनके नगर के बाहर की चट्टान के छोर पर लेकर गए ताकि उसे चट्टान पर
से फेंक दें और उसे मार डालें। 30परन्तु यीशु भीड़ में से होकर सरलता से निकल गया और दूर चला गया। 31वहाँ से यीशु कफरनहूम को चला गया, जो गलील
जिले के एक नगर था। प्रत्येक यहूदी विश्रामदिन पर, वह {वहाँ के यहूदी सभास्थल में} लोगों को शिक्षा दिया करता था। 32जिन बातों की शिक्षा यीशु ने लोगों
को दी उन्होंने उनको विस्मित कर दिया, क्योंकि वह ऐसे व्यक्ति के समान बोला करता था जो जानता हो कि वह किस विषय में बोल रहा था। 33उस समय वहां
उस यहूदी सभास्थल में एक पुरुष था जिसे एक दुष्टात्मा नियंत्रित किया करती थी। वह ऊँचे स्वर से चिल्लाया, 34"आह! हे नासरत के रहने वाले यीशु! तू हम से
क्या चाहता है? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं जानता हूँ कि तू कौन है! तू परमेश्वर की ओर से आया पवित्र जन है!" 35परन्तु यीशु ने उस दुष्टात्मा से
कठोरतापूर्वक बात की। उसने कहा, "चुप रह और उसमें से बाहर निकल!" उस दुष्टात्मा से उस पुरुष को लोगों के मध्य में भूमि पर गिरा दिया। परन्तु फिर बिना
उसे हानि पहुँचाए, वह उस पुरुष में से निकल गई। 36{यहूदी सभास्थल में उपस्थित} सभी लोग विस्मित हो गए। उनमें से बहुतों ने एक दूसरे से कहा, "हम ने
कभी भी ऐसा कुछ नहीं देखा! उसके शब्द बहुत सामर्थी हैं! वह दुष्टात्माओं को ऐसे आदेश देता है जैसे कि उन्हें उसकी आज्ञा माननी पड़ेगी, और {जब वह उन्हें
आज्ञा देता है तो,} वे {लोगों में से} निकल जाती हैं!" 37आसपास के सम्पूर्ण क्षेत्र में हर जगह, लोग यीशु के किए हुए कार्यों की चर्चा करते रहे। 38तब यीशु
यहूदियों के सभास्थल से निकल गया और शमौन नाम के एक मनुष्य के घर गया। वहाँ पर उसकी सास थी वह बीमार थी और उसे बहुत तेज बुखार था। वहाँ
पर लोगों ने यीशु से उसे चंगा करने के लिए कहा। 39अतः जहाँ वह थी, यीशु उस स्थान पर जाकर उसके पास खड़ा हो गया। उसने बुखार को उसे छोड़ देने की
आज्ञा दी, और उसने ऐसा किया! वह तुरन्त उठ खड़ी हुई और उन्हें कुछ खाना परोसा। 40जब सूर्य ढलने लगा, {जिससे यहूदियों का विश्रामदिन समाप्त हो
गया}, तो बहुत से लोग जिनके मित्र और कुटुम्बी विभिन्न रोगों से बीमार थे उनको यीशु के पास लेकर आए। उसने अपने हाथों को उनमें से प्रत्येक पर रखकर
उनको चंगा किया। 41{जब यीशु ने अपने हाथों को उन बीमार लोगों पर रखा तो,} उनमें से बहुतों में से दुष्टात्माएँ भी निकल गईं। {जब दुष्टात्माएँ निकलीं तो,} वे
{यीशु पर} चिल्लाईं, "तू परमेश्वर का पुत्र है!" परन्तु उसने उन दुष्टात्माओं को लोगों को उसके विषय में न बताने के लिए आदेश दिया, क्योंकि वे जानती थीं कि
वही मसीह था। 42अगली सुबह बड़ी भोर में, यीशु निकल कर एक निर्जन स्थान पर चला गया। लोगों की भीड़ भी उसे ढूँढ़ने के लिए निकल पड़ी। जब वे वहाँ
पहुँचे जहाँ पर वह था, तो उन्होंने उसे उनके पास से जाने से रोकने का प्रयास किया। 43परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "मुझे दूसरे नगरों में रहने वाले लोगों को भी
यह शुभ सन्देश बताने जाना चाहिए कि उनके जीवन पर शासन करने के लिए वे परमेश्वर को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यहाँ ऐसा ही करने के
लिए भेजा है। 44अतः वह सम्पूर्ण यहूदिया प्रान्त के यहूदी सभास्थलों में प्रचार करता गया।

Chapter 5

1एक दिन जब यीशु के आसपास बहुत से लोगों की भीड़ इकट्ठा थी और उसे परमेश्वर के सन्देश की शिक्षा देते हुए सुन रही थी, उस समय वह गन्नेसरत की झील
के किनारे पर खड़ा हुआ था। 2उसने वहाँ झील के छोर पर मछली पकड़ने की दो नावों को देखा। मछुवारे उन नावों को छोड़कर अपने मछली पकड़ने के जालों
को धो रहे थे। 3उन दो नावों में से एक पर यीशु चढ़ गया, जो कि शमौन की थी। यीशु ने उससे नाव को तट से थोड़ा दूर हटा लेने का निवेदन किया। फिर यीशु
नाव पर बैठ गया और वहाँ से उस भीड़ को शिक्षा देने लगा। 4जब उसने शिक्षा देना समाप्त कर लिया, तो उसके पश्चात उसने शमौन से कहा, "अपनी नाव को
गहरे पानी में ले चल और मछली पकड़ने के लिए अपने जालों को पानी में डाल।" 5शमौन ने उत्तर दिया, "हे स्वामी, हम ने पूरी रातभर कठिन परिश्रम किया
और तब पर भी हम ने कोई भी मछली नहीं पकड़ी। परन्तु मैं फिर से अपने जालों को डालूँगा क्योंकि तूने मुझ से ऐसा करने को कहा है।" 6अतः शमौन और
उसके साथियों ने अपने जालों को डाला और उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ीं कि उनके जाल फटने लगे। 7उन्होंने दूसरी नाव में सवार अपने मछली
पकड़ने वाले भागीदारों को संकेत किया कि आकर उनकी सहायता करें। अतः उन्होंने आकर दोनों नावों को मछलियों से इतना भर लिया कि नावें डूबने लगीं।
8यह देखकर, शमौन पतरस ने यीशु के सम्मुख घुटने टिकाकर कहा, "कृपया मेरे पास से चला जा, क्योंकि हे प्रभु, मैं एक पापी मनुष्य हूँ।" 9{उसने ऐसा इसलिए
कहा} क्योंकि बड़ी संख्या में जो मछलियाँ उन्होंने पकड़ी थीं वह उन पर अचम्भित हुआ। बाकी सब पुरुष जो उसके साथ थे वे भी अचम्भित हुए। 10जब्दी के
दोनों पुत्र, याकूब और यूहन्ना, जो शमौन के भागीदार थे, अत्यन्त विस्मित हुए। परन्तु यीशु ने शमौन से कहा, "भयभीत मत हो! {अब तक तूने मछलियों को
इकट्ठा किया है, परन्तु} अब से मेरे चेले होने के लिए तू लोगों को इकट्ठा किया करेगा।" 11अतः जब वे पुरुष नावों को तट पर ले आए, तो उसके पश्चात उन्होंने
अपने मछली पकड़ने के व्यवसाय को और बाकी सब कुछ को त्याग दिया और यीशु के साथ हो लिए। 12यीशु पास के नगरों में से एक में गया। वहाँ एक व्यक्ति
था जो एक चमड़ी की बीमारी से ढँपा हुआ था। जब उसने यीशु को देखा, तो उसने उसके सम्मुख भूमि पर घुटने टिकाकर उसे दंडवत किया। उसने उससे
याचना की, "हे प्रभु, {कृपा करके मुझे चंगा कर!} मैं जानता हूँ कि यदि तू इच्छुक हो तो तू मुझे चंगा करने में सक्षम है!" 13फिर यीशु ने अपना हाथ बढ़ाकर उस
व्यक्ति को छू लिया। उसने कहा, "मैं तुझे चंगा करने के लिए इच्छुक हूँ, और मैं अभी तुझे चंगा करता हूँ!" तुरन्त ही वह व्यक्ति चंगा हो गया। अब उसे कोढ़ नहीं
रहा।! 14तब यीशु ने उससे कहा, "किसी से भी न कहना कि मैंने तुझे चंगा किया है। सबसे पहले, जाकर स्वयं को किसी याजक को दिखा ताकि वह तेरी जाँच
करे और देखे कि अब तुझे कोढ़ नहीं है। संस्कारिक रूप से फिर से शुद्ध होने के लिए वह बलिदान लेकर आ जिसे चढ़ाने की आज्ञा मूसा ने तुम्हें दी है।" 15परन्तु
बजाए इसके {यीशु ने उस पुरुष को कैसे चंगा किया था इसके विषय में} और अधिक लोगों ने सुन लिया। इसके परिणामस्वरूप, बहुत बड़ी भीड़ इसलिए आई
कि {यीशु को शिक्षा देते हुए} सुने और वह उनको उनके रोगों से चंगा करे। 16परन्तु वह अक्सर उनके पास से दूर निर्जन स्थानों में चला जाता और प्रार्थना करता
था। 17एक दिन जब यीशु शिक्षा दे रहा था, तो फरीसी पंथ में से कुछ पुरुष और यहूदी व्यवस्था के कुछ विशेषज्ञ शिक्षक पास में बैठे हुए थे। वे गलील जिले के

बहुत से गाँवों से और यरूशलेम से और यहूदिया प्रान्त के अन्य नगरों से आए थे। उसी समय पर, प्रभु लोगों को चंगा करने की सामर्थ यीशु को प्रदान कर रहे थे।
18जिस समय यीशु वहाँ पर था, कुछ लोग एक मनुष्य को लेकर आए जो लकवाग्रस्त था। एक बिछौने पर {वे उस मनुष्य को उठाए हुए थे} और उसे उस घर में
ले जाकर यीशु के आगे लिटाने का प्रयास कर रहे थे। 19परन्तु क्योंकि वहाँ पर घर में लोगों की इतनी बड़ी भीड़ थी, कि वे उसे भीतर लेकर जाने में समर्थ नहीं
थे। इसलिए वे {बाहर की सीढ़ियों से} ऊपर समतल छत पर चढ़ गए। {उन्होंने एक छेद बनाने के लिए छत की कुछ खपरैलों को हटा दिया।} फिर उन्होंने उस
मनुष्य को उसके बिछौने पर लेटे हुए ही उस छेद के माध्यम से {भीड़ के} बीच में उतार दिया। वह ठीक यीशु के सामने नीचे उतर गया। 20जब यीशु ने यह जान
लिया कि उन्होंने यह विश्वास किया है कि वह उस मनुष्य को चंगा कर सकता है, तो उसने उससे कहा, “हे मित्र, मैं तेरे पापों को क्षमा करता हूँ!” 21व्यवस्था के
शिक्षक और फरीसी आपस में विचार करने लगे, “ऐसा कहने के द्वारा यह मनुष्य परमेश्वर का तिरस्कार करता है! परमेश्वर के अलावा कोई भी पापों को क्षमा
नहीं कर सकता है!” 22यीशु जानता था कि वे क्या विचार कर रहे थे। इसलिए उसने उनसे कहा, “मैंने जो कहा है उस पर तुम को आपस में प्रश्न नहीं करना
चाहिए! 23यहाँ पर कुछ ऐसा हुआ है जिसके विषय में मैं चाहता हूँ कि तुम ध्यानपूर्वक विचार करो। क्या कहना सरल है, ‘मैं तेरे पापों को क्षमा करता हूँ,’ या,
‘उठ जा और चल-फिर’? {तुम सोचोगे कि यह कहना ‘मैं तेरे पापों को क्षमा करता हूँ’ सरल है क्योंकि इसमें किसी दृश्यमान प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।}
24परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि परमेश्वर ने मुझे, मनुष्य के पुत्र को, पृथ्वी पर लोगों को उनके पापों को क्षमा करने का अधिकार प्रदान किया है। {इसे
प्रदर्शित करने के लिए, मैं इस मनुष्य को उठने के लिए भी कहूँगा।} "फिर उसने उस व्यक्ति से जो लकवाग्रस्त था कहा, " मैं तुझ से कहता हूँ, उठ जा, अपना
बिछौना उठा ले, और घर चला जा! " 25तुरन्त ही {वह मनुष्य चंगा हो गया!} वह उन सब के सामने ही उठ खड़ा हुआ। उसने उस बिछौने को उठाया जिस पर
वह लेटा हुआ था, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ, वह घर चला गया। 26वहाँ उपस्थित सभी लोग स्तब्ध रह गए! उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और {जो
उन्होंने यीशु को करते हुए देखा था उस पर} वे पूर्ण रूप से अचम्भित थे। वे कहते रहे, “हम ने आज अद्भुत बातें देखी हैं!” 27फिर यीशु ने उस स्थान को छोड़
दिया और उसने लेवी नाम के एक मनुष्य को देखा जो {रोमी सरकार के लिए} चुंगी वसूला करता था। वह चौकी पर बैठा हुआ था {जहाँ सरकार को आवश्यक
करों का भुगतान करने के लिए लोग आया करते थे}। यीशु ने उससे कहा, “मेरे साथ आ और मेरा चेला हो जा!” 28अतः लेवी अपने काम को छोड़ कर यीशु के
साथ हो लिया। 29बाद में लेवी ने अपने घर में यीशु {और उसके चेलों} के लिए एक बड़ा भोज तैयार किया। वहाँ पर चुंगी लेने वाले और अन्य लोगों का एक बड़ा
समूह था जो उनके साथ भोजन कर रहा था। 30तब कुछ लोगों ने जो फरीसी पंथ के थे, और उनमें कुछ यहूदी व्यवस्था के सिखाने वाले भी सम्मिलित थे, यीशु
के चेलों से शिकायत की। उन्होंने कहा, “तुम को चुंगी लेने वालों और {अन्य} पापियों के साथ खाना-पीना नहीं चाहिए।” 31तब यीशु ने उनसे कहा, “जो लोग
स्वस्थ हैं उनको वैद्य की आवश्यकता नहीं है। जो लोग बीमार हैं उनको वैद्य की आवश्यकता है। 32उसी प्रकार से, मैं स्वर्ग से उन लोगों को आमंत्रित करने के
लिए नहीं आया हूँ जो समझते हैं कि वे मेरे पास आने के लिए धर्मी हैं। इसके विपरीत, मैं उन लोगों को आमंत्रित करने के लिए आया हूँ जो जानते हैं कि वे पापी
हैं और वे अपने पापी व्यवहार से फिर कर मेरे पास आते हैं।” 33उन यहूदी अगुवों ने यीशु को प्रत्युत्तर दिया, “यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले अक्सर भोजन से
दूर रहते हैं और प्रार्थना करते हैं। फरीसियों के चेले भी ऐसा ही करते हैं। परन्तु तेरे चेले खाते और पीते रहते हैं! वे दूसरों की तरह उपवास क्यों नहीं करते?”
34यीशु ने उत्तर दिया, " कोई भी दूल्हे के मित्रों को उस समय उपवास करने के लिए नहीं कहता है जब शादी का जश्न अभी चल ही रहा हो! 35लेकिन किसी
दिन दूल्हा अपने मित्रों के साथ नहीं रहेगा। तब, उस समय पर, वे भोजन से दूर रहेंगे।” 36फिर यीशु ने समझाने के लिए दूसरे उदाहरण भी दिए कि उसका अर्थ
क्या है। उसने कहा, “लोग कभी भी नए वस्त्र में से कपड़े का एक टुकड़ा फाड़कर उसे पुराने वस्त्र में नहीं जोड़ते हैं कि उसे ठीक करें। यदि उन्होंने ऐसा किया, तो
वे नए वस्त्र को फाड़ने के द्वारा उसे नष्ट कर देंगे, और नए वस्त्र से निकला कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र से मेल नहीं खाएगा। 37और कोई भी नई निचोड़ी हुई
मदिरा को {उसका भण्डारण करने के लिए} पुरानी चमड़े की थैलियों में नहीं भरता। यदि किसी ने ऐसा किया, तो चमड़े की थैलियाँ फट जाएँगी {क्योंकि जब
नई मदिरा उफनेगी और फैलेगी तो उनमें खिंचाव नहीं होगा}। तब वे चमड़े की थैलियाँ बेकार हो जाएँगी, और मदिरा {भी बेकार हो जाएगी क्योंकि वह} बह
जाएगी। 38इसके विपरीत, नई मदिरा को नई चमड़े की थैलियों में भरना चाहिए। 39वे जिन्होंने केवल पुरानी मदिरा को पिया है वे नई मदिरा को नहीं चखना
चाहते, क्योंकि वे सोचते हैं कि, ‘पुरानी मदिरा ही काफी अच्छी है!’”

Chapter 6

1एक सब्त के दिन, जब यीशु और उसके चेले गेहूँ के खेतों में से होकर जा रहे थे, तो उसके चेलों ने कुछ गेहूँ की बालें तोड़ लीं। उन्होंने उनको अपने हाथों से मल
लिया कि गेहूँ को भूसी से अलग करें। फिर उन्होंने गेहूँ को खा लिया। 2कुछ फरीसी {यह देख रहे थे। वे} {उनसे} बोले, “तुम को इस प्रकार का काम नहीं करना
चाहिए! हमारी व्यवस्था हमें सब्त के दिन काम करने से मना करती है!” 3यीशु ने उन फरीसियों को प्रत्युत्तर दिया, “ध्यान दो कि पवित्रशास्त्र उस विषय में क्या
कहता है जो दाऊद ने किया था जब वह और जो पुरुष उसके साथ थे भूखे थे। 4जैसा कि तुम जानते हो, दाऊद ने तम्बू में प्रवेश किया {और कुछ खाना माँगा}।
याजक ने उसे वह रोटी दी जो परमेश्वर के सामने रखी गई थी। दाऊद ने कुछ खाई, और उसने कुछ उन पुरुषों को भी दी जो उसके साथ थे, यद्यपि व्यवस्था
कहती थी कि वे ऐसा नहीं कर सकते थे। केवल याजक ही उस रोटी को खा सकते थे।” 5यीशु ने उनसे यह भी कहा, "मुझ, मनुष्य के पुत्र, के पास सब्त के दिन
{लोगों के लिए क्या करना सही है यह निर्धारित करने का} अधिकार है!" 6एक अन्य सब्त के दिन पर यीशु आराधनालय में गया और {लोगों को} शिक्षा देने
लगा। वहाँ पर एक मनुष्य था जो अपने दाहिने हाथ को हिला नहीं सकता था। 7यहूदी व्यवस्था के कुछ शिक्षक और कुछ फरीसी {वहाँ उपस्थित थे। वे} यीशु
को ध्यानपूर्वक देख रहे थे। वे देखना चाहते थे कि क्या वह उस व्यक्ति को चंगा करेगा या नहीं। यदि उसने किया, तो वे उस पर {सब्त के दिन काम न करने के
विषय में उनकी व्यवस्था की अवहेलना करने का} आरोप लगाते। 8परन्तु जो वे सोच रहे थे वह यीशु जानता था। इसलिए उसने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा,
“आ और यहाँ सब के सामने खड़ा हो जा!” अतः वह व्यक्ति उठ कर वहाँ खड़ा हो गया। 9तब यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। जो
व्यवस्था परमेश्वर ने मूसा को दी है क्या वह सब्त के दिन लोगों का भला करने की आज्ञा देती है, या हानि करने की? क्या वह लोगों को सब्त के दिन किसी
जीवन को बचाने की आज्ञा देती है, या उसका नाश करने की?” 10{किसी ने उसे उत्तर नहीं दिया, इसलिए} उसने चारों ओर उन सब को देखा और फिर उस
व्यक्ति से कहा, “अपने सूखे हाथ को बढ़ा!” उस व्यक्ति ने वैसा ही किया, और उसका हाथ फिर से पूरी तरह से ठीक हो गया! 11परन्तु धार्मिक अगुवे बहुत

क्रोधित हो गए, और वे एक दूसरे से इस विषय में चर्चा करने लगे कि वे यीशु {से छुटकारा पाने} के लिए क्या करें। 12उसी समय के आसपास, यीशु प्रार्थना
करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ पूरी रात उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। 13अगले दिन उसने अपने सारे चेलों को अपने पास बुलाया। उनमें से उसने 12
को चुना और उन्हें प्रेरित बना दिया। 14{उनके नाम ये हैं:} शमौन, जिसका नया नाम यीशु ने पतरस रखा था; पतरस का भाई, अन्द्रियास; याकूब और उसका
भाई, यूहन्ना; फिलिप्पुस; बरतुल्मै; 15मत्ती, {जिसका दूसरा नाम लेवी थी}; थोमा; याकूब नाम का दूसरा व्यक्ति जिसके पिता का नाम हलफई था; शमौन
जेलोतेस; 16यहूदा, जो याकूब नाम के एक अलग व्यक्ति का पुत्र था; और यहूदा इस्करियोती, जिसने बाद में यीशु को धोखा दिया था। 17यीशु अपने चेलों के
साथ पहाड़ पर से उतर आया और एक समतल क्षेत्र में खड़ा हो गया। वहाँ पर उसके चेलों की एक बहुत बड़ी भीड़ थी। वहाँ पर ऐसे लोगों का भी एक बहुत बड़ा
समूह था जो यरूशलेम से और यहूदिया क्षेत्र में स्थित बहुत से अन्य स्थानों से, और सोर और सीदोन नगरों के पास के समुद्रीतट वाले क्षेत्रों से आए थे। 18वे
यीशु को {उन्हें शिक्षा देते हुए} सुनने और उनको उनकी बीमारियों से चंगा कर देने के लिए आए थे। उसने उन लोगों को भी चंगा किया जिनको दुष्टात्माओं ने
परेशान किया हुआ था। 19भीड़ में उपस्थित हर एक जन ने उसे छू लेने का प्रयास किया, क्योंकि वह अपनी सामर्थ से हर एक जन को चंगा कर रहा था। 20फिर
उसने अपने चेलों की ओर देखा और कहा, “यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है जो दीन हो, क्योंकि तुम पर परमेश्वर शासन करता है। 21यह तुम्हारे लिए बहुत
अच्छा है जो अभी भूखे हैं, क्योंकि परमेश्वर तुम्हें वह सब कुछ देगा जिसकी तुम्हें आवश्यकता है। यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है जो अभी शोक कर रहे हैं,
क्योंकि परमेश्वर किसी दिन तुम्हें आनन्द से हँसाएँगे। 22यह बहुत अच्छा है जब दूसरे लोग तुम से द्वेष करते हैं, जब वे तुम को अस्वीकार करते हैं और तुम्हारा
तिरस्कार करते हैं और कहते हैं कि तुम इसलिए बुरे हो क्योंकि तुम मेरे, अर्थात मनुष्य के पुत्र के पीछे चलते हो। 23जब ऐसा घटित हो, तो आनन्दित होना! ऊपर
और नीचे इसलिए कूदना क्योंकि तुम बहुत प्रसन्न हो! ध्यान रखो कि परमेश्वर तुम को स्वर्ग में एक बड़ा पुरस्कार देने जा रहा है! यह मत भूलो कि जो लोग तुम्हारे
साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हैं, उनके पूर्वजों ने {बहुत पहले} परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के साथ ऐसे ही काम किए थे। 24परन्तु जो धनवान हैं तुम्हारे लिए यह
कितना दुःखद है। तुम को वह सारी सुविधा {पहले ही} {तुम्हारे धन से} मिल चुकी है जो तुम को मिलने वाली है। 25तुम्हारे लिए यह कितना दुःखद है जो इस
समय पर स्वयं को भोजन से परिपूर्ण कर सकते हैं। बाद में तुम भूखे ही रह जाओगे। धिक्कार है उन पर जो इस समय पर हँस रहे हैं। बाद में तुम बहुत ही
अप्रसन्न रहोगे। 26तुम्हारे लिए यह कितना दुःखद है कि जब हर एक जन तुम्हारे विषय में भली बातें कहता है। इसी रीति से, उनके पूर्वज भी उन लोगों के बारे में
भली बातें कहा करते थे जो परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता होने का झूठा दावा करते थे। 27परन्तु मैं तुम में से प्रत्येक से यह कहता हूँ जो मेरी बात सुन रहे हैं: अपने
शत्रुओं से प्रेम करो, {केवल अपने मित्रों से ही नहीं}! जो तुम से द्वेष रखते हैं उनके लिए भले काम करो! 28जो लोग तुम को शाप देते हैं, उन्हें आशीष देने के
लिए परमेश्वर से विनती करो! जो तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो! 29यदि कोई जन तुम्हारे एक गाल पर मारे {या ऐसा करके तुम्हारा
तिरस्कार करे}, तो अपना मुँह घुमा लो ताकि वह दूसरे गाल पर भी मार सके। यदि कोई तुम्हारा कोट छीनना चाहता हो, तो उसे तुम्हारी कमीज भी लेने दो।
30उन सब को कुछ न कुछ दो जो तुम से माँगते हैं। यदि कोई तुम्हारी वस्तुएँ ले लेता है, तो उसे उन्हें वापस करने के लिए न बोलना। 31जिस प्रकार से तुम चाहते
हो कि दूसरे तुम्हारे प्रति व्यवहार करें, उसी प्रकार से तुम को भी उनके प्रति व्यवहार करना चाहिए। 32यदि तुम {केवल} उनसे प्रेम करते हो जो तुम से प्रेम करते
हैं, तो ऐसा करने के लिए परमेश्वर से अपेक्षा मत करना कि तुम को पुरस्कार देगा। यहाँ तक कि पापी लोग भी उनसे ही प्रेम करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं।
33परमेश्वर से अपेक्षा मत करना कि तुम को इसलिए पुरस्कार देगा क्योंकि तुम उन लोगों के लिए अच्छे काम करते हो जो तुम्हारे लिए अच्छे काम करते हैं।
अन्ततः, पापी लोग भी ऐसा करते हैं। 34यदि तुम केवल उन्हीं को {धन या सम्पत्ति} उधार देते हो जो उसे तुम को वापस कर देंगे, तो ऐसा करने के लिए परमेश्वर
से अपेक्षा मत करना कि तुम को पुरस्कार देगा। यहाँ तक कि पापी लोग भी उन दूसरे पापियों को उधार देते हैं जो उन्हें सब कुछ वापस कर देंगे। 35बजाए
इसके, अपने शत्रुओं से प्रेम करो! उनके लिए भले काम करो! उन्हें उधार दो, और उनसे कुछ भी वापस भुगतान करने की अपेक्षा न करो! तब परमेश्वर तुम को
बहुत बड़ा पुरस्कार देगा। और तुम परम प्रधान परमेश्वर की सन्तान ठहरोगे, क्योंकि परमेश्वर उन लोगों पर भी दया करता है जो कृतघ्न और दुष्ट हैं। 36इसलिए
तुम को दूसरे लोगों के प्रति वैसे ही दयापूर्ण रीति से व्यवहार करना चाहिए, जिस प्रकार से परमेश्वर, तुम्हारा पिता, लोगों के प्रति दयापूर्ण रीति से व्यवहार करता
है। 37{अन्य लोगों की} कड़ी आलोचना न करो। तब परमेश्वर भी तुम्हारी कड़ी आलोचना नहीं करेगा। {अन्य लोगों पर} दोष न लगाओ। तब परमेश्वर भी तुम पर
दोष नहीं लगाएगा। {जो अनुचित काम दूसरों ने तुम्हारे साथ किए हैं उनके लिए उनको} क्षमा करो। तब परमेश्वर भी तुम को क्षमा करेगा। 38{दूसरों को} दिया
करो। तब परमेश्वर भी तुम को देगा। यह कुछ ऐसा होगा जैसे कि तुम्हारे पास जो बरतन है उसमें जितना सम्भव हो उतना अनाज वह तुम को देने का प्रयास कर
रहा है। वह अनाज को नीचे दबाएगा। वह इसे एक साथ हिलाएगा। वह उस बरतन को तब तक भरता रहेगा जब तक कि वह उमड़ने न लग जाए। इसलिए जब
तुम दूसरों को देते हो, तो वह ऐसा होना चाहिए जैसे कि तुम एक बड़े करछे का उपयोग कर रहे हो, क्योंकि परमेश्वर भी तुम को देने के लिए उसी आकार के
करछे का उपयोग करेगा।” 39उसने अपने चेलों को यह उदाहरण भी दिया: “एक अंधे व्यक्ति को {सड़क पर} दूसरे अंधे व्यक्ति की अगुवाई करने का प्रयास
नहीं करना चाहिए। यदि उसने की, तो वे दोनों ही {सड़क के किनारे के} गड्ढे में गिर पड़ेंगे! 40कोई चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता। परन्तु एक बार जब गुरु ने
उसे प्रशिक्षण देना समाप्त कर दिया, तो वह अपने गुरु के समान हो जाएगा। 41{तुम में से किसी को भी दूसरे व्यक्ति की छोटी-छोटी त्रुटियों के विषय में चिंतित
नहीं होना चाहिए। तुम को अपनी स्वयं की गम्भीर त्रुटियों के विषय में चिंतित होना चाहिए।} अन्यथा, यह उस व्यक्ति की आँख में पड़े एक तिनके पर ध्यान देने
जैसा होगा, जबकि अपनी स्वयं की आँख में पड़े लकड़ी के एक बड़े लट्ठे पर ध्यान नहीं देते हो। 42तुम्हें किसी दूसरे विश्वासी से यह नहीं कहना चाहिए, ‘हे मित्र,
आओ मैं तुम्हारी त्रुटियों को सुधारने में तुम्हारी सहायता करूँ’, जबकि तुम ने अभी तक अपनी त्रुटियों का समाधान नहीं किया है। यदि तुम ऐसा करते हो, तो
तुम एक पाखण्डी हो! तुम को पहले {स्वयं के अपने पापों को करना बंद कर देना चाहिए। यह ऐसा होगा जैसे} अपनी ही स्वयं की आँख से एक बड़ा लट्ठा
निकाल देना। तब, इसके परिणामस्वरूप, तुम्हारे पास वह आत्मिक अंतर्दृष्टि होगी जिसकी तुम को दूसरों की आँखों की {छोटी-छोटी त्रुटियाँ जो ऐसी हैं जो}
छोटे-छोटे तिनकों से उनको छुटकारा पाने में सहायता करने के लिए आवश्यकता है। 43हर एक व्यक्ति जानता है कि स्वस्थ पेड़ बुरा फल उत्पन्न नहीं करते हैं
और अस्वस्थ पेड़ अच्छा फल उत्पन्न नहीं करते हैं। 44उन कामों के द्वारा जो वे करते हैं तुम यह बता सकते हो कि कोई व्यक्ति भीतर से कैसा है। {तब तुम
जानते हो कि उनसे क्या अपेक्षा करनी है। तुम किसी ऐसे व्यक्ति से दयाभाव की या अच्छी सलाह की खोज नहीं करोगे जो बुरे काम करता है।} यह एक
कंटीली झाड़ी पर अंजीर की खोज करने या एक झड़बेरी पर अंगूर की खोज करने के समान होगा। 45भले लोग इसलिए भले काम करते हैं क्योंकि वे भली बातें
सोचते हैं। दुष्ट लोग इसलिए दुष्ट काम करते हैं क्योंकि वे दुष्ट बातें सोचते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग उसके आधार पर बोलते और व्यवहार करते हैं जिस
विषय में वे सोच रहे होते हैं।” 46{यीशु ने लोगों से कहा,} “जो मैं तुम को करने के लिए कहता हूँ जब तुम उसका आज्ञापालन नहीं करते हो तो तुम मुझे ‘प्रभु’

क्यों कहते हो? 47मैं तुम को बताता हूँ कि जो लोग मेरे पास आते हैं, मेरी शिक्षाओं को सुनते हैं, और उनका पालन करते हैं, वे किसके समान हैं। 48ऐसे लोग
उस व्यक्ति के समान हैं जिसने अपना घर बनाने की तैयारी में भूमि में गहरी खुदाई की। उसने ठोस चट्टान पर (घर के लिए) नींव बनाना सुनिश्चित किया। तब
वहां बाढ़ आई। पानी की धार उस घर पर लगी। परन्तु वह उसे नाश नहीं कर पाई, क्योंकि उस व्यक्ति ने उस घर को ठोस चट्टान पर बनाया था। 49परन्तु कुछ
लोग जो मेरी शिक्षाओं को सुन कर उनका पालन नहीं करते हैं। वे उस व्यक्ति के समान हैं जो सर्वप्रथम नींव की खुदाई किए बिना भूमि के ऊपर घर को बनाता
है। जब बाढ़ का पानी आया, तो वह तुरन्त ही गिर पड़ा। पानी ने उस घर को पूर्ण रूप से नाश कर दिया।"

Chapter 7

1जब यीशु ने इन सब बातों को उन लोगों से कहना समाप्त कर लिया जो सुन रहे थे, उसके पश्चात वह कफरनहूम नगर को चला गया। 2उस नगर में रोमी सेना
में नियुक्त एक सूबेदार था जिसका एक दास था जो उसे प्रिय था। वह दास इतना बीमार था कि वह बस मरने पर ही था। 3जब उस सूबेदार ने यीशु के विषय में
सुना, तो उसने कुछ यहूदी पुरनियों को यीशु के पास भेजा कि आकर उसके दास को चंगा करने के लिए उससे विनती करें। 4जब वे यीशु के पास पहुँचे, तो
उन्होंने आग्रहपूर्वक {सूबेदार के दास की सहायता करने के लिए} यीशु से विनती की। उन्होंने कहा, "वह इस योग्य है कि तू उसके लिए ऐसा करे, 5क्योंकि वह
हमारे लोगों से प्रेम करता है और उसने हमारे लिए हमारे आराधनालय का निर्माण भी करवाया है।" 6अतः यीशु उनके साथ {उस अधिकारी के घर} चला गया।
जब वह लगभग वहाँ पहुँच ही गया था, तब उस अधिकारी ने कुछ मित्रों को यीशु के पास यह सन्देश देने के लिए भेजा: "हे प्रभु, {यहाँ आने के लिए} परेशान
मत हो, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुझे अपने घर में बुलाऊँ। 7इसी कारण से मुझे नहीं लगा कि मैं व्यक्तिगत रूप से तेरे पास आने के योग्य भी हूँ। मैं
जानता हूँ कि तू मेरे प्रिय दास को केवल बोलने {आदेश देने} के द्वारा भी चंगा कर सकता है। 8{मैं जानता हूँ कि तू ऐसा कर सकता है} क्योंकि मैं स्वयं एक ऐसा
मनुष्य हूँ जिसे अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों का पालन करना पड़ता है। मेरे पास भी सैनिक हैं जिनको मेरे आदेशों का पालन करना पड़ता है। जब मैं
उनमें से एक से कहता हूँ कि, 'चला जा!' तो वह जाता है। जब मैं किसी दूसरे से कहता हूँ कि, 'आ जा!' तो वह आ जाता है। जब मैं अपने दास से कहता हूँ कि,
'यह कर!' तो वह उसे करता है।" 9उस अधिकारी ने जो कहा था जब यीशु ने वह सुना, तो वह उस पर अचम्भित हुआ। तब जो भीड़ उसके साथ थी उसने उनकी
ओर घूम कर कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, कि मैं किसी ऐसे इस्राएली से नहीं मिला जो मुझ पर इतना भरोसा करता हो जितना कि यह अन्यजाति व्यक्ति करता
है!" 10जो मित्र सूबेदार के पास से आए थे जब वे उसके घर लौटे, तो उन्होंने पाया कि वह दास फिर से पूर्णरूप से स्वस्थ है। 11इसके तुरन्त बाद यीशु ने नाईन
नगर की यात्रा की। उसके चेले और एक बड़ी भीड़ उसके साथ गई। 12जब यीशु नगर के द्वार के पास पहुँचा, तो उसने नगर में से एक बड़ी भीड़ को बाहर
निकलते हुए देखा। एक व्यक्ति की अभी-अभी मृत्यु हुई थी, और वे उसे उठाकर गाड़ने के लिए बाहर ले जा रहे थे। भीड़ में उसकी माता भी थी। वह एक
विधवा थी, और वह उसका एकलौता पुत्र था। {जब वह जीवित था तो वही उसकी देखभाल करता था।} 13जब यीशु ने उसे देखा, तो उसने उस पर तरस
खाकर और उससे कहा, "मत रो!" 14तब वह {उनके पास} आया और उस अर्थी को छुआ {जिस पर वह शव रखा हुआ था}। जो पुरुष उसे उठाए हुए थे वे ठहर
कर खड़े हो गए। उसने कहा, "हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ जा!" 15तब वह व्यक्ति जो मर गया था उठ बैठा और बोलने लगा, और यीशु उसे उसकी माँ के
पास ले गया। 16वहाँ उपस्थित सब लोग अवाक रह गए। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और {एक दूसरे से} कहा, "हमारे मध्य में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता आया
है!" और "परमेश्वर अपने लोगों की चिन्ता करने के लिए आया है!" 17तब {जो} यीशु {ने किया था} के विषय में यह समाचार सम्पूर्ण यहूदिया क्षेत्र में और
आसपास के अन्य सब इलाकों में फैल गया। 18यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों ने इन सब बातों के विषय में उसे बताया। इसलिए यूहन्ना ने अपने दो चेलों को
बुलाया और उनको प्रभु के पास जाने के लिए कहा कि उससे पूछें: "क्या तू वही है जिसके लिए परमेश्वर ने वादा किया था कि वह आएगा, या हम किसी अन्य
की अपेक्षा करें?" 19-20जब वे दोनों पुरुष यीशु के पास आए, तो उन्होंने उसे बताया, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तुझ से पूछने के लिए भेजा है कि, 'क्या
तू वही है जिसके लिए परमेश्वर ने वादा किया था कि वह आएगा? या हम किसी अन्य की प्रतीक्षा करें?'" 21उसी समय पर यीशु बहुत से लोगों को उनके रोगों
और गम्भीर बीमारियों से चंगा कर रहा था, और वह उनको दुष्टात्माओं से छुटकारा प्रदान कर रहा था। उसने बहुत से अंधे लोगों को भी फिर से देखने की क्षमता
प्रदान की। 22अतः उसने उन दोनों पुरुषों को उत्तर दिया, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना है और वापस जाकर यूहन्ना को सूचित करो। जो लोग अंधे थे वे अब
देख पा रहे हैं। जो लोग लंगड़े थे वे अब चल-फिर रहे हैं। जिन लोगों को चमड़ी की बीमारियाँ थीं वह अब उनमें नहीं रहीं। जो लोग बहरे थे वे अब सुन पा रहे हैं।
जो लोग मर गए थे वे जीवित हो गए हैं। मैं कंगालों पर शुभ सन्देश की घोषणा कर रहा हूँ।" 23{और उससे यह भी कहो,} "परमेश्वर हर उस जन को आशीष
देगा जो {वह देखता है जो मैं करता हूँ और वह सुनता है जो मैं सिखाता हूँ और} मुझ पर विश्वास करना जारी रखता है।" 24जिनको यूहन्ना ने भेजा था जब वे
पुरुष चले गए, तो यीशु लोगों की भीड़ से यूहन्ना के विषय में बात करने लगा। उसने कहा, "तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए किसी पौधे
के पतले डंठल को? 25परन्तु तुम बाहर क्या देखने गए थे? क्या मनोहर वस्त्र पहने हुए किसी मनुष्य को? सुनो, वे जो उत्कृष्ट वस्त्र धारण करते हैं और जिनके
पास सब कुछ उत्तम है वे राजाओं के महलों में रहते हैं। 26फिर तुम वहाँ बाहर क्या देखने गए थे? किसी भविष्यद्वक्ता को? हाँ, {यूहन्ना वही है}! परन्तु मैं तुम से
कहता हूँ कि यूहन्ना किसी साधारण भविष्यद्वक्ता से भी अधिक महत्वपूर्ण है। 27यह वही है जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने बहुत पहले यह लिखा था, 'देख, मैं
अपने सन्देशवाहक को तेरे आगे-आगे भेजता हूँ। वह तेरे आगमन के लिए लोगों को तैयार करेगा।' 28मैं तुम से कहता हूँ कि जितने लोग अब तक जीवित रहे,
उनमें से यूहन्ना से अधिक बढ़कर कोई भी नहीं है। तौभी सबसे तुच्छ लोग जिनके जीवन में परमेश्वर शासन करता है वे यूहन्ना से अधिक बढ़कर हैं।" 29जब उन
सभी लोगों ने जिन्हें यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया था, जो यीशु ने कहा था उसे सुना—चुंगी लेने वालों समेत—तो वे सहमत हुए कि परमेश्वर ने {यूहन्ना को भेजकर}
सही काम किया है। 30परन्तु फरीसियों और यहूदी व्यवस्था के विशेषज्ञों ने, जिन्हें यूहन्ना ने बपतिस्मा नहीं दिया था, उनके लिए परमेश्वर की इच्छा को अस्वीकार
कर दिया। 31{तब यीशु ने यह भी कहा, "मैं तुम को बताऊँगा कि} इस समयकाल में रहने वाले तुम लोग किसके समान हो। 32तुम खुले मैदान में खेल खेलने
वाले बच्चों के समान हो। वे यह कहकर एक दूसरे को पुकारते हैं, 'हम ने तुम्हारे लिए बाँसुरी पर आनन्द का संगीत बजाया, परन्तु तुम नाचे नहीं! फिर हम ने
तुम्हारे लिए अंतिम संस्कार के दुःखद गीत गाए, परन्तु तुम रोए नहीं!' 33इसी प्रकार से, जब यूहन्ना तुम्हारे पास आया और सामान्य भोजन नहीं खाया या
दाखरस पिया, तो तुम ने {उसे अस्वीकार कर दिया और} कहा, 'उस पर एक दुष्टात्मा का नियंत्रण है!' 34परन्तु जब मनुष्य का पुत्र तुम्हारे पास आया और उसने

{साधारण भोजन} खाया और {दूसरों के समान ही दाखरस को} पिया, तो तुम ने {उसे अस्वीकार कर दिया और} कहा, 'देखो! यह मनुष्य बहुत अधिक भोजन
खाता है और बहुत अधिक दाखरस पीता है, और वह चुंगी लेने वालों और अन्य पापियों के साथ मिलता-जुलता है!' 35लेकिन जो लोग बुद्धिमान हैं वे स्वयं
पहचानते हैं कि यूहन्ना और मैं जो करते हैं वह भी बुद्धिमानी है।" 36एक दिन शमौन नाम के किसी एक फरीसी ने यीशु को अपने साथ भोजन करने के लिए
आमंत्रित किया। अतः यीशु उस व्यक्ति के घर में गया और भोजन करने के लिए मेज़ पर बैठ गया। 37वहां उस नगर में एक स्त्री भी थी जिसकी प्रतिष्ठा बुरी थी।
जब उसने सुना कि यीशु उस फरीसी के घर में भोजन कर रहा है, तो एक पत्थर का पात्र जिसमें इत्र भरा था लेकर {वह वहाँ गई}। 38{जब यीशु भोजन करने के
लिए बैठा हुआ था, तो वह स्त्री उसके पीछे उसके पाँवों के पास खड़ी हो गई।} वह रो रही थी, और उसके आँसू यीशु के पाँवों पर गिर गए। वह लगातार अपने
बालों से उसके पाँवों को पोंछती रही। वह उन्हें चूमती रही और इत्र से उनका अभिषेक करती रही। 39जब उस फरीसी ने जिसने यीशु को आमंत्रित किया था यह
देखा {जो वह स्त्री कर रही थी}, तो उसने सोचा, "यदि यह मनुष्य वास्तव में कोई भविष्यद्वक्ता होता, तो वह जानता होता कि यह स्त्री कौन है जो उसे छू रही है।
वह जानता होता कि वह किस प्रकार की स्त्री है, क्योंकि वह तो एक पापिनी है।" 40प्रत्युत्तर में, यीशु ने उस से कहा, "हे शमौन, एक बात है जो मैं तुझ से कहना
चाहता हूँ।" उसने उत्तर दिया, " हे गुरु, वह क्या है?" 41{यीशु ने उसे यह कहानी बताई:} "दो लोगों ने किसी मनुष्य से धन उधार लिया जिसका धन ब्याज पर
देने का व्यवसाय था। उन लोगों में से एक पर उसके 500 चांदी के सिक्के उधार थे। दूसरे वाले पर उसके 50 चांदी के सिक्के उधार थे। 42उन दोनों में से कोई
भी अपना लिया हुआ उधार चुकाने में सक्षम नहीं था, इसलिए उस मनुष्य ने बहुत दयालुता से कहा कि उन दोनों को कुछ भी वापस नहीं करना है। इसलिए, उन
दोनों पुरुषों में से कौन उस मनुष्य से अधिक प्रेम करेगा?" 43शमौन ने उत्तर दिया, "मैं मानता हूँ कि जिसने उससे बड़ी रकम उधार ली थी वह उससे अधिक प्रेम
करेगा।" यीशु ने उससे कहा, "तू सही है।" 44तब उसने उस स्त्री की ओर घूम कर शमौन से कहा, "जो इस स्त्री ने किया है उसके विषय में विचार करो! जब मैंने
तेरे घर में प्रवेश किया, {तो तूने वह नहीं किया जो मेजबान सामान्य रूप से पर अपने मेहमानों का स्वागत करने के लिए करते हैं।} तूने मुझे मेरे पाँवों को धोने के
लिए थोडा-सा पानी तक नहीं दिया। परन्तु इस स्त्री ने अपने आँसुओं से मेरे पाँवों को धोया और अपने बालों से उनको पोंछा! 45तूने चुम्बन से मुझे नमस्कार नहीं
किया। परन्तु जिस क्षण से मैं भीतर आया हूँ, उसने मेरे पाँवों को चूमना बंद नहीं किया! 46तूने जैतून के तेल से मेरे सिर का अभिषेक नहीं किया, परन्तु उसने
सुगन्धित इत्र से मेरे पाँवों का अभिषेक किया है। 47इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ कि परमेश्वर ने उसके बहुत से पाप क्षमा कर दिए हैं, और इसी कारण से वह मुझ
से बहुत प्रेम करती है। परन्तु एक व्यक्ति जो सोचता है कि परमेश्वर को केवल कुछ पापों के लिए उसे क्षमा करना पड़ा है, तो वह मुझ से केवल थोड़ा ही प्रेम
करेगा।" 48तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, "मैंने तेरे पापों को क्षमा कर दिया है।" 49तब जो उसके साथ भोजन कर रहे थे, वे स्वयं आपस में कहने लगे, "यह
मनुष्य कौन है, जो कहता है कि वह पापों को भी क्षमा कर सकता है?" 50परन्तु यीशु ने उस स्त्री से कहा, "क्योंकि तूने मुझ पर विश्वास किया है, इसलिये
परमेश्वर ने तुझे बचाया है। जब तू जाए तो परमेश्वर तुझे शान्ति प्रदान करे!"

Chapter 8

1इसके पश्चात, यीशु और उसके बारह चेलों ने आसपास के विभिन्न नगरों और गाँवों में होकर यात्रा की। जब वे गए, तो यीशु ने लोगों पर प्रचार किया, और
उनको यह शुभ सन्देश बताया कि उनके जीवनों पर शासन करने के लिए वे परमेश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। 2{उनके साथ यात्रा करती हुईं} कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी
थीं जिनको उसने दुष्टात्माओं से छुटकारा दिया था और बीमारियों से चंगा किया था। इनमें मरियम भी सम्मिलित थी जो मगदला गाँव की रहने वाली थी। यीशु ने
सात दुष्टात्माओं को उसमें से निकल जाने के लिए विवश किया था। 3{इन्हीं में से एक अन्य स्त्री} योअन्ना थी। वह खुज़ा की पत्नी थी, जो राजा हेरोदेस का एक
भण्डारी था। सूसन्नाह और बहुत सी अन्य भी {इन्हीं स्त्रियों में सम्मिलित थीं}। वे यीशु और उसके चेलों का सहयोग करने के लिए अपने स्वयं के धन का उपयोग
कर रही थीं। 4एक दिन एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। यीशु को देखने के लिए लोग बहुत से अलग-अलग नगरों से यात्रा कर रहे थे। उसने उनको यह
कहानी बताई: 5"एक किसान कुछ गेहूँ के बीजों को बोने के लिए निकला। जब वह उनको मिट्टी पर छितरा रहा था, तो कुछ बीज कठोर मार्ग पर गिर गए। उन
बीजों पर लोग चढ़ गए, और चिड़ियों ने उनको खा लिया। 6कुछ बीज पत्थरों {की एक परत के ऊपर की उथली मिट्टी} पर गिरे। जब वे बीज बढ़े, तो पौधे
इसलिए सूख गए क्योंकि उनकी जड़ें पत्थरों को पार करके नमी तक नहीं पहुँच पाईं। 7कुछ बीज ऐसी भूमि पर गिरे जहाँ कंटीले पौधों ने अपने बीजों को छोड़ा
हुआ था। वे नए कंटीले पौधे भी उन नन्हे गेहूँ के पौधों के साथ-साथ बढ़े। उन {बलवंत} कंटीले पौधों ने गेहूँ के पौधों को घेर लिया, इस कारण से गेहूँ सही से बढ़
नहीं पाया। 8परन्तु कुछ गेहूँ के बीज उपजाऊ मिट्टी पर गिरे। वे इतने अच्छे से बढ़े कि उन्होंने एक ऐसी फसल उत्पन्न की जिसमें सौ गुना अधिक बीज थे।" इन
बातों को कहने के पश्चात, यीशु ने भीड़ को पुकार कर कहा, "जो तुम ने मुझे अभी कहते हुए सुना है उसके विषय में तुम को बड़े ध्यान से विचार करना चाहिए!"
9फिर यीशु के चेलों ने उससे पूछा, "उस कहानी का क्या अर्थ है?" 10और उसने कहा, "परमेश्वर ने तुम को उस विषय में छिपी हुई बातों को जानने का सौभाग्य
प्रदान किया है कि राजा के रूप में परमेश्वर किस प्रकार से शासन करेगा। परन्तु बाकी सब के लिए मैं केवल दृष्टान्तों में {बोलता हूँ}, ताकि, 'यद्यपि वे देखते हैं,
तौभी वे न समझें, और यद्यपि वे सुनते हैं, तौभी वे न बूझें।' 11अब, उस कहानी का अर्थ यह है: वे बीज उन बातों को दर्शाते हैं जो परमेश्वर लोगों को समझाना
चाहता है। 12जो बीज मार्ग पर गिरे {यह दर्शाता है कि क्या होता है जब} परमेश्वर की ओर से आए सन्देश को लोग केवल सतही रूप से समझते हैं। इससे
शैतान के लिए यह सरल हो जाता है कि वह आये और उस सन्देश को उनके मनों से निकाल ले जाए। इसके परिणामस्वरूप, वे उस पर विश्वास नहीं करते, और
इसलिए परमेश्वर उन्हें नहीं बचाता। 13वह बीज जो पत्थर वाली भूमि पर गिरे {यह दर्शाता है कि क्या होता है जब} परमेश्वर की ओर से आए सन्देश को लोग
सुनकर आनन्द के साथ ग्रहण तो कर लेते हैं, परन्तु वे स्वयं को गम्भीरतापूर्वक समर्पित नहीं करते हैं। वे केवल थोड़े समय के लिए विश्वास करते हैं। जैसे ही उन
पर कठिन समय आता है, वे परमेश्वर पर भरोसा करना बन्द कर देते हैं। 14वह बीज जो कंटीले पौधों के मध्य में गिरे {यह दर्शाता है कि उन कुछ अन्य लोगों के
साथ क्या होता है} जो परमेश्वर की ओर से आए सन्देश को सुनते हैं। जब वे अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं, तो वे चिन्ताओं को, धन को, और इस जीवन के सुखों
को उनके सम्पूर्ण ध्यान पर कब्जा करने की अनुमति दे देते हैं। जिसके परिणामस्वरूप, वे आत्मिक रूप से परिपक्व नहीं होते हैं। 15परन्तु वह बीज जो उपजाऊ
भूमि पर गिरे {यह दर्शाता है कि क्या होता है जब} परमेश्वर के विषय में सन्देश को लोग सुनते हैं और अत्यन्त निष्ठा से उसे ग्रहण करते हैं। वे एक दृढ़ समर्पण
को करते हैं और क्योंकि वे उस समर्पण का पालन करते हैं इसलिए वे आत्मिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं। 16इस विषय में सोचो। जब लोग कोई दीया जलाते
हैं, तो वे उसे टोकरी से नहीं ढाँप देते हैं। वे उसे खाट के नीचे नहीं रख देते हैं। बजाए इसके, वे उसे दीवट पर रखते हैं। इस प्रकार से हर एक जन जो कमरे में

प्रवेश करते हुए उसके उजियाले से देख सकता है। 17यह प्रदर्शित करता है कि किसी दिन हर एक जन वह सब कुछ देखने में सक्षम होगा जो अभी छिपा हुआ
है। और किसी दिन हर एक जन वह सब कुछ खुले में देखने पाएगा जो अभी गुप्त में है। 18इसलिए सुनिश्चित करो कि {जो मैं तुम को बताता हूँ} उसे तुम
ध्यानपूर्वक सुन रहे हो, क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के सत्य पर विश्वास करता है, तो परमेश्वर उसे और भी अधिक समझने में सक्षम करेगा। परन्तु यदि कोई
परमेश्वर के सत्य पर विश्वास नहीं करता है, तो परमेश्वर उसे उन {छोटी-छोटी} बातों को भी नहीं समझने देगा जिनके लिए उसे लगता है कि वह समझ गया है।”
19एक दिन यीशु की माता और उसके भाई उससे मिलने के लिए आए, परन्तु वे उसके निकट नहीं जा पाए क्योंकि {जिस घर में वह था उसके आसपास} वहाँ
{बहुत} {बड़ी} भीड़ थी। 20तब लोगों ने उससे कहा, “तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए हैं, तुझ से मिलना चाहते हैं।” 21परन्तु उसने उनको प्रत्युत्तर दिया,
“जो लोग परमेश्वर की ओर से आए हुए सन्देश को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं, वे ही मेरी माता और मेरे भाइयों के समान मुझे प्रिय हैं।” 22किसी अन्य
दिन पर यीशु अपने चेलों के साथ एक नाव पर चढ़ गया। उसने उनसे कहा, “मैं चाहता हूँ कि हम झील को पार करके दूसरी ओर जाएँ।” अतः उन्होंने झील के
पार जाने के लिए जलयात्रा को आरम्भ किया। 23परन्तु जब वे जलयात्रा कर रहे थे, तो यीशु को नींद आ गई। उसके पश्चात झील में एक प्रचण्ड आँधी उठी।
शीघ्र ही वह नाव पानी से भर गई, और वे लोग जोखिम में थे। 24अतः यीशु के चेले उसे जगाने के लिए उसके पास पहुँचे। उन्होंने उससे कहा, “हे स्वामी! हे
स्वामी! हम सब के सब मरने पर हैं!” वह जाग उठा और उसने हवा को और हिंसक लहरों को डाँटा। हवा बहना बन्द हो गई, लहरें नाव से टकराना बन्द हो गईं
और सब कुछ शान्त हो गया। 25तब उसने उनसे कहा, “तुम लोगों ने तो ऐसे व्यवहार किया जैसे कि तुम्हारे पास विश्वास ही नहीं है!” {जो अभी-अभी हुआ था
उसके कारण} चेले शंकित और विस्मित हो गए थे। वे एक दूसरे से पूछते रहे, “यीशु कौन हो सकता है? यहाँ तक कि वह हवाओं को और लहरों को भी नियंत्रित
करने में सक्षम है, और वे उसकी आज्ञा मानते हैं।” 26यीशु और उसके चेलों ने जलयात्रा को जारी रखा और वे उस क्षेत्र में आए जहाँ गिरासेनी लोग रहते थे। यह
गलील जिले से झील के विपरीत दिशा पर स्थित था। 27जब यीशु नाव से उतरकर भूमि पर आया, तो उस क्षेत्र के नगर का कोई एक मनुष्य उससे मिला। इस
मनुष्य में दुष्टात्माएँ थीं। बहुत लम्बे समय से इस मनुष्य ने कपड़े नहीं पहने थे और वह घर में नहीं रहता था। बजाए इसके, वह कब्रों में रहता था। 28जब उस
मनुष्य ने यीशु को देखा, तो वह चिल्लाकर उसके सामने मुँह के बल लेट गया। वह चीखकर बोला, “हे यीशु, परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र, तू मुझ से क्या चाहता
है? मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दे!” 29{उस मनुष्य ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि} यीशु ने अभी-अभी उस दुष्टात्मा को उसमें से बाहर निकलने की
आज्ञा दी थी। अतीत में, लोग उसे जंजीरों और बेड़ियों से बाँधकर उस पर कड़ा पहरा रखते थे। फिर भी, कई बार दुष्टात्मा अचानक उसे बलपूर्वक पकड़ लिया
करता था। तब वह मनुष्य बंधनों को तोड़कर स्वतंत्र हो जाता, और वह दुष्टात्मा उसे जंगली स्थानों में भेज दिया करता था। 30तब यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम
क्या है?" उस दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, "{मेरा नाम है} सेना।" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि कई दुष्टात्माओं ने उस मनुष्य में प्रवेश किया हुआ था। 31वे
दुष्टात्माएँ यीशु से विनती करती रहीं कि वह उन्हें उस गहरे गड्ढे में जाने की आज्ञा न दे जहाँ परमेश्वर दुष्टात्माओं को दण्ड देता है। 32वहाँ पास की पहाड़ी पर
सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। दुष्टात्माओं ने यीशु से विनती की कि वह उन्हें सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति दे, और उसने उन्हें अनुमति दे दी। 33तब
दुष्टात्माओं ने उस मनुष्य को छोड़ दिया और सूअरों में प्रवेश कर गईं, और सूअरों का वह झुण्ड खड़े किनारे पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब गया।
34जो घटित हुआ था जब वह उन लोगों ने देखा जो सूअरों की देखरेख कर रहे थे, तो वे भाग खड़े हुए! उन्होंने अपने आसपास रहने वाले सब लोगों को जो कुछ
उन्होंने देखा था उसकी सूचना दी। 35तब जो घटित हुआ था उसे देखने के लिए लोग निकल कर आए। जब वे वहाँ पहुँचे जहाँ यीशु था, तो उन्होंने उस मनुष्य
को यीशु के पाँवों के पास बैठे हुए देखा कि जिसमें से दुष्टात्माएँ निकल गई थीं। उन्होंने देखा कि उसने कपड़े पहने हुए थे और उसका मन फिर से सामान्य हो
गया था। {उन्होंने जान लिया कि यीशु कितना सामर्थी है,} और वे भयभीत हो गए। 36जो घटित हुआ था जिन्होंने वह देखा था, उन्होंने अभी-अभी पहुँचे लोगों
को बताया कि कैसे यीशु ने उस मनुष्य को बचाया था जो दुष्टात्माओं के नियंत्रण में था। 37तब जहाँ गिरासेनी रहते थे, उस स्थान के बहुत से लोगों ने यीशु को
उनका क्षेत्र छोड़कर चले जाने के लिए कहा, क्योंकि वे बहुत भयभीत हो गए थे। इसलिए यीशु और उसके चेले झील के उस पार जाने के लिए नाव पर चढ़ गए।
38उनके चले जाने से पहले, जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ निकली थीं, उसने यीशु से यह कहकर विनती की, “कृपया मुझे तेरे साथ हो लेने दे!” परन्तु बजाए इसके,
यीशु ने उसे यह कहकर विदा कर दिया, 39“नहीं, अपने घर को वापस जा और {हर एक जन को} बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कितना कुछ किया है!” तब वह
व्यक्ति चला गया और सम्पूर्ण नगर में हर जगह पर लोगों को बता दिया कि यीशु ने उसके लिए कितना कुछ किया है। 40और जब यीशु और उसके चेले झील के
पार कफरनहूम को वापस लौटे, तो लोगों की भीड़ ने उनका स्वागत किया। वे सभी वहाँ पर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। 41उसी समय याईर नाम का एक व्यक्ति,
जो वहाँ के आराधनालय के प्रधानों में से एक था, यीशु के निकट आया, और वह उसके सामने मुँह के बल लेट गया। उसने यीशु से अपने घर आने की याचना
की। 42उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसकी एक इकलौती बेटी थी, जो लगभग 12 वर्ष की आयु की थी, और वह मर रही थी। {वह चाहता था कि यीशु
उसे चंगा करे।} अब जब यीशु {उसके साथ} गया, तो बहुत से लोग उसके चारों ओर भीड़ लगा रहे थे। 43उस समय वहां पर भीड़ में एक स्त्री थी जो 12 वर्ष से
निरन्तर लहू बहने वाली बीमारी से पीड़ित थी। उसने अपना सारा धन उसकी सहायता करने के लिए वैद्यों को भुगतान करने में खर्च कर दिया था, परन्तु उनमें से
कोई भी उसे चंगा करने में सक्षम नहीं था। 44वह यीशु के पीछे-पीछे आई और उसके परिधान के सिरे को छू लिया। एक बार में ही उसका लहू बहना बन्द हो
गया। 45यीशु ने कहा, “किसने मुझे छुआ?” {यीशु के आस-पास के} हर एक जन ने कहा कि उन्होंने उसे नहीं छुआ है। पतरस ने कहा, “हे स्वामी, यहाँ बहुत से
लोग हैं जिन्होंने तेरे चारों ओर भीड़ लगाई हुई है और तुझ पर दबाव डाल रहे हैं। {इसलिए उनमें से किसी ने तुझे छू लिया होगा!}” 46परन्तु यीशु ने कहा, “मैं
जानता हूँ कि किसी ने मुझे {सोच-समझकर} छुआ है, क्योंकि मुझ में से {उस व्यक्ति को चंगा करने के लिए} सामर्थ निकली है।” 47तब उस स्त्री ने यह जान
लिया कि वह छिप नहीं सकती है। इसलिए वह काँपती हुई यीशु के पास आई और {सम्मानपूर्वक} उसके सामने भूमि पर मुँह के बल लेट गई। जब अन्य लोग
सुन रहे थे, तो उसने बताया कि उसने यीशु को क्यों छुआ था और कैसे वह तुरन्त ही चंगी हो गई। 48और यीशु ने उससे कहा, “हे प्रिय स्त्री, क्योंकि तूने विश्वास
किया था {कि मैं तुझे चंगा कर सकता हूँ}, इसलिए अब तू ठीक हो गई है। अब अपने मार्ग पर चली जा, और परमेश्वर की शान्ति तुझ पर बनी रहे।” 49जबकि
यीशु {उस स्त्री से} अब तक बात कर ही रहा था, तो याईर के घर से एक पुरुष आया और याईर से बोला, “तेरी बेटी मर गई है। इसलिए गुरु का अधिक समय
व्यर्थ न कर।” 50परन्तु जब यीशु ने यह सुना, तो उसने याईर से कहा, “भयभीत न हो। बस {मुझ पर} विश्वास कर, और वह फिर से जीवित हो जाएगी।” 51जब
वह घर के बाहर पहुँचा, तो यीशु ने पतरस, यूहन्ना, और याकूब, तथा लड़की के पिता और माता के अलावा किसी को भी अपने साथ घर के भीतर जाने की
अनुमति नहीं दी। 52और वहाँ पर उपस्थित सभी लोग ऊँचे स्वर में यह दर्शा रहे थे कि वे कितने दुःखी हैं क्योंकि उस लड़की की मृत्यु हो गई है। परन्तु यीशु ने
उनसे कहा, “रोना बन्द करो! वह मरी नहीं है! वह केवल सो रही है!” 53और वे लोग उस पर हँसने लगे क्योंकि वे जानते थे कि वह लड़की मर गई है। 54परन्तु

यीशु ने उसके हाथ को थाम लिया और {उसे} पुकार कर कहा, “हे बच्ची, उठ जा!” 55और तुरन्त ही वह जीवित हो गई और वह उठ बैठी। यीशु ने उनसे कहा
कि उसे कुछ खाने के लिए दो। 56और उसके माता-पिता चकित हो गए, परन्तु यीशु ने उनसे कहा कि जो कुछ घटित हुआ था {अभी} वह अन्य किसी को भी न
बताना।

Chapter 9

1फिर यीशु ने अपने बारह चेलों को एक साथ बुलाया और उनको सब प्रकार की दुष्टात्माओं को निकालने और {लोगों की} बीमारियों को चंगा करने का
अधिकार दिया और सामर्थ प्रदान की। 2उसने उनको {इस विषय में शुभ सन्देश की} घोषणा करने के लिए भेजा कि राजा के रूप में परमेश्वर कैसे शासन
करेगा। उसने उनको ऐसे लोगों को चंगा करने के लिए भी बोला जो बीमार थे। 3{उनके जाने से पूर्व ही,} उसने उनसे कहा, “अपनी यात्रा के लिए अपने साथ
कुछ भी नहीं लेना। अपने साथ न चलने की लाठी, न यात्रियों वाला कोई थैला, न भोजन, न धन लेना। न ही एक और कुरता लेना। 4जिस किसी घर में तुम
प्रवेश करो, उस क्षेत्र को छोड़ देने तक तुम उस घर में ही ठहरना। 5यदि किसी नगर के लोग तुम्हारा स्वागत नहीं करते हैं, तो तुम को वहाँ नहीं ठहरना चाहिए।
बजाए इसके, उस नगर से निकल जाओ और, जब तुम निकलो, अपने पाँवों से उसकी धूल को झाड़ देना। यह {तुम को अस्वीकार करने के लिए} उनके लिए
एक चेतावनी होगी।” 6तब यीशु के चेले चले गए और उन्होंने बहुत से गाँवों से होकर यात्रा की। जहाँ कहीं भी वे गए, उन्होंने लोगों से परमेश्वर की ओर से आए
शुभ सन्देश के विषय में बात की, और उन्होंने बीमार लोगों को चंगा किया। 7गलील जिले के शासक, हेरोदेस ने उन सब बातों के विषय में सुना जो घट रही थीं,
और वह घबरा गया। कुछ लोग कह रहे थे कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला फिर से जी उठा है। 8अन्य लोग कह रहे थे कि एलिय्याह भविष्यद्वक्ता फिर से प्रकट
हुआ है। तब भी अन्य लोग कह रहे थे कि प्राचीन समय के अन्य भविष्यद्वक्ताओं में से कोई फिर से जी उठा है। 9परन्तु हेरोदेस ने कहा, “वह यूहन्ना नहीं हो
सकता, क्योंकि उसका सिर तो मैंने ही कटवाया था। तो फिर यह मनुष्य कौन है? मैं उसके विषय में ऐसी अद्भुत बातों को निरन्तर सुन रहा हूँ!” और वह यीशु से
मिलने के लिए किसी मार्ग की खोज करता रहा। 10जब वे प्रेरित अपनी यात्रा पर से लौट आए, तो उन्होंने यीशु को वह सब कुछ बताया जो उन्होंने किया था।
तब वह उन्हें अलग ले गया कि वे उसके साथ बैतसैदा नगर को जाएँ। 11परन्तु जब भीड़ को पता चला कि यीशु कहाँ गया है, तो वे उसके पीछे-पीछे वहाँ चले
गए। उसने उनका स्वागत किया और उनसे इस बारे में बात की कि राजा के रूप में परमेश्वर कैसे शासन करने जा रहा है। उसने उन लोगों को भी चंगा किया जो
बीमार थे। 12अब दिन का अन्त होने लगा था, इसलिए बारह चेले उसके पास आये और कहा, “कृपया लोगों की इस बड़ी भीड़ को विदा कर, ताकि वे आसपास
के गाँवों और खेतों में जाकर कुछ भोजन ले सकें और ठहरने के लिए स्थानों को ढूँढ़ सकें, क्योंकि हम यहाँ इस निर्जन स्थान पर हैं।” 13परन्तु उसने उनसे कहा,
“तुम को उन्हें कुछ खाने के लिए देना चाहिए!” उन्होंने उत्तर दिया, “जो कुछ हमारे पास है वह पाँच छोटी रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ हैं। हम कभी भी जाकर
इन सभी लोगों के लिए पर्याप्त भोजन खरीद नहीं सकते!” 14{उन्होंने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि उस स्थान पर वहां लगभग 5000 पुरुष थे। तब यीशु ने चेलों
से कहा, “लोगों को समूहों में बैठाओ। प्रत्येक समूह में लगभग 50 लोगों को रखो।” 15अतः चेलों ने ऐसा ही किया, और सारे लोग बैठ गए। 16तब यीशु ने उन
पाँच रोटियों और दो मछलियों को लिया। उसने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा और उनके लिए परमेश्वर की स्तुति की। फिर उसने रोटी और मछली को टुकड़ों में तोड़-
तोड़कर और उन्हें चेलों को दिया कि वे लोगों में उनको बाँट दें। 17उन सब ने खाया, और हर एक जन खाने के लिए पर्याप्त मिला। उसके बाद चेलों ने भोजन के
बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा किया, जिनसे 12 टोकरियाँ भर गईं। 18एक दिन जब यीशु अपने चेलों को साथ लेकर, अकेले में प्रार्थना कर रहा था, और उसने उनसे
पूछा, “यह भीड़ क्या कहती है कि मैं कौन हूँ?” 19उन्होंने उत्तर दिया, “{कुछ लोग कहते हैं कि तू है} यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, परन्तु अन्य लोग कहते हैं कि तू
एलिय्याह भविष्यद्वक्ता है, और तब भी अन्य लोग कहते हैं कि तू प्राचीन समय के अन्य भविष्यद्वक्ताओं में से कोई है जो फिर से जी उठा है।” 20उसने उनसे
पूछा, “तुम्हारे विषय में क्या है? तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?” पतरस ने उत्तर दिया, “तू मसीह है जो परमेश्वर की ओर से आया है।” 21तब यीशु ने उनको
कड़ी चेतावनी दी कि अभी यह किसी से न कहना। 22फिर उसने कहा, “मुझ, मनुष्य के पुत्र, को बहुत सी बातों में दुःख उठाना आवश्यक है: पुरनिए, और प्रधान
याजक, और यहूदी व्यवस्था के शिक्षक मुझे अस्वीकार कर देंगे, और मुझे मार डालेंगे। तब, उसके पश्चात तीसरे दिन, मैं फिर से जी उठूँगा।” 23फिर उसने उन
सब से कहा, “यदि तुममें से कोई मेरे चेला होना चाहता है, तो तुम को केवल वही नहीं करना चाहिए जो तुम करना चाहते हो। बजाए इसके, यहाँ तक कि जीवन
को त्याग देने के बिन्दु तक तुम को प्रतिदिन दुःख उठाने का इच्छुक होना है। मेरा चेला हो जाना ऐसा ही है। 24{तुम को ऐसा इसलिए करना है} क्योंकि जो लोग
अपने स्वयं के प्राणों को बचाने का प्रयास करते हैं वे उसे अनन्तकाल के लिए खो देंगे, परन्तु जो लोग मेरा चेला हो जाने की खातिर अपने प्राणों को त्याग देंगे, वे
अनन्तकाल के लिए अपने प्राणों को बचा लेंगे। 25अन्ततः, यदि तुम इस संसार में सब कुछ प्राप्त कर लेते हो, परन्तु फिर अन्त में तुम अपने आपको खो देते हो,
या नष्ट भी कर देते हो, तो इससे तुम्हारा क्या लाभ होता है? 26मान लो कि कोई यह कहने में डरता है कि वे मुझ पर विश्वास करते हैं और यह कि वे मेरी शिक्षा
का अनुसरण करते हैं। तब, मैं, मनुष्य का पुत्र, कहूँगा कि ऐसा व्यक्ति मेरा नहीं है। यह तब घटित होगा जब मैं अपनी महिमा में और परमेश्वर पिता और पवित्र
स्वर्गदूतों की महिमा में वापस आऊँगा। 27परन्तु तुम इस बात के लिए निश्चित हो सकते हो: तुम में से कुछ जो अभी यहाँ खड़े हैं, जब तक तुम राजा के रूप में
परमेश्वर को शासन करते हुए नहीं देखोगे तब तक नहीं मरोगे!” 28यीशु के उन बातों को कहने के लगभग आठ दिनों के पश्चात, उसने पतरस, यूहन्ना, और याकूब
को अपने साथ लिया और एक पहाड़ ऊपर {वहाँ} प्रार्थना करने के लिए चला गया। 29जिस समय पर वह प्रार्थना कर रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बहुत
अलग हो गया, और उसके वस्त्र उज्ज्वल रूप से चमकने लगे। 30एक ही समय पर, दो {प्राचीन समय के भविष्यवक्ता} यीशु के साथ वहाँ बातें कर रहे थे। वे
मूसा और एलिय्याह थे। 31ये पुरुष महिमा में घिरे हुए दिखाई दिए। उन्होंने यीशु के साथ इस विषय में बात की कि वह कैसे मरने वाला था। यह कुछ ऐसा था जो
शीघ्र ही यरूशलेम में घटित होने वाला था। 32पतरस और अन्य चेले जो उसके साथ थे वे बहुत नींद से भरे हुए थे। परन्तु जब वे पूर्ण रूप से जाग गए, तो उन्होंने
देखा कि यीशु कितने उज्ज्वल रूप से चमक रहा था। उन्होंने मूसा और एलिय्याह को भी उसके साथ खड़े हुए देखा। 33जब मूसा और एलिय्याह यीशु के पास से
जाने लगे, तो पतरस ने उससे कहा, “हे स्वामी, हमारे लिए यहाँ रहना अच्छा है! हमें तीन मण्डप बनाने चाहिए, एक तेरे लिये, और एक मूसा के लिये, और एक
एलिय्याह के लिये!” (परन्तु वह वास्तव में नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा है।) 34जब वह इन बातों को कह रहा था, तो एक बादल उठा और उनको ढाँप
लिया। जब उस बादल ने उनको घेर लिया तो चेले भयभीत हो गए। 35बादल में से परमेश्वर की वाणी ने उनसे यह कहकर बात की, “यह मेरा पुत्र है, जिसे मैंने

चुना है; उसकी सुनो!” 36जब उस वाणी ने बोलना समाप्त कर लिया, {तो उन तीन चेलों ने देखा कि} वहाँ केवल यीशु उपस्थित था। यह सब बातें उन्होंने अपने
में ही रखीं। जो उन्होंने देखा था एक लम्बे समय तक उन्होंने वह किसी को भी नहीं बताया। 37अगले दिन, जब वे पहाड़ से उतर आए, तो लोगों की एक बड़ी
भीड़ यीशु से मिली। 38अचानक से भीड़ में से एक व्यक्ति चिल्लाया, “हे गुरु, मैं तुझ से याचना करता हूँ, मेरे पुत्र की सहायता के लिए कुछ कर! वह मेरी
एकलौती सन्तान है। 39जो हो रहा है, वह यहाँ है। एक दुष्टात्मा अचानक से उसे पकड़ती है और उसे चिल्लाने के लिए विवश करती है। वह उसे हिंसक रूप से
झिंझोड़ती है और उसे मुँह में झाग भरने के लिए विवश करती है। यह दुष्टात्मा बड़ी कठिनाई से कभी-कभार ही मेरी सन्तान को छोड़ती है और, जब वह ऐसा
करती है, तो वह उसे गम्भीर रूप से चोट पहुँचाती है। 40उस दुष्टात्मा को उसमें से निकल जाने का आदेश देने के लिए मैंने तेरे चेलों से याचना की थी, परन्तु वे
ऐसा करने में असमर्थ थे!” 41इसके उत्तर में, यीशु ने कहा, “इस पीढ़ी के लोग विश्वास नहीं करते, और इसलिए उनकी सोच विकृत हो गई है! तुम्हारे विश्वास
करने से पहले मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा?” {फिर उसने उस लड़के के पिता से कहा,} “तेरे पुत्र को मेरे पास यहाँ लेकर आ!” 42जिस समय वे उस लड़के को
लेकर आ रहे थे, तो उस दुष्टात्मा ने उस लड़के को भूमि पर पटक दिया और उसे बुरी तरह से झिंझोड़ दिया। परन्तु यीशु ने उस दुष्टात्मा को फटकारा और उस
लड़के को चंगा कर दिया। फिर उसने उसे उसके पिता को सौंप दिया। 43उसके पश्चात वहाँ उपस्थित सारे लोग उस महान सामर्थ पर पूर्ण रूप से विस्मित हो गए
जो परमेश्वर ने प्रकट की थी। जिस समय पर वे सब उन सारे चमत्कारों पर चकित हो ही रहे थे जो यीशु कर रहा था, उसने अपने चेलों से कहा, 44“जो मैं तुम से
कहने पर हूँ उसे बड़े ध्यान से सुनो, क्योंकि कोई जन मुझ, मनुष्य के पुत्र, को मेरे शत्रुओं के हाथों में शीघ्र ही सौंप देगा।” 45परन्तु चेले यह समझ नहीं पाए कि
उसका इससे क्या अर्थ है। परमेश्वर ने उन्हें इसे समझने से रोक दिया ताकि वे अभी यह न जान पाएँ कि उसका क्या अर्थ है, और जो कुछ उसने कहा था उसके
विषय में वे उससे पूछने से डरते थे। 46कुछ समय पश्चात, चेले आपस में इस विषय पर विवाद करने लगे कि उनमें से कौन सबसे महत्वपूर्ण होगा। 47परन्तु यीशु
जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं, इसलिए वह एक बालक को अपने पास लेकर आया, और उस बालक को अपने पास खड़ा किया। 48उसने उनसे कहा, “यदि
कोई मेरे कारण इसके जैसे छोटे बालक का स्वागत करता है, तो यह मेरा स्वागत करने के समान है। और यदि कोई मेरा स्वागत करता है, तो यह उस परमेश्वर
का स्वागत करने के समान है, जिसने मुझे भेजा है। स्मरण रखो कि तुम में से जो सबसे कम महत्वपूर्ण लगते हैं, वे वही हैं जिन्हें परमेश्वर सबसे महत्वपूर्ण
मानता है।” 49यूहन्ना ने यीशु को उत्तर दिया, “हे स्वामी, हम ने एक व्यक्ति को देखा जो लोगों में से दुष्टात्माओं को निकल जाने का आदेश देने के लिए तेरे नाम
का उपयोग कर रहा था। परन्तु हम ने उससे ऐसा करने से रुक जाने के लिए कहा, क्योंकि वह तेरे समीप रहकर वैसे काम नहीं कर रहा था जिस रीति से हम
करते हैं।” 50परन्तु यीशु ने यूहन्ना से कहा, “उसे ऐसा करने से मत रोको! यदि कोई कुछ ऐसा नहीं कर रहा है जो तुम्हारे लिए हानिकारक है, तब जो वह कर रहा
है वह तुम्हारे लिए लाभदायक है!” 51जब वह समय निकट आ रहा था जब परमेश्वर उसे वापस स्वर्ग में उठा लेगा, तब यीशु ने दृढ़तापूर्वक यरूशलेम को जाने
का निश्चय किया। 52उसने अपने आगे कुछ दूतों को भेजा। उन्होंने यात्रा की और सामरिया क्षेत्र के एक गाँव में गए ताकि वहाँ उसके ठहरने की व्यवस्था करने
का प्रयास करें। 53परन्तु सामरियों ने यीशु को अपने गाँव में ठहरने न दिया, क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था। 54उसके दो चेले, याकूब और यूहन्ना {क्रोधित
हो गए जब उन्होंने} यह देखा {कि सामरिया के लोग उनका स्वागत नहीं करने वाले थे}। तब उन्होंने यीशु से पूछा, “हे प्रभु, क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें, कि
आकाश से आग गिरे, और इन लोगों का नाश कर दे?” 55परन्तु यीशु ने {उनकी ओर} घूम कर कठोरतापूर्वक उनसे कहा कि उनका ऐसा कहना अनुचित है।
56इसलिए वे किसी दूसरे गाँव को चले गए। 57जब यीशु और उसके चेले सड़क पर चल रहे थे, तो किसी ने उससे कहा, “जहाँ कहीं तू जाएगा, मैं तेरे संग
चलूँगा!” 58यीशु ने उत्तर दिया, “लोमड़ियों के पास रहने के लिये भूमि में छेद होते हैं, और पक्षियों के पास घोंसले होते हैं, परन्तु मुझ, मनुष्य के पुत्र, के पास
सोने के लिये कोई घर नहीं है!” 59यीशु ने किसी दूसरे व्यक्ति से कहा, “मेरे साथ आ!” परन्तु उस व्यक्ति ने कहा, “हे प्रभु, मुझे पहले घर जाकर अपने पिता को
गाड़ लेने दे।” 60परन्तु यीशु ने उससे कहा, “मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे। मैं चाहता हूँ कि तू सब जगह जाकर लोगों को बताए कि उनके जीवनों पर शासन
करने के लिए वे परमेश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।” 61किसी और ने कहा, “हे प्रभु, मैं तेरे साथ चलूँगा और तेरा चेला बनूँगा, परन्तु पहले मुझे अपने परिवार को
अलविदा कहने के लिए घर जाने दे।” 62यीशु ने उससे कहा, “कोई भी जन जो किसी ऐसे किसान के समान है जो पीछे देखते हुए अपने खेत को जोतने का
प्रयत्न करता है, वह उसके शासक के रूप में परमेश्वर की सेवा करने के योग्य नहीं है।”

Chapter 10

1इसके पश्चात, यीशु ने अन्य 72 चेलों को नियुक्त किया {कि वे जाकर लोगों को उसकी बात सुनने के लिए तैयार करें}। उसने उनको अपने आगे-आगे उस
प्रत्येक नगर और गाँव में दो-दो करके भेजा जहाँ वह स्वयं जाने की मनसा रखता था। 2उसने उनसे कहा, “बहुत से लोग मुझ पर विश्वास करने के लिए तैयार हैं,
परन्तु तुम में से ऐसे थोड़े ही हैं जिनको मैं उनकी सहायता करने के लिए भेज सकता हूँ। इसलिए परमेश्वर से प्रार्थना करो, {जो चाहता है कि वे सब के सब लोग
विश्वास करें,} और उससे और भी चेलों के लिए प्रार्थना करो जो जाकर उनकी सहायता कर सकें। 3अब जाओ, परन्तु स्मरण रखो कि मैं तुम को ऐसे लोगों को
मेरा सन्देश बताने के लिए भेज रहा हूँ जो तुम से द्वेषपूर्ण व्यवहार करेंगे। 4अपने साथ कोई धन नहीं रखना। अपने साथ कोई {बहुत सारे सामान से भरा हुआ}
थैला नहीं लेना। {एक और जोड़ी जूता} अपने साथ न लेना। मार्ग में {रुककर} लोगों के साथ बात मत करना। 5जब भी तुम किसी घर में प्रवेश करो, तो
सर्वप्रथम वहाँ रहने वाले लोगों से कहो, ‘परमेश्वर इस घर में रहने वाले हर एक व्यक्ति को शान्ति प्रदान करे!’ 6यदि वहाँ रहने वाले लोग परमेश्वर की शान्ति के
इच्छुक होंगे, तब ही वे उस शान्ति का अनुभव कर पाएँगे जो तुम उनको प्रदान कर रहे हो। परन्तु यदि वहाँ वे परमेश्वर की शान्ति के इच्छुक नहीं होंगे, तब उस
शान्ति का अनुभव तुम स्वयं ही करने पाओगे। 7उसी घर में तब तक ठहरे रहो जब तक उस गाँव को नहीं छोड़ देते। आसपास में एक घर से दूसरे घर में न फिरते
रहना। वही खाओ और पीयो जो वे तुम को उपलब्ध करवाते हैं, क्योंकि एक मजदूर अपने काम के लिए भुगतान प्राप्त करने का हकदार है। 8यदि तुम किसी
नगर में प्रवेश करो और वहाँ के लोग तुम्हारा स्वागत करते हैं, तो वही खाओ जो खाना वे तुम को उपलब्ध करवाते हैं। 9उस नगर में रहने वाले ऐसे लोगों को चंगा
करो जो बीमार हैं। हर एक जन से कहो, ‘तुम उसे समीपता से देख रहे हो कि जब हर जगह राजा के रूप में परमेश्वर शासन करता है तो यह किसके समान
होगा।’ 10परन्तु यदि तुम किसी नगर में प्रवेश करो और वहाँ के लोग तुम्हारा स्वागत न करें, तो उसकी प्रमुख सड़कों पर जाकर कहो, 11‘तुम्हारे विरोध में
{चेतावनी के रूप में}, {जबकि हम तुम्हारे नगर से निकल कर जाते हुए} हम उस धूल को भी झाड़ देंगे जो हमारे पाँवों में चिपकी हुई है। परन्तु तुम यह जान लो

कि तुम ने उसे समीपता से देखा है कि जब हर जगह राजा के रूप में परमेश्वर शासन करता है तो यह किसके समान होगा!’ 12मैं चाहता हूँ तुम जान लो कि जब
परमेश्वर सब का न्याय करेगा, तो उस समय पर परमेश्वर उस नगर के लोगों को उन दुष्ट लोगों से भी अधिक कठोरतापूर्वक दण्ड देगा जो प्राचीन समय में सदोम
नगर में रहते थे! 13हे खुराजीन और बैतसैदा के नगरों में रहने वाले लोगों, तुम्हारे लिए यह कितना भयंकर होगा! मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि जिस समय मैं
तुम्हारे नगरों में था तब मैंने बड़े-बड़े चमत्कार किए। यदि मैंने उन्हीं चमत्कारों को सोर और सीदोन {के प्राचीन नगरों} में किया होता, तो वहाँ रहने वाले {दुष्ट}
लोग अपने पापों के लिए अत्यन्त खेदित होते। खुरदुरा वस्त्र पहनकर और अपने सिरों पर राख डालकर भूमि पर बैठने के द्वारा उन्होंने इसका प्रदर्शन भी किया
होता। 14अतः जब परमेश्वर सब का न्याय करेगा, तो वह तुम को उन दुष्ट लोगों की तुलना में अधिक कठोरतापूर्वक दण्ड देगा जो सोर और सीदोन में रहते थे!
15मेरे पास तुम लोगों से कहने के लिए भी कुछ है जो कफरनहूम नगर में रहते हैं। तुम सोचते होगे कि परमेश्वर तुम को बड़ा प्रतिफल देने वाला है। नहीं, परमेश्वर
तुम को कोई भी प्रतिफल नहीं देने वाला है!” 16{यीशु ने चेलों से भी कहा,} “जो कोई भी तुम्हारा सन्देश सुनता है वह {वास्तव में,} मुझे सुनता है। जो कोई भी
तुम्हारे सन्देश को अस्वीकार करता है वह {वास्तव में,} मुझे अस्वीकार करता है। और जो कोई भी मुझे अस्वीकार करता है वह {वास्तव में,} परमेश्वर को
अस्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।” 17जिन 72 लोगों को यीशु ने नियुक्त किया था {उन्होंने जाकर वह किया जो उसने उनको करने के लिए कहा था।}
जब वे लौट आए, तो वे बहुत ही आनन्दित थे। उन्होंने कहा, “हे प्रभु, यहाँ तक कि दुष्टात्माओं ने हमारी आज्ञा का पालन किया जब, तेरे द्वारा प्रदान किए गए
अधिकार से, हम ने उनको लोगों में से निकल जाने का आदेश दिया!” 18यीशु ने उनसे कहा, “{जिस समय पर तुम वहाँ दूर ऐसा कर रहे थे,} जैसे अचानक से
और शीघ्रता से बिजली गिरती है, वैसे ही मैंने शैतान को लाभ की स्थिति को खोते हुए देखा! 19सुनो! मैंने तुम को दुष्टात्माओं को पराजित करने की सामर्थ प्रदान
की है। मैंने तुम को हमारे शत्रु, शैतान को पराजित करने की पर्याप्त सामर्थ भी प्रदान की है। किसी भी वस्तु से तुम्हारी कुछ भी हानि नहीं होगी। 20परन्तु
{केवल} इसलिए आनन्दित मत होना कि दुष्टात्माओं को तुम्हारी आज्ञा का पालन करना पड़ेगा। तुम को {और भी बढ़कर} आनन्दित इसलिए होना चाहिए कि
परमेश्वर ने तुम्हारे नामों को स्वर्ग में लिख दिया है, {क्योंकि इसका अर्थ है कि तुम सदा के लिए परमेश्वर के साथ रहोगे}।” 21ठीक उसी समय पर, पवित्र आत्मा
ने यीशु को बड़ा आनन्द प्रदान किया। उसने कहा, “हे मेरे परमेश्वर पिता, तू स्वर्ग की और पृथ्वी पर की सब वस्तुओं पर प्रभु है। मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने
उन लोगों को बातों को समझने से रोक दिया है जो सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। बजाए इसके, तूने उनको ऐसे लोगों पर प्रकट किया है जिन्होंने तेरे सत्य को
छोटे बालकों के समान सहजता से स्वीकार कर लिया है। हाँ, हे पिता, तूने ऐसा इसलिए किया है क्योंकि ऐसा करना तुझे प्रसन्न करता है। 22परमेश्वर, मेरे पिता
ने, सब कुछ मुझे दे दिया है। केवल मेरा पिता मुझे, उसके पुत्र को, वास्तव में जानता है। और केवल मैं, उसका पुत्र, वास्तव में अपने पिता को जानता हूँ। परन्तु
मैं कुछ लोगों को यह दिखाने का चुनाव करता हूँ कि वह कौन है।” 23फिर यीशु ने, केवल अपने चेलों से कहा, “जो मैं कर रहा हूँ उन कामों को देखने में सक्षम
करने के द्वारा परमेश्वर ने तुम को बहुत बड़ा उपहार दिया है! 24मैं चाहता हूँ तुम जान लो कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने उन बातों को देखने की
इच्छा की थी जिनको मुझे करते हुए तुम देख रहे हो। परन्तु वे उनको देखने नहीं पाए, {क्योंकि वे प्राचीन समय में रहते थे}। उन्होंने उन बातों को सुनने की इच्छा
की थी जिनको मुझे कहते हुए तुम सुन रहे हो। परन्तु वे उनको सुनने नहीं पाए, {क्योंकि वे प्राचीन समय में रहते थे}।” 25वहाँ पर एक मनुष्य था जो यहूदी
व्यवस्था का शिक्षक था। वह यीशु की {उससे एक कठिन प्रश्न पूछने के द्वारा} परीक्षा करना चाहता था। अतः उसने खड़े होकर उससे पूछा, “हे गुरु, परमेश्वर के
साथ सदा के लिए जीवित रहने की खातिर मुझे क्या करना चाहिए?” 26यीशु ने उससे कहा, “परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था में मूसा ने जो लिखा है क्या उसे तूने
पढ़ा है। वह व्यवस्था क्या कहती है?” 27उस मनुष्य ने प्रत्युत्तर दिया, “प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी शक्ति
से, और अपनी सारी समझ के साथ प्रेम रख। और अपने पड़ोसी से उतना ही प्रेम रख, जितना प्रेम तू स्वयं से रखता है।” 28यीशु ने उससे कहा, “तूने ठीक-ठीक
उत्तर दिया है। यदि तू यह सब करे, तो तू {परमेश्वर के साथ सदा के लिए} जीवित रहेगा।” 29परन्तु वह मनुष्य यह दर्शाना चाहता था कि परमेश्वर उसका
अनुमोदन करेगा। इसलिए उसने यीशु से कहा, “मेरे पड़ोसी कौन से लोग हैं {जिनसे मुझे प्रेम करना चाहिए}?” 30यीशु ने प्रत्युत्तर दिया, “एक दिन, एक यहूदी
पुरुष यरूशलेम से यरीहो जाने वाले मार्ग पर यात्रा कर रहा था। कुछ डाकुओं ने उस पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने उस पुरुष के सारे कपड़े और बाकी जो कुछ
भी उसके पास था छीन लिया। उन्होंने उसे तब तक पीटा जब तक कि वह लगभग मरने पर न हो गया। फिर वे उसे वहाँ छोड़कर चले गए। 31ऐसा हुआ कि एक
{यहूदी} याजक उस मार्ग से होकर जा रहा था। जब उसने उस मनुष्य को देखा, तो {उसकी सहायता करने के बजाए,} मार्ग की दूसरी ओर से आगे बढ़ गया।
32उसी प्रकार से, एक लेवी भी {जो परमेश्वर के मंदिर में काम किया करता था} उस स्थान पर आया और उस मनुष्य को देखा। परन्तु वह भी मार्ग की दूसरी
ओर से आगे बढ़ गया। 33उसके पश्चात सामरिया क्षेत्र का रहने वाला एक मनुष्य उस मार्ग पर आया जहाँ वह मनुष्य पड़ा हुआ था। जब उसने उस मनुष्य को
देखा तो उसे उस पर तरस आ गया। 34उसने उसके पास पहुँच कर उसके घावों पर {उनके ठीक होने में सहायता के लिए} थोड़ा जैतून का तेल और दाखरस
डाला। उसने घावों पर कपड़े की पट्टियों को लपेट दिया। फिर उसने उस मनुष्य को अपने गधे पर चढ़ाया और उसे सराय में लेकर गया और उसकी देखभाल
की। 35अगली सुबह उसने सराय के मालिक को चांदी के दो सिक्के दिए और कहा, ‘इस मनुष्य की देखभाल कर। यदि तुझे इसकी देखभाल करने के लिए इस
धन से अधिक खर्च करने की आवश्यकता पड़े, तो जब मैं वापस लौटूँ वह मैं तुझे चुका दूँगा।’” 36{उसके पश्चात यीशु ने पूछा,} “जिस मनुष्य पर डाकुओं ने
आक्रमण किया था वह तीन लोगों को मिला। उनमें से तुम किसे कहोगे कि वह उस मनुष्य का सच्चा पड़ोसी था?” 37उस व्यवस्था के शिक्षक ने प्रत्युत्तर में कहा,
“वही जिसने उसके प्रति दयापूर्ण रूप से व्यवहार किया।” यीशु ने उससे कहा, “{यह ठीक बात है।} इसलिए तुझे भी जाना और उन लोगों के प्रति ऐसा ही
व्यवहार करना चाहिए जिनको तेरी सहायता की आवश्यकता है।” 38जब यीशु और उसके चेलों ने यात्रा को जारी रखा, तो उन्होंने एक गाँव में प्रवेश किया। वहाँ
मार्था नाम की एक स्त्री थी जिसने उनको अपने घर में आने के लिए आमंत्रित किया। 39उसकी बहन, जिसका नाम मरियम था, वह यीशु के पाँवों के पास बैठ
गई और जो शिक्षा वह दे रहा था उसे सुनने लगी। 40परन्तु मार्था उन सब के लिए भोजन तैयार करने के विषय में चिन्तित हो रही थी। उसने यीशु के पास जाकर
कहा, “हे प्रभु, मेरी बहन ने मुझे सब कुछ तैयार करने के लिए अकेला ही छोड़ दिया है। तू जान ले कि यह उचित नहीं है। कृपया उससे मेरी सहायता करने के
लिए कह दे!” 41परन्तु यीशु ने उसे प्रत्युत्तर में कहा, “हे मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी बातों के लिए बहुत चिंता करती है। 42परन्तु एक बात जो वास्तव में
महत्वपूर्ण है {वह उस शिक्षा को सुनना है जो मैं दे रहा हूँ}। क्योंकि मरियम ने करने के लिए उत्तम बात को चुन लिया है, इसलिए मैं उसे बाकी और कुछ भी
करने के लिए नहीं कहूँगा।”

Chapter 11

1एक दिन यीशु किसी स्थान पर प्रार्थना कर रहा था। जब वह समाप्त कर चुका, तो उसके एक चेले ने उससे कहा, “हे प्रभु, हमें सिखा दे कि प्रार्थना कैसे करते
हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने चेलों के साथ ऐसा ही किया है, और हम चाहते हैं कि तू भी हमारे साथ ऐसा ही करे।” 2उसने उनसे कहा, “जब तुम
प्रार्थना करो, तो {इस प्रकार की बातों को} बोलो: ‘हे पिता, सब लोग पवित्र मान कर तेरे नाम का सम्मान करें। शीघ्र ही तू हर जगह सब लोगों पर शासन करे।
3प्रतिदिन हम को जिस भोजन की आवश्यकता है कृपया वह हमें प्रदान कर। 4कृपया हमें उन अनुचित कामों के लिए क्षमा कर जो हम ने किए हैं। हम स्वयं भी
उन लोगों को उन अनुचित कामों के लिए क्षमा कर देंगे जो उन्होंने हमारे साथ किए हैं। जब किसी बात में हमारी परीक्षा हो तो हमारी सहायता करना कि हम
पाप न करें।’” 5फिर उसने उनसे कहा, “मान लो कि तुम में से कोई जन मध्यरात्रि में किसी मित्र के घर पर जाता है। तुम {बाहर खड़े होकर} उसे पुकारते हो, ‘हे
मेरे मित्र, कृपया मुझे तीन रोटियाँ उधार दे! 6मेरा एक अन्य मित्र जो यात्रा करते हुए अभी-अभी मेरे घर पर पहुँचा है। परन्तु मेरे पास उसे परोसने के लिए कोई
तैयार भोजन नहीं है!’ 7और मान लो कि वह घर के भीतर से ही प्रत्युत्तर दे, ‘मुझे परेशान मत कर! मैंने पहले ही द्वार को बन्द कर लिया है, और मेरा पूरा परिवार
बिछौने पर है। यह मेरे लिए अत्यन्त कठिन होगा कि मैं उठकर तुझे कुछ दूँ!’ 8मैं तुम से कहता हूँ कि भले ही वह उठकर अपने मित्र को कुछ भोजन इसलिए देना
न चाहता हो क्योंकि वह उसका मित्र है। परन्तु यदि वह माँगता ही रहे, तो जो व्यक्ति भीतर है वह निश्चित रूप से उठकर उसे वह सब कुछ देगा जिसकी उसे
आवश्यकता है। 9इसलिए मैं तुम से कहता हूँ: जिन वस्तुओं की तुम को आवश्यकता है उनके लिए परमेश्वर से माँगते रहो, और वह तुम को उन्हें देगा। परमेश्वर
की ओर से उन वस्तुओं की खोज में रहो, और तुम उनको प्राप्त करोगे। परमेश्वर से तुम्हारे लिए कामों को सम्भव बनाने के लिए कहो, और वह तुम्हारी ओर से
कार्य करेगा। 10तुम को यह इसलिए करना चाहिए क्योंकि जो कोई भी परमेश्वर से उन वस्तुओं को माँगता रहता है जिनकी उसे आवश्यकता है तो वह उनको
प्राप्त करेगा। जो कोई भी परमेश्वर की ओर से उन वस्तुओं की खोज में रहता है वह उनको प्राप्त करेगा। यदि कोई परमेश्वर से उसके लिए कामों को सम्भव
करने के लिए कहता है, तो परमेश्वर उसकी ओर से कार्य करेगा। 11मान लो कि तुम पिताओं में से किसी का एक पुत्र है जिसने तुम से खाने के लिए मछली
माँगी। तो निश्चय ही तुम उसके बजाए उसे कोई विषैला साँप नहीं दोगे! 12मान लो कि वह तुम से एक अण्डा माँगे। तो निश्चय ही तुम उसके बजाए उसे कोई
बिच्छू नहीं दोगे! 13यद्यपि तुम लोग पापी हो, तौभी तुम जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छे उपहार कैसे दें। इसलिए यह तो और भी निश्चित है कि तुम्हारा पिता
जो स्वर्ग में विराजमान है वह उनको पवित्र आत्मा देगा जो उससे माँगते हैं। 14एक दिन यीशु एक ऐसी दुष्टात्मा को विवश करके निकाल रहा था जिसने उस
मनुष्य को बोलने से रोक रखा था। यीशु के उस दुष्टात्मा को निकाल बाहर करने के पश्चात, वह मनुष्य बोलने लग गया। इस बात ने वहाँ पर उपस्थित लोगों की
भीड़ को चकित कर दिया। 15परन्तु उनमें से कुछ ने कहा, “वह दुष्टात्माओं का शासक बालजबूल ही तो है, जो दुष्टात्माओं को निकाल बाहर करने में इस मनुष्य
को सक्षम करता है!” 16वहाँ उपस्थित अन्य लोगों ने उसके अधिकार पर प्रश्न किया। उन्होंने उससे यह साबित करने के लिए एक चमत्कार दिखाने की माँग की
कि परमेश्वर ने उसे भेजा था। 17परन्तु वह जानता था कि वे क्या सोच रहे थे। इसलिए उसने उनसे कहा, “यदि एक ही देश के लोग एक दूसरे के विरोध में लड़ने
लगें, तो वे अपने देश का नाश कर देंगे। यदि एक ही घराने के लोग एक दूसरे के विरोधी हो जाएँ, तो वे अपने परिवार का नाश कर देंगे। 18उसी प्रकार से, यदि
शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ एक दूसरे के विरोध में लड़ने लग जाएँ, तो निश्चित रूप से उन पर उसका शासन बना नहीं रहेगा! मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि
तुम कह रहे हो कि मैं दुष्टात्माओं के शासक की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकाल बाहर करता हूँ! 19यदि यह सत्य है कि बालजबूल दुष्टात्माओं को निकाल बाहर
करने के लिए मुझे सक्षम कर रहा है, तो यह भी सत्य होगा कि वह तुम्हारे चेलों को भी दुष्टात्माओं को निकाल बाहर करने के लिए सक्षम कर रहा है। {परन्तु तुम
जानते हो कि यह सत्य नहीं है।} इसलिए तुम्हारे चेले ही साबित करते हैं कि तुम गलत हो। 20मुझे वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा ही दुष्टात्माओं को
निकाल बाहर करना है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने तुम पर शासन करना आरम्भ कर दिया है।” 21{यीशु ने जारी रखा,} “जब कोई ऐसा बलवंत पुरुष जिसके
पास बहुत से हथियार हैं अपने घर की सुरक्षा करता है, तो कोई भी भीतर रखी वस्तुओं को चुरा नहीं सकता है। 22परन्तु जब कोई और उससे भी बढ़कर बलवंत
उस पुरुष पर आक्रमण करता है और उसे वश में कर लेता है, तो वह उसके हथियारों को भी छीन लेता है जिन पर वह पुरुष निर्भर करता था। उसके पश्चात वह
उस पुरुष के घर में से जो कुछ भी वह चाहे उसे चुरा सकता है। 23कोई भी व्यक्ति जो मेरा सहयोग नहीं कर रहा है वह मेरा विरोध कर रहा है। कोई भी जो
लोगों को मेरे पास लेकर नहीं आ रहा है वह उनको मुझ से दूर भेज रहा है।” 24{तब यीशु ने कहा,} “एक दुष्टात्मा किसी व्यक्ति में से निकल कर किसी अन्य के
भीतर वास करने की खोज में उजाड़ क्षेत्रों में भटकती है। यदि उसे वहाँ कोई नहीं मिलता, तो वह कहेगी, ‘मैं उस व्यक्ति के पास वापस जा रही हूँ जिसमें मैं रहा
करती थी!’ 25इसलिए वह वापस जाती है और पाती है कि वह व्यक्ति एक ऐसे घर के समान है जिसे किसी ने साफ-सुथरा करके सजा-सँवार दिया है, {परन्तु
जिसमें कोई नहीं रहता है}। 26तब वह दुष्टात्मा जाती है और ऐसी सात अन्य आत्माओं को ले आती है जो उससे भी अधिक ज्यादा दुष्ट हैं। वे सभी उस व्यक्ति में
प्रवेश करती हैं और उसमें रहने लगती हैं। पहले उस व्यक्ति की दशा बुरी थी, और अब यह और भी बुरी हो जाती है।” 27जब यीशु ने यह कहा, तो भीड़ में से
एक स्त्री ने {जो सुन रही थी} उसे पुकार कर ऊँचे स्वर से कहा, “परमेश्वर उस स्त्री से प्रसन्न है जिसने तुझे जन्म दिया है और जिसने तेरा पालन-पोषण किया है!”
28तब उसने प्रत्युत्तर में कहा, “परमेश्वर उन लोगों से तो और भी अधिक प्रसन्न है जो उसके सन्देश को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं!” 29यीशु के चारों
ओर की भीड़ में सम्मिलित होने के लिए अधिक से अधिक लोग आ रहे थे। उसने कहा, “इस समय में रहने वाले लोग दुष्ट लोग हैं। वे चाहते हैं कि मैं एक
चमत्कार करूँ {यह साबित करने के लिए कि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूँ}। परन्तु केवल एक ही प्रमाण जो वे देखेंगे वह उस चमत्कार के जैसा है जो योना
के साथ घटित हुआ था। 30बहुत समय पहले परमेश्वर ने योना के लिए एक चमत्कार किया था नीनवे नगर में रहने वाले लोगों को यह दिखाने के लिए कि उसे
उसने ही भेजा था। उसी प्रकार से, परमेश्वर मुझ, मनुष्य के पुत्र, के लिए वैसा ही चमत्कार करेगा, इस समय में रहने वाले लोगों को दिखाने के लिए कि उसने ही
मुझे भेजा है। 31जो बुद्धिमानी की बातें सुलैमान ने कही थीं उनको सुनने के लिए शीबा की रानी ने बहुत समय पहले बहुत लम्बी दूरी की यात्रा की थी। इस
समय तुम्हारे साथ कोई सुलैमान से भी बढ़कर यहाँ पर उपस्थित है। {परन्तु तुम ने वास्तव में उस बात को नहीं सुना है जो मैं कह रहा हूँ।} इसलिए, जिस समय
पर परमेश्वर सभी लोगों का न्याय करेगा, वह खड़ी होकर इस समय में रहने वाले लोगों पर दोष लगाएगी। 32प्राचीन नीनवे नगर में रहने वाले लोग अपने पापी
तरीकों से फिर गए थे जब योना ने उन पर प्रचार किया था। और इस समय पर मैंने, जो योना से भी बढ़कर हूँ, आकर तुम पर प्रचार किया। {परन्तु तुम अपने
पापी तरीकों से नहीं फिरे।} इसलिए, जिस समय परमेश्वर सभी लोगों का न्याय करेगा, तब नीनवे में रहने वाले लोग खड़े होकर इस समय में रहने वाले लोगों पर
दोष लगाएँगे। 33जो लोग एक दीया जलाते हैं उसे छिपाते या उसे एक टोकरी के नीचे नहीं रखते हैं। बजाए इसके, वे उसे एक दीवट पर रखते हैं ताकि जो कोई

कमरे में प्रवेश करे वह उजियाले को देख सके। 34तेरी आँख तेरी देह में उजियाला आने देती है। यदि तेरी आँख ठीक से काम कर रही है, तो तेरी पूरी देह
उजियाले से भर जाएगी। परन्तु यदि तेरी आँख ठीक से काम नहीं कर रही है तो तेरी देह को कोई उजियाला नहीं मिलेगा। 35इसलिए, सावधान रह यह न सोच
कि तेरी आँख सही काम कर रही है और उजियाले को भीतर आने दे रही है यदि वह वास्तव में सही काम नहीं कर रही है और किसी उजियाले को भीतर आने
नहीं दे रही है। 36इसलिए यदि उजियाला तेरी देह के प्रत्येक अंग में प्रवेश कर रहा है, इस कारण से उसका कोई भी अंग अन्धकार में नहीं है, तो तेरी सारी देह
उजियाले से भर जाएगी। तेरे भीतर सब जगह उज्ज्वल प्रकाश चमकेगा, जैसे कि एक दीए का उज्ज्वल प्रकाश तेरे ऊपर सब जगह चमकता है।” 37जब यीशु ने
उन बातों को कहना समाप्त कर लिया तो उसके पश्चात एक फरीसी ने उसे अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। इसलिए यीशु उस फरीसी के घर में
गया और भोजन करने के लिए मेज़ पर बैठ गया। 38उस फरीसी ने आश्चर्य किया जब उसने देखा कि यीशु ने भोजन खाने से पूर्व विधिपूर्वक अपने हाथों को
धोया नहीं था। 39यीशु ने उससे कहा, “तुम फरीसी लोग भोजन करने से पहले प्यालों और बरतनों के बाहरी भाग को धोते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर से तुम बहुत
ही लालची और दुष्ट हो। 40तुम मूर्ख लोगों! निश्चित रूप से तुम जानते हो कि परमेश्वर ने न केवल बाहरी भाग को बनाया, परन्तु भीतरी भाग को भी बनाया है!
41{बरतनों के विधिपूर्वक साफ-सुथरा होने के विषय में चिन्ता करने के बजाए, दयालु बनो और} जो लोग आवश्यकता में हैं उनको बरतन के अंदर जो कुछ भी
है वह दो। तब तुम्हारे भीतरी भाग और बाहरी भाग दोनों ही परमेश्वर को स्वीकार्य होंगे। 42परन्तु तुम फरीसियों के लिए यह कितना भयानक होगा! तुम्हारे पास
जो कुछ भी है तुम उसका दसवाँ भाग परमेश्वर को सावधानीपूर्वक देते हो, यहाँ तक कि उन जड़ी-बूटियों समेत भी जिनको तुम अपने बगीचों में उगाते हो। परन्तु
फिर तुम दूसरों के प्रति परमेश्वर का प्रेम या निष्पक्षता नहीं दिखाते हो। तुम को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि तुम जो परमेश्वर को देने के अलावा, ऐसा करते
हो। 43तुम फरीसियों के लिए यह कितना भयानक होगा, क्योंकि तुम आराधनालयों में सबसे महत्वपूर्ण आसनों पर बैठना पसंद करते हो, और तुम चाहते हो कि
लोग तुम को {विशेष सम्मान के साथ} बाजारों में नमस्कार करें। 44तुम्हारे लिए यह कितना भयानक होगा, क्योंकि तुम बिना चिन्ह वाली उन कब्रों के समान हो
जिन पर लोग बिना जाने चढ़ जाते हैं और इसलिए औपचारिक रूप से अशुद्ध हो जाते हैं।” 45यहूदी व्यवस्था के शिक्षक जो वहाँ उपस्थित थे उनमें से एक ने
यीशु से शिकायत की, “हे गुरु, जब तू इस प्रकार की बातों को कहता है, तो तू हमारी भी आलोचना करता है!” 46परन्तु यीशु ने प्रत्युत्तर दिया, “तुम जो यहूदी
व्यवस्था के शिक्षक हो, तुम्हारे लिए भी यह कितना भयानक होगा! मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि तुम लोगों को बहुत सारे नियमों का पालन करने के लिए
कहते हो, तौभी तुम उनकी सहायता करने के लिए छोटे से छोटे काम को भी नहीं करोगे। 47तुम्हारे लिए यह कितना भयानक होगा, क्योंकि तुम भविष्यद्वक्ताओं
की कब्रों को चिन्हित करने के लिए भवनों का निर्माण करते हो, परन्तु तुम्हारे पूर्वज ही वे लोग थे जिन्होंने उनको मार डाला था! 48इसलिए जब तुम उन भवनों
का निर्माण करते हो, तो तुम घोषणा कर रहे होते हो कि तुम उसका अनुमोदन करते हो जो तुम्हारे पूर्वजों ने किया था जब उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को मार
डाला था। 49इसलिए परमेश्वर ने, जो बहुत बुद्धिमान है, यह भी कहा, ‘मैं अपने लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूँगा।
परन्तु वे उन्हें बहुत कष्ट देंगे। वे उनमें से कुछ को मार भी डालेंगे।’ 50परिणास्वरूप, इस समय में रहने वाले लोगों को उन सब भविष्यद्वक्ताओं की हत्या के लिए
दण्डित किया जाएगा जिनको इस संसार की उत्पत्ति के बाद से लोगों ने मार डाला है। 51उन्हें उस प्रत्येक हत्या के लिए दण्डित किया जाएगा जो {आदम के
पुत्र} हाबिल {जिसे उसके भाई कैन ने उसे मार डाला था} से लेकर जकर्याह {भविष्यद्वक्ता} की हत्या तक है, जिसे {मंदिर में} राजा के प्रतिनिधियों ने वेदी और
पवित्र स्थान के बीच में मार डाला था। 52यहूदी व्यवस्था के शिक्षकों, तुम्हारे लिए यह कितना भयानक होगा। तुम परमेश्वर के विषय में जानने से लोगों को रोक
रहे हो! तुम स्वयं तो परमेश्वर को जानते नहीं हो, और तुम बाकी लोगों के लिए बातों को कठिन बना देते हो जो परमेश्वर को बेहतर रूप से जानना चाहते हैं।”
53{जब यीशु ने उन बातों को कहना समाप्त कर लिया तो उसके पश्चात,} वह फरीसी के घर से निकल कर चला गया। तब यहूदी व्यवस्था के शिक्षक और
फरीसी उसके प्रति बहुत ही शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने लगे। उन्होंने उससे कई बातों के विषय में बड़ी बारीकी से प्रश्न किए। 54वे उसे लगातार सुनते रहे कि वह
कुछ अनुचित कहे ताकि वे उस पर झूठी शिक्षा देने का आरोप लगा सकें।

Chapter 12

1इसी बीच में, हजारों लोग {यीशु के आसपास} इकट्ठा हो गए। वे लोग इतने सारे थे कि वे एक दूसरे पर चढ़ रहे थे। जो पहली बात उसने अपने चेलों से कही
वह यह थी, “सावधान रहो कि तुम फरीसियों के समान न बनो, जो सार्वजनिक रूप से तो धार्मिक कार्य करते हैं परन्तु गुप्त में दुष्ट कामों को करते हैं। 2लोगों के
लिए अपने पापों को गुप्त रखने का प्रयास करना यह तो व्यर्थ है। किसी दिन परमेश्वर सब लोगों को वह सब कुछ बता देगा जिसे लोग छिपाने का प्रयास कर रहे
हैं। 3किसी दिन लोग तुम्हारे द्वारा गुप्त रूप से कही गई हर बात को सार्वजनिक रूप से सुनेंगे। किसी दिन कोई जन सब लोगों को चिल्ला कर बताएगा कि वे
सुनें कि तुम ने अपने कमरे में क्या फुसफुसाया है। 4हे मेरे मित्रों, ध्यानपूर्वक सुनो! लोगों से मत डरो। वे तुम को मार सकते हैं, परन्तु उसके पश्चात वे तुम्हारे साथ
उससे अधिक कुछ भी नहीं कर सकते हैं। 5मैं तुम को बताऊँगा कि तुम को वास्तव में किससे डरना चाहिए। तुम को परमेश्वर से डरना चाहिए। उसके पास न
केवल लोगों को मार डालने का अधिकार है, तत्पश्चात उसके पास उनको अधोलोक में डाल देने का अधिकार भी है! हाँ, मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर ही है
जिससे तुम को वास्तव में डरना चाहिए! 6गौरैयों के विषय में विचार करो। {उनका मूल्य इतना कम होता है कि} तुम दो छोटे सिक्कों में उनमें से पाँच को मोल ले
सकते हो। और तौभी परमेश्वर उनमें से किसी को भी कभी भूलता नहीं! 7यहाँ तक कि परमेश्वर जानता है कि तुम्हारे सिर पर कितने बाल हैं। डरो मत, क्योंकि
तुम {परमेश्वर के लिए} बहुत गौरैयों से भी अधिक बढ़कर मूल्यवान हो। 8मैं तुम से यह भी कहता हूँ कि यदि लोग दूसरे लोगों से कहते हैं कि वे मेरे चेले हैं, तो मैं,
मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर के स्वर्गदूतों से कहूँगा कि वे लोग मेरे ही चेले हैं। 9परन्तु यदि वे अन्य लोगों से कहते हैं कि वे मेरे चेले नहीं हैं, तो मैं परमेश्वर के स्वर्गदूतों
से कहूँगा कि वे लोग मेरे चेले नहीं हैं। 10मैं तुम से यह भी कहता हूँ कि यदि लोग मुझ, मनुष्य के पुत्र, के विषय में बुरी बातों को बोलते हैं, तो इसके लिए
परमेश्वर उनको क्षमा कर देगा। परन्तु यदि लोग पवित्र आत्मा के विषय में बुरी बातों को बोलते हैं, तो इसके लिए परमेश्वर उनको क्षमा नहीं करेगा। 11इसलिए
जब लोग तुम को आराधनालयों में लेकर आते हैं {कि वहाँ पर धार्मिक अगुवों के सामने तुम से प्रश्न करें} और अन्य लोगों के सामने जो उस देश में शक्ति को
रखते हैं, तो इस विषय में चिन्ता मत करना कि तुम किस प्रकार से उनको उत्तर दोगे या इस विषय में कि तुम को क्या बोलना चाहिए, 12क्योंकि पवित्र आत्मा
उस समय पर ही तुम को बता देगा कि तुम को क्या बोलना चाहिए।” 13तब भीड़ में से एक व्यक्ति ने यीशु से कहा, “हे गुरु, हमारे पिता की सम्पत्ति को मेरे साथ

बाँट लेने के लिए मेरे भाई से कह दे!” 14परन्तु यीशु ने प्रत्युत्तर में उससे कहा, “हे मनुष्य, लोगों में सम्पत्ति के विषय में जो झगड़े हैं उनको निपटाने के लिए
किसी ने भी मुझे न्यायाधीश नियुक्त नहीं किया है!” 15फिर उसने सम्पूर्ण भीड़ से कहा, “किसी भी रीति से लालची न होने के विषय में सावधान रहो! किसी
व्यक्ति के जीवन के विषय में जो मायने रखता है वह यह नहीं है कि उसके पास कितनी वस्तुएँ हैं।” 16उसके पश्चात यीशु ने भीड़ को यह कहानी बताई: “किसी
एक धनवान व्यक्ति के खेतों में बहुतायत से फसल उत्पन्न हुई। 17वह अपने में ही विचार करने लगा, ‘मैं नहीं जानता कि क्या करना चाहिए, क्योंकि अपनी सारी
फसल को भण्डार करके रखने के लिए मेरे पास {इतना बड़ा} कोई स्थान नहीं है!’ 18फिर वह अपने में ही विचार करने लगा, ‘मैं जानता हूँ कि मैं क्या करूँगा! मैं
अपने गेहूँ के डिब्बों को तोड़ डालूँगा और उनसे बड़े आकार के बनाऊँगा! तब मैं अपने सारे गेहूँ और अन्य वस्तुओं को उन नए बड़े-बड़े डिब्बों में भण्डार करके
रखने पाऊँगा। 19तब मैं स्वयं से कहूँगा, “अब मैंने बहुत वर्षों के लिए पर्याप्त वस्तुओं को भण्डार करके रख लिया है। इसलिए मैं जीवन को सरलता से व्यतीत
करूँगा। मैं खाऊँगा और पीऊँगा और प्रसन्न रहूँगा!”’ 20परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, ‘हे मूर्ख मनुष्य! आज की रात तू मर जाएगा! तब जो सब वस्तुएँ तूने अपने
लिए बचा कर रखी हुई हैं वह तेरी नहीं, परन्तु किसी अन्य की हो जाएँगी!’” 21तब यीशु ने इस उदाहरण को यह कहने के द्वारा समाप्त किया, “यही उन लोगों के
साथ भी होगा जो केवल अपने लिए वस्तुओं को भण्डार करके रखते हैं और उन वस्तुओं को महत्व नहीं देते जिनको परमेश्वर मूल्यवान मानता है।” 22फिर यीशु
ने अपने चेलों से कहा, “यहाँ कुछ ऐसा है जो इस कहानी से तुम को सीखना चाहिए। चाहे तुम्हारे पास जीवित रहने हेतु खाने के लिए पर्याप्त भोजन हो या गर्म
रहने के लिए पहनने को पर्याप्त कपड़े हों तौभी उनके विषय में चिन्ता मत करना। 23अन्ततः, जो भोजन तुम खाते हो उससे बढ़कर महत्वपूर्ण तुम्हारा जीवन है,
और जो कपड़े तुम पहनते हो उससे बढ़कर महत्वपूर्ण तुम्हारी देह है। 24पक्षियों के विषय में विचार करो। वे बीज नहीं बोते हैं, और वे फसल नहीं काटते हैं।
उनके पास कमरे या भवन नहीं होते हैं जिनमें वे फसल को भण्डार करके रखें, परन्तु परमेश्वर उनके लिए भोजन उपलब्ध करवाता है। और निश्चित रूप से तुम
पक्षियों से अधिक बढ़कर मूल्यवान हो। 25तुम में से कोई भी अपने जीवन में उसके विषय में चिन्ता करने के द्वारा एक घड़ी भी जोड़ नहीं सकता है। 26इसलिए
क्योंकि तुम यह एक छोटा सा काम भी नहीं कर सकते, तो निश्चित रूप से तुम को किसी अन्य बात के विषय में भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। 27जिस रीति से
फूल उन्नति करते हैं उस पर विचार करो। वे धन कमाने के लिए काम नहीं करते हैं, और न ही वे अपने स्वयं के कपड़ों को बनाते हैं। परन्तु मैं तुम को बताता हूँ
कि राजा सुलैमान, {जो बहुत समय पहले जीवित था और} जिसने महिमामय वस्त्रों को धारण किया था, उसने भी कभी किसी फूल के समान सुन्दर रूप से
वस्त्र धारण नहीं किए थे। 28परमेश्वर पौधों को भी सुन्दर बनाता है, भले ही वे केवल थोड़े समय के लिए उन्नति करते हैं। फिर लोग उनको काट डालते हैं और
उनको आग में झोंक देते हैं। {परन्तु तुम परमेश्वर के लिए अत्यन्त मूल्यवान हो।} वह तुम्हारी चिन्ता उससे भी बढ़कर करता है जितनी चिन्ता वह पौधों की करता
है। जितना तुम करते हो तुम को उससे बढ़कर परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। 29जहाँ तक तुम्हारी बात है, इस विषय में अचम्भित मत हो कि तुम क्या
खाओगे और पियोगे, और {उन बातों के विषय में} चिन्ता करते ही मत रहना। 30जबकि वे सब लोग जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं ऐसी ही बातों के विषय में
चिन्ता करते हैं {तो तुम आश्वस्त हो सकते हो कि} स्वर्ग में विराजमान तुम्हारा पिता जानता है कि तुम को उनकी आवश्यकता है। 31बजाए इसके, इस पर ध्यान
लगाओ कि तुम परमेश्वर के राज्य के लिए क्या कर सकते हो। जब तुम ऐसा करते हो, तो तुम्हारे लिए आवश्यक सब वस्तुओं को उपलब्ध करवाने के लिए तुम
परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हो। 32इसलिए हे मेरे मित्र, तुम को डरना नहीं चाहिए। स्वर्ग में विराजमान तुम्हारा पिता चाहता है कि तुम उसके राज्य का हिस्सा
बनो {और उसके सब लाभों को प्राप्त करो}। 33इसलिए जो वस्तुएँ तुम्हारे पास हैं उनको बेच दो और वह धन उन लोगों को दे दो जिनको जीवित रहने के लिए
भोजन या कपड़ों या एक स्थान की आवश्यकता है। अपने लिए ऐसे बटुए ले लो जो फटते न हों। मेरा अर्थ है कि स्वर्ग में धन को जमा करो जहाँ वह सर्वदा
सुरक्षित रहेगा। वहाँ कोई चोर किसी भी वस्तु को चुरा नहीं सकता है और कोई भी कीड़ा तुम्हारे कपड़ों को नष्ट नहीं करेगा। 34अन्ततः, जिस किसी भी वस्तु को
तुम जमा करते हो, यह वही है जिसके विषय में तुम विचार करते रहोगे और अपने समय को खर्च करोगे। 35{सर्वदा} तैयार रहो {परमेश्वर का काम करने के
लिए,} उन लोगों के समान जिन्होंने अपने काम करने वाले कपड़ों को पहन लिया है और पूरी रात दीए को जलाए रखते हैं। 36तैयार रहो {मेरे लौट आने के
लिए,} उन दासों के समान जो विवाह के भोज में सम्मिलित होने के पश्चात अपने स्वामी के लौट आने की प्रतीक्षा कर रहे हों। वे प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जैसे ही
वह पहुँचे और द्वार खटखटाए तो वे उसके लिए शीघ्रता से द्वार को खोल दें। 37यह उन दासों के लिए बहुत ही भला होगा यदि वे उस समय पर जाग रहे हों जब
उनका स्वामी लौटता है। मैं तुम को यह बताता हूँ: वह दास के समान वस्त्र पहन कर, और उनको बैठने के लिए कहकर उनको भोजन परोसने के द्वारा उनको
पुरस्कृत करेगा। 38भले ही यदि वह शाम के समय में या आधी रात में विलम्ब से घर आता है, तो यदि वह पाता है कि उसके दास जागे हुए हैं और उसके लिए
तैयार हैं, तो वह उनसे अत्यन्त प्रसन्न हो जाएगा। 39और मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर ध्यान दो: यदि किसी घर का स्वामी जानता होता कि एक चोर आ रहा है,
और किस समय पर आ रहा है, तो वह जागता रहता और उस चोर को अपने घर में सेंध लगाने नहीं देता। 40इसलिए तैयार रहो, क्योंकि, मैं, मनुष्य का पुत्र, ऐसे
समय पर वापस आऊँगा जब तुम मेरी अपेक्षा न करते हो। 41पतरस ने पूछा, “हे प्रभु, क्या तू यह उदाहरण हमें, तेरे चेलों के लिए ही दे रहा है? या फिर इस भीड़
के लिए भी है?” 42यीशु ने उत्तर दिया, “मैं यह उस हर एक जन के लिए कह रहा हूँ जो उस विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास के समान है जो अपने स्वामी के घर
में एक भण्डारी है। उसका स्वामी उसे अपने अन्य दासों पर सरदार इसलिए ठहराता है, ताकि वह यह सुनिश्चित करे कि वे सब अपना भोजन सही समय पर
प्राप्त करें। 43यदि उसका स्वामी घर आकर देखे कि वह अपने काम को कर रहा है, तो वह उस दास को पुरस्कृत करेगा। 44मैं तुम को यह बताता हूँ: वह स्वामी
उस दास को अपनी सारी सम्पत्ति पर सरदार ठहराएगा। 45परन्तु वह दास जिसे सरदार ठहराया गया स्वयं से कहे कि, ‘मेरा स्वामी लम्बे समय के लिए दूर जा
रहा है।’ तब वह अन्य दासों को पीटने लगे। सम्भवतः वह खाने और बहुत पीने लगे, और पियक्कड़ हो जाए। 46यदि वह ऐसा करता है, तो उसका स्वामी ऐसे
समय पर वापस आएगा जिसके लिए वह दास अपेक्षा न करता हो। तब उसका स्वामी उसे गम्भीर रूप से दण्डित करेगा और उसे उन लोगों के साथ स्थान देगा
जो उसकी सेवा विश्वासयोग्यता के साथ नहीं करते हैं। 47वह दास जो जानता था कि उसका स्वामी क्या चाहता था परन्तु तैयार रहकर उसे नहीं किया तो वह
गम्भीर रूप से दण्डित किया जाएगा। 48परन्तु हर एक वह दास जो नहीं जानता कि उसका स्वामी उससे क्या करवाना चाहता था, और फिर कुछ अनुचित करे,
तो वह केवल सौम्य सा दण्ड पाएगा। वह स्वामी उन सारे ही दासों से बहुत अधिक की अपेक्षा करेगा जिनको उसने अधिक सौंपा हुआ है। और वह स्वामी उन
दासों से तो और भी अधिक की अपेक्षा करेगा जिन पर उसने बहुत से उत्तरदायित्वों के साथ भरोसा किया हुआ है। 49मैं लोगों के आत्मिक आवेश में हलचल
मचाने के लिए आया हूँ। मैं चाहता था कि वे पहले से ही उन पर काम कर रहे होते! 50शीघ्र ही मुझे भयंकर सताव से होकर जाना है। जब तक कि मैं अपने
सताव को समाप्त नहीं कर लेता, तब तक मैं व्यथित रहूँगा। 51तुम को जान लेना चाहिए कि मैं इसलिए नहीं आया ताकि लोग शान्तिपूर्वक मिल कर रहें। नहीं,
तुम को समझना होगा कि बजाए इसके, लोग मेरे लिए और मेरे विरोध में पक्षपात करेंगे। 52तैयार रहो, क्योंकि यही है जो होनेवाला है। पाँच लोगों के एक

परिवार में, कुछ मुझ पर विश्वास करेंगे और कुछ नहीं करेंगे। परिवार के तीन सदस्य अन्य दो के विरोध में एक साथ मिल जाएँगे। 53परिवार के सदस्यों में झगड़े
होंगे। एक पिता अपने पुत्र का विरोध करेगा, या एक पुत्र अपने पिता का विरोध करेगा। एक माता अपनी पुत्री का विरोध करेगी, या एक पुत्री अपनी माता का
विरोध करेगी। एक सास अपनी बहू का विरोध करेगी, या एक बहू अपनी सास का विरोध करेगी।" 54उसने भीड़ से भी कहा, "जब तुम पश्चिम में एक घने बादल
को आकार लेते हुए देखते हो, तो झट से तुम कहते हो, 'वर्षा होने वाली है!' और ऐसा होता भी है। 55जब दक्षिण से हवा बहती है, तो तुम कहते हो, 'यह दिन
बहुत ही गर्म होने वाला है!' और तुम सही होते हो। 56हे पाखण्डियों! बादलों और हवा पर ध्यान करने के द्वारा, तुम यह समझने में सक्षम हो कि मौसम के विषय
में क्या हो रहा है। तुम को यह समझने में भी सक्षम होना चाहिए कि इस वर्तमान समय में परमेश्वर क्या कर रहा है! 57तुम में से प्रत्येक को अपने स्वयं के लिए
निर्णय लेना चाहिए कि क्या सही है! 58यहाँ एक काम है जो तुम को करना चाहिए। जिस समय पर तुम अभी न्यायालय जाने के मार्ग में ही हो, तो तुम को उस
व्यक्ति के साथ मामलों को निपटाने का प्रयास करना चाहिए जिसने तुम पर आरोप लगाया है। यदि वह तुम को न्यायाधीश के पास जाने के लिए विवश करता
है, तो न्यायाधीश यह निर्णय ले सकता है कि तुम दोषी हो और तुमको न्यायालय के अधिकारी को सौंप सकता है। तब वह अधिकारी तुम को बन्दीगृह में डाल
देगा। 59मैं तुम से कहता हूँ कि यदि तुम बन्दीगृह में जाते हो, तो तुम तब तक वहाँ से कभी नहीं निकल पाओगे जब तक कि तुम न्यायाधीश के कहने पर जो
कुछ तुम पर बकाया है, उसका एक-एक अंश चुकाने में सक्षम न हो जाओ।"

Chapter 13

1उस समय पर, कुछ लोगों ने जो वहाँ भीड़ में थे यीशु को इस विषय में बताया जो कुछ गलीलवासियों के साथ हाल ही में घटित हुआ था। रोमी राज्यपाल,
पिलातुस ने सैनिकों को उन गलीलवासियों को मार डालने का आदेश दिया था जिस समय पर वे यरूशलेम के मंदिर में बलिदान चढ़ा रहे थे। 2यीशु ने उनको
प्रत्युत्तर दिया, "क्या तुम सोचते हो कि ऐसा उन गलील में रहने वालों के साथ इसलिए घटित हुआ क्योंकि वे अन्य सब गलीलवासियों से भी अधिक बढ़कर पापी
थे? 3मैं तुम को आश्वासन देता हूँ, कि कारण यह नहीं था! बजाए इसके, यदि तुम अपने पापी व्यवहार से नहीं फिरे तो परमेश्वर तुम सब को भी उसी प्रकार से
दण्डित करेगा। 4या उन 18 लोगों के विषय में क्या जो तब मर गए थे जब उन पर शिलोह {के पड़ोस} में गुम्मट गिर पड़ा था? क्या तुम विचार करते हो कि उनके
साथ ऐसा इस कारण से हुआ क्योंकि वे यरूशलेम में रहने वाले बाकी सब लोगों से अधिक बुरे पापी थे? 5मैं तुम को आश्वासन देता हूँ, कि कारण यह नहीं था!
परन्तु बजाए इसके, तुम को यह समझने की आवश्यकता है कि यदि तुम अपने पापी व्यवहार से नहीं फिरे तो परमेश्वर तुम सब को भी उसी प्रकार से दण्डित
करेगा।" 6फिर यीशु ने उनको यह कहानी बताई: "किसी मनुष्य ने अपने बगीचे में अंजीर का एक पेड़ लगाया। {प्रत्येक वर्ष} वह अंजीर लेने के लिए आया,
परन्तु {सदा ही} उस में कुछ नहीं पाया। 7तब उसने माली से कहा, 'इस पेड़ को देख! मैंने पिछले तीन वर्षों से प्रत्येक वर्ष इस में फल की खोज कर रहा हूँ, परन्तु
इसमें से कोई अंजीर नहीं मिला। इसे काट डाल! यह केवल व्यर्थ में मिट्टी में से पोषक तत्वों का उपयोग कर रहा है!' 8परन्तु माली ने प्रत्युत्तर में कहा, 'हे महोदय,
इसे यहाँ एक वर्ष के लिए और छोड़ दे। मैं उसके चारों ओर खुदाई करूँगा और खाद डालूँगा। 9यदि इस में अगले वर्ष अंजीर लग जाएँ, तो हम इसे उन्नति करते
रहने दे सकते हैं! परन्तु यदि उस समय तक उसमें कोई फल नहीं आता है, तो तू इसे काट सकता है।'" 10यहूदियों के एक विश्रामदिन पर, यीशु एक
आराधनालय में लोगों को शिक्षा दे रहा था। 11वहाँ पर एक स्त्री थी जिसे एक दुष्टात्मा ने 18 वर्षों से अपंग किया हुआ था। वह सदा झुकी ही रहती थी। वह
सीधी खड़ी नहीं हो सकती थी। 12जब यीशु ने उसे देखा, तो उसने उसे अपने पास बुलाया। उसने उससे कहा, "हे स्त्री, मैंने तुझे इस व्याधि से चंगा कर दिया है!"
13उसने अपने हाथों को उस पर रख दिया। वह झट से सीधी खड़ी हो गई और परमेश्वर की स्तुति करने लगी! 14परन्तु आराधनालय का अगुवा क्रोधित हो गया
था क्योंकि यीशु ने उसे यहूदियों के विश्रामदिन पर चंगा किया था। इसलिए उसने लोगों से कहा, "प्रत्येक सप्ताह में छः दिन ऐसे होते हैं जिनमें लोगों को काम
करने की अनुमति हमारी व्यवस्था देती है। यदि तुम को चंगाई की आवश्यकता है, तो तुम को चंगा करने के लिए किसी के आराधनालय में आने के लिए वे दिन
हैं। हमारे विश्राम के दिन में मत आओ!" 15तब यीशु ने उसे प्रत्युत्तर दिया, "तू और तेरे साथी धार्मिक अगुवे पाखण्डी हैं! तुम में से प्रत्येक {कभी-कभी विश्राम के
दिन भी काम करता है! उदाहरण के लिए, तू} अपने बैल या गधे को थान से ऐसे स्थान पर ले जाने के लिए खोलता है जहाँ वह पानी पी सकता है। 16यह स्त्री
एक यहूदी है, और अब्राहम की वंशज है! परन्तु शैतान ने उसे 18 वर्ष से अपंग कर रखा है, मानो उसने उसे बाँध दिया हो! निश्चित रूप से तू सहमत होगा कि
यह उचित है कि मैं उसे इस अक्षम करने वाली बीमारी से मुक्त कर दूँ, भले ही मैं इसे विश्राम के दिन करूँ!" 17उसके पश्चात उसने जो कहा, उसके शत्रु स्वयं ही
लज्जित हो गए। परन्तु बाकी सब लोग उन सब अद्भुत कामों के विषय में प्रसन्न थे जो वह कर रहा था। 18फिर उसने कहा, "मैं यह समझाना चाहता हूँ कि जब
राजा के रूप में परमेश्वर शासन करता है तो यह किसके समान होगा। मैं तुम को समझने में सहायता के लिए एक चित्रण प्रदान करूँगा। 19यह एक छोटे से राई
के दाने के समान है जिसे एक व्यक्ति ने अपने खेत में बो दिया। उसने एक पेड़ के समान बड़े होने तक उन्नति की। वह इतना बड़ा हो गया कि पक्षियों ने भी
उसकी शाखाओं पर घोंसले बना लिए।" 20उसके पश्चात उसने फिर से कहा, "मैं तुम को एक और (मार्ग) बताऊँगा कि जब परमेश्वर शासन करे तो यह किसके
समान होगा। 21यह उस थोड़े से ख़मीर के समान है जिसे किसी स्त्री ने लगभग 25 किलोग्राम आटे में मिला दिया। उस थोड़ी सी मात्रा वाले ख़मीर ने आटे के
उस सम्पूर्ण जत्थे को फुला दिया।" 22यीशु ने यरूशलेम की ओर जाने की यात्रा को जारी रखा। वह मार्ग के सब नगरों और गाँवों में रुका और लोगों को उपदेश
दिया। 23किसी ने उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या परमेश्वर केवल थोड़े लोगों को ही बचाएगा?" यीशु ने उत्तर दिया ताकि वहाँ पर उपस्थित हर कोई सुन पाए, 24"तुम
को प्रवेश करने के लिए कठिन प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह अत्यन्त मुश्किल है। मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से लोग भीतर जाने का प्रयास
करेंगे, परन्तु वे ऐसा करने में असमर्थ होंगे। 25घर के स्वामी के उठ कर द्वार को बन्द कर देने के पश्चात, तुम बाहर ही खड़े रहोगे और द्वार को खटखटाओगे।
और तुम स्वामी से विनती करोगे और उससे कहोगे, 'हे प्रभु, हमारे लिए द्वार को खोल दे!' परन्तु वह प्रत्युत्तर में कहेगा, 'नहीं, मैं उसे नहीं खोलूँगा, क्योंकि मैं तुम
को नहीं जानता, और मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ के रहने वाले हो!' 26तब तुम कहोगे, '{तू अवश्य ही भूल गया होगा कि} हम ने तेरे संग भोजन किया था, और
तूने हमारे नगरों की सड़कों पर हम को उपदेश दिया था!' 27परन्तु वह कहेगा, 'मैं तुम से फिर से कहता हूँ, मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ के रहने वाले हो। तुम सब
दुष्ट लोग हो! यहाँ से चले जाओ!'" 28{तब यीशु ने यह कहने के द्वारा जारी रखा,} "तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब को {एक दूरी पर से} देखोगे। सभी
भविष्यद्वक्ता जो बहुत पहले जीवित थे, वे भी वहाँ होंगे जहाँ राजा के रूप में परमेश्वर सब कुछ पर शासन करता है। परन्तु तुम रोते हुए और दु:ख में अपने दाँत

पीसते हुए बाहर ही रहोगे! 29परन्तु भीतर संसार के हर हिस्से से लोग होंगे, {जिनमें कई गैर-यहूदी लोग भी सम्मिलित हैं}। वे सब वहाँ एक साथ उत्सव मनाएँगे
जहाँ राजा के रूप में परमेश्वर सब कुछ पर शासन करता है। 30इस पर विचार करो: कुछ लोग जो इस समय सबसे कम महत्वपूर्ण लगते हैं, वे तब सर्वाधिक
महत्वपूर्ण होंगे, और अन्य जो इस समय महत्वपूर्ण लगते हैं, वे तब सबसे कम महत्वपूर्ण होंगे।" 31उसी दिन, कुछ फरीसी आये और यीशु से कहा, "इस क्षेत्र से
चला जा, क्योंकि शासक हेरोदेस अन्तिपास तुझे मार डालना चाहता है!" 32उसने उन्हें उत्तर दिया, "जाओ और उस चालाक मनुष्य से कह दो, {जो सोचता है
कि वह मुझे चोट पहुँचा सकता है परन्तु जो वास्तव में नहीं कर सकता,} यह सन्देश मेरी ओर से है: 'सुन! मैं अभी दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूँ और चमत्कारों
को कर रहा हूँ, और मैं थोड़े समय तक ऐसा ही करता रहूँगा। उसके पश्चात, मैं अपने काम को समाप्त कर दूँगा।' 33परन्तु मुझे आने वाले दिनों में यरूशलेम की
अपनी यात्रा को भी जारी रखना जरुरी है, क्योंकि {यहूदी अगुवों ने सदा ही ऐसा काम किया है} यरूशलेम की तुलना में किसी अन्य स्थान पर किसी
भविष्यद्वक्ता को मार डालना उचित नहीं है। 34हे यरूशलेम के लोगों! तुम ने उन भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला जो बहुत पहले जीवित थे। फिर तुम ने उन
लोगों को मार डाला जिन्हें परमेश्वर ने तुम्हारे पास भेजा था। तुम ने उन पर पत्थर फेंक कर उन्हें मार डाला। जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा
करती है, वैसे ही मैंने कई बार तुम्हारी रक्षा करने के लिए तुम्हें इकट्ठा करना चाहा है। परन्तु तुम नहीं चाहते थे कि मैं ऐसा करूँ। 35अब देखो! हे यरूशलेम के
लोगों, परमेश्वर अब तुम्हारी रक्षा नहीं करेगा। मैं तुम से यह भी कहूँगा: मैं तुम्हारे शहर में केवल एक बार फिर प्रवेश करूँगा। उसके पश्चात, जब तक मैं लौट न
आऊँ, तब तक तुम मुझे न देखोगे, और तब तुम मेरे विषय में कहोगे, 'परमेश्वर इस मनुष्य को आशीष दे जो परमेश्वर के अधिकार के साथ आता है!'"

Chapter 14

1एक दिन, जो कि विश्राम का दिन था, यीशु भोजन करने के लिए फरीसियों के अगुवों में से एक के घर पर गया। {उस अगुवे ने उसी भोज में दूसरे फरीसियों को
भी आमंत्रित किया हुआ था।} वे सब के सब यीशु को {उस पर आरोप लगाने के किसी आधार को ढूँढ़ने के प्रयास में} बड़े ध्यानपूर्वक देख रहे थे। 2वहीं पर यीशु
के सामने एक मनुष्य था जिसको एक ऐसी बीमारी थी जिसके कारण उसके हाथ और पाँव बहुत सूज गए थे। 3यीशु ने यहूदी व्यवस्था के विशेषज्ञों और
फरीसियों से जो वहाँ पर उपस्थित थे पूछा, "क्या व्यवस्था में विश्राम के दिन में लोगों को चंगा करने की अनुमति दी गई है, या नहीं?" 4उन्होंने उत्तर नहीं दिया।
इसलिए यीशु ने अपने हाथों को उस मनुष्य पर रख कर उसे चंगा कर दिया। फिर उसने उस मनुष्य से कहा कि वह जा सकता है। 5और उसने वहाँ पर उपस्थित
अन्य लोगों से कहा, "यदि तुम में से किसी का पुत्र या बैल हो जो विश्राम के दिन में कुएँ में गिर जाए, तो क्या तुम उसे झटपट से बाहर नहीं खींच लोगे।" 6फिर
से, वे उसे उत्तर देने में असमर्थ थे। 7यीशु ने ध्यान दिया कि जिन लोगों को भोज में आमंत्रित किया गया था वे उन आसनों पर बैठने का चुनाव कर रहे थे जहाँ
सामान्य रूप से महत्वपूर्ण लोगों बैठते थे। इसलिए उसने उनको यह सुझाव दिया। 8"जब कोई व्यक्ति तुम में से किसी को विवाह के भोज में आमंत्रित करे, तो
उस स्थान पर मत बैठना जहाँ पर महत्वपूर्ण लोग बैठते हैं। यह हो सकता है कि उसने भोज में किसी ऐसे व्यक्ति को आमंत्रित किया हो जो तुम से भी अधिक
बढ़कर महत्वपूर्ण हो। 9जब वह मेजबान जिसने तुम दोनों को ही आमंत्रित किया हुआ हो देखे कि तुम में से प्रत्येक जन कहाँ पर बैठा हुआ है, तो वह तुम से
कहेगा, 'इस व्यक्ति को अपने आसन पर बैठने दे!' तब तुम को सबसे कम महत्वपूर्ण आसन पर बैठना पड़ेगा, और तुम को लज्जित भी होना पड़ेगा। 10बजाए
इसके, जब कोई व्यक्ति तुम को किसी भोज में आमंत्रित करे, तो जाकर सबसे कम महत्वपूर्ण स्थान पर बैठना। फिर जब वह मेजबान जिसने सब लोगों को
आमंत्रित किया है आएगा, तो वह तुम से कहेगा, 'हे मित्र, आकर उत्तम आसन पर बैठ!' तब वे सब लोग जो तुम्हारे साथ भोजन कर रहे हैं देखेंगे कि वह तुम्हारा
सम्मान कर रहा है। 11क्योंकि परमेश्वर उनको नम्र करेगा जो स्वयं को बड़ा बनाते हैं, और वह उनको बड़ा बनाएगा जो स्वयं को नम्र करते हैं।" 12यीशु ने उस
फरीसी से भी जिसने उसे भोज के लिए आमंत्रित किया था कहा, "जब तू दिन के भोजन या रात के भोजन के लिए लोगों को आमंत्रित करे, तो केवल अपने
मित्रों, कुटुम्बियों, या धनवान पड़ोसियों को ही आमंत्रित मत करना, क्योंकि बाद में वे भी तुझे भोज में आमंत्रित करने के द्वारा तेरा बदला चुका देंगे। 13बजाए
इसके, जब तू भोज रखे, तो कंगालों, अपंगों, लंगड़ों या अंधों को आमंत्रित कर। 14यदि तू ऐसा करे, तो परमेश्वर तुझे पुरस्कृत करेगा, क्योंकि वे लोग तेरा बदला
चुकाने में असमर्थ होंगे। तू सुनिश्चित हो सकता है कि परमेश्वर तुझे उस समय पर इसे वापस चुकाएगा जब वह धर्मी लोगों को फिर से जीवित करेगा।" 15जो
लोग उसके साथ भोजन कर रहे थे उनमें से एक ने उसे यह कहते हुए सुना। उसने यीशु से कहा, "परमेश्वर ने हर उस जन को वास्तव में आशीषित किया है जो
वहाँ पर उत्सव मनाने पाएँगे जहाँ राजा के रूप में परमेश्वर सब कुछ पर शासन करता है!" 16यीशु ने उसे प्रत्युत्तर दिया, "एक बार एक व्यक्ति ने एक बड़ा भोज
तैयार किया। उसने बहुत सारे लोगों को आने के लिए आमंत्रित किया। 17जब भोज का समय आया, तो जिन लोगों को उसने आमंत्रित किया था उनके पास
उसने अपने दास को यह कहने को भेजा, 'अब आ जाओ, क्योंकि सब कुछ तैयार है!' 18परन्तु जब दास ने ऐसा किया, तो वे सब लोग जिनको उसने आमंत्रित
किया था बताने लगे कि वे क्यों नहीं आ सकते। उस पहले व्यक्ति ने जिसके पास वह दास गया था कहा, 'मैंने अभी-अभी एक खेत मोल लिया है, और मुझे वहाँ
जाकर उसे देखना आवश्यक है। कृपया अपने स्वामी से मुझे न आने हेतु क्षमा कर देने के लिए कह देना!' 19दूसरे व्यक्ति ने कहा, 'मैंने अभी-अभी बैलों के पाँच
जोड़े मोल लिए हैं, और मुझे जाकर उन्हें परखना आवश्यक है। कृपया अपने स्वामी से मुझे न आने हेतु क्षमा कर देने के लिए कह देना।' 20एक अन्य व्यक्ति ने
कहा, 'मैंने अभी-अभी विवाह किया है, इसलिए मैं आ नहीं सकता।' 21इसलिए वह दास अपने स्वामी के पास लौट आया और सब लोगों ने जो कहा था वह उसे
बता दिया। घर के स्वामी ने अत्यन्त क्रोधित होकर अपने दास से कहा, 'नगर की गलियों और रास्तों में शीघ्रता से जाओ और कंगालों को और अपंगों को और
अंधों को और लंगड़ों को ढूँढ़कर उनको यहाँ मेरे घर में लेकर आओ!' 22{उसके पश्चात} वह दास {चला गया और वैसा ही किया, और वह वापस आया और}
बोला, 'हे महोदय, तूने मुझ से जो करने के लिए बोला था मैंने वह कर दिया है, परन्तु यहाँ अभी भी और लोगों के लिए स्थान बचा हुआ है।' 23इसलिए उसके
स्वामी ने उससे कहा, 'तो फिर नगर के बाहर चला जा। राजमार्गों पर लोगों की खोज कर। बाड़ वाली संकरी सड़कों पर भी खोज कर। उन स्थानों में रहने वाले
लोगों से मेरे घर में आने के लिए दृढ़तापूर्वक आग्रह कर। मैं चाहता हूँ कि वह लोगों से भर जाए! 24इसके अलावा मैं तुझ से कहता हूँ कि वे मनुष्य जिनको मैंने
पहले आमंत्रित किया था मेरे भोज का आनन्द नहीं ले पाएँगे, {क्योंकि उन्होंने आने से मना कर दिया}।'" 25लोगों की एक बड़ी भीड़ यीशु के साथ यात्रा कर रही
थी। वह लोगों की ओर मुड़ा और उनसे कहा, 26"यदि कोई मेरे पास आता है जो अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों से अधिक
बढ़ कर प्रेम करता है जितना वह मुझ से प्रेम करता है, तो वह मेरा चेला नहीं बन सकता है। उसे मुझे उससे भी बढ़ कर प्रेम करना है जितना वह अपने स्वयं के

जीवन से करता है। 27जो कोई भी अपना स्वयं का क्रूस नहीं उठाता और मेरा आज्ञापालन नहीं करता तो वह मेरा चेला नहीं बन सकता है। 28अन्ततः, यदि तुम
में से कोई गुम्मट बनाना चाहता हो, तो सर्वप्रथम तुम बैठ जाओगे और यह निर्धारित करोगे कि इसमें कितना खर्चा होगा। इस तरह से तुमको पता चल जाएगा
कि तुम्हारे पास इसे पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसा है या नहीं। 29अन्यथा, यदि तुम नींव डाल दो और बाकी के गुम्मट को पूरा करने में असमर्थ हो, तो जो कोई
भी यह देखेगा वह तुम्हारा उपहास करेगा। 30वे कहेंगे, 'इस मनुष्य ने गुम्मट को बनाना आरम्भ तो किया, परन्तु वह उसे पूरा करने में असमर्थ था!' 31या मान लो
कि एक राजा के पास सेना में 10,000 सैनिक थे। और मान लो कि कोई अन्य राजा उस पर आक्रमण करने के लिए आ रहा था जिसके पास 20,000 सैनिक
थे। तो अपनी सेना को युद्ध करने के लिए बाहर निकालने से पूर्व, सर्वप्रथम वह राजा निश्चित रूप से अपने सलाहकारों के साथ बैठ कर यह निर्धारित करेगा कि
वह दूसरे राजा की सेना को पराजित कर सकता है या नहीं। 32मान लो कि उसने यह निर्धारित किया है कि उसकी सेना दूसरी सेना को पराजित नहीं कर सकती
है। तब वह सन्देशवाहकों को उस दूसरे राजा के पास भेजेगा जबकि अभी उसकी सेना दूर ही हो। वह अपने सन्देशवाहकों को उससे यह पूछने के लिए कहेगा,
'तुझ से शान्ति स्थापित करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?' 33अतः, उसी प्रकार से, यदि तुम में से कोई सर्वप्रथम यह निर्णय नहीं लेता कि जो कुछ तुम्हारे
पास है तुम उसे त्याग देने के इच्छुक हो, तो तुम मेरे चेले नहीं बन सकते हो।" 34{यीशु ने यह भी कहा,, "तुम ऐसे हो जैसे कि} नमक {, जो कि} अत्यन्त
उपयोगी होता है। परन्तु यदि नमक अपना नमकीनपन खो दे, तो कोई भी उसे फिर से कभी नमक का स्वाद नहीं दे सकता है। 35{यदि नमक में अब नमक का
स्वाद नहीं रहा तो,} अब वह किसी काम का नहीं रहा, न तो भूमि के लिए और न ही खाद के लिये। लोग उसे केवल फेंक देते हैं। जो तुम ने मुझे अभी-अभी
कहते हुए सुना है उसके विषय में तुम को ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए!"

Chapter 15

1अब, बहुत से चुंगी लेने वाले और अन्य लोग जिनको धार्मिक अगुवे पापी मानते थे यीशु के पास उसे शिक्षा देते हुए सुनने के लिए चले आ रहे थे। 2{जब}
फरीसियों और यहूदी व्यवस्था के शिक्षकों ने {यह देखा, तो वे} कुड़कुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, "यह मनुष्य तो पापियों का स्वागत करता है और यहाँ तक कि
उनके साथ भोजन भी करता है।" {उन्होंने सोचा कि ऐसा करने के द्वारा यीशु स्वयं को अशुद्ध कर रहा था।} 3इसलिए यीशु ने उनको यह दृष्टान्त बताया: 4"मान
लो कि तुम में से एक के पास 100 भेड़ें हैं और तुम उनमें से एक को खो देते हो। निश्चित रूप से तुम उन अन्य 99 भेड़ों को जंगल में छोड़ कर और जाकर उस
खोई हुई भेड़ को तब तक ढूँढ़ते रहोगे जब तक कि वह तुम को मिल न जाए। 5और जब वह तुम को मिल जाए, तो तुम आनन्दपूर्वक उसे उसे घर ले जाने के
लिए अपने कंधों पर उठा लोगे। 6फिर जब तुम घर पहुँच जाओगे, तो तुम अपने मित्रों और पड़ोसियों को एक साथ बुला कर उनसे कहोगे,: 'मेरे साथ आनन्दित
होओ, क्योंकि मेरी वह भेड़ मुझे मिल गई है जो खो गई थी!' 7तुम जान लो कि, इसी प्रकार से, वहां स्वर्ग में जो हैं उनके मध्य में आनन्द मनाया जाता है जब एक
पापी अपने पापों से पश्चाताप करता है। वह आनन्द उन बहुत से लोगों पर किए गए आनन्द से कहीं अधिक बढ़ कर है जो पहले से ही परमेश्वर के साथ सही हैं
और जिनको पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है। 8या मान लो कि एक स्त्री के पास चांदी के दस मूल्यवान सिक्के हों परन्तु वह उनमें से एक को खो दे।
निश्चित रूप से वह एक दीया जलाएगी और फर्श को बुहारेगी, और तब तक ध्यानपूर्वक खोजती रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाए। 9जब वह उसे मिल
जाए, तो वह अपने मित्रों और पड़ोसियों को एक साथ बुलाएगी और उनसे कहेगी,: 'मेरे साथ प्रसन्न होओ, क्योंकि मेरा वह सिक्का मुझे मिल गया है जो खो
गया था!' 10मैं तुम को बताता हूँ कि, इसी प्रकार से, परमेश्वर के स्वर्गदूतों के मध्य में वहां बहुत आनन्द मनाया जाता है जब एक पापी अपने पापों से पश्चाताप
करता है। 11फिर यीशु ने जारी रखते हुए कहा, "एक बार एक व्यक्ति था जिसके दो पुत्र थे। 12एक दिन छोटे पुत्र ने अपने पिता से कहा, 'हे पिता, मुझे अभी ही
अपनी सम्पत्ति का वह हिस्सा दे दे जो मुझे तब मिलता जब तेरी मृत्यु हो जाती।' अतः पिता ने अपनी सम्पत्ति को अपने दोनों पुत्रों के मध्य में बाँट दिया।
13केवल कुछ ही दिनों के पश्चात, छोटे पुत्र ने सब कुछ इकट्ठा किया जो उसका अपना था और एक दूर देश की ओर यात्रा की। वहाँ उस देश में उसने अपने सारे
धन को मूर्खतापूर्ण रीति से व्यर्थ और अनैतिक जीवन जीने में खर्च कर दिया। 14उसके अपना सारा धन खर्च कर देने के पश्चात, वहां उस सम्पूर्ण देश में भयंकर
अकाल पड़ा। शीघ्र ही उसके पास जीवित रहने के लिए कुछ भी बचा नहीं रहा। 15इसलिए वह उस देश में रहने वाले एक व्यक्ति के पास गया और उससे उसे
भाड़े में रख लेने के लिए निवेदन किया। अतः उस व्यक्ति ने अपने खेतों में उसे अपने सूअरों को चराने के लिए भेज दिया। 16{वह इतना भूखा हो गया कि} वह
चाहता था कि वह उन सेम की फलियों को खा सके जिनको सूअर खाते थे, तौभी उसे किसी ने कुछ नहीं दिया। 17अन्ततः वह स्पष्ट रूप से इस विषय में विचार
करने लगा कि वह कितना मूर्ख था, और उसने स्वयं से कहा: 'मेरे पिता के सारे ही भाड़े के दासों को खाने के लिए पर्याप्त से भी अधिक भोजन मिलता है, परन्तु
मैं यहाँ इसलिए मर रहा हूँ क्योंकि मेरे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है! 18इसलिए मैं यहाँ से निकल कर और अपने पिता के पास वापस चला जाऊँगा। मैं
उससे कहूँगा, "हे पिता, मैंने परमेश्वर के विरोध में और तेरे विरोध में पाप किया है। 19मैं इस योग्य नहीं हूँ कि अब तू मुझे अपना पुत्र समझे। कृपया मुझे तेरे भाड़े
पर रखे हुए दासों में से एक के समान ही तेरे लिए काम करने दे।"' 20अतः वह वहाँ से निकला और अपने पिता के घर को वापस जाने के लिए यात्रा को आरम्भ
किया। परन्तु जब वह अभी भी घर से बहुत दूर था, उसके पिता ने उसे देखा और उसके लिए अथाह करुणा की अनुभूति की। वह दौड़ कर अपने पुत्र के पास
गया और उसे गले से लगा लिया और उसके गाल पर चूम लिया। 21उसके पुत्र ने उससे कहा, 'हे पिता, मैंने परमेश्वर के विरोध में और तेरे विरोध में पाप किया
है। इसलिए मैं इस योग्य नहीं हूँ कि अब तू मुझे अपना पुत्र समझे।' 22परन्तु उसके पिता ने अपने दासों से कहा; 'शीघ्रता से जाओ और मेरा सबसे उत्तम परिधान
लेकर आओ और उसे मेरे पुत्र को पहनाओ। साथ ही उसकी उंगली में अंगूठी और उसके पाँवों में जूतियाँ पहनाओ! 23और उस बछड़े को लेकर आओ जिसे हम
ने विशेष समारोह के लिए मोटा किया हुआ है और उसे मार डालो, ताकि हम उसे खाएँ और उत्सव मनाएँ! 24हमें उत्सव इसलिए मनाना है क्योंकि मेरा यह पुत्र
मर चुके व्यक्ति के समान हो गया था, परन्तु अब वह फिर से जी उठा है! वह एक खोए हुए व्यक्ति के समान हो गया था, परन्तु हम ने उसे फिर से प्राप्त कर
लिया है!' इसलिए वे उत्सव मनाने लगे। 25{जिस समय पर यह सब कुछ घटित हो रहा था,} उस समय उस पिता का बड़ा पुत्र बाहर खेतों में काम कर रहा था।
{जब उसने काम करना समाप्त कर लिया तो उसके पश्चात,} वह घर की ओर चल पड़ा। जब वह घर के निकट पहुँचा, तो उसने लोगों को संगीत बजाते और
नाचते हुए सुना। 26उसने दासों में से एक को बुला कर पूछा कि क्या हो रहा है। 27उस दास ने उससे कहा, 'तेरा भाई घर लौट आया है। तेरे पिता ने हम से
उत्सव मनाने के लिए मोटे बछड़े को मारने के लिए बोला था क्योंकि तेरा भाई सुरक्षित और स्वस्थ लौट आया है।' 28परन्तु बड़ा भाई क्रोधित हो गया और उसने

उत्सव में सम्मिलित नहीं होना चाहा। इसलिए उसका पिता बाहर आया और उससे भीतर आने के लिए याचना की। 29परन्तु उसने अपने पिता को प्रत्युत्तर
दिया, 'सुन! इन सारे वर्षों में मैंने तेरे लिए एक गुलाम के समान कठोर परिश्रम किया है। जो कुछ भी तूने मुझे करने के लिए बोला मैंने उसका सदा ही पालन
किया है। परन्तु तूने मुझे कभी बकरी के बच्चे के जितना भी नहीं दिया जिसे मैं अपने मित्रों के लिए एक भोज की मेजबानी करने के लिए उपयोग कर सकूँ।
30परन्त अब जब तेरा यह पुत्र, तेरे धन को वेश्याओं पर उड़ा देने के पश्चात घर वापस आ गया है और तूने अपने दासों से उत्सव मनाने के लिए मोटे बछड़े को
मारने के लिए बोला है!' 31परन्तु उसके पिता ने उससे कहा, 'हे मेरे पुत्र, तू तो सदा से मेरे साथ है, और जो कुछ मेरे पास है वह तेरा ही तो है। 32परन्तु हमारे
लिए उत्सव मनाना और आनन्दित होना ही उचित है, क्योंकि यह ऐसा है जैसे कि तेरा भाई मर गया था और फिर से जी उठा है! यह ऐसा है जैसे वह खो गया था
और वह हमें फिर से मिल गया है!'"

Chapter 16

1यीशु ने अपने चेलों से यह भी कहा, "एक समय में एक धनवान व्यक्ति था जिसके पास एक घर का भण्डारी था। एक दिन किसी व्यक्ति ने उस धनवान को
सूचित किया कि वह भण्डारी ऐसा बुरा काम कर रहा था कि वह धनवान अपना बहुत सा धन गँवाए जा रहा था। 2इसलिए उसने उस भण्डारी को अपने पास
बुलाया और उससे कहा, 'जो मैंने सुना है कि जो तू कर रहा है वह भयानक है! मुझे लिखित में उन वस्तुओं की अन्तिम जानकारी दे जिनका प्रबन्ध तू कर रहा है,
क्योंकि अब तू मेरे घर का भण्डारी बना नहीं रहेगा!' 3तब उस भण्डारी ने स्वयं से कहा, 'मेरा स्वामी मुझे उसका भण्डारी बने रहने से निकालने वाला है, इसलिए
मुझे सोचना पड़ेगा कि क्या करना चाहिए। मैं इतना बलवंत भी नहीं हूँ कि गड्ढे खोदने का काम करूँ, और भीख माँगने में मैं लज्जित होता हूँ। 4मैं जानता हूँ कि
मैं क्या करूँगा जिससे कि लोग मुझे अपने घरों में बुला लेंगे {और मेरे लिए प्रावधान करेंगे} जब वह मेरे भण्डारीपन के काम से मुझे निकाल देगा!' 5इसलिए
उसने उन सभी को एक-एक करके उसके पास आने के लिए कहा, जिनके पास उसके स्वामी का पैसा बकाया था। उसने पहले से कहा, 'मेरे स्वामी का तुझ पर
कितना बकाया है?' 6उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, '3,000 लीटर जैतून का तेल।' उस भण्डारी ने उससे कहा, 'अपनी खाता-बही ले, और बैठ जा, और झटपट से
इसे 1,500 लीटर में बदल दे!' 7उसने दूसरे व्यक्ति से कहा, 'तुझ पर कितना बकाया है?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, '1,000 टोकरी गेहूँ।' उस भण्डारी ने उससे
कहा, 'अपनी खाता-बही ले और इसे 800 टोकरियों में बदल दे!' 8{जब} स्वामी ने {सुना कि उसके भण्डारी ने क्या किया है, तो उसने} उस कपटी भण्डारी के
बहुत चतुर होने के लिए उसकी बड़ाई की। सत्य यह है कि, इस संसार के रहनेवाले लोग इस विषय में परमेश्वर के लोगों से अधिक बढ़कर चतुर हैं कि वे अपने
आसपास के लोगों से कैसे मेलजोल रखते हैं। 9मैं तुम से कहता हूँ, इस संसार में जो धन तुम्हारे पास है उसका स्वयं के लिए मित्र बनाने के लिए उपयोग करो।
उस समय पर जब धन समाप्त हो जाएगा, वे मित्र अपने घरों में तुम्हारा स्वागत करेंगे, जो कि अन्त तक बना रहेगा। 10ऐसे लोग जो थोड़े से धन का
विश्वासयोग्यता के साथ प्रबन्धन करते हैं वे अधिक बड़ी मात्रा में भी विश्वासयोग्य रहेंगे। ऐसे लोग जो थोड़ी मात्रा में धन का प्रबन्धन करने के तरीके में कपटी हैं,
वे अधिक बड़ी मात्रा में भी कपटी रहेंगे। 11इसलिए यदि तुम ने इस संसार में विश्वासयोग्यता के साथ उस धन को (जो परमेश्वर ने तुम को दिया है) नहीं सम्भाला
है, तो वह निश्चित रूप से {स्वर्ग के} सच्चे धन के विषय में तुम पर भरोसा नहीं करेगा। 12यदि तुम ने उस सम्पत्ति का जो अन्य लोगों की है विश्वासयोग्यता के
साथ प्रबन्धन नहीं किया है, तो तुम को किसी से यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वह तुम को तुम्हारी स्वयं की सम्पत्ति देगा। 13कोई भी दास एक ही समय पर
दो अलग-अलग स्वामियों की सेवा करने में सक्षम नहीं होता है। यदि उसने ऐसा करने का प्रयास किया, तो वह एक से द्वेष रखेगा और दूसरे से प्रेम रखेगा, या
वह उनमें से एक के प्रति निष्ठावान रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम अपना जीवन परमेश्वर की सेवा करने में समर्पित नहीं कर सकते यदि तुम अपना
जीवन धन और अन्य भौतिक सम्पत्तियों को प्राप्त करने के लिए भी समर्पित कर रहे हो।" 14जब फरीसियों ने {जो वहाँ पर उपस्थित थे} यह सुना जिसकी यीशु
शिक्षा दे रहा था, तो उन्होंने उसका उपहास किया क्योंकि वे धन प्राप्त करने से प्रीति रखते थे। 15परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "तुम दूसरे लोगों को यह सोचने देने
का प्रयास करते हो कि तुम धर्मी हो, परन्तु परमेश्वर जानता है कि वास्तव में तुम किसके समान हो। ध्यान रखो कि परमेश्वर उन बहुत सी वस्तुओं को घृणित
मानता है जिनकी लोग बहुत महत्वपूर्ण के जैसे प्रशंसा करते हैं। 16जो व्यवस्था परमेश्वर ने मूसा को दी और जो बातें भविष्यद्वक्ताओं ने लिखीं, वे यूहन्ना
बपतिस्मा देने वाले के आने तक प्रभावी थीं। तब से, मैं इस विषय में शुभ सन्देश का प्रचार कर रहा हूँ कि परमेश्वर राजा के रूप में कैसे शासन करेगा। बहुत से
लोग {मेरे संदेश को स्वीकार कर रहे हैं और} बहुत उत्सुकता से परमेश्वर के राज्य का हिस्सा बनने का प्रयास कर रहे हैं। 17परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था, यहाँ
तक कि वह जो महत्वहीन लगती है, स्वर्ग और पृथ्वी से भी अधिक स्थायी है। 18कोई पुरुष जो अपनी पत्नी से विवाह-विच्छेद करके और दूसरी स्त्री से विवाह
करता है तो वह व्यभिचार करता है, और कोई पुरुष जो उस स्त्री से विवाह करे जिसके पति ने उससे विवाह-विच्छेद कर लिया हो तो वह भी व्यभिचार करता
है।" 19{यीशु ने यह भी कहा,} "एक बार एक धनवान व्यक्ति था जो बहुमूल्य बैंगनी और सनी के वस्त्र पहना करता था। वह प्रतिदिन भव्य भोज दिया करता
था। 20और {प्रतिदिन} लोग एक निर्धन व्यक्ति को जिसका नाम लाज़र था उस धनवान व्यक्ति के घर के द्वार पर लिटा दिया करते थे। लाज़र की देह घावों से
ढकी हुई थी। 21{वह इतना भूखा था कि} वह भोजन के उन टुकड़ों को खाना चाहता था जो उस मेज़ से गिरे थे जहाँ उस धनवान व्यक्ति भोजन किया था।
{जब वह वहाँ लेटा हुआ था,} तो कुत्तों ने आकर उसके घावों को चाट लिया। 22अन्ततः वह निर्धन व्यक्ति मर गया। फिर स्वर्गदूत उसे {उसके पूर्वज} अब्राहम
के साथ रहने के लिए ले गए। वह धनवान भी मर गया, और लोगों ने उसके शव को गाड़ दिया। 23मरे हुओं के स्थान में, वह धनवान अत्यन्त पीड़ा को झेल रहा
था। और उसने दृष्टि उठा कर बहुत दूरी पर इब्राहीम को देखा और लाज़र को इब्राहीम के बहुत समीप में बैठा हुआ। 24इसलिए वह धनवान व्यक्ति चिल्लाया, 'हे
पिता अब्राहम, मैं यहाँ इस अग्नि में अत्यधिक पीड़ित हो रहा हूँ! इसलिए कृपया मुझ पर दया कर और लाज़र को यहाँ पर भेज दे ताकि वह अपनी उंगली को
पानी में डुबोए और मेरी जीभ को ठण्डा करने के लिए उसे छू ले!' 25परन्तु अब्राहम ने प्रत्युत्तर में कहा, 'मेरे बच्चे, स्मरण कर कि जिस समय पर तू पृथ्वी पर
जीवित था तब तूने बहुत सी अच्छी वस्तुओं का आनन्द लिया। परन्तु लाज़र दुःखित था। अब वह यहाँ पर प्रसन्न है, और तू पीड़ित हो रहा है। 26इसके अलावा,
परमेश्वर ने हमारे और तेरे बीच में एक बड़ी खाई ठहराई है। इसलिए जो कोई यहाँ से वहाँ तेरे पास जाना चाहे वे ऐसा करने में असमर्थ हैं। इससे भी बढ़कर, न
ही कोई वहाँ से यहाँ तक जहाँ हम हैं पार करके नहीं आ सकता है।' 27तब उस धनवान व्यक्ति ने कहा, 'यदि ऐसा है तो, हे पिता अब्राहम, मैं तुझ से विनती
करता हूँ कि लाज़र को मेरे घराने के पास भेज दे। 28मेरे पाँच भाई हैं {जो वहाँ रहते हैं}। उससे उनको चेतावनी देने के लिए कह दे ताकि वे भी इस स्थान में

आने न पाएँ जहाँ हम अत्यन्त पीड़ा को झेलते हैं!’ 29परन्तु अब्राहम ने प्रत्युत्तर में कहा, ‘{नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा क्योंकि} तेरे भाइयों के पास वह है जो मूसा
ने और भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत समय पहले लिख दिया था। जो उन्होंने लिखा है उनको उसका पालन करना चाहिए!’ 30परन्तु उस धनवान व्यक्ति ने प्रत्युत्तर में
कहा, ‘नहीं, हे पिता अब्राहम, {यह पर्याप्त नहीं होगा}! परन्तु यदि कोई उनमें से जो मर गए हैं उनके पास वापस जाए और उनको चेतावनी दे, तो वे अपने पापी
व्यवहार से फिर जाएँगे।’ 31परन्तु अब्राहम ने उससे कहा, ‘इसलिए वे उन बातों का पालन नहीं करते जो मूसा ने और भविष्यद्वक्ताओं ने लिखी हैं। फिर तो यह
भी उनकी सहायता नहीं कर पाएगा कि यदि कोई उनमें से जो मर चुके हैं जाकर उनको चेतावनी दे। वे तब भी विश्वास नहीं करेंगे कि उनको अपने पापी व्यवहार
से फिर जाना चाहिए।’”

Chapter 17

1यीशु ने अपने चेलों से कहा, “ऐसी बातें जो लोगों को पाप करने के लिए परीक्षा में डालती हैं वे निश्चित रूप से घटित होती हैं। परन्तु यह उस मनुष्य के लिए
कितना भयंकर होगा कि जो उन बातों को घटित होने देता है! 2उस मनुष्य के लिए यह अच्छा होगा कि यदि कोई व्यक्ति एक बड़ा सा पत्थर उसके गले में बाँध
दे और उसे समुद्र में फेंक दे बजाए इसके कि वह उनमें से किसी जन से पाप करवाए जिनका विश्वास दुर्बल था। 3सावधान रहो कि तुम कैसे व्यवहार करते हो।
यदि कोई अन्य विश्वासी पाप करता है, तो तुम को उसे फटकारना चाहिए। यदि वह कहे कि वह पाप करने के लिए खेदित है और तुम से उसे क्षमा कर देने के
लिए विनती करे, तो तुम को उसे क्षमा कर देना चाहिए। 4यहाँ तक कि यदि वह तेरे विरोध में एक दिन में सात बार भी पाप करे, यदि वह तेरे पास हर बार आये
और कहे, ‘जो मैंने किया है मैं उसके लिए खेदित हूँ,’ तो तुझे उसे क्षमा करते रहना चाहिए।” 5तब प्रेरितों ने यीशु से कहा, “हमें और अधिक विश्वास प्रदान कर!”
6यीशु ने प्रत्युत्तर में कहा, “यहाँ तक कि यदि तुम्हारा विश्वास ऐसा हो जो इस छोटे से राई के बीज से भी बड़ा न हो, तब तुम इस शहतूत के पेड़ से कह सकते हो,
‘स्वयं को भूमि में से जड़ों समेत उखाड़ ले, और समुद्र में जा लग,’ और वह तुम्हारा आज्ञापालन करेगा!” 7{यीशु ने यह भी कहा,} “मान लो कि तुम में से किसी
के पास एक दास हो जो खेत में हल जोत रहा था या तुम्हारी भेड़ों की रखवाली कर रहा था। उसके खेतों में से वापस घर पर आने के पश्चात, तुम यह नहीं
कहोगे, ‘झटपट आ और भोजन करने के लिए बैठ जा!’ 8बजाए इसके, तुम उससे कहोगे, ‘मेरे लिए भोजन तैयार कर! अतः अपने सेवा करने के वस्त्रों को पहन
और मुझे भोजन परोस ताकि मैं खाऊँ और पीऊँ! उसके पश्चात ही तू खा और पी सकता है।’ 9तुम उस काम को करने के लिए अपने दास का धन्यवाद नहीं
करोगे जिसे करने के लिए उससे कहा गया था! 10इसी रीति से, जब तुम उन सब कामों को कर चुकते हो जिसे करने के लिए परमेश्वर ने तुम से कहा था, तो तुम
को कहना चाहिए, ‘हम तो केवल परमेश्वर के दास हैं। हम इस योग्य नहीं हैं कि तू हमें धन्यवाद बोले। हम ने केवल उन कामों को किया है जिनको करने के लिए
तूने हम से कहा था।’” 11जब यीशु और उसके चेले यरूशलेम जाने वाली सड़क पर चल रहे थे, तो वे सामरिया और गलील क्षेत्रों के मध्य के इलाके से होकर जा
रहे थे। 12जब यीशु ने एक गाँव में प्रवेश किया, तो दस कोढ़ी उसके पास आए, परन्तु वे थोड़ी दूरी पर ही खड़े हो गए। 13उन्होंने पुकार कर कहा, “हे यीशु, हे
स्वामी, कृपया हम पर दया कर।” 14जब यीशु ने उन्हें देखा, तो उसने उनसे कहा, “जाकर याजकों से अपनी जाँच करवाओ।” इसलिए वे चले गए, और मार्ग में
ही, उनका कोढ़ मिट गया। 15तब उनमें से एक ने जब उसने देखा कि अब उसे कोढ़ नहीं है, तो वह ऊँचे स्वर से परमेश्वर की स्तुति करता हुआ वापस आया।
16{वह यीशु के पास आया और} यीशु के पाँवों में वह मुँह के बल लेट गया, और उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। वह व्यक्ति सामरिया का रहने वाला था।
17तब यीशु ने कहा, “मैंने तो दस कोढ़ियों को चंगा किया था! मैंने तो बाकी के नौ से भी वापस आने की अपेक्षा की थी! 18यह परदेशी व्यक्ति ही केवल एक
ऐसा था जो परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए लौट आया। अन्य लोगों में से कोई भी वापस नहीं लौटा!” 19फिर उसने उस व्यक्ति से कहा, “उठ कर अपने मार्ग
पर चला जा। क्योंकि तूने मुझपर भरोसा किया इसलिए परमेश्वर ने तुझे चंगा कर दिया है।” 20एक दिन कुछ फरीसियों ने यीशु से पूछा, “परमेश्वर सब लोगों पर
शासन करना कब आरम्भ करेगा?” उसने प्रत्युत्तर दिया, “यह उन संकेतों के साथ घटित नहीं होगा जिनको यदि लोग देखें तो उन्हें पहचान सकें। 21लोग यह
कहने में सक्षम नहीं होंगे कि, ‘देखो! परमेश्वर यहाँ शासन कर रहा है!’ या ‘परमेश्वर वहाँ शासन कर रहा है!’ {जो तुम विचार करते हो उसके विपरीत,} परमेश्वर ने
पहले से ही तुम्हारे मध्य में शासन करना आरम्भ कर दिया है।” 22यीशु ने अपने चेलों से कहा, “ऐसा समय आएगा जब तुम मुझ, मनुष्य के पुत्र, को सामर्थी रूप
से शासन करते हुए देखना चाहोगे, परन्तु तुम उसे देख नहीं पाओगे। 23तुम से लोग कहेंगे, ‘देखो, मसीह वहाँ पर है!’ या वे कहेंगे, ‘देखो, वह यहाँ पर है!’ {जब वे
ऐसा कहें,} तो उनका अनुसरण मत करना। 24क्योंकि जब बिजली चमकती है और आकाश को एक ओर से दूसरी ओर तक प्रकाशित करती है, {तो हर कोई
उसे देख सकता है}। उसी प्रकार से, जब मैं, मनुष्य का पुत्र, वापस आऊँगा, तो हर कोई मुझे देखने पाएगा। 25परन्तु इसके घटित होने से पूर्व, मुझे बहुत बातों
में दु:ख उठाना अवश्य है, और लोग मुझे अस्वीकार कर देंगे। 26परन्तु जब मैं, मनुष्य का पुत्र, वापस आऊँगा, तो लोग वैसे ही कामों को कर रहे होंगे जिस
प्रकार से उस समय के लोग कर रहे थे जब नूह जीवित था। 27उस समय पर लोग {सामान्य रूप से} खाते और पीते थे, और वे {सामान्य रूप से} विवाह किया
करते थे, उस दिन के आने तक जब नूह और उसके परिवार ने उस विशाल नाव में प्रवेश नहीं किया। परन्तु फिर बाढ़ आई और उन सब को नष्ट कर दिया जो
नाव के भीतर नहीं थे। 28उसी प्रकार से, जब लूत {सदोम नगर में} रहा करता था, तो {वहाँ रहने वाले} लोग {सामान्य रूप से} खाते और पीते थे। वे वस्तुओं को
मोल लिया करते थे और वे वस्तुओं को बेचा करते थे। उन्होंने {सामान्य रूप से} फसलों को बोया और उन्होंने घरों का निर्माण किया। 29परन्तु उस दिन जब लूत
सदोम से निकला, अग्नि और गंधक आकाश से बरसे और उन सब को नष्ट कर दिया जो नगर के भीतर रुके हुए थे। 30उसी प्रकार से, जब मैं, मनुष्य का पुत्र,
पृथ्वी पर वापस आऊँगा, तो लोग तैयार नहीं होंगे। 31उस दिन, वे लोग जो अपने घरों से बाहर हों और उनका सब सामान उनके पास घरों के भीतर हो, तो उन्हें
समय निकाल कर उनको लेने के लिए भीतर नहीं जाना चाहिए। उसी प्रकार से, जो लोग बाहर खेत में काम कर रहे हों उन्हें कोई भी सामान लेने के लिए घर
वापस नहीं लौटना चाहिए {उनको झटपट से भाग जाना चाहिए।} 32जो लूत की पत्नी के साथ घटित हुआ था उसे स्मरण रखें! 33जो कोई भी अपने स्वयं के
तरीके से जीवन जीना जारी रखता है, वह मर जाएगा। परन्तु जो कोई भी {मेरी खातिर} जीवन जीने के अपने पुराने तरीके को त्याग देता है, वह सदा के लिए
जीवित रहेगा। 34मैं तुम से यह कहता हूँ: उस रात में जब मैं वापस आऊँगा, तब दो लोग एक ही खाट पर सो रहे होंगे। जो मुझ पर विश्वास करता है परमेश्वर उस
व्यक्ति को उठा लेगा और दूसरे व्यक्ति को वहीं छोड़ देगा। 35दो स्त्रियाँ एक साथ गेहूँ पीसती होंगी। परमेश्वर उनमें से एक को उठा लेगा और दूसरी को वहीं पर

छोड़ देगा।” 36[“दो जन खेत में होंगे; एक को उठा लिया जाएगा और दूसरे को छोड़ दिया जाएगा।”] 37उसके चेलों ने उससे कहा, “हे प्रभु, यह कहाँ पर घटित
होगा?” उसने उनको प्रत्युत्तर दिया, “जहाँ कहीं भी कोई मृत देह होगी, वहाँ उसे खाने के लिए गिद्ध इकट्ठा होंगे।”

Chapter 18

1यीशु ने अपने चेलों को यह सिखाने के लिए एक और कहानी सुनाई कि उनको लगातार प्रार्थना करनी चाहिए और {यदि परमेश्वर तुरन्त ही उनकी प्रार्थनाओं
का उत्तर नहीं देता है तो} हतोत्साहित नहीं होना चाहिए 2उसने कहा, “एक नगर में एक न्यायाधीश रहता था जो न तो परमेश्वर से डरता था और न ही लोगों के
विषय में परवाह करता था। 3उस नगर में एक विधवा रहती थी जो उस न्यायाधीश के पास आ-आकर कहा करती थी, ‘कृपया मुझे उस व्यक्ति के सामने न्याय
दिला जो न्यायालय में मेरा विरोध कर रहा है।’ 4एक लम्बे समय तक वह न्यायाधीश उसकी सहायता करने से मना करता रहा। परन्तु बाद में, उसने स्वयं से
कहा, ‘मैं न तो परमेश्वर से डरता हूँ और न ही लोगों के विषय में परवाह करता हूँ। 5परन्तु यह विधवा मुझे परेशान करती रहती है! इसलिए मैं उसके मामले का
न्याय करूँगा और सुनिश्चित करूँगा कि उसके साथ उचित रीति से व्यवहार किया गया है। मैं चिन्तित हूँ कि यदि मैंने ऐसा नहीं किया, तो वह लगातार मेरे पास
आ-आकर मुझे थका देगी!’” 6तब यीशु ने कहा, “इस विषय में सावधानीपूर्वक विचार करो कि इस अधर्मी न्यायी ने क्या कहा है। 7{इससे भी बढ़कर} निश्चित
रूप से परमेश्वर {, जो न्यायी है,} अपने उन चुने हुए लोगों के लिए न्याय लेकर आएगा, जो दिन भर उससे आग्रहपूर्वक प्रार्थना करते हैं! और वह सदा उनके
साथ धीरज रखता है। 8मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर तुरन्त ही अपने उन चुने हुओं के लिए न्याय लेकर आएगा! तौभी, जब मैं, मनुष्य का पुत्र, पृथ्वी पर वापस
आऊँगा, तब भी यहाँ बहुत से ऐसे लोग होंगे जो मुझ पर विश्वास नहीं करते होंगे।” 9फिर यीशु ने कुछ ऐसे लोगों को भी निम्नलिखित कहानी बताई जो सोचते थे
कि वे धर्मी हैं और अन्य लोगों को तुच्छ समझते थे। 10{उसने कहा,} “दो पुरुष प्रार्थना करने के लिए यरूशलेम के मंदिर में गए। उनमें से एक पुरुष फरीसी था।
और दूसरा पुरुष कोई ऐसा जन था जो रोमी सरकार के लिए लोगों से कर वसूला करता था। 11उस फरीसी ने खड़े होकर स्वयं के विषय में इस रीति से प्रार्थना
की, ‘हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं अन्य लोगों के समान नहीं हूँ। कुछ लोग अन्यों का धन चुरा लेते हैं। कुछ अन्यों के साथ अन्यायपूर्ण रीति से
व्यवहार करते हैं। कुछ व्यभिचार करते हैं। मैं इनमें से कोई भी काम नहीं करता हूँ। और निश्चित रूप से मैं इस पापी चुंगी लेने वाले के समान भी नहीं हूँ जो लोगों
के साथ छल करता है! 12मैं प्रत्येक सप्ताह के दौरान दो दिनों को उपवास रखता हूँ, और जो कुछ भी मैं मंदिर में से कमाता हूँ उसका दसवाँ भाग मैं दान करता
हूँ!’ 13परन्तु वह चुंगी लेने वाला मंदिर के आँगन में अन्य लोगों से दूर खड़ा हो गया। यहाँ तक कि उसने ऊपर स्वर्ग की ओर भी नहीं देखा। बजाए इसके, उसने
अपनी छाती को पीट-पीटकर कहा, ‘हे परमेश्वर, कृपया मुझे क्षमा कर, क्योंकि मैं एक भयंकर पापी हूँ!’” 14फिर यीशु ने कहा, “मैं तुम से कहता हूँ कि जब वे घर
से निकालकर चले गए, तो परमेश्वर ने उस चुंगी लेने वाले को क्षमा कर दिया था, परन्तु परमेश्वर ने उस फरीसी को क्षमा नहीं किया था। ऐसा इसलिए था क्योंकि
परमेश्वर हर उस जन को नम्र करेगा जो स्वयं को बड़ा बनाता है, और परमेश्वर हर उस जन को बड़ा बनाएगा जो स्वयं को नम्र करता है।” 15एक दिन लोग अपने
बच्चों को भी यीशु के पास ला रहे थे ताकि वह उन पर अपने हाथ रखे और उन्हें आशीर्वाद दे। जब चेलों ने यह देखा तो उन्होंने उनसे ऐसा न करने को कहा।
16परन्तु यीशु ने बच्चों को उसके पास लेकर आने के लिए बोला। उसने कहा, “छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो! उन्हें मत रोको, क्योंकि यह लोग इन बच्चों की
तरह {नम्र और निर्भर} हैं जो परमेश्वर को अपने जीवनों पर शासन करने देते हैं। 17मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई नम्रता और भोलेपन से परमेश्वर को
अपने जीवन पर शासन करने नहीं देगा वह परमेश्वर के शासन को कभी भी स्वीकार नहीं करेगा।” 18एक बार एक यहूदी अगुवे ने यीशु से पूछा, “हे उत्तम गुरु,
अनन्त जीवन प्राप्त करने की खातिर मुझे क्या करना चाहिए?” 19यीशु ने उससे कहा, “तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर ही एकमात्र है जो वास्तव में
उत्तम है! 20{और तेरे प्रश्न के उत्तर में, निश्चित रूप से} तू उन आज्ञाओं को जानता है {जिनको परमेश्वर ने मूसा को हमारे लिए पालन करने हेतु दिया था}:
‘व्यभिचार मत करना। किसी की हत्या मत करना। चोरी मत करना। झूठी जानकारी मत देना। अपने पिता और माता का आदर करना।’” 21उस व्यक्ति ने कहा,
“मैंने तो उन सब आज्ञाओं का पालन तब से ही किया है जब मैं जवान था।” 22जब यीशु ने उसे ऐसा कहते हुए सुना, तो उसने उसे प्रत्युत्तर दिया, “तुझे अभी भी
एक और काम करने की आवश्यकता है। जो कुछ भी तेरे पास है उसे बेच दे। फिर उस धन को ऐसे लोगों को दान कर दे जिनके पास जीवित रहने के लिए बहुत
थोड़ा ही है। परिणाम यह होगा कि तुझे स्वर्ग में आत्मिक धन प्राप्त होगा। तब आकर मेरा चेला हो जा!” 23जब उसने यह सुना तो वह व्यक्ति जो बहुत दुःखी हो
गया, क्योंकि वह अत्यन्त धनी था। 24जब यीशु ने उस व्यक्ति को देखा तो कहा, “जो धनी हैं यह उन लोगों के अति कठिन है कि वे परमेश्वर को उन पर शासन
करने दें। 25बल्कि, धनवान लोगों के परमेश्वर को अपने जीवनों पर शासन करने देने की तुलना में एक ऊँट के लिए यह सरल है कि वह सूई के नाके में से निकल
जाए।” 26जिन लोगों ने यीशु को यह कहते हुए सुना उन्होंने प्रत्युत्तर दिया, “तब तो लगता है कि परमेश्वर इस पर ध्यान नहीं देगा कि किसी को अनन्त जीवन
प्राप्त हो!” 27परन्तु यीशु ने कहा, “जो लोगों के लिए असम्भव है वह परमेश्वर के लिए सम्भव है।” 28तब पतरस ने कहा, “तो हमारे विषय में क्या? हम ने तो तेरे
चेले होने की खातिर जो कुछ हमारे पास था वह सब कुछ त्याग दिया है।” 29यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम को आश्वस्त कर सकता हूँ कि वे जिन्होंने अपने घरों
को, अपनी पत्नियों को, अपने भाइयों को, अपने माता-पिता को, या अपनी सन्तानों को परमेश्वर को उन पर शासन करने देने की खातिर त्याग दिया है 30वे इस
जीवन में जितना उन्होंने पीछे छोड़ दिया है उससे कहीं अधिक बढ़कर प्राप्त करेंगे और, आने वाले समय में, वे अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे।” 31यीशु अपने
साथ उन 12 चेलों को एक स्थान पर लेकर गया। उसने उनसे कहा, “ध्यानपूर्वक सुनो! हम यरूशलेम जाने के अपने मार्ग पर हैं। जब हम वहाँ होंगे, तो जो कुछ
भी भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत समय पहले मुझ, मनुष्य के पुत्र, के विषय में लिखा था, वह घटित होगा। 32यह तब घटित होगा जब मेरे शत्रु मुझे उन अधिकारियों
के हाथों में सौंप देंगे जो यहूदी नहीं हैं। ने मेरा ठठ्ठा करेंगे, तिरस्कार सहित मुझ से व्यवहार करेंगे, और मुझ पर थूकेंगे। 33वे मुझे कोड़े मारेंगे और फिर वे मुझे
मार डालेंगे। परन्तु दो दिनों के पश्चात मैं फिर से जी उठूँगा।” 34परन्तु वे चेले उनमें से किसी भी बात को नहीं समझे जो उसने कही थीं। परमेश्वर ने उन्हें उनके
महत्व को पहचानने से रोक दिया, इसलिए वे नहीं जान पाए कि जो यीशु उनसे कह रहा था उससे उसका क्या अर्थ था। 35जब यीशु और उसके चेले यरीहो
नगर के समीप पहुँचे, तो एक अंधा व्यक्ति सड़क के किनारे पर बैठा हुआ था। वह धन के लिए भीख माँग रहा था। 36जब उसने लोगों की भीड़ को पास से जाते
हुए सुना, तो {जो उसके आसपास थे} उनसे वह पूछने लगा, “क्या हो रहा है?” 37उन्होंने उसे बताया, “{यहाँ एक भीड़ है क्योंकि} वह व्यक्ति यीशु, जो नासरत
का रहने वाला है, सड़क पर से जा रहा है।” 38वह पुकार उठा, “हे यीशु, तू जो राजा दाऊद का वंशज है, मुझ पर दया कर!” 39जो लोग भीड़ के आगे-आगे चल

रहे थे उन्होंने उसे डाँटा और उससे चुप रहने के लिए बोला। परन्तु वह तो और भी अधिक ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, “तू जो राजा दाऊद का वंशज है, मुझ पर
दया कर!” 40यीशु चलते-चलते रुक गया और लोगों को आदेश दिया कि उस व्यक्ति को उसके पास लेकर आएँ। जब वह अंधा व्यक्ति उसके पास आया, तो
यीशु ने उससे पूछा, 41“तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?” उसने प्रत्युत्तर दिया, “हे प्रभु, मैं चाहता हूँ कि तू मुझे देखने में सक्षम बना दे!” 42यीशु ने उससे
कहा, “तो मैं अब तेरी दृष्टि को ठीक करता हूँ! क्योंकि तूने मुझ पर भरोसा किया, इसलिए मैंने तुझे चंगा कर दिया!” 43तुरन्त ही वह देखने में सक्षम हो गया।
और वह परमेश्वर की स्तुति करता हुआ, यीशु के साथ हो लिया। और जब वहाँ पर उपस्थित सब लोगों ने यह देखा, तो उन्होंने भी परमेश्वर की स्तुति की।

Chapter 19

1यीशु यरीहो में प्रवेश करके उस नगर से होकर जा रहा था। 2वहाँ पर एक मनुष्य था जिसका नाम जक्कई था। वह कर वसूलने वालों का सरदार था, और वह
बहुत धनी था। 3वह यीशु को देखना चाहता था, परन्तु वह भीड़ के ऊपर से उसे देख नहीं पाया। वह एक नाटा व्यक्ति था {और यीशु के चारों ओर बहुत से लोग
थे}। 4इसलिए वह सड़क पर दौड़ कर आगे गया। वह एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया ताकि जब यीशु वहाँ से होकर जाए तो वह उसे देख पाए। 5जब यीशु वहाँ
पहुँचा, तो उसने ऊपर देखकर उससे कहा, “हे जक्कई, झटपट से नीचे उतर आ, मुझे आज रात को तेरे घर में ठहरना आवश्यक है!” 6अतः वह झटपट से नीचे
उतर आया। वह अपने घर के भीतर यीशु का स्वागत करते हुए आनन्दित था। 7परन्तु जिन लोगों ने यीशु को वहाँ जाते हुए देखा तो वे कुड़कुड़ा कर कहने लगे,
“वह तो एक वास्तविक पापी के यहाँ मेहमान बन कर गया है।” 8तब जक्कई ने खड़े होकर जिस समय पर वे भोजन कर रहे थे यीशु से कहा, “हे प्रभु, मैं चाहता
हूँ कि तू जान ले कि मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों लोगों को देने वाला हूँ। और उसी प्रकार बदले में उन लोगों को जिनके साथ मैंने छल किया, तो जो मैंने
उनसे लिया था मैं उनको उस राशि का चार गुणा वापस भुगतान कर दूँगा।” 9यीशु ने उससे कहा, “आज परमेश्वर ने इस घराने को बचा लिया है, क्योंकि इस
व्यक्ति ने यह प्रकट किया है कि यह अब्राहम का एक सच्चा वंशज है। 10इसे स्मरण रखो: मैं, मनुष्य का पुत्र, {तुम्हारे जैसे} लोगों को ढूँढ़ने और बचाने के लिए
आया हूँ जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं कर रहे हैं।” 11जो कुछ भी यीशु ने कहा लोग उसे सुन रहे थे। वह यरूशलेम के निकट आ रहा था{, और वह
जानता था कि लोगों का विचार गलत है}। उन्होंने सोचा कि जैसे ही वह यरूशलेम पहुँचेगा, वह परमेश्वर के लोगों पर राजा के रूप में शासन करने लगेगा।
इसलिए यीशु ने {उस विचार को सही करने के लिए} उन्हें एक और कहानी सुनाने का निर्णय लिया। 12उसने कहा, “एक राजकुमार दूर देश में जाने की तैयारी
कर रहा था ताकि सर्वोच्च राजा उसे उस देश पर शासन करने का अधिकार प्रदान करे जहाँ वह रहता था। जब उसे वह प्राप्त हो जाए, उसके पश्चात वह वापस
आकर उसके लोगों पर शासन करे। 13{उसके जाने से पूर्व,} उसने अपने दासों में से दस को बुलाया। उसने उनमें से प्रत्येक को एक समान धनराशि दी। उसने
उनसे कहा, ‘जब तक मैं वापस न आऊँ तब तक इस धन से व्यापार करो!’ {तब वह चला गया।} 14परन्तु उसके देश में रहने वाले बहुत से लोग उससे द्वेष रखते
थे। इसलिए उन्होंने उसका पीछा करने के लिए और {सर्वोच्च राजा से} कहने के लिए कुछ दूतों को भेजा, ‘हम नहीं चाहते कि यह पुरुष हमारा राजा बने!’
15{परन्तु फिर भी उसे राजा बना दिया गया। बाद में} वह एक नए राजा के रूप में लौटा। फिर उसने उन दासों को भीतर बुलवाया जिनको उसने धन दिया था।
वह जानना चाहता था कि जो धन उसने उनको दिया था उससे व्यापार करने के द्वारा उन्होंने कितना लाभ कमाया था। 16पहले दास ने उसके पास आकर कहा,
‘हे मदोहय, तेरे धन से मैंने दस गुणा अधिक कमाया है!’ 17उसने उस पुरुष से कहा, ‘तू एक उत्तम दास है! तूने बहुत अच्छा किया है! क्योंकि तूने थोड़ी धनराशि
का रखरखाव विश्वासयोग्य के साथ किया है, इसलिए मैं तुझे शासन करने के लिए दस नगर दूँगा।’ 18तब दूसरे दास ने आकर कहा, ‘हे मदोहय, जो धन तूने मुझे
दिया था उसका मूल्य अब पाँच गुणा अधिक है!’ 19उसने उस दास से भी कहा, ‘{अच्छा किया!} मैं तुझे पाँच नगरों के ऊपर रखूँगा।’ 20फिर एक और दास
आया। उसने कहा, ‘हे मदोहय, तेरा धन यहाँ है। मैंने इसे सुरक्षित रखने के लिए इसे एक कपड़े में लपेट कर और उसे छिपा दिया था। 21मैं डर गया था कि जो
कुछ भी मैं कमाऊँगा तू वह ले लेगा। मैं जानता हूँ कि तू एक कठोर मनुष्य है जो अन्य लोगों से उन वस्तुओं को भी ले लेता है जो वास्तव में तेरी न हों। तू ऐसे
किसान के समान है जो उस फसल को काट डालता है जिसे किसी दूसरे किसान ने लगाया था।’ 22उसने उस दास से कहा, ‘हे दुष्ट दास! जो बातें तूने अभी कही
हैं उन्हीं के द्वारा मैं तुझे दोषी ठहराऊँगा। तूने कहा कि मैं एक कठोर मनुष्य हूँ। तूने कहा कि मैं वह ले लेता हूँ जो मेरा नहीं होता। तूने कहा कि मैं ऐसे किसान के
समान हूँ जो किसी और किसान के बोए हुए को काट डालता है। 23तो कम से कम तुझे मेरा धन सर्राफों को दे देना चाहिए था! फिर जब मैं लौटता तो मैं उस
राशि को और उस पर अर्जित ब्याज को वसूल कर सकता था!' 24तब राजा ने उनसे जो पास ही में खड़े हुए थे कहा, ‘उससे वह धन ले लो और उस दास को दे
दो जिसने दस गुणा अधिक बनाया है!’ 25उन्होंने विरोध किया, ‘परन्तु महोदय, उसके पास पहले से ही बहुत धन है!’ 26परन्तु राजा ने कहा, ‘मैं तुम से यह कहता
हूँ: उन लोगों को जिन्होंने उसका अच्छे से उपयोग किया जो उन्होंने प्राप्त किया था, मैं उनको और भी दूँगा। परन्तु उन लोगों से जिन्होंने उसका अच्छे से उपयोग
नहीं किया जो उन्होंने प्राप्त किया था, मैं उनसे वह भी छीन लूँगा जो पहले से उनके पास है। 27अब, मेरे उन शत्रुओं के लिए जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर
शासन करूँ, उनको यहाँ पर लेकर आओ और मेरे देखते-देखते ही उनको मार डालो!’” 28यीशु के इन बातों को कहने के पश्चात, उसने यरूशलेम जाने के मार्ग
पर आगे की यात्रा की। 29जब वे जैतून पहाड़ के समीप, बैतफगे और बैतनिय्याह के गाँवों के निकट पहुँचे, तो उसने अपने दो चेलों को आगे भेजा। 30उसने
उनसे कहा, “अपने सामने के गाँव में जाओ। जब तुम उसमें प्रवेश करो, तो वहाँ तुम एक जवान गधे को बंधा हुआ देखोगे जिस पर कभी किसी ने सवारी नहीं
की है। उसे खोल कर मेरे पास ले आओ। 31यदि कोई तुम से पूछे, ‘तुम इस गधे को क्यों खोल रहे हो?’ तो उससे कह देना, ‘यीशु को इसकी आवश्यकता है।’”
32अतः दो चेले उस गाँव में गए और वह गधा उनको मिल गया, जैसा कि यीशु ने उनसे कहा था। 33जब वे उसे खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने उनसे कहा,
“तुम हमारे गधे को क्यों खोल रहे हो?” 34उन्होंने प्रत्युत्तर दिया, “यीशु को इसकी आवश्यकता है।” और उन मालिकों ने उसका उपयोग करने की उनको अनुमति
दे दी। 35फिर वे चेले उस गधे को यीशु के पास लेकर आए। उन्होंने अपने कपड़े उसे गधे की पीठ पर डाले और उस पर चढ़ने में यीशु की सहायता की। 36फिर,
जब वह उस पर सवार हो गया, तो उसके सम्मान में अन्यों ने अपने वस्त्रों को सड़क पर उसके सामने फैला दिया। 37जब यीशु जैतून के पहाड़ से नीचे जाने
वाली सड़क के पास पहुँचा, तो उसके चेलों की सम्पूर्ण भीड़ उन सब महान चमत्कारों के लिए जिनको करते हुए उन्होंने उसे देखा था ऊँचे और आनन्दित नारों
के साथ परमेश्वर की स्तुति करने लगी। 38वे इस प्रकार की बातों को कह रहे थे, “परमेश्वर हमारे राजा को आशीष दे जो परमेश्वर के अधिकार के साथ आता है!
स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर और हम उसके लोगों के मध्य में शान्ति स्थापित हो, और हर एक जन परमेश्वर की स्तुति करे!” 39कुछ फरीसियों ने जो भीड़ में ही थे

उससे कहा, “हे गुरु, अपने चेलों को बोल कि इन बातों को कहना बन्द करें!” 40उसने प्रत्युत्तर दिया, “मैं तुम से यह कहता हूँ: यदि ये लोग मौन रहे, तो पत्थर स्वयं ही मेरी स्तुति करने के लिए चीख उठेंगे!” 41जब यीशु ने यरूशलेम के निकट आकर नगर को देखा, तो वह उसमें रहने वाले लोगों के विषय में रोने लगा। 42उसने कहा, “मेरी इच्छा थी कि आज तुम लोग जान लेते कि परमेश्वर की शान्ति कैसे प्राप्त होती है। परन्तु अब तुम यह जानने में असमर्थ हो। 43मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो: तुम कठिन समयों को अनुभव करने वाले हो। तुम्हारे शत्रु आकर तुम्हारे नगर के चारों ओर मोर्चा बाँधेंगे। वे नगर को घेर कर सब दिशाओं से उस पर आक्रमण करेंगे। 44वे {दीवारों को तोड़ कर} उन्हें और शेष नगर को नष्ट कर देंगे। वे तुम सब को मार डालेंगे। वे सब कुछ पूरी तरह से ध्वस्त कर देंगे। यह सब इसलिए घटित होगा क्योंकि तुम ने उस समय को नहीं पहचाना जब परमेश्वर तुम्हें बचाने के लिए आया था!” 45यीशु यरूशलेम में प्रवेश करके मंदिर के आँगन में गया। वह उन लोगों को बाहर निकालने लगा जो वहाँ पर वस्तुओं को बेच रहे थे। 46उसने उनके कहा, “पवित्रशास्त्र कहता है, ‘परमेश्वर का मंदिर एक ऐसा स्थान होना चाहिए जहाँ पर लोग प्रार्थना करते हैं।’ परन्तु तुम लोगों ने इसे ‘चोरों का ठिकाना’ बना दिया है!” 47उस सप्ताह के दौरान प्रत्येक दिन, यीशु लोगों को मंदिर में शिक्षा दे रहा था। प्रधान याजक, और अन्य धार्मिक व्यवस्था के शिक्षक, और अन्य यहूदी अगुवे उसे मार डालने का उपाय खोजने का प्रयास कर रहे थे। 48परन्तु उन्हें ऐसा करने का कोई उपाय न मिला, क्योंकि अत्यधिक लोग उसे सुनने के इच्छुक थे।

Chapter 20

1उस सप्ताह के दौरान एक दिन, यीशु मंदिर में लोगों को शिक्षा दे रहा था और उनको परमेश्वर का शुभ सन्देश बता रहा था। जब वह ऐसा कर रहा था, तो प्रधान याजक, यहूदी व्यवस्था के शिक्षक और कुछ अन्य पुरनिए उसके पास आए। 2उन्होंने उससे कहा, “हमें बता, तू किस अधिकार से इन कामों को करता है? और किसने तुझे यह अधिकार दिया है?” 3उसने प्रत्युत्तर दिया, “मैं भी तुम से एक प्रश्न पूछूँगा। मुझे बताओ 4यूहन्ना के लोगों को बपतिस्मा देने के विषय में: बपतिस्मा देने के लिए क्या उसे परमेश्वर ने आदेश दिया था या मनुष्यों ने आदेश दिया था?” 5उन्होंने आपस में विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा, “यदि हम उत्तर देते हैं, ‘परमेश्वर ने उसे आदेश दिया था,’ तब वह कहेगा, ‘तो तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?’ 6परन्तु यदि हम कहें, ‘वह तो केवल मनुष्य ही थे जिन्होंने उसे बपतिस्मा देने के लिए बोला था,’ तो लोग हमें मार डालने के लिए पत्थरवाह करेंगे, क्योंकि उनमें से अधिकांश यह विश्वास करते हैं कि यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था {जिसे परमेश्वर ने भेजा था}।” 7इसलिए उन्होंने प्रत्युत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि यूहन्ना को बपतिस्मा देने के लिए किसने बोला था। 8तब यीशु ने उनसे कहा, “जिस प्रकार से तुम मुझे नहीं बताओगे, वैसे ही मैं भी तुम को नहीं बताऊँगा कि इन कामों को करने के लिए मुझे किसने भेजा है।” 9फिर यीशु ने लोगों से यह दृष्टान्त कहा: “किसी मनुष्य ने एक दाख की बारी लगाई। उसने वह दाख की बारी कुछ लोगों को किराए पर दे दी जो कि उसकी देखरेख करेंगे। फिर वह दूसरे देश को चला गया और एक लम्बे समय तक वहीं पर ठहरा रहा। 10जब अंगूरों को तोड़ने का समय आया, तो इस मालिक ने एक दास को उन लोगों के पास भेजा जो उस दाख की बारी की देखरेख कर रहे थे। वह उनसे चाहता था कि वे उसका अंगूरों का वह हिस्सा उसे दें जो दाख की बारी में उत्पन्न हुए थे। परन्तु {उस दास के पहुँचने के पश्चात,} उन्होंने उस दास को मारा-पीटा और बिना कोई अंगूर दिए उसे भेज दिया। 11बाद में, मालिक ने किसी दूसरे दास को भेजा, परन्तु उन्होंने उस दास को भी मारा-पीटा और लज्जित किया। उन्होंने उसे बिना किसी अंगूर के भेज दिया। 12उसके बाद भी, उस मालिक ने एक और दास को भी भेजा। उन किसानों ने इस दास को भी घायल कर दिया और उसे बलपूर्वक दाख की बारी से निकाल दिया। 13इसलिए उस दाख की बारी के मालिक ने स्वयं से कहा, ‘अब मुझे क्या करना चाहिए? मैं अपने पुत्र को भेजूँगा, जिससे मैं अत्यन्त प्रेम करता हूँ। सम्भवतः वे उसका सम्मान करेंगे।’ 14{इसलिए उसने अपने पुत्र को भेजा,} परन्तु उन लोगों ने जो दाख की बारी के देखरेख कर रहे थे जब उसे आते हुए देखा, तो उन्होंने एक दूसरे से कहा, ‘यहाँ वह पुरुष आ रहा है जो किसी दिन इस दाख की बारी का वारिस होगा! आओ हम उसे मार डालें! तब यह दाख की बारी हमारी हो जाएगी!’ 15अतः वे उसे घसीट कर दाख की बारी से बाहर ले गए, और उसे मार डाला। मैं तुम को बताऊँगा कि दाख की बारी का मालिक उनके साथ क्या करेगा! 16वह आएगा और उन लोगों को मार डालेगा जो दाख की बारी की देखरेख कर रहे थे। फिर वह उसकी देखरेख करने के लिए दूसरे लोगों का प्रबन्ध करेगा।” जो लोग यीशु को सुन रहे थे जब उन्होंने यह सुना, तो उन्होंने कहा, “इस प्रकार की परिस्थिति कभी न घटे!” 17परन्तु यीशु ने सीधे उनकी ओर देख कर कहा, “तुम ऐसा कह सकते हो, परन्तु इन बातों के अर्थ के विषय में विचार करो जो पवित्रशास्त्र में लिखा हुआ है। ‘जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार कर दिया था वही भवन का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर हो गया। 18यह पत्थर हर उस जन के टुकड़े-टुकड़े कर देगा जो इस पर गिरता है, और जिस पर यह गिरता है यह उस जन को पीस डालेगा।’” 19प्रधान याजकों और यहूदी व्यवस्था के शिक्षकों को समझ में आ गया कि जब उसने उन दुष्ट लोगों के विषय में कहानी को बताया तब वह उन पर आरोप लगा रहा था। इसलिए उन्होंने तुरन्त ही उसे पकड़ने का उपाय खोजने का प्रयास किया। {परन्तु वे उसे पकड़ नहीं पाए,} क्योंकि यदि उन्होंने ऐसा किया तो लोग जो करेंगे वे उससे डरते थे। 20इसलिए वे उसे ध्यानपूर्वक देखते रहे। उन्होंने {यीशु से बात करने के लिए} भेदियों को भी भेजा जिन्होंने धर्मी होने का ढोंग किया, परन्तु वे वास्तव में यीशु से कुछ अनुचित कहलवाना चाहते थे। वे चाहते थे {इस योग्य होना कि उस पर रोमी सरकार के प्रतिरोध को प्रोत्साहित करने का आरोप लगा पाएँ ताकि वे} उसे {उस क्षेत्र के} राज्यपाल के हाथों में सौंप सकें। 21उनमें से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, हम जानते हैं कि जो उचित है तू उसी की बात करता है और शिक्षा देता है। तू तब भी ऐसा करता है जब महत्वपूर्ण लोग इसे पसन्द नहीं करते हैं। तू उस बात की शिक्षा सत्यपूर्वक देता है जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम करें। 22{इसलिए हमें बता कि तू इस मामले के विषय में क्या विचार रखता है।} क्या यह हमारे लिए ठीक है कि रोमी सरकार को करों का भुगतान करें, अथवा न करें?” 23परन्तु वह जानता था कि वे या तो यहूदियों के साथ, जो उन करों का भुगतान करना पसन्द नहीं करते थे, या फिर रोमी सरकार के साथ, उसे परेशानी में डालने के लिए उसके साथ छल करने का प्रयास कर रहे थे। इसलिए उसने उनसे कहा, 24“मुझे रोमी सिक्का दिखाओ। और मुझे बताओ कि इस पर किसका चित्र और नाम है।” इसलिए उन्होंने {उसे एक सिक्का दिखाया और} कहा, “इस पर कैसर का चित्र और नाम है।” 25अतः उसने उनसे कहा, “इस मामले में तो जो सरकार का है वह उसे दे दो, और जो परमेश्वर का है वह उसे दे दो।” 26वे भेदिए किसी भी बात में उसमें कुछ भी अनुचित नहीं खोज पाए जो यीशु ने तब कही थीं जब लोग उसके चारों ओर खड़े हुए थे। वे भेदिए उसके उत्तर पर इतने विस्मित थे कि उन्होंने और कुछ भी नहीं कहा। 27इसके पश्चात, कुछ सदूकी यीशु के पास आए। उनका यहूदियों का समूह शिक्षा देता था कि कोई भी मरे हुए में से जी नहीं उठेगा। वे भी यीशु से एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न पूछने की मनसा रखते थे। 28उनमें से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, मूसा ने हम यहूदियों को सिखाया है कि तब क्या करना है यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाए जिसके पास

पत्नी तो हो परन्तु सन्तान न हो। तो उसके भाई को उस विधवा से विवाह करना चाहिए ताकि वह उससे एक सन्तान उत्पन्न करे। तब लोग उस सन्तान को जो
पुरुष मर गया है उसका वंशज मानेंगे। 29अतः, एक परिवार में सात भाई थे। सबसे बड़े वाले ने एक स्त्री से विवाह कर लिया, परन्तु इससे पहले कि उससे कोई
सन्तान उत्पन्न होती, वह उसे विधवा छोड़ कर मर गया। 30दूसरे भाई ने इस नियम का पालन करते हुए उस विधवा से विवाह कर लिया, परन्तु उसके साथ भी
उसी प्रकार से हुआ। 31तब तीसरे भाई ने उससे विवाह कर लिया, परन्तु फिर से वही बात घटित हुई। और अंत में, सारे सातों भाइयों ने, एक एक करके, उस
स्त्री से विवाह किया परन्तु बिना कोई सन्तान उत्पन्न किए मर गए। 32तत्पश्चात, वह स्त्री भी मर गई। 33इसलिए यदि यह सत्य है कि एक ऐसा समय आएगा कि
जब जो लोग मर गए हैं वे फिर से जीवित हो जाएँगे, तो तेरे विचार से उस समय पर वह स्त्री उनमें से किसकी पत्नी ठहरेगी? ध्यान रहे कि उसने सारे सातों
भाइयों से विवाह किया था!” 34यीशु ने उनको प्रत्युत्तर दिया, “इस संसार में, पुरुष स्त्रियों से विवाह करते हैं, और माता-पिता विवाह में पुत्रियों को पुरुषों को देते
हैं। 35परन्तु जिन लोगों को परमेश्वर स्वर्ग में रहने के योग्य समझेगा, उनके मरने के पश्चात जब वह उन्हें फिर से जीवित करेगा, तब वे विवाह नहीं करेंगे। 36{वे
विवाह इसलिए नहीं करेंगे} क्योंकि वे इसके बाद मरेंगे नहीं। बल्कि, वे स्वर्गदूतों के समान हो जाएँगे {जो सदा जीवित रहते हैं}। वे परमेश्वर की सन्तान हैं,
क्योंकि परमेश्वर ने उनको उनके मर जाने के पश्चात फिर से जीवित किया है। 37{अब जब मैंने विवाह के विषय में तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दिया है, तो मैं
पवित्रशास्त्र से दिखाऊँगा} कि परमेश्वर लोगों को उनके मर जाने के पश्चात फिर से जीवित नहीं करता है। यहाँ तक कि मूसा ने भी इस विषय में लिखा है। उस
स्थान पर जहाँ उसने जलती झाड़ी में परमेश्वर से भेंट का वर्णन किया है, वह लिखता है कि कैसे प्रभु ने स्वयं को ‘अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का
परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर’ कहता है {परमेश्वर ने ऐसा नहीं कहा होता यदि उसने उन लोगों को फिर से जीवित नहीं किया होता और वह अभी भी उनका
परमेश्वर नहीं होता।} 38अन्ततः, वह ऐसे लोगों का परमेश्वर नहीं है जो मरे हुए हैं। वह ऐसे लोगों का परमेश्वर है जो जीवित हैं, क्योंकि परमेश्वर के लिए, हर एक
जन {उनके मर जाने के पश्चात भी} जीवित रहता है।” 39यहूदी व्यवस्था के शिक्षकों में से कुछ ने {जो वहाँ पर उपस्थित थे} प्रत्युत्तर में कहा, “हे गुरु, तूने बहुत
ठीक उत्तर दिया है!” 40{उन शास्त्रियों ने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि जो लोग यीशु को फंदे में फँसाने का प्रयास कर रहे थे {उन्होंने उससे कठिन प्रश्नों को पूछना
बंद कर दिया। उसने इतनी ठीक रीति से उत्तर दिए कि वे} उससे कुछ और पूछने के लिए डर गए थे। 41इसलिए लौटते समय, {यीशु ने स्वयं से ही उनसे एक
कठिन प्रश्न पूछा।} उसने कहा, “लोग ऐसा क्यों कहते हैं कि मसीह {केवल} राजा दाऊद का वंशज है? 42ध्यान दो कि दाऊद ने स्वयं ही भजन संहिता की
पुस्तक में {मसीह के विषय में} लिखा था, ‘परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, “यहाँ {महान सम्मान के उस पद पर} मेरी दाहिनी ओर मेरे बगल में बैठ। 43{यहाँ बैठ}
जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को पूर्ण रीति से पराजित कर दूँ।”’ 44इस भजन में, राजा दाऊद मसीह को ‘मेरे प्रभु’ कहता है। {यह महान आदर की उपाधि है।} तो
मसीह दाऊद का वंशज कैसे हो सकता है? {वह तो वंशज है जिसे पूर्वजों के प्रति महान सम्मान का प्रदर्शन करना चाहिए।}” 45तब, जिस समय पर अन्य सभी
लोग सुन रहे थे, यीशु ने अपने चेलों से कहा, 46“सुनिश्चित करो कि तुम उन लोगों के समान व्यवहार न करो जो हमारी यहूदी व्यवस्था की शिक्षा देते हैं। वे लम्बे
परिधानों को पहनना और लोगों को यह सोचने देने के लिए चारों ओर चलना-फिरना पसन्द करते हैं कि वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। वे लोगों का बाजारों में उनको
आदरपूर्वक नमस्कार करना भी पसन्द करते हैं। वे आराधनालयों में सबसे महत्वपूर्ण आसनों पर बैठना पसन्द करते हैं। रात्रिभोजों में वे सबसे सम्मानित लोगों
के स्थानों पर बैठना पसन्द करते हैं। 47वे विधवाओं की सारी सम्पत्ति को {भी} चुरा लेते हैं। परन्तु अन्य लोगों को यह सोचने देने के लिए कि वे धर्मी हैं, वे
{सार्वजनिक रूप से} लम्बे समय तक प्रार्थना करते रहते हैं। जो कुछ उन्होंने किया है उसके लिए परमेश्वर उनकी कड़ी निन्दा करेगा।”

Chapter 21

1फिर यीशु ने {जहाँ वह बैठा हुआ था वहाँ से} दृष्टि उठाई और धनवान लोगों को अपने {धन का} दान {मंदिर के आँगन में रखे} दानपात्रों में डालते हुए देखा।
2उसने एक निर्धन विधवा को भी उन पात्रों में ताम्बे के दो छोटे सिक्के डालते हुए देखा। 3और उसने {चेलों से} कहा, “सत्य यह है कि निर्धन विधवा ने {दानपात्र
में} {इन धनी लोगों से} अधिक बढ़कर डाला है। 4मैं तुम को बताता हूँ कि यह सत्य क्यों है। उन सब {धनी लोगों} ने बहुत सा धन दिया है, परन्तु वह अतिरिक्त
धन था जिसकी उनको वास्तव में आवश्यकता नहीं थी। परन्तु इस विधवा ने, जो कि बहुत निर्धन है, वह सारा धन दे दिया जो उसके पास था, यहाँ तक कि उसे
जीवित रहने के लिए वास्तव में इसकी आवश्यकता थी। 5{यीशु के चेलों में से} कुछ इस विषय में बात कर रहे थे कि लोगों के द्वारा दिए गए सुन्दर पत्थरों और
साजसज्जा के सामान से कैसे मंदिर को सुशोभित किया गया था। परन्तु यीशु ने कहा, 6“{मैं तुम को बताता हूँ कि क्या घटित होने वाला है} इन सामानों के साथ
जिनकी तुम सराहना कर रहे हो। किसी दिन तुम्हारे शत्रु इनको पूरी रीति से ध्वस्त कर देंगे।” 7फिर उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, यह बातें कब घटित होंगी? और
उसका क्या चिन्ह होगा कि यह बातें लगभग कब घटित होने वाली हैं?” 8यीशु ने प्रत्युत्तर दिया, “कोई भी तुम को पथभ्रष्ट करने न पाए। क्योंकि बहुत से लोग
आएँगे और हर कोई यह दावा करेगा कि वह मैं हूँ। हर कोई स्वयं के विषय में कहेगा, ‘मैं मसीह हूँ!’ वे यह भी कहेंगे, ‘वह समय लगभग आ गया है जब राजा के
रूप में परमेश्वर शासन करेगा!’ जो वे कह रहे हों उस पर विश्वास मत करना! 9साथ ही, तुम लड़ाइयों के और लोगों के एक दूसरे से झगड़ने के विषय में सुनोगे।
{संसार का} अंत होने से पूर्व इस प्रकार की बातों का होना अवश्य है। इसलिए {जब तुम इस प्रकार की बातों को सुनो तो,} भयभीत मत होना। 10लोगों के
विभिन्न समूह एक दूसरे पर आक्रमण करेंगे, और अलग-अलग साम्राज्यों के लोग एक दूसरे से युद्ध करेंगे। 11और विभिन्न स्थानों पर बड़े-बड़े भूकम्प होंगे। वहाँ
पर अकाल और भयानक महामारियाँ भी होंगी। बहुत सी बातें घटित होंगी जिससे लोग अत्यन्त डर जाएँगे। लोग आकाश में अद्भुत बातों को देखेंगे {जिससे
प्रकट होगा कि कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण घटित होने वाला है}। 12परन्तु इन सब बातों {के घटित होने} से पहले, तुम्हारे शत्रु तुम को पकड़ लेंगे और तुम्हारे साथ
बुरी रीति से व्यवहार करेंगे। वे तुम को आराधनालयों में ले जाएँगे, {जिनके न्यायी तुम पर मुकदमा चलाएँगे} और {तुम को} बन्दीगृह में डाल देंगे। क्योंकि तुम
मुझ पर विश्वास करते हो इसलिए तुम्हारे शत्रुओं के पास तुम पर मुकदमा चलाने के लिए राजाओं और प्रधान सरकार के अधिकार भी होंगे। 13मेरे विषय में
उनको सत्य बताने हेतु वह तुम्हारे लिए एक समय होगा। 14इसलिए इसके विषय में समय से पहले यह चिन्ता न करने का दृढ़ संकल्प करो कि तुम अपने बचाव
के लिए क्या कहोगे, 15क्योंकि मैं तुम्हें सही शब्द दूँगा जिससे कि तुम जान जाओगे कि क्या कहना है। इसके परिणामस्वरूप, तुम पर आरोप लगाने वाला कोई
भी व्यक्ति यह नहीं कह पाएगा कि तुम गलत हो। 16और यहाँ तक कि तुम्हारे माता-पिता और भाई और बहन और {अन्य} कुटुम्बी और मित्र भी तुम्हें धोखा
देंगे, और वे तुम में से कुछ को मार डालेंगे। 17अधिकांश लोग तुम से इसलिए द्वेष रखेंगे, क्योंकि तुम मुझ पर विश्वास करते हो। 18परन्तु {आत्मिक रूप से}

तुम्हारा पूरा अस्तित्व सुरक्षित रहेगा। 19यदि तुम कठिन समय से होकर जाते हो और साबित करते हो कि तुम परमेश्वर पर भरोसा करते हो, तो तुम्हारी मृत्यु के
पश्चात तुम्हारी आत्माएँ परमेश्वर की उपस्थिति में जीवित रहेंगी। 20जब तुम सेनाओं को यरूशलेम {नगर} के चारों ओर देखो, तब तुम जान जाओगे कि वे शीघ्र
ही उस नगर को नष्ट कर देंगी। 21उस समय तुम में से जो यहूदिया {क्षेत्र के अन्य स्थानों में} हों, तो वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। और तुम में से जो लोग इस नगर में
हों, तो वे निकल जाएँ। तुम में से जो पास के गाँवों में हों, तो वे नगर में न आएँ। 22{तुम्हें भाग जाना चाहिए} क्योंकि परमेश्वर इस समय {यरूशलेम नगर को}
दण्ड देगा। {जब वह ऐसा करता है तो,} इस विषय में परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में जो कहा है वह पूरा होगा। 23जब ऐसा घटित होगा तो गर्भवती स्त्रियों के लिए
और उन स्त्रियों के लिए जो अपने बच्चों को दूध पिलाती हों यह कितना भयानक होगा। उस समय देश में बड़ा सताव होगा। परमेश्वर इन लोगों पर क्रोधित होगा
और उन्हें कठोरतापूर्वक दण्ड देगा। 24उनमें से बहुत से लोग मर जाएँगे क्योंकि सैनिक उन्हें अपने हथियारों से मार डालेंगे। बचे हुओं को पकड़ कर उनके शत्रु
बन्दी बना कर संसारभर में कई स्थानों पर भेज देंगे। जब तक परमेश्वर अनुमति देता है, तब तक अन्यजातियाँ यरूशलेम {नगर} को नियंत्रित करेंगी।” 25“उस
समय पर, सूर्य, चन्द्रमा, और सितारों के साथ अद्भुत बातें घटित होंगी। और पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के समूह अत्यन्त भयभीत हो जाएँगे। वे उसी प्रकार से
भयभीत होंगे जैसे वे विशाल लहरों वाले गरजते समुद्र से होते। 26लोग इतने भयभीत हो जाएँगे कि वे मूर्छित हो जाएँगे क्योंकि संसार में आगे क्या घटित होगा
वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आकाश के सितारे अपने सामान्य स्थानों से हट जाएँगे। 27तब सब लोग मुझ, मनुष्य के पुत्र, को सामर्थी रूप से और चमकते
प्रकाश के साथ बादलों पर आते हुए देखेंगे। 28अतः जब वे भयंकर बातें घटित होने लगेंगी, तो आत्मविश्वास की मुद्रा को धारण कर लेना, क्योंकि परमेश्वर शीघ्र
ही तुम्हें छुड़ाएगा।” 29फिर यीशु ने उनको एक उदाहरण दिया। उसने कहा, “अंजीर के पेड़ों के और सब पेड़ों के विषय में विचार करो। 30जब तुम देखते हो कि
उनकी पत्तियों की कोंपलें निकल रही हैं, तो तुम जान लेते हो कि यह ग्रीष्मऋतु का आरम्भ है। 31इसी रीति से, जब तुम इन बातों को घटित होते देखो जिनका
मैंने अभी-अभी वर्णन किया है, तो तुम जान लोगे कि परमेश्वर स्वयं को शीघ्र ही राजा के रूप में प्रदर्शित करेगा। 32मैं तुम को सच्चाई बता रहा हूँ। वे लोग जो
सबसे पहले उन चिन्हों को देखते हैं जिनका मैंने वर्णन किया है वे निश्चित रूप से इन सब बातों को घटित होते हुए देखने के लिए भी जीवित रहेंगे। 33तुम सोचते
होगे कि आकाश और पृथ्वी स्थायी हैं। वे नहीं हैं, परन्तु मेरे वचन स्थायी हैं। 34स्वयं को नियंत्रित करने के लिए बहुत ही सावधान रहो। यदि तुम नशे में हो जाते
हो, तो तुम्हारे मन बाद में सतर्क नहीं होंगे। और यदि तुम दिन-प्रतिदिन के मामलों की चिंता करते हो, तो तुम विचलित हो जाओगे। {तब तुम उन संकेतों पर
ध्यान नहीं दोगे जिनके विषय में मैंने तुम को बताया है, और} जब मैं वापस आऊँगा तो मैं तुम को चकित कर दूँगा। 35{मैं इतने अचानक से आ जाऊँगा कि} यह
ऐसा होगा कि जैसे कोई जाल एक पशु पर बन्द हो देता है। {इसलिए तुम को मेरी वापसी पर ध्यान देने की आवश्यकता है,} क्योंकि यह संसार में रहने वाले
प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करेगा। 36इसलिए तुम को मेरे आगमन के लिए सदा तैयार रहना है। प्रार्थना करो कि जब तुम इन कठिन बातों का अनुभव करते हो
जिनके विषय में मैं बात कर रहा हूँ तो तुम मेरे प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के योग्य ठहरो। इस रीति से मैं, मसीह, {जब इस संसार का न्याय करने आऊँगा तो मैं}
तुम्हें निर्दोष घोषित कर दूँगा। 37प्रत्येक दिन यीशु मंदिर में लोगों को शिक्षा दे रहा था। परन्तु हर शाम को वह {नगर से बाहर} जाकर सारी रात जैतून के पहाड़
पर रहता था। 38और हर सुबह भोर में, लोगों की बड़ी भीड़ {उसे शिक्षा देते हुए} उसकी सुनने के लिए मंदिर में आया करती थी।

Chapter 22

1अब लगभग वह समय आ ही गया था जब अख़मीरी रोटी का पर्व मनाया जाए, जिसे लोग फसह भी कहते हैं। 2प्रधान याजक और यहूदी व्यवस्था के शिक्षक
ऐसे किसी उपाय की खोज में थे कि उन {बहुत से} लोगों में {जो यह विचार रखते थे कि वह कोई महान पुरुष है} बिना कोई दंगे उपजाए वे यीशु को मार डालें।
3तब शैतान ने यहूदा में प्रवेश किया, जिसका दूसरा नाम इस्करियोती था। वह 12 चेलों में से एक था। 4उसने जाकर प्रधान याजकों और मंदिर के पहरुओं के
सरदारों से इस विषय में बात की कि वह कैसे यीशु को पकड़ने में उनकी सहायता कर सकता है। 5वे बहुत ही प्रसन्न हुए {जब उसने ऐसा करने का प्रस्ताव
दिया}। उन्होंने कहा कि {यदि उसने ऐसा किया तो} वे उसे धन का भुगतान करेंगे। 6अतः यहूदा मान गया, और फिर वह यीशु को पकड़ने में उनकी सहायता
करने के ऐसे किसी उपाय की खोज करने लगा जहाँ भीड़ इसे देख न पाए। 7फिर अख़मीरी रोटी का दिन आया। यह वह दिन था जब यहूदी लोगों को मेमनों को
मारना था जिसे वे फसह मनाने के लिए खाएँगे। 8इसलिए यीशु ने पतरस और यूहन्ना को इन निर्देशों के साथ बाहर भेजा: “जाकर फसह मनाने के लिए भोजन
की तैयारी करो ताकि हम सब एक साथ उसे खाएँ।” 9उन्होंने उसे प्रत्युत्तर दिया, “तू कहाँ चाहता है कि हम भोजन की तैयारी करें?” 10उसने उत्तर दिया,
“ध्यानपूर्वक सुनो। जब तुम नगर में जाओगे, तो एक व्यक्ति पानी का एक बड़ा सा पात्र उठाए हुए तुम को मिलेगा। उसके पीछे-पीछे उस घर में जाना जिसमें वह
प्रवेश करता है। 11उस घर के स्वामी से कहना, ‘हमारा गुरु कहता है कि हमें वह कमरा दिखा जहाँ हमारे, अर्थात उसके चेलों के साथ में वह फसह का भोजन
खा सके।’ 12वह तुम को एक बड़ा कमरा दिखाएगा जो उस घर के ऊपरी तल पर होगा। वह मेहमानों के स्वागत के लिए पूर्णतः तैयार होगा। वहाँ पर हमारे लिए
भोजन की तैयारी करना। 13अतः वे दोनों चेले {नगर में} चले गए। उन्होंने सब कुछ वैसा ही पाया जैसा यीशु ने उनको बोला था। अतः उन्होंने वहाँ फसह मनाने
के {भोजन की} तैयारी की। 14जब उस भोजन को खाने का वह समय आया, तो यीशु आकर उन प्रेरितों के साथ बैठ गया। 15उसने उनसे कहा, “मैंने अपने
मरने से पहले तुम्हारे साथ फसह के इस विशेष भोज को खाने की बहुत इच्छा की थी। 16मैं तुम को बताता हूँ, कि अगली बार जब मैं इसे खाऊँगा तो वह उस
समय पर होगा जब परमेश्वर इसे इसका अथाह अर्थ प्रदान करता है जिस समय पर वह राजा के रूप में सब जगह पर शासन करता है।” 17तब उसने दाखरस
के प्याले को उठाया और उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उसने {अपने प्रेरितों से} कहा, “इस दाखरस को लो और अपने मध्य में बाँट लो। 18{मैं चाहता
हूँ कि तुम यह करो} क्योंकि, मैं तुम से कहता हूँ, कि मैं उस समय तक फिर से दाखरस को नहीं पीऊँगा जब तक कि परमेश्वर राजा के रूप में सब जगह पर
शासन नहीं करता है।” 19फिर उसने कुछ रोटी ली और उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उसने उसे टुकड़ों में तोड़ कर और खाने के लिए उनको दे दिया।
जब उसने ऐसा किया, तो उसने कहा, “यह रोटी मेरी देह है, जिसे मैं तुम्हारे लिए बलिदान करने वाला हूँ। बाद में मेरे सम्मान में इसे फिर से करना।” 20इसी रीति
से, उनके भोजन खा लेने के पश्चात, उसने दाखरस के प्याले को उठाया और कहा, “यह नई वाचा है जिसे मैं अपने स्वयं के लहू का उपयोग करने के द्वारा
बाँधूँगा, जो मेरे मरने के समय पर मेरे घावों से तुम्हारे लिए बहेगा। 21परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम सब जान लो कि जो जन मुझे मेरे शत्रुओं के हाथों में सौंपेगा वह
यहाँ मेरे साथ भोजन कर रहा है। 22{मैं यह इसलिए कह रहा हूँ} क्योंकि मैं, मनुष्य का पुत्र, वास्तव में उस रीति से मरूँगा जिसके लिए परमेश्वर ने योजना बनाई

है। परन्तु उस जन के लिए यह कितना भयंकर होगा जो मुझे {मेरे शत्रुओं के} हाथों में सौंपेगा!” 23तब वे प्रेरित एक दूसरे से पूछने लगे कि उनमें से कौन वास्तव
में यीशु को पकड़वाने के लिए तैयार होगा। 24इसके पश्चात, वे प्रेरित इस विषय पर आपस में विवाद करने लगे कि उनमें से किसे यह विचार करना चाहिए कि
वह सबसे महत्वपूर्ण जन है। 25यीशु ने उनको उत्तर देते हुए कहा, “अन्यजाति देशों के राजा लोगों को यह दिखाना पसन्द करते हैं कि वे शक्तिशाली हैं। तौभी वे
स्वयं को यह नाम देते हैं ‘वह जो लोगों की सहायता करते हैं।’ 26परन्तु तुम को उन शासकों के समान नहीं बनना है! बजाए इसके, तुम में से सर्वाधिक सम्मानित
लोगों को ऐसे व्यवहार करना चाहिए जैसे कि वे तुम में से सबसे कम सम्मानित जन हों। जो कोई जन अगुवाई करता है उसे दास के समान व्यवहार करना
चाहिए। 27क्योंकि तुम जानते हो कि महत्वपूर्ण जन वह है जो मेज़ पर भोजन करता है, वह दास नहीं जो भोजन लेकर आता है। परन्तु जिस समय पर मैं तुम्हारे
मध्य में हूँ तो मैं, तुम्हारा अगुवा, तुम्हारी सेवा करने के द्वारा तुम्हारे लिए एक उदाहरण स्थापित कर रहा हूँ। 28तुम वही लोग हो जो उन सारी कठिन बातों में मेरे
साथ बने रहे जिनसे मैं पीड़ित हुआ था। 29इसलिए अब मैं तुम को उन महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त कर रहा हूँ जिन पर तुम शासन करोगे, जिस प्रकार से मेरे
पिता ने मुझे राजा के रूप में शासन करने के लिए नियुक्त किया है। 30जब मैं राजा बनता हूँ तो तुम मेरे साथ बैठोगे और खाओगे और पीओगे। बल्कि, तुम
सिंहासनों पर बैठोगे और इस्राएल को 12 गोत्रों के लोगों का न्याय करोगे।” 31“हे शमौन, हे शमौन, ध्यान दे! शैतान ने {परमेश्वर} से {उसके द्वारा} तुम सभी को
ऐसे परखने देने के लिए बोला है, जिस तरह से कोई छलनी में अनाज हिलाता है, {और परमेश्वर ने उसे ऐसा करने की अनुमति दे दी है}। 32परन्तु हे शमौन, मैं ने
तेरे लिए प्रार्थना की है। {मैंने परमेश्वर से कहा है} कि तू मुझ पर विश्वास करना पूरी रीति से बन्द नहीं करेगा। इसलिए जब तू यह निर्णय ले कि तू वास्तव में मुझ
पर विश्वास करता है, तो अन्य प्रेरितों को {भी मुझ पर विश्वास करने के लिए} प्रोत्साहित करना। 33पतरस ने उसे प्रत्युत्तर दिया, “हे प्रभु, मैं तो तेरे साथ बन्दीगृह
में जाने को तैयार हूँ। यहाँ तक कि मैं तो तेरे साथ मरने का भी इच्छुक हूँ!” 34यीशु ने प्रत्युत्तर दिया, “हे पतरस, मैं चाहता हूँ कि तू जान ले कि आज की रात,
इससे पहले कि मुर्गा बाँग दे, तू तीन बार कहेगा कि तू मुझे नहीं जानता!” 35फिर यीशु ने चेलों से पूछा, “जब मैंने तुम को बाहर भेजा {गाँवों में, और तुम चले
गए} बिना कोई धन, भोजन, या जूतियाँ लिए, तो क्या कुछ ऐसा भी था जिसकी तुम को आवश्यकता पड़ी परन्तु वह प्राप्त नहीं हुआ?” उन्होंने प्रत्युत्तर दिया,
“नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं था!” 36फिर यीशु ने कहा, “परन्तु, अब, यदि {तुम में से} किसी के पास धन है, तो वह उसे अपने साथ ले जाए। साथ ही, जिस किसी
के पास भी भोजन है, वह उसे अपने साथ ले जाए। और जिस किसी के पास तलवार नहीं है, तो वह अपना कुर्ता बेच दे और एक मोल ले ले!” 37मैं तुम से यह
इसलिए कहता हूँ क्योंकि एक भविष्यद्वक्ता ने मेरे विषय में पवित्रशास्त्र में जो लिखा था वह अवश्य पूरा होगा: ‘लोगों ने उसके साथ अपराधियों के जैसे व्यवहार
किया।’ जो कुछ भी पवित्रशास्त्र मेरे विषय में कहता है वह होने वाला है। 38चेलों ने प्रत्युत्तर दिया, “हे प्रभु, देख! हमारे पास दो तलवारें हैं!” उसने उत्तर दिया,
“हमें दो से अधिक की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।” 39यीशु नगर से निकल कर जैतून के पहाड़ पर चला गया, जैसा कि वह सामान्य रूप से किया करता था।
उसके चेले भी उसके साथ गए। 40जब यीशु {अपने चेलों के साथ} उस स्थान पर आया, जहाँ पर वह अक्सर रात बिताया करता था, तो उसने उनसे कहा,
“प्रार्थना करो कि जब तुम परीक्षा में पड़ो तो पाप न करने में परमेश्वर तुम्हारी सहायता करे।” 41फिर वह उनसे लगभग 30 मीटर की दूरी पर गया, और घुटने
टिका कर प्रार्थना की। 42उसने कहा, “हे पिता, यदि तेरी इच्छा हो, तो कृपया मुझे उन भयंकर बातों का अनुभव न करने की अनुमति प्रदान कर जो होने वाली
हैं। परन्तु वह न कर जो मैं चाहता हूँ। वही कर जो तू चाहता है।” 43[तब स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उसके पास आया और उसे साहस प्रदान किया। 44उसे बहुत कष्ट
हो रहा था।। इसलिए उसने अत्यन्त गहनता से प्रार्थना की। उसका पसीना लहू की बड़ी-बड़ी बूँदों के समान भूमि पर गिर रहा था।] 45जब यीशु प्रार्थना करने से
उठा, तो वह अपने चेलों के पास लौट आया। उसने पाया कि वे सो रहे थे। वे बहुत दु:खी थे और इसी बात ने उनको थका दिया था। 46उसने {उनको जगा कर}
उनसे कहा, “यह तुम्हारे लिए सोते रहने का समय नहीं है! उठो! प्रार्थना करो कि {परमेश्वर तुम्हारी सहायता करे ताकि} कोई भी बात तुम को पाप करने के लिए
परीक्षा में न डाले।” 47जिस समय पर यीशु बोल ही रहा था, लोगों की एक भीड़ उसके पास आई। यहूदा, जो 12 चेलों में से एक था, उनका मार्गदर्शन कर रहा
था। वह यीशु के गाल पर चूमने के द्वारा नमस्कार करने के लिए उसके पास आया। 48परन्तु यीशु ने उससे कहा, “हे यहूदा, तूने मुझ, मनुष्य के पुत्र, को मेरे
शत्रुओं के हाथों में सौंपने के लिए चुम्बन का उपयोग करने का साहस कैसे किया!” 49जब चेलों को समझ में आया कि क्या घटित हो रहा था, तो उन्होंने कहा,
“हे प्रभु, क्या हमें {उनको तुझे बन्दी बनाने से रोकने के लिए} अपने हथियारों का उपयोग करना चाहिए?” 50उनमें से एक ने {अपनी तलवार को खींच कर}
महायाजक के दास पर प्रहार किया, परन्तु {केवल} उसके दाहिने कान को ही काटा। 51परन्तु यीशु ने कहा, “इससे अधिक कुछ भी मत करना!” फिर उसने उस
दास को वहाँ पर छुआ जहाँ उसे घाव हुआ था और उसे चंगा कर दिया। 52फिर यीशु ने प्रधान याजकों, मंदिर के पहरुओं के सरदारों, और यहूदी पुरनियों से
कहा जो उसे बन्दी बनाने आए थे, “यह आश्चर्य की बात है कि तुम यहाँ पर तलवारों और लाठियों के साथ मुझे बन्दी बनाने के लिए आए हो, जैसे कि मैं कोई
डाकू था। बहुत दिनों तक मैं तुम्हारे साथ मंदिर में ही था, परन्तु तुम ने मुझे बन्दी बनाने का बिलकुल भी प्रयास नहीं किया! परन्तु यह वह समय है जब तुम वह
कर रहे हो जो तुम चाहते हो। यह वह समय भी है जब शैतान उन दुष्ट कामों को कर रहा है जैसे कि वह करना चाहता है। 53-54यहूदी अगुवों और सैनिकों ने
यीशु को पकड़ लिया और उसे ले गए। वे उसे महायाजक के घर पर ले आए। पतरस ने बहुत पीछे से {एक सुरक्षित दूरी से} उनका पीछा किया। 55कुछ लोग
आँगन के मध्य में आग जला हुए और एक साथ बैठ थे। पतरस भी आकर उनके बीच में बैठ गया। 56एक दासी ने पतरस को वहाँ बैठे हुए देखा जब आग की
चमक उस पर पड़ी। उसने उसे ध्यानपूर्वक देख कर कहा, “यह व्यक्ति भी उस जन के साथ था जिसको उन्होंने बन्दी बनाया है!” 57परन्तु उसने यह कह कर
इन्कार कर दिया, “हे युवती, मैं उसे नहीं जानता!” 58थोड़ी देर के पश्चात किसी अन्य ने पतरस को देख कर कहा, “तू भी उनमें से एक है जो उस मनुष्य के साथ
थे जिसको उन्होंने बन्दी बनाया है!” परन्तु पतरस ने कहा, “नहीं, हे श्रीमान, मैं उनमें से कोई नहीं हूँ!” 59लगभग एक घण्टे के पश्चात किसी और ने ऊँचे स्वर से
कहा, “{जिस रीति से} यह व्यक्ति {बात करता है उससे प्रकट होता है कि वह} गलील {क्षेत्र का} रहने वाला है। इसलिए निश्चित रूप से वह यहाँ इस मनुष्य के
साथ आया है जिसको उन्होंने बन्दी बनाया है!” 60परन्तु पतरस ने कहा, “हे श्रीमान, यह सत्य नहीं है!” जिस समय पर पतरस बोल ही रहा था, तुरन्त ही एक मुर्गे
ने बाँग दी। 61यीशु ने पीछे घूम कर सीधे पतरस पर दृष्टि डाली। तब पतरस को स्मरण आया जो यीशु ने उससे कहा था: “आज की रात, इससे पहले कि मुर्गा
बाँग दे, तू तीन बार इन्कार करेगा कि तू मुझे जानता है।” 62और वह आँगन से बाहर जाकर बड़े दु:ख के साथ रोने लगा। 63जो पुरुष यीशु की पहरेदारी कर रहे
थे उन्होंने उसका उपहास किया और उसे मारा-पीटा। 64उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी {जिससे कि वह देख न पाए और तब उसे पीटने की बारी लेने
लगे}। उन्होंने उससे कहा, “हमें दिखा कि तू एक भविष्यद्वक्ता है! हमें बता कि अभी-अभी तुझे किसने पीटा है!” 65उन्होंने उसका ठठ्ठा करते हुए, उसके विषय
में बहुत सी अन्य {क्रूर} बातों को कहा। 66अगली सुबह भोर में, यहूदी अगुवों में से बहुत से एक साथ इकट्ठा हुए। इस समूह में प्रधान याजकों के साथ में वे

पुरुष भी थे जो यहूदी व्यवस्था की शिक्षा दिया करते थे। उन्होंने सैनिकों से यीशु को यहूदी परिषद कक्ष में लाने के लिए कहा। 67वहाँ उन्होंने उससे कहा, “यदि
तू मसीह है, तो हमें बता दे!” परन्तु उसने प्रत्युत्तर दिया, “यदि मैं कहूँ कि मैं मसीह हूँ, तो तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे। 68परन्तु यदि मैं तुम से पूछूँ कि क्या तुम
सोचते हो कि मैं मसीह हूँ, तो तुम मुझे उत्तर नहीं दोगे। 69परन्तु अब से, मैं, मसीह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बगल में बैठूँगा {और शासन करूँगा}!” 70फिर उन
सब ने पूछा, “यदि यह ऐसा है, तो क्या तू {कह रहा है कि तू} परमेश्वर का पुत्र है?” उसने उत्तर दिया, “हाँ, जो तुम कह रहे हो वह सत्य है।” 71तब उन्होंने एक
दूसरे से कहा, “हम ने स्वयं ही उसे कहते हुए सुन लिया है {कि वह परमेश्वर के समकक्ष है}! और इसलिए हमें निश्चित रूप से उसके विरोध में {ईशनिंदा के
आरोप में} गवाही देने के लिए और लोगों की आवश्यकता नहीं है!”

Chapter 23

1फिर वह सम्पूर्ण समूह उठ खड़ा हुआ और यीशु को {रोमी राज्यपाल} पिलातुस के पास लेकर गया। 2उन्होंने {पिलातुस के सामने} उस पर आरोप लगाए।
उन्होंने कहा, “हम ने देखा है कि यह मनुष्य हमारे लोगों को पथभ्रष्ट {करने के द्वारा परेशानी उत्पन्न} कर रहा है। वह उनसे उन करों का भुगतान नहीं करने के
लिए कह रहा था जिनको रोमी सम्राट, कैसर ने लागू किया है। साथ ही, वह कह रहा था कि वह मसीह, एक राजा है!” 3तब पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू
यहूदियों का राजा है?” यीशु ने प्रत्युत्तर दिया, “हाँ, यह ऐसा ही है जैसा तूने मुझ से पूछा है।” 4फिर पिलातुस ने प्रधान याजकों से और भीड़ से कहा, “यह मनुष्य
किसी भी अपराध का दोषी नहीं है।” 5परन्तु यहूदी शासकीय परिषद की ओर से आया हुआ समूह यीशु पर आरोप लगाता रहा। उन्होंने कहा, “वह लोगों में दंगा
करवाने का प्रयास कर रहा है! वह सम्पूर्ण यहूदिया {के क्षेत्र} में अपने विचारों की शिक्षा देता रहा है। उसने गलील {के क्षेत्र} में भी ऐसा करना आरम्भ किया,
और अब वह यहाँ पर भी ऐसा ही कर रहा है!” 6जब पिलातुस ने यह सुना जो उन्होंने कहा था, तो उसने पूछा, “क्या यह मनुष्य गलील {के क्षेत्र} का रहने वाला
है?” 7जब पिलातुस को मालूम हुआ कि यीशु गलील का रहने वाला है, जहाँ हेरोदेस अन्तिपास शासन करता था, तो उसने यीशु को उसके पास भेज दिया। उस
समय पर हेरोदेस यरूशलेम में ही था। 8जब हेरोदेस ने यीशु को देखा तो वह अति आनन्दित हुआ, क्योंकि वह बहुत समय से यीशु को देखना चाहता था। ऐसा
इसलिए था क्योंकि हेरोदेस ने यीशु के विषय में बहुत सारी बातों को सुना था, और वह उसे कोई चमत्कार करते हुए देखना चाहता था। 9इसलिए उसने यीशु से
कई प्रश्न पूछे, परन्तु यीशु ने उनमें से किसी को भी प्रत्युत्तर नहीं दिया। 10और प्रधान याजक और यहूदी व्यवस्था के कुछ विशेषज्ञ यीशु के पास ही खड़े रहे और
उस पर {बहुत से अपराधों को करने का} दृढ़तापूर्वक आरोप लगाते रहे। 11फिर हेरोदेस और उसके सैनिकों ने यीशु का तिरस्कार किया और उसका ठठ्ठा किया।
उन्होंने उसे {यह ढोंग करने के लिए कि वह एक राजा था} मूल्यवान वस्त्र पहनाए। तब हेरोदेस ने उसे वापस पिलातुस के पास भेज दिया। 12उस समय तक वे
दोनों ही जन एक दूसरे के भयंकर शत्रु थे, परन्तु उसी दिन से हेरोदेस और पिलातुस मित्र बन गए। 13फिर पिलातुस ने प्रधान याजकों और अन्य यहूदी अगुवों
को और उस भीड़ को जो अभी भी वहीं पर थी एक साथ इकट्ठा किया। 14उसने उनसे कहा, “तुम इस मनुष्य को मेरे पास लेकर आए, यह कहते हुए कि वह
लोगों की विद्रोह करने में अगुवाई कर रहा था। परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि जब तुम सुन रहे थे तब उसकी जाँच करने के पश्चात, मैं यह निष्कर्ष
निकालता हूँ कि जिन कामों के लिए तुम ने कहा था कि उसने किए हैं, उनमें से किसी को भी करने के लिए वह दोषी नहीं है। 15साथ ही, हेरोदेस ने इसे {बिना
दण्डित किए} हमारे पास वापस भेज दिया है। इसका अर्थ है कि उसने भी {यही निष्कर्ष निकाला है कि वह दोषी नहीं है}। अतः यह स्पष्ट है कि इस मनुष्य ने
कुछ भी ऐसा नहीं किया है जिससे कि यह मार डाले जाने के योग्य हो। 16इसलिए मैं {अपने सैनिकों से कह कर} इसे कोड़े लगवाऊँगा और फिर इस मुक्त कर
दूँगा।” 17[{पिलातुस ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि} उसे प्रत्येक फसह के उत्सव में एक बन्दी को मुक्त करना होता था।] 18परन्तु सम्पूर्ण भीड़ एक साथ चिल्ला
पड़ी, “इस मनुष्य को मार डाल! बजाए इसके हमारे लिए बरअब्बा को मुक्त कर दे!” 19अब बरअब्बा वह जन था जिसने {यरूशलेम} नगर में रोमी सरकार के
विरुद्ध विद्रोह करने के लिए कुछ लोगों को भड़काया था। वह एक हत्यारा भी था। इन अपराधों के कारण उसे बन्दीगृह में डाला गया था। 20परन्तु पिलातुस
बहुत चाहता था कि यीशु को मुक्त करे, इसलिए उसने फिर से भीड़ से बात करने का प्रयास किया। 21परन्तु वे लगातार चिल्लाते रहे, “उसे क्रूस पर चढ़ा! उसे
क्रूस पर चढ़ा!” 22तब पिलातुस ने तीसरी बार भीड़ से बात की। “नहीं! उसने कोई भी अपराध नहीं किया है! उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जिसके कारण से
वह मार डाले जाने के योग्य हो। इसलिए मैं अपने सैनिकों से उसे कोड़े लगवाऊँगा और फिर मैं उसे मुक्त कर दूँगा।” 23लेकिन भीड़ में से लोग चिल्लाते रहे और
दृढ़तापूर्वक कहा कि पिलातुस यीशु को क्रूस पर चढ़ा दे। अन्ततः, क्योंकि वे बहुत ऊँचे स्वर में चिल्लाते ही रहे, इसलिए उन्होंने पिलातुस को सहमत कर लिया।
24अतः पिलातुस ने घोषणा की कि जो वे चाहते हैं वह उसे करेगा। 25फिर पिलातुस ने उस व्यक्ति को मुक्त कर दिया जिसे स्वतंत्र करने के लिए भीड़ उससे
कह रही थी। वह व्यक्ति बन्दीगृह में इस कारण से था क्योंकि उसने सरकार के विरुद्ध झगड़ा किया था और लोगों की हत्या की थी! तब पिलातुस ने सैनिकों को
आदेश दिया कि वे यीशु को ले जाकर वैसा करें जैसा भीड़ चाहती थी। 26अब वहाँ पर शमौन नाम का एक व्यक्ति था, जो {अफ्रीका में स्थित} कुरेने नगर का
रहने वाला था। वह गाँव से यरूशलेम में आ रहा था। जिस समय सैनिक यीशु को लेकर जा रहे थे, तो उन्होंने शमौन को पकड़ लिया। उन्होंने {यीशु से उस क्रूस
को ले लिया जिसको उन्होंने उस पर लादा हुआ था, और उन्होंने} उसे शमौन के काँधों पर रख दिया। उन्होंने उसे वह उठा कर यीशु के पीछे-पीछे चलने के लिए
बोला। 27अब एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे-पीछे चल रही थी। भीड़ में बहुत सी स्त्रियाँ थीं जो {अपना शोक प्रकट करने के लिए} अपनी छातियाँ पीट रही थीं
और {दुःख के साथ} उसके लिए विलाप कर रही थीं। 28परन्तु {उनकी सहानुभूति को स्वीकार करने के बजाए} यीशु ने उन स्त्रियों की ओर घूम कर कहा, “हे
यरूशलेम की स्त्रियों, मेरे लिए मत रोओ! बजाए इसके, तुम पर और तुम्हारी सन्तानों पर {जो भयंकर बातें घटित होने वाली हैं उन पर} रोओ! 29क्योंकि मैं
चाहता हूँ कि तुम जान लो कि {शीघ्र ही} एक ऐसा समय आएगा जब लोग कहेंगे, ‘वे स्त्रियाँ कितनी भाग्यशाली हैं जिन्होंने कभी भी किसी सन्तान को जन्म नहीं
दिया है या शिशुओं को दूध नहीं पिलाया है!’ 30परन्तु इस नगर में रहने वाले लोग कहेंगे, ‘हम चाहते हैं कि हमारे ऊपर पहाड़ गिर पड़ें और टीले हमें ढाँप लें!’
31इस समय पर लोगों के लिए दूसरों के साथ बुरे कामों को करना कठिन है, उसी प्रकार से जैसे ताजी लकड़ी में आग लगाना कठिन होता है। परन्तु तत्पश्चात,
दूसरों के साथ भयानक कामों को करने में लोग सरलतापूर्वक सक्षम होंगे, उसी प्रकार से जैसे सूखी लकड़ी में आग लगाना सरल होता है।” 32दो अन्य पुरुष, जो
कि अपराधी थे, वे भी यीशु के साथ-साथ उस स्थान की ओर जा रहे थे जहाँ रोमी लोग उनको मार डालेंगे। 33जब वे उस स्थान पर पहुँच गए जिसका नाम
खोपड़ी था, वहाँ पर सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर कीलों से ठोक कर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। उन्होंने इन्हीं कामों को उन दो अपराधियों के साथ भी किया।

उन्होंने उनमें से एक को यीशु की दाहिनी ओर तथा दूसरे को उसकी बायीं ओर खड़ा कर दिया। 34[परन्तु यीशु ने कहा, “हे पिता, कृपया इन लोगों को क्षमा कर।
ये जानते नहीं हैं कि वे क्या कर रहे हैं।”] फिर सैनिकों ने उसके कपड़ों को बाँट लिया और पासे जैसी किसी वस्तु के साथ यह निर्धारित करने के लिए जुआ खेला
कि प्रत्येक को कपड़े का कौन सा टुकड़ा मिलेगा। 35बहुत से लोग पास में खड़े होकर देख रहे थे। वे यीशु का उपहास कर रहे थे। यहूदी अगुवों ने भी उसी प्रकार
के काम किए। उन्होंने कहा, “इसने अन्य लोगों को बचाया! यदि परमेश्वर ने वास्तव में इसे मसीह बनने के लिए चुना है, तो इसे स्वयं को भी बचाना चाहिए!”
36सैनिकों ने भी उसका ठठ्ठा किया। उसके पास आकर उन्होंने उसे थोड़ी सी खट्टी मदिरा दी। 37उन्होंने उससे कहा, “यदि तू यहूदियों का राजा है तो स्वयं को
बचा ले!” 38उसके सिर के ऊपर क्रूस पर, सैनिकों ने एक चिन्ह भी लगाया जिसमें कहा गया था, “यह यहूदियों का राजा है।” 39उन अपराधियों में से एक जो
{यीशु के बगल में क्रूस पर} लटका हुआ था उसने भी उसका तिरस्कार किया। उसने कहा, “यदि तू वास्तव में मसीह होता, तो तू स्वयं को बचा लेता, और तू हम
को भी बचा लेता!” 40परन्तु दूसरे अपराधी ने उसे {ऐसा कहने के लिए} फटकारा। उसने उससे बोला, “तुझे परमेश्वर से {तुझे दण्डित करने से} डरना चाहिए! तू
भी तो क्रूस पर मर रहा है, {और शीघ्र ही परमेश्वर तेरा न्याय करेगा}। 41हम दोनों तो {मरने के} योग्य हैं। वे हमें इसलिए दण्डित कर रहे हैं क्योंकि हम उन दुष्ट
कामों के कारण जो हम ने किए इसके योग्य हैं। परन्तु जिस मनुष्य का तू तिरस्कार कर रहा है उसने कोई भी अनुचित काम नहीं किया!” 42फिर उसने यीशु से
कहा, “हे यीशु, जब तू राजा के रूप में शासन करने लगे तो कृपया मेरे विषय में विचार करना और मुझ से अच्छे से व्यवहार करना!” 43यीशु ने प्रत्युत्तर दिया, “मैं
चाहता हूँ कि तू जान ले कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा!” 44उस समय यह लगभग दोपहर का समय था। परन्तु उस सम्पूर्ण क्षेत्र में दोपहर में तीन
बजे तक अंधकार छाया रहा। 45वहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं था। और मंदिर के भीतर जो {मोटा} पर्दा था {जो परम पवित्र स्थान को ढाँपता था} वह दो टुकड़ों में
विभाजित हो गया। 46जब ऐसा हुआ, तो यीशु ऊँचे स्वर में चिल्लाया, “हे पिता, मैं अपनी आत्मा को तेरी देखरेख में छोड़ता हूँ!” उसके ऐसा कहने के पश्चात,
उसने साँस लेना बन्द कर दिया और मर गया। 47जब उस सूबेदार ने {जो सैनिकों को आदेश दे रहा था} जो घटित हुआ था उसे देखा, तो उसने कहा, “सच में,
इस मनुष्य ने कुछ भी अनुचित नहीं किया था!” जो उसने कहा उससे परमेश्वर की प्रशंसा हुई। 48जब भीड़ के उन लोगों ने जो इन मनुष्यों को मरते हुए देखने के
लिए इकट्ठा हुए थे वह देखा जो वास्तव में घटित हुआ था, तो वे यह प्रकट करने के लिए कि वे दुःखित थे अपनी छातियों को पीटते अपने घरों को वापस चले
गए। 49{परन्तु जब बाकी की सारी भीड़ चली गई तो,} जितने यीशु के परिचित थे, जिनमें वे स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं, जो उसके साथ गलील {क्षेत्र} से आई थीं,
जहाँ थोड़ी दूरी पर वे खड़े थे, वहीं से जो घटित हुआ था उसे देखते रहे। 50वहाँ एक यूसुफ नाम का व्यक्ति था {जो यरूशलेम में रहता था}। वह एक भला और
धर्मी व्यक्ति था जो कि यहूदी परिषद का एक सदस्य भी था। 51परन्तु वह अन्य परिषद सदस्यों से सहमत नहीं था जब उन्होंने यीशु को मार डालने का निर्णय
लिया था और जब उन्होंने योजना बनाई थी कि इसे कैसे करना है। वह यहूदिया के अरमतिया का रहने वाला था। वह अपेक्षापूर्ण रीति से उस समय की प्रतीक्षा
कर रहा था जब परमेश्वर अपने राजा को शासन करना आरम्भ करने के लिए भेजेगा। 52यूसुफ पिलातुस के पास गया और यीशु का शव लेकर उसे गाड़ने के
लिए अनुमति प्रदान करने हेतु उसने पिलातुस से विनती की {पिलातुस ने उसे अनुमति दे दी,} 53अतः यूसुफ ने यीशु के शव को {क्रूस पर से} नीचे उतार लिया।
उसने उसे सनी के वस्त्र में लपेट दिया। तब उसने यीशु के शव को एक कब्र में रख दिया जिसे किसी ने खड़ी चट्टान में काटा था। इससे पहले कभी भी किसी ने
उस कब्र में कोई शव नहीं रखा था। 54यह उस दिन घटित हुआ जब यहूदी लोग उनके विश्राम दिन के लिए तैयार हो रहे थे। शीघ्र ही सूर्यास्त होकर सब्त का
आरम्भ होने वाला था। 55जो स्त्रियाँ यीशु के साथ गलील {क्षेत्र} से आई थीं, वे {यूसुफ और जो पुरुष उसके साथ थे} उनके पीछे-पीछे गईं। उन्होंने उस कब्र को
देखा, और उन्होंने यह भी देखा कि उसके भीतर उन पुरुषों ने यीशु के शव को कैसे लिटाया था। 56फिर वे स्त्रियाँ वहाँ वापस चली गईं जहाँ पर वे ठहरी हुई थीं
कि {यीशु के शव पर लगाने के लिए} मसाले और लेप तैयार करें। तथापि, जब सब्त आरम्भ हुआ तो उन्होंने काम करना बन्द कर दिया, जिस प्रकार से यहूदी
व्यवस्था की माँग थी।

Chapter 24

1रविवार को सुबह में बड़ी भोर को, वे स्त्रियाँ कब्र पर गईं। वे अपने साथ में वे मसाले लेकर आईं जिनको {यीशु के शव पर लगाने के लिए} उन्होंने तैयार किया
था। 2{जब वे पहुँचीं,} तो उन्होंने पाया कि किसी ने कब्र पर से उस पत्थर को {जिसने प्रवेश द्वार को बन्द कर रखा था} लुढ़का कर दूर कर दिया था। 3वे {कब्र
में} भीतर गईं, परन्तु यीशु का शव वहाँ पर नहीं था! 4वे नहीं जानती थीं कि इसके विषय में क्या विचार करना है। तभी दो पुरुष उज्ज्वल, चमकते वस्त्र पहने हुए
अचानक से उनके समीप आ खड़े हुए! 5इस बात ने उन स्त्रियों को बहुत डरा दिया। वे भूमि की ओर झुक कर बैठ गईं। उन दो पुरुषों ने उनसे कहा, “जो मनुष्य
जीवित हो तुम को किसी ऐसे जन की खोज उस स्थान पर नहीं करनी चाहिए जहाँ पर वे मृत लोगों के शवों को दफनाते हैं! 6वह यहाँ पर नहीं है। नहीं, वह
जीवित हो गया है! स्मरण करो जिस समय पर वह तुम्हारे साथ गलील में ही था, तो उसने तुम से कहा था, 7‘वे मुझ, मनुष्य के पुत्र, को पापी मनुष्यों के हाथों में
सौंप देंगे। वे मनुष्य मुझे क्रूस पर चढ़ा देने के द्वारा मार डालेंगे। परन्तु दो दिनों के पश्चात, मैं फिर से जीवित हो जाऊँगा।’” 8उन स्त्रियों को स्मरण आ गया जो
यीशु ने उनसे कहा था। 9इसलिए वे कब्र को छोड़ कर यीशु के उन 11 प्रेरितों और अन्य चेलों के पास गईं और जो घटित हुआ था वह उनको बताया। 10जिन
स्त्रियों ने इन बातों को प्रेरितों को बताया वे मगदला गाँव की रहने वाली मरियम, योअन्ना, याकूब की माता मरियम, और अन्य स्त्रियाँ थीं जो उनके साथ थीं,
11परन्तु प्रेरितों ने सोचा कि यह सूचना मूर्खता ही थी, इसलिए उन्होंने उन स्त्रियों का विश्वास नहीं किया। 12तथापि, पतरस ने {यह देखने का कि कहानी सच थी
या नहीं} निर्णय लिया। वह कब्र की ओर दौड़ गया। वह नीचे झुका {और भीतर झाँका}। उसने वह सनी के कपड़े देखे {जिसमें यीशु का शव लिपटा हुआ था,
परन्तु यीशु वहाँ नहीं था}। इसलिए जो कुछ घटित हुआ था उसके विषय में विचार करते हुए, वह कब्र पर से चला गया। 13उसी दिन यीशु के दो चेले इम्माऊस
नाम के दूर के एक गाँव को जा रहे थे। यह यरूशलेम से लगभग दस किलोमीटर दूर था। 14वे उन सभी बातों के विषय में एक दूसरे से बात कर रहे थे जो {यीशु
के साथ} घटित हुई थीं। 15जिस समय पर वे बातें कर रहे थे और {उन बातों की} चर्चा कर रहे थे, तो यीशु स्वयं उनके पास पहुँचा और उनके साथ-साथ चलने
लगा। 16परन्तु परमेश्वर ने उन्हें यह समझने से रोक दिया कि वह यीशु था। 17यीशु ने उनसे पूछा, “तुम दोनों चलते-चलते किस विषय में बात कर रहे थे?” वे रुक
गए, और उनके मुँह पर बहुत दुःखी भाव थे। 18परन्तु तभी उनमें से एक ने, जिसका नाम क्लियुपास था, प्रत्युत्तर दिया, “तू ही एकमात्र व्यक्ति होगा जो
यरूशलेम की यात्रा कर रहा है और जो हाल ही के दिनों में वहाँ पर घटित हुई घटनाओं के विषय में नहीं जानता है!” 19उसने उनसे पूछा, “कैसी घटनाएँ?”

उन्होंने प्रत्युत्तर दिया, “वे बातें जो यीशु के साथ घटित हुईं, वह मनुष्य जो नासरत का रहने वाला था, जो कि एक भविष्यद्वक्ता था। परमेश्वर ने उसे बड़े-बड़े
चमत्कार दिखाने में और अद्भुत सन्देशों की शिक्षा देने में सक्षम किया। अधिकांश लोगों के विचार में वह अद्भुत था। **20**परन्तु हमारे प्रधान याजकों और अगुवों ने
उसे {रोमी अधिकारियों को} सौंप दिया। उन्होंने उसे मृत्युदण्ड दिया, और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा कर मार डाला। **21**हम आशा कर रहे थे कि वह वही जन था
जो हम इस्राएलियों को हमारे शत्रुओं से स्वतंत्र करेगा! परन्तु अब यह सम्भव नहीं लगता है, क्योंकि रोमियों के द्वारा उसे मार डाले जाने के पश्चात से तीन दिन
बीत चुके हैं। **22**इसके अतिरिक्त, हमारे समूह की कुछ स्त्रियों ने हमें चकित कर दिया। आज सुबह भोर में वे उस कब्र पर गईं {जहाँ यीशु को दफनाया गया था},
23परन्तु यीशु का शव वहाँ पर नहीं था! उन्होंने वापस आकर हमें बताया कि उन्होंने दर्शन में कुछ स्वर्गदूतों को भी देखा। उन स्वर्गदूतों ने बताया कि यीशु जीवित
है! **24**तब उनमें से कुछ जो हमारे साथ थे {जब उन स्त्रियों ने आकर यह बताया तो} कब्र पर गए। उन्होंने देखा कि वे बातें उसी प्रकार से थीं जैसी उन स्त्रियों ने
सूचना दी थी। परन्तु उन्होंने यीशु को नहीं देखा। **25**तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम दोनों मूर्ख हो! जो सब बातें भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के विषय में लिखी हैं उन
पर विश्वास करने में तुम बहुत ढीले हो! **26**निश्चित रूप से तुम को मालूम होना चाहिए कि मसीह के लिए यह आवश्यक था कि उन सब बातों में दुःख उठाए {और
मर जाए}, और फिर परमेश्वर की ओर से महान सम्मान को प्राप्त करे!” **27**तब यीशु ने उन्हें वे सब बातें समझा दीं जो पवित्रशास्त्र में उसके विषय में कही गई हैं।
उसने मूसा की लिखी बातों से आरम्भ किया, और फिर उसने समझाया कि सारे ही भविष्यवक्ताओं ने क्या लिखा था। **28**जब वे उस गाँव के निकट पहुँच गए
जहाँ वे दोनों पुरुष जा रहे थे, और ऐसा प्रतीत हुआ कि यीशु सड़क पर चलते हुए आगे जा रहा था। **29**परन्तु उन्होंने उससे {ऐसा नहीं करने के लिए} विनती
की। उन्होंने कहा, “आज रात हमारे साथ रह, क्योंकि दोपहर बीत गया है और शीघ्र ही अंधेरा हो जाएगा।” इसलिए वह उनके साथ रहने के लिए {घर में} भीतर
गया। **30**जब वे सब भोजन करने के लिए बैठ गए, तो यीशु ने थोड़ी रोटी ली और उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर उसने उसे टुकड़ों में तोड़ा और
उन दो पुरुषों को कुछ देने लगा। **31**और तब परमेश्वर ने उनको उसे पहचानने में सक्षम किया। परन्तु तुरन्त ही वह अदृश्य हो गया! **32**उन्होंने एक दूसरे से कहा,
“जिस समय पर हम सड़क पर चले रहे थे और वह हम से बातें कर रहा था और हमें पवित्रशास्त्र को समझने में सक्षम कर रहा था, हम भीतर से अत्यन्त
उत्साहित हो गए थे! {इन सब का यही अर्थ निकलता है कि मसीह को दुःख उठाना ही होगा परन्तु तत्पश्चात महान सम्मान प्राप्त होगा।}” **33**इसलिए वे तुरन्त ही
निकल कर यरूशलेम को लौट गए। वहाँ उन्होंने उन 11 प्रेरितों और कुछ अन्य लोगों को पाया जो उनके साथ इकट्ठे हो गए थे। **34**प्रेरितों ने उन दो पुरुषों से
कहा, “यह सत्य है कि यीशु फिर से जी उठा है। वह शमौन को दिखाई भी दिया है!” **35**फिर उन दो पुरुषों ने दूसरों को बताया कि जब वे सड़क पर चल रहे थे
तब क्या घटित हुआ था। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि कैसे वे दोनों यीशु को पहचान गए जब उसने उनके लिए कुछ रोटी तोड़ी। **36**जब वे यह कह ही रहे थे,
अचानक यीशु स्वयं उनके मध्य में प्रकट हो गया। उसने उनसे कहा, “परमेश्वर तुम्हें शान्ति प्रदान करे!” **37**परन्तु {वे शान्तिपूर्ण नहीं थे।} वे चौंक गए थे और डर
गए थे क्योंकि उन्हें लगा कि वे किसी भूत को देख रहे हैं! **38**उसने उनसे कहा, “तुम को चिन्तित नहीं होना चाहिए! और तुम को सन्देह भी नहीं करना चाहिए
{कि मैं जीवित हूँ}। **39**{मेरे हाथों के घावों को} और मेरे पाँवों को देखो! इस प्रकार से तुम सुनिश्चित हो सकते हो कि यह वास्तव में मैं ही हूँ। भूतों के शरीर नहीं
होते, जैसा कि तुम देखते हो कि मेरे पास है, और तुम मुझे यह साबित करने के लिए छू भी सकते हो कि मेरा शरीर वास्तविक है।” **40**उसके ऐसा कहने के
पश्चात, उसने उनको अपने हाथों और अपने पाँवों {में घावों} को दिखाया। **41**वे इतने आनन्दित थे कि वे अभी भी बड़ी कठिनाई से विश्वास कर पा रहे थे {कि
वह वास्तव में जीवित था}। इसलिए उसने उनसे कहा, “क्या तुम्हारे पास यहाँ पर कुछ है जिसे मैं खा सकूँ?” **42**अतः उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा
दिया। **43**और जबकि वे देख ही रहे थे, उसने उसे लेकर खा लिया। **44**फिर उसने उनसे कहा, “मैं उसे फिर से दोहराऊँगा जो मैंने तुम से उस समय पर कहा था
जब पहले मैं तुम्हारे साथ था। परमेश्वर वह सब कुछ करने वाला था जो उसने मेरे {मसीह के} विषय में सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में कहा था।” **45**तब उसने उनको
पवित्रशास्त्र {की उन बातों को} {जो उसके विषय में कही गई थीं} समझने में सक्षम कर दिया। उसने उनसे कहा, **46**“यह वही है जो पवित्रशास्त्र में तुम पढ़
सकते हो: कि मसीह दुःख उठाएगा {और मर जाएगा}, परन्तु उसके पश्चात तीसरे दिन, वह फिर से जीवित हो जाएगा। **47**{पवित्रशास्त्र यह भी कहता है कि} जो
मसीह पर विश्वास करते हैं वे जाकर उसकी ओर से घोषणा करें कि परमेश्वर उन लोगों को क्षमा कर देगा जो पाप करना बन्द कर देते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम यह
करो कि यहाँ यरूशलेम से आरम्भ करके संसार में रहने वाले प्रत्येक लोगों के समूहों के पास जाओ। **48**{तुम को लोगों को बताना है कि} तुम ने मेरे साथ घटित
हुई उन सब बातों को देखा है जिनके लिए पवित्रशास्त्र कहता है कि वे मसीह के साथ घटित होंगी। **49**और जैसा कि मेरे पिता ने वादा किया था, मैं तुम्हारे पास
पवित्र आत्मा को भेजने वाला हूँ। परन्तु तुम को उस समय तक इस नगर में ठहरे रहना है जब तक कि परमेश्वर तुम को {पवित्र आत्मा की} सामर्थ प्रदान न
करे।” **50**फिर यीशु उनको {नगर से} बाहर ले गया जब तक कि वे बैतनिय्याह {गाँव} के निकट तक नहीं आ गए। वहाँ पर उसने अपने हाथों को उठा कर उनको
आशीर्वाद दिया। **51**जब वह ऐसा कर रहा था, तो वह उनको छोड़ कर स्वर्ग को चला गया। **52**उसकी आराधना करने के पश्चात, वे बड़े आनन्द के साथ
यरूशलेम को लौट गए। **53**प्रत्येक दिन वे मंदिर में गए और वहाँ पर परमेश्वर की आराधना करने में समय को व्यतीत किया।

यूहन्ना

Chapter 1

1जगत की उत्पत्ति से पहले ही वचन अस्तित्व में था। वचन परमेश्वर के साथ था। वचन ही परमेश्वर था। 2जगत के अस्तित्व में आने से पहले ही वह, अर्थात्
वचन, परमेश्वर के साथ था। 3परमेश्वर ने उसके द्वारा सब वस्तुओं की रचना की। परमेश्वर ने उसके साथ मिलकर इस जगत की हर एक वस्तु की रचना की।
4वचन अनन्त जीवन देता है, और वह अनन्त जीवन {परमेश्वर की भली और सच्ची} ज्योति है जिसे वह मनुष्यों पर {प्रकट करता है}। 5परमेश्वर ने {अपनी भली
और सच्ची} ज्योति को इस दुष्ट संसार पर भी प्रकट किया, और इस दुष्ट संसार ने उसे ग्रहण नहीं किया। 6परमेश्वर ने यूहन्ना नामक एक व्यक्ति को भेजा {जिसे
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के नाम से भी जाना जाता था}। 7वह {यीशु} के बारे में, {जो} ज्योति है, लोगों पर प्रचार करने के लिए आया था। {उसने इस बात का
प्रचार किया} ताकि हर एक जन उसकी {गवाही} के माध्यम से उस ज्योति पर भरोसा करे। 8यूहन्ना स्वयं तो वह ज्योति नहीं था, परन्तु वह इसलिए आया था
ताकि लोगों को उस ज्योति के विषय में बताए। 9वह सच्ची ज्योति {यीशु} था, जिसने परमेश्वर की सच्चाई और भलाई को हर एक जन पर प्रकट किया। वह
ज्योति {वही था} जो संसार में आने वाली थी। 10वचन संसार में था, और उसने जगत की रचना की। फिर भी, संसार के लोगों ने उसे नहीं पहचाना। 11वह वचन
उसके अपने लोगों, {यहूदियों,} के पास आया, परन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। 12परन्तु हर उस जन को जिसने उसे ग्रहण किया और उस पर भरोसा
किया उसने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार प्रदान किया। 13परमेश्वर की ये सन्तानें आत्मिक रूप से सामान्य मानवीय जन्म के माध्यम से पैदा नहीं हुए
थे, और न मानवीय इच्छा के द्वारा, और न उनके पिताओं की इच्छा के द्वारा आत्मिक रूप से नहीं जन्मी थीं। बल्कि, वे परमेश्वर के द्वारा आत्मिक रूप से जन्मी
थीं। 14वचन एक वास्तविक मानव बन गया और अस्थाई रूप से यहाँ पर जीवनयापन किया {जहाँ पर हम जीवन व्यतीत करते हैं}। हम ने उसे उसकी
महिमामय प्रकृति का प्रदर्शन करते हुए देखा है। {अर्थात} उस अद्वितीय पुत्र की महिमामय प्रकृति जो पिता के पास से आया है। वह परमेश्वर के दयालु कार्यों
और सच्ची शिक्षाओं पर पूरी तरह से अधिकारी है। 15यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला लोगों को वचन के विषय में बता रहा था। और {जो उसके आसपास थे उन पर}
वह चिल्लाया, “मैंने तुम को बताया था कि मेरे बाद कोई आएगा {और यह कि} वह मुझ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वह मुझ से बहुत पहले अस्तित्व में
था।” 16{हम जानते हैं कि वचन ने पूरी तरह से परमेश्वर के दयालु कार्यों और सच्ची शिक्षाओं को धारण किया है} क्योंकि जो पूरी तरह से अधिकारी था उसके
कारण से हम सब को लाभ पहुंचा, और एक के बाद एक भले कार्यों {से लाभ मिला है}। 17{ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था
{इस्राएलियों को} दी थी। परन्तु परमेश्वर के दयालु कार्य और सच्चा सन्देश यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण अस्तित्व में आए। 18कभी भी किसी भी जन ने परमेश्वर को
नहीं देखा है। परन्तु वह अद्वितीय यीशु ही परमेश्वर है। वह परमेश्वर पिता की समीपता में है, और उसने स्वयं पिता को प्रकट भी किया है। 19यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाले ने यही गवाही दी थी जब यहूदी अगुवों ने यरूशलेम नगर से कुछ याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिए भेजा था कि “तू कौन है?” 20{उस
समय} यूहन्ना ने दृढ़तापूर्वक मान लिया कि—“मैं मसीह नहीं हूँ!” 21तब उन्होंने उससे पूछा, “{यदि ऐसा है तो,} फिर तू है कौन? क्या तू एलिय्याह है?” उसने
कहा, “नहीं।” उन्होंने फिर से पूछा, “क्या तू वही भविष्यद्वक्ता है {जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था कि वह आएगा}?” यूहन्ना ने उत्तर दिया, “नहीं।” 22अतः
इन याजकों और लेवियों ने एक बार फिर यूहन्ना से पूछा, “तू है कौन? {हमें बता} ताकि हम उन अगुवों को जिन्होंने हमें भेजा है खबर दें {कि तू क्या कहता है}।
तू कौन होने का दावा करता है?” 23यूहन्ना उनसे बोला, “मैं वह व्यक्ति हूँ जो इस सुनसान जगह में इसलिए पुकारता है कि जब प्रभु आए तो प्रभु को ग्रहण करने
के लिए तुम को तैयार करूँ। {मैं वही हूँ जिसके बारे में} यशायाह भविष्यद्वक्ता ने पहले ही बता दिया था।” 24ये याजक और लेवी जिनको यूहन्ना के पास
यरूशलेम के अगुवों ने भेजा था फरीसी थे। 25उन्होंने उससे पूछा, “यदि तू न मसीह है और न एलिय्याह है और न कोई भविष्यद्वक्ता ही है, तो फिर तू लोगों को
बपतिस्मा क्यों दे रहा है?” 26यूहन्ना ने प्रतिउत्तर दिया, “मैं तो लोगों को पानी से बपतिस्मा दे रहा हूँ, परन्तु इस समय तुम्हारे मध्य में कोई जन ऐसा भी है जिसे
तुम नहीं जानते। 27वह मेरे बाद आता है, परन्तु मैं इतना लायक भी नहीं हूँ कि उसकी जूतियों का फीता खोलूँ।” 28यह घटनाएँ यरदन नदी के पार {पूर्वी दिशा
में} स्थित बैतनिय्याह गाँव में घटित हुई थीं। {यही वह स्थान है} जहाँ यूहन्ना लोगों को बपतिस्मा दे रहा था। 29इन बातों के घटित होने के अगले दिन, यूहन्ना ने
यीशु को अपनी ओर आते देखा। तब उसने लोगों से कहा, “देखो! {वह है} परमेश्वर का मेम्ना! वह इस संसार में रहने वाले लोगों के पापों की क्षमा के लिए अपने
आप को बलिदान कर देगा। 30यही वह व्यक्ति है जिसके विषय में मैंने कहा था कि ‘कोई है जो मेरे बाद आएगा और जो मुझ से बढ़कर महत्वपूर्ण है, क्योंकि
वह मुझ से {बहुत पहले अस्तित्व में था}।’ 31{पहले तो} मैं नहीं जानता था कि वह कौन था। फिर भी, मैं लोगों को इसी उद्देश्य से पानी से बपतिस्मा दे रहा था
कि उसे इस्राएल के लोगों पर प्रकट करूँ।” 32और यूहन्ना ने घोषणा की, “मैंने परमेश्वर की आत्मा को एक कबूतर के समान प्रकट होते हुए स्वर्ग से नीचे उतरते
देखा। फिर वह आत्मा यीशु पर ठहर गया। 33{पहले तो} मैं नहीं जानता था कि वह कौन था, परन्तु परमेश्वर ने मुझे {लोगों को} पानी से बपतिस्मा देने के लिए
भेजा और मुझ से कहा, ‘जिस व्यक्ति पर तू मेरी आत्मा उतरते और ठहरते देखे वही वह व्यक्ति है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।’ 34मैंने यह देखा है, और
मैं तुम पर यह घोषणा करता हूँ कि यह व्यक्ति, यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।” 35इन बातों के घटित होने के अगले दिन, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला फिर से अपने दो
शिष्यों के साथ था। 36जब उसने यीशु को पास से गुजरते देखा, तो उसने कहा, “देखो! {यही है} परमेश्वर का मेम्ना!” 37तब यूहन्ना के दोनों शिष्यों ने सुना जो
उसने कहा था और वे यीशु के पीछे हो लिए। 38जब यीशु पीछे मुड़ा और उनको अपने पीछे आते हुए देखा, तो उसने उनसे पूछा, “तुम किसकी खोज में हो?”
उन्होंने उससे कहा, “हे रब्बी ({यहूदियों की अरामी भाषा में} जिसका अर्थ ‘गुरु’ होता है), तू कहाँ पर ठहरा हुआ है?” 39उसने प्रतिउत्तर दिया, “मेरे साथ आओ,
और तुम देखने पाओगे!” अतः वे आए और देखा जहाँ यीशु ठहरा हुआ था। उस दिन वे उसके साथ ही रुक गए क्योंकि देर हो रही थी। (यह लगभग 4:00 बजे
अपराह्न का समय था)। 40जिन्होंने उस बात को सुना था जो यूहन्ना ने कही थी और यीशु के पीछे हो लिए थे उन दोनों चेलों में से एक अन्द्रियास था। {वह}
शमौन पतरस का भाई {था}। 41अन्द्रियास पहले {गया और} अपने भाई शमौन से मिला। {जब वह उसके पास आया,} तो उसने कहा, “हमें मसीह मिल गया

है!" (यूनानी भाषा में मसीह का अर्थ "ख्रीस्त" होता है।) 42अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास लेकर गया। जब यीशु ने पतरस पर दृष्टि डाली, तो उसने कहा, "तू
शमौन है। तेरे पिता का नाम यूहन्ना है। {अब से} तेरा नाम कैफ़ा {भी} होगा।" ({कैफा एक अरामी शब्द है जो कि} यूनानी में "पतरस" है {और उसका अर्थ
"चट्टान" होता है}।) 43इन बातों के घटित होने के अगले दिन यीशु ने उस क्षेत्र को छोड़ देने का निर्णय लिया। वह गलील प्रान्त में चला गया और उसे फिलिप्पुस
नाम का एक व्यक्ति मिला। यीशु ने उससे कहा, "आकर मेरा चेला हो जा।" 44फिलिप्पुस {गलील में स्थित} बैतसैदा नगर का रहने वाला था। {यही वह नगर है}
जहाँ के निवासी अन्द्रियास और पतरस थे। 45{तब} फिलिप्पुस {गया और} उसे नतनएल मिला। {जब वह उसके पास आया,} तो उसने कहा, "हमें मसीह मिल
गया है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में {जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दी थी} लिखा था और {जिसके बारे में} भविष्यद्वक्ताओं {ने कहा था कि वह आएगा}।
यीशु ही {वह मसीह} है। उसके पिता का नाम यूसुफ है। वह नासरत नगर का रहने वाला है।" 46नतनएल ने प्रतिउत्तर दिया, "नासरत का रहने वाला? निश्चय ही
उस नगर से कुछ भी अच्छी वस्तु नहीं निकल सकती है!" फिलिप्पुस ने प्रतिउत्तर दिया, "चल और स्वयं ही देख ले!" 47जब यीशु ने नतनएल को अपने समीप
आते देखा, तो उसने उससे कहा, "देखो! {यहाँ} एक सच्चा इस्राएली है! वह कभी भी किसी जन को धोखा नहीं देता है!" 48नतनएल ने उससे पूछा, "तू कैसे
जानता है कि मैं किस प्रकार का व्यक्ति हूँ?" यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा था, जिस समय तू अंजीर के पेड़
के नीचे {अकेला ही} बैठा हुआ था।" 49तब नतनएल ने घोषणा की, "हे गुरु, तू अवश्य ही परमेश्वर का पुत्र है! तू इस्राएल का महाराजा है {जिसकी हम प्रतीक्षा
कर रहे हैं}!" 50यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "क्या तू मुझ पर केवल इसलिए विश्वास करता है क्योंकि मैंने तुझ से कहा कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था?
तू मुझे ऐसे काम करते हुए देखेगा जो उससे भी बहुत बढ़कर हैं!" 51फिर यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: {जिस प्रकार का दर्शन तेरे पूर्वज
याकूब ने बहुत समय पहले देखा था,} तू स्वर्ग को खुला हुआ देखेगा, और तू परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मुझ, मनुष्य के पुत्र पर उतरते देखेगा।"

Chapter 2

1दो दिन बाद, काना में, जो गलील प्रान्त में एक नगर है, वहाँ पर एक विवाह था और यीशु की माता वहाँ पर थी। 2और किसी जन ने यीशु और उसके चेलों को
भी उस विवाह में आमंत्रित किया हुआ था। 3{मेजबानों ने विवाह में आए हुए लोगों को दाखरस परोसा और} वे उनका सारा दाखरस पी गए। {इसलिए} यीशु
की माता ने उससे कहा, "उनके पास दाखरस समाप्त हो गया है। {कृपया इस बारे में कुछ कर।}" 4तब यीशु ने उससे कहा, "हे महोदया, इसका मुझ से या तुझ
से क्या लेना-देना है? मेरा {वह चुना हुआ} समय कि अपनी {सेवा} {को आरम्भ करूँ} अभी नहीं आया है।" 5यीशु की माता सेवकों से बोली, "जो कुछ भी वह
तुम से करने के लिए बोले वही करना।" 6(वहाँ पत्थर के छः {खाली} मर्तबान रखे हुए थे। उनमें पानी रखा जाता था {ताकि लोग} यहूदियों के धार्मिक
शुद्धिकरण के नियमों {के अनुसार स्वयं को शुद्ध कर सकें}। प्रत्येक मर्तबान में 80 से लेकर 120 लीटर तक {पानी} समा सकता था।) 7यीशु सेवकों से बोला,
"मर्तबानों को पानी से भर दो।" अतः उन्होंने मर्तबानों को ऊपर तक पूरी तरह से भर दिया। 8फिर उसने उनसे कहा, "अब, किसी मर्तबान में से थोड़ा पानी
निकालो और उसे विवाह भोज के प्रधान के पास लेकर जाओ।" अतः सेवकों ने वैसा ही किया। 9तब विवाह भोज के प्रधान ने उस पानी को चखा, जो कि अब
दाखरस बन गया था। (वह नहीं जानता था कि वह दाखरस कहाँ से आया था, यद्यपि वे सेवक जानते थे जिन्होंने पानी निकाला था।) और उसने दुल्हे को {अपने
पास} बुलाया। 10फिर वह दुल्हे से बोला, "हर कोई पहले उत्तम दाखरस परोसता है और बाद में ओछा दाखरस परोसता है, जब मेहमान नशे में बहुत चूर हो
जाते हैं {और भिन्नता नहीं बता पाते}। हालाँकि, तूने अब तक उत्तम दाखरस को बचाया हुआ है।" 11वह उन चमत्कारिक चिन्हों में से प्रथम चिन्ह था जो यीशु ने
किया था। यह उसने काना नगर में किया था, जो गलील प्रान्त में स्थित है। वहाँ उसने प्रदर्शित किया कि वह कितना महान है। अतः उसके चेलों ने उस पर
विश्वास किया। 12इस चमत्कार को करने के कुछ समय बाद, यीशु और उसकी माता और उसके भाई, उसके चेलों के साथ, कफरनहूम नगर को नीचे गए। और
वे कुछ दिन के लिए वहाँ ठहरे रहे। 13अब यह यहूदी फसह का पर्व मनाने का समय आ ही गया था, इसलिए यीशु यरूशलेम नगर को गया। 14वहाँ मंदिर {के
आँगन} में उसने {वहाँ बलिदान चढ़ाने वालों को} पशु, भेड़, और कबूतर बेचने वाले मनुष्यों को देखा। उसने {मंदिर की मुद्रा से} मुद्रा बदलने वाले मनुष्यों को
मेज़ लगाए बैठे {हुए भी देखा}। 15इसलिए यीशु ने लट वाली कुछ चमड़े की पट्टियों से एक कोड़ा बनाया, और उसने उन सब लोगों को पशुओं और भेड़ों
{समेत} मंदिर से बाहर निकालने के लिए उसका उपयोग किया। उसने मुद्रा बदलने वालों के सिक्कों को भी भूमि पर बिखेर दिया और उनकी मेजों को पलट
दिया। 16जो कबूतर बेच रहे थे उनसे वह बोला, "इन कबूतरों को यहाँ से बाहर ले जाओ! मेरे पिता के घर को बाजार में परिवर्तित मत करो!" 17{इस घटना ने}
उसके चेलों को उस विषय में स्मरण दिलाया जो किसी ने {बहुत समय पहले पवित्रशास्त्र में} लिखा था, "{हे परमेश्वर,} मैं तेरे मंदिर से इतना प्रेम करता हूँ, कि मैं
इसके लिए मिट भी जाऊँगा।" 18तब यहूदी अगुवों ने यीशु से प्रश्न करते हुए प्रतिक्रिया दी, "तू हमारे लिए कौन सा चमत्कार कर सकता है {कि साबित हो कि तेरे
पास इन कामों को करने का परमेश्वर की ओर से अधिकार है} जिनको तू कर रहा है?" 19यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "यदि तुम इस मंदिर को नष्ट कर दो, तब
मैं तीन दिन में इसे पुनर्निर्मित कर दूँगा।" 20तो यहूदी अगुवों ने कहा, "इस मंदिर का निर्माण होने में 46 वर्ष लगे। {क्या तू यह कह रहा है कि} तू इस सम्पूर्ण
मंदिर को केवल तीन दिन में पुनर्निर्मित करने जा रहा है?" 21हालाँकि, जिस मंदिर के बारे में यीशु कह रहा था वह उसकी अपनी देह थी, {न कि मंदिर का
भवन}। 22{इस कथन के} परिणामस्वरूप, उसके चेलों ने इन बातों को स्मरण किया जो उसने परमेश्वर द्वारा यीशु को मृतकों में से जीवित करने के बाद कही
थीं। तब उन्होंने जो पवित्रशास्त्र कहता था और जो स्वयं यीशु ने कहा था दोनों पर विश्वास किया। 23बाद में, जब फसह का पर्व मनाने के समय यीशु यरूशलेम
में था, तो पर्व के {दिनों के} दौरान, बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया क्योंकि उन्होंने उन चमत्कारों को देखा था जो वह लगातार कर रहा था। 24फिर भी,
क्योंकि यीशु जानता था कि सब लोग किसके समान थे, इसलिए उसने उन पर भरोसा नहीं किया। 25यीशु {ने इसलिए भी उन पर भरोसा नहीं किया} क्योंकि
उसे किसी जन की आवश्यकता नहीं थी कि उसे मनुष्यों के विषय में बताए। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि वह जानता था कि लोग क्या {सोचते हैं और क्या चाहते
हैं}।

Chapter 3

1अब वहाँ नीकुदेमुस नाम का एक व्यक्ति था। वह फरीसी {नामक एक कठोर यहूदी धार्मिक समूह} का सदस्य था। वह सर्वोच्च यहूदी शासकीय परिषद का
सदस्य भी था। 2वह रात में यीशु के पास आया। उसने यीशु से कहा, “हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ऐसा गुरु है जो परमेश्वर की ओर से आया है। {हम यह इसलिए
जानते हैं} क्योंकि कोई भी जन इन चमत्कारों को जिनको तू कर रहा है तब तक नहीं कर सकता जब तक कि परमेश्वर उसकी सहायता न कर रहा हो।” 3यीशु ने
नीकेदिमुस को प्रतिउत्तर दिया और कहा, “मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: नए सिरे जन्म लिए बिना कोई भी जन प्रवेश नहीं कर सकता जहाँ परमेश्वर राज्य करता
है।” 4तब नीकुदेमुस ने उससे कहा, “जब कोई व्यक्ति बूढ़ा हो जाए तो कैसे फिर से जन्म ले सकता है? और कोई भी जन अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करके
दूसरी बार जन्म नहीं ले सकता है!” 5यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: कोई भी जन उस स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता जहाँ परमेश्वर राज्य करता
है जब तक कि वह पानी और आत्मा के द्वारा फिर से न जन्मे। 6यदि कोई मानव किसी व्यक्ति को जन्म देता है, {तो वह व्यक्ति} भी एक मानव होता है। परन्तु
जो {परमेश्वर की} आत्मा के कार्य के द्वारा {फिर से} जन्म लिए हुए हैं वे एक नई आत्मिक प्रकृति को पाते हैं {जिसका निर्माण परमेश्वर उनके भीतर ही करता
है}। 7इसलिए चकित न हो क्योंकि मैंने तुझे बोला कि तुझे फिर से जन्म लेना अवश्य है। 8पवित्र आत्मा हवा के समान है जो जहाँ कहीं भी बहना चाहती है उधर
बहती है। यद्यपि तू हवा की ध्वनि को सुन तो सकता है, परन्तु तू जानता नहीं कि हवा कहाँ से आई या वह कहाँ जा रही है। {जैसे तू इन बातों को नहीं
समझता,} वैसे ही तू उस हर एक जन को {भी नहीं समझता} जो {परमेश्वर की} आत्मा के कार्य के द्वारा {फिर से} जन्म लिए हुए है। 9नीकुदेमुस ने उसे उत्तर
दिया, “यह कैसे सम्भव है?” 10यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू इस्राएलियों के मध्य में एक महत्वपूर्ण धार्मिक गुरु है, इसलिए जो मैं कह रहा हूँ वह तुझे समझ लेना
चाहिए! 11मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: मेरे चेले और मैं उन बातों को ही कहते हैं जिनको हम जानते हैं कि वे सच्ची हैं, और हम तुझ से वह बातें कह रहे हैं
जिनको हम ने देखा है। तौभी तुम लोग {जिनसे हम इन बातों को कहते हैं} उसे अस्वीकार करते हो जो हम कह रहे हैं। 12चूँकि जब मैं तुम को उन बातों के बारे
में बताता हूँ जो इस पृथ्वी पर घटित होती हैं तो जो मैं कहता हूँ तुम लोग उस पर भरोसा नहीं करते, तो जब मैं तुम को उन बातों के बारे में बताऊँ जो स्वर्ग में
घटित होती हैं तो जो मैं कहता हूँ तुम निश्चित रूप से उस पर भरोसा नहीं करोगे! 13मैं, मनुष्य का पुत्र, ही एकमात्र वह जन हूँ जो स्वर्ग तक गया है, और मैं ही
एकमात्र वह जन हूँ जो स्वर्ग से नीचे {पृथ्वी पर} आया है। 14{बहुत समय पहले, जब इस्राएली लोग जंगल में भटक रहे थे}, मूसा ने {एक खम्भे पर विषैले} सर्प
{की पीतल की आकृति को} ऊँचे पर चढ़ाया था, {और जितनों ने उस पर दृष्टि डाली वे साँपों से बच गए}। उसी रीति से, लोगों को मुझ, मनुष्य के पुत्र, को भी
{क्रूस पर} ऊँचे पर चढ़ाना अवश्य है। 15{वे मुझे ऊँचे पर चढ़ा देंगे} ताकि जो कोई भी ऊपर देखे और मुझ पर भरोसा करे वह {स्वर्ग में मेरे साथ} सर्वदा जीवित
रहेगा। 16{ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर ने संसार के लोगों से इसी रीति से प्रेम किया, इसीलिए उसने अपने अद्वितीय पुत्र को दे दिया ताकि जो कोई भी जन
उसके पुत्र पर भरोसा करता है वह मरेगा नहीं परन्तु सर्वदा जीवित रहेगा। 17{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि परमेश्वर ने मुझे, अर्थात अपने पुत्र को, संसार में
इसलिए नहीं भेजा ताकि संसार के लोगों को दोषी ठहराए। बजाए इसके, {परमेश्वर ने मुझे इसलिए भेजा} ताकि संसार के लोगों को मेरे द्वारा बचा ले।
18परमेश्वर किसी भी ऐसे जन को दोषी नहीं ठहराता जो उसके पुत्र पर भरोसा करता है। परन्तु परमेश्वर ने उन सब को पहले से ही दोषी ठहरा दिया है जो उसके
पुत्र पर भरोसा नहीं करते हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र के नाम पर भरोसा नहीं किया। 19अब परमेश्वर का न्यायिक शासन निम्न प्रकार से है: {वह
जो} ज्योति है उसने संसार में प्रवेश किया, परन्तु लोगों ने उसके बजाए बुराई से इसलिए प्रेम किया, क्योंकि वे बुरे काम करते हैं। 20{वे अंधकार से इसलिए प्रेम
करते हैं} क्योंकि हर वह व्यक्ति जो लगातार बुरे काम करता रहता है {उससे घृणा करता है जो} ज्योति है और कभी भी उसके पास नहीं आएगा। {वे ज्योति से
बचते हैं} ताकि ज्योति उन कामों को उजागर न कर दे जो वे करते हैं। 21परन्तु वह व्यक्ति जो लगातार सच्चे कामों को करता रहता है उसके पास आता है जो
ज्योति है ताकि ज्योति सब को वह दिखाए जो वह करता है {और जिससे कि सब लोग जान लें} कि उन कामों को करने में परमेश्वर उसकी सहायता कर रहा
था।” 22उन बातों के घटित होने के बाद, यीशु और उसके चेलों ने यहूदिया प्रान्त में प्रवेश किया। वह अपने चेलों के साथ वहाँ थोड़े समय तक रुका रहा और
बहुत से लोगों को बपतिस्मा दिया। 23यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला भी लोगों को ऐनोन नगर के पास बपतिस्मा दे रहा था, जो सामरिया प्रान्त में सालेम नगर के
निकट स्थित है। {वह वहाँ लोगों को इसलिए बपतिस्मा दे रहा था} क्योंकि वहाँ उस स्थान में बहुत पानी था, और बपतिस्मा लेने के लिए लोग यूहन्ना के पास
आते जा रहे थे। 24{यूहन्ना ऐसा इसलिए कर पाया} क्योंकि यूहन्ना के शत्रुओं ने अभी तक उसे बंदीगृह में नहीं डाला था। 25फिर यूहन्ना के कुछ चेले एक यहूदी
पुरुष के साथ यहूदियों के धार्मिक शुद्धिकरण के नियम के बारे में बहस करने लगे। 26जो बहस कर रहे थे वे यूहन्ना के पास आए और कहा, “हे गुरु, वहाँ एक
व्यक्ति था जो तेरे साथ उस समय था जब तू लोगों को यरदन नदी के दूसरी तरफ बपतिस्मा दे रहा था। तूने गवाही दी थी कि वह कौन था। देख! अब वह भी
लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, और बहुत से लोग निकल कर उसके पास जा रहे हैं!” 27यूहन्ना ने उत्तर दिया, “कोई भी तब तक कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकता
जब तक कि परमेश्वर वह उसे न दे। 28निश्चय ही तुम मेरे यह कहने के गवाह हो कि मैं मसीह नहीं हूँ, परन्तु मैं वह हूँ जिसे परमेश्वर ने मसीह के आगे भेजा है।
29दुल्हन तो दुल्हे की ही होती है। मैं दुल्हे के मित्र के समान हूँ। मैं खड़ा होकर उसकी सुनता हूँ और मैं बहुत प्रसन्न हूँ क्योंकि मैं दुल्हे की वाणी सुनता हूँ।
इसलिए, {क्योंकि दुल्हन दुल्हे के पास जा रही है}, मैं अत्यन्त आनन्दित हूँ। 30{यीशु को, जो दुल्हा है,} अधिक प्रभावशाली बनना है, और मुझे, {जो दुल्हे का
मित्र है,} कम प्रभावशाली बनना है। 31यीशु स्वर्ग से आया है, और वह हर एक जन और हर एक वस्तु से बढ़कर है। {मेरी तरह} जो पृथ्वी के हैं वे केवल {किसी
ऐसे व्यक्ति के सीमित दृष्टिकोण के साथ} बोल सकते हैं जो पृथ्वी का है। जो स्वर्ग से आया है वह पृथ्वी पर के हर एक जन और हर एक वस्तु से बढ़कर है।
32यीशु लोगों को उन बातों के बारे में बताता है जो उसने {स्वर्ग में} देखीं और सुनीं, परन्तु जो वह बताता है उसे थोड़े लोग ही ग्रहण करते हैं। 33{हालाँकि,} जो
यीशु कहता है उस पर जो कोई भी विश्वास करता है वह यह सत्यापित करता है कि परमेश्वर सच्चा है। 34{ऐसा इसलिए है} क्योंकि यह यीशु जिसे परमेश्वर ने
भेजा है परमेश्वर की बातों को बोलता है। {हम जानते हैं कि वह परमेश्वर की बातों को बोलता है} क्योंकि वास्तव में परमेश्वर उसे अपना आत्मा असीमित रूप से
देता है। 35परमेश्वर पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसे सारी वस्तुओं पर अधिकार दिया है। 36जो कोई भी परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है वह {उसके साथ
स्वर्ग में} सर्वदा जीवित रहेगा। जो कोई भी परमेश्वर के पुत्र की आज्ञा का पालन नहीं करता उसे कभी भी अनन्त जीवन प्राप्त नहीं होगा। बजाए इसके, परमेश्वर
उसके साथ लगातार क्रोधित बना रहेगा।”

Chapter 4

1बाद में, फरीसी {नामक धार्मिक समूह} ने सुना कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की तुलना में यीशु तो चेलों में अधिक बढ़ौत्तरी कर रहा है और यह कि जितने
लोगों को यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था उसकी तुलना में वह अधिक लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। यीशु को भी मालूम हुआ कि फरीसियों ने यह सुना है। 2(वास्तव
में यीशु ने किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया, परन्तु उसके चेले लोगों को बपतिस्मा दे रहे थे।) 3{जब उसे मालूम हुआ कि फरीसी उसके बारे में जान गए थे,} तो
यीशु ने यहूदिया प्रान्त को छोड़ दिया और एक बार फिर से गलील प्रान्त में लौट गया। 4अब {गलील प्रान्त जाने के लिए} उसे सामरिया प्रान्त से होकर गुजरना
था। 5तो आगे, वे सामरिया प्रान्त के सूखार नामक एक नगर में पहुँचे। सूखार भूमि के उस टुकड़े के समीप था जिसे याकूब ने {बहुत समय पहले} अपने पुत्र
यूसुफ को दिया था। 6(याकूब का कुआँ भी उसी जगह पर था।) {सूखार पहुँचने} के बाद, अपनी लम्बी यात्रा के कारण यीशु बहुत थका हुआ था, इसलिए
{विश्राम के लिए} वह याकूब के कुएँ के बगल में बैठ गया। यह लगभग दोपहर का समय था। 7एक सामरी स्त्री {कुएँ पर} निकल आई {कि रस्सी से बाल्टी को
डाल कर} कुछ पानी ऊपर खींच ले। यीशु ने उससे कहा, “कृपया पीने के लिए मुझे थोड़ा पानी दे।” 8{उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि उसके चेलों ने {उसे
अकेला छोड़} दिया था और भोजन खरीदने के लिए नगर में गए हुए थे। 9और उस सामरी स्त्री ने यीशु से कहा, “मैं चकित हूँ कि तू, एक यहूदी, मुझ, सामरिया
की स्त्री से, पानी पिलाने के लिए कह रहा है।” ({उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि यहूदी लोग आमतौर पर सामरियों से कोई भी लेना-देना नहीं रखते थे।)
10यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “यदि तू उस वरदान को जानती जो परमेश्वर तुझे देना चाहता है, और यदि तू जानती कि मैं कौन हूँ जो तुझ से पानी पिलाने के
लिए निवेदन कर रहा है, तो तू मुझ से पिलाने के लिए विनती करती, और मैं तुझे जीवन का पानी देता।” 11उस स्त्री ने प्रतिउत्तर दिया, “हे महोदय, तेरे पास तो
बाल्टी भी नहीं है {जिससे कुएँ से पानी भरकर बाहर निकाला जाता है,} और यह कुआँ गहरा है। {चूँकि तू इस कुएँ से पानी बाहर नहीं निकाल सकता,} तो तुझे
यह जीवन का पानी कहाँ से मिला? 12निश्चय ही तू हमारे पिता याकूब से बढ़कर नहीं है। उसने {इस कुएँ को खोदा} और इसे हमें दे दिया। उसने, और उसके
पुत्रों ने, और उसके मवेशियों ने भी इसमें से पानी पिया।” 13यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हर एक जन जो इस कुएँ का पानी पीता है वह फिर से प्यासा होगा।
14परन्तु जो कोई भी उस पानी को पिएगा जो मैं उसे दूँगा फिर कभी प्यासा नहीं होगा। बजाए इसके, जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसके भीतर पानी का सोता बना
जाएगा {जो उसे भरपूर कर देगा} और उसे {स्वर्ग में} सर्वदा तक जीवित रखेगा।” 15उस स्त्री ने यीशु से कहा, “हे महोदय, कृपया इस पानी में से थोड़ा मुझे भी
दे ताकि मैं फिर कभी प्यासी न होऊँ या फिर से इस कुएँ पर पानी भरने के लिए आना न पड़े।” 16यीशु उससे बोला, “जा अपने पति के पास जा और उसको
यहाँ ले आ।” 17उस स्त्री ने उसे उत्तर दिया, “मेरा कोई पति नहीं है।” यीशु उससे बोला, “तू ठीक कह रही है कि मेरा कोई पति नहीं है, 18क्योंकि तेरे एक नहीं,
परन्तु पाँच पति थे, और वर्तमान में तू {जिसके साथ रह रही है} वह भी तेरा पति नहीं है। जो तूने {पति नहीं होने के बारे में} कहा है वह सत्य है।” 19उस स्त्री ने
यीशु से कहा, “हे महोदय, मुझे लगता है कि तू कोई भविष्यद्वक्ता है। 20हमारे पूर्वजों ने यहीं इस पहाड़ पर परमेश्वर की आराधना की थी, परन्तु तुम यहूदी कहते
हो कि हमें यरूशलेम में {तुम्हारे मंदिर में} परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।” 21यीशु उससे बोला, “हे महोदया, जब मैं कहता हूँ कि ऐसा समय आ रहा है
जब न तो यहाँ इस पहाड़ पर और न यरूशलेम में तुम परमेश्वर की आराधना करने पाओगे तो मेरा विश्वास कर। 22{यहाँ सामरिया में} तुम लोग उस परमेश्वर की
आराधना करते हो जिसे तुम नहीं जानते। हम यहूदी उस परमेश्वर की आराधना करते हैं जिसे हम जानते हैं। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि {तुम्हारे पापों से}
उद्धार पाने के मार्ग यहूदियों में से ही आता है। 23फिर भी, ऐसा समय आ रहा है और अब आ पहुँचा है जब जो लोग परमेश्वर की सच्ची आराधना करते हैं वे
पिता की आराधना आत्मिक रूप से और सच्चाई से करेंगे। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि अपनी आराधना के लिए पिता सच में ऐसे लोगों की ही खोज में है।
24परमेश्वर एक आत्मिक अस्तित्व है, और जो उसकी आराधना करते हैं उन्हें उसकी आराधना आत्मिक रूप से और सच्चाई से करनी चाहिए।” 25उस स्त्री ने
यीशु से कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह आने वाला है। (वही जिसे यूनानी में “ख्रीस्त” कहते हैं।) जब वह आएगा, तो वह हमें सब बातें बता देगा {जो हमें जानने
की आवश्यकता है}।” 26यीशु उससे बोला, “मैं, जो तुझ से अभी बातें कर रहा हूँ, मैं ही मसीह हूँ!” 27उसी क्षण, उसके चेले नगर में से वापस आ गए। वे
विस्मित थे क्योंकि यीशु {अकेला ही} किसी स्त्री से बातें कर रहा था {जिसे वह जानता नहीं था}। हालाँकि, किसी ने भी उससे पूछने का साहस नहीं किया कि
“तू उससे क्या चाहता था?” या “तू उससे ऐसे ही बातें क्यों कर रहा था?” 28उसी समय उस स्त्री ने अपने पानी के मर्तबान को वहीं पर छोड़ दिया और नगर में
लौट गई। उसने नगर के पुरुषों से कहा, 29“आओ और इस व्यक्ति से मिलो जिसने मुझे बहुत ऐसी सारी बातें बताई हैं जिनको मैंने किया था! यह मसीह तो नहीं
हो सकता, क्या यह हो सकता है?” 30उन लोगों ने नगर को छोड़ दिया और यीशु के पास आए। 31{जिस समय वह स्त्री गई हुई थी,} यीशु के चेलों ने, {जो
अभी-अभी भोजन लेकर लौटे थे,} उससे खाने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने कहा, “हे गुरु, कृपया कुछ खा ले!” 32यीशु उनसे बोला, “मेरे पास ऐसा भोजन है
जिसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते!” 33इसलिए वे एक-दूसरे से कहने लगे, “निश्चय ही कोई अन्य व्यक्ति उसके खाने के लिए कुछ नहीं लाया है, क्या वे लाए
हैं?” 34यीशु उनसे बोला, “जो मुझे जीवित रखता है वह यह है: यह वही करना है जो मेरा पिता—जिसने मुझे भेजा है—चाहता है और यह मेरे पिता के काम को
पूरा करना है। 35{वर्ष के इस समय में} आमतौर पर तुम कहते हो, ‘अभी तो चार महीने बचे हुए हैं, और फिर हम फसल की कटाई करेंगे।’ जो मैं तुम से कह रहा
हूँ उसे सुनो। देखो और ध्यान दो कि ये लोग ऐसे खेतों के समान हैं जो अब कटनी के लिए तैयार हैं! 36जो इन फसलों को काटता है वह मजदूरी पाता है और
फल जमा करता है, ये ऐसे लोग हैं जो {स्वर्ग में} सर्वदा का जीवन प्राप्त करते हैं। वे जो बीज बोते हैं और वे जो कटाई करते हैं उनके लिए इसका परिणाम यह
होगा कि वे मिलकर आनन्द करेंगे। 37जो मैं कहने जा रहा हूँ वह सत्य है: एक व्यक्ति बीजों को बोता है, और दूसरा व्यक्ति फसलों की कटाई करता है। 38मैंने
तुम को जो मेरे चेले हो एक ऐसी फसल की कटनी को जमा करने के लिए भेजा है जिसे तुम ने नहीं लगाया था। दूसरों ने {फसल लगाने में} कड़ी मेहनत की,
परन्तु अब तुम भी उनके साथ उनके काम में जुड़ गए हो।” 39अब बहुत से सामरियों ने जो सूखार नगर में रहते थे जो उस स्त्री ने उनको बताया था उसके कारण
यीशु पर भरोसा किया। उसने कहा, “उसने मुझे ऐसी बहुत सी बातें बताईं जो मैंने की थीं।” 40जब सामरिया के लोग यीशु के पास आए, तो उन्होंने उनके साथ
रुकने के लिए उससे विनती की। अतः वह वहाँ उनके साथ दो दिन के लिए और रुक गया। 41उनमें से बहुतों ने यीशु पर उन बातों के कारण भरोसा किया
जिनकी उसने उन पर घोषणा की थी। 42उन नगरवासियों ने उस स्त्री से कहा, “अब हम भी यीशु पर विश्वास करते हैं, परन्तु उन बातों के कारण नहीं जो तूने हमें
उसके बारे में बताई थीं। {हम विश्वास इसलिए करते हैं} क्योंकि हम ने स्वयं ही उसके सन्देश को सुन लिया है। अब हम जानते हैं कि सच में यही वह व्यक्ति है
जो इस संसार के विश्वासियों को {उनके पापों से} बचाता है।” 43उसके {सामरियों के साथ} दो दिनों तक रुकने के बाद, यीशु ने सूखार नगर को छोड़ दिया और

गलील प्रान्त में प्रवेश किया। 44(यीशु गलील में इसलिए जाना चाहता था क्योंकि उसने स्वयं ही पुष्टि की थी कि भविष्यद्वक्ता उस स्थान में सम्मान नहीं पाता
जहाँ वह पला-बढ़ा हो {और उसने प्रसिद्धि का चाह न की हो}।) 45चूँकि यह सत्य है, जब वह गलील प्रान्त में पहुँचा तो वहाँ के बहुत से लोगों ने सामान्य रूप से
उसका स्वागत किया क्योंकि उन्होंने उन सब अद्भुत कामों को देखा था जिनको उसने हाल ही के फसह के पर्व में यरूशलेम में किया था, जिसमें वे भी गए थे।
46आगे, गलील प्रान्त के काना नगर में यीशु फिर से वापस चला गया। {यही वह नगर था} जहाँ उसने पानी को दाखरस में परिवर्तित किया था। वहाँ राजा का
एक अधिकारी था जो कफरनहूम नगर के समीप रहता था और उसके एक पुत्र था जो बहुत बीमार था। 47जब उस अधिकारी ने सुना कि यीशु यहूदिया से
गलील में वापस आ गया है, तो वह काना में यीशु के पास गया और उससे नीचे कफरनहूम में आने और उसके पुत्र को चंगा करने की विनती की, क्योंकि शीघ्र
ही उसका पुत्र मर जाएगा। 48तब यीशु ने उससे कहा, “तुम लोग {मसीह के रूप में} मुझ पर केवल तब ही विश्वास करोगे यदि तुम अद्भुत चमत्कार {करते हुए
मुझे} देखोगे!” 49उस राजा के अधिकारी ने उससे कहा, “हे महोदय, कृपया मेरे पुत्र के मरने से पहले नीचे कफरनहूम में मेरे घर आ!” 50यीशु उससे बोला, “घर
जा। तेरा पुत्र जीवित रहेगा।” उस व्यक्ति ने उस बात पर भरोसा किया जो यीशु ने उससे बोली थी, और उसने वापस घर जाने के लिए प्रस्थान किया। 51जब वह
अधिकारी कफरनहूम में से होकर अपने घर की ओर यात्रा कर रहा था, तो {सड़क पर ही} उसके सेवक उससे आ मिले। उन्होंने उसे बताया, “तेरी सन्तान
जीवित रहने वाली है।” 52उसने अपने सेवकों से पूछा, “किस समय पर मेरे पुत्र ने बेहतर होना आरम्भ किया था?” उन्होंने उसे उत्तर दिया, “कल 1:00 बजे
अपराह्न को उसका बुखार उतर गया था।” 53और उस लड़के के पिता ने जान लिया कि उसके पुत्र में उसी समय सुधार हुआ था जब यीशु ने उससे कहा था कि
उसका पुत्र जीवित रहेगा। अतः इसी व्यक्ति ने, जितने उसके घर में रहते थे उन सब के साथ, यीशु पर भरोसा किया। 54वह दूसरा बड़ा चमत्कार था जो यीशु
मसीह ने किया। {इसे उसने उस समय के दौरान किया जब} वह यहूदिया प्रान्त को छोड़ने के बाद गलील के प्रान्त में आया था।

Chapter 5

1इन बातों के घटित होने के बाद, यहूदियों के एक और पर्व का समय आया, और यीशु {पर्व मनाने के लिए} ऊपर यरूशलेम नगर को चला गया। 2यरूशलेम में
{वहाँ एक स्थान है} जो भेड़-फाटक कहलाता था, {जो नगर के भीतर जाने वाले फाटकों में से एक था}। उस फाटक के बगल में एक कुंड है जिसे लोग यहूदियों
द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा में बैतहसदा कहते थे। उस कुंड के आगे छत वाले पाँच ओसारे हैं। 3इन ओसारों पर बहुत से लोग पड़े रहते थे। वे ऐसे लोग थे
जो बीमार, देखने में अक्षम, चलने में अक्षम, या हिलने-डुलने में अक्षम थे। 4[1] [{वे वहाँ इसलिए पड़े हुए थे} क्योंकि परमेश्वर की ओर से एक स्वर्गदूत कभी-
कभी नीचे आता था और पानी में हलचल मचा देता था। स्वर्गदूत के हलचल मचाने के बाद पानी में उतरने वाला पहला व्यक्ति जो कोई भी होता था, तो चाहे
उसे जो कोई भी बीमारी या दुर्बलता पीड़ित कर रही थी, वह ठीक हो जाता था।] 5बैतहसदा नामक कुंड के पास एक मनुष्य पड़ा हुआ था जो 38 वर्ष से बीमार
था। 6यीशु ने इस मनुष्य को कुंड के पास पड़े हुए देखा, और वह जानता था कि वह वहाँ बहुत समय से पड़ा हुआ है। उसने उस मनुष्य से पूछा, “क्या तू चाहता
है कि तेरा स्वास्थ्य बेहतर हो जाए?” 7उस बीमार मनुष्य ने उसे उत्तर दिया, “हे महोदय, मेरे पास ऐसा कोई जन नहीं है कि जब स्वर्गदूत पानी को हिलाए तो वह
मुझे कुंड में उतार सके। जिस समय तक मैं स्वयं को कुंड में उतार सकूँ, कोई अन्य पहले ही कुंड में उतर गया और मुझ से पहले {चंगा हो गया}, {इसलिए मैं
चंगा नहीं हो सकता}।” 8यीशु उससे बोला, “खड़ा हो! अपनी चटाई उठा {जिस पर तू लेटा हुआ है} और चल फिर!” 9तब यीशु ने उस मनुष्य को तुरन्त चंगा
किया, और उस मनुष्य ने उस चटाई को उठा लिया {जिस पर वह लेटा हुआ था} और चलने फिरने लगा। (अब यह {यहूदियों के विश्रामदिन पर घटित हुआ था}
जिसे सब्त के दिन के रूप में जाना जाता है। 10क्योंकि {यह यहूदियों का विश्रामदिन था}, इसलिए यहूदी अगुवों ने उस मनुष्य से जिसे यीशु ने चंगा किया था
कहा, “आज विश्रामदिन है। तुझे {आज के दिन} अपनी चटाई उठाने की अनुमति नहीं है {क्योंकि यह तो काम है}।” 11उस मनुष्य ने जिसे यीशु ने चंगा किया
था उनको उत्तर दिया, “जिस मनुष्य ने मुझे चंगा किया था उसी ने मुझ से कहा कि इस चटाई को उठा {जिस पर मैं लेटा हुआ था} और चल फिर।’” 12यहूदी
अगुवों ने उससे पूछा, “किसने तुझ से कहा कि अपनी चटाई उठा और चल फिर?” 13हालाँकि, वह मनुष्य जिसे यीशु ने चंगा किया था यह नहीं जानता था कि
उसे किसने चंगा किया, क्योंकि यीशु ने बिना किसी का ध्यान पड़े उस मनुष्य को छोड़ दिया था, क्योंकि वह क्षेत्र भीड़-भाड़ वाला था। 14बाद में, यीशु को वह
मनुष्य मंदिर में मिला जिसे उसने चंगा किया था और उससे कहा, “देख, अब तू ठीक हो गया है! इसके बाद पाप मत करना, ताकि तेरे साथ {तेरी पिछली बीमारी
से बढ़कर} अधिक बुरा न हो।” 15वह मनुष्य चला गया और यहूदी अगुवों को बता दिया कि जिस मनुष्य ने उसे स्वस्थ किया वह यीशु था। 16इसलिए यहूदी
अगुवों ने यीशु को सताना आरम्भ कर दिया क्योंकि वह यहूदियों के विश्रामदिन में लोगों को चमत्कारिक रूप से चंगा कर रहा था। 17यीशु ने उनको यह उत्तर
दिया, “परमेश्वर, मेरा पिता आज भी काम कर रहा है, इसलिए मैं भी काम कर रहा हूँ।” 18{उसके ऐसा कहने के} परिणामस्वरूप, यहूदी अगुवे यीशु की हत्या
करने का {जितना प्रयास उन्होंने पहले किया था उसकी तुलना में} और भी अधिक प्रयास करने लगे थे। {वे उसकी हत्या इसलिए करना चाहते थे} क्योंकि वह न
केवल उनके विश्रामदिन के नियमों की अवज्ञा कर रहा था परन्तु इसलिए भी क्योंकि वह यह कहने के द्वारा कि वह परमेश्वर के बराबर है दावा कर रहा था कि
परमेश्वर उसका पिता भी था। 19{इन आरोपों} के कारण यीशु ने यहूदी अगुवों को प्रतिउत्तर दिया, “मैं तुम {लोगों} से सच कह रहा हूँ: मैं, पुत्र, अपने अधिकार
से कुछ भी नहीं कर सकता। मैं केवल वहीं कर सकता हूँ जो मैं देखता हूँ कि परमेश्वर, पिता, कर रहा है। जो कुछ भी पिता करता है, वही मैं, अर्थात पुत्र, भी
करता है। 20{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि पिता मुझ, अर्थात पुत्र, से प्रेम करता है, और जो वह कर रहा है वह मुझे सब कुछ बता देता है। पिता मुझे उन
चमत्कारिक कामों के बारे में भी बताएगा जो उन चमत्कारों से भी बढ़कर होंगे (जो मैंने पहले से किए हैं) ताकि तुम उनके द्वारा विस्मित हो सको। 21{ऐसा
इसलिए होगा} क्योंकि मैं, अर्थात पुत्र, जिस किसी को चाहता हूँ अनन्त जीवन प्रदान करता हूँ उसी प्रकार से जैसे पिता उन्हें फिर से जीवित करता है जो मर गए
हैं और उन्हें फिर से जीवन प्रदान करता है। 22{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि पिता किसी का भी न्याय नहीं करता। बजाए इसके, उसने लोगों का न्याय करने का
सारा अधिकार मुझे, अर्थात पुत्र, को दे दिया है। 23{पिता ने ऐसा इसलिए किया} जिससे कि हर एक जन मेरा, अर्थात पुत्र का, उसी प्रकार से सम्मान करे जैसे
वे पिता का सम्मान करते हैं। जो कोई भी मेरा सम्मान नहीं करता है वह मेरे पिता का सम्मान भी नहीं कर सकता, जिसने मुझे भेजा है। 24मैं तुम लोगों से सच
कह रहा हूँ: जो कोई भी मेरी शिक्षाओं को मानता और ग्रहण करता है और परमेश्वर पर जिसने मुझे भेजा भरोसा करता है वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सर्वदा जीवित
रहेगा, और परमेश्वर उसका न्याय दोषी के जैसे नहीं करेगा। बजाए इसके, वह व्यक्ति आत्मिक रूप से मरा हुआ होने से आत्मिक रूप से जीवित होने में चला

गया है। 25मैं तुम लोगों से सच कह रहा हूँ: एक ऐसा समय आ रहा है और, बल्कि, यहाँ पहले से ही है कि इस समय जो मर चुके हैं वे मेरी वाणी सुनेंगे, अर्थात
परमेश्वर के पुत्र की वाणी, और जो मुझे सुनते हैं वे जीएँगे। 26{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि जिस प्रकार से पिता लोगों को जीवित करने में सक्षम है, उसी रीति
से उसने मुझे, अर्थात पुत्र को भी लोगों को जीवित करने की योग्यता प्रदान की है। 27पिता ने मुझे सम्पूर्ण मानवजाति का न्याय करने का अधिकार इसलिए
प्रदान किया है, क्योंकि मैं मनुष्य का पुत्र हूँ। 28चकित न हो {कि परमेश्वर ने ऐसा किया है}, क्योंकि ऐसा समय आएगा जब हर एक जन जो मर गये हैं वे मेरी
वाणी को सुनेंगे। 29तब वे अपनी कब्रों से बाहर निकल आएँगे। जिन्होंने भलाई की है परमेश्वर उनको जिलाएगा कि उनको अनन्त जीवन दे। परन्तु जिन्होंने
बुराई की है परमेश्वर उनको इसलिए जिलाएगा कि उनको दोषी ठहराए और उनको सदा के लिए दंड दे। 30मैं स्वयं से कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। जो मैं {अपने
पिता से} सुनता हूँ उसके अनुसार मैं न्याय करता हूँ, और मैं न्यायसंगत तरीके से न्याय करता हूँ। {मैं न्यायपूर्वक न्याय इसलिए करता हूँ} क्योंकि मैं उसे करने का
प्रयास नहीं करता हूँ जो मैं चाहता हूँ। बजाए इसके, मैं वही करता हूँ जो मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, चाहता है। 31यदि स्वयं के विषय में साक्षी देने के लिए
मैं अकेला व्यक्ति ही होता, तो {मूसा की व्यवस्था के अनुसार} मेरी साक्षी भरोसे के योग्य नहीं होती। 32फिर भी, कोई अन्य जन भी है जो मेरे विषय में गवाही
देता है, और मैं जानता हूँ कि जो गवाही वह मेरे विषय में देता है वह भरोसे के योग्य है 33तुम यहूदी अगुवों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास सन्देशवाहकों को
भेजा, और उसने तुम को मेरे विषय में सत्य बताया। 34हालाँकि, मेरे लिए गवाह बनने हेतु मुझे किसी जन की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, मैं यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाले के विषय में यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि परमेश्वर तुम्हारा उद्धार करे। 35यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने जलते और चमकते हुए दीपक के समान {तुम पर
परमेश्वर के सत्य की घोषणा की}। कुछ समय के लिए तुम उस ज्योति में आनन्द मनाने के इच्छुक थे {जो वह सत्य था जिसकी उसने घोषणा की थी}।
36हालाँकि, जो गवाही मैं अपने विषय में देता हूँ वह उस गवाही से भी बढ़कर है जो यूहन्ना मेरे विषय में देता है। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि यह गवाही वे
चमत्कारिक काम हैं जिनको करने के लिए परमेश्वर पिता ने मुझे अनुमति प्रदान की है। ये काम जिनको मैं कर रहा हूँ प्रमाण हैं कि पिता ने ही मुझे भेजा है।
37इसके अलावा, मेरा पिता जिसने मुझे भेजा है वही वह जन है जिसने मेरे विषय में गवाही दी है। तुम में से किसी ने भी कभी न तो उसे बोलते सुना है या देखा
है कि वह किसके समान दिखता है। 38तुम भी पिता की शिक्षाओं का पालन नहीं करते हो। {मैं जानता हूँ कि यह इसलिए सत्य है} क्योंकि तुम मुझ पर भरोसा
नहीं करते, अर्थात उस व्यक्ति पर जिसे उसने भेजा है! 39तुम सावधानीपूर्वक पवित्रशास्त्र को इसलिए पढ़ते हो क्योंकि तुम विश्वास करते हो कि उनको पढ़ने के
द्वारा तुम {स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहने के योग्य ठहरोगे। और यही वे पवित्रशास्त्र हैं जो घोषणा करते हैं कि मैं कौन हूँ। 40तौभी तुम मेरे चेले बनने से अभी
भी इन्कार करते हो ताकि तुम {स्वर्ग में सदा तक} जीवित रहो। 41मैं किसी की भी ओर से सम्मान ग्रहण नहीं करता। 42हालाँकि, मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर
से बिलकुल भी प्रेम नहीं करते। 43मैं अपने पिता के अधिकार के साथ आया हूँ, परन्तु तौभी तुम मुझे स्वीकार नहीं करते। यदि कोई अन्य जन अपने स्वयं के
अधिकार के साथ तुम्हारे पास आए, तो तुम उसे स्वीकार कर लोगे। 44तुम सम्भवतः उस समय मुझ पर भरोसा नहीं कर सकते जब तुम एकमात्र परमेश्वर के
द्वारा तुम्हारा सम्मान करने की इच्छा करने के बजाए तुम एक-दूसरे का ही सम्मान कर रहे हो! 45यह मत सोचो कि मैं वही हूँ जो अपने पिता के सामने तुम पर
दोष लगाएगा। मूसा, एक ऐसा व्यक्ति जिस पर तुम को आशा है कि वह तुम्हारा बचाव करेगा, वास्तव में वही वह व्यक्ति है जो तुम पर दोष लगाएगा। 46{वह
तुम पर इसलिए दोष लगाएगा} क्योंकि यदि तुम ने मूसा पर भरोसा किया होता, परन्तु तुम ने नहीं किया, तब तुम मुझ पर इसलिए भरोसा करोगे, क्योंकि मूसा
ने {व्यवस्था में} मेरे बारे में वर्णन किया है। 47चूँकि जो मूसा ने लिखा तुम उस पर भी भरोसा नहीं करते, तो सम्भवतः तुम उस पर भरोसा नहीं कर सकते जो मैंने
तुम से कहा है!”

5:4 *[1]*

Chapter 6

1इन बातों के घटित होने के बाद, यीशु गलील की झील की विपरीत दिशा में पार होकर चला गया, जिसे कुछ लोग तिबिरियास की झील भी कहते हैं। 2एक बड़ी
भीड़ उसके पीछे इसलिए हो ली क्योंकि उन्होंने उन चमत्कारिक कामों को देखा था जिनको वह कर रहा था, अर्थात, उन लोगों को चंगा करना जो बहुत बीमार
थे। 3यीशु एक खड़ी पहाड़ी पर चढ़ गया और वहाँ अपने चेलों के साथ बैठ गया। 4(अब उस समय पर यहूदियों का फसह का पर्व होने वाला था।) 5तब यीशु ने
आँखों को उठाया और देखा कि लोगों की एक बड़ी भीड़ उसकी ओर आ रही थी। उसने फिलिप्पुस से पूछा, “हम रोटी कहाँ से खरीदेंगे ताकि इन सब लोगों को
खिलाएँ?” 6(उसने फिलिप्पुस से यह प्रश्न इसलिए पूछा ताकि उसके विश्वास की जाँच करे, क्योंकि यीशु पहले से जानता था कि वह उस समस्या के बारे में क्या
करने जा रहा है।) 7फिलिप्पुस ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “यदि हमारे पास इतना धन हो जिसे कोई व्यक्ति 200 दिन काम करके कमा सकता है, तो वह भी इस
भीड़ के प्रत्येक व्यक्ति को खाने के लिए छोटा सा टुकड़ा देने के लिए रोटी खरीदने हेतु पर्याप्त धन नहीं होगा।” 8उसका एक अन्य चेला, शमौन पतरस का भाई
अन्द्रियास, यीशु से बोला, 9“यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच छोटी रोटियाँ और दो छोटी मछली हैं। तौभी, ये थोड़ी सी रोटियाँ और मछली इन सारे
लोगों को खिलाने के लिए निश्चय ही पर्याप्त नहीं हैं!” 10यीशु ने अपने चेलों से बोला लोगों को इकठ्ठा करके बैठाओ। इस प्रकार से लगभग 5,000 पुरुष बैठ
गए। (वहाँ उस स्थान में {उनके बैठने के लिए} बहुत सारी घास थी।) 11तब यीशु ने उन जौ की छोटी रोटियों को लिया, और उसने भोजन के लिए परमेश्वर का
धन्यवाद किया। {फिर} उसने {और उसके चेलों ने} उन लोगों को खाने के लिए रोटियाँ दीं जो {घास पर} बैठे हुए थे। उसी प्रकार से उसने दो मछली के साथ भी
किया। लोगों ने उतनी मछली और रोटियाँ खाईं जितनी वे खाना चाहते थे। 12जबकि हर एक व्यक्ति ने तब तक खाया जब तक कि वे तृप्त नहीं हो गए, तो यीशु
ने अपने चेलों से सब बचे हुए, बिना खाए हुए जौ की रोटी के टुकड़ों को इकट्ठा करने के लिए बोला ताकि उनमें से कोई भी बर्बाद न हो। 13इस प्रकार से उसके
चेलों ने उन टुकड़ों को इकट्ठा कर लिया, और उन्होंने उन टूटे हुए टुकड़ों से बारह बड़ी टोकरियाँ भर लीं जिनको लोगों ने उन जौ की पाँच छोटी रोटियों में से बचा
दिया था। 14{इसके} कारण, जब लोगों ने इस चमत्कारिक चिन्ह को देखा जिसे यीशु ने {उनके सामने} किया था, तो उन्होंने कहा, “निश्चय ही यह वही
भविष्यद्वक्ता है जिसे संसार में भेजने की {परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की} थी!” 15जब यीशु ने जान लिया कि ये लोग इसलिए उसे पकड़ने की योजना बना रहे थे ताकि
उनका राजा बनने के लिए उस पर दबाव डालें, तो वह फिर से उन्हें छोड़कर एकदम अकेला रहने के लिए पहाड़ी पर चला गया। 16जब शाम हुई, तो यीशु के

चेले पहाड़ी से उतरकर गलील की झील के पास चले गए। 17{वे} नाव पर चढ़ गए और झील के दूसरी तरफ कफरनहूम नगर जाने के लिए जलयात्रा को आरम्भ
किया। (अब पहले ही अंधेरा हो चुका था, और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आया था।) 18क्योंकि हवा तेज चल रही थी, जिससे समुद्र बहुत अशांत हो रहा
था। 19यीशु के चेलों के नाव को लगभग साढ़े चार या साढ़े पाँच किलोमीटर दूर झील में खे चुकने के बाद, उन्होंने यीशु को पानी पर चलते हुए और नाव के पास
आते देखा। वे डरे गए थे! 20यीशु उनसे बोला, “यह मैं हूँ, यीशु! डरना बंद करो!” 21वे उसे नाव पर चढ़ाकर बहुत आनन्दित थे। जैसे ही वह उनके साथ नाव में
चढ़ा, उनकी नाव उस स्थान पर पहुँच गई जहाँ वे जा रहे थे। 22यीशु के भीड़ को खिलाने के अगले दिन, लोगों की भीड़ को जो झील के दूसरी तरफ रुक गई थी
मालूम हुआ कि वहाँ {एक दिन पहले} केवल एक ही नाव थी। {उनको यह भी मालूम हुआ} कि यीशु अपने चेलों के साथ नाव पर नहीं गया था। 23(दूसरी नावों
पर तिबिरियास नगर से लोग आए थे। {उन्होंने अपनी नावों को} उस स्थान के पास रख छोड़ा था जहाँ प्रभु यीशु द्वारा इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने के
बाद भीड़ ने रोटी खाई थी।) 24अतः जब भीड़ को मालूम हुआ कि वहाँ न यीशु और न ही उसके चेले थे, तो वे उन नावों पर चढ़ गए और यीशु को ढूँढ़ने के लिए
कफरनहूम नगर की ओर जलयात्रा की। 25उस भीड़ को यीशु कफरनहूम में गलील की झील के उस तरफ मिला जो उसकी विपरीत दिशा में है {जहाँ उसने
उनको भोजन खिलाया था}। उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, {हम जानते हैं कि तू किसी नाव से तो नहीं आया है,} तो तू यहाँ कफरनहूम में कब पहुँचा?” 26यीशु ने
प्रतिउत्तर दिया, “मैं तुम से सच कह रहा हूँ: कि तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ रहे हो क्योंकि तुम ने उन चमत्कारिक कामों को देखा था जो मैंने किए थे। बजाए
इसके, {तुम मुझे केवल इसलिए ढूँढ़ रहे हो} क्योंकि तुम ने तब तक खाया था जब तक कि तुम उन रोटियों से तृप्त नहीं हो गए थे जो मैंने तुम को दी थीं। 27ऐसे
भोजन के लिए काम करना बंद करो जो शीघ्र ही खराब हो जाएगा! बजाए इसके, ऐसे भोजन के लिए काम करो जो तुम्हारे लिए {स्वर्ग में} सदा का जीवन लेकर
आए! {वह भोजन} ऐसी रोटी है जो मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र, तुम को दूँगा। {केवल मैं ही तुम को यह दे सकता हूँ} क्योंकि परमेश्वर मेरा पिता मेरा अनुमोदन
करता है।” 28तब भीड़ ने यीशु से पूछा, “परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें कौन से कामों को करना चाहिए?” 29यीशु ने उनको उत्तर दिया, “जो काम
परमेश्वर चाहता है कि तुम करो वह यह है: मुझ पर भरोसा करो, अर्थात उस पर जिसे उसने भेजा है।” 30भीड़ ने उससे पूछा, “फिर तू कौन सा चमत्कार करेगा
ताकि हम उसे देखें और तुझ पर भरोसा करें? तू हमारे लिए क्या करेगा 31हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया {जब वे मूसा के साथ भटक रहे थे}, जैसा कि
भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है: ‘परमेश्वर ने उनको खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी।’” 32यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं तुम से सच कह रहा हूँ: वह मूसा नहीं था
जिसने तुम्हारे पूर्वजों को स्वर्ग से वह रोटी दी थी। नहीं, वह तो मेरा पिता था, जो अब तुम को स्वर्ग से सच्ची रोटी दे रहा है। 33{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि
परमेश्वर की ओर से सच्ची रोटी स्वर्ग से उतरी है और संसार के लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करती है।” 34{भीड़ को समझ नहीं आया कि उसके कहने का क्या
अर्थ था}, इसलिए उन्होंने यीशु से पूछा, “हे महोदय, कृपया हर समय हमें यही रोटी दिया कर।” 35यीशु उस भीड़ से बोला, “{जैसे भोजन शारीरिक जीवन को
बनाए रखता है}, मैं वह रोटी हूँ जो अनन्त जीवन प्रदान करती है। {खाने या पीने के विपरीत}, जो कोई भी मुझ पर भरोसा करता है वह निश्चय ही सदा के लिए
संतुष्ट होगा। 36फिर भी, मैंने तुम को पहले से ही बता दिया है कि भले ही तुम मुझे देखते हो, तुम अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं करते। 37वे सब लोग जिनको
मेरा पिता मुझे देता है वे आएँगे {और मेरे चेले बन जाएँगे}, और मैं निश्चय ही उनमें से किसी को भी कभी नहीं निकालूँगा। 38{मैं ऐसा कभी भी इसलिए नहीं
करूँगा} क्योंकि मैं स्वर्ग से नीचे इसलिए नहीं उतरा कि वह करूँ जो मैं चाहता हूँ। बजाए इसके, {मैं नीचे इसलिए उतरा हूँ} ताकि वह करूँ जो मेरा पिता,
जिसने मुझे भेजा है, चाहता है कि मैं करूँ। 39मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, वह यही चाहता है: {वह मुझ से चाहता है} उन सब की सुरक्षा करना जिनको
उसने मुझे दिया है। {वह यह भी चाहता है} कि अंतिम दिन में इनको मैं फिर से जीवित करूँगा {जब मैं सब का न्याय करूँगा}। 40{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि
यह भी है जो मेरा पिता चाहता है: {और वह चाहता है} कि जो पहचानता है कि मैं, अर्थात पुत्र, कौन हूँ, और मुझ पर भरोसा करता है तो वह हर एक जन {मेरे
साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। मैं इन्हें अंतिम दिन में फिर से जीवित कर दूंगा {जब मैं सभी का न्याय करूंगा}।” 41तब यहूदी अगुवों ने यीशु के विषय में
बड़बड़ाना आरम्भ कर दिया, क्योंकि उसने कहा था कि वह सच्ची रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरी थी। 42उन्होंने कहा, “यह तो केवल यूसुफ का पुत्र, यीशु है! हम
जानते हैं कि इसके माता-पिता कौन हैं। सम्भवतः वह स्वर्ग से नहीं उतर सकता जैसा कि वह दावा करता है!” 43यीशु ने उनको उत्तर दिया, “{जो मैंने अभी कहा
उसके विषय में} आपस में बड़बड़ाना बंद करो। 44केवल वे ही जिनको मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, आने के लिए {और मेरे चेले बनने के लिए} प्रेरित करता
है ऐसा करने में सक्षम होते हैं। मैं स्वयं उन लोगों को {जो मेरे पास आते हैं} अंतिम दिन में फिर से जीवित कर दूंगा {जब मैं सभी का न्याय करूंगा}।”
45भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था कि परमेश्वर हर एक जन को शिक्षा देगा। हर एक जन जो उसकी सुनता है और मेरे पिता से सीखता है वह आएगा {और मेरा
चेला बनेगा}। 46मेरे अलावा किसी ने भी परमेश्वर मेरे पिता को नहीं देखा है। मैं ही हूँ जो परमेश्वर के पास से आया है। केवल मैंने ही उसे देखा है। 47मै तुम से
सच कह रहा हूँ: कि जो कोई भी मुझ पर भरोसा करता है वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। 48वह सच्ची रोटी मैं हूँ जो अनन्त जीवन प्रदान करती
है। 49तुम्हारे पूर्वजों ने {मूसा के साथ} जंगल में {भटकते हुए} मन्ना खाया, परन्तु फिर भी वे मर गए। 50{परन्तु} यह रोटी जिसके विषय में मैं बात कर रहा हूँ
स्वर्ग से उतरी है ताकि कोई उसे खाए और उस व्यक्ति का आत्मा कभी न मरे। 51यह रोटी जो अनन्त जीवन प्रदान करती है और स्वर्ग से उतरी है वास्तव में मैं
हूँ। जो कोई भी इस रोटी को खाएगा वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। मेरी देह भी यह रोटी है। इस संसार में रहने वाले हर एक जन के अनन्त
जीवन की खातिर मैं अपनी देह का त्याग कर दूँगा।” 52तब यहूदी अगुवों ने एक-दूसरे से बहस करना आरम्भ कर दिया। उन्होंने कहा, “यह मनुष्य वास्तव में
अपनी देह हमें नहीं दे सकता ताकि हम उसे खा लें!” 53अतः यीशु ने उनको बता दिया: “मैं तुम से सच कह रहा हूँ: तुम को मुझ, अर्थात मनुष्य के पुत्र के मांस
को खाना चाहिए, और मेरे लहू पीना चाहिए। {यदि तुम इन कामों को नहीं करते, तो} तुम को अनन्त जीवन कभी प्राप्त नहीं होगा। 54जो कोई भी मेरा मांस
खाता है और मेरा लहू पीता है वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। मैं भी उस व्यक्ति को अंतिम दिन में फिर से जीवित कर दूंगा {जब मैं सभी का
न्याय करूंगा}। 55{ऐसा इसलिए है} क्योंकि मेरा मांस सच्चा आत्मिक भोजन है, और मेरा लहू सच्चा {आत्मिक} पेय है। 56जो मेरा मांस खाते हैं और मेरा लहू
पीते हैं वे मेरे साथ जुड़े रहेंगे, और मैं उनके साथ जुड़ा रहूँगा। 57मेरा पिता सब को जीवित रखता है। उसी ने मुझे यहाँ भेजा है, और मैं लोगों को इसलिए जीवित
कर सकता हूँ क्योंकि उसने मुझे ऐसा करने के लिए सक्षम किया है। इसी रीति से, जो मुझ से खाते हैं वे सदा तक उसके कारण जो मैं उनके लिए करूँगा जीवित
रहेंगे। 58वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। {यह रोटी} {उस रोटी} के समान नहीं है जिसे इस्राएलियों के पूर्वजों ने {जंगल में} खाया था परन्तु अंत में मर गए।
जो कोई भी मुझे खाता है—अर्थात इस रोटी को—वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा।” 59यीशु ने यह कथन {यहूदी अगुवों से} आराधनालय में कहे
थे जिस समय वह कफरनहूम नगर में शिक्षा दे रहा था। 60{जो उसने कहा था} उन्होंने सुना उसके बाद, यीशु के बहुत से चेलों ने कहा, “जो वह सिखा रहा है
उसे स्वीकार करना कठिन है। सच में, कोई भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता है!” 61{यद्यपि किसी ने भी उससे नहीं कहा}, यीशु जानता था कि उसके चेले उस

बारे में बड़बड़ा रहे थे जो उसने कहा था। {इसलिए} उसने उनसे पूछा, “क्या मेरी शिक्षा से तुम को ठेस पहुँचती है? 62{यदि इस शिक्षा से तुम को ठेस पहुँची,}
तब यदि तुम मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग पर चढ़ते देखो जहाँ मैं पहले था {तब भी तुम को ठेस पहुँचेगी}? 63केवल पवित्र आत्मा ही है जो किसी को भी
अनन्त जीवन दे सकता है। इस मामले में मानवीय स्वभाव अनुपयोगी है। जो मैंने तुम को सिखाया वह पवित्र आत्मा की ओर से है और अनन्त जीवन प्रदान
करता है। 64फिर भी, तुम में से कुछ उन बातों पर विश्वास नहीं करते जो मैंने कही हैं।” (यीशु ने यह इसलिए कहा क्योंकि जिस समय से उसने अपना काम
आरम्भ किया था तब से वह जानता था कि कौन उसका विश्वास नहीं करेगा और कौन अंत में उसे धोखा देगा।) 65फिर यीशु ने कहा, “क्योंकि {तुम में से कुछ
मुझ पर विश्वास नहीं करते}, मैंने तुम को पहले ही बता दिया था कि जिनको परमेश्वर पिता ने आने की {और मेरे चेले बनने की} क्षमता प्रदान की है केवल वे ही
ऐसा करने में सक्षम होंगे।” 66यीशु के इन बातों को कहने के बाद, उसके बहुत से चेले {उससे मिलने से पहले जो वे कर रहे थे वही करने के लिए} वापस चले
गए और उसके चेले होने से हट गए। 67क्योंकि {बहुतों ने उसे छोड़ दिया इसलिए} यीशु ने अपने बारह चेलों से पूछा, “निश्चित रूप से तुम भी मुझे छोड़ना नहीं
चाहते हो, क्या ऐसा चाहते हो?” 68शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “हे प्रभु, {यदि हम तुझे छोड़ दें}, तो ऐसा कोई भी नहीं है जिसके पास हम जा सकें! केवल तू ही
वह सन्देश सिखाता है जो हमें {स्वर्ग में} सदा तक का जीवन जीने की {अनुमति प्रदान करता है}! 69हम तुझ पर भरोसा करते हैं, और निश्चित रूप से हम
जानते हैं कि तू ही वह पवित्र जन है जो परमेश्वर की ओर से आया है!” 70यीशु ने उनको उत्तर दिया, “निश्चय ही मैंने तुम बारह मनुष्यों को चुना है, परन्तु तुम में
से एक शैतान के नियंत्रण में है!” 71({जब यीशु ने यह कहा} तो वह शमौन इस्करियोती के पुत्र, यहूदा के विषय में बात कर रहा था, क्योंकि बारह चेलों में से वही
एक था जो बाद में यीशु को धोखा देगा।)

Chapter 7

1उन बातों के घटित होने के बाद, यीशु गलील प्रान्त के आसपास इसलिए फिरता रहा क्योंकि वह यहूदिया प्रान्त के आसपास भी जाना नहीं चाहता था। {वह
यहूदिया से दूर इसलिए रहा} क्योंकि वहाँ यहूदी अगुवे उसकी हत्या करने का कोई उपाय ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे थे। 2(अब उस समय पर यहूदियों का
झोंपड़ियों का पर्व आने वाला था।) 3यीशु के भाई उससे बोले, “यहाँ से निकल जा और यहूदिया प्रान्त को चला जा जिससे कि तेरे चेले भी तुझे चमत्कारिक
कामों को करते हुए देख सकें। 4{अपने चमत्कारिक कामों को यहूदिया में करना} क्योंकि जो कोई भी प्रसिद्ध होना चाहता है वह कुछ भी गुप्त रूप से नहीं
करता। चूँकि तू इन सब चमत्कारों को कर रहा है, तो {चमत्कारिक कामों को करने के द्वारा} सब लोगों पर उसे प्रकट कर जो तू {होने का दावा} करता है!”
5{यीशु के भाइयों ने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि उन्होंने भी विश्वास नहीं किया था कि वह मसीह था। 6क्योंकि {उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया था इसलिए,}
यीशु उनसे बोला, “यह मेरे लिए {यरूशलेम जाने का} सही समय नहीं है, परन्तु तुम जब चाहो वहाँ जा सकते हो। 7संसार में ऐसा कोई भी नहीं है जो तुम से
घृणा कर सके। हालाँकि, हर एक जन मुझ से इसलिए घृणा करता है क्योंकि मैं घोषणा करता हूँ कि वे बुरे काम करते हैं। 8तुम पर्व मनाने के लिए {यरूशलेम
को} जाओ। मैं अभी पर्व मनाने के लिए नहीं जा रहा हूँ, क्योंकि अभी मेरे जाने का सही समय नहीं है।” 9अपने भाइयों से ऐसा कहने के बाद, यीशु गलील प्रान्त
में थोड़े समय और रहा। 10हालाँकि, कुछ दिनों के बाद उसके भाई पर्व मनाने के लिए चले गए, वह भी गया, परन्तु उसने गुप्त रूप से ऐसा किया। 11क्योंकि
यहूदी अगुवों ने पर्व में {यीशु के होने की आशा में की थी}, उन्होंने उसे ढूँढ़ने का प्रयास भी किया। उन्होंने लोगों से पूछा, “वह मनुष्य कहाँ है?” 12भीड़ के लोग
गुपचुप तरीके से यीशु के बारे में बहुत बातें कर रहे थे। कुछ लोगों ने कहा, “वह एक भला मनुष्य है!” परन्तु अन्यों ने कहा, “नहीं! वह भीड़ को बहकाता है!”
13फिर भी, वे लोग यहूदी अगुवों से डरते थे, इसलिए उन्होंने यीशु के बारे में सार्वजनिक रूप से बातें नहीं कीं। 14झोंपड़ियों का पर्व मनाने का लगभग आधा
समय बीतने पर, यीशु ने मंदिर {के आँगन} में प्रवेश किया और वहाँ लोगों को शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। 15यहूदी अगुवे {उसकी शिक्षा पर} चकित हो गए
थे। उन्होंने कहा, “इस मनुष्य ने तो कोई धार्मिक शिक्षा नहीं ली। वह सम्भवतः पवित्रशास्त्र को इतने अच्छे से नहीं जान सकता!” 16यीशु ने उनको प्रतिउत्तर
दिया, “जो मैं सिखाता हूँ वह मेरे भीतर से नहीं आता। इसके विपरीत, यह परमेश्वर की ओर से आता है, जिसने मुझे भेजा है। 17यदि कोई जन वह करना चाहता
है जो परमेश्वर चाहता है, तो वह व्यक्ति यह जान जाएगा कि जो मैं सिखा रहा हूँ वह परमेश्वर की ओर से आया है और वह मेरे स्वयं के अधिकार के द्वारा नहीं
है। 18जो कोई भी अपने स्वयं के अधिकार से बोलता है वह केवल अपनी महिमा करना चाहता है। हालाँकि, जो कोई भी उस व्यक्ति की महिमा करना चाहता है
जिसने उसे भेजा है तो वह सत्य बोलता है और धार्मिकतापूर्ण कार्य करता है। 19मूसा ने सचमुच तुम को {परमेश्वर की ओर से} व्यवस्था प्रदान की थी। तुम में से
कोई भी उस व्यवस्था का पूर्णरूप से पालन नहीं करता। {चूँकि यह सत्य है,} तो तुम मेरी हत्या करने का प्रयास क्यों कर रहे हो {क्योंकि जिसका तुम पालन
नहीं करते यह उस व्यवस्था की अवज्ञा ही माना जाता है}?” 20भीड़ में से कुछ लोगों ने प्रतिउत्तर दिया, “कोई दुष्टात्मा तुझे नियंत्रित कर रहा है! कोई भी तेरी
हत्या करने का प्रयास नहीं कर रहा है!” 21यीशु ने भीड़ को प्रतिउत्तर दिया, “{क्योंकि} मैंने विश्रामदिन में एक चमत्कारिक चंगाई की, इसलिए तुम सब चकित
हो गए। 22क्योंकि {चंगाई जैसे कुछ काम विश्रामदिन में होंगे}, इसलिए मूसा ने तुम को खतने के विषय में व्यवस्था दी। {वह व्यवस्था बताती है कि तुम को
अपने पुत्र का उसके जन्म लेने के ठीक सात दिन बाद खतना करना चाहिए।} ({खतना} वास्तव में मूसा से आरम्भ नहीं हुआ था, परन्तु {यह संस्कार} तुम्हारे
पूर्वजों {अब्राहम, इसहाक, और याकूब} से आरम्भ हुआ था।) {इस व्यवस्था के कारण,} कभी-कभी तुम को विश्रामदिन में अपने नर बच्चे का खतना करने के
द्वारा काम करना पड़ता है। 23चूँकि कभी-कभी तुम मूसा की व्यवस्था की अवज्ञा करने से बचने के लिए विश्रामदिन में किसी व्यक्ति का खतना कर देते हो, तो
उस दिन में किसी व्यक्ति को चंगा करने {के समान भला काम करने} के कारण तुम को मुझ पर भी क्रोधित नहीं होना चाहिए! 24जो तुम ने देखा उसके अनुसार
मेरा न्याय करना बंद करो! बजाए इसके, मेरा न्याय उसके अनुसार करो जिसके लिए परमेश्वर कहता है कि सही है।” 25तब भीड़ में से कुछ लोगों ने जो
यरूशलेम में निवास करते थे कहा, “यह तो वह मनुष्य है जिसकी हत्या करने का प्रयास हमारे अगुवे कर रहे हैं! 26देखो! यह तो इन बातों को सार्वजनिक रूप से
कह रहा है, परन्तु हमारे अगुवे उसके विरोध में कुछ भी नहीं कह रहे हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि हमारे अगुवे वास्तव में जानते हों कि यही मसीह है? 27परन्तु
{यह मनुष्य मसीह नहीं हो सकता!} हम जानते हैं कि यह मनुष्य कहाँ से आया है, परन्तु जब मसीह आएगा, तो कोई भी नहीं जान पाएगा कि वह कहाँ से आया
है।” 28जिस समय वह मंदिर {के आँगन} में शिक्षा दे रहा था तब यीशु ऊँची आवाज में बोल उठा। उसने कहा, “हाँ, तुम मुझे जानते हो, और तुम यह भी जानते
हो कि मैं कहाँ से आया हूँ। परन्तु मैं यहाँ स्वयं के अधिकार से नहीं आया हूँ। बजाए इसके, जिसने मुझे भेजा वह सच्चा परमेश्वर है, और तुम उसे नहीं जानते।

29मैं उसे इसलिए जानता हूँ क्योंकि मैं उसके पास से आया हूँ। वही है जिसने मुझे भेजा है।" 30क्योंकि {यीशु ने इन बातों को कहा इसलिए}, यहूदी अगुवे उसे
बंदी बनाना चाहते थे, परन्तु कोई भी उसे इसलिए पकड़ नहीं सका, क्योंकि {मरने के लिए} यह अभी उसका सही समय नहीं था। 31{यहूदी अगुवों} के अलावा,
भीड़ में से बहुत से लोगों ने यीशु पर भरोसा किया। वे लगातार कहते रहे, "जब मसीह आएगा, तो वह निश्चय ही इस मनुष्य की तुलना में अधिक चमत्कारिक
चिन्ह प्रकट करने में सक्षम नहीं होगा!" 32कुछ फरीसियों ने उनको यीशु के बारे में इन बातों को गुपचुप तरीके से कहते हुए सुना। तब उन्होंने और शासकीय
याजकों ने उसे बंदी बनाने के लिए मंदिर के पहरुओं को भेजा। 33क्योंकि {उन्होंने ऐसा किया, इसलिए} यीशु ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ केवल थोड़े समय और
रहूँगा। शीघ्र ही मैं परमेश्वर के पास वापस चला जाऊँगा, जिसने मुझे भेजा है। 34तुम मुझे खोजोगे, परन्तु ढूँढ़ नहीं पाओगे। जहाँ मैं होऊँगा उस स्थान पर तुम
नहीं आ पाओगे।" 35इसलिए उन यहूदी अगुवों ने एक दूसरे से कहा, "यह मनुष्य कहाँ जा सकता है जहाँ हम उसे ढूँढ़ नहीं सकते? क्या यह वास्तव में उन
यहूदियों के पास जाएगा जो इस्राएल के बाहर सारे संसार में फैल गए हैं? क्या यह वहाँ के उन लोगों को भी शिक्षा देगा जो यहूदी नहीं हैं? 36जब उसने कहा कि
हम उसे खोजेंगे, परन्तु ढूँढ़ नहीं पाएँगे, और जहाँ वह होगा उस स्थान पर हम नहीं आ पाएँगे तो उसके कहने का अर्थ क्या था?" 37अब {झोंपड़ियों के} पर्व के
अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिन में, यीशु {मंदिर के आँगन में खड़ा हुआ} और ऊँची आवाज में बोला। उसने कहा, "जो कोई भी प्यासा है वह मेरे पास आए
और {जो मैं उनको दूँगा} वह पीए! 38यही है जो भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में उस व्यक्ति के बारे में लिखा है जो मुझ पर भरोसा करता है: 'वह पानी जो
अनन्त जीवन प्रदान करता है उस व्यक्ति के अंदर से बहुतायत से बहेगा।'" 39(अब यीशु ने यह पवित्र आत्मा के बारे में कहा था, जिसे परमेश्वर उनको देने जा
रहा था जिन्होंने यीशु पर भरोसा किया था। {उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि {उस समय तक परमेश्वर ने} पवित्र आत्मा {नहीं भेजा था कि उनमें वास करे
जिन्होंने उस पर भरोसा किया था}, क्योंकि यीशु को अभी तक {उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्ग में वापस आने के द्वारा} सम्मान नहीं मिला था}।) 40जो
यीशु ने कहा था जब भीड़ में से कुछ लोगों ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, "सचमुच यह वही भविष्यद्वक्ता है {जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था कि वह
आएगा}!" 41भीड़ में से कुछ अन्य लोगों ने कहा, "यह तो मसीह है!" हालाँकि, अन्यों ने {जिन्होंने भूल से सोचा था कि यीशु ने गलील में जन्म लिया था,} कहा,
"परन्तु सम्भवतः मसीह गलील प्रान्त से नहीं आ सकता। 42भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में लिखा है कि मसीह को दाऊद के वंश से आना है और उसे
बैतलहम गाँव से {आना है}, जहाँ से दाऊद आया था!" 43इस प्रकार से भीड़ के लोग यीशु के कारण {विरोध करने वाले समूहों में} विभाजित हो गए। 44(भीड़ में
से कुछ लोग उसे बंदी बनाना चाहते थे। हालाँकि, उसे किसी ने भी नहीं पकड़ा।) 45तब मंदिर के पहरुए शासकीय याजकों और फरीसियों के पास लौट आए,
जिन्होंने उनसे पूछा, "तुम ने उसे बंदी क्यों नहीं बनाया और उसे यहाँ लेकर क्यों नहीं आए?"
46मंदिर के पहरुओं ने उत्तर दिया, "किसी ने भी कभी ऐसे बात नहीं की है जैसे इस मनुष्य ने की है!" 47क्योंकि {पहरुओं ने ऐसा कहा इसलिए,} फरीसियों ने
पूछने के द्वारा प्रतिउत्तर दिया, "क्या ऐसा हो सकता है कि उसने तुम को भी बहका दिया है? 48निश्चय ही, हमारे सर्वोच्च शासकीय परिषद के सदस्यों या हम
फरीसियों में से किसी ने भी उस पर भरोसा नहीं किया है! 49हालाँकि, लोगों की यह भीड़ परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं जानती, और परमेश्वर ने उनको श्राप
दिया है!" 50तब नीकुदेमुस बोला। (वह वही मनुष्य था जो अतीत में यीशु के पास {उससे बात करने के लिए रात में} आया था। {उसने ऐसा किया था} भले ही
वह एक फरीसी था, {जो कि वह समूह था जिसने आमतौर पर यीशु का विरोध किया था}।) वह उन यहूदी धार्मिक अगुवों से बोला, 51"हमारी यहूदी व्यवस्था
निश्चय ही हमें किसी भी जन की बात सुने बिना और उसके द्वारा किये गये कार्यों के बारे में जाने बिना कि उसने क्या किया है दोष लगाने की अनुमति नहीं देती
है।" 52उन्होंने अपमानजनक रीति से उसे प्रतिउत्तर दिया, "निश्चय ही, तू भी गलील प्रान्त से तो नहीं है! क्या तू है? पवित्रशास्त्र को ध्यान से पढ़ ले! {यदि तू ऐसा
करे,} तो तू देखेगा कि गलील से कोई भी भविष्यद्वक्ता नहीं आता है।" 53[फिर वे सब चल दिए और अपने-अपने घरों को चले गए।

Chapter 8

1यीशु जैतून के पहाड़ पर गया {और उस रात वहीं पास में रहा}। 2अगली सुबह भोर में, यीशु मंदिर {के आँगन} में लौटा और बहुत से लोग उसके पास आए।
3व्यवस्था के कुछ शिक्षक और फरीसी उसके पास एक स्त्री को लेकर आए। उन्होंने उसे तब पकड़ा था जब वह व्यभिचार कर रही थी। उन्होंने उस समूह के
बीच में उसे खड़ा कर दिया। 4याजक यीशु को परखना चाहते थे ताकि उस पर {मूसा की व्यवस्था को तोड़ने के बारे में सर्वोच्च यहूदी प्रशासनिक परिषद के
सम्मुख} दोष लगाने में सक्षम हों। इसलिए उन्होंने उससे कहा, "हे गुरु, हम ने इस स्त्री को तब पकड़ा जब वह व्यभिचार कर रही थी, जो अपने आप में एक
घृणित कार्य है! 5अब मूसा ने तो व्यवस्था में हमें आदेश दिया है कि हमें इस प्रकार की स्त्रियों को पत्थरवाह करके मार देना चाहिए। फिर भी, तू क्या कहता है
कि हमें क्या करना चाहिए?" 6हालाँकि, यीशु नीचे की ओर झुका और अपनी उंगली से भूमि पर कुछ लिखने लगा। 7जब वे उससे लगातार प्रश्न करते ही रहे, तो
वह उठा और उनसे बोला, "तुम में से वह व्यक्ति जिसने कभी पाप नहीं किया उस पर पहला पत्थर फेंके {और उसकी हत्या करने में बाकियों की अगुवाई करे}!"
8तब यीशु फिर से नीचे झुका और अपनी उंगली से भूमि पर कुछ लिखने लगा। 9{उसके ऐसा करने के बाद,} उन यहूदी अगुवों ने {जो उससे प्रश्न कर रहे थे}
एक के बाद एक करके वहाँ से चले जाना आरम्भ कर दिया। बूढ़े लोग पहले चले गए और उसके बाद जवान लोग। फिर वहाँ लोगों के बीच में से उस स्त्री के
साथ केवल यीशु रह गया। 10यीशु खड़ा हुआ और उससे पूछा, "वे लोग कहाँ हैं {जो तुझ पर दोष लगा रहे थे}? क्या किसी ने भी तुझे {दंडित करने के लिए} दंड
नहीं दिया?" 11उस स्त्री ने प्रतिउत्तर दिया, "हे महोदय, ऐसा कोई नहीं है।" तब यीशु ने कहा, "मैं भी तुझे {दंडित करने के लिए} दंड नहीं देता। चली जा, और
अब से ऐसा पाप फिर मत करना!"] 12यीशु ने फिर से लोगों से बात की। उसने कहा, "मैं वही हूँ जो संसार में रहने वाले लोगों को परमेश्वर की भली और सच्ची
ज्योति प्रदान करता है। जो कोई भी मेरा चेला बन जाता है वह {फिर} कभी {पापमय} अंधकार में नहीं चलेगा। बजाए इसके, उस व्यक्ति को परमेश्वर की भली
और सच्ची ज्योति प्राप्त होगी जो अनन्त जीवन प्रदान करती है। 13तब उन फरीसियों ने उससे कहा, "तेरे विषय में केवल तू ही गवाह है! {चूँकि मूसा की
व्यवस्था को कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता होती है,} इसलिए जो तू कहता है वह सत्य नहीं हो सकता!" 14यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यहाँ तक कि यदि
अपने विषय में केवल मैं ही गवाह हूँ, तो जो मैं कहता हूँ वह अभी भी सत्य है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और {मैं जानता हूँ कि} मैं कहाँ जा
रहा हूँ। फिर भी तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ और {तुम नहीं जानते कि} मैं कहाँ जा रहा हूँ। 15मानवीय मानकों के अनुसार तुम मनुष्यों का न्याय
करते हो। {हालाँकि,} मैं {उस तरीके से} मैं किसी का न्याय करने के लिए नहीं आया हूँ। 16यहाँ तक कि जब मैं लोगों का न्याय करूँगा, तो मैं उनका न्याय सच्चे

मानकों के अनुसार करूँगा, क्योंकि मैं लोगों का न्याय अपने आप से नहीं करता। बजाए इसके, मैं और मेरा पिता जिसने मुझे भेजा है, {एक साथ लोगों का
न्याय करेंगे}। 17मूसा ने भी तुम्हारी व्यवस्था में लिखा है कि जब कम से कम दो गवाह एक ही बात को कहें, तो जो वे कहते हैं वह सत्य है। 18मैं अपना स्वयं का
गवाह हूँ, परन्तु मेरा पिता जिसने मुझे भेजा है वह भी मेरा गवाह है। {इसलिए, जो मैं कहता हूँ वह सत्य है}।” 19क्योंकि {यीशु ने कहा था कि उसका पिता
उसके लिए गवाह है,} इसलिए फरीसियों ने उससे पूछा, “तेरा पिता कहाँ है?” यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “तुम मुझे नहीं जानते, और तुम मेरे पिता को भी नहीं
जानते। यदि तुम मुझे जानते, तो तुम मेरे पिता को भी जानते, {परन्तु तुम नहीं जानते हो}।” 20अपने बारे में यह सब बातें उसने तब कहीं जब वह मंदिर {के
आँगन} में शिक्षा दे रहा था। {उसने इन बातों को} {मंदिर के आँगन में} उस स्थान में कहा जहाँ लोग धन की भेंट लेकर आया करते थे। किसी ने भी उसे नहीं
पकड़ा, क्योंकि अभी यह उसके मर जाने के लिए सही समय नहीं था। 21तब यीशु ने फिर से लोगों से कहा, “मैं जा रहा हूँ, और तुम मेरी खोज करोगे, परन्तु
चूँकि तुम ने पापपूर्ण रीति से मुझे अस्वीकार कर दिया, इसलिए परमेश्वर के द्वारा तुम को क्षमा किए बिना ही तुम मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ उस स्थान में
तुम नहीं आ सकते।” 22तब उन यहूदी अगुवों ने {आपस में} कहा, “सम्भवतः वह स्वयं को मार डालने की योजना बना रहा है, और इसलिए {उसका अर्थ यही
है} जब वह कहता है कि जहाँ वह जा रहा है उस स्थान में हम नहीं आ सकते।” 23यीशु उनसे बोला, “तुम नीचे इस पृथ्वी के हो, परन्तु मैं ऊपर स्वर्ग का हूँ। तुम
इस पापी संसार से सम्बन्ध रखते हो। मैं इस पापी संसार से सम्बन्ध नहीं रखता हूँ। 24इसी कारण से मैंने तुम को बोला था कि परमेश्वर के द्वारा उन सारे पापों के
लिए जिनको तुम ने किया है तुम को क्षमा किए बिना ही तुम मर जाओगे। यह निश्चय ही घटित होगा जब तक कि तुम भरोसा नहीं करते कि मैं ही {परमेश्वर हूँ,
जैसा कि मैं कहता हूँ कि मैं हूँ}।” 25क्योंकि {उसने ऐसा कहा था}, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, “तू है कौन?” यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “यही तो मैं तुम से एकदम
आरम्भ से ही बोल रहा हूँ! 26मैं तुम्हारे बारे में बहुत सारी बातें कह सकता हूँ और तुम्हारा न्याय कर सकता हूँ, {परन्तु इस समय मैं उन कामों को नहीं करूँगा}।
बजाए इसके, मैं संसार में रहने वाले लोगों को केवल वही बताऊँगा जो मैंने उससे सुना जिसने मुझे भेजा है। वह हमेशा सत्य ही बोलता है।” 27(वे समझ नहीं
पाए कि यीशु उनको {स्वर्ग में विराजमान} अपने पिता के बारे में बता रहा था।) 28इसलिए यीशु उनसे बोला, “जब मेरी हत्या करने के लिए तुम मुझे, अर्थात
मनुष्य के पुत्र को, ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो तुम जान लोगे कि मैं ही {परमेश्वर} हूँ, और {तुम जान लोगे} कि मैं अपने स्वयं के अधिकार से कुछ भी नहीं करता हूँ।
बजाए इसके, मैं केवल वही कहता हूँ जो मेरे पिता ने मुझे कहने के लिए सिखाया है। 29मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, हमेशा मेरे साथ है। उसने मुझे कभी
अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा केवल उन कामों को करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।” 30जब यीशु इन बातों को कह रहा था, तो बहुत सारे लोगों ने
विश्वास किया कि वही मसीह है। 31तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने विश्वास किया था कह दिया कि वही मसीह है, “यदि तुम उसका पालन करो जो मैं
सिखाता हूँ, तो तुम मेरे सच्चे चेले हो। 32{इसके अलावा,} तुम परमेश्वर के सत्य को जानोगे, और उस सत्य पर {विश्वास करना} तुम को उससे स्वतंत्र करेगा
{जिसने तुम को दास बना रखा है}।” 33उन्होंने उसे उत्तर दिया, “हम तो अब्राहम के वंशज हैं। हम तो कभी भी किसी के दास नहीं हुए हैं! तो तू क्यों कहता है
कि हमें स्वतंत्र होने की आवश्यकता है? 34यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “मैं तुम से सच कह रहा हूँ: हर कोई जो पाप करता है {वह अपनी पापी इच्छाओं के द्वारा
नियंत्रित होता है} जैसे कोई दास {अपने स्वामी के द्वारा नियंत्रित किया जाता है}। 35दास {अपने स्वामी के परिवार के सदस्यों} के जैसे सदा बना नहीं रहता,
{परन्तु शायद स्वतंत्र कर दिया जाए या बेच दिया जाए}। {हालाँकि,} एक पुत्र ही सदा तक उस परिवार का सदस्य होता है। 36इसलिए यदि पुत्र तुम को {पाप के
दास होने से} स्वतंत्र करता है, तो तुम पूर्णरूप से {पाप करने से} दूर होने में सक्षम हो पाओगे। 37मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के शारीरिक वंशज हो। हालाँकि,
तुम मेरी हत्या करने का प्रयास इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम उस बात पर भरोसा करने से इन्कार करते हो जो मैं कहता हूँ। 38मैं तुम से उन बातों के बारे में
कह रहा हूँ जो मुझे मेरे पिता ने दिखाई हैं। इसलिए, {मैं कहता हूँ कि} तुम वही करो जो तुम्हारे पिता ने तुम से करने के लिए कहा है।” 39उन्होंने उसे उत्तर दिया,
“हमारा पिता अब्राहम है।” यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अब्राहम के वंशज होते, तो तुम उन्हीं कामों को कर रहे होते जिनको उसने किया था। 40मैं तुम को वह
सच्ची बातें बता रहा हूँ जो परमेश्वर ने मुझे बताई हैं, परन्तु तुम मेरी हत्या करने का प्रयास कर रहे हो। अब्राहम ने इस प्रकार का कुछ भी नहीं किया था। 41तुम
बिलकुल वैसे ही कामों को कर रहे हो जैसे तुम्हारे असली पिता ने किए थे।” वे उससे बोले, “हम अवैध संतान नहीं हैं, {जैसे कि तू है}! हमारा केवल एक ही
पिता है, और वह परमेश्वर है।” 42यीशु उनसे बोला, “यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, जो कि है नहीं, तो तुम मुझ से प्रेम करते क्योंकि मैं उसी की ओर से आया
हूँ और मैं इस संसार के पास आया हूँ। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि मैं अपने स्वयं के अधिकार से नहीं आया। बजाए इसके, मैं इसलिए आया क्योंकि परमेश्वर
ने मुझे भेजा है। 43क्या तुम जानते हो कि जो मैं कहता हूँ तुम उसे क्यों नहीं समझते? ऐसा इसलिए है क्योंकि जो मैंने तुम से कहा तुम उसे स्वीकार नहीं करते
{और उसका पालन नहीं करते}! 44तुम तुम्हारे पिता, शैतान से सम्बन्धित हो और तुम वही करने की इच्छा करते हो जो वह इच्छा करता है। वह उस समय से
लोगों की हत्या कर रहा है जब लोगों ने पहली बार {पाप किया था}। जो सत्य है उसे उसने इसलिए अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह कभी भी उन सत्य बातों
को नहीं बोलता। जब कभी भी वह झूठ बोलता है, तो वह वही कर रहा होता है जो उसके लिए स्वभाव के अनुसार है, क्योंकि वह तो झूठा है। यहाँ तक कि वह
तो झूठ बोलने का मूल है। 45अभी भी तुम मुझ पर इसलिए विश्वास नहीं करते, क्योंकि मैंने तुम को वह बता दिया जो सत्य है! 46{चूँकि मैंने कभी पाप नहीं
किया,} इसलिए तुम में से कोई भी साबित नहीं कर सकता कि मैंने किया है। चूँकि जो सत्य है मैं तुम को वही बताता हूँ, इसलिए ऐसा कोई भी भला कारण
तुम्हारे पास नहीं है कि उस पर विश्वास न करो जो मैं कहता हूँ! 47जो परमेश्वर से सम्बन्धित हैं वे उसे स्वीकार करते हैं {और उसका पालन करते हैं} जो उसने
कहा है। चूँकि {यह सत्य है,} इसलिए तुम स्वीकार नहीं करते {और पालन नहीं करते} जो परमेश्वर ने कहा है, क्योंकि तुम परमेश्वर से सम्बन्धित नहीं हो।”
48यीशु का विरोध करने वाले यहूदियों ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हम निश्चित रूप से सही हैं जब हम कहते हैं कि तू सामरियों में से एक है, {जिनसे हम घृणा करते
हैं,} और यह कि कोई दुष्टात्मा तुझे नियंत्रित कर रही है!” 49यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “मुझे कोई दुष्टात्मा नियंत्रित नहीं कर रही है! इसके विपरीत, मैं {स्वर्ग में
विराजमान} अपने पिता का सम्मान करता हूँ, और तुम मेरा अपमान करते हो! 50मैं लोगों के पीछे पड़ने की इच्छा नहीं करता कि वे मेरी बड़ाई करें। कोई और है
जो ऐसा करने की इच्छा करता है और न्याय करता है {चाहे तुम या फिर मैं सच बोल रहे हों}। 51मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई मेरी शिक्षा का पालन करता
है वह निश्चय ही कभी न मरेगा!” 52यीशु का विरोध करने वाले यहूदियों ने उससे कहा, “अब हमें निश्चय है कि कोई दुष्टात्मा तुझे नियंत्रित कर रहा है! अब्राहम
और भविष्यद्वक्ता तो बहुत पहले मर गए! तौभी तू कहता है कि जो कोई तेरी शिक्षा का पालन करता है वह निश्चय ही कभी न मरेगा! 53तू निश्चय ही हमारे पिता
अब्राहम से बढ़कर नहीं है! वह मर गया और सारे भविष्यद्वक्ता भी मर गए। {इसलिए} तू क्या सोचता है कि तू कौन है?” 54यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “यदि मैं
लोगों के पीछे पड़ूँ कि वे मेरी बड़ाई करें, तो वह बड़ाई बेकार होगी। वह मेरा पिता ही है जो मेरी बड़ाई करता है। वही है जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा
परमेश्वर है। 55यद्यपि तुम परमेश्वर को जानते नहीं, मैं उसे जानता हूँ। यदि मैंने कहा कि मैं उसे नहीं जानता, तो तुम में से हर एक के समान मैं भी झूठा ठहरता।

तुम्हारे विपरीत, मैं उसे जानता हूँ, और जो वह कहता है मैं हमेशा उस बात का पालन करता हूँ। **56**तुम्हारा पिता अब्राहम {यह सोच कर} अति आनन्दित था कि वह मुझे संसार में आता हुआ देखने पाएगा। {परमेश्वर ने उसे अनुमति दी} कि मुझे आता हुआ देखे, और वह प्रसन्न था।" **57**क्योंकि {यीशु ने ऐसा कहा}, इसलिए उसका विरोध करने वाले यहूदियों ने उससे कहा, "{अब्राहम तो बहुत समय पहले ही मर गया, और} तू तो पचास वर्ष की आयु का भी नहीं है! तो तूने अब्राहम को कैसे देख लिया?" **58**यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: अब्राहम के जन्म लेने से पहले मैं {परमेश्वर} था!" **59**क्योंकि {वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था,} इसलिए यीशु का विरोध करने वाले यहूदियों ने {उसकी हत्या करने के लिए} उस पर फेंकने के लिए पत्थर उठा लिए। परन्तु यीशु {भीड़ में} छिपकर मंदिर {के आँगन} में से निकल गया।

Chapter 9

1जब यीशु मार्ग से होकर जा रहा था, तो उसने एक मनुष्य को देखा जो तब से अंधा था जिस दिन वह जन्मा था। **2**उसके चेलों ने उससे पूछा, "हे गुरु, किसके पाप ने इस मनुष्य को तब अंधा कर दिया जब इसने जन्म लिया था? क्या इस मनुष्य के या इसके माता-पिता के पाप ने?" **3**यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यह न तो इस मनुष्य का पाप था और न ही इसके माता-पिता का पाप था {जिसने इसे तब अंधा कर दिया जब इसने जन्म लिया था}। बजाए इसके, {जब इसने जन्म लिया तो यह अंधा था} ताकि मैं लोगों पर उन चमत्कारिक कामों को प्रकट करूँ जिनको परमेश्वर उसमें करेगा। **4**जबकि मैं अभी तक तुम्हारे साथ हूँ, तो हमें उन चमत्कारिक कामों को करना अवश्य है जिनको मेरा पिता जिसने मुझे भेजा चाहता है कि हम करें। जिस प्रकार से दिन के बाद रात होती है, जिसमें लोग काम नहीं कर सकते, वैसे ही एक समय आएगा जब वह करने के लिए हमें बहुत देर हो चुकी होगी जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें। **5**जबकि मैं अभी भी इस संसार में रह रहा हूँ, तो मैं वही हूँ जो इस संसार में रहने वाले लोगों को परमेश्वर की भली और सच्ची ज्योति प्रदान करता है। **6**जब उसने यह कहा, तो उसने मिट्टी पर थूका और अपनी लार को {मिट्टी के साथ} मिलाकर गारा बनाया। फिर उसने उस गारे को उस अंधे मनुष्य की आँखों पर लगा दिया। **7**फिर यीशु ने उस अंधे मनुष्य से कहा, "जा और {गारे} को शिलोह के कुंड में धो ले!" ({अरामी भाषा में} 'शिलोह' का अर्थ 'भेजा हुआ' होता है)। अतः वह मनुष्य चला गया और {कुंड में गारे को} धो लिया। जब वह देख पाने में सक्षम हो गया तो फिर वह {घर} चला गया। **8**उस मनुष्य के पड़ोसियों और अन्यों ने जिन्होंने उसे अतीत में देखा था और जानते थे कि वह एक भिखारी था और कहा, "निश्चय ही यह वही मनुष्य है जो यहाँ बैठता था और भीख माँगता था!" **9**कुछ लोगों ने कहा, "हाँ, यह वही मनुष्य है।" अन्य लोगों ने कहा, "नहीं, परन्तु यह तो बस उस मनुष्य की तरह दिखता है।" हालाँकि, उस मनुष्य ने स्वयं ही कहा, "हाँ, मैं वही मनुष्य हूँ जो अंधा था!" **10**इसलिए उन्होंने उससे पूछा, "तो ऐसा कैसे हुआ कि तू अब देख सकता है?" **11**उसने प्रतिउत्तर दिया, "वह मनुष्य जिसे लोग यीशु कहते हैं उसने {मिट्टी और लार से} गारा बनाया और उसे मेरी आँखों पर लगा दिया। फिर उसने मुझ से शिलोह के कुंड में जाकर {गारे को} धो लेने के लिए कहा। अतः मैं वहाँ गया और {गारे को} धो लिया। तब मैं {पहली बार} देख पाने में सक्षम हो गया।" **12**उन्होंने उससे पूछा, "वह मनुष्य कहाँ है?" उसने प्रतिउत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है।" **13**{वहाँ के कुछ लोग} उस मनुष्य को जो पहले अंधा था कुछ फरीसियों के पास ले गए। **14**(अब जिस दिन यीशु ने {अपनी लार से} गारा बनाया था और उस मनुष्य को देख पाने में सक्षम किया था वह यहूदियों का विश्रामदिन था।) **15**तब उन फरीसियों ने उस मनुष्य से दूसरी बार प्रश्न किए। {इस बार} भी, उन्होंने उससे इस बारे में पूछा कि वह देख पाने में सक्षम कैसे हुआ। उसने उनसे कहा, "उस मनुष्य ने मेरी आँखों पर गारा लगाया, और मैंने {उसे} धो लिया, और अब मैं {पहली बार} देख पाने में {सक्षम हूँ}।" **16**तब फरीसियों में से कुछ ने कहा, "{हम जानते हैं कि} यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं आया है, क्योंकि वह यहूदियों के विश्रामदिन के नियमों का पालन नहीं करता है।" कुछ अन्य फरीसियों ने कहा, "निश्चय ही कोई पापी मनुष्य इस प्रकार के चमत्कारिक चिन्हों को नहीं कर सकता जो यह मनुष्य करता है!" इसलिए वे फरीसी {इस बारे में कि यीशु कौन था} एक-दूसरे से असहमत हो गए। **17**इसलिए फरीसियों ने उस अंधे मनुष्य से एक बार फिर से पूछा, "उस मनुष्य के बारे में तू क्या कहता है, चूँकि तू कहता है कि वही है जिसने तुझे देख पाने में सक्षम किया?" उस मनुष्य ने कहा, "वह अवश्य ही एक भविष्यद्वक्ता है।" **18**क्योंकि {उस मनुष्य ने यह विश्वास किया कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता था}, इसलिए यहूदी अगुवों ने विश्वास नहीं किया कि यह मनुष्य अंधा था और फिर देख पाने में सक्षम हो गया जब तक कि उन्होंने उस मनुष्य के माता-पिता को बुला नहीं लिया {ताकि उनसे प्रश्न करें}। **19**उन्होंने उस मनुष्य के माता-पिता से पूछा, "क्या यह मनुष्य तुम्हारा पुत्र है? क्या तुम यह कहते हो कि जब यह जन्मा तो यह अंधा था? {यदि ऐसा है तो,} फिर इस समय यह देख पाने में सक्षम कैसे है?" **20**उसके माता-पिता ने प्रतिउत्तर दिया, "हमें निश्चय है कि यह मनुष्य हमारा ही पुत्र है। हमें यह भी निश्चय है कि जब यह जन्मा तो यह अंधा था। **21**फिर भी, हम नहीं जानते कि इस समय वह देख पाने में सक्षम कैसे है। हम यह भी नहीं जानते कि उसे देख पाने में किसने सक्षम किया। उसी से पूछो। वह अपने पक्ष में बोलने के लिए पर्याप्त आयु का है।" **22**(यहूदी अगुवों ने पहले से ही आपस में इस बात की सहमति कर ली थी कि जो भी यह घोषणा करेगा कि यीशु ही मसीह है वे उसे यहूदी सभास्थल में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर देंगे। इस कारण से, उस मनुष्य के माता-पिता उनसे डरे हुए थे और उनसे इन बातों को बोला था।) **23**इस कारण से भी उन्होंने यहूदी अगुवों से कहा था कि "उसी से पूछो। वह पर्याप्त आयु का है।" **24**इसलिए यहूदी अगुवों ने दूसरी बार उस मनुष्य को बुलाया जो पहले अंधा था। उन्होंने उससे कहा, "{केवल सत्य कहने के द्वारा} परमेश्वर की महिमा कर! हमें स्वयं भी निश्चय है कि वह मनुष्य {जिसके लिए तू कहता है कि उसने तुझे चंगा किया} पापी है।" **25**उस मनुष्य ने जिसे यीशु ने चंगा किया था प्रतिउत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं। मैं तो एक बात जानता हूँ जो यह है कि मैं पहले अंधा था, परन्तु अब मैं देख सकता हूँ।" **26**फिर उन्होंने उससे पूछा, "उसने {तुझे चंगा करने के लिए} तेरे साथ क्या किया? उसने तुझे देख पाने में कैसे सक्षम किया?" **27**उसने प्रतिउत्तर दिया, "मैं तुम को पहले ही उन प्रश्नों के उत्तर बता चुका हूँ, परन्तु जो मैंने कहा तुम ने वह सुना नहीं। तुम क्यों चाहते हो कि मैं तुम को फिर से बताऊँ? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम भी उसके चेले बनने की इच्छा करते हो?" **28**तब उन्होंने अपमानजनक तरीके से उससे कहा: "तू ही उस मनुष्य का चेला है! जहाँ तक हमारी बात है, हम मूसा के चेले हैं! **29**हमें निश्चय है कि परमेश्वर ने {बहुत समय पहले} मूसा से बातें कीं। जहाँ तक इस मनुष्य की बात है, तो हम जानते भी नहीं कि वह कहाँ से आया है!" **30**उस मनुष्य ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं अचम्भित हूँ! तुम जानते भी नहीं कि वह कहाँ से आया है, परन्तु वही तो है जिसने मुझे देख पाने में सक्षम किया! **31**हमें निश्चय है कि परमेश्वर पापी लोगों {की प्रार्थनाओं} का उत्तर नहीं देता है। बजाए इसके, वह उन लोगों {की प्रार्थनाओं} का उत्तर देता है जो उसकी आराधना करते हैं और जो वही करते हैं जो वह चाहता है कि वे करें। **32**पहले कभी भी किसी ने भी नहीं सुना कि किसी व्यक्ति ने ऐसे मनुष्य को देख पाने में सक्षम किया जो जब जन्मा

था तब से ही अंधा था! 33यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं आया होता, तो वह {इस प्रकार का चमत्कार} नहीं कर सकता था!" 34यहूदी अगुवों ने उसे
प्रतिउत्तर दिया, "तू पूर्णरूप से {तेरे माता-पिता के} पापों के परिणामस्वरूप अंधा जन्मा था! तुझे हमें शिक्षा देने का साहस कैसे हुआ!" तब उन्होंने उसे यहूदी
सभास्थल से प्रतिबंधित कर दिया। 35यीशु ने सुना कि यहूदी अगुवों ने उस मनुष्य को यहूदी सभास्थल से प्रतिबंधित कर दिया जिसे उसने चंगा किया था। जब
उसने {उसकी खोज की और} उसे ढूँढ़ लिया, तो उसने उससे पूछा, "क्या तू मनुष्य के पुत्र पर भरोसा करता है?" 36उस मनुष्य ने उत्तर दिया, "हे महोदय, वह
कौन है? {कृपया मुझे बता दे,} ताकि मैं उस पर भरोसा करूँ।" 37यीशु उससे बोला, "तूने उसे पहले ही देखा हुआ है। मैं वही हूँ जो तुझ से बातें कर रहा है।"
38उस मनुष्य ने कहा, "हे प्रभु, मैं भरोसा करता हूँ {कि तू ही मनुष्य का पुत्र है}।" तब वह अपने घुटनों पर झुक गया और यीशु की आराधना की। 39यीशु ने
कहा, "मैं इस संसार में इसलिए आया हूँ ताकि इसके लोगों का न्याय करूँ। {इसका परिणाम होगा} कि वे लोग जो जानते हैं कि वे परमेश्वर के सत्य को नहीं
समझते वे उसे ऐसे समझें, जैसे कोई अंधा व्यक्ति देख पाने में सक्षम हो रहा है। {दूसरा परिणाम ऐसा होगा कि} जो लोग सोचते हैं कि वे परमेश्वर के सत्य को
समझते हैं वे उसे नहीं समझेंगे, जैसे वह व्यक्ति जो देखता था और अंधा हो गया।" 40कुछ फरीसियों ने जो यीशु के निकट थे जब उसे यह कहते सुना, तो
उन्होंने उससे पूछा, "क्या तू ऐसा सोचता है कि हम भी अंधे लोगों के समान परमेश्वर के सत्य को नहीं समझ सकते?" 41यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम जानते हो
कि तुम आत्मिक रूप से अंधे हो, तो तुम पाप के लिए दोषी नहीं ठहरोगे। हालाँकि, क्योंकि तुम किसी देखने वाले के समान परमेश्वर के सत्य को समझने का
दावा करते हो, तो तुम अभी भी अपने पाप के लिए दोषी हो।

Chapter 10

1"मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई भी भेड़शाला में बाड़े के द्वार के अलावा किसी दूसरे मार्ग से प्रवेश करता है वह चोर या डाकू है {जो भेड़ों को चुराने के लिए
आया है}। 2जो मनुष्य भेड़शाला में द्वार से होकर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है {जो देखभाल करने वाला है}। 3{जब चरवाहा कहीं गया हो} तो वह
व्यक्ति जो द्वार की रखवाली करने वाला है {जब वह आता है} चरवाहे के लिए द्वार को खोल देता है। भेड़ें चरवाहे की आवाज को सुनती हैं। वह भेड़ों में से
{प्रत्येक को} जो उसकी हैं नाम लेकर बुलाता है और उनको बाड़े में से बाहर ले जाता है। 4जब चरवाहा उन सब भेड़ों को बाड़े से बाहर ले जा चुका होता है जो
उसकी हैं, तो वह उनके आगे-आगे चलता है। उसकी भेड़ें {पीछे-पीछे} उसका अनुसरण करती हैं क्योंकि वे उसकी वाणी को पहचानती हैं। 5उसकी भेड़ें कभी
भी किसी ऐसे जन के पीछे नहीं जातीं जिसको वे जानती नहीं। बजाए इसके, वे उसके पास से भाग जाएँगी क्योंकि वे उन लोगों की वाणी को नहीं पहचानतीं
जिनको वे जानती नहीं।" 6यीशु ने {चरवाहों द्वारा किए जाने वाले काम से लेकर} यह दृष्टांत फरीसियों को बताया। फिर भी वे समझे नहीं कि उस दृष्टांत का क्या
अर्थ था। 7इसलिए यीशु उनसे फिर से बोला, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: मैं वह द्वार हूँ जिससे होकर भेड़ें भेड़शाला में प्रवेश करती हैं। 8सारे ही अगुवे जो मुझ से
पहले {परमेश्वर के अधिकार के बिना} आए वे चोर और डाकू थे। हालाँकि, सच्ची भेड़ों ने उनकी आज्ञा नहीं मानी। 9मैं स्वयं ही {स्वर्ग का} द्वार हूँ। परमेश्वर उस
व्यक्ति को {अनन्त दंड से} बचाएगा जो मुझ पर भरोसा करने के द्वारा उसके पास आता है। {जो कोई मुझ पर भरोसा करता है} वह ऐसी भेड़ के समान होगा
जो सुरक्षित होकर यहाँ-वहाँ फिरती है और चारा पाती है। 10तुम्हारे अगुवे चोरों के समान हैं जो केवल भेड़ों को चुराने, हत्या करने, और नाश करने के लिए आते
हैं। मैं भेड़ों को अनन्त जीवन देने के लिए आया हूँ, जो {आशीषों से} भरपूर होगा। 11मैं स्वयं एक अच्छे चरवाहे के समान हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को
{सुरक्षित करने और बचाने के लिए} मर जाने के लिए तैयार रहता है, {और वैसे ही मैं भी अपने चेलों के लिए मर जाने हेतु तैयार हूँ। 12{कल्पना करो कि} कोई
जन एक ऐसे व्यक्ति को भाड़े पर रखता है जो चरवाहा नहीं है उन भेड़ों की रखवाली के लिए जो उस व्यक्ति की नहीं हैं। तो जब वह {भेड़ों को मार डालने के
लिए} भेड़िए को आता देखता है, तो वह भेड़ों को छोड़ कर भाग जाता है, जिससे कि भेड़िया उनमें से कुछ को पकड़ लेता है और बाकियों को तितर-बितर कर
देता है। 13{वह भाड़े पर रखा हुआ व्यक्ति इसलिए भाग जाता है} क्योंकि वह {भेड़ों की सुरक्षा केवल} धन प्राप्त करने के लिए कर रहा था। इसलिए भेड़ों के
साथ जो घटित होता है वह उस बारे में चिन्ता नहीं करता। 14मैं स्वयं एक अच्छे चरवाहे के समान हूँ। {जिस प्रकार से अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को जानता है
और उसकी भेड़ें उसे जानती हैं, वैसे ही} जो मेरी हैं मैं उनको जानता हूँ, और वे मुझे जानती हैं। 15उसी रीति से {हम एक-दूसरे को जानते हैं} जैसे मेरा पिता
और मैं एक-दूसरे को जानते हैं। मैं उन भेड़ों के लाभ के लिए {जो मेरी हैं} मर मिटने को भी तैयार हूँ। 16ऐसी भेडें भी हैं जो मेरी हैं परन्तु किसी दूसरी भेड़शाला
की हैं {वे ऐसे लोग हैं जो यहूदी नहीं हैं।} मुझे उनको भी मेरे पास लेकर आना है। जो मैं कहता हूँ वे उसका उत्तर देंगी, और जो मेरी हैं वे सब एक झुंड के जैसे
एकजुट हो जाएँगी, और मैं उनका एक ही चरवाहा होऊँगा। 17मेरा पिता मुझ से इसलिए प्रेम करता है क्योंकि मैं मरने के लिए तैयार हूँ जिससे कि मैं स्वयं को
फिर से जीवित कर सकूँ। 18कोई भी मुझ पर मरने के लिए दबाव नहीं डाल रहा है। बजाए इसके, मैंने स्वयं ही मरने का चुनाव किया है मेरे पास स्वेच्छा से मरने
का अधिकार है और मेरे पास स्वयं को फिर से जीवित करने का अधिकार भी है। यही वह काम है जिसे करने की आज्ञा मुझे मेरे पिता ने दी है।" 19जो यीशु ने
कहा था उसके विषय में यदूही अगुवे {विरोध करने वाले समूहों में} फिर से विभाजित हो गए। 20बहुत से यहूदी अगुवों ने कहा, "उसे कोई दुष्टात्मा नियंत्रित कर
रहा है, और वह पागल है! उसकी मत सुनो!" 21कुछ अन्य लोगों ने कहा, "जो वह कह रहा है वह ऐसा कुछ नहीं है जो कोई दुष्टात्मा से नियंत्रित मनुष्य कभी
कहेगा। निश्चय ही कोई दुष्टात्मा सम्भवतः किसी अंधे व्यक्ति को देख पाने में सक्षम नहीं कर सकता।!" 22फिर यरूशलेम में मंदिर की स्थापना का उत्सव मनाने
के पर्व का समय आ गया। 23यीशु मंदिर के आँगन में उस स्थान में टहल रहा था जो सुलैमान का ओसारा कहलाता था। 24यहूदी अगुवे यीशु के चारों ओर जमा
हो गए और कहा, "तू हमें कब तक इस बारे में आश्चर्य में रखेगा कि तू कौन है? यदि तू ही मसीह है, तो स्पष्ट रूप से हम से कह दे {जिससे कि हम जान लें}।"
25यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैंने तुम को बता दिया था, परन्तु अभी भी तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। जिन चमत्कारी कामों को मैं मेरे पिता के अधिकार से
करता हूँ वे ही तुम को बता देंगे जो तुम को मेरे बारे में जानने की आवश्यकता है। 26हालाँकि, तुम लोग अभी भी मुझ पर इसलिए विश्वास नहीं करते, क्योंकि
तुम मुझ से सम्बन्धित नहीं हो। तुम ऐसी भेड़ों के समान हो जो मेरे झुंड का भाग नहीं हैं। 27{जिस प्रकार से भेड़ें अपने चरवाहे की वाणी का पालन करती हैं,}
वैसे ही जो मैं कहता हूँ मेरे लोग उसका उत्तर देते हैं। मैं उनको जानता हूँ, और वे मेरे ही चेले हैं। 28मैं उनको सदा तक {स्वर्ग में परमेश्वर के साथ} जीने के लिए
समक्ष करता हूँ। कोई भी उनको नाश नहीं कर सकता, और {कोई भी कभी भी} उनको मेरे पास से नहीं ले जा सकता। 29मेरे पिता ने उन्हें मुझे दिया है। वह
सबसे बढ़कर है, और कोई भी उनको उसके पास से ले लेने में समक्ष नहीं है। 30मेरा पिता और मैं एक परमेश्वर हैं।" 31उन यहूदी अगुवों ने फिर से पत्थर उठा

लिए ताकि उस पर फेंके और उसे मार डालें। 32यीशु ने उनसे कहा, “तुम ने मुझे उन बहुत से चमत्कारी भले कामों को करते हुए देखा जिनको मेरे पिता ने मुझे
करने के लिए कहा था। उनमें से किसके लिए तुम पत्थरों से मेरी हत्या करने जा रहे हो?” 33उन यहूदी अगुवों ने प्रतिउत्तर दिया, “हम पत्थरों से तेरी हत्या करना
इसलिए नहीं चाहते क्योंकि तूने भले कामों को किया था। बजाए इसके, {हम तेरी हत्या इसलिए करना चाहते हैं} क्योंकि तूने परमेश्वर होने का दावा करने के
द्वारा परमेश्वर की निन्दा की, यद्यपि तू तो एक मनुष्य ही है।!” 34यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “पुराने नियम में एक भविष्यद्वक्ता ने लिखा कि परमेश्वर ने कहा, ‘मैंने
कहा था कि तुम ईश्वर हो।’ 35चूँकि परमेश्वर ने उनको बुलाया जिनको उसने ‘ईश्वर’ कहा और कोई भी यह साबित नहीं कर सका कि पवित्रशास्त्र झूठा है, 36तो
तुम क्यों कहते हो कि मैं परमेश्वर की निन्दा कर रहा हूँ क्योंकि मैंने कहा कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ? वह मैं ही हूँ जिसे मेरे पिता ने विशेष रूप से {उसका होने के
लिए} चुना और इस संसार में भेजा। 37यदि मैं उन चमत्कारी कामों को नहीं कर रहा हूँ जिनको मेरा पिता चाहता है कि मैं करूँ, तो फिर तुम को मुझ पर भरोसा
नहीं करना चाहिए। 38हालाँकि, क्योंकि मैं इन {चमत्कारी} कामों को कर रहा हूँ, तो भले ही तुम मुझ पर भरोसा नहीं करते, तो {जो} इन कामों ने {मेरे बारे में
प्रकट किया है} उस पर तुम को भरोसा करना चाहिए। {तुम को यह इसलिए करना चाहिए} ताकि सीखो और समझो कि मेरा पिता और मैं पूर्णरूप से एकजुट
हैं।” 39क्योंकि {उसने इन बातों को कहा}, इसलिए यहूदी अगुवों ने फिर से यीशु को बंदी बनाने का प्रयास किया, परन्तु वह उनके पास से निकल गया। 40तब
यीशु यरदन नदी {की पूर्वी दिशा} के पार वापस चला गया। वह उस स्थान में गया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला {अपनी सेवकाई के} आरम्भ में लोगों को
बपतिस्मा दिया करता था। यीशु वहाँ कुछ समय के लिए रहा। 41बहुत से लोग वहाँ यीशु के पास आए। उन्होंने कहा, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने तो कभी भी
कोई चमत्कारी चिन्ह प्रकट नहीं किया, परन्तु यूहन्ना ने जो कुछ भी इस मनुष्य के बारे में कहा वह सत्य है!” 42उस स्थान में बहुत से लोगों ने उस पर भरोसा
किया।

Chapter 11

1लाज़र नाम का एक मनुष्य बहुत बीमार हो गया। वह बैतनिय्याह के गाँव में रहता था जहाँ उसकी बहनें मरियम और मार्था भी रहती थीं। 2यह वही मरियम है
जो बाद में प्रभु पर इत्र उंडेलेगी और अपने बालों से उसके पाँवों से {तेल} पोंछेगी। वह उसका भाई लाज़र था जो बीमार था। 3इसलिए उन दो बहनों ने किसी को
यीशु के पास लाज़र के बारे में बताने के लिए भेजा। उन्होंने कहा, “हे प्रभु, जिससे तू प्रेम करता है वह बहुत बीमार है। {कृपया आ जा!}” 4जब यीशु ने लाज़र
की बीमारी के बारे में सुना, तो उसने कहा, “यह बीमारी लाज़र की मृत्यु में समाप्त नहीं होगी। बजाए इसके, इस बीमारी का उद्देश्य यह प्रकट करना है कि
परमेश्वर कितना महान है। लाज़र इसलिए बीमार हुआ ताकि यह बीमारी प्रकट करे कि मैं, परमेश्वर का पुत्र, कितना महान हूँ।” 5(यीशु मार्था से, उसकी बहन
मरियम से, और लाज़र से प्रेम करता था।) 6इसलिए जब यीशु ने सुना कि लाज़र बीमार था, तो वह जानबूझ कर दो दिन तक और वहीं रह गया जहाँ वह था।
7फिर {उन दो दिनों के} बाद यीशु ने अपने चेलों से कहा, “आओ वापस यहूदिया प्रान्त में चलें।” 8उसके चेलों ने कहा, “हे गुरु, इस समय पर {यहूदिया में} यहूदी
अगुवे तुझे पत्थरों से मार डालना चाहते हैं! निश्चय ही तुझे फिर से वहाँ नहीं लौटना चाहिए!” 9यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “तुम जानते हो कि दिन के समय में 12
घंटे होते हैं। जो व्यक्ति दिन के समय में चलता है वह इसलिए सुरक्षित चलेगा क्योंकि ज्योति उसे यह देख पाने में योग्य बनाती है कि वह कहाँ जा रहा है।
10हालाँकि, जब कोई व्यक्ति रात के समय में चलता है, तो वह इसलिए ठोकर खाएगा क्योंकि वहाँ ज्योति नहीं है जो उसे यह देख पाने में योग्य बनाए कि वह
कहाँ जा रहा है।” 11इन बातों को कहने के बाद, उसने उनसे कहा, “हमारा मित्र लाज़र सो रहा है, परन्तु मैं वहाँ उसे जगाने के लिए जाऊँगा।” 12इसलिए उसके
चेलों ने उससे कहा, “हे प्रभु, यदि वह सो रहा है, तो फिर वह स्वस्थ हो जाएगा।” 13(यीशु वास्तव में लाज़र की मृत्यु के बारे में कह रहा था, परन्तु उसके चेलों ने
सोचा कि वह वास्तविक नींद के बारे में बात कर रहा है।) 14इसलिए यीशु ने उनको स्पष्ट रूप से बता दिया, “लाज़र मर गया है। 15और मैं आनन्दित हूँ कि {जब
वह मरा} मैं वहाँ पर नहीं था। {मैंने इसे इसलिए घटित होने दिया} ताकि तुम मुझ पर भरोसा कर सको। {यह} तुम्हारे लाभ के लिए ही है। यहाँ पर रुके रहने के
बजाए, आओ वहाँ चलें जहाँ वह है।” 16अतः थोमा ने, जिसे वे ‘जुड़वाँ’ कहते थे, बाकी के चेलों से कहा, “आओ हम भी गुरु के साथ चलें ताकि हम भी उसके
साथ मरें।” 17अतः जब यीशु {बैतनिय्याह गाँव में} पहुँचा, तो उसे मालूम हुआ कि लोगों ने उस समय से चार दिन पहले ही लाज़र के मृत शरीर को एक कब्र में
रख दिया था। 18(बैतनिय्याह गाँव से यरूशलेम केवल लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर था।) 19बहुत से यहूदी लोग मार्था और मरियम के पास उनके भाई
लाज़र की मृत्यु के विषय में उन दोनों को सांत्वना देने के लिए {बैतनिय्याह में} आए थे। 20जब मार्था ने {किसी को कहते} सुना कि यीशु आ रहा है, तो वह
उससे मिलने के लिए बाहर निकल गई। मरियम {उसके साथ नहीं गई} परन्तु घर में ही रह गई। 21जब मार्था यीशु से मिली, तो उसने उससे कहा, “हे प्रभु, यदि
तू यहाँ पर थोड़ा और जल्दी आ गया होता, तो मेरा भाई न मरता! 22हालाँकि, अभी भी {जबकि वह मर गया है} मुझे निश्चय है कि जो कुछ भी तू उससे करने के
लिए कहे परमेश्वर उसे तेरे लिए करेगा।” 23यीशु उससे बोला, “तेरा भाई फिर से जीवित हो जाएगा।” 24मार्था उससे बोली, “मुझे निश्चय है कि मेरा भाई उस
समय फिर से जीवित हो जाएगा जब परमेश्वर सब मरे हुए लोगों को अंतिम दिन में जीवित करेगा {जब वह हर एक जन का न्याय करेगा}।” 25यीशु उससे बोला,
“मैं ही हूँ जो मरे हुए लोगों को फिर से जीवित करता है। मैं ही हूँ जो लोगों को अनन्त जीवन देता है। जो कोई भी मुझ पर भरोसा करता है वह सदा तक जीवित
रहेगा, यहाँ तक कि यदि उसका शरीर मर भी जाए। 26वे सब जो अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं और मुझ पर भरोसा करते हैं वे निश्चय ही सदा तक जीवित रहेंगे।
क्या तू विश्वास करती है कि यह बात सत्य है?” 27मार्था उससे बोली, “हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ! मैं सच में विश्वास करती हूँ कि तू ही परमेश्वर का पुत्र,
मसीह हैI {तू} वही है जिसके इस संसार में आने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी।” 28ऐसा कहने के बाद, वह {घर} लौट गई और चुपके से अपनी बहन मरियम
को बुलाया। वह उससे बोली, “गुरु आ पहुँचा है, और वह तुझे बुला रहा है।” 29जब मरियम ने यह सुना जो उसकी बहन ने कहा था, तो वह तुरन्त उठी और
यीशु से मिलने के लिए बाहर चली गई। 30(उस समय तक यीशु ने बैतनिय्याह गाँव में प्रवेश नहीं किया था। बजाए इसके, वह उसी स्थान में था जहाँ मार्था उससे
मिली थी।) 31उन यहूदी लोगों ने जो मरियम को उसके घर में सांत्वना दे रहे थे उसे तुरन्त उठ कर बाहर जाते देखा, तो वे भी उसे पीछे-पीछे गए। उन्होंने सोचा
कि वह कब्र पर जा रही है {जहाँ उन्होंने लाज़र को गाड़ा था} कि शोक मनाए। 32जब मरियम उस स्थान में पहुँची जहाँ यीशु ने मार्था से बात की थी और उसे
देखा, तो वह उसके पाँवों के आगे भूमि पर लेट गई। वह उससे बोली, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ पर थोड़ा और जल्दी आ गया होता, तो मेरा भाई न मरता!” 33जब
यीशु ने उसे शोक मनाते देखा, और वे यहूदी लोग भी शोक मना रहे थे जो उसके साथ थे, तो वह अत्यन्त उत्तेजित हो गया। 34उसने पूछा, “तुम ने उसके शरीर

को कहाँ गाड़ा है?” वे उससे बोले, “हे प्रभु, आकर देख ले {कि वह कहाँ है}।” 35यीशु रोने लगा। 36इसलिए वे यहूदी लोग {जो मरियम के साथ थे} आपस में
कहने लगे, “देखो वह लाज़र से कितना प्रेम करता था!” 37हालाँकि, उनके बीच में से दूसरों ने कहा, “इसने अंधे मनुष्य को देख पाने में समक्ष किया। परन्तु
शायद इसके पास इस मनुष्य को मरने से रोकने के लिए पर्याप्त शक्ति न हो!” 38जब वह कब्र पर पहुँचा तब यीशु फिर से भावनात्मक रूप से उत्तेजित हो गया।
(यह एक गुफा थी, और एक बड़ी चट्टान से उसका प्रवेशद्वार ढँपा हुआ था।) 39यीशु ने कहा, “गुफा के प्रवेशद्वार से चट्टान को हटा दो।” {हालाँकि,} लाज़र की
बहन मार्था उससे बोली, “हे प्रभु, इस समय तो उसका शरीर बुरी गंध देता होगा क्योंकि वह चार दिन पहले मरा था।” 40यीशु उससे बोला, “मैंने निश्चय ही तुझे
बोला था कि यदि तू मुझ पर भरोसा करे, तो तू देखने पाएगी कि परमेश्वर कितना महान है!” 41इसलिए कुछ लोगों ने गुफा के प्रवेशद्वार से चट्टान को हटा दिया।
यीशु ने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा और कहा, “हे पिता, मेरी सुन लेने के लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ। 42मैं जानता हूँ कि तू सदा मेरी सुनता है। फिर भी, मैंने
यहाँ खड़े लोगों की खातिर ऐसा कहा। मैंने यह इसलिए कहा ताकि ये आश्वस्त हो जाएँ कि तू ही ने मुझे भेजा है।” 43उसके इस प्रार्थना को कहने के बाद, वह
ऊँचे स्वर में चिल्लाया, “हे लाज़र, कब्र से बाहर आ जा!” 44वह मनुष्य जो मर गया था कब्र से बाहर आ गया! {जिन लोगों ने उसे गाड़े जाने के लिए तैयार किया
था} उन्होंने उसके पाँवों और हाथों को कपड़े की पट्टियों से लपेट दिया था और उसके मुँह के चारों ओर भी एक कपड़ा लपेट दिया था। {इसलिए} यीशु वहाँ खड़े
लोगों से बोला, “कपड़े की उन लीरों को हटा दो जिससे वह बंधा हुआ है, और उसे जाने दो।” 45इसके परिणामस्वरूप, यहूदी लोगों में से उन बहुतों ने उस पर
भरोसा किया जो मरियम को सांत्वना देने आए थे और जो उस बात के गवाह थे जो यीशु ने किया था। 46फिर भी, वहाँ के कुछ लोग फरीसियों के पास चले गए
और जो यीशु ने किया था उनको उसकी खबर दी। 47इसलिए शासकीय याजकों और फरीसियों ने सर्वोच्च यहूदी शासकीय परिषद के सदस्यों को एक साथ
इकट्ठा किया। वे एक-दूसरे से कह रहे थे, “हम इस मनुष्य के बारे में क्या करने जा रहे हैं? वह बहुत से चमत्कारी चिन्हों को प्रकट कर रहा है। 48यदि हम ने उसे
इन चमत्कारी कामों को करते रहने की अनुमति दी, तो सब लोग उस पर भरोसा कर लेंगे {और उसे उनका राजा बना देंगे}। फिर रोमी सेना आएगी और हमारे
मंदिर तथा हमारे लोग दोनों को नष्ट कर देगी!” 49कैफा इस परिषद का एक सदस्य था। वह उस वर्ष का महायाजक भी था। वह उनसे बोला, “तुम लोग कुछ भी
नहीं जानते! 50तुम यह नहीं सोचते कि रोमियों के द्वारा सारे यहूदी लोगों को मार डालने की तुलना में लोगों की ओर से एक व्यक्ति का मरना तुम्हारे लिए
अत्यधिक बेहतर होगा।” 51(कैफा ने यह इसलिए नहीं कहा क्योंकि यह उसने स्वयं से सोचा था। बजाए इसके, चूँकि वह उस वर्ष का महायाजक था, इसलिए
वह भविष्यद्वाणी कर रहा था कि यहूदी लोगों की ओर से यीशु मरेगा। 52{वह यह भविष्यद्वाणी भी कर रहा था कि,} यीशु न केवल यहूदी लोगों के लिए मरेगा,
परन्तु यह भी कि परमेश्वर की सारी संतानों को एक प्रजा के रूप में इकट्ठा करने के लिए, जिनको परमेश्वर ने सम्पूर्ण संसार में फैलाया हुआ है।) 53इसलिए जब
कैफा ने भविष्यद्वाणी की तो उस दिन के बाद आने वाले दिनों में, यहूदी परिषद ने यीशु की हत्या करने की योजनाएँ बनाईं। 54इस कारण से, यीशु ने अपने
यहूदी विरोधियों के बीच सार्वजनिक रूप से फिर यात्रा नहीं की। बजाए इसके, वह यरूशलेम को छोड़ कर एप्रैम नामक एक नगर में चला गया, जो निर्जन क्षेत्र
के पास है। वह वहाँ अपने शिष्यों के साथ {थोड़े समय के लिए} रहा। 55उस समय यहूदियों का फसह का पर्व आने वाला था। उस क्षेत्र से बहुत से लोग ऊपर
यरूशलेम को गए। वे फसह के पर्व के आरम्भ होने से पहले {पर्व में भाग लेने के लिए यहूदी नियमों के अनुसार} स्वयं को शुद्ध करने के लिए आए थे। 56जो
लोग {फसह पर्व के लिए यरूशलेम आए थे} वे यीशु को खोज रहे थे। जब वे मंदिर {के आँगन} में खड़े थे, तो उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, “तुम क्या सोचते हो?
निश्चय ही वह फसह के पर्व में नहीं आएगा!” 57{कुछ समय पहले ही} यहूदी शासकीय याजकों और फरीसियों ने एक आदेश दिया था कि जिस किसी को भी
यह पता चले कि यीशु कहाँ है, उसे उसके स्थान की खबर देनी होगी ताकि वे उसे बंदी बना सकें।

Chapter 12

1यहूदियों के फसह का पर्व आरम्भ होने से छः दिन पहले ही यीशु बैतनिय्याह गाँव में पहुँच गया। {बैतनिय्याह वही गाँव था} जहाँ पर लाज़र निवास करता था।
वह वही मनुष्य था जिसे यीशु ने उसके मर जाने के बाद फिर से जीवित कर दिया था। 2वहाँ बैतनिय्याह में, यीशु के कुछ मित्रों ने यीशु के सम्मान में रात्रिभोज
दिया। मार्था ने मेहमानों को भोजन परोसा, और लाज़र उन लोगों में से एक था जो एक साथ बैठे हुए थे और यीशु के साथ खा रहे थे। 3फिर मरियम एक शीशी
लेकर आई जिसमें लगभग आधा लीटर बहुत मूल्यवान इत्र भरा था, जो जटामांसी के पौधों से निकाला हुआ शुद्ध तेल था, और उसने उसे यीशु के पाँवों पर
उंडेल दिया और फिर अपने बालों से उसके पाँवों को पोंछा। उस इत्र की मनमोहक सुगंध ने सम्पूर्ण घर को भर दिया। 4हालाँकि, यहूदा इस्करियोती {ने आपत्ति
की}। (वह यीशु के चेलों में से एक था जो शीघ्र ही यीशु को बंदी बनाने में यहूदी अगुवों की सहायता करेगा।) उसने कहा, 5“हमें इस इत्र को उतने धन में बेच देना
चाहिए था जिसे कोई मनुष्य 300 दिन काम करके कमा सकता है। फिर हम उस धन को निर्धन लोगों को दे सकते थे!” 6(यहूदा ने यह इसलिए नहीं कहा
क्योंकि उसे निर्धन लोगों के बारे में चिन्ता थी। बजाए इसके, {उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि वह एक चोर था। वह उस थैली की रखवाली करता था जिसमें
उनका धन होता था, परन्तु वह उस धन को चुरा लेता था जो लोगों ने उसे थैली में रखने के लिए दिया था।) 7इसलिए यीशु ने कहा, “उसे अकेला छोड़ दो! उसने
इस इत्र को इसलिए सहेज कर रखा था ताकि वह मुझे उस समय के लिए तैयार कर सके जब मैं {मरूँ और} गाड़ा जाऊँ। 8{उसने सही काम किया है} क्योंकि
निर्धन लोग तो तुम्हारे बीच में हमेशा होंगे {जिनकी तुम सहायता कर सकते हो}, परन्तु मैं तुम्हारे साथ अधिक समय तक नहीं रहूँगा।” 9तब यहूदियों की एक
बड़ी भीड़ ने सुना कि यीशु {बैतनिय्याह में} था, इसलिए वे वहाँ गए। वे न केवल इसलिए {आए} क्योंकि यीशु वहाँ था, परन्तु इसलिए भी क्योंकि वे लाज़र को
देखना चाहते थे। वह वही मनुष्य था जिसे यीशु ने उसके मर जाने के बाद फिर से जीवित कर दिया था। 10इसके विपरीत, शासकीय याजकों ने यीशु के साथ
लाज़र की भी हत्या करने की योजनाएँ बनाई थीं। 11{शासकीय याजक लाज़र की हत्या इसलिए करना चाहते थे} क्योंकि जो वे सिखा रहे थे उस पर बहुत से
यहूदी विश्वास नहीं कर रहे थे और बजाए इसके वे यीशु पर भरोसा कर रहे थे, और इसका कारण वही था। 12अगले दिन लोगों की बड़ी भीड़ को जो {यरूशलेम
में} फसह का पर्व {मनाने} आई थी मालूम हुआ कि यीशु भी वहाँ आने के लिए अपने मार्ग में था। 13इसलिए उन्होंने खजूर के पेड़ों के शाखाओं को काट लिया
और {जब वह नगर में आया तो} उसका स्वागत करने के लिए सड़क पर निकल गए। वे चिल्ला रहे थे, “स्तुति हो, हमें बचाने के लिए! परमेश्वर उसे आशीष दे जो
उसके अधिकार के साथ आता है। वही इस्राएल का राजा है!” 14जब यीशु यरूशलेम के निकट आया, तो उसे एक जवान गदहा मिला और वह {सवार होकर
नगर में जाने के लिए} उस पर बैठ गया। {ऐसा करने के द्वारा,} उसने वह बात पूरी की जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में लिखी थी: 15“तुम जो

यरूशलेम में रहे हो, मत डरो। देखो! तुम्हारा राजा आ रहा है। वह एक गदहे के बच्चे पर सवार है।!” [16]जब यह बातें घटित हुईं, तो उसके चेले नहीं समझे कि ये
उन बातों का पूरा होना था जो उन भविष्यद्वक्ताओं ने लिखी थीं। हालाँकि, जब परमेश्वर ने यीशु की महिमा{उसे जीवन में वापस लेकर आने के द्वारा}, बाद में
उनको वे बातें स्मरण आईं जो भविष्यद्वक्ताओं ने उसके बारे में लिखी थीं और यह कि लोगों ने उसके साथ इन बातों को किया था। [17]लोगों की भीड़ जो यीशु
के पीछे चल रही थी वह दूसरों से कहती रही कि उन्होंने यीशु को लाज़र को कब्र से बाहर आने के लिए बुलाते हुए देखा था और उसके मरने के बाद यीशु को
उसे फिर से जीवित करते देखा था। [18]लोगों की कोई दूसरी भीड़ यीशु से मिलने के लिए नगर के द्वार के बाहर गई। {उन्होंने ऐसा इसलिए किया} क्योंकि उन्होंने
सुना था कि उसने {लाज़र को फिर से जीवित करके} चमत्कारी चिन्ह को प्रकट किया था। [19]अतः फरीसियों ने एक-दूसरे से कहा, “ध्यान दो! हम उसे रोक पाने
में असफल हो रहे हैं। देखो! हर एक जन उसका चेला बन रहा है!” [20]कुछ लोग जो यहूदी नहीं थे उन लोगों के बीच में थे जो {यरूशलेम को} गए थे ताकि फसह
के पर्व में परमेश्वर की आराधना करें। [21]वे फिलिप्पुस के पास आए, जो उस बैतसैदा नगर का रहने वाला था, जो गलील प्रान्त में है। उन्होंने उससे पूछा, “हे
महोदय, क्या तू हमें यीशु से मिला देगा?” [22]तब फिलिप्पुस ने यह अन्द्रियास को बताया, और वे दोनों गये और {उन यूनानियों के बारे में} यीशु को बताया।
[23]यीशु ने फिलिप्पुस और अन्द्रियास को उत्तर दिया, “अब यह समय आ गया है कि परमेश्वर सब पर प्रकट करे कि मैं, मनुष्य का पुत्र, कितना महान हूँ। [24]मैं
तुम से सच कह रहा हूँ: {मेरा जीवन एक बीज के समान है।} जब तक गेहूँ का बीज भूमि में बोया नहीं जाता और मर नहीं जाता, वह केवल एक बीज ही रहेगा।
परन्तु यदि वह भूमि में मर जाता है, तब वह उन्नति करेगा और बहुत सारे गेहूँ उत्पन्न करेगा। [25]जो कोई भी {मेरा चेला होने से} बढ़कर जीवित रहना चाहता है
वह मरेगा, परन्तु जो कोई भी इस पापी संसार में जीवित रहने से बढ़कर {मेरा चेला होना} चाहता है वह अपने जीवन की सदा के लिए रक्षा करेगा। [26]जो कोई
भी मेरी सेवा करना चाहता है उसे मेरा चेला बनना अवश्य है। मेरा सेवक मेरे साथ {स्वर्ग में} रहेगा। जो कोई मेरी सेवा करता है मेरा पिता उसका सम्मान करेगा।
[27]इस क्षण मैं अत्यन्त व्यथित महसूस कर रहा हूँ। मुझे निश्चय ही यह नहीं कहना चाहिए, ‘हे पिता, इस समय को अनुभव करने से मुझे बचा ले {जब मैं पीड़ित
होऊँगा और मर जाऊँगा!}’ नहीं, {मैं ऐसा इसलिए नहीं करूँगा,} क्योंकि यही तो वह कारण है जिससे मैं इस समय तक जीवित रहा {जब मैं पीड़ित होऊँगा और
मर जाऊँगा}। [28]हे पिता, प्रकट कर कि तू कितना महान है!” तब परमेश्वर स्वर्ग से बोला, “मैंने पहले ही प्रकट कर दिया है कि मैं कितना महान हूँ; मैं यह फिर से
करूँगा!” [29]लोगों की भीड़ ने भी जो वहाँ खड़ी थी परमेश्वर की वाणी को सुना। उनमें से कुछ ने कहा कि यह तो सिर्फ बादल गरजने की आवाज है। कुछ अन्य
लोगों ने कहा कि एक स्वर्गदूत ने यीशु से बात की है। [30]यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, “जो वाणी तुम ने सुनी वह परमेश्वर की वाणी थी। वह मेरे लाभ के लिए
नहीं, परन्तु तुम्हारे लाभ के लिए {बोला}! [31]अब इस संसार में रहने वाले लोगों का न्याय करने का परमेश्वर का समय आ गया है। अब वह समय आ गया है जब
वह {शैतान को, जो} इस संसार पर राज्य करता है, बाहर निकाल देगा। [32]जहाँ तक मेरी बात है, जब लोग मुझे {क्रूस पर} ऊँचे पर चढ़ाएँगे, तो मैं सब लोगों को
मेरे पास आने के लिए प्रेरित करूँगा।” [33](उसने यह इसलिए कहा ताकि लोग उस तरीके को जान लें जिससे वह शीघ्र ही मरेगा।) [34]तब लोगों की भीड़ ने उसे
प्रतिउत्तर दिया, “हम ने पवित्रशास्त्र से मालूम किया है कि मसीह सदा तक जीवित रहेगा। तो तू क्यों कहता है कि मनुष्य का पुत्र {क्रूस पर मरने के लिए} ऊँचे
पर चढ़ाया जाएगा? यह ‘मनुष्य का पुत्र’ कौन है जिसके बारे में तू बोल रहा है?” [35]यीशु उनसे बोला, “मैं वह ज्योति हूँ {जो परमेश्वर की सच्चाई और अच्छाई को
प्रकट करती है}। मैं केवल थोड़े और समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा। मेरे उदाहरण के अनुसार जीवन व्यतीत करो जबकि मैं अभी यहाँ पर हूँ ताकि अंधकार
{अर्थात पाप और बुराई} को तुम पर नियंत्रण करने से रोकूँ। जो पापी जीवन व्यतीत करते हैं वे उन लोगों के समान हैं जो अंधकार में यहाँ-वहाँ भटकते रहते हैं,
और जानते नहीं कि वे कहाँ जा रहे हैं! [36]जबकि मैं अभी भी तुम्हारे साथ हूँ, तो मुझ पर, अर्थात ज्योति पर भरोसा करो {जो परमेश्वर की सच्चाई और अच्छाई
को प्रकट करती है}। परमेश्वर के लोग बनने के लिए {ऐसा करो}, {अर्थात वे लोग जो उसकी सच्चाई और अच्छाई को जानते हैं}।” इन बातों को कहने के बाद,
यीशु उनको छोड़ कर चला गया और स्वयं को लोगों से छिपा लिया। [37]भले ही यीशु ने लोगों के सामने बहुत से चमत्कारी चिन्हों को प्रकट किया था, उनमें से
बहुतों ने उस पर भरोसा नहीं किया। [38]यशायाह भविष्यवक्ता ने जो {बहुत पहले} लिखा था उसे सच करने के लिए उनका अविश्वास घटित हुआ: “हे प्रभु, जो
हम ने कहा उस पर किसी ने भी विश्वास नहीं किया! {ऐसा लगता है कि जैसे} किसी ने भी उस शक्ति को नहीं देखा जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया था!” [39]इस
कारण से वे यीशु पर भरोसा नहीं कर पाए: यशायाह ने यह भी लिखा था, [40]“जो वे देखते हैं प्रभु ने उनको उसे समझने में अयोग्य कर दिया, और उसने उनको
हठीला बना दिया है। {उसने ऐसा इसलिए किया है} ताकि जो वे देखते हैं वे उसे न समझें, और वास्तव में बूझ न सकें, और पाप से परमेश्वर की ओर न मुड़
जाएँ, और मैं उनको क्षमा न कर दूँ।” [41]यशायाह ने {बहुत पहले} यह इसलिए लिखा, क्योंकि उसने देखा था कि यीशु कितना महान है और उसके विषय में
बोला। [42]यद्यपि यह सच था, इसलिए सर्वोच्च यहूदी शासकीय परिषद के कई सदस्यों ने यीशु पर भरोसा किया। फिर भी, उन्होंने दूसरों को यह नहीं बताया {कि
उन्होंने यीशु पर भरोसा किया}, क्योंकि उनको डर था कि फरीसी उनको यहूदी सभास्थल में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर देंगे। [43]{वे इससे इसलिए डरते थे}
क्योंकि वे चाहते थे कि दूसरे लोग उनका सम्मान करें, बजाए इसके कि परमेश्वर उनका सम्मान करे। [44]यीशु {लोगों की भीड़ से} ऊँचे स्वर में बोला, “जो मुझ पर
भरोसा करते हैं वे न केवल मुझ पर भरोसा कर रहे हैं परन्तु {मेरे पिता पर भी भरोसा कर रहे हैं}, जिसने मुझे भेजा है। [45]जो मुझे देखते हैं वे मेरे पिता को भी,
जिसने मुझे भेजा, देख रहे हैं। [46]मैं इस संसार में ज्योति के रूप में आया था जो संसार में रहने वाले सभी लोगों पर {परमेश्वर की सच्चाई और अच्छाई को प्रकट
करती है} ताकि जो कोई मुझ पर भरोसा करता है वह उस अंधकार में नहीं रहेगा {जो कि पाप और बुराई है}। [47]मैं किसी ऐसे व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराता जो
मेरी शिक्षाओं को सुनता है, परन्तु उनका पालन करने से इन्कार करता है, क्योंकि मैं इस संसार में इसलिए नहीं आया कि इस संसार में रहने वाले लोगों को दोषी
ठहराऊँ। बजाए इसके, मैं इस संसार में इसलिए आया हूँ ताकि उनको {उनके पापों का दंड मिलने से} बचा सकूँ। [48]जो कोई मुझे अस्वीकार करता और मेरी
शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करता (और उनका पालन नहीं करता) उसे उन्हीं शिक्षाओं के अनुसार दोषी ठहराया जाएगा जो मैंने बताई हैं। अंतिम दिन में {जब
परमेश्वर सभी का न्याय करेगा,} तो परमेश्वर मेरी शिक्षाओं के आधार पर उस व्यक्ति का न्याय करेगा। [49]{ऐसा इसलिए घटित होगा} क्योंकि मैं अपने अधिकार
से नहीं बोलता हूँ। बजाए इसके, मुझे क्या कहना चाहिए और मुझे उसे कैसे कहना है, स्वयं मेरे पिता ने, जिसने मुझे भेजा, मुझे इसके विषय में आज्ञा दी है।
[50]मुझे निश्चय है कि जो मेरे पिता ने मुझे कहने की आज्ञा दी है वही है जिस पर लोगों को {स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहने के लिए विश्वास करना है। इसलिए मैं
बिलकुल वही कहता हूँ जो मेरे पिता ने मुझ से कहने के लिए बोला है।”

Chapter 13

1फसह का पर्व आरम्भ होने से एक दिन पहले, यीशु जानता था कि यह उसके लिए इस संसार को छोड़ने और अपने पिता के पास लौट जाने का समय है। उसने हमेशा अपने चेलों से प्रेम किया जो इस संसार में उसके साथ थे, और उसने उनसे सम्पूर्ण प्रेम किया था। 2जिस समय यीशु और उसके चेले अपना शाम का भोजन खा रहे थे, तो शमौन इस्करियोती के पुत्र, यहूदा को शैतान पहले ही यह सोचने के लिए प्रेरित कर चुका था कि उसे यीशु को बंदी बनाने में यहूदी अगुवों की सहायता करनी चाहिए। 3यीशु जानता था कि उसके पिता ने उसे हर चीज पर सम्पूर्ण शक्ति और अधिकार प्रदान कर दिया है, और वह यह भी जानता था कि वह परमेश्वर के पास से आया था और शीघ्र ही परमेश्वर के पास लौट जाएगा। 4{क्योंकि वह उन बातों को जानता था इसलिए,} यीशु उस मेज से उठा जहाँ शाम को वे भोजन खा रहे थे, उसने अपने बाहरी कपड़ों को उतार दिया, और अपनी कमर के चारों ओर एक अंगोछा लपेट लिया। 5उसने एक बड़े कटोरे में थोड़ा पानी भरा और अपने चेलों के पाँवों को धोना आरम्भ कर दिया और उनको उस अंगोछे से पोंछ कर सुखाने लगा जिसे उसने अपनी कमर के चारों ओर लपेटा हुआ था। 6जब वह शमौन पतरस के पास {उसके पाँवों को धोने के लिए} आया, तो पतरस उससे बोला “हे प्रभु, तुझे मेरे पाँव नहीं धोने चाहिए!” 7यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “इस समय तो तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, परन्तु बाद में तू समझेगा।” 8पतरस ने कहा, “तू वास्तव में मेरे पाँवों को कभी नहीं धोने पाएगा!” यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो तू मेरे साथ परमेश्वर की आशीषों का वारिस नहीं होगा।” 9शमौन पतरस उससे बोला, “हे प्रभु, केवल मेरे पाँवों को ही मत धो! मेरे हाथों को और मेरे सिर को भी धो दे!” 10यीशु उससे बोला, “जिसे किसी ने धो दिया है उसे केवल उसके पाँवों को ही धोने की आवश्यकता है। उसका बाकी शरीर शुद्ध है। तुम चेले शुद्ध हो, परन्तु {तुम सब शुद्ध} नहीं हो।” 11({यीशु ने यह बात आत्मिक रूप से शुद्ध होने के बारे में कही,} क्योंकि वह जानता था कि कौन उसे बंदी बनाने के लिए यहूदी अगुवों की सहायता करने जा रहा था। इसी कारण से उसने कहा, “तुम में से सब शुद्ध नहीं।”) 12जब वह उनके पाँवों को धोना समाप्त कर चुका, तो उसने अपने बाहरी कपड़ों को पहन लिया। तब वह फिर से मेज पर बैठ गया और उनसे बोला, “तुम को अवश्य ही समझना चाहिए कि मैंने अभी तुम्हारे लिए क्या किया है! 13तुम मुझे ‘गुरु’ और ‘प्रभु’ बिलकुल ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। 14चूँकि मैं, तुम्हारे गुरु और प्रभु, ने तुम्हारे पाँवों को धोने {के द्वारा विनम्रतापूर्वक तुम्हारी सेवा की}, इसलिए तुम को भी एक-दूसरे के पाँवों को धोने {के द्वारा विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे की सेवा} करनी चाहिए। 15{तुम्हारे पाँवों को धोने के द्वारा} मैंने तुम को अनुसरण करने के लिए एक उदाहरण प्रदान किया है जिससे कि तुम को {विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे की सेवा} करनी चाहिए जिस प्रकार से मैंने {विनम्रतापूर्वक} तुम्हारी सेवा की। 16मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जिस प्रकार से एक सेवक अपने स्वामी की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, और न संदेशवाहक उस व्यक्ति की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है जिसने उसे भेजा है, {वैसे ही तुम मेरी तुलना में अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो}। 17चूँकि अब तुम जानते हो {कि तुम को विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे की सेवा करनी चाहिए}, इसलिए यदि तुम ऐसा करते हो तो परमेश्वर तुम को आशीष देगा। 18मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम में से सब के सब आशीषित होंगे। मैं उन लोगों को अच्छी तरह से जानता हूँ जिनको मैंने {मेरे चेले होने के लिए} चुना है। हालाँकि, जो घटित होने वाला है उसे घटित होना चाहिए ताकि भविष्यद्वक्ता ने पवित्रशास्त्र में जो बात लिखी वह सच हो सके: ‘जिसने मेरे साथ एक मित्र के समान भोजन किया उसी ने मेरा विरोध किया।’ 19अब से मैं तुम को उसके घटित होने से पहले ही बता रहा हूँ कि क्या घटित होगा जिससे कि, जब वह घटित हो, तो तुम भरोसा करो कि मैं ही {परमेश्वर} हूँ। 20मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई भी उसे स्वीकार करता है जिसे मैं बाहर भेजता हूँ वह मुझे भी स्वीकार करता है; और जो कोई भी मुझे स्वीकार करता है वह मेरे पिता को भी स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।” 21जब यीशु ने ऐसा कहा, तो उसने व्याकुल महसूस किया। उसने गम्भीरतापूर्वक घोषणा की, “मैं तुम से सच कह रहा हूँ: तुम में से एक मुझे {मेरे विरोधियों को} सौंपने जा रहा है।” 22उसके चेले एक-दूसरे को देखने लगे और आश्चर्य करने लगे कि उनके बीच में कौन है जिसके बारे में वह बोल रहा था। 23उसके चेलों में से एक, {यूहन्ना} जिससे यीशु प्रेम करता था, मेज पर यीशु के बगल में बैठा हुआ था। 24शमौन पतरस ने उसको यह संकेत करने के लिए एक इशारा किया कि वह यीशु से पूछे कि वह किस चेले के बारे में बोल रहा था। 25अतः यूहन्ना यीशु की तरफ पलट कर झुका और {झट से} उससे पूछा, “हे प्रभु, वह कौन है जो तुझे धोखा देगा?” 26यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “यह वही मनुष्य है जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबोने के बाद दूँगा।” फिर उसने रोटी को कटोरे में डुबोया और उसे शमौन इस्करियोती के पुत्र, यहूदा को दे दिया। 27जैसे ही यहूदा ने यीशु से उस रोटी के टुकड़े को लिया, वैसे ही शैतान ने उस पर नियंत्रण कर लिया। तब यीशु उससे बोला, “जो करने की योजना तूने बनाई है उसे तुरन्त कर।” 28(मेज पर बैठे हुओं में से अन्य कोई भी नहीं जानता था कि यीशु ने यहूदा से ऐसा क्यों कहा था। 29उनमें से कुछ ने सोचा कि यीशु उससे जाकर कुछ सामान खरीदने के लिए जिनकी उनको फसह का पर्व मनाने के लिए आवश्यकता थी या निर्धनों को कुछ धन देने के लिए कह रहा था। {उन्होंने ऐसा इसलिए सोचा} क्योंकि यहूदा के पास वह थैली रहती थी जिसमें उनका धन रखा होता था।) 30अतः यीशु से यहूदा के रोटी ले लेने के बाद, वह तुरन्त बाहर चला गया। (यह रात का समय था।) 31अतः यहूदा के चले जाने के बाद, यीशु ने कहा, “अब परमेश्वर ने लोगों पर प्रकट किया है कि मैं, मनुष्य का पुत्र, कितना महान हूँ। मैंने भी लोगों पर प्रकट किया है कि परमेश्वर कितना महान है। 32परमेश्वर स्वयं {लोगों पर} प्रकट करेगा कि मैं, मनुष्य का पुत्र, कितना महान हूँ, और वह इसे अभी करेगा। 33{तुम जिनको मैंने ऐसे प्रेम किया जैसे कि तुम मेरी ही} संतान हो, मैं केवल थोड़े और समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा। फिर तुम मुझे खोजोगे, परन्तु यह बिलकुल वैसे ही होगा जैसे मैंने यहूदी अगुवों से बोला था और अब मैं तुम से बोल रहा हूँ: जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम उस स्थान में आने में सक्षम नहीं हो पाओगे। 34अब मैं तुम को यह नई आज्ञा देता हूँ कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो: तुम को एक-दूसरे से उस रीति से प्रेम करना चाहिए जैसे मैंने तुम से प्रेम किया था। 35यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम करते हो, तो हर एक जन {जो उस प्रेम को देखे} वह जान जाएगा कि तुम मेरे ही चेले हो।” 36शमौन पतरस ने उससे कहा, “हे प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?” यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ तू मेरे साथ उस स्थान में अभी तो नहीं जा सकता, परन्तु बाद में तू वहाँ जाएगा।” 37पतरस उससे बोला, “हे प्रभु, मैं तेरे साथ अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं तो तेरे लिए मरने को भी तैयार हूँ!” 38यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “तू वास्तव में मेरे लिए मरने को तैयार नहीं है! मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: तू वास्तव में तीन बार कहेगा कि तू मुझे नहीं जानता इससे पहले कि {सुबह होने पर} मुर्गा बाँग दे!”

Chapter 14

1“व्यथित न हो। परमेश्वर पर भरोसा रखो। मुझ पर भी भरोसा रखो। 2जहाँ मेरा पिता निवास करता है वहाँ लोगों के निवास करने के लिए बहुत से स्थान हैं।
यदि यह सत्य नहीं होता, तो मैंने तुम को बता दिया होता, क्योंकि मैं वहाँ तुम्हारे निवास करने के लिए स्थान तैयार करने के लिए जाऊँगा। 3और जब मैं वहाँ
तुम्हारे निवास करने के लिए स्थान तैयार करने के लिए जाता हूँ, तो मैं वापस आकर मेरे साथ रहने के लिए तुम को भी ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी
मेरे साथ रहो। 4जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम जानते हो कि उस स्थान में कैसे जाना है।” 5थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हमें नहीं पता कि तू कहाँ जा रहा है! हम
सम्भवतः नहीं जान सकते कि वहाँ कैसे जाना है!” 6यीशु उससे बोला, “मैं ही हूँ जिससे लोग वहाँ जा सकते हैं। वह मैं ही हूँ जो प्रकट करता है कि परमेश्वर के
बारे में सत्य क्या है, और वह जो लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करता है। मुझ पर भरोसा करना ही एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा लोग मेरे पिता के पास आ
सकते हैं। 7चूँकि तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ, इसलिए तुम मेरे पिता को भी जानते हो। इस समय के बाद से, तुम उसे जानते हो, और ऐसा लगता है कि तुम ने
उसे देख भी लिया है।” 8फिलिप्पुस ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, हमें पिता को दिखा दे और उससे हमें संतुष्टि मिलेगी!” 9यीशु ने उससे कहा, “मैं इतने लम्बे समय से
तुम सब के साथ हूँ। तो हे फिलिप्पुस, निश्चय ही तू मुझे जानता है! जिन्होंने मुझे देखा है वे उन लोगों के समान हैं जिन्होंने मेरे पिता को देखा है। इसलिए तुम्हारे
पास यह कहने का कोई कारण नहीं है कि ‘हमें पिता को दिखा दे’! 10तुम को निश्चय ही यह विश्वास करना चाहिए कि मैं और मेरा पिता पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं!
जो कुछ मैंने तुम से बोला वह सब मैंने अपनी ओर से नहीं बोला। बजाए इसके, मेरा पिता जो मेरे साथ जुड़ा हुआ है वह अपने चमत्कारी कामों को मेरे माध्यम
से कर रहा है। 11जब मैं कहता हूँ कि मैं और मेरा पिता पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं तो मुझ पर भरोसा करो! अन्यथा, जो मैं कहता हूँ यदि तुम उस पर भरोसा नहीं
करने जा रहे हो, तो कम से कम उन सारे चमत्कारी कामों के विषय में ही मुझ पर भरोसा करो {जिनको तुम ने मुझे करते हुए देखा था}। 12मैं तुम से सच कह
रहा हूँ: जो कोई मुझ पर भरोसा करता है वह भी उन चमत्कारी कामों को करेगा जिनको मैं करता हूँ। यहाँ तक कि वह उनसे भी बढ़कर चमत्कारी कामों को
करेगा जिनको मैं करता हूँ, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ। 13मेरे प्रतिनिधि के रूप में तुम जो कुछ भी निवेदन करोगे मैं उसे करूँगा। मैं उसे इसलिए
करूँगा ताकि मैं, उसका पुत्र, यह प्रकट करे कि मेरा पिता कितना महान है। 14मेरे प्रतिनिधि के रूप में मुझ से तुम जो कुछ भी निवेदन करोगे मैं उसे करूँगा।
15यदि तुम मुझ से वास्तव में प्रेम करते हो, तो तुम उन सब बातों का पालन करोगे जिनकी मैंने तुम को आज्ञा दी है। 16तब मैं अपने पिता से निवेदन करूँगा,
और वह मुझे उत्तर देगा कि तुम्हारी सहायता करने के लिए तुम्हें एक और सहायक दे ताकि वह तुम्हारे साथ सदा तक रहे। 17{वह} पवित्र आत्मा है जो उन बातों
की घोषणा करता है जो परमेश्वर के विषय में सत्य हैं। संसार में रहने वाले अविश्वासी लोग उसे ग्रहण नहीं कर सकते, क्योंकि उन्होंने न ही उसे देखा है और न ही
उसे जानते हैं। तुम जो चेले हो उस आत्मा को इसलिए जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ वास करता है, और बाद में वह तुम्हारे भीतर वास करेगा। 18मैं तुम्हारी
देखभाल करने के लिए किसी के बिना तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास लौट आऊँगा। 19थोड़ी देर में संसार के अविश्वासी लोग फिर मुझे नहीं देखेंगे,
परन्तु तुम स्वयं ही मुझे फिर से देखोगे। क्योंकि मैं शीघ्र ही फिर से जीवित हो जाऊँगा, और तुम भी फिर से जीवित हो जाओगे। 20जब तुम फिर से मुझे देखोगे,
तो तुम जान जाओगे कि मैं अपने पिता के साथ जुड़ा हुआ हूँ और यह कि तुम और मैं भी पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं। 21जो आज्ञा मैं देता हूँ जो कोई भी उसे जानता
और उसका पालन करता है वह मुझ से वास्तव में प्रेम करता है। और जो कोई मुझ से प्रेम करता है मेरा पिता उससे प्रेम करता है। और मैं भी उस व्यक्ति से प्रेम
करूँगा, और मैं स्वयं को उस व्यक्ति पर प्रकट करूँगा।” 22यहूदा ने (जो इस्करियोती नहीं था, {परन्तु उसी नाम का दूसरा चेला था}) यीशु से बोला। {उसने
कहा,} “हे प्रभु, ऐसा क्या बदल गया है जिसके कारण तू स्वयं को केवल हम पर प्रकट करता है और संसार में रहने वाले सब लोगों पर नहीं?” 23यीशु ने उसे
प्रतिउत्तर दिया, “जो कोई भी मुझ से प्रेम करता है वह मेरी शिक्षा का पालन करेगा। मेरा पिता भी उस व्यक्ति से प्रेम करेगा। वह और मैं उस व्यक्ति के पास
आएँगे और उस व्यक्ति के भीतर वास करेंगे। 24जो कोई मुझ से प्रेम नहीं करता वह मेरी शिक्षाओं का पालन भी नहीं करता। जो तुम ने मुझे अभी कहते हुए
सुना वह मैं अपनी ओर से नहीं कहता। बजाए इसके, {जो मैंने कहा वह} मेरे पिता की ओर से आया है, जिसने मुझे भेजा है। 25मैंने यह बातें तुम से तब कहीं
जबकि मैं अभी तुम्हारे साथ ही हूँ। 26परन्तु मेरा पिता मेरे स्थान में पवित्र आत्मा को भेजेगा। वही है जो तुम्हारी सहायता करेगा। वह तुम को {परमेश्वर के सारे
सत्य जिनको तुम को जानने की आवश्यकता है} सिखाएगा। वह तुम को उन सारी बातों को स्मरण करने के लिए प्रेरित करेगा जो मैंने तुम से बोली थीं। 27जब
मैं तुम को छोड़कर जा रहा हूँ तो मैं तुम को शान्तिपूर्ण अनुभूति प्रदान करता हूँ। यह मेरी शान्तिपूर्ण अनुभूति है जो मैं तुम को प्रदान कर रहा हूँ। संसार के लोगों
से अलग तरीके से मैं तुम को {एक शान्तिपूर्ण अनुभूति} प्रदान करता हूँ। व्यथित न हो या डरो मत। 28तुम ने मुझे तुम से कहते सुना कि मैं जा रहा हूँ और बाद
में तुम्हारे पास वापस आऊँगा। यदि तुम मुझ से वास्तव में प्रेम करते हो, तो तुम आनन्दित होओगे कि मैं {स्वर्ग में विराजमान} मेरे पिता के पास लौट रहा हूँ,
क्योंकि वह मुझ से श्रेष्ठ है। 29इन बातों के घटित होने से पहले ही मैं ने ये बातें तुम को बता दी हैं जिससे कि जब वे घटित होंगी तब तुम मुझ पर भरोसा करते
रहोगे। 30मैं तुम से अधिक देर तक बात करने में सक्षम नहीं होऊँगा, क्योंकि {शैतान,} जो इस संसार पर राज्य करता है, वह आ रहा है। परन्तु उसका मुझ पर
कोई नियंत्रण नहीं है। 31परन्तु यह इसलिए होगा कि संसार के लोग जान लें कि मैं अपने पिता से प्रेम रखता हूँ, और ठीक वैसा ही करूँगा जैसा मेरे पिता ने मुझे
करने की आज्ञा दी है। उठो, आओ हम इस स्थान को छोड़ दें।”

Chapter 15

1“मैं एक सच्ची दाखलता के समान हूँ {जिसमें फल लगते हैं}। मेरा पिता एक माली के समान है {जो उसकी देखभाल करता है}। 2मेरा पिता हर उस शाखा को
काट डालता है और हटा देता है जो मेरे भाग के जैसे दिखती तो हैं परन्तु फल उत्पन्न नहीं करतीं। जहाँ तक हर उस शाखा की बात है जो फल उत्पन्न करती हैं,
तो वह उसकी छँटाई करने के द्वारा साफ करता है ताकि वह और भी अधिक फल उत्पन्न करे। 3तुम उन शाखाओं के समान हो जिनको उस शिक्षा के कारण जो
मैंने तुम को पहले बताई थी छँटाई किए जाने के द्वारा पहले से ही साफ कर दिया गया है। 4मुझ से जुड़े रहो, और मैं तुम से जुड़ा रहूँगा। जिस प्रकार से शाखायें
तब तक कोई फल उत्पन्न नहीं कर सकतीं जब तक वे दाखलता से जुड़ी न रहें, वैसे ही तुम भी तब तक आत्मिक फल उत्पन्न नहीं कर सकते जब तक कि तुम
मुझ से जुड़े न रहो। 5मैं दाखलता के समान हूँ; तुम शाखाओं के समान हो। यदि तुम मुझ से जुड़े रहते हो और मैं तुम से जुड़ा रहता हूँ, तो तुम बहुत सारा फल

उत्पन्न करोगे। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि तुम बिना मेरी सहायता के कुछ नहीं कर सकते। 6जहाँ तक उसकी बात है जो मुझ से जुड़ा नहीं रहता, वह व्यक्ति एक ऐसी शाखा के समान है जिसे माली काटकर फेंक देता है। जब ऐसी शाखाएँ सूख जाती हैं, तो माली के कर्मचारी उनको उठाकर आग में झोंक देते हैं और उनको जला देते हैं। 7यदि तुम मुझ से जुड़े रहो और जो मैंने तुम को सिखाया उसका पालन करो, तो तुम परमेश्वर से कुछ भी निवेदन कर सकते हो जो तुम चाहते हो, और वह तुम्हारे निवेदन को मंजूर करेगा। 8तुम बहुत से फल उत्पन्न करने और मेरे चेले होने के द्वारा लोगों पर यह प्रकट करते हो कि मेरा पिता कितना महान है। 9जैसे मेरे पिता ने मुझ से प्रेम किया उसी रीति से मैंने तुम से प्रेम किया। अब उस रीति से जीवन व्यतीत करते रहो जो उनके लिए उपयुक्त है जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। 10जो आज्ञा मैंने तुम को दी है यदि तुम उसका पालन करो, तो तुम उस रीति से कार्य कर रहे होगे जो उनके लिए उपयुक्त है जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, जैसे कि मैंने उसका पालन किया जो आज्ञा मेरे पिता ने मुझे दी थी, और मैं उस रीति से कार्य करता हूँ जो उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है जिससे वह प्रेम करता है। 11मैंने यह बातें तुम से इसलिए कहीं ताकि तुम भी उतने ही आनन्दित हो जाओ जितना मैं हूँ और {जिससे कि} तुम अधिकतम स्तर तक आनन्दित रहो। 12जो काम करने की आज्ञा मैं तुम को दे रहा हूँ वह यह है: जैसा मैंने तुम से प्रेम किया उसी रीति से एक-दूसरे से प्रेम करो। 13उस व्यक्ति से बढ़कर प्रेम किसी का नहीं जो अपने मित्रों के लिए मरने को भी तैयार है। 14जिन बातों की मैंने तुम को आज्ञा दी है यदि तुम उनको करते रहो तो तुम वास्तव में मेरे मित्र हो। 15मैं अब से तुम को अपना सेवक नहीं कहूँगा, क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है। अब से मैं तुम को मित्र कहूँगा, क्योंकि मैंने तुम को वह सब समझा दिया है जो मेरे पिता ने मुझ से कहा था। 16तुम ने {मेरे चेले बनने का} चुनाव नहीं किया। बजाए इसके, मैंने {मेरे चेले बनने के लिए} तुम्हारा चुनाव किया और तुम को {इस भूमिका के लिए} नियुक्त किया ताकि तुम बाहर जाओ और आत्मिक फल उत्पन्न करो और {ताकि) जो फल तुम उत्पन्न करो वह सदा तक बना रहे। {मैंने तुम को इसलिए भी चुना है} ताकि मेरा पिता तुम को वह सब कुछ दे जिसका तुम उस से मेरे प्रतिनिधियों के रूप में निवेदन करते हो। 17मैं तुम को इन बातों को करने की आज्ञा इसलिए देता हूँ ताकि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो। 18चूँकि वे लोग जो संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं वे तुम से भी बैर करते हैं, तुम को यह मालूम होना चाहिए कि उन्होंने पहले मुझ से बैर किया था। 19यदि तुम उन लोगों की ओर होते जो संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं, तो वे अविश्वासी तुम से वैसा ही प्रेम करते जैसा वे स्वयं से प्रेम करते हैं। हालाँकि, मैंने उनके बीच में से निकल आने के लिए तुम्हारा चुनाव किया। वे लोग जो संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं वे तुम से इसलिए बैर करते हैं क्योंकि तुम उनका भाग नहीं हो। 20स्मरण करो कि मैंने तुम से बोला था कि अपने स्वामी की तुलना में सेवक अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता है। चूँकि उन्होंने मुझे पीड़ित किया, तो निश्चय ही वे तुम को भी पीड़ित करेंगे। यदि उनमें से किसी ने भी मेरी शिक्षा का पालन किया, तो वे उसका भी पालन करेंगे जो तुम सिखाओगे। 21तौभी इस संसार में रहने वाले अविश्वासी तुम्हारे साथ इन सब द्वेषपूर्ण बातों को इसलिए करेंगे क्योंकि तुम मेरा अनुशरण करते हो {और इसलिए} क्योंकि वे मेरे पिता को नहीं जानते जिसने मुझे यहाँ भेजा है। 22यदि मैं आया नहीं होता और उनको {परमेश्वर का सत्य} सिखाया नहीं होता, तो वे {मुझे और मेरे संदेश को अस्वीकार करने के} दोषी नहीं ठहरते। हालाँकि, {चूँकि मैं आया और उनको सिखाया इसलिए}, अब उनके पास उनके पाप के लिए कोई बहाना नहीं है। 23जो कोई भी मुझ से बैर करता है वह मेरे पिता से भी बैर करता है। 24यदि मैंने उनके बीच में उन चमत्कारी कामों को प्रकट नहीं किया होता जो कभी भी किसी ने भी नहीं किए, तो वे पाप के दोषी नहीं ठहरते। तौभी, जैसा कि यह है, उन्होंने उन कामों को देखा और मुझ से बैर रखा। उन्होंने मेरे पिता से भी बैर रखा। 25हालाँकि, यह इसलिए घटित हुआ ताकि यह बातें पूरी हो जाएँ जो भविष्यद्वक्ता ने उनके पवित्रशास्त्र में लिखी हैं: 'उन्होंने बिना किसी कारण के मुझ से घृणा की।' 26जब मैं मेरे पिता के पास से उसे तुम्हारे पास भेजूँगा जो तुम्हारी सहायता करेगा, तो वह लोगों को बताएगा कि मैं कौन हूँ। वह पवित्र आत्मा है, जो घोषणा करता है कि परमेश्वर के विषय में क्या सत्य है और वह मेरे पिता की ओर से निकलता है। 27तुम को भी सबको मेरे बारे में इसलिए बताना है, क्योंकि तुम उस पहले दिन से ही मेरे साथ रहे हो जब मैंने अपना काम आरम्भ किया था।"

Chapter 16

1मैंने तुम को इन बातों के बारे में बता दिया जो घटित होंगी ताकि {जब वे घटित हों तो} तुम मुझ पर भरोसा करते रहो। 2जो यहूदी मेरा विरोध करते हैं वे यहूदी सभास्थल में प्रवेश करने से तुम को प्रतिबंधित कर देंगे। तौभी {इससे भी बुरा कुछ घटित होगा।} वह समय आ रहा है जब जो तुम्हारी हत्या करेंगे वे सब लोग सोचेंगे कि ऐसा करने के द्वारा वे परमेश्वर को प्रसन्न कर रहे हैं। 3वे ऐसे कामों को इसलिए करेंगे क्योंकि उन्होंने कभी नहीं जाना कि मैं वास्तव में कौन हूँ, और न यह कि मेरा पिता कौन है। 4मैंने तुम को इन बातों के बारे में बता दिया जो घटित होंगी ताकि जब वे घटित हों, तो तुम स्मरण करो कि मैंने तुम को बता दिया था कि वे घटित होंगी। मैंने तुम को इनके बारे में उन आरम्भिक दिनों में नहीं बताया जब मैंने अपने काम को आरम्भ किया था, क्योंकि तब मैं तुम्हारे साथ ही था। 5"अब मैं अपने पिता के पास वापस जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तौभी अब तुम में से कोई भी मुझ से पूछ नहीं रहा है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ! 6तुम बहुत उदास इसलिए हो क्योंकि मैंने तुम को ये बातें बता दीं। 7फिर भी, अब मैं तुम को सच्ची जानकारी बताता हूँ: तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि मैं चला जाऊँ {उसकी तुलना में कि मैं ठहरा रहूँ}। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह तुम्हारे पास नहीं आएगा जो तुम्हारी सहायता करेगा। हालाँकि, यदि मैं चला जाऊँ, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8जब वह आएगा जो सहायता करेगा, तो वह संसार में रहने वाले लोगों को उन पापों के विषय में {जो उन्होंने किए हैं} दोषी ठहराएगा। धर्मी नहीं होने के विषय में {वह उनको दोषी ठहराएगा}, और वह उनको {दोषी ठहराएगा} ताकि परमेश्वर उनका न्याय करे। 9उनके पापों के विषय में {वह लोगों को इसलिए दोषी ठहराएगा}, क्योंकि उन्होंने मुझ पर भरोसा नहीं करने के द्वारा पाप किया। 10धर्मी नहीं होने के विषय में {वह लोगों को इसलिए दोषी ठहराएगा}, क्योंकि मैं अपने पिता के पास वापस जा रहा हूँ, और {उस उदाहरण के रूप में कि धर्मी कैसे बनना है} तुम मुझे फिर देख नहीं पाओगे। 11{वह लोगों को दोषी ठहराएगा} कि परमेश्वर उनका न्याय करे, क्योंकि उसने {शैतान को, जो} इस संसार पर राज्य करता है, दंड दिया है। 12मैं तुम को और बहुत सारी बातें बताना चाहता हूँ। हालाँकि, यदि मैं तुम को अभी बताऊँ, तो तुम उनको ग्रहण नहीं कर पाओगे। 13जब पवित्र आत्मा आएगा, जो उन बातों की घोषणा करता है जो परमेश्वर के बारे में सत्य है, तो वह तुम को वह सारे सत्य समझने में सक्षम करेगा {जिसे जानने की तुम को आवश्यकता है}। {वह ऐसा इसलिए कर सकता है} क्योंकि वह अपने अधिकार से नहीं बोलेगा। बजाए इसके, वह वही बोलेगा जो भी वह परमेश्वर की ओर से सुनेगा, और वह तुम को समय से पहले ही उन बातों के बारे में बता देगा जो घटित होंगीं। 14पवित्र आत्मा ने जो मुझ से सुना तुम को वही बताने के द्वारा वह प्रकट करेगा कि मैं कितना

महान हूँ। 15जो कुछ मेरे पिता के पास है वह मेरा है। इसी कारण से मैंने कहा कि पवित्र आत्मा तुम को वह बताएगा जो उसने मुझ से सुना है। 16थोड़े समय के
बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, और थोड़े समय के बाद, तुम मुझे फिर से देखोगे" 17तब उसके कुछ चेलों ने एक-दूसरे से पूछा, "यीशु के कहने का क्या अर्थ है जब
वह हम से कहता है कि 'थोड़े समय के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, और थोड़े समय के बाद, तुम मुझे फिर से देखोगे'? और {उसके कहने का क्या अर्थ है जब वह
कहता है कि}, 'क्योंकि मैं अपने पिता के पास वापस जा रहा हूँ?" 18इसलिए वे पूछते ही रहे कि "'थोड़े समय के बाद' का क्या अर्थ है? हमें समझ नहीं आ रहा
कि वह क्या कह रहा है।" 19यीशु जान गया कि उसके चेले उससे और भी प्रश्न पूछना चाहते थे। इसलिए उसने उनसे कहा, "तुम एक-दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरे
कहने का क्या अर्थ था जब मैंने कहा कि 'थोड़े समय के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, और थोड़े समय के बाद, तुम मुझे फिर से देखोगे।' 20मैं तुम से सच कह रहा
हूँ: तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु जो लोग संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं वे आनन्द मनाएँगे। तुम अत्यन्त उदास रहोगे, परन्तु तुम उदास होने से
आनन्दित होने में परिवर्तित हो जाओगे। 21एक स्त्री उस समय पीड़ा का अनुभव करती है जब वह एक बालक को जन्म देती है, क्योंकि यह उसके लिए जन्म
देने का समय है। तौभी, वह बालक को जन्म देने के बाद भूल जाती है कि उसने कष्ट सहा, क्योंकि वह इस बात के बारे में आनन्दित है कि वह एक मानव को
संसार में लेकर आई है। 22इसी रीति से, यद्यपि तुम इस समय पर उदास हो, मैं तुम से फिर से मिलूँगा, और तुम आनन्द करोगे, और कोई भी तुम को आनन्द
करने से रोकेगा नहीं। 23जब तुम मुझ से फिर से मिलोगे, तो तुम मुझ से कुछ भी नहीं पूछोगे। मैं तुम से सच कह रहा हूँ: मेरे प्रतिनिधियों के रूप में तुम जो कुछ
भी उससे निवेदन करोगे मेरा पिता तुम को देगा। 24अब तक तुम ने मेरे प्रतिनिधियों के रूप में {मेरे पिता से} कुछ भी निवेदन नहीं किया है। {मेरे पिता से कुछ
भी} निवेदन करो और तुम {जो भी निवेदन करोगे} वह प्राप्त करोगे। परमेश्वर तुम को वह देगा ताकि तुम अधिकतम स्तर तक आनन्दित हो जाओ। 25मैंने तुम
से यह बातें दृष्टांत वाली भाषा का उपयोग करते हुए कहीं, परन्तु शीघ्र ही ऐसा समय आएगा जब मैं तुम से बात करने के लिए फिर इस प्रकार की भाषा का
उपयोग नहीं करूँगा। बजाए इसके, मैं ऐसी भाषा का उपयोग करते हुए तुम को अपने पिता के बारे में बताऊँगा जिसे तुम आसानी से समझ सकोगे। 26जब तुम
मुझ से फिर से मिलोगे, तो तुम मेरे प्रतिनिधियों के रूप में {परमेश्वर से कुछ भी} निवेदन करोगे, और मुझे मेरे पिता से तुम्हारी ओर से माँगना नहीं पड़ेगा
27क्योंकि मेरा पिता स्वयं ही तुम से प्रेम करता है क्योंकि तुम मुझ से प्रेम करते हो और भरोसा करते हो कि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूँ। 28मैं अपने पिता
(परमेश्वर) की ओर से आया हूँ और इस संसार में प्रवेश किया। मैं तुम को फिर से बता रहा हूँ कि मैं इस संसार को छोड़ दूंगा और अपने पिता के पास वापस
चला जाऊँगा।" 29उसके चेलों ने उत्तर दिया, "अंततः! अब तू उस भाषा का उपयोग कर रहा है जिसे हम आसानी से समझ सकते हैं और दृष्टांत वाली भाषा का
नहीं। 30हम अब समझ गए हैं कि तू सब कुछ जानता है। किसी को भी तुझ से प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं है {क्योंकि तू पहले से ही जानता है कि वह
व्यक्ति क्या पूछेगा}। इसी कारण से हम भरोसा करते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से यहाँ आया है" 31यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "अंततः अब तुम मुझ पर
भरोसा करते हो! 32ध्यान दो! शीघ्र ही ऐसा समय आएगा, और वह समय अतिशीघ्र आएगा, जब दूसरे लोग तुम को सब स्थानों में तितर-बितर कर देंगे। तुम में
से प्रत्येक अपने घर चला जाएगा, और तुम मुझे अकेला छोड़ दोगे। हालाँकि, मैं अकेला इसलिए नहीं होऊँगा, क्योंकि मेरा पिता सदा मेरे साथ रहता है। 33मैंने
तुम को यह बातें बता दीं जो घटित होंगी ताकि तुम इसलिए शान्तिपूर्ण महसूस करो {क्योंकि तुम मेरे साथ जुड़े हुए हो}। इस संसार में तुम को पीड़ित किया
जाएगा, परन्तु साहसी बनो! मैंने उन लोगों को पराजित कर दिया है जो संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं!"

Chapter 17

1जब यीशु ने अपने चेलों को इन बातों के बारे में बताया जो घटित होंगी, तो उसने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा और कहा, "हे पिता, अब वह समय आ गया है {कि
मैं दुःख उठाऊँ और मर जाऊँ}। सब लोगों पर प्रकट कर कि मैं, अर्थात तेरा पुत्र, कितना महान हूँ ताकि मैं भी सब लोगों पर प्रकट करूँ कि तू कितना महान है।
2{कृपया ऐसा कर} क्योंकि तू ने मुझे सब लोगों पर अधिकार दिया है ताकि मैं उन सभी को योग्य बना सकूँ जिनको तूने मेरे पास आने के लिए चुना है कि हमेशा
{मेरे साथ स्वर्ग में}रहें। 3सदा तक जीवित रहने का अर्थ यह है: तुझको जानना, जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, और मुझे, अर्थात यीशु मसीह को जानना, जिसे
तू ही ने संसार में भेजा है। 4जब मैं पृथ्वी पर था तो मैंने सब लोगों पर प्रकट कर दिया है कि तू कितना महान है। मैंने उस काम को पूरा करने के द्वारा {ऐसा
किया} जो तूने मुझे करने के लिए सौंपा था। 5हे पिता, इस समय तेरी उपस्थिति में प्रकट कर कि मैं कितना महान हूँ, उसी महानता के साथ जो तेरी उपस्थिति में
मेरी उस समय से पहले थी जब हम ने संसार की रचना की थी। 6तू वास्तव में कौन है इसे मैंने उन मनुष्यों पर प्रकट कर दिया है जिनको तूने मुझे संसार के लोगों
में से दिया था। वे तेरे हैं और तू ही ने उनको मुझे दिया था। उन्होंने तेरी शिक्षा का पालन किया है। 7इस समय वे जानते हैं कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह
तेरी ओर से ही आया है। 8{वे इसे इसलिए जानते हैं} क्योंकि मैंने उनको वे शिक्षाएँ बता दी हैं जो तूने मुझे बताई थीं। उन्होंने स्वयं ही उन शिक्षाओं को ग्रहण भी
कर लिया और उनको निश्चय है कि मैं तेरी ओर से आया हूँ, और वे विश्वास करते हैं कि तू ही ने यहाँ मुझे भेजा है। 9मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं उन
लोगों के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ जो संसार में तेरा विरोध करते हैं। बजाए इसके, मैं उन लोगों के लिए {प्रार्थना कर रहा हूँ} जिनको तूने मुझे दिया है, क्योंकि
वे तेरे ही हैं। 10सब चेले जो मेरे हैं वे तेरे हैं, और {सब चेले} जो तेरे हैं वे मेरे हैं। वे सब लोगों पर प्रकट करते हैं कि मैं कितना महान हूँ। 11अब मैं इस पापी
संसार में और नहीं रहूँगा। हालाँकि, मेरे चेले इसमें रहेंगे। मैं शीघ्र तेरे पास लौट आऊँगा। हे मेरे पिता, जो अलग किए गए हैं, उनको अपनी उसी शक्ति से
सुरक्षित रख जो तूने मुझे दी थी, ताकि वे भी उसी रीति से जुड़े रहें जैसे हम जुड़े हुए हैं। 12उस समय के दौरान जब मैं उनके साथ था, मैंने उनको तेरी उसी
शक्ति से सुरक्षित रखा जो तूने मुझे दी थी। मैंने उनकी रखवाली की, और उनमें से केवल एक ही अनन्तकाल के लिए नष्ट हो जाएगा। {वही है} जिसे तूने
अनन्तकाल के लिए नष्ट होने को ठहराया है ताकि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो जाए। 13इस समय मैं तेरे पास लौटने वाला हूँ। जबकि मैं इस पापी संसार में हूँ तो
मैंने इन बातों को बोला ताकि मैं उनको अपना पूर्ण आनन्द प्रदान करूँ। 14मैंने उनको तेरी शिक्षा बता दी है। {उसी प्रकार से जो लोग संसार में तेरा विरोध करते
हैं} उन्होंने उनसे बैर किया है क्योंकि मेरी तरह, वे भी उनमें से नहीं हैं जो तेरा विरोध करते हैं। 15मैं यह निवेदन नहीं कर रहा हूँ कि तू मेरे चेलों को इस पापी
संसार में से निकाल ले। बजाए इसके, {मैं यह निवेदन कर रहा हूँ} कि तू उनको उस दुष्ट, शैतान द्वारा हानि पहुँचाए जाने से सुरक्षित रख। 16मेरी तरह, वे भी उन
लोगों में से नहीं हैं जो संसार में तेरा विरोध करते हैं। 17जो सत्य है {उसे जानने और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में सक्षम} करने के द्वारा तेरी सेवा करने
के लिए मेरे चेलों को अलग कर। तेरी शिक्षा वही है जो सत्य है। 18मैं उनको संसार के लोगों के बीच में उसी रीति से भेज रहा हूँ जैसे तूने मुझे उनके बीच में

भेजा था। 19मैं स्वयं को उनकी ओर से बलिदान स्वरूप अलग करता हूँ ताकि जो सत्य है {उसे जानने और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने} के द्वारा वे भी
तेरी सेवा करने के लिए अपने आप को अलग करें।" 20अब यहाँ मैं केवल इन चेलों के लिए ही प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ, परन्तु मैं उन लोगों के लिए भी {प्रार्थना
कर रहा हूँ} जो मुझ पर उसके माध्यम से भरोसा करेंगे जो मेरे चेले बोलते हैं। 21{मैं प्रार्थना करता हूँ} कि वे सब उसी रीति से जुड़ जाएँ जैसे तू, मेरा पिता, और
हम पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं। {मैं प्रार्थना करता हूँ} कि वे भी हम से जुड़ जाएँ ताकि संसार के लोग जान लें कि तूने यहाँ मुझे भेजा है। 22जिस प्रकार से तूने मेरा
सम्मान किया है वैसे ही मैंने भी उन लोगों का सम्मान किया है जो मुझ पर भरोसा करते हैं, जिससे कि वे उसी रीति से जुड़ जाएँ जैसे हम जुड़े हुए हैं। 23{इसका
अर्थ है कि} मैं उनसे जुड़ा हुआ हूँ, और तू मुझ से जुड़ा हुआ है। {मैंने ऐसा इसलिए किया है} ताकि वे पूर्णरूप से एक साथ जुड़ जाएँ जिससे कि संसार के लोग
जान लें कि तूने यहाँ मुझे भेजा है और यह कि जिस प्रकार से तू मुझ से प्रेम करता है उसी रीति से तू उन लोगों से भी प्रेम करता है जो मुझ पर भरोसा करते हैं।
24"हे मेरे पिता, मैं चाहता हूँ कि ये लोग जिनको तूने मुझे दिया है मेरे साथ वहाँ रहें जहाँ मैं स्वर्ग में रहूँगा ताकि वे देख सकें कि मैं कितना महिमामय हूँ। तूने मुझे
महिमामय इसलिए बनाया है क्योंकि तूने मुझ से उस समय से पहले ही प्रेम किया था जब हम ने जगत की रचना की थी। 25हे मेरे पिता, तू सदा वही करता है
जो सही है, ये लोग जो संसार में तेरा विरोध करते हैं जानते नहीं कि तू कौन है, परन्तु मैं जानता हूँ कि तू कौन है। ये लोग जो मुझ पर भरोसा करते हैं जानते हैं
कि तूने यहाँ मुझे भेजा है। 26मैंने उनको बता दिया है कि तू कौन है। मैं ऐसा ही करता रहूँगा ताकि वे दूसरों से वैसे ही प्रेम करें जैसे तू मुझ से प्रेम करता है और
जिससे कि मैं उनके साथ जुड़ जाऊँ।"

Chapter 18

1यीशु के प्रार्थना करना समाप्त करने के बाद, वह अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले के पार चला गया। नाले के दूसरी तरफ उन्होंने {जैतून के पेड़ों के} एक
बगीचे में प्रवेश किया। 2वह यहूदा ही था जो यीशु के विरोधियों की उसे बंदी बनाने में सहायता करने वाला था। जहाँ यीशु था वह उस स्थान को जानता था
क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ अक्सर गया था। 3इसलिए रोमी सैनिकों और मंदिर के कुछ पहरुओं के समूह को जिनको शासकीय याजकों और
फरीसियों की ओर से भेजा गया था यहूदा बगीचे में लेकर आया। उनके पास मशालें, दीपक, और हथियार थे। 4क्योंकि यीशु जानता था कि उसके साथ क्या
घटित होने जा रहा है, इसलिए वह आगे बढ़ा और सैनिकों तथा मंदिर के पहरुओं से पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?" 5उन्होंने उसे प्रतिउत्तर दिया, "नासरत के
यीशु को।" यीशु उनसे बोला, "मैं {वही व्यक्ति} हूँ।" (यहूदा उनके साथ में ही खड़ा हुआ था। वही था जो यीशु के विरोधियों की उसे बंदी बनाने में सहायता कर
रहा था।) 6जब यीशु ने उनसे कहा, "मैं {वही व्यक्ति} हूँ," तो वे पीछे हट गए और अनायास ही भूमि पर गिर पड़े। 7तब यीशु ने उनसे फिर से पूछा, "तुम किसे
ढूँढ़ रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "नासरत के यीशु को।" 8यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "मैंने तुम से कह दिया कि मैं {वही व्यक्ति} हूँ। चूँकि मैं वही हूँ जिसे तुम ढूँढ़ रहे
हो, तो इन मनुष्यों को जाने दो। 9(यह इसलिए घटित हुआ ताकि वे बातें जो उसने पिता से कही थीं वह पूरी हो जाएँ: "जिनको तूने मुझे दिया था उनमें से मैंने
एक को भी नहीं खोया।") 10शमौन पतरस के पास एक छोटी तलवार थी। उसकी म्यान में से उसने उसे बाहर निकाला और उससे महायाजक के सेवक पर
प्रहार किया, और उसका दाहिना कान काट दिया। उस सेवक का नाम मलखुस था। 11तब यीशु पतरस से बोला, "अपनी तलवार को उसकी म्यान में वापस
रख! मुझे निश्चय ही उस रीति से पीड़ित होना अवश्य है जिससे {पीड़ित होने की} मेरे पिता ने मेरे लिए योजना बनाई है!" 12रोमी सैनिकों के समूह ने, यहूदी
अगुवों की ओर से आए उनके अगुवों और मंदिर के कुछ पहरुओं के साथ, यीशु को पकड़ लिया और उसके हाथों को बाँध दिया। 13तब वे पहले उसे हन्ना के
पास ले गए, क्योंकि वह कैफा का ससुर था, और कैफा उस वर्ष का महायाजक था। 14(वह कैफा ही था जिसने अन्य यहूदी अगुवों को सुझाव दिया था कि यह
{रोमियों को उनको मारने देने की तुलना में} लोगों की ओर से एक मनुष्य का मरना बहुत बेहतर होगा।) 15शमौन पतरस यीशु के पीछे-पीछे गया, और वैसा ही
एक अन्य चेले ने भी किया। हन्ना महायाजक दूसरे चेले को जानता था, इसलिए {जब सैनिक और पहरुए} यीशु को वहाँ लेकर आए, तो उसे महायाजक के
आँगन में प्रवेश करने दिया गया। 16हालाँकि, पतरस को बाहर द्वार के पास रुकना पड़ा। इसलिए, वह चेला जो महायाजक को जानता था फिर से बाहर गया
और उस दासी से बात की जो द्वार की रखवाली कर रही थी। तब उसे पतरस को लेकर {आँगन} में आने दिया गया। 17वह दासी जो द्वार की रखवाली कर रही
थी फिर पतरस से बोली, "तू निश्चय ही उस मनुष्य के चेलों में से एक है {जिसे उन्होंने बंदी बनाया है}!" उसने प्रतिउत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ!" 18(यह ठंड का
समय था, इसलिए महायाजक के सेवकों और मंदिर के पहरुओं ने आग जलाई हुई थी और उसके चारों ओर खड़े होकर अपने आप को गर्म कर रहे थे। पतरस
भी वहाँ उनके साथ खड़ा होकर अपने आप को गर्म कर रहा था।) 19तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के और वह उनको क्या शिक्षा दे रहा था इस बारे में
प्रश्न किया। 20यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "मैंने सार्वजनिक रूप से उस हर एक जन से बात की {जो सुनेगा}। मैंने हमेशा यहूदी सभास्थलों और मंदिर में शिक्षा
दी। {मैंने उन स्थानों में भी शिक्षा दी} जहाँ बहुत से यहूदी इकट्ठा होते हैं। मैंने कभी भी कुछ भी गुप्त रूप से नहीं कहा। 21तुझे मुझ से नहीं पूछना चाहिए! उन
लोगों से पूछ जिन्होंने वह सुना जो मैंने उनको सिखाया। वे निश्चित रूप से जानते हैं कि मैंने क्या कहा था।" 22यीशु के यह कहने के बाद, मंदिर के पहरुओं में से
एक ने जो उसके पास ही में खड़ा था उसे थप्पड़ मारा। उसने कहा, "तुझे महायाजक को इस तरह से उत्तर नहीं देना चाहिए!" 23यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया,
"यदि जो मैंने कहा वह गलत था, तो मुझे बता कि वह क्या था। हालाँकि, यदि जो मैंने कहा वह सही था, तो तुझे मुझे थप्पड़ नहीं मारना चाहिए।" 24तब हन्ना ने
यीशु को कैफा, अर्थात दूसरे महायाजक के पास भेज दिया, जबकि यीशु के हाथ अभी भी बंधे हुए थे। 25इसी बीच, शमौन पतरस अभी भी {आँगन में} खड़ा
हुआ था और अपने आप को गर्म कर रहा था, जब किसी ने उससे कहा, "तू भी निश्चय ही उस मनुष्य के चेलों में से एक है जिसे उन्होंने बंदी बनाया है!" पतरस
ने इसका इन्कार करते हुए कहा, "नहीं, मैं नहीं हूँ!" 26महायाजक के सेवकों में से एक उस मनुष्य का सम्बन्धी था जिसका पतरस ने कान काट दिया था। उसने
पतरस से कहा, "निश्चय ही मैंने तुझे {जैतून के पेड़ों के} बगीचे में उस मनुष्य के साथ देखा था जिसे उन्होंने बंदी बनाया है!" 27तब पतरस ने फिर से इन्कार कर
दिया {कि वह यीशु के साथ था}। {उसके ऐसा करने के बाद} तत्काल एक मुर्गे ने बाँग दी। 28तब यहूदी अगुवे यीशु को कैफा के घर से रोमी राज्यपाल, पिलातुस
के मुख्यालय में लेकर आए। (यह सुबह में भोर का समय था। यहूदी अगुवों ने पिलातुस के मुख्यालय में प्रवेश नहीं किया {क्योंकि पिलातुस यहूदी नहीं था। वे
सोचते थे कि} यदि उन्होंने किसी गैर-यहूदी के घर में प्रवेश कर लिया, तो वे अपने आप को अशुद्ध कर लेंगे और फसह के पर्व के भोजन को खाने के लिए
अयोग्य ठहरेंगे।) 29इसलिए उनसे बात करने के लिए पिलातुस बाहर आया। उसने उनसे पूछा, "तुम इस मनुष्य पर क्या करने का दोष लगा रहे हो?" 30यहूदी

अगुवों ने प्रतिउत्तर दिया, “यदि यह मनुष्य एक अपराधी न होता, तो हम उसे तेरे पास लेकर नहीं आते!” 31इसलिए पिलातुस उनसे बोला, “तुम स्वयं ही उसे ले जाओ और अपनी व्यवस्था के द्वारा उसका न्याय करो।” यहूदी अगुवों ने प्रतिउत्तर दिया, “हम उसे मृत्युदंड देना चाहते हैं, परन्तु तेरा रोमी कानून हमें ऐसा करने से रोकता है।” 32(ऐसा इसलिए घटित हुआ जिससे कि जो यीशु ने कहा था वह पूरा हो कि वह शीघ्र ही कैसे मरेगा।) 33तब पिलातुस अपने मुख्यालय में भीतर चला गया। उसने सैनिकों को यीशु को उसके पास लेकर आने का आदेश दिया, और उसने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” 34यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “क्या तू यह प्रश्न मुझ से इसलिए पूछ रहा है क्योंकि तू स्वयं से ऐसा सोचता है, या दूसरों ने तुझ से मेरे विषय में ऐसा कहा है?” 35पिलातुस ने प्रतिउत्तर दिया, “मैं कोई यहूदी नहीं हूँ! तेरे ही देशवासी और शासकीय याजक तुझे मेरे पास लेकर आए हैं। तूने क्या गलत किया है?” 36यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “जिस राज्य पर मैं शासन करता हूँ वह इस पापी संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो यहूदी अगुवों को मुझे बंदी बनाने से रोकने के लिए मेरे सेवक लड़ते। परन्तु, जैसा कि यह है, जिस राज्य पर मैं शासन करता हूँ वह इस पापी संसार का नहीं है।” 37तब पिलातुस ने उससे पूछा, “तो तू एक राजा है?” यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “तू स्वयं ही ऐसा कहता है। मैं इस संसार में इसीलिए जन्मा: और मैं इसलिए आया ताकि लोगों को वह बताऊँ जो परमेश्वर के बारे में सत्य है। हर एक जन जो उस पर विश्वास करता है जो परमेश्वर के बारे में सत्य है वह जो मैं कहता हूँ उसे स्वीकार करता है और उसका पालन भी करता है।” 38पिलातुस ने उससे कहा, “कोई भी नहीं जानता कि वास्तव में सत्य क्या है!” पिलातुस के ऐसा कहने के बाद, वह बाहर चला गया और फिर से यहूदी अगुवों से बात की। उसने उनको बताया, “मैंने ऐसा कोई सबूत नहीं पाया कि इस मनुष्य ने कोई नियम तोड़ा है। 39हालाँकि, तुम यहूदियों की एक रीति है: फसह के पर्व के दौरान प्रत्येक वर्ष तुम मुझ से कहो, और मैं तुम्हारे लिए किसी को स्वतंत्र कर देता हूँ जो बंदीगृह में है। इसलिए क्या तुम मुझ से चाहते हो कि तुम्हारे लिए तुम्हारे राजा को स्वतंत्र कर दूँ?” 40तब यहूदी अगुवे फिर से चिल्लाने लगे, “नहीं, इस मनुष्य को स्वतंत्र मत कर, परन्तु बरअब्बा को स्वतंत्र कर!” (बरअब्बा एक क्रांतिकारी था।)

Chapter 19

1अतः उस समय पिलातुस ने {अपने सैनिकों को आदेश दिया कि} यीशु को ले जाएँ और कोड़ों से उसकी पिटाई करें। 2सैनिकों ने कुछ शाखाएँ भी ले लीं जिन पर काँटें थे और उनको एक साथ बुन दिया कि कुछ मुकुट जैसा बनाएँ। फिर उन्होंने उसे यीशु के सिर पर रख दिया और उसे एक बैंगनी बागा पहना दिया {ताकि उसका ठठ्ठा करें}। 3वे लगातार उसके पास जा-जाकर और यह कह-कहकर उसका उपहास करते रहे, “हे यहूदियों के राजा, हम तुझे प्रणाम करते हैं!” और उसके मुँह पर थप्पड़ मारते रहे। 4पिलातुस फिर से बाहर आया और यहूदी अगुवों से कहा, “देखो, मैं उसे तुम्हारे लिए बाहर लाने पर हूँ ताकि तुम जान सको कि मैंने ऐसा कोई सबूत नहीं पाया कि इस मनुष्य ने कोई नियम तोड़ा है।” 5अतः यीशु बाहर आ गया। वह काँटों वाली शाखाओं से बने उस मुकुट और बैंगनी बागे को पहने हुए था। पिलातुस ने यहूदी अगुवों से कहा, “देखो, वह मनुष्य यहाँ है!” 6जब शासकीय याजकों और मंदिर के पहरुओं ने यीशु को देखा, तो वे चिल्लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा! उसे क्रूस पर चढ़ा!” पिलातुस उनसे बोला, “तुम स्वयं ही उसे ले जाओ और उसे क्रूस पर चढ़ा दो! जहाँ तक मेरी बात है, मैंने ऐसा कोई सबूत नहीं पाया कि इस मनुष्य ने कोई नियम तोड़ा है।” 7यहूदी अगुवों ने पिलातुस को प्रतिउत्तर दिया, “हमारी निश्चित व्यवस्था है जो कहती है कि उसे मर जाना चाहिए, क्योंकि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था।” 8जब पिलातुस ने यह सुना, तो वह पहले से भी और अधिक डर गया {कि उसके साथ क्या घटित होगा यदि वह यीशु को मरने का दंड दे}। 9उसने फिर एक बार अपने मुख्यालय में प्रवेश किया {और सैनिकों को यीशु को पीछे की तरफ भीतर लेकर आने का आदेश दिया। तब} उसने यीशु से पूछा, “तू कहाँ से आया है?” हालाँकि, यीशु ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। 10इसलिए पिलातुस ने उससे कहा, “तुझे मुझे उत्तर देना चाहिए! तू निश्चय ही जानता है कि मेरे पास तुझे स्वतंत्र करने का अधिकार है, और मेरे पास तुझे क्रूस पर चढ़ा देने का अधिकार भी है!” 11यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “जो एकमात्र अधिकार तेरे पास मुझ पर है वह वही अधिकार है जो तुझे परमेश्वर ने प्रदान किया है। इसलिए जो मनुष्य मुझे तेरे पास लेकर आया है उसने जो तू कर रहा है उसकी तुलना में और भी बुरा पाप किया है।” 12उसी क्षण से, पिलातुस यीशु को स्वतंत्र करने का प्रयास करता रहा। हालाँकि, यहूदी अगुवे चिल्लाने लगे, “यदि तू इस मनुष्य को छोड़ दे, तो तू कैसर के प्रति वफादार नहीं! जो कोई भी राजा होने का दावा करता है वह कैसर का विरोध करता है।” 13इसलिए जब पिलातुस ने यह सुना, तो उसने यीशु को बाहर लाने के लिए {अपने सैनिकों को आदेश दिया}। फिर पिलातुस {निर्णय की घोषणा करने के लिए} उस सिंहासन पर बैठ गया जहाँ से वह आमतौर पर निर्णयों की घोषणा किया करता था। यह वह स्थान था जिसे लोग “चबूतरा” कहते थे, जो यहूदियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा में “गब्बता” था। 14(अब यह {फसह के पर्व से पहले वाला दिन था, जो कि} वह दिन था जब यहूदी लोग पर्व के लिए तैयारी करते थे। यह लगभग दोपहर का समय था।) पिलातुस ने यहूदी अगुवों से कहा, “देखो, तुम्हारा राजा यहाँ है!” 15वे चिल्लाए, “उसकी हत्या कर! उसकी हत्या कर! उसे क्रूस पर चढ़ा दे!” पिलातुस ने यह कहने के द्वारा उनका {उपहास किया}, “क्या तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाने के लिए मुझे {मेरे सैनिकों को आदेश देना} चाहिए?” शासकीय याजकों ने प्रतिउत्तर दिया, “कैसर ही हमारा एकमात्र राजा है!” 16फिर, जो उन्होंने कहा था उसके कारण, पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ा देने के लिए अपने सैनिकों को आदेश दे दिया। फिर वे सैनिक यीशु को ले गए {ताकि उसे क्रूस पर चढ़ा दें}। 17यीशु अपने क्रूस को स्वयं ही उठाए हुए, उस स्थान को जाने के लिए बाहर निकला जिसे लोग “खोपड़ी का स्थान” कहते हैं, जो यहूदियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा में “गुलगुता” था।” 18उस स्थान में सैनिकों ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। उन्होंने दो अन्य मनुष्यों को भी उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया। यीशु की दोनों तरफ एक-एक मनुष्य था, इसलिए यीशु उनके बीच में था। 19पिलातुस ने एक सूचना लिखने के लिए भी {किसी को आदेश दिया} और उसे यीशु के क्रूस पर बाँध दिया। {उस व्यक्ति ने} उस पर लिखा, ‘नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा।’ 20बहुत से यहूदियों ने उस सूचना को पढ़ा क्योंकि जहाँ सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था वह स्थान यरूशलेम नगर के समीप था और {क्योंकि} किसी ने सूचना को तीन भाषाओं में लिखा था, जो कि यहूदियों, रोमियों, और यूनानियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ थीं। 21शासकीय यहूदी याजकों ने पिलातुस के पास लौट कर कहा, “तुझे उस सूचना में यह नहीं लिखना चाहिए था, ‘यहूदियों का राजा।’ बजाए इसके, {तुझे लिखना चाहिए था,} ‘इस मनुष्य ने कहा था कि वह यहूदियों का राजा है’।” 22पिलातुस ने प्रतिउत्तर दिया, “जो मैंने सूचना में लिखने के लिए {सैनिकों को आदेश दिया था} वह वही है जो उन्होंने लिखा है। {मैं इसे बदलूँगा नहीं।}” 23सैनिकों द्वारा यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिए जाने के बाद, उन्होंने उसके कपड़े ले लिए और उनको चार बराबर भागों में बाँट लिया, अर्थात प्रत्येक सैनिक के लिए एक भाग। {हालाँकि, उन्होंने उसके} कुर्ते को {अलग रखा}। बुनाई करने वाले ने उस कुर्ते को ऊपर से लेकर नीचे तक कपड़े के एक टुकड़े से बुना था जिसमें कोई सिलाई नहीं थी। 24इसलिए सैनिकों ने एक-दूसरे से कहा, “आओ हम इस कुर्ते को

फाड़ें नहीं। बजाए इसके, आओ हम जुआ खेलने के द्वारा निर्धारित करें कि इसको कौन रखेगा {और जीतने वाले को इसे दे दें}।" यह इसलिए घटित हुआ ताकि
पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो: "उन्होंने मेरे कपड़ों को आपस में बाँट लिया। मेरे कपड़ों के लिए उन्होंने जुआ खेला।" इसी कारण से सैनिकों ने इन कामों को
किया। 25यीशु की माता, उसकी माता की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी ये सब उस क्रूस के पास खड़े हुए थे जिस पर वह लटका
हुआ था। 26जब यीशु ने अपनी माँ को {वहाँ खड़े हुए} देखा और चेले यूहन्ना को जिससे यीशु प्रेम करता था उसके पास खड़े हुए देखा, तो वह अपनी माँ से
बोला, "हे महोदया, यहाँ वह है जो तेरी देखभाल वैसे ही करेगा जैसे कोई पुत्र करे।" 27आगे, उसने यूहन्ना से कहा, "यहाँ वह है जिसकी देखभाल तुझे अपनी माँ
की तरह करनी है!" उसी क्षण से, यूहन्ना उसे अपने घर में रहने के लिए ले गया। 28थोड़ी देर के बाद, क्योंकि यीशु जानता था कि वह सब कुछ पहले से ही कर
चुका है जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे भेजा था, {और} पवित्रशास्त्र {की एक और भविष्यद्वाणी} को पूरा करने के लिए उसने कहा, "मैं प्यासा हूँ!" 29किसी
ने वहाँ ओछे दाखरस से भरा मर्तबान रखा हुआ था {और यीशु को प्यास लगी थी}। इसलिए सैनिकों ने जूफ़ा के पौधे से सरकंडा लिया और उस पर एक
पनसोख्ता रख दिया। {तब उन्होंने उस पनसोख्ते को} ओछे दाखरस में डुबोया और उसे यीशु के मुँह के पास कर दिया। 30अतः यीशु ने ओछे दाखरस को पिया
और फिर कहा, "मैंने {वह सब कुछ जो मैं यहाँ करने आया था} पूरा कर लिया!" और उसने अपना सिर झुकाया और स्वेच्छा से मर गया। 31तब यहूदी अगुवों ने
पिलातुस से विनती की {कि अपने सैनिकों को आदेश दे कि} क्रूसों पर लटके हुए तीनों मनुष्यों की टाँगों को तोड़ दें {जिससे वे मनुष्य और भी जल्दी मर जाएँगे}
और उनके शवों को उतार दें ताकि यहूदियों के विश्रामदिन में वे शव क्रूसों पर ही न टंगे रहें। {उन्होंने यह विनती इसलिए की} क्योंकि यह वह दिन था जब यहूदी
लोग फसह के पर्व के लिए और विश्रामदिन की तैयारी करते थे {और उन दिनों में मृत शवों को क्रूसों पर छोड़ देना यहूदी व्यवस्था का उल्लंघन करता था}।
(चूँकि अगला दिन भी विश्राम का दिन था, इसलिए वह एक बहुत महत्वपूर्ण दिन था।) 32इसलिए सैनिक आए और उस पहले मनुष्य की टाँगों को तोड़ दिया,
जिसे यीशु के समय में ही क्रूस पर चढ़ाया गया था। फिर उन्होंने दूसरे मनुष्य की {टाँगों को तोड़ दिया}। 33हालाँकि, जब वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने देखा
कि वह पहले से ही मर चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगों को नहीं तोड़ा। 34बजाए इसके, सैनिकों में से एक ने यीशु की बगल में भाला घोंप दिया, और उसी
समय {घाव में से} लहू और पानी निकल पड़ा। 35(मैं, यूहन्ना, ही वह व्यक्ति हूँ जिसने यह घटित होते हुए देखा और इसके बारे में गवाही दी और जो गवाही मैंने
दी वह सत्य है। मुझे निश्चय है कि जो मैं कह रहा हूँ वह सत्य है; मैं यह इसलिए कहता हूँ ताकि तुम भी यीशु पर भरोसा करो।) 36{यीशु के शव के साथ} यह
बातें घटित हुईं जिससे कि पवित्रशास्त्र की {यह भविष्यद्वाणी} पूरी हो जाए: "कोई भी उसकी हड्डियों में से किसी को नहीं तोड़ने पायेगा।" 37{उन्होंने} भी
पवित्रशास्त्र {की दूसरी भविष्यद्वाणी} को {पूरा किया}। यह कहती है: "जिसे उन्होंने बेधा उसी मनुष्य पर वे दृष्टि करेंगे।" 38इन बातों के घटित होने के बाद,
यूसुफ ने, जो वास्तविक रूप से अरमतिया नगर का रहने वाला मनुष्य था, पिलातुस से यीशु के शव को उसे लेकर जाने की अनुमति देने के लिए विनती की।
{उसने ऐसा इसलिए किया} क्योंकि वह यीशु का चेला था। हालाँकि, उसने किसी को यह नहीं बताया था, क्योंकि वह अन्य यहूदी अगुवों से डरता था। पिलातुस
ने यूसुफ को यीशु के शव को लेकर जाने की अनुमति दे दी, इसलिए यूसुफ ने जाकर वैसा ही किया। 39नीकुदेमुस भी आया। {वह वही मनुष्य था} जो एक बार
रात के समय आया था और यीशु से {बातें की थीं}। वह लोहबान और एलवा मसालों का मिश्रण लेकर आया {ताकि यीशु के शव को गाड़ने के लिए तैयार करें}।
उन मसालों को वजन लगभग 33 किलोग्राम था। 40उन्होंने यीशु के शव को लेकर मलमल के कपड़े की पट्टियों को उसके चारों ओर लपेट दिया और {लोहबान
और एलवा के} मसालों को {कपड़े की पट्टियों के नीचे} लगा दिया। {उन्होंने ऐसा} शवों को गाड़ने की यहूदियों की रीति के अनुसार किया। 41(जहाँ सैनिकों ने
यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था वहाँ उस स्थान के निकट ही एक वाटिका थी। उस वाटिका में एक नई बनी हुई गाड़ने की गुफा थी। किसी ने भी अभी तक उस
गुफा में किसी को भी नहीं गाड़ा था।) 42इसलिए उन्होंने यीशु के शव को उस कब्र में रख दिया क्योंकि वह निकट ही थी और क्योंकि वह वही दिन था जब यहूदी
लोग फसह के पर्व के लिए तैयारी करते थे {इसलिए उनको सूर्य अस्त होने से पहले ही शव को गाड़ना पड़ा}।

Chapter 20

1रविवार की सुबह भोर में, जबकि अभी अंधेरा ही था, मरियम मगदलीनी कब्र पर आई {जहाँ उन्होंने यीशु को गाड़ा था}। उसने देखा कि किसी ने कब्र के
प्रवेशद्वार से पत्थर को हटा दिया था। 2इसलिए वह उस ओर भागी जहाँ शमौन पतरस और दूसरा चेला, यूहन्ना, जिससे यीशु प्रेम करता था, {रह रहे थे} उसने
उनको बताया, "कुछ लोगों ने प्रभु यीशु के शव को कब्र में से हटा दिया है, और हम नहीं जानते कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है!" 3जब उन्होंने यह सुना, तो पतरस
और यूहन्ना जहाँ पर रह रहे थे वहाँ से निकलकर कब्र पर गए। 4वे दोनों ही दौड़ रहे थे, परन्तु यूहन्ना पतरस से तेज दौड़कर कब्र पर उससे पहले पहुँच गया।
5जब यूहन्ना ने झुककर {कब्र के भीतर देखा}, तो उसने सनी के कपड़े की उन पट्टियों को {जिनको उन्होंने यीशु के शव के चारों ओर लपेटा था} वहाँ पड़े देखा
जहाँ उसका शव रखा गया था, परन्तु वह कब्र के भीतर नहीं गया। 6यूहन्ना के पीछे-पीछे शमौन पतरस दौड़ रहा था। वह भी वहाँ पहुँच गया और कब्र के भीतर
गया। उसने भी सनी के कपड़े की पट्टियों को वहाँ पड़े देखा जहाँ यीशु का शव रखा गया था। 7पतरस ने उस कपड़े को भी देखा जिसे किसी ने यीशु के सिर के
चारों ओर लपेटा था। {वह} सनी के कपड़े की पट्टियों के साथ नहीं पड़ा था। बजाए इसके, किसी ने उसे तह लगाकर उनसे अलग कर दिया था। 8तब यूहन्ना,
वही अन्य चेला जो पतरस से पहले कब्र पर पहुँच गया था, वह भी भीतर गया। उसने इन वस्तुओं को देखा और विश्वास किया {कि यीशु फिर से जीवित हो गया
है}। 9(उस समय तो वे नहीं समझे जो बात भविष्यद्वक्ताओं ने उस पवित्रशास्त्र में लिखी थी जो कहती है कि यीशु को मरना था और फिर से जीवित होना था।)
10फिर वे चेले उस स्थान में लौट गए जहाँ वे {यरूशलेम में} रह रहे थे। 11मरियम मगदलीनी कब्र के बाहर खड़ी होकर रोती रही। जिस समय वह रो रही थी, तो
उसने झुककर कब्र के भीतर {देखा}। 12उसने सफेद कपड़े पहने हुए दो स्वर्गदूतों को देखा। {वे} उस स्थान में बैठे हुए थे जहाँ लोगों ने यीशु के शव को रखा था।
एक स्वर्गदूत उस स्थान में बैठा हुआ था जहाँ यीशु का सिर था। दूसरा स्वर्गदूत उस स्थान में बैठा हुआ था जहाँ यीशु के पाँव थे। 13उन्होंने उससे पूछा, "हे
महोदया, तू क्यों रो रही है?" वह उनसे बोली, "{मैं इसलिए रो रही हूँ} क्योंकि कुछ लोगों ने मेरे प्रभु यीशु के शव को {इस कब्र से} हटा दिया है, और मैं नहीं
जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है!" 14उसके ऐसा कहने के बाद, उसने मुड़कर किसी को वहाँ खड़े देखा। {वह यीशु था,} परन्तु वह उसे पहचान नहीं पाई।
15उसने उससे पूछा, "हे महोदया, तू क्यों रो रही है? तू किसे ढूँढ़ रही है?" उसने सोचा कि जो व्यक्ति उससे बात कर रहा है वह माली है, इसलिए वह उससे
बोली, "हे महोदय, यदि तू ही यीशु के शव को उठाकर ले गया है, तो मुझे बता दे कि तूने उसे कहाँ रखा है। मैं उसे ले लूँगी {और उसे फिर से गाड़ दूँगी}।"

16यीशु ने यह कहकर {उसे उसके नाम से पुकारा}, “हे मरियम!” वह {फिर से उसकी ओर मुड़ी और} उससे कहा, “रब्बूनी!” (जिसका अर्थ यहूदियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा में “गुरु” होता है)। 17यीशु उससे बोला, “मेरे समीप आने से रुक जा, क्योंकि मैं अभी तक मेरे पिता {के साथ रहने के लिए स्वर्ग} नहीं लौटा हूँ। चेलों के पास, और मेरे भाइयों के पास जा, और उनको बता कि मैं मेरे परमेश्वर और पिता {के साथ रहने के लिए स्वर्ग} लौटने पर हूँ, जो तुम्हारा भी परमेश्वर और पिता है।” 18मरियम मगदलीनी यीशु के चेलों के पास गयी और उनको बताया, “मैंने प्रभु यीशु को देखा है!” {उसने} उनको वह भी बताया जो यीशु ने उससे बोला था।। 19उसी रविवार के दिन शाम को, चेलों ने उस स्थान के द्वारों को बंद किया हुआ था जहाँ वे रह रहे थे, क्योंकि वे यहूदी अगुवों से डरे हुए थे। अचानक यीशु आ पहुँचा और उनके बीच में खड़ा हो गया। वह उनसे बोला, “परमेश्वर तुम को शान्ति प्रदान करे!” 20उसके ऐसा कहने के बाद, उसने अपने चेलों को वह घाव दिखाए जो उसके हाथों में और बगल में थे। जब उन्होंने प्रभु यीशु को देखा तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए! 21तब यीशु दूसरी बार उनसे बोला, “परमेश्वर तुम को शान्ति प्रदान करे! मैं तुम को {संसार में} भेज रहा हूँ जिस प्रकार से मेरे पिता ने मुझे भेजा था।” 22उसके ऐसा कहने के बाद, यीशु ने उन पर फूँका और कहा, “पवित्र आत्मा ग्रहण करो। 23यदि तुम किसी के पापों को क्षमा करते हो, तो परमेश्वर भी उस व्यक्ति को उन पापों के लिए क्षमा कर देगा। यदि तुम किसी के पापों को क्षमा न करो, तो परमेश्वर भी उस व्यक्ति को उन पापों के लिए क्षमा नहीं करेगा।” 24बारह चेलों में से एक, थोमा, जिसे वे ‘जुड़वाँ’ कहते थे, उसके अन्य चेलों के बीच में तब वहाँ नहीं था जिस समय यीशु उनके बीच में था। 25अन्य चेलों ने थोमा को बताया, “हम ने प्रभु यीशु को देखा है!” हालाँकि, वह उनसे बोला, “मैं तुम पर तभी विश्वास करूँगा यदि मैं उसके हाथों में छेदों को देखूँ जो कीलों के कारण से हुए थे और अपनी उँगलियाँ उनमें डालूँ और यदि मैं अपना हाथ उसके बगल के घाव में डालूँ {जो भाले से किया गया था}।” 26आठ दिन के बाद, यीशु के चेले फिर से घर के भीतर थे, और इस समय थोमा उनके साथ था। यद्यपि उन्होंने द्वारों को बंद किया हुआ था, यीशु आया और उनके बीच में खड़ा हो गया। उसने उनसे कहा, “परमेश्वर तुम को शान्ति प्रदान करे!” 27फिर उसने थोमा से कहा, “अपनी उंगली को यहाँ छेदों में डाल, और मेरे हाथों के छेदों को देख, और अपना हाथ बढाकर मेरे बगल के घाव में डाल! संदेह करना बंद कर {कि मैं फिर से जीवित हो गया हूँ}। बजाए इसके, विश्वास कर {कि यह सत्य है}!” 28थोमा ने प्रतिउत्तर दिया, “तू ही मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर है!” 29यीशु उससे बोला, “अब तू विश्वास करता है {कि मैं फिर से जीवित हो गया हूँ} क्योंकि तू मुझे देखता है। परमेश्वर {निश्चय ही} उनको आशीष देगा जिन्होंने मुझे नहीं देखा परन्तु तौभी विश्वास करते हैं {कि मैं फिर से जीवित हो गया हूँ}” 30उन दिनों यीशु ने और भी बहुत से चमत्कारी चिन्हों को प्रकट किया जिस समय उसके चेले उसके साथ थे, {परन्तु} मैंने उनके बारे में इस पुस्तक में नहीं लिखा। 31फिर भी, मैंने इस पुस्तक में उन चिन्हों के बारे में लिखा है जिससे कि तुम भरोसा करो कि यीशु ही मसीह, अर्थात परमेश्वर का पुत्र है। {मैंने उन बातों के विषय में भी लिखा है} ताकि, {यीशु ही मसीह है} इस पर भरोसा करने के द्वारा, तुम को उसके माध्यम से अनन्त जीवन प्राप्त हो।

Chapter 21

1इन बातों के घटित होने के बाद, यीशु फिर से अपने चेलों पर तिबिरियास झील के किनारे पर प्रकट हुआ, {जिसे गलील की झील के नाम से भी जाना जाता है}।. वह उन पर इस प्रकार से प्रकट हुआ: 2शमौन पतरस, थोमा (जिसे वे ‘जुड़वाँ’ कहते थे), नतनएल (जो काना का रहने वाला था, जो गलील प्रान्त में एक नगर है), जब्दी के पुत्र (याकूब और यूहन्ना), और यीशु के दो अन्य चेले एक साथ थे। 3शमौन पतरस अपने साथ के दूसरे चेलों से बोला, “मैं मछलियाँ पकड़ने जा रहा हूँ।” वे उससे बोले, “हम भी तेरे साथ जाएँगे।” वे जाकर नाव पर चढ़ गए {और मछली पकड़ने लगे}, परन्तु उस रात वे कोई मछली नहीं पकड़ पाए। 4अगली सुबह भोर में यीशु झील के किनारे पर खड़ा हो गया, परन्तु चेले जो मछली पकड़ रहे थे नहीं जानते थे कि वह यीशु था। 5तब यीशु ने उनको पुकारा, “हे प्रिय मित्रों, क्या तुम्हारे पास कोई मछली नहीं है, क्या तुम्हारे पास है?” उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, “हमारे पास नहीं है।” 6वह उनसे बोला, “नाव की दाहिनी ओर अपना जाल डालो और तुम को मछलियाँ मिलेंगी।” इसलिए उन्होंने वैसा ही किया, और उन्होंने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं कि वे जाल को {नाव पर} खींचने में सक्षम नहीं हुए। 7मैं, वही चेला जिससे यीशु प्रेम करता था, तब पतरस से बोला, “यह तो प्रभु यीशु है!” अतः जब शमौन पतरस ने यह सुना, तो उसने अपना अंगरखा पहन लिया (जो उसने काम करने के लिए उसे उतार दिया था) और {तैरकर किनारे पर जाने के लिए} पानी में कूद गया। 8बाकी के चेले भी जो मछलियाँ पकड़ रहे थे वे नाव से किनारे पर आए, जबकि वे मछलियों से भरे हुए जाल को {नाव के पीछे-पीछे} खींच रहे थे। (वे किनारे से दूर नहीं थे, केवल 90 मीटर दूर थे।) 9जब वे किनारे पर पहुँचे, तो उन्होंने आग देखी {जो यीशु ने तैयार की थी} और उस पर एक मछली पक रही थी। {वहाँ} एक रोटी भी थी। 10यीशु उनसे बोला, “{यहाँ} उन मछलियों में से कुछ लेकर आओ जो तुम ने अभी पकड़ी हैं!” 11इसलिए शमौन पतरस {नाव पर} वापस गया और जाल को किनारे पर खींच लाया। {वह} 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था। भले ही वहाँ बहुत सारी मछलियाँ थीं, तौभी जाल नहीं फटा। 12यीशु उनसे बोला, “{यहाँ} आओ और नाश्ता कर लो!” चेलों में से कोई भी इतना साहसी नहीं था कि उससे पूछ ले कि वह कौन था। वे जानते थे कि वह प्रभु यीशु था। 13यीशु ने आकर रोटी ली और वह उनको दी। वैसा ही उसने मछली के साथ भी किया। 14(यह तीसरी बार था कि परमेश्वर द्वारा उसे फिर से जीवित कर देने के बाद यीशु चेलों पर प्रकट हुआ था।) 15जब उन्होंने नाश्ता करना समाप्त कर लिया, तो यीशु ने शमौन पतरस से पूछा, “हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से इनकी तुलना में अधिक प्रेम करता है {दूसरे लोग जो मुझ से प्रेम करते हैं}?” पतरस ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हाँ, हे प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।” यीशु उससे बोला, “उनकी देखभाल कर जो मुझ पर भरोसा करते हैं।” 16यीशु ने उससे दूसरी बार पूछा, “हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम करता है?” उसने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हाँ, हे प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।” यीशु उससे बोला, “उनकी देखभाल कर जो मुझ पर भरोसा करते हैं।” 17यीशु ने उससे तीसरी बार पूछा, “हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम करता है?” पतरस उदास हो गया क्योंकि यीशु ने उससे तीसरी बार पूछा था कि यदि वह उससे प्रेम करता था। पतरस ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है। तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।” यीशु उससे बोला, “उनकी देखभाल कर जो मुझ पर भरोसा करते हैं। 18मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: जब तू जवान था, तो तू अपने कपड़े स्वयं पहन लेता था, और जहाँ कहीं तू जाना चाहता था वहाँ तू जाता था। हालाँकि, जब तू बूढ़ा हो जाएगा, तो तू अपने हाथों को अपने शरीर से दूर बढ़ाएगा, और कोई अन्य तुझे कपड़े पहनाएगा और तुझे वहाँ लेकर जाएगा जहाँ तू जाना नहीं चाहेगा।” 19(यीशु ने यह संकेत करने के लिए कहा कि पतरस कैसे मरेगा जिससे कि लोगों पर प्रकट हो कि परमेश्वर कितना महान है)। फिर यीशु उससे बोला, “आकर मेरा चेला बन!” 20जब पतरस पीछे मुड़ा तो उसने यूहन्ना को देखा, वही चेला जिससे यीशु प्रेम करता था, वह उनके पीछे-पीछे आ रहा था।

वह यूहन्ना ही था जो {यीशु के मरने से पहले} रात्रिभोज के समय यीशु की ओर झुका था और पूछा था, “हे प्रभु, कौन तुझे धोखा देने जा रहा है?” **21**इसलिए
जब पतरस ने यूहन्ना को देखा, तो उसने यीशु से पूछा, “हे प्रभु, इस मनुष्य के साथ क्या घटित होने जा रहा है?” **22**यीशु ने उससे कहा, “यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे
लौटने तक लगातार जीवित ही रहे, तो यह तेरी चिंता का विषय नहीं है! जहाँ तक तेरी बात है, {लगातार} मेरा चेला बना रह!” **23**क्योंकि {यीशु ने ऐसा कहा था},
इसलिए यह अफवाह विश्वासियों के बीच दोहराई गई थी कि चेला यूहन्ना नहीं मरेगा। हालाँकि, यीशु ने पतरस से यह नहीं बोला था कि यूहन्ना नहीं मरेगा। बजाए
इसके, उसने कहा था, “यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे लौटने तक लगातार जीवित ही रहे, तो यह तेरी चिंता का विषय नहीं है!” **24**मैं, यूहन्ना, ही वह चेला हूँ जो इन सब
बातों के बारे में गवाही दे रहा है, और उनको मैंने इस पुस्तक में लिख दिया है। हम जानते हैं कि जो गवाही मैंने दी है वह सच्ची है। **25**यीशु ने और भी बहुत से
काम किए कि यदि लोग उनमें से हर एक को लिख दें, तो मैं कल्पना करता हूँ कि सारा संसार भी इतना पर्याप्त बड़ा नहीं होगा कि उन पुस्तकों को समाहित कर
सके जो वे लोग उनके बारे में लिखेंगे।

1 कुरिन्थियों

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, {यह पत्री तुम्हें लिखता हूँ,} और हमारा संगी विश्वासी सोस्थिनेस {मेरे साथ है}। परमेश्वर ने मुझे इसलिए चुना ताकि यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व
करने के लिए भेजे, क्योंकि परमेश्वर यही चाहता था। 2{मैं यह पत्री तुम को भेजता हूँ} जो परमेश्वर के विश्वासियों के उन समूहों {का भाग हैं}, जो कुरिन्थ नगर में
पाए जाते हैं। {परमेश्वर ने तुम को} मसीह यीशु के साथ एकजुट करके अपने लिए अलग कर दिया है, और {उसने तुम को} उसके लोग होने के लिए चुन लिया
है। {तुम} विश्वासियों के उस समूह का भाग हो जो कई देशों और नगरों में हमारे प्रभु यीशु मसीह की आराधना करते हैं। {यीशु मसीह ही} उनका भी {प्रभु} है
और हमारा भी {प्रभु} है। 3परमेश्वर, {जो} हमारा पिता है, और प्रभु यीशु मसीह तुम पर कृपा {करते रहें} और तुम्हें शान्ति {प्रदान करें}। 4मैं अक्सर तुम्हारे बारे
में अपने परमेश्वर को धन्यवाद करता हूँ। {मैं ऐसा इसलिए करता हूँ} क्योंकि {मैं जानता हूँ कि कैसे} परमेश्वर तुम को यीशु मसीह के साथ एकजुट करके तुम्हारे
प्रति दयालु होकर कार्य कर रहा है। 5{जब मैं कहता हूँ कि परमेश्वर ने तुम पर दयालु होकर कार्य किया है, तो मेरा अर्थ है} कि उसने तुम को {तुम्हारे जीवन के}
हर क्षेत्र में मसीह के साथ एकजुट करके तुम्हें भरपूर आशीषें प्रदान की हैं, जिसमें जो कुछ भी तुम कहते हो और जो कुछ भी तुम जानते हो वह भी शामिल है।
6{परमेश्वर ने तुम को आशीषें इसलिए दी हैं} क्योंकि उसने तुम पर यह साबित कर दिया है कि जो बातें हम ने तुम को मसीह के बारे में जो बताई थीं वह सच
थीं। 7{परमेश्वर ने तुम्हारे लिए इन कामों को इसलिए किया है} ताकि तुम पूर्ण रीति से {इस समय के दौरान} आत्मिक रूप से सुसज्जित हो जाओ {जब तुम}
विश्वास के साथ हमारे प्रभु यीशु मसीह के लौटने की आशा करते हो। 8{जिस प्रकार से उसने हमारे सन्देश को सच साबित कर दिया है, वैसे ही} परमेश्वर तुम्हारे
भरोसे को भी {मसीह में} सच साबित करेगा जब तक कि {तुम्हारा सांसारिक जीवन} समाप्त नहीं हो जाता। {इस कारण से,} जब हमारा प्रभु यीशु मसीह
{पृथ्वी पर} वापस आएगा तो वह तुम को निर्दोष ठहराएगा। 9परमेश्वर हमेशा वही करता है जिसकी वह प्रतिज्ञा करता है, {और वही है} जिसने तुम को उसके
पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह के साथ सब कुछ साझा करने के लिए विशेष रूप से चुना है। 10हे मेरे संगी विश्वासियों, तुम जिनको हमारे प्रभु यीशु मसीह ने
अधिकार प्रदान किया है, मैं तुम से {यह कहकर} निवेदन करता हूँ कि तुम सभी एक दूसरे से सहमत रहो। (मैं पूछता हूँ कि) तुम प्रतिद्वंद्वी समूहों में विभाजित
मत हो, परन्तु तुम जो सोचते हो उसमें सहमत होने के द्वारा और जो तुम करने का निर्णय लेते हो, उस पर सहमत होने के द्वारा तुम एक-दूसरे के साथ मेल-
मिलाप करो। 11हे मेरे संगी विश्वासियों, {मैं तुम से इसलिए भी निवेदन करता हूँ} क्योंकि खलोए के {घराने के} कुछ {सदस्यों} ने मुझ से तुम्हारे बारे में बातें की
हैं। {उन्होंने कहा} कि तुम आपस में झगड़ते हो। 12मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ वह यह है कि उदाहरण के लिए, तुम में से कितने लोग दावा करते हैं कि तुम
पौलुस के समूह वाले हो, या कि तुम अपुल्लोस के समूह वाले हो, या कि तुम कैफा के समूह वाले हो, या कि तुम मसीह के समूह वाले हो। 13किसी ने भी मसीह
को टुकड़ों में नहीं बाँटा है{, इसलिए तुम्हें भी टुकड़ों में नहीं बँटना चाहिए}। किसी ने तुम्हारे निमित्त पौलुस को क्रूस पर नहीं चढ़ाया, और किसी ने तुम्हें इसलिए
बपतिस्मा नहीं दिया कि तुम पौलुस के हो जाओ। 14मैं {परमेश्वर का} धन्यवाद करता हूँ कि मैंने {दो व्यक्तियों:} क्रिस्पुस और गयुस को छोड़कर किसी भी ऐसे
व्यक्ति को बपतिस्मा नहीं दिया जो तुम्हारे समूह का है। 15क्योंकि {मैंने तुम में से कुछ लोगों को ही बपतिस्मा दिया है, इसलिए} कोई भी व्यक्ति यह दावा करने
में सक्षम नहीं है कि मैंने तुम को बपतिस्मा दिया है इसलिए तुम मेरे समूह वाले हो। 16अरे हाँ, मुझे स्मरण है कि मैंने स्तिफनास के घर में रहने वालों को भी
बपतिस्मा दिया था। इसके अलावा, मैं नहीं सोचता कि मैंने {तुम्हारे समूह में} किसी अन्य व्यक्ति को बपतिस्मा दिया है। 17{मैंने तुम में से कुछ ही लोगों को
बपतिस्मा दिया} इसका कारण यह है कि मसीह ने मुझे {लोगों} को बपतिस्मा देने का आदेश नहीं दिया। बजाए इसके, {उसने मुझे} शुभ सन्देश सुनाने का
{आदेश दिया है}। और {मैं यह} उन बातों का उपयोग किए बिना {करता हूँ} जो {मानवीय मानकों के अनुसार} बुद्धिमानी की बातें हैं। इस रीति से, मैं क्रूस पर
मरने वाले मसीह {के सन्देश की सामर्थ्य} को नष्ट नहीं करता। 18{मैं बुद्धिमानी की बातों का उपयोग इसलिए नहीं करता,} क्योंकि जो सन्देश मैं क्रूस {पर
मसीह की मृत्यु} के बारे में सुनाता हूँ, वह उन लोगों को मूर्खता लगता है जो स्वयं पर विनाश ला रहे हैं। हालाँकि, परमेश्वर इस सन्देश में होकर शक्तिशाली रूप
से हमारे लिए जिनको वह बचा रहा है कार्य करता है। 19{तुम भी बता सकते हो कि यह सच है,} क्योंकि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखा है, “जिन बुद्धिमानी
की बातों को बुद्धिमान लोग सोचते हैं, मैं उन्हें निष्फल कर दूँगा, और जिन बातों को समझदार लोग बेकार मानते हैं मैं उन्हें समझदारी की बातें बना दूँगा।”
20{तो फिर,} बुद्धिमान लोग वास्तव में बुद्धिमान नहीं होते हैं, और विशेषज्ञ वास्तव में विशेषज्ञ नहीं होते हैं, और जो लोग बहस करने में अच्छे होते हैं वे वास्तव
में इसमें अच्छे नहीं होते हैं, क्योंकि वे सभी वर्तमान सांसारिक प्रणाली से सम्बन्धित होते हैं। {वास्तव में,} परमेश्वर ने यह प्रकट किया है कि इस वर्तमान संसार में
जो बुद्धिमानी की बात लगती है वह बुद्धिमानी का बात बिलकुल भी नहीं है। 21यहाँ बताया गया है कि {परमेश्वर ने यह कैसे किया}। जैसे परमेश्वर ने बुद्धिमानी
से चुनाव किया, वैसे ही अविश्वासियों ने अपनी बुद्धिमानी की सोच से परमेश्वर को नहीं जाना। इसलिए, परमेश्वर ने उन लोगों को बचाने का निर्णय लिया, जो
उस मूर्ख सन्देश के माध्यम से {मसीह पर} विश्वास करते हैं, जिसे विश्वासी लोग सुनाते हैं। 22एक ओर, {बहुत से} यहूदी लोग शक्तिशाली कर्म देखना चाहते हैं।
दूसरी ओर, {बहुत से} यूनानी लोग बुद्धिमानी की सोच की खोज करते हैं। 23हालाँकि, हम यह घोषणा करते हैं कि मसीह क्रूस पर मरा। {बहुत से} यहूदी लोग
{इस सन्देश को} अपमानजनक मानते हैं, और {बहुत से} गैर-यहूदी लोग {सोचते हैं कि यह सन्देश} मूर्खता है। 24हालाँकि, हम जिनको परमेश्वर ने चुना है, चाहे
{हम} यहूदी {लोग} हों या यूनानी {लोग}, हम ने सीखा है कि परमेश्वर मसीह {के बारे में इस सन्देश} के माध्यम से शक्तिशाली रूप से और बुद्धिमानी से काम
करता है। 25{ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर जो करता है वह मूर्खता लगता है, परन्तु वह मनुष्य {जो कुछ भी करता है} उसकी तुलना में बहुत बुद्धिमानी है,
और परमेश्वर जो करता है वह निर्बल लगता है, परन्तु वह मनुष्य {जो कुछ भी करता है} उसकी तुलना में बहुत बलवान है। 26हे संगी विश्वासियों, {सबूत के लिए
कि यह ऐसा ही है,} इस तथ्य के बारे में विचार करो कि परमेश्वर ने तुम्हें वैसे ही चुना है {जैसे तुम हो}। मानवीय दृष्टिकोण से, तुम में से अधिकांश ने बुद्धिमानी
से विचार नहीं किया, शक्तिशाली कर्म नहीं किए, {या} महत्वपूर्ण परिवारों से सम्बन्धित नहीं हो। 27बजाए इसके, मनुष्यों को जो बात मूर्खता लगती है परमेश्वर
ने उसे ही उपयोग में लाने का निर्णय लिया ताकि उन लोगों को विनम्र बनाए जो बुद्धिमानी से सोचते हैं। मनुष्यों को जो बात निर्बल लगती है परमेश्वर ने उसे ही

उपयोग में लाने का निर्णय लिया ताकि उन लोगों को और वस्तुओं को विनम्र बनाए जो शक्तिशाली रूप से कार्य करते हैं। **28**लोगों को जो बातें महत्वहीन लगती
हैं और जिन्हें लोग तुच्छ समझते हैं परमेश्वर ने उनको ही उपयोग में लाने का निर्णय लिया। {यह ऐसा है कि जैसे} ये वस्तुएँ अस्तित्व में {भी} नहीं हैं, {परन्तु
परमेश्वर ने उनको ही उपयोग में लाने का निर्णय इसलिए लिया} ताकि उन वस्तुओं को निरर्थक ठहराए जिनके बारे में हर कोई जानता है। **29**{परमेश्वर ने ये काम
इस लक्ष्य के साथ किए} कि कोई भी मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें न बोले। **30**यह परमेश्वर ही है जिसने तुम्हें यीशु मसीह के साथ
एकजुट किया है। मसीह के माध्यम से कार्य करके, परमेश्वर ने हमें बुद्धिमान बनाया है। उसने हमें निर्दोष घोषित किया है, और हमें उसके लोग होने के लिए चुना
है, और हमें {बुरी शक्तियों से} छुड़ाया है। **31**इसलिए, {क्योंकि परमेश्वर ही वह है जो इन सब कामों को करता है, हमें वह करना चाहिए जो} यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता ने लिखा है: "यदि लोग किसी के बारे में बड़ी-बड़ी बातें बोलना चाहते हैं, तो उन्हें यहोवा के बारे में उन महान बातों को बोलना चाहिए।"

Chapter 2

1हे मेरे संगी विश्वासियों, मैंने भी {इसी तरीके के अनुसार उस समय कार्य किया था} जब मैं तुम से मिलने आया था और तुम को उस बारे में बताया था जो
परमेश्वर ने अब हम पर प्रकट किया है। मैंने दूसरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली रीति से बातें नहीं कीं। मैंने दूसरों की तुलना में अधिक बुद्धिमानी से बहस
नहीं की। **2**{मैंने ऐसा इसलिए किया} क्योंकि मैंने {बोलने और कार्य करने के लिए मानो} केवल उन बातों को ही चुना था जो मैंने तब समझी थीं जब मैं तुम्हारे
साथ था, कि कैसे तुम यीशु मसीह के साथ थे और क्रूस पर उसकी मृत्यु कैसे हुई थी। **3**जब मैं तुम्हारे साथ रह रहा था तब मैंने भी {इस तरीके के अनुसार जीवन
व्यतीत किया}। मैं बीमार था, मैं भयभीत था, और मैं बार-बार काँपता और थरथराता था। **4**जब मैंने {तुम से} बातें कीं और अपना सन्देश {तुम्हारे साथ} साझा
किया तो मैंने बुद्धिमानी से और प्रेरक रूप से {मानवीय मानकों के अनुसार} बातें नहीं कीं। बजाए इसके, मैंने साबित किया कि {जब मैंने अपना सन्देश साझा
किया तो मेरे माध्यम से} परमेश्वर का आत्मा सामर्थी रूप से काम करता है। **5**{मैंने अपना सन्देश इस रीति से साझा किया} ताकि तुम {परमेश्वर पर} भरोसा
करो क्योंकि वह सामर्थी रूप से कार्य करता है, इसलिए नहीं कि मनुष्यों ने {तुम से} बुद्धिमानी की बातें कीं। **6**{मैंने जो कहा है,} उसके बावजूद हम {जो शुभ
सन्देश का प्रचार करते हैं} उस समय बुद्धिमानी के साथ बोलते हैं जब हम आत्मिक रूप से परिपक्व लोगों के साथ होते हैं। हालाँकि, जो लोग केवल मानवीय
रीति से सोचते हैं और जो लोग इस समय पर शासन करते हैं, उनको यह नहीं लगता कि हम बुद्धिमानी से बातें करते हैं। {शीघ्र ही,} ये लोग आगे को शासन नहीं
करेंगे। **7**नहीं, हम बुद्धिमानी के साथ बातें इसलिए करते हैं {क्योंकि हम उन बातों की घोषणा करते हैं} जो परमेश्वर ने हम पर प्रकट की हैं। परमेश्वर ने इन बातों
को {अब तक} छिपाए रखा था, यद्यपि उसने किसी भी वस्तु की सृष्टि करने से पहले ही उन बातों को करने का निर्णय कर लिया था। {उसने यह सब इसलिए
किया} ताकि वह हमारा आदर करे। **8**जो लोग इस समय पर शासन करते हैं, उन्होंने इन बुद्धिमानी की बातों के बारे में नहीं जाना। {तुम बता सकते हो कि} वे
इसलिए नहीं जानते, क्योंकि उन्होंने हमारे महिमामय प्रभु को क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। **9**बजाए इसके, {जिस रीति से उन्होंने कार्य किया} वह भविष्यवक्ता
यशायाह ने जो लिखा है उसके साथ उपयुक्त बैठता है: "जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उसने उन लोगों के लिए ऐसी बातों को तैयार किया है जिनको पहले
किसी ने नहीं देखा और ऐसी बातें जिनके बारे में पहले किसी ने नहीं सुना और ऐसी बातें जिनकी किसी मनुष्य ने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी।"
10परमेश्वर ने ये बातें हमें {परमेश्वर की} आत्मा {की सामर्थ्य} के द्वारा बताई हैं। {परमेश्वर अपनी आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा इसलिए कार्य करता है} क्योंकि
परमेश्वर का आत्मा सभी लोगों और बातों की खोज करता है। वह परमेश्वर के बारे में ऐसी बातों की भी खोज करता है जिन्हें समझना अत्यन्त कठिन है।
11{परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर के बारे में सब बातों की खोजता है तुम यह इसलिए बता सकते हो,} क्योंकि हर कोई जानता है कि प्रत्येक मनुष्य ही केवल
अपने बारे में सब कुछ समझता है। उसी रीति से, केवल परमेश्वर का आत्मा ही परमेश्वर के बारे में सब कुछ समझता है। **12**हम ने वास्तव में वह आत्मा प्राप्त
किया है जो परमेश्वर की ओर से मिलता है। हमें ऐसा आत्मा नहीं मिला जो वर्तमान संसार से सम्बन्धित है। {हम ने परमेश्वर का आत्मा इसलिए प्राप्त किया}
ताकि हम वह सब कुछ समझ सकें जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है। **13**हम भी इन्हीं बातों के बारे में बात करते हैं। हम उन बातों का उपयोग नहीं करते
जिनको मनुष्य बुद्धिमानी के साथ सिखाते हैं। बजाए इसके, हम उन बातों का उपयोग करते हैं जो आत्मा सिखाता है, ताकि हम आत्मिक बातों के साथ
आत्मिक सत्य की व्याख्या कर सकें। **14**अब, जिन लोगों के पास परमेश्वर का आत्मा नहीं है, वे उन बातों को अस्वीकार कर देते हैं जिनको परमेश्वर का आत्मा
देता है और सिखाता है। {वे इन बातों को इसलिए अस्वीकार कर देते हैं,} क्योंकि वे सोचते हैं कि वे मूर्खता की बातें हैं। वे उन बातों के बारे में नहीं जान सकते
{जिनको परमेश्वर का आत्मा देता है और सिखाता है,} क्योंकि जिनके पास परमेश्वर का आत्मा है, केवल वे लोग ही उनके बारे में सही न्याय कर सकते हैं।
15दूसरी ओर, जिन लोगों के पास परमेश्वर का आत्मा है, वे हर बात के बारे में सही न्याय {कर सकते हैं}। हालाँकि, कोई भी {दूसरा} व्यक्ति उनके बारे में सही
न्याय नहीं {कर सकता है}। **16**{पवित्रशास्त्र जो कहता है} यह उसके साथ उपयुक्त बैठता है: "कोई भी मनुष्य नहीं जानता कि प्रभु क्या सोच रहा है। कोई भी
मनुष्य उसे किसी बात के बारे में नहीं सिखा सकता है।" हालाँकि, हम उन बातों को सोच सकते हैं जिनको मसीह सोच रहा है।

Chapter 3

1हे मेरे संगी विश्वासियों, {जब मैं तुम्हारे पास आया था, तब} मैं तुम को उस रीति से सिखाने में असमर्थ था जिस रीति से मैं उन लोगों को सिखाता था जिनके
पास परमेश्वर का आत्मा है। बल्कि, {मुझे तुम को} उस रीति से सिखाना था जिससे मैं उन लोगों को सिखाऊँगा जो केवल मानवीय तरीकों से सोचते हैं। {मुझे
यह इसलिए करना पड़ा} क्योंकि तुम ने अपरिपक्व तरीके से मसीह पर विश्वास किया है। **2**मैंने तुम को सरल बातों के बारे में सिखाया। मैंने तुम्हें जटिल बातों के
बारे में नहीं सिखाया। {मैंने यह इसलिए किया} क्योंकि तुम जटिल शिक्षाओं के लिए तैयार नहीं थे। वास्तव में, तुम अभी भी जटिल शिक्षाओं के लिए तैयार नहीं
हो। **3**{तुम जटिल शिक्षाओं के लिए तैयार नहीं हो, यह मैं इसलिए जानता हूँ} क्योंकि तुम अभी भी ऐसे लोग हो जो केवल मानवीय तरीकों से सोचते हैं। तुम में
से कुछ एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, और तुम में से कुछ एक दूसरे से लड़ रहे हैं। जब तुम इन कामों को करते हो, तो इससे यह साबित होता है कि तुम ऐसे लोग
हो जो केवल मानवीय तरीकों से सोचते हैं और जो केवल मानवीय तरीकों से कार्य करते हैं। **4**इसके अलावा, तुम में से कुछ लोग दावा कर रहे हैं कि उदाहरण के

लिए, तुम पौलुस के समूह वाले हो, या यह कि तुम अपुल्लोस के समूह वाले हो। जब तुम इस प्रकार के दावे करते हो, तो इससे यह साबित होता है कि तुम
केवल मानवीय तरीकों से सोच रहे हो और काम कर रहे हो। 5तुम को यह समझने की आवश्यकता है कि अपुल्लोस और मैं, अर्थात पौलुस, केवल ऐसे लोग हैं
जो {मसीह की} सेवा करते हैं। हम में से प्रत्येक वही काम करता है जिसे करने के लिए प्रभु ने हमें नियुक्त किया है। जब हम ने तुम को मसीह के बारे में बताया,
तब तुम ने उस पर भरोसा किया था{, हम पर नहीं}। 6{परमेश्वर ने} मुझे सबसे पहले तुम को शुभ सन्देश सुनाने के लिए नियुक्त किया। मैं तो उस व्यक्ति के
समान था जो बीज बोता है। {परमेश्वर ने} अपुल्लोस को तुम्हें शुभ सन्देश के बारे में और भी अधिक प्रचार करने के लिए नियुक्त किया। वह उस व्यक्ति के
समान था जो बीजों को सींचता है {ताकि वे बढ़ें}। हालाँकि, परमेश्वर ने तुम को स्वयं शुभ सन्देश पर विश्वास करने और उसे समझने में सक्षम बनाया है। उसी
रीति से, पौधों को बढ़ाने वाला जन वही है। 7तुम देख सकते हो कि जो व्यक्ति सबसे पहले लोगों को शुभ सन्देश सुनाता है, वह महत्वपूर्ण नहीं है। वह व्यक्ति
जो लोगों को शुभ सन्देश के बारे में और भी अधिक प्रचार करता है, वह भी महत्वपूर्ण नहीं है। ये लोग उन लोगों के समान हैं जो बीज बोते हैं और जो पौधों को
सींचते हैं, फिर भी वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। बजाए इसके, वह परमेश्वर ही है जो महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लोगों को शुभ सन्देश पर विश्वास करने और समझने में
सक्षम बनाता है। उसी रीति से, वह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वही पौधों को बढ़ाता है। 8वास्तव में, जो व्यक्ति सबसे पहले लोगों को शुभ सन्देश सुनाता
है और जो व्यक्ति लोगों को शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करता है, उनके लक्ष्य एक जैसे ही होते हैं। वे उस व्यक्ति के समान हैं जो बीज बोता है
और जो पौधों को सींचता है, उनके लक्ष्य भी एक जैसे ही होते हैं। परमेश्वर उन लोगों को पुरस्कार देगा जो इन दोनों में से कोई भी कार्य करते हैं। {वह उन्हें इस
रीति से पुरस्कार देगा} जो उस काम के लिए उपयुक्त है जो उन्होंने किया है। 9हम सब लोग {जो शुभ सन्देश सुनाते हैं} परमेश्वर के लिए काम करते हैं, परन्तु
तुम परमेश्वर के हो। यह ऐसा है कि मानो तुम खेत की भूमि हो जिसका स्वामी परमेश्वर है{, जिसमें हम ने बीज बोए और सींचे}। वास्तव में, यह ऐसा है कि मानो
तुम एक ऐसा घर हो जिसका स्वामी परमेश्वर है। 10परमेश्वर ने मुझे सबसे पहले तुम्हें बुद्धिमानी के साथ शुभ सन्देश सुनाने का कौशल प्रदान किया। मैं उस
निर्माण करने वाले मालिक के समान हूँ जो घर बनाने से पहले भूमि में नींव डालता है। {अपुल्लोस जैसे} दूसरे लोग, तुम्हें शुभ सन्देश के बारे में और अधिक
प्रचार करते हैं। वे उन अन्य राजमिस्त्रियों के समान हैं जो उस नींव के ऊपर एक घर बनाते हैं। अंत में, वे सभी लोग जो शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार
करते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ठीक रीति से इसका प्रचार करें। उन्हें उन राजमिस्त्रियों के समान होना चाहिए जो नींव के ऊपर सही तरीके से
घर बनाते हैं। 11कोई भी व्यक्ति तब उस भूमि में नींव नहीं डाल सकता यदि किसी दूसरे व्यक्ति ने पहले ही उस भूमि में नींव डाल रखी हो। वैसे ही, कोई भी
और जन सबसे पहले तुम्हें शुभ सन्देश इसलिए सुना नहीं सकता, क्योंकि मैं तो पहले ही ऐसा कर चुका हूँ। मैंने तुम पर जो प्रचार किया है वह वही है {जो} यीशु
मसीह {ने पूरा कर दिया है}। यीशु के बारे में यह सन्देश किसी घर की नींव के समान है। 12राजमिस्त्री जब किसी घर की नींव पर निर्माण करते हैं तो वे कई
अलग-अलग निर्माण सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। वे {अधिक टिकाऊ सामग्री जैसे} सोना, चाँदी, और जवाहरात, {और कम टिकाऊ सामग्री जैसे} लकड़ी,
घास और पुआल का उपयोग कर सकते हैं। उसी रीति से, जो लोग शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करते हैं, उनमें से कुछ लोग ऐसी बातें सिखाते हैं
जो परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करती हैं। दूसरे लोग ऐसी बातें सिखाते हैं जो परमेश्वर को कम प्रसन्न करती हैं। 13जिस दिन मसीह सब का न्याय करने को
लौटेगा, तब वह प्रकट करेगा कि प्रत्येक व्यक्ति ने किस प्रकार का कार्य किया है। भवन में आग लगने पर राजमिस्त्री द्वारा भवन निर्माण में उपयोग की जाने
वाली सामग्री की गुणवत्ता स्पष्ट हो जाती है। उसी रीति से, जब मसीह वापस लौटेगा उस दिन आग के समान न्याय होगा। यह न्याय उन बातों की गुणवत्ता को
प्रकट करेगा जो शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करने वालों ने सिखाई हैं। 14कोई भी राजमिस्त्री जिसने आग से बचने वाले भवन का निर्माण किया,
उसे सम्मान और धन मिलता है। उसी रीति से, परमेश्वर उन सभी को सम्मान और पुरस्कार देगा जो शुभ सन्देश के बारे में उस प्रकार से और अधिक सिखाते हैं,
जिसे सभी का न्याय करते समय परमेश्वर स्वीकार करता है। 15कोई भी राजमिस्त्री जिसने ऐसे भवन का निर्माण किया हो जिसे आग भस्म कर दे, तो वह
सम्मान और धन खो देता है। हालाँकि, वे राजमिस्त्री आग में नहीं मरते, बल्कि आग की लपटों से बच जाते हैं। उसी रीति से, जब परमेश्वर सभी का न्याय करता
है, तो वह उन सभी को सम्मान या पुरस्कार नहीं देगा जो शुभ सन्देश के बारे में उस प्रकार से और अधिक सिखाते हैं, जिसे परमेश्वर स्वीकार नहीं करता।
हालाँकि, परमेश्वर अभी भी इन शिक्षकों को उनके द्वारा सिखाई गई गलत बातों के बावजूद स्वीकार करेगा। 16तुम को यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि
तुम यरूशलेम में स्थित परमेश्वर के मन्दिर के समान हो {क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे मध्य में वैसे ही उपस्थित है जैसे वह मन्दिर में उपस्थित था}। तुम को यह स्मरण
रखने की आवश्यकता है कि तुम उस घर के समान हो जिसमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है {क्योंकि वह हमेशा तुम्हारे साथ उपस्थित है}। 17जो कोई उसके
मन्दिर के विरुद्ध काम करेगा, परमेश्वर उस व्यक्ति के विरुद्ध कार्यवाही करेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर केवल उसी का है। {चूँकि} तुम
परमेश्वर के मन्दिर के समान हो{, इसलिए परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के विरोध में कार्रवाई करेगा}। 18जो बात तुम्हारे बारे में सच
नहीं है उस पर विश्वास न करना। तुम जो स्वयं को मानवीय मानकों के अनुसार बुद्धिमान समझते हो, तुम्हें (मानवीय मानकों के अनुसार) मूर्ख बन जाना चाहिए।
इस रीति से, तुम {वास्तव में} बुद्धिमान मनुष्य बन जाओगे। 19{मैं ये बातें इसलिए बोलता हूँ} क्योंकि जिन बातों को मनुष्य बुद्धिमानी समझते हैं, वे ऐसी बातें हैं
जिन्हें परमेश्वर मूर्खता मानता है। {तुम जानते हो कि यह सच है} क्योंकि अय्यूब की पुस्तक के लेखक ने लिखा है, “वह परमेश्वर ही है जो उन चतुर युक्तियों को
बाधित करता है जिनकी योजना बुद्धिमान लोग बनाते हैं।” 20इसके अलावा, {एक भजनकार ने लिखा}, “प्रभु हर उस बात से अवगत है जिसकी योजना
बुद्धिमान लोग बनाते हैं, {और वह जानता है} कि ये योजनाएँ सफल नहीं होंगी।” 21इसलिए, तुम में से किसी को भी इस बात पर घमण्ड नहीं करना चाहिए कि
{तुम अन्य लोगों का अनुसरण कैसे करते हो}। {मैं यह इसलिए कहता हूँ} क्योंकि तुम्हारे पास सब कुछ है{, इसलिए दूसरे मनुष्यों का अनुसरण करने के बारे में
गर्व करना मूर्खता है}। 22तुम्हारे पास पौलुस, अपुल्लोस और पतरस {जैसे अगुवे} हैं। तुम्हारे पास वह सब कुछ है जो परमेश्वर ने बनाया है, तुम जीवन व्यतीत
करते हुए {नहीं डरते}, और जब तुम मर जाते हो {तो तुम आराम पा सकते हो}। तुम्हारे पास वह सब कुछ है जो अभी अस्तित्व में है और वह सब कुछ भी जो
भविष्य में अस्तित्व में आएगा। वास्तव में, तुम्हारे पास सब कुछ है। 23इसके अलावा, मसीह के पास तुम हो, और परमेश्वर के पास मसीह है।

Chapter 4

1मैं चाहता हूँ कि लोग हमें वे समझें {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} अर्थात वे लोग जो मसीह की सेवा करते हैं और उस बात का प्रचार करने वाले प्रभारी हैं
जो परमेश्वर ने अब हम पर प्रकट की है। 2जब भी कोई अगुवा किसी अन्य व्यक्ति को प्रभारी बनाता है, तो वह अगुवा उस व्यक्ति से अपने कामों को
विश्वासयोग्यता से करने की अपेक्षा करता है। {उसी रीति से, परमेश्वर भी चाहता है कि हम जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं, अपना काम विश्वासयोग्यता से

करें।} 3मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तुम या कोई अन्य मानवीय अधिकारी क्या निर्णय लेते हैं {इस बारे में कि मैंने विश्वासयोग्यता से काम किया है या
नहीं}। वास्तव में, मैं इस बात की भी चिन्ता नहीं करता कि मैं स्वयं क्या निर्णय लेता हूँ {इस बारे में कि मैंने विश्वासयोग्यता से काम किया है या नहीं}। 4वास्तव
में, मैंने जो कुछ भी गलत किया है, उसके बारे में मैं नहीं जानता। हालाँकि, जो मैं अपने बारे में जानता हूँ वह यह साबित नहीं करता कि मैंने विश्वासयोग्यता से
काम किया है। बल्कि, वह प्रभु ही है जो निर्धारित करेगा {कि मैंने विश्वासयोग्यता से काम किया है या नहीं}। 5इसलिए फिर, जब तक प्रभु {सब लोगों का और
सब बातों का न्याय करने के लिए} वापस नहीं आ जाता, तब तक तुम्हें किसी भी बात के बारे में अंतिम निर्णय नहीं लेना चाहिए। जो अभी छिपा हुआ है उसे
वही स्पष्ट करेगा, और वह हर एक जन पर उस बात को प्रकट करेगा जो प्रत्येक व्यक्ति चाहता है और जिसकी योजना बनाता है। उस समय, परमेश्वर उस
प्रत्येक व्यक्ति की बड़ाई करेगा {जिसने विश्वासयोग्यता से काम किया है}। 6हे मेरे संगी विश्वासियों, मैंने तुम्हारे ही लाभ के लिए अपने और अपुल्लोस के विषय
में इस रीति से बात की है। मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे उदाहरण से सीखो कि तुम्हें केवल उन तरीकों से ही काम करना चाहिए जो पवित्रशास्त्र के लेखकों ने लिखे
हैं। उस समय, कोई एक अगुवे के बारे में अच्छी बातें और दूसरे अगुवे के बारे में बुरी बातें नहीं कहेगा। 7किसी ने भी तुम्हें {हर दूसरे विश्वासी से} अलग नहीं
किया है। वास्तव में, जो तुम्हारे पास है वह सब कुछ परमेश्वर ने तुम को दिया है। चूँकि ये वस्तुएँ परमेश्वर की ओर से वरदान हैं, इसलिए तुम्हें घमण्ड के साथ यह
नहीं कहना चाहिए कि तुम ने स्वयं उन्हें अर्जित किया है। 8{तुम तो ऐसे अभिनय कर रहे हो कि मानो} वर्तमान में तुम्हारे पास वह सब कुछ है जिसकी तुम्हें
आत्मिक रूप से आवश्यकता है। {तुम तो ऐसे अभिनय कर रहे हो कि मानो} तुम्हारे पास वर्तमान में आवश्यकता से अधिक आत्मिक आशीषें हैं। {तुम तो ऐसे
अभिनय कर रहे हो कि मानो} तुम ने वर्तमान में मसीह के साथ शासन करना आरम्भ कर दिया है, भले ही हम {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} अभी मसीह
के साथ शासन नहीं कर रहे हैं। सचमुच, मैं चाहता हूँ कि तुम वास्तव में उसके साथ शासन करो, ताकि हम {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} तुम्हारे साथ
शासन कर सकें। 9{यह सोचने के बजाए कि हम अब मसीह के साथ शासन करते हैं}, मैं हम प्रेरितों को ऐसे लोग मानता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने अपमान सहने
और मरने के लिए नियुक्त किया है। हम सार्वजनिक रूप से अपमान सहते हैं और मर जाते हैं, और जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है, जिसमें आत्मिक प्राणी
और मनुष्य भी शामिल हैं, हमें देख सकते हैं। 10हम मूर्ख लोग इसलिए {प्रतीत} होते हैं क्योंकि हम मसीह की सेवा करते हैं, परन्तु {तुम सोचते हो कि} तुम
बुद्धिमान लोग इसलिए हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें मसीह के साथ एकजुट करता है। हम ऐसे लोग {प्रतीत} होते हैं जिनके पास शक्ति या प्रभाव नहीं है, परन्तु
{तुम्हें लगता है कि} तुम्हारे पास ये वस्तुएँ हैं। {तुम्हें लगता है कि} लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं, परन्तु वही लोग हमें लज्जित करते हैं। 11अब भी {जब मैं यह
पत्री तुम्हें लिखता हूँ}, हम ने {जिन्हें मसीह ने भेजा है} अक्सर न पर्याप्त भोजन खाया है और न पानी पिया है। हम फटे-पुराने कपड़े पहनते हैं, और दूसरे लोग
हम पर बार-बार प्रहार करते हैं। हम लगातार यात्रा करते हैं और घर नहीं लौटते। 12हम {जीविका कमाने के लिए} शारीरिक श्रम करते हैं। जब लोग हम से बुरी
बातें बोलते हैं तो हम उनके बारे में अच्छी बातें कहते हैं। जब लोग हमें चोट पहुँचाते हैं {इसलिए क्योंकि हम मसीह की सेवा करते हैं}, तो हम धैर्यपूर्वक इसमें
होकर जीवन व्यतीत करते हैं। 13जब लोग हमारे बारे में बुरी बातें बोलते हैं, तो हम उन्हें प्रोत्साहित करने वाली बातें कहते हैं। मानवीय दृष्टिकोण से, हम गंदे
कचरे के समान बेकार हैं जिसे कोई फेंक दे। {ये सभी बातें हमारे बारे में सच हैं} इस समय पर भी {जब मैं तुम्हें यह पत्री लिखता हूँ}। 14जो कुछ मैंने अभी
कहना समाप्त किया है उसे मैं अपनी पत्री में इसलिए शामिल नहीं करता क्योंकि मैं तुम्हें लज्जित करना चाहता हूँ। बल्कि, {मैं इन बातों को इसलिए शामिल
करता हूँ} क्योंकि मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहता हूँ, क्योंकि तुम मेरे अपने बालकों के समान हो, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। 15जब मैंने सबसे पहले तुम्हें शुभ सन्देश
सुनाया, और परमेश्वर ने तुम्हें यीशु मसीह के साथ एकजुट कर दिया, तो मैं तुम्हारा आत्मिक पिता बन गया। इसलिए, भले ही तुम्हारे लाखों शिक्षक रहे हों
जिन्होंने तुम्हें मसीह के साथ जुड़कर रहने में सहायता की हो, फिर भी मैं तुम्हारा एकमात्र आत्मिक पिता होऊँगा। 16क्योंकि {मैं तुम्हारा आत्मिक पिता हूँ
इसलिए}, मैं तुम से विनती करता हूँ कि जैसे मैं जीवन व्यतीत करता हूँ तुम उसका अनुकरण करो। 17क्योंकि {मैं चाहता हूँ कि तुम मेरा अनुकरण करो
इसलिए}, मैंने तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा। वह मेरे अपने बालक के समान है, और मैं उससे प्रेम करता हूँ। वह विश्वासयोग्यता से उस व्यक्ति के समान
{मसीह की सेवा करता है} जिसे परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है। वह तुम्हें फिर से सिखाएगा कि मैं कैसे उस व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ जिसे
परमेश्वर ने मसीह यीशु के साथ एकजुट किया है। मैं हर जगह हर कलीसिया को {जिनमें मैं जाता हूँ} निर्देश देता हूँ कि इन तरीकों से व्यवहार करो। 18तुम में से
कुछ लोग तुम्हारे बारे में बड़ी-बड़ी बातें कह रहे हैं। ये लोग ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो मैं तुम से मिलने आने वाला नहीं था। 19हालाँकि, मैं अति शीघ्र ही तुम
से मिलने आऊँगा, जब तक कि {मेरे ऐसा करने को} प्रभु की इच्छा हो। मुझे पहले से ही पता है कि ये लोग जो अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहते हैं, वे क्या
दावा करते हैं। {जब मैं तुम से मिलने आऊँगा}, तब मैं जानूँगा कि वे वास्तव में शक्तिशाली हैं या नहीं। 20{मैं यह इसलिए करूँगा} क्योंकि परमेश्वर का राज्य
परमेश्वर के द्वारा कार्य करता है, जो लोगों के माध्यम से सामर्थी रूप से कार्य करता है, न कि लोगों द्वारा बड़ी-बड़ी बातें कहने के द्वारा। 21जब तुम चुनाव करते
हो कि मैं जो कह रहा हूँ उस पर तुम कैसी प्रतिक्रिया दोगे, तो तुम यह चुनाव भी कर रहे हो कि {जब मैं मिलने आऊँगा} तो मैं कैसे कार्य करूँगा। जब मैं तुम से
मिलने आऊँगा, तब या तो मैं तुम्हें कठोरता से अनुशासित कर सकता हूँ {इसलिए क्योंकि तुम ने सुना नहीं}, या मैं कोमलता से और प्रेम से कार्य कर सकता हूँ
{इसलिए क्योंकि तुम ने सुन लिया है}।

Chapter 5

1मुझे मालूम हुआ है कि तुम वास्तव में अपने समूह के लोगों को अनुचित यौन सम्बन्ध बनाने की अनुमति दे रहे हो। यहाँ तक कि जो लोग परमेश्वर की आराधना
नहीं करते, वे भी उन कुछ बातों की अनुमति नहीं देते जिनकी तुम अनुमति देते हो। {सबसे बुरी बात जो मुझे मालूम हुई} वह यह है कि तुम्हारे समूह का एक
पुरुष अपनी सौतेली माता के साथ यौन सम्बन्ध बना रहा है। 2{इसके बावजूद,} {उस पाप} पर विलाप करने के बजाए तुम अभी भी अपने बारे में बड़ी-बड़ी
बातें बोलते हो। इस यौनाचार के पाप को करने वाले पुरुष को निष्कासित करने के लक्ष्य को निर्धारित करके {तुम्हें विलाप करना चाहिए था}। 3{तुम्हें उसे
निष्कासित इसलिए करना चाहिए} क्योंकि मैंने पहले से ही उस पुरुष को दोषी घोषित कर दिया है जिसने यह दुष्ट काम किया है। यद्यपि मैं शारीरिक रूप से
तुम्हारे साथ नहीं हूँ, परन्तु मैं तुम्हारे बारे में विचार करता हूँ और तुम्हारी चिन्ता करता हूँ। {इसलिए, जब मैं इस पुरुष को दोषी घोषित करता हूँ, तो यह उतना ही
मान्य है} कि मानो मैं तुम्हारे साथ था। 4जब तुम इकट्ठे होते हो, और मैं तुम्हारे विषय में विचार करता हूँ, तो हम अपने प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं।
{जब तुम इस रीति से इकट्ठे होते हो, तो तुम्हें इस पुरुष को दण्डित करना चाहिए} जैसा करने के लिए हमारा प्रभु यीशु तुम को अधिकृत करता है। 5तुम्हें इस
पुरुष को निष्कासित कर देना चाहिए ताकि शैतान उस पर शासन करे। वह उसके पापी अंगों को नष्ट कर देगा, और जब प्रभु लौटेगा तब परमेश्वर उसे बचाएगा।

6अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहना सही काम नहीं है। निश्चय ही तुम जानते हो कि बुरे काम करने वाला एक व्यक्ति ख़मीरी आटे के समान होता है। थोड़ा सा ख़मीरी आटा भी पूरे गूँधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है, और एक व्यक्ति भी बुरे काम करने से सम्पूर्ण कलीसिया को दोषी बना देता है। 7जिस प्रकार यहूदी {फसह के पर्व के दौरान} अपने घरों से ख़मीर निकाल देते हैं, उसी प्रकार से जो कोई बुरे काम करता है, उसे तुम्हें अपने समूह से निकाल देना चाहिए। तब, तुम पाप से ऐसे स्वतंत्र हो जाओगे, जैसे ताजा, अख़मीरी आटा ख़मीर से स्वतंत्र होता है। वास्तव में, तुम ऐसे समय में रह रहे हो जो फसह के पर्व के समान है। {ऐसा इसलिए है क्योंकि} मसीह तुम्हारे लिए ठीक उसी प्रकार से मर गया, जैसे वह मेम्ना जिसे यहूदी लोग फसह के पर्व के दौरान बलिदान चढ़ाते हैं, यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे बचाया। 8क्योंकि {मसीह हमारे लिए मरा इसलिए}, आओ हम ऐसा व्यवहार करें कि मानो हम फसह के पर्व में भाग ले रहे हों और पुराने ख़मीर को हटा दें। हमें उस ख़मीर से छुटकारा पाना है, जिसका अर्थ बुराई और दुष्टता के काम करना है। बजाए इसके, हमें बिना अख़मीरी रोटी खानी है, जिसका अर्थ ईमानदार और विश्वसनीय काम करना है। 9उस पत्री में {जो मैंने तुम्हें इससे पहले भेजी थी}, मैंने तुम से कहा था कि तुम ऐसे लोगों के साथ संगति न करो जो यौनाचार में अनुचित तरीकों से व्यवहार करते हैं। 10{मेरे कहने का अर्थ यह} नहीं {था कि तुम्हें} पूर्णरूप से ऐसे अविश्वासी लोगों के साथ {संगति करना छोड़ देना} चाहिए जो यौनाचार में अनुचित तरीकों से व्यवहार करते हैं, या ऐसे लोगों के साथ जो आवश्यकता से अधिक की चाह करते हैं या जो दूसरों को धोखा देते हैं, या ऐसे लोगों के साथ जो झूठे देवताओं की उपासना करते हैं। इस प्रकार के लोगों से बचने के लिए तो तुम्हें सम्पूर्ण संसार से ही दूर जाना पड़ेगा। {यह वह बात नहीं है जो मैंने तुम्हें करने की आज्ञा दी है।} 11अब, इस पत्री में, मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ संगति न रखना जिसे तुम एक संगी विश्वासी कहते हो और जो पापी व्यवहार कर रहा है। इसमें अनुचित यौन सम्बन्ध बनाना, एक से अधिक आवश्यकताओं की इच्छा करना, अन्य देवताओं की उपासना करना, दूसरों को बातों में गाली देना, नशे में होना और दूसरों से धोखा करना शामिल है। ऐसे व्यक्ति के साथ तो भोजन भी न करना जो इन कामों में से कुछ भी करता हो। 12{मैं चाहता हूँ कि तुम केवल संगी विश्वासियों के साथ इस रीति से व्यवहार करो,} क्योंकि {तुम्हें और} मुझे यह निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं है कि कोई व्यक्ति जो हमारे समूह का भाग नहीं है, वह दोषी है या निर्दोष। बल्कि, तुम्हें यह निर्धारित करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि जो लोग तुम्हारे समूह के भाग हैं, वे दोषी हैं या निर्दोष। 13{उन लोगों के बारे में चिन्ता न करना जो तुम्हारे समूह का भाग नहीं हैं क्योंकि} वह परमेश्वर ही है जो निर्धारित करता है कि वे दोषी हैं या निर्दोष। {तुम्हें उन लोगों पर ध्यान देना है जो तुम्हारे समूह का भाग हैं क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है,} “तुम्हें ऐसे किसी भी बुरे व्यक्ति से छुटकारा पाना है जो तुम्हारे समूह का भाग है!”

Chapter 6

1जब तुम्हारे समूह का कोई जन तुम्हारे समूह के किसी अन्य व्यक्ति के साथ झगड़ा करता है, तो तुम्हें कभी भी {सार्वजनिक अदालत में} उन लोगों के सामने झगड़ा नहीं निपटाना चाहिए जो विश्वास नहीं करते हैं। बल्कि, ऐसे लोगों के मध्य में {तुम्हें झगड़े को अकेले में निपटाना चाहिए} जिन्हें परमेश्वर ने अपने लिए अलग किया है। 2निश्चय ही तुम जानते हो कि जिन लोगों को परमेश्वर ने अपने लिये अलग किया है, वे ही निर्धारित करेंगे कि परमेश्वर ने जो वस्तुएँ और लोग बनाए हैं, वे दोषी हैं या निर्दोष। चूँकि तुम ही निर्धारित करोगे कि ये सब वस्तुएँ और लोग दोषी हैं या निर्दोष, इसलिए तुम निश्चित रूप से {अपने समूह के भीतर} छोटे-छोटे झगड़ों के बारे में निर्णय ले सकते हो। 3तुम्हें यह समझने की आवश्यकता है कि हम ही निर्धारित करेंगे कि स्वर्गदूत निर्दोष हैं या दोषी। {चूँकि हम ही ऐसा करेंगे, इसलिए} हम निश्चित रूप से अपने वर्तमान जीवन से सम्बन्धित विवादों के बारे में निर्णय लेने में सक्षम हैं। 4इसलिए, जब भी तुम अपने वर्तमान जीवन के सम्बन्ध में एक दूसरे के साथ झगड़ा करते हो, तो तुम्हें उन लोगों को जो तुम्हारे विश्वासियों के समूह का भाग नहीं हैं, यह निर्धारित करने के लिए नहीं चुनना चाहिए कि कौन दोषी है और कौन निर्दोष है। 5जो कुछ मैंने अभी कहा है उसे मैं इसलिए शामिल करता हूँ ताकि तुम्हें लज्जित महसूस कराऊँ। निश्चय ही तुम्हारे समूह में ऐसे लोग भी हैं जो इतने बुद्धिमान तो हैं कि संगी विश्वासियों के मध्य के विवादों के बारे में निर्णय लेने में समर्थ हैं। 6परन्तु बजाए इसके, तुम में से कुछ विश्वासी अन्य विश्वासियों पर कानूनी अदालत में आरोप लगाते हैं, और वे लोग विवाद को सुलझाते हैं जो विश्वास नहीं करते। 7क्योंकि तुम्हारे एक-दूसरे के साथ विवाद हैं, इसलिए तुम पहले ही यीशु का अनुसरण करने में पूरी रीति से विफल हो चुके हो। बल्कि {इस रीति से विफल होने के बजाए}, तुम्हें संगी विश्वासियों को क्षमा करना चाहिए जब वे तुम्हें हानि पहुँचाते हैं या तुम्हें धोखा देते हैं। 8बल्कि {दूसरों को क्षमा करने के बजाए}, हालाँकि तुम ने {अन्य लोगों} को हानि पहुँचाई है और उन्हें धोखा दिया है। वास्तव में, तुम ने इन कामों को संगी विश्वासियों के साथ {किया है}! 9{मैं स्तब्ध हूँ कि तुम इन कामों को करते हो} भले ही तुम्हें मालूम है कि जो लोग दूसरों को हानि पहुँचाते हैं वे परमेश्वर के राज्य में भागी नहीं होंगे। जो कोई तुम्हें कुछ और बात बताए उस पर विश्वास न करना। कोई भी जन जो अनुचित यौन सम्बन्ध बनाता है या जो अन्य देवताओं की उपासना करता है या जो किसी विवाहित व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध बनाता है या जो समान लिंग के व्यक्ति के साथ यौन क्रियाओं में भाग लेता है या जो समान लिंग के व्यक्ति के साथ यौन क्रिया करता है 10या जो दूसरों का सामान चोरी करता है या जो अपनी आवश्यकताओं से अधिक की चाह करता है या जो नशे में धुत हो जाता है या जो दूसरों को बातों से गाली देता है या जो दूसरों को धोखा देता है, वह परमेश्वर के राज्य में भागी नहीं होगा। 11तुम में से कुछ लोग इस रीति से व्यवहार किया करते थे। हालाँकि, अब परमेश्वर ने तुम्हें शुद्ध किया है, उसने तुम्हें पवित्र बनाया है, और उसने तुम्हें निर्दोष घोषित किया है। {तुम इन बातों का अनुभव इसलिए करते हो} क्योंकि {उन्हें तुम्हें देने के लिए} प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा सामर्थी रूप से कार्य करते हैं। 12{तुम में से कुछ कहते हैं,} “मैं कुछ भी कर सकता हूँ और मैं दोषी नहीं ठहरूँगा।” हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} कुछ बातें {किसी के लिए भी} सहायक नहीं होती हैं। {फिर से, तुम में से कुछ कहते हैं,} “मैं कुछ भी कर सकता हूँ और मैं दोषी नहीं ठहरूँगा।” हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} मैं ऐसी किसी भी वस्तु की सेवा नहीं करूँगा जो मुझे अपना दास बना ले। 13{तुम में से कुछ लोग कहते हैं,} “भोजन का अस्तित्व किसी व्यक्ति के पेट के लिए होता है कि वह उसे पचाए, और किसी व्यक्ति के पेट का अस्तित्व इसलिए होता है कि भोजन को पचाए।” वास्तव में, {मैं यह भी कहता हूँ कि} परमेश्वर भोजन और पेट को महत्वहीन बना देगा। {जबकि यह सत्य है कि भोजन का अस्तित्व किसी व्यक्ति के पेट के लिए होता है,} मानव शरीर का अस्तित्व किसी व्यक्ति के लिए नहीं है कि वह उसके साथ अनुचित यौन सम्बन्ध बनाए। बजाए इसके, {मानव शरीर का} अस्तित्व प्रभु की सेवा करने के लिए है, और प्रभु ने मानव शरीर के उद्धार के लिए काम किया है। 14वास्तव में, परमेश्वर ने प्रभु को फिर से जीवित किया, और वह हमें भी फिर से जीवित करने के लिए सामर्थी रूप से कार्य करेगा। 15निश्चय ही तुम जानते हो कि तुम्हारे शरीर मसीह के हैं, जैसे कि मानो तुम उसके शरीर के अंग हो। इस कारण से, तुम्हें अपना शरीर वापस लेकर फिर इसे एक वेश्या को नहीं देना चाहिए, जिससे कि तुम्हारा शरीर उसका हो जाए, जैसे कि मानो तुम उसके शरीर के अंग हो। ऐसा कभी न करना! 16निश्चित रूप से तुम जानते हो कि जो पुरुष किसी वेश्या के साथ यौन सम्बन्ध बनाता है, वह स्वयं को उसके साथ इतनी

निकटता से एकजुट करता है जैसे कि मानो वे एक ही शरीर साझा करते हों। {तुम्हें यह इसलिए पता होना चाहिए} क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, “{पुरुष और
स्त्री, यद्यपि} दो लोग हैं, परन्तु वे एक व्यक्ति {के समान} बन जाएँगे।” 17इसी रीति से, कोई भी व्यक्ति जो स्वयं को प्रभु के साथ एकजुट कर लेता है, वह
आत्मिक रूप से {प्रभु के साथ} एक हो जाता है। 18जानबूझकर अनुचित यौन सम्बन्ध बनाने से बचें। जब लोग पाप करते हैं, तो वे आमतौर पर अपनी देह को
प्रत्यक्ष रूप से चोट पहुँचाए बिना ऐसा करते हैं। हालाँकि, जब लोग अनुचित यौन सम्बन्ध बनाते हैं, तो वे अपनी स्वयं की देह को चोट पहुँचाते हैं। 19निश्चय ही
तुम जानते हो कि परमेश्वर ने तुम्हें पवित्र आत्मा दिया है। इसलिए, तुम्हारे शरीर पवित्र आत्मा के लिए मन्दिरों के समान हैं, क्योंकि वह स्वयं को तुम्हारे साथ
एकजुट करता है {जैसे कोई ईश्वर स्वयं को अपने मन्दिर के साथ एकजुट करता है}। इस कारण से, तुम स्वयं के नहीं हो। 20{बल्कि, तुम परमेश्वर के इसलिए
हो, क्योंकि मसीह तुम्हारे लिए मरा। जब वह तुम्हारे लिए मरा,} तो ऐसा लगा कि मानो परमेश्वर ने तुम्हें मोल लेने के लिए दाम दिया हो। क्योंकि {तुम परमेश्वर के
हो}, इसलिए जब भी तुम अपनी देह से कुछ करो तो तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिए।

Chapter 7

1तुम ने जो मुझ से पूछा उसके बारे में आगे बढ़ते हुए, तुम ने अपनी पत्री में कहा कि लोगों के लिए एक-दूसरे के साथ यौन सम्बन्ध न बनाना उचित है। 2दूसरी
ओर, लोग अक्सर यौन सम्बन्ध बनाने की, यहाँ तक कि अनुचित यौन सम्बन्ध बनाने की भी इच्छा रखते हैं। इस कारण से, एक पति को अपनी ही पत्नी से
विवाहित रहना चाहिए और एक पत्नी को अपने ही पति से विवाहित रहना चाहिए। 3पतियों को नियमित रूप से अपनी पत्नियों के साथ यौन सम्बन्ध बनाना
चाहिए। इसी रीति से, पत्नियों को भी नियमित रूप से अपने पति के साथ यौन सम्बन्ध बनाना चाहिए। 4पत्नियों के शरीर उनके नहीं, परन्तु उनके पति के होते
हैं। इसी रीति से, पतियों का शरीर उनका नहीं, परन्तु उनकी पत्नियों का होता है। 5तुम को नियमित रूप से यौन सम्बन्ध बनाना तभी बंद करना चाहिए जब तुम
दोनों थोड़े समय के लिए ऐसा करने के लिए सहमत हो। तुम को ऐसा तभी करना चाहिए जब तुम परमेश्वर से प्रार्थना करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहो, और
शीघ्र ही तुम्हें नियमित रूप से यौन सम्बन्ध बनाना आरम्भ कर देना चाहिए। यदि तुम इसे शीघ्रता से नहीं करते हो, तो शैतान तुम्हें गलत काम करने को लुभाने के
लिए यौन सम्बन्ध बनाने की तुम्हारी इच्छा का उपयोग करेगा। 6मैं तुम्हें {प्रार्थना पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए नियमित रूप से यौन सम्बन्ध बनाना बंद करने}
की आज्ञा नहीं देता। बल्कि, मैं तुम्हें केवल {ऐसा करने की} अनुमति दे रहा हूँ। 7यदि यह मेरे ऊपर होता, तो सभी लोग मेरे जैसे होते {और अविवाहित रहते}।
हालाँकि, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन व्यतीत करने का अपना तरीका देता है। कुछ लोग एक तरीके से {जीवन व्यतीत करते हैं}, जबकि अन्य लोग दूसरे
तरीके से {जीवन व्यतीत करते हैं}। 8यहाँ मैं उन लोगों से बात कर रहा हूँ जिन्होंने विवाह नहीं किया है और उन स्त्रियों से भी जिनके पतियों की मृत्यु हो गई है।
{इन लोगों के लिए} मेरे समान {अविवाहित} रहना सबसे अच्छी बात है। 9हालाँकि, कुछ लोगों को इसे नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा जैसे वे यौन
सम्बन्ध बनाने की इच्छा करते हैं। इन लोगों को विवाह इसलिए कर लेना चाहिए, क्योंकि लगातार यौन सम्बन्ध बनाने की इच्छा रखने से बेहतर यह विकल्प है।
10यहाँ मैं वही कह रहा हूँ जो प्रभु ने स्वयं उन लोगों से कहा जिनका विवाह हो चुका है। मैं चाहता हूँ कि पत्नियाँ अपने पतियों के साथ रहें। 11अब जब वे अपने
पतियों के साथ नहीं रहतीं, तो उन्हें फिर से विवाह नहीं करना चाहिए, या उन्हें अपने पतियों के पास वापस चले जाना चाहिए। इसके अलावा, पतियों को भी
अपनी पत्नियों के साथ रहना चाहिए। 12अब तुम में से उन बचे हुओं के लिए {जिनके पास ऐसा जीवनसाथी है जो विश्वासी नहीं है}, परमेश्वर ने इसके बारे में
नहीं बोला, इसलिए मैं वही कह रहा हूँ जिसका मैं स्वयं आदेश देता हूँ। कुछ संगी विश्वासियों की पत्नियाँ अविश्वासी हैं, और शायद वे पत्नियाँ अपने विश्वासी
पतियों के साथ रहना चाहती हों। इस परिस्थिति में, उन पतियों को अपनी पत्नियों के साथ ही रहना चाहिए। 13इसी रीति से, कुछ संगी विश्वासीनियों के पति
अविश्वासी होते हैं, और शायद वे पति अपनी विश्वासी पत्नियों के साथ रहना चाहते हों। इस परिस्थिति में, उन पत्नियों को अपने पति के साथ ही रहना
चाहिए। 14{तुम्हें अपने अविश्वासी पति या पत्नी के साथ इसलिए रहना चाहिए,} क्योंकि परमेश्वर अविश्वासी पति को विश्वास करने वाली पत्नी के लिए स्वीकार्य
जीवनसाथी मानता है। इसी रीति से, परमेश्वर अविश्वासी पत्नी को विश्वास करने वाले पति के लिए स्वीकार्य जीवनसाथी मानता है। इस कारण से, परमेश्वर इस
स्थिति में बच्चों के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह दो विश्वास करने वाले माता-पिता के बच्चों के साथ करता है। यदि मैंने जो कहा वह सत्य न हो, तो
भी इस परिस्थिति में परमेश्वर उन बच्चों के साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा वह दो अविश्वासी माता-पिता के बच्चों के साथ करता है। 15दूसरी ओर, शायद
कुछ अविश्वासी पति या पत्नियाँ अपने विश्वास करनेवाले जीवनसाथी को छोड़ना चाहें। इस परिस्थिति में, विश्वास करने वाले जीवनसाथी को उन्हें जाने देना
चाहिए। विश्वास करने वाले जीवनसाथी को अपने अविश्वासी पति या पत्नी के साथ रहने की आवश्यकता नहीं है। {इस प्रकार की किसी भी परिस्थिति में,
स्मरण रखो कि} परमेश्वर चाहता है कि हम शान्तिपूर्ण लोग हों। 16{तुम्हें एक अविश्वासी जीवनसाथी को इसलिए जाने देना चाहिए} क्योंकि प्रत्येक पत्नी यह
नहीं जानती कि वह अपने पति को यीशु पर विश्वास करने में सहायता कर सकती है या नहीं। प्रत्येक पति भी यह नहीं जानता कि वह अपनी पत्नी को यीशु पर
विश्वास करने में सहायता कर सकता है या नहीं। 17सामान्य रूप से, सभी लोगों को उन तरीकों से वर्ताव करने की आवश्यकता होती है जिसे करने के लिए प्रभु
ने उन्हें नियुक्त किया है और जिस प्रकार से परमेश्वर उनसे व्यवहार करने की अपेक्षा करता है। मैं चाहता हूँ कि लोग विश्वासियों के प्रत्येक समूह में {जिसके
पास मैं जाता हूँ} इस शिक्षा का पालन करें। 18कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका यीशु पर विश्वास करने से पहले दूसरों ने खतना किया था। इन लोगों को फिर से
खतनारहित बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसे अन्य लोग भी हैं जिनका यीशु पर विश्वास करने से पहले दूसरों ने खतना नहीं किया था। इन लोगों को भी
खतना करवाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। 19किसी व्यक्ति ने उनका खतना करवाया है या नहीं, यह {हमारे लिए और परमेश्वर के लिए} कोई मायने नहीं
रखता। दूसरी ओर, जो परमेश्वर हम से चाहता है वह करना {हमारे लिए और परमेश्वर के लिए मायने रखता है}। 20सब लोगों को परमेश्वर की सेवा
विश्वासयोग्यता से करनी चाहिए, उन सामान्य कामों करते हुए जिनको वे पहले से ही कर रहे थे जब परमेश्वर ने उन्हें बदला था। 21कुछ लोग उस समय दास थे
जब उन्होंने यीशु पर विश्वास किया। इन लोगों को अपने दास होने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। दूसरी ओर, उन्हें स्वतंत्र होने के किसी भी अवसर का उपयोग
करना चाहिए। 22{अपनी सामाजिक स्थिति के बारे में चिन्ता न करना,} क्योंकि जो लोग दास थे, जब उन्होंने उस पर विश्वास किया तो अब प्रभु उन सभी लोगों
को स्वतंत्र लोग मानता है। इसी रीति से, मसीह उन सभी लोगों को जो स्वतंत्र लोग थे, जब उन्होंने उस पर विश्वास किया तो ऐसे मानता है कि वे अब उसके दास
हैं। 23{जब यीशु तुम्हारे लिए मरा,} तो ऐसा लगा कि मानो परमेश्वर ने तुम्हें मोल लेने के लिए दाम दिया हो। {इस कारण से,} तुम्हें अन्य मनुष्यों की नहीं, परन्तु
एकमात्र परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए। 24हे मेरे संगी विश्वासियों, सब लोगों को परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता से करनी चाहिए, उन सामान्य कामों करते

हुए जिनको वे पहले से ही कर रहे थे जब परमेश्वर ने उन्हें बदला था। 25अब मैं उन लोगों के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ जिन्होंने विवाह नहीं किया है।
इस मुद्दे पर, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो प्रभु ने तुम से कहने को बोला हो। हालाँकि, मैं तुम्हें वही बताऊँगा जो मुझे सबसे अच्छा लगता है। {मैं यह
इसलिए करता हूँ} क्योंकि परमेश्वर ने मुझे एक विश्वसनीय {शिक्षक} बनाने के द्वारा मुझ पर दयालु होकर कार्य किया है। 26मेरा सुझाव है कि लोगों को अपने
जीवन व्यतीत करने के तरीके को नहीं बदलना चाहिए। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि शीघ्र ही भयानक बातें होने वाली हैं। 27कुछ लोगों ने
मंगनी कर ली है। उन्हें अलग नहीं होना चाहिए। दूसरे लोगों ने कभी मंगनी नहीं की। उन्हें मंगनी करने का प्रयास भी नहीं करना चाहिए। 28हालाँकि, एक
अकेला पुरुष या अकेली स्त्री जो विवाह करते हैं वे पाप नहीं करते। मैं तुम्हें केवल विवाह करने के विरुद्ध सलाह इसलिए देता हूँ क्योंकि जो लोग विवाह करते हैं
उन्हें जीवन व्यतीत करते हुए परेशानी का अनुभव होगा। 29हे मेरे संगी विश्वासियों, जो मैं तुम्हें बताने वाला हूँ {वह महत्वपूर्ण है}। अंत का समय दूर नहीं है।
इसलिए, तब तक, प्रत्येक पुरुष जिसके पास पत्नी है, उसे ऐसे पुरुष के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जिसके पास पत्नी नहीं है। 30रोने वाले प्रत्येक
व्यक्ति को उस व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जो रोता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति जो आनन्दित है, उसे ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना
चाहिए जो आनन्दित नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास कुछ है उसे ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जिसके पास कुछ भी नहीं है। 31प्रत्येक
व्यक्ति जो सांसारिक वस्तुओं का उपयोग करता है, उसे ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जो इन वस्तुओं का उपयोग नहीं करता है। {तुम्हें इन
तरीकों से इसलिए व्यवहार करना चाहिए} क्योंकि परमेश्वर शीघ्र ही कामों को करने के सांसारिक तरीके को समाप्त कर देगा। 32मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ बातों
की चिन्ता करो। अविवाहित पुरुष इस बारे में चिन्ता करें कि वे प्रभु की सेवा करने के लिए क्या कर सकते हैं। 33दूसरी ओर, विवाहित पुरुष सांसारिक बातों के
बारे में चिन्ता करते हैं, विशेषकर कि वे अपनी पत्नियों की सेवा कैसे कर सकते हैं। इस कारण से, वे दो अलग-अलग बातों के बारे में चिन्ता करते हैं{: अपनी
पत्नियों की सेवा करना और प्रभु की सेवा करना}। अविवाहित स्त्रियाँ और ऐसी स्त्रियाँ जिन्होंने कभी विवाह नहीं किया 34वे इस बारे में चिन्ता करती हैं कि वे
प्रभु की सेवा करने के लिए क्या कर सकती हैं। उनका लक्ष्य पूर्णरूप से पवित्र होना है। दूसरी ओर, विवाहित स्त्रियाँ सांसारिक बातों के बारे में चिन्ता करती हैं,
विशेषकर कि वे अपने पतियों की सेवा कैसे कर सकती हैं। 35मैंने ये बातें इसलिए कही क्योंकि मैं सोचता है कि ये बातें तुम्हारे लिए सहायक हैं। मैं तुम्हें केवल
एक ही प्रकार से व्यवहार करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहता। बजाए इसके, मैं चाहता हूँ कि तुम सम्मानपूर्वक व्यवहार करने में सक्षम बनो और अच्छी रीति
से एवं ध्यानपूर्वक प्रभु की सेवा करो। 36कुछ मामलों में, एक मंगनी किया हुआ पुरुष यह सोच सकता है कि वह अपनी मंगेतर के साथ यौनचार के अनुचित
तरीके से व्यवहार कर सकता है। इसके अलावा, उसकी मंगेतर पूर्णरूप से सयानी हो सकती है और यौन सम्बन्ध बनाने के लिए तैयार हो सकती है। इन मामलों
में, यहाँ क्या करना है: उस पुरुष को अपनी मंगेतर से विवाह कर लेना चाहिए। {जब वह ऐसा करता है तो} वह पाप नहीं करता, और उन दोनों को विवाह कर
लेना चाहिए। 37अन्य मामलों में, शायद मंगनी किए हुए पुरुष ने अपना मन बना लिया हो, और किसी व्यक्ति या बात ने उसे {विवाह न करने के लिए} बाध्य
किया हो। वह अपनी इच्छा को नियंत्रित कर सकता है, और उसने {विवाह न करने का} निर्णय स्वयं लिया है। इस मामले में, वह न्यायानुसार अपनी मंगेतर से
विवाह नहीं करने का चुनाव कर सकता है। 38अंत में, कोई भी पुरुष जो अपनी मंगेतर से विवाह करता है, एक अच्छा काम करता है। इसके अलावा, कोई भी
पुरुष जो {अपनी मंगेतर से} विवाह नहीं करता है, एक बेहतर काम करता है। 39पत्नियों को अपने पतियों के साथ तब तक विवाहित होना चाहिए जब तक कि
उनके पतियों की मृत्यु न हो जाए। उसके बाद, वे किसी भी ऐसे विश्वास करने वाले पुरुष से विवाह कर सकती हैं जिससे वे विवाह करना चाहती हैं। 40हालाँकि,
{मैं सोचता हूँ कि} ऐसी कोई भी स्त्री जिसके पति की मृत्यु हो गई है, यदि वह दोबारा विवाह न करे तो अधिक सुखी रहेगी। जबकि यह मेरी सलाह है, इसलिए
मैं सोचता है कि परमेश्वर का आत्मा मेरे द्वारा बोलता है।

Chapter 8

1अब मैं उस मांस के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ जो किसी व्यक्ति ने दूसरे देवता को चढ़ाया है। हम सभी {जो विश्वासी हैं} वह बात जानते हैं {जो
दूसरे देवताओं के बारे में सच है। हालाँकि,} {अक्सर जो सच होता है} उसे जानने पर लोगों को घमण्ड होता है। यह दूसरों से प्रेम करना ही है जो वास्तव में अन्य
विश्वासियों की सहायता करता है। 2सभी लोग जो यह मानते हैं कि वे कुछ समझते हैं, वे अभी तक उसे इस रीति से नहीं समझते जैसा उन्हें उसे समझना
चाहिए। 3हालाँकि, परमेश्वर उन सभी लोगों को समझता है और उनकी चिन्ता करता है जो उससे प्रेम करते हैं। 4अब मैं उस बारे में {बात करने की ओर वापस
जाऊँगा} कि वह मांस जो किसी ने दूसरे देवता को चढ़ाया है खाना चाहिए या नहीं। हम {जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं} यह समझते हैं कि अन्य देवताओं का
वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। बल्कि, {हम समझते हैं} कि केवल परमेश्वर ही एकमात्र ईश्वर है। 5यह सच है कि जो स्वर्ग में या पृथ्वी पर ऐसी बहुत सी वस्तुएँ
हैं जिन्हें लोग “देवता” कहते हैं। इस रीति से, बहुत से “ईश्वर” और “प्रभु” अस्तित्व में हैं। 6हालाँकि, हम {जो विश्वास करते हैं} उस एक परमेश्वर को मानते हैं, जो
पिता है। उसी ने सब कुछ रचा, और हम उसका सम्मान करने के लिए जीवित हैं। हम एक ही प्रभु को भी मानते हैं, जो यीशु मसीह है। उसने पिता के साथ सब
कुछ रचा, और जो वह {हमारे लिए} करता है उसी के द्वारा हम जीवित हैं। 7हालाँकि, {मैंने जो कहा है} कुछ लोग उसे पूर्णरूप से नहीं समझते हैं। वे अतीत में
अन्य देवताओं की उपासना करते थे, और वे पूर्णरूप से नहीं समझते कि क्या सही है और क्या गलत। जब वे उस मांस को खाते हैं जो किसी ने दूसरे देवता को
चढ़ाया है, तो वे दोषी महसूस करते हैं। 8अब भोजन हमें परमेश्वर से नहीं जोड़ता। जो लोग {कुछ खाद्य पदार्थों को} नहीं खाते हैं, वे {परमेश्वर की किसी भी वस्तु
को पाने से} वंचित नहीं रहते हैं। साथ ही, जो लोग {कुछ खाद्य पदार्थों को} खाते हैं, उन्हें {परमेश्वर से} कुछ अतिरिक्त नहीं मिलता है। 9हालाँकि, यदि तुम
जानते हो कि {भोजन महत्वपूर्ण नहीं है} तो तुम्हें इस बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है कि तुम कैसा जीवन व्यतीत करते हो। तुम जैसा जीवन व्यतीत
करते हो, वह {यीशु का अनुसरण करने के लिए} संघर्ष करने में किसी ऐसे व्यक्ति के इस बात को अपूर्ण रूप से समझने का कारण नहीं बनना चाहिए कि क्या
सही है और क्या गलत है। 10{तुम्हें सावधान रहने की आवश्यकता इसलिए भी है} क्योंकि तुम्हारे संगी विश्वासी किसी ऐसे विश्वासी पर ध्यान दे सकते हैं जो
जानता है कि {दूसरे देवताओं के बारे में क्या सच है} और दूसरे देवता के मन्दिर में {मांस} खाने के लिए बैठता है। ऐसे संगी विश्वासी, जो सही और गलत को
पूर्णरूप से नहीं समझते, उन्हें यह आश्वासन हो जाएगा कि वे भी उस मांस को खा सकते हैं जो किसी ने दूसरे देवता को चढ़ाया है। 11इसके परिणामस्वरूप,
तुम जो जानते हो {जो अन्य देवताओं के बारे में सच है} उसके आधार पर अभिनय करके, तुम उन दूसरों लोगों को हानि पहुँचाते हो जो सही और गलत को
पूर्णरूप से नहीं समझते हैं। ये तुम्हारे संगी विश्वासी हैं, और मसीह उनके लिए भी मरा। 12जब तुम इन तरीकों से कार्य करते हो, तो तुम अपने संगी विश्वासियों

की जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं समझते हैं, उस काम को करने की ओर अगुवाई करते हुए उनके विरुद्ध पाप करते हो, जिसे वे गलत मानते हैं। {जब
तुम ऐसा करते हो,} तो तुम मसीह के विरुद्ध भी पाप करते हो। 13इसके फलस्वरूप, उन मामलों में जहाँ जो मैं खाता हूँ यदि वह किसी संगी विश्वासी को पाप
की ओर ले जाए, तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊँगा{, चाहे किसी ने इसे किसी दूसरे देवता को चढ़ाया हो या नहीं}। इस रीति से, मैं अपने किसी भी संगी
विश्वासी को पाप की ओर नहीं ले जाता।

Chapter 9

1मैं {केवल कुछ खाद्य पदार्थों को खाने के लिए} बाध्य नहीं हूँ। हमारे प्रभु यीशु ने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है, और मैंने उसे {अपनी आँखों
से} देखा है। परमेश्वर ने हमें प्रभु के साथ एकजुट कर दिया है, और इसी कारण से मैंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम किया है। 2शायद दूसरे लोग यह न सोचें कि
मसीह ने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है, परन्तु तुम यह जानते हो। {तुम यह इसलिए जानते हो} क्योंकि जब परमेश्वर ने तुम्हें प्रभु के साथ
एकजुट कर दिया तो तुम ने यह साबित कर दिया कि मसीह ने ही मुझे भेजा है। 3अब मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध अपना बचाव कर पाऊँगा जो यह प्रश्न
करना चाहता है कि {उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए} {मसीह ने मुझे भेजा है या नहीं}। 4बरनबास और मैं निश्चय ही तुम से कह सकते हैं कि तुम हमें खाने
और पीने की वस्तुएँ भेजो। 5निश्चय ही हम ऐसी पत्नी के साथ भी यात्रा कर सकते हैं जो मसीह पर विश्वास करती हो। पतरस और प्रभु के भाइयों सहित, जिन
लोगों को मसीह ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है, वे ऐसा ही करते हैं। 6यह सच नहीं है कि केवल बरनबास और मैं ही हैं {जो मसीह का प्रतिनिधित्व
करते हैं} जिन्हें {स्वयं को सहारा देने के लिए} काम करना चाहिए। 7सेना में सेवा करने के लिए कोई भी सैनिक कभी भी अपने धन से भुगतान नहीं करता। ऐसा
कोई भी किसान नहीं जो दाखलताओं को लगाकर, फिर उनसे उत्पन्न होने वाली वस्तु को न खाए। ऐसा कोई भी चरवाहा नहीं जो भेड़ों की देखभाल करके, फिर
उनसे उत्पन्न होने वाले दूध को न पीए।। 8मैं जो तर्क दे रहा हूँ वह केवल मानवीय सोच पर निर्भर नहीं है। बल्कि, तुम पढ़ सकते हो कि मैं {मूसा की} व्यवस्था से
तर्क कर रहा हूँ। 9मूसा ने अपनी व्यवस्था में जो लिखा है, वह यह है: "जब एक बैल भूसी से अन्न को अलग करने में तुम्हारी सहायता कर रहा हो, तो तुम्हें उसे
अन्न खाने से रोकना नहीं चाहिए।" {हालाँकि,} परमेश्वर को मुख्य रूप से बैलों में कोई रूचि नहीं है। 10बल्कि, {इस व्यवस्था में} परमेश्वर अधिकतर हमारे बारे में
बोलता है। परमेश्वर ने मूसा से हमारे लिए यह आदेश इसलिए लिखवाया था क्योंकि जो व्यक्ति खेत जोतता है उसे कुछ फसल प्राप्त करने की अपेक्षा करनी
चाहिए। कोई भी व्यक्ति जो गेहूँ के डंठल से अनाज को अलग करता है उसे भी कुछ फसल प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए। 11हम ने तुम्हें शुभ सन्देश
ऐसे सुनाया, कि मानो हम आत्मिक बीज बो रहे हों। इस कारण से, हमारे लिए तुम से वित्तीय सहायता प्राप्त करना सामान्य होगा कि मानो हमें उस बीज से कुछ
फसल प्राप्त हो रही थी जो हम ने बोया था। 12दूसरे लोगों को तुम से वित्तीय सहायता मिली है। बल्कि बरनबास और मैं तो इसे तुम से प्राप्त करने के लिए और
भी अधिक पात्र हैं। हालाँकि, हम ने तुम से कोई सहायता नहीं माँगी। बजाए इसके, हम ने उन वस्तुओं के बिना जाने का चुनाव इसलिए किया ताकि हम मसीह
के बारे में शुभ सन्देश को फैलने से न रोकें। 13निश्चय ही तुम जानते हो कि जो लोग मन्दिर में अपना कर्तव्य निभाते हैं, वे उस भोजन में से भी कुछ खाते हैं जिसे
लोग मन्दिर में चढ़ाते हैं। अधिक विशेष रूप से, जो याजक वेदी पर बलि चढ़ाते हैं, वे उसका एक भाग प्राप्त करते हैं जो कुछ लोग वेदी पर चढ़ाने के लिए लाते
हैं। 14इसी रीति से, प्रभु ने निर्देश दिया है कि जो कोई भी शुभ सन्देश का प्रचार करता है, उसे शुभ सन्देश {का प्रचार करने} से अपनी जीविका कमानी चाहिए।
15हालाँकि, मैंने तुम से इसमें से कोई भी सहायता नहीं माँगी। इसके अलावा, मैं अब तुम को अपने लिए सहायता माँगने के लिए नहीं लिख रहा हूँ। मैं मर जाना
पसंद करूँगा, बजाए इसके कि कोई उस वस्तु को छीन ले, जिस पर मैं घमण्ड कर सकता हूँ। 16अब मैं शुभ सन्देश का प्रचार करने में घमण्ड इसलिए नहीं कर
सकता, क्योंकि परमेश्वर ही चाहता है कि मैं उसका प्रचार करूँ। वास्तव में, यदि मैं शुभ सन्देश का प्रचार करना बंद कर देता, तो परमेश्वर मुझे अनुशासित
करता। 17यदि मैं शुभ सन्देश का प्रचार करता तो परमेश्वर मुझे इसलिए पुरस्कार देता क्योंकि मैंने स्वयं ऐसा करने का चुनाव किया था। हालाँकि, ऐसा करने का
चुनाव मैंने नहीं किया, क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं मुझे बताया था कि मुझे क्या करना है। 18हालाँकि, परमेश्वर फिर भी मुझे पुरस्कार देता है। {वह ऐसा तब करता
है} जब मैं लोगों को इस बात के बिना शुभ सन्देश का प्रचार करता हूँ कि उनको मुझे भुगतान करने की आवश्यकता है। क्योंकि मैं शुभ सन्देश का प्रचार करता
हूँ इसलिए मैं लोगों को शुभ सन्देश के बारे में इस रीति से बताता हूँ ताकि मैं जो माँग कर सकता हूँ उसका दुरूपयोग न करूँ। 19{चूँकि मैं मुफ्त में शुभ सन्देश
का प्रचार करता हूँ, इसलिए} मुझे किसी भी मनुष्य की सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, मैं स्वयं सभी मनुष्यों की सेवा करने का चुनाव इसलिए
करता हूँ ताकि मैं उनमें से अधिक से अधिक लोगों की सहायता कर सकूँ {कि वे मसीह पर विश्वास करें}। 20जब मैं यहूदी लोगों के साथ होता हूँ, तो मैं एक
यहूदी व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ। इस रीति से, मैं यहूदी लोगों की सहायता कर सकता हूँ {कि वे मसीह पर विश्वास करें}। जब मैं ऐसे लोगों के साथ
होता हूँ जो सोचते हैं कि उन्हें मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता है, तो मैं किसी ऐसे व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ जो सोचता है कि उसे
भी मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता है। जबकि मैं स्वयं जानता हूँ कि मुझे मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं है, {मैं इस
रीति से व्यवहार इसलिए करता हूँ} ताकि मैं उन लोगों की सहायता कर सकूँ जो सोचते हैं कि उन्हें मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता है {कि वे
मसीह पर विश्वास करें}। 21जब मैं उन लोगों के साथ होता हूँ जो मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करते, तो मैं किसी ऐसे व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ
जो मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करता है। {मैं इस रीति से व्यवहार इसलिए करता हूँ} ताकि मैं उन लोगों की सहायता कर सकूँ जो मूसा की व्यवस्था का
पालन नहीं करते {कि वे मसीह पर विश्वास करें}। निःसन्देह, मैं परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करता हूँ, क्योंकि मैं वही करता हूँ जिसकी मसीह ने आज्ञा दी है।
22जब मैं ऐसे लोगों के साथ होता हूँ जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं समझते, तो मैं किसी ऐसे व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ जो सही और गलत
को पूर्णरूप से नहीं समझता। {मैं इस रीति से व्यवहार इसलिए करता हूँ} ताकि मैं उन लोगों की सहायता कर सकूँ जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं
समझते {कि वे मसीह पर विश्वास करें}। {जैसा कि तुम देख सकते हो, कि} जब मैं अलग-अलग लोगों के साथ होता हूँ, तो मैं वैसा ही व्यवहार करता हूँ जैसा वे
करते हैं ताकि परमेश्वर उन सभी बातों के माध्यम से कार्य करे जो मैं उनमें से कुछ को बचाने के लिए करता हूँ। 23जैसा कि तुम देख सकते हो कि मैं इन सब
तरीकों से काम इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि लोग शुभ सन्देश पर विश्वास करें। {इसके अलावा, मैं इन कामों को इसलिए भी करता हूँ} ताकि मैं भी
शुभ सन्देश में परमेश्वर की प्रतिज्ञा को प्राप्त करूँ। 24निश्चित रूप से तुम जानते हो कि सभी धावक दौड़ में भाग लेते हैं, परन्तु अंत में केवल एक धावक दौड़ को
जीतता है और जीतने का पुरस्कार पाता है। जब तुम परमेश्वर की सेवा करते हो तो यह बहुत कुछ इस प्रकार की दौड़ के समान होता है। परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा

तुम से की है उसे प्राप्त करने के लिए तुम्हें वैसा ही कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है, जैसा धावक दौड़ को जीतने के लिए कठिन परिश्रम करता है।
25सभी धावक जो कुछ भी करते हैं उसे सावधानीपूर्वक नियंत्रित इसलिए करते हैं {ताकि वे जीत सकें}। वे पत्तों से बने एक ऐसे मुकुट के लिए प्रतिस्पर्धा करते
हैं जो नाश हो जाएगा। हालाँकि, हम {स्वयं को नियंत्रित इसलिए करते हैं ताकि हम वह प्राप्त कर सकें जो परमेश्वर ने हमें देने की प्रतिज्ञा की है,} जो सदा तक
बना रहेगा। **26**इस कारण से, मैं उस धावक के समान हूँ जो अंतिम रेखा की ओर सीधा दौड़ता है। मैं उस मुक्केबाज के समान हूँ जो बिना चूके किसी प्रतिद्वंद्वी
पर प्रहार करता है। **27**मैं अपने शरीर को पूर्णरूप से नियंत्रित करता हूँ और इससे अपनी सेवा करवाता हूँ। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं दूसरे लोगों को
शुभ सन्देश सुनाना नहीं चाहता, परन्तु फिर देखता हूँ कि परमेश्वर मुझे पसंद नहीं करता।

Chapter 10

1हे संगी विश्वासियों, अब मैं तुम्हें स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सब यहूदी पूर्वजों ने उस समय परमेश्वर का अनुसरण किया था जब वह उन्हें एक बादल में
होकर दिखाई देता था। जब परमेश्वर ने जल के बीच से उनके लिए सूखा मार्ग बनाया, तब वे सब लाल समुद्र से होकर चले। **2**{यह ऐसा था कि मानो} किसी ने
उन सभी को इसलिए बपतिस्मा दिया कि वे मूसा के हो जाएँ। {यह उस समय घटित हुआ} जब उन्होंने बादल का अनुसरण किया और लाल समुद्र से होकर
चले। **3**उन सब ने मिलकर वह विशेष भोजन खाया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। **4**उन सब ने मिलकर वह विशेष जल पिया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। यह
उस समय हुआ जब उन्होंने उस विशेष चट्टान से निकला पानी पिया जिसे परमेश्वर ने प्रदान किया था और जो उनके पीछे-पीछे चलता था। वह पानी कुछ वैसा
ही था जो मसीह ने दिया था। **5**हालाँकि, हमारे अधिकांश यहूदी पूर्वजों ने परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया। {तुम कह सकते हो कि यह सच है} क्योंकि वे निर्जन
स्थानों से यात्रा करते हुए मर गए। **6**उनके साथ जो घटित हुआ, वह बताता है कि हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए। उनके साथ जो घटित हुआ, उसके द्वारा
परमेश्वर हमें चेतावनी देता है कि हम बुराई करने से बचें, अर्थात वैसे बुरे काम जो उन्होंने किए थे। **7**तुम्हें मूर्तियों की उपासना नहीं करनी चाहिए, जैसे कि हमारे
कुछ यहूदी पूर्वजों ने की थी। {तुम कह सकते हो कि उन्होंने मूर्तियों की उपासना की थी,} क्योंकि मूसा ने लिखा है, “इस्राएलियों ने खाना-पीना आरम्भ कर दिया
और फिर अनैतिक यौनाचार के तरीकों से अन्य देवताओं की उपासना की।” **8**हमें अनुचित यौन सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए, जैसा कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों ने
किया था। क्योंकि उन्होंने ऐसा किया, इसलिए उनमें से 23, 000 एक दिन में मर गए। **9**हमें प्रभु को चुनौती नहीं देनी चाहिए, जैसे कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों
ने दी थी। क्योंकि उन्होंने ऐसा किया था, इसलिए साँपों ने उन्हें मार डाला। **10**तुम्हें शिकायत नहीं करनी चाहिए, जैसे कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों ने की थी।
क्योंकि उन्होंने ऐसा किया, इसलिए एक भयानक आत्मिक प्राणी ने (जिसे परमेश्वर ने भेजा था) उन्हें मार डाला। **11**हमारे पूर्वजों ने जिन बातों का अनुभव
किया, वे बताती हैं कि {हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए}। वास्तव में, किसी ने उनके साथ जो हुआ उसे लिख लिया ताकि हम उनसे सीख सकें, क्योंकि हम वही
लोग हैं जो अंत के दिनों का अनुभव कर रहे हैं। **12**जैसा कि उन कहानियों में बताया गया है, कि जो लोग सोचते हैं कि वे {मसीह पर} दृढ़तापूर्वक विश्वास करते
हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे {मसीह का अनुसरण करने में} असफल न हों। **13**अन्य लोगों ने उन बातों का अनुभव किया है जो तुम्हें लुभाती हैं।
इसके अलावा, परमेश्वर विश्वासयोग्यता से कार्य करेगा। यदि तुम उसका विरोध नहीं कर सकते हो तो वह तुम्हें ऐसी किसी भी बात का अनुभव नहीं करने देगा
जो तुम्हें लुभाती है। बजाए इसके, जब कोई बात तुम्हें लुभाती है, तो वह तुम्हें वह देगा जिसकी तुम्हें विश्वासयोग्यता से उसका विरोध करने के लिए आवश्यकता
है। **14**हे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, इसी {कारण से मैंने जानबूझकर कहा है कि} दूसरे देवताओं की उपासना करने से बचो। **15**मैं इस रीति से बात
इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि तुम समझदार लोग हो। तुम स्वयं निर्धारित करो कि मैं जो कहने वाला हूँ वह सही है या गलत। **16**जब हम प्रभु
भोज में वह दाखमधु पीते हैं जिस पर हम आशीष माँगते हैं, तो हम स्वयं को एक साथ मसीह के लहू से जोड़ते हैं। जब हम उस रोटी को खाते हैं, तो हम स्वयं
को एक साथ मसीह की देह से जोड़ते हैं। **17**हम {प्रभु भोज में} एक ही रोटी का उपयोग करते हैं, और हम सब मिलकर उस एक रोटी के टुकड़े खाते हैं। क्योंकि
हम ऐसा करते हैं, इसलिए हम आपस में ऐसे जुड़ जाते हैं जैसे कि हम सब एक शरीर हों। **18**इस्राइल के लोगों को एक उदाहरण के रूप में लो। जो लोग कुछ
भेंट चढ़ाते थे, वे अपनी भेंट में से कुछ खा लेते थे। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने स्वयं को उस वेदी से जोड़ लिया{, जहाँ याजक उस बाकी की वस्तु को परमेश्वर
के सामने रखेगा जिसे उन्होंने चढ़ाया है}। **19**इसलिए, मैं तर्क दे रहा हूँ कि वह मांस जो किसी ने दूसरे देवता को चढ़ाया है और वह अन्य देवता भी शक्तिशाली
या महत्वपूर्ण नहीं हैं। **20**हालाँकि, {तुम्हें पता होना चाहिए} कि जो लोग परमेश्वर की आराधना नहीं करते, वे ही बलिदान चढ़ाते हैं, और वे उन्हें परमेश्वर को
नहीं, बल्कि दुष्ट आत्मिक प्राणियों को चढ़ा रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम स्वयं को दुष्ट आत्मिक प्राणियों से जोड़ने से बचो। **21**तुम प्रभु का दाखमधु और साथ ही
दुष्ट आत्मिक प्राणियों का दाखमधु नहीं पी सकते। तुम प्रभु का भोजन और साथ ही दुष्ट आत्मिक प्राणियों का भोजन नहीं खा सकते। **22**जो इन दोनों कामों को
करते हैं, उन्हें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि प्रभु उनके विरुद्ध ईर्ष्या में होकर कार्य करेगा। इसके अलावा, हम निश्चित रूप से उससे कम शक्तिशाली हैं। **23**{तुम
में से कुछ कहते हैं,} “मैं कुछ भी कर सकता हूँ और दोषी नहीं ठहरूँगा।” हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} कुछ बातें {किसी के लिए भी} सहायक नहीं होती हैं।
{फिर से, तुम में से कुछ कहते हैं,} “मैं कुछ भी कर सकता हूँ और दोषी नहीं ठहरूँगा।” हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} कुछ बातें तुम्हें बढ़ने में सहायता नहीं
करती हैं। **24**तुम्हारे लिए जो उत्तम है उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम न करो। बल्कि, {तुम्हें उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए} जो दूसरे लोगों के
लिए उत्तम है। **25**तुम ऐसा कोई भी भोजन खा सकते हो जिसे तुम सार्वजनिक बाजार से खरीदते हो। तुम्हें यह पता लगाने की आवश्यकता नहीं है कि {यह
कहाँ से आया है} ताकि तुम जान सको कि {इसे खाना} सही है या गलत। **26**{तुम ऐसा इसलिए कर सकते हो} क्योंकि {दाऊद ने लिखा है}, “पृथ्वी और उससे
जुड़ी हर वस्तु प्रभु की है।” **27**किसी समय पर, जो लोग विश्वास नहीं करते वे तुम से {उनके साथ भोजन करने के लिए} विनती कर सकते हैं, और तुम भी {ऐसा
करने} का निर्णय ले सकते हो। जब ऐसा घटित होता है, तो तुम वह सब भोजन खा सकते हो जो वे तुम्हें परोसते हैं। तुम्हें यह पता लगाने की आवश्यकता नहीं
है कि {यह कहाँ से आया है} ताकि तुम जान सको कि {इसे खाना} सही है या गलत। **28**(हालाँकि, कोई व्यक्ति तुम्हें बता सकता है कि एक व्यक्ति ने किसी
देवता को वह भोजन चढ़ाया है। इस परिस्थिति में, तुम्हें वह भोजन नहीं खाना चाहिए। {तुम्हें इस रीति से व्यवहार करना चाहिए कि} उस व्यक्ति को लाभ पहुँचे
जिसने तुम्हें {भोजन के बारे में} बताया था और यह जानने के कारण कि सही और गलत क्या है। **29**“सही और गलत क्या है, यह जानने” से मेरा अर्थ है कि
दूसरा व्यक्ति क्या जानता है, न कि तुम क्या जानते हो।) सामान्य रूप से, दूसरे व्यक्ति को जो लगता है कि सही या गलत क्या है, वह बात मुझे उस काम को
करने से न रोके जिसे मैं करने में सक्षम हूँ। **30**किसी भी भोजन को खाते समय जब तक मैं परमेश्वर का आभारी हूँ, तब तक किसी को भी मेरे बारे में ऐसी किसी

भी बात के कारण बुरा नहीं बोलना चाहिए, जिसके लिए मैंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया हो। 31संक्षेप में, जब भी तुम कुछ भी खाओ या पियो, और वास्तव में
जब भी तुम कुछ भी करो, तो तुम्हें हमेशा ऐसा व्यवहार करना चाहिए ताकि तुम और अन्य लोग परमेश्वर का सम्मान करें। 32ऐसे तरीकों से व्यवहार न करना जो
यहूदी लोगों, गैर-यहूदी लोगों, या संगी विश्वासियों को मसीह पर भरोसा करने से हतोत्साहित करे। 33मैं जैसे जीवन व्यतीत करता हूँ, उससे मैं {इसे कैसा करना
है} का वर्णन करता हूँ। मैं हमेशा ऐसे तरीकों से व्यवहार करता हूँ जिनको मेरे आसपास के सभी लोग स्वीकार करते हैं। जो मेरे लिए उत्तम है मैं उसे पाने के लिए
कठिन परिश्रम नहीं करता। बल्कि, {मैं उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम करता हूँ जो} दूसरे लोगों के लिए उत्तम है। {मैं यह इसलिए करता हूँ} ताकि परमेश्वर
उनका उद्धार करे।

Chapter 11

1जो मैं करता हूँ वही करो, ठीक वैसे ही जैसे मैं वह करता हूँ जो मसीह ने किया। 2मैं तुम्हारी सराहना इसलिए करता हूँ क्योंकि तुम हमेशा उस पर विचार करते
हो जो मैं सिखाता एवं करता हूँ और क्योंकि तुम ध्यानपूर्वक विश्वास करते हो और वही करते हो जिस पर मैंने तुम्हें विश्वास करना और व्यवहार करना सिखाया
था। 3मैं तुम से कहता हूँ कि हर एक पुरुष मसीह की ओर से आता है। एक पत्नी अपने पति की ओर से आती है। अंत में, मसीह परमेश्वर की ओर से आता है।
4शायद पुरुष लोग प्रार्थना करते समय या परमेश्वर की कही हुई बातों का प्रचार करते समय अपने सिर ढकते हों। जो ऐसा करते हैं वे उस व्यक्ति को लज्जित
करते हैं जिसकी ओर से वे आते हैं: {अर्थात मसीह को}। 5अब शायद स्त्रियाँ प्रार्थना करते समय या परमेश्वर की कही हुई बातों का प्रचार करते समय अपने सिर
नंगे रखती हों। जो ऐसा करती हैं वे उन लोगों को लज्जित करती हैं जिनकी ओर से वे आती हैं: {अर्थात उनके पति को}। {तुम कह सकते हो कि यह सच है,}
क्योंकि जो स्त्री अपना सिर नंगा रखती है वह उस स्त्री के समान होती है जिसके बाल किसी ने मुण्ड दिए हैं। 6वास्तव में, किसी व्यक्ति को ऐसी किसी भी स्त्री
के बाल काट देने चाहिए जो अपना सिर नंगा रखती है। चूँकि लोग छोटे बाल वाली स्त्री को लज्जित करते हैं, इसलिए स्त्रियों को अपना सिर नंगा नहीं रखना
चाहिए। 7इसके अलावा, एक ओर तो पुरुषों को अपने सिर इसलिए नहीं ढकने चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसका सम्मान करते हैं।
दूसरी ओर, पत्नियों को अपने सिर इसलिए नहीं ढकने चाहिए, क्योंकि वे अपने पतियों का सम्मान करती हैं। 8{तुम कह सकते हो कि यह सच है} क्योंकि
परमेश्वर ने पुरुष आदम को स्त्री हव्वा से नहीं बनाया। बजाए इसके, उसने हव्वा स्त्री को पुरुष आदम से बनाया। 9एक और तरीका {जिससे तुम बता सकते हो
कि यह सच है} क्योंकि परमेश्वर ने स्त्री हव्वा के निमित्त पुरुष आदम को नहीं बनाया। बजाए इसके, उसने पुरुष आदम के निमित्त स्त्री हव्वा को बनाया।
10क्योंकि {पत्नियाँ अपने पति का सम्मान करती हैं इसलिए}, स्त्रियों को उसे नियंत्रित करना चाहिए जो वे अपने सिरों पर {पहनती हैं}। शक्तिशाली आत्मिक
प्राणियों के कारण {उन्हें ऐसा करना भी चाहिए}। 11इन सब के बावजूद, जब परमेश्वर लोगों को मसीह के साथ एकजुट करता है, तो स्त्रियों का अस्तित्व पुरुषों
के बिना नहीं है, और पुरुषों का अस्तित्व स्त्रियों के बिना नहीं है। 12वास्तव में, जबकि स्त्री {हव्वा} पुरुष {आदम} से निकली थी, तो पुरुषों का अस्तित्व केवल
इसलिए है क्योंकि स्त्रियाँ उन्हें जन्म देती हैं। हालाँकि, {पुरुषों और स्त्रियों सहित,} जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह परमेश्वर की ओर से आता है। 13तुम स्वयं ही
निर्णय करो कि जो स्त्रियाँ अपने सिरों को ढके बिना परमेश्वर से प्रार्थना करती हैं, वे उचित रीति से कार्य करती हैं या नहीं। 14तुम वस्तुओं को देखने के तरीके से
मालूम कर सकते हो कि पुरुषों के लिए लम्बे बाल रखना अपमानजनक है। 15हालाँकि, {तुम वस्तुओं को देखने के तरीके से भी मालूम कर सकते हो} कि
स्त्रियों के लिए लम्बे बाल रखना सम्मान की बात है। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर ने स्त्रियों को उनके लम्बे बाल दिए हैं, जो {उनके सिरों को} ढकने का
काम करते हैं। 16अब यदि कोई व्यक्ति मेरे द्वारा कही गई बातों के बारे में बहस करने पर विचार करता है, तो न तो हम और न ही परमेश्वर की कलीसियाएँ
स्त्रियों को उनके सिरों को (जब वे प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती हैं) खुला रखने की अनुमति देती हैं। 17अब मैं तुम्हें एक अन्य विषय के बारे में निर्देश देने जा
रहा हूँ, और मैं इस क्षेत्र में तुम्हारी सराहना नहीं कर सकता। {मैं तुम्हारी सराहना इसलिए नहीं कर सकता,} क्योंकि जब तुम संगी विश्वासियों के रूप में इकट्ठे
होते हो तो तुम उनकी सहायता करने के बजाए संगी विश्वासियों को हानि पहुँचाते हो। 18पहली बात जिसके बारे में मैं बात करूँगा वह यह है कि: कुछ लोगों ने
मुझ से कहा है कि जब तुम परमेश्वर की आराधना करने के लिए संगी विश्वासियों के रूप में इकट्ठा होते हो तो तुम प्रतिद्वंद्वी समूहों में विभाजित हो जाते हो। मैं
विश्वास करता हूँ कि यह आंशिक रूप से सच है। 19{मैं इस पर इसलिए विश्वास करता हूँ} क्योंकि तुम्हारे समूह में असहमतियाँ होना आवश्यक है। इस रीति से,
{सभी लोगों पर} यह स्पष्ट हो सकता है तुम्हारे समूह में से परमेश्वर {अपने लिए} किसे स्वीकार्य मानता है। 20इन विभाजनों के कारण, तुम वास्तव में उस समय
प्रभु भोज नहीं खा रहे हो जब तुम संगी विश्वासियों के रूप में {इसे खाने के लिए} इकट्ठे होते हो। 21तुम्हारे भोजों के दौरान, कुछ लोग {दूसरों के कुछ पाने से
पहले ही} अपना स्वयं का भोजन खा जाते हैं। इस रीति से, कुछ लोगों को खाने के लिए पर्याप्त नहीं मिलता, जबकि अन्य लोग नशे में धुत हो रहे हैं। 22तुम
अपने घरों में भी भोजन खा सकते हो और दाखरस पी सकते हो, इसके बावजूद तुम इन तरीकों से व्यवहार करते हो। बजाए इसके, तुम परमेश्वर की कलीसिया
के बारे में तिरस्कारपूर्वक विचार करते हो। विशेष रूप से, तुम उन लोगों को लज्जित करते हो जिनके पास तुम से कम है। तुम्हें पहले से ही पता होना चाहिए कि
मैं तुम से क्या कहूँगा। मैं इन कामों को करने के लिए तुम्हारी सराहना नहीं करने जा रहा हूँ। मैं निश्चित रूप से ऐसा नहीं करूँगा! 23जब यहूदा ने प्रभु यीशु को
{उन अधिकारियों के हाथों में सौंपा, जिन्होंने उसे मार डाला,} उस रात के बारे में जो कुछ मैंने प्रभु से जाना, वह मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है। उस रात, यीशु
ने एक रोटी ली। 24उसने {उस रोटी के लिए} परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और फिर उसके टुकड़े-टुकड़े किए {ताकि चेले उसे खा सकें}। फिर उसने कहा, "यह
{रोटी} मेरी देह है, जिसे मैं तुम्हारे निमित्त अर्पित कर रहा हूँ। मैंने जो किया है उसे दोहराना, ताकि तुम्हें स्मरण रहे कि मैं स्वयं को {तुम्हारे लिए} {कैसे अर्पित कर
रहा हूँ}।" 25जिस प्रकार से {उसने रोटी ली थी}, उसी प्रकार से उनसे उनके भोजन खा लेने के बाद {दाखरस का} कटोरा भी लिया। उसने कहा, "यह {दाखरस
का} कटोरा मेरे लहू के साथ नयी वाचा है {जिसका मैं प्रारम्भ कर रहा हूँ} । जब भी तुम इस दाखरस के कटोरे में से पीते हो, तो जो मैंने किया है उसे दोहराना,
ताकि तुम्हें स्मरण रहे कि मैं स्वयं को {तुम्हारे लिए} {कैसे अर्पित कर रहा हूँ}।" 26इसका अर्थ यह है कि जब तक प्रभु वापस न आए, उस समय तक जब कभी
भी इस रोटी को खाने और इस कटोरे से {दाखरस} पीने के द्वारा {तुम प्रभु भोज में भाग लेते हो}, तो तुम घोषणा करते हो कि प्रभु की मृत्यु हो गई है।
27इसलिए फिर, कुछ लोग, प्रभु भोज में भाग लेते हुए, शायद इस रीति से रोटी खाएँ या कटोरे से {दाखरस} पीएँ जिससे {मसीह} का अपमान हो। परमेश्वर
उन्हें इसके लिए उत्तरदायी ठहराएगा जैसे उन्होंने प्रभु की देह और उसके लहू {के विरुद्ध कार्य किया है}। 28इससे बचने के लिए, विश्वासियों को सावधानीपूर्वक
विचार करना चाहिए कि वे कैसा व्यवहार कर रहे हैं। उसके बाद, वे रोटी खा सकते हैं और कटोरे से {दाखरस} पी सकते हैं। 29{तुम्हें सावधानीपूर्वक विचार

करना चाहिए कि तुम कैसा व्यवहार कर रहे हो,} क्योंकि कुछ लोग {प्रभु भोज के दौरान} खाते-पीते तो हैं परन्तु यह नहीं पहचानते कि {परमेश्वर ने संगी
विश्वासियों को प्रभु के साथ इतनी निकटता से एकजुट किया है कि मानो वे} प्रभु की देह हों। {प्रभु भोज के दौरान} वे लोग जैसे खाते और पीते हैं, इसके
परिणामस्वरूप परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा। 30क्योंकि {तुम्हारे समूह के लोगों ने ऐसे अनुचित तरीके से काम किया है कि}, उनमें से बहुत से तो बीमार हो गए और
उनमें से कुछ की मृत्यु हो गई है। 31इसलिए, हम विश्वासियों को वास्तव में सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि {प्रभु भोज में भाग लेने से पहले} हम कैसा
व्यवहार कर रहे हैं। तब, परमेश्वर हमें दण्ड नहीं देगा। 32हालाँकि, जब प्रभु हमें दण्ड देता है, तो वह हमें प्रशिक्षित करने के लिए ऐसा करता है। इस रीति से, जब
परमेश्वर उन सब को दोषी ठहराता है जो मसीह में विश्वास नहीं करते, तब परमेश्वर उसमें हमें शामिल नहीं करता। 33अंत में, हे मेरे संगी विश्वासियों, जब तुम
{प्रभु भोज} खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो तुम्हें तब तक खाना आरम्भ नहीं करना चाहिए जब तक कि सभी को खाना-पीना न मिल जाए। 34कोई भी व्यक्ति
जो {इतना} भूखा हो {कि सब के खाना-पीना प्राप्त करने से पहले ही खाना आरम्भ कर दे} उसे अपने घर में ही खा लेना चाहिए। इस रीति से, जब तुम संगी
विश्वासियों के रूप में एक साथ इकट्ठे होते हो, तो परमेश्वर तुम्हें दण्ड नहीं देगा। मैंने वह सब कुछ नहीं कहा जो मुझे कहने की आवश्यकता है। इसलिए, जब
कभी मैं तुम से मिलने आऊँगा, तो मैं तुम्हें उन बातों के बारे में निर्देश दूँगा।

Chapter 12

1अब मैं इस बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ कि कैसे परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों को विशेष रूप से सशक्त करता है। हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं तुम्हें
इन बातों के बारे में सूचित करना चाहता हूँ। 2तुम्हें स्मरण है कि जब तुम विश्वासी नहीं थे {तो तुम उस समय क्या किया करते थे}। तुम ने अन्य देवताओं की
उपासना की। ये अन्य देवता बोल भी नहीं सकते, परन्तु इन अन्य देवताओं की उपासना करने के लिए जो भी {गलत काम लोगों ने तुम्हें करने के लिए कहे तुम
ने उन्हें} किया। 3इसलिए मैं तुम्हें सूचित कर रहा हूँ कि जो कोई यीशु को श्राप देता है, वह परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से नहीं बोलता। दूसरी ओर, एक
व्यक्ति जो कहता है कि यीशु ही प्रभु है, अवश्य ही पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ बात कर रहा होगा। 4आत्मा बहुत से अलग-अलग तरीकों से लोगों को
सशक्त करता है, परन्तु आत्मा केवल एक ही है। 5लोग बहुत से अलग-अलग तरीकों से प्रभु की सेवा करते हैं, परन्तु प्रभु केवल एक ही है। 6लोग बहुत से
अलग-अलग तरीकों से परमेश्वर के लिए काम करते हैं, परन्तु परमेश्वर केवल एक ही है। केवल वही है जो सब लोगों को इन सब तरीकों से कार्य करने के लिए
सशक्त करता है। 7प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर से विशिष्ट तरीके प्राप्त करता है जिसमें परमेश्वर का आत्मा उनके माध्यम से संगी विश्वासियों की सहायता करने के
लिए कार्य करता है। 8उदाहरण के लिए, परमेश्वर का आत्मा कुछ विश्वासियों को बुद्धिमानी से बोलने के लिए सशक्त करता है। अन्य विश्वासी ज्ञान के साथ बात
कर सकते हैं, और वही आत्मा उन्हें ऐसा करने के लिए सशक्त करता है। 9वही आत्मा कुछ विश्वासियों को विशेष तरीकों से परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए
सशक्त करता है। वही आत्मा अन्य विश्वासियों को दूसरों को चंगा करने के लिए सशक्त करता है। 10अन्य विश्वासी भी सामर्थी कामों को कर सकते हैं। अन्य
विश्वासी भी परमेश्वर की ओर से मिले सन्देशों को बोल सकते हैं। अन्य विश्वासी भी यह निर्धारित कर सकते हैं कि कोई बात परमेश्वर के आत्मा की ओर से आई
है या नहीं। कुछ विश्वासी अज्ञात भाषाएँ भी बोल सकते हैं। अन्य विश्वासी उन अज्ञात भाषाओं का अनुवाद भी कर सकते हैं। 11वही आत्मा विश्वासियों को इन
सब कामों को करने के लिए सशक्त करने का कार्य करता है। केवल एक ही पवित्र आत्मा है, और वही निर्णय लेता है कि प्रत्येक विश्वासी के द्वारा विशेष रूप से
कैसे कार्य करना है। 12{हम मानते हैं कि} एक व्यक्ति का शरीर एकता में मिलकर बना है, परन्तु शरीर में बहुत से अंग होते हैं। इसलिए, वे सभी शरीर के अंग,
एक साथ मिलकर एक शरीर का निर्माण करते हैं, यह मायने नहीं रखता कि वे कितने सारे हैं। इसी रीति से हम मसीह {के बारे में भी सोच सकते हैं}। 13अब,
{परमेश्वर ने हमें इतनी निकटता से एक साथ जोड़ा है कि मानो} हम एक शरीर हों। {यह तब घटित हुआ जब} लोगों ने हमें बपतिस्मा दिया और उसके
परिणामस्वरूप हमें वह आत्मा प्राप्त हुआ। {हम इस एक शरीर का निर्माण करते हैं} यद्यपि हम में से कुछ यहूदी लोग हैं और अन्य गैर-यहूदी लोग हैं, और
यद्यपि हम में से कुछ दास हैं और अन्य स्वतंत्र लोग हैं। इसके अलावा, हम सभी ने इस एक आत्मा में ऐसे साझेदारी की जैसे कि हम सब ने एक कटोरे में से
पिया। 14जैसा कि तुम जानते हो कि शरीर का कोई एक अंग ही शरीर का निर्माण नहीं करता। बल्कि, {शरीर का निर्माण करने के लिए} इसमें शरीर के कई अंग
लगते हैं। 15कल्पना करो कि तुम्हारा पैर {तुम से बात कर सकता है, और उसने} कहा कि, चूँकि वह हाथ नहीं है, इसलिए वह तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित नहीं हो
सकता। यह कारण उसे तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित होने से दूर नहीं करता। 16फिर से, कल्पना करो कि तुम्हारा कान {तुम से बात कर सकता है, और उसने}
कहा कि, चूँकि वह आँख नहीं है, इसलिए वह तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित नहीं हो सकता। यह कारण उसे तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित होने से दूर नहीं करता।
17कल्पना करो कि केवल आँखें ही तुम्हारे शरीर का निर्माण करती हैं। तुम कुछ भी सुन नहीं पाओगे! कल्पना करो कि केवल कान ही तुम्हारे शरीर का निर्माण
करते हैं। तुम कुछ भी सूँघ नहीं पाओगे! 18परन्तु जो {शरीर के बारे में} सत्य है वह यह है: परमेश्वर ने यह निर्धारित किया कि शरीर के प्रत्येक अंग को कैसे कार्य
करना है, और उसने एक विशिष्ट कारण से शरीर के प्रत्येक अंग को शरीर से जोड़ा। 19कल्पना करो कि {तुम्हारे शरीर के सभी अंग} शरीर का एक ही {प्रकार
का} अंग हों। तब तुम्हारे पास वास्तव में शरीर होगा ही नहीं! 20परन्तु जो {शरीर के बारे में} सत्य है वह यह है: शरीर के बहुत से {अलग-अलग} अंग होते हैं।
हालाँकि, {एक साथ मिलकर वे} एक शरीर का निर्माण करते हैं। 21फिर से कल्पना करो कि तुम्हारे शरीर के अंग बात कर सकते हैं। आँख कभी भी हाथ से नहीं
कहेगी, “मुझे तेरी आवश्यकता नहीं है।” इसी रीति से, सिर कभी भी पाँवों से नहीं कहेगा, “मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है।” 22बल्कि, जो सच है वह यह है कि
शरीर के जिन अंगों को हम नाजुक समझते हैं, वे वास्तव में आवश्यक होते हैं। 23इसके अलावा, हम शरीर के उन अंगों को अधिक महत्व देते हैं जिन्हें हम कम
मूल्यवान समझते हैं। हम अपने शरीर के अशोभनीय अंगों के साथ अधिक शालीनता से बर्ताव करते हैं, 24परन्तु हम अपने शरीर के शालीन अंगों के साथ किसी
विशेष तरीके से बर्ताव नहीं करते। अंत में, वह परमेश्वर ही है जो शरीर के सब अंगों को एक शरीर में एक साथ रखता है, और वह कम मूल्यवान अंगों को
अधिक मूल्यवान बनाता है। 25{परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया} ताकि शरीर अलग-अलग अंगों में बँट न जाए। बजाए इसके, शरीर के अंग एक साथ मिलकर
काम करते हैं और शरीर के एक अंग को शरीर के अन्य अंगों पर विशेषाधिकार नहीं देते हैं। 26इसलिए, शरीर के एक अंग में पीड़ा होने पर शरीर के सभी अंगों
में पीड़ा होती है। जब कोई शरीर के किसी अंग की बड़ाई करता है तो शरीर के सब अंग आनन्द मनाते हैं। 27{मैं यह सब इसलिए कहता हूँ क्योंकि} तुम सब
मसीह की देह {के समान} हो। तुम में से प्रत्येक {उस देह में} शरीर के अंग {के समान} है। 28उसी के अनुरूप, परमेश्वर ने उन लोगों को विशेष रूप से सशक्त

किया है जो उसकी आराधना करते हैं। पहले कुछ लोग वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है। दूसरे कुछ लोग वे हैं जो परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं। तीसरे कुछ लोग वे हैं जो दूसरे विश्वासियों को शिक्षा देते हैं। इसके अलावा, कुछ लोग सामर्थी कामों को करते हैं। अन्य लोग दूसरों को चंगा कर सकते हैं, अन्य विश्वासियों की सहायता कर सकते हैं, विश्वासियों के समूह का मार्गदर्शन कर सकते हैं, या अज्ञात भाषाएँ बोल सकते हैं। **29**केवल कुछ ही ऐसे विश्वासी हैं जिन्हें परमेश्वर ने मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है। केवल कुछ ही परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं। केवल कुछ ही दूसरे विश्वासियों को शिक्षा देते हैं। केवल कुछ ही सामर्थी कामों को करते हैं। **30**केवल कुछ ही दूसरों को चंगा करते हैं। केवल कुछ ही अज्ञात भाषाएँ बोलते हैं। केवल कुछ ही {उन अज्ञात भाषाओं} का अनुवाद करते हैं। **31**अब मैं चाहता हूँ कि तुम उत्सुकतापूर्वक सबसे अधिक लाभकारी वरदानों की खोज करो। इसके बाद, मैं तुम्हें सबसे उत्तम काम के बारे में बताऊँगा जिसे तुम कर सकते हो।

Chapter 13

1कल्पना करो कि मैं कई मानवीय और देवदूत भाषाएँ बोल सकूँ, परन्तु मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता। तब मैं {बहुत शोर करने वाले,} एक ऊँचे स्वर के धातु वाले वाद्ययंत्र के समान तो होऊँगा{, परन्तु मैं किसी की सहायता नहीं कर पाऊँगा}। **2**फिर से, कल्पना करो कि मैं परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार कर सकूँ, कि मैं सब कुछ समझ और जान सकूँ, और यह कि मुझे इतना विश्वास हो कि मैं पहाड़ों का स्थान बदल सकूँ। परन्तु आगे कल्पना करो कि मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता। इस कारण से, और कुछ भी मायने नहीं रखता। **3**एक बार फिर से, कल्पना करो कि मैंने अपना सब कुछ उन लोगों को उपहार में दे दिया {जिनको भोजन की आवश्यकता थी}, और यह कि मैंने अपने शरीर की रक्षा नहीं की, जिसके परिणामस्वरूप लोग मेरा सम्मान करें। परन्तु आगे कल्पना करो कि मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता। {क्योंकि मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता}, इसलिए मेरे द्वारा किए गए कामों में से कुछ भी मेरी सहायता नहीं करता। **4**जो दूसरों से प्रेम करते हैं वे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं और कृपापूर्वक कार्य करते हैं। वे नहीं चाहते कि दूसरे लोग उन अच्छी वस्तुओं को खो दें जो उनके पास हैं। वे अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें नहीं बोलते या ऐसे कार्य नहीं करते जैसे कि वे महान व्यक्ति हैं। **5**वे लज्जाजनक काम नहीं करते। वे केवल अपनी ही चिन्ता नहीं करते। वे शीघ्र ही क्रोधित नहीं होते। वे इस बात पर ध्यान नहीं लगाते कि दूसरों ने क्या गलत काम किया है। **6**जब लोग बुरे काम करते हैं तो वे आनन्द नहीं मनाते। बजाए इसके, वे सच बात का आनन्द मनाते हैं। **7**वे हमेशा {दूसरों} के साथ रहते हैं। वे हमेशा विश्वास करते हैं {कि परमेश्वर वही करेगा जो उत्तम है}, और वे हमेशा आश्वस्त रहते हैं {कि परमेश्वर वही करेगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है}। {जब बुरी बातें घटित होती हैं तो} वे हमेशा डटे रहते हैं। **8**जो दूसरों से प्रेम करते हैं वे ऐसा करना कभी बंद नहीं करते। हालाँकि, किसी दिन लोग परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार नहीं करेंगे। किसी दिन लोग अज्ञात भाषाएँ बोलना बंद कर देंगे। किसी दिन, लोग विशेष बातों को नहीं जानते होंगे। **9**{ये बातें अब घटित इसलिए नहीं होंगी,} क्योंकि हम विशेष बातों को पूर्णरूप से नहीं जानते, और परमेश्वर जो कहते हैं हम उसे पूर्णरूप से घोषित नहीं करते। **10**इसलिए, जो पूर्ण है उसका अनुभव हम तब करेंगे {जब यीशु वापस आएगा}, उस समय जो अपूर्ण है वह मायने नहीं रखेगा। **11**{यहाँ एक समरूपता है:} जब हम छोटे थे, तब हम बच्चों के समान बात करते थे। हम ने वैसे ही सोचा जैसे बच्चे सोचते हैं। हम ने वैसे ही निर्णय लिए जैसे बच्चे निर्णय लेते हैं। परन्तु जब हम बड़े हुए तो हम ने बच्चों के समान अभिनय करना बंद कर दिया। **12**इस समय, हम {परमेश्वर को} परोक्ष रूप से ऐसे देखते हैं, जैसे कि हम ने दर्पण में प्रतिबिम्ब देखा हो। हालाँकि, जब {यीशु वापस आएगा}, {तब हम परमेश्वर को} आमने-सामने देखेंगे। इस समय, हम {परमेश्वर को} पूर्णरूप से नहीं जानते हैं। हालाँकि, जब {यीशु वापस आएगा}, तब हम परमेश्वर को उतना ही जानेंगे जितना वह हमें जानता है। **13**अंत में, तीन बातें हैं जो हम हमेशा करते रहेंगे। हम {मसीह पर} विश्वास करेंगे, और {परमेश्वर ने जिसकी प्रतिज्ञा की है उसे वह करेगा इस बात की} पूरे विश्वास के साथ अपेक्षा करेंगे, और {परमेश्वर एवं दूसरे लोगों से प्रेम करेंगे}। हालाँकि, इन तीन बातों में {परमेश्वर एवं दूसरे लोगों से} प्रेम करना सबसे महत्वपूर्ण है।

Chapter 14

1तुम्हें हमेशा दूसरों से प्रेम करने की खोज करनी चाहिए। साथ ही, तुम्हें उत्सुकतापूर्वक इस बात की खोज करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा विशेष रूप से तुम्हें सशक्त करे, ताकि तुम परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करने में सक्षम हो जाओ। **2**{तुम्हें यह इच्छा इसलिए करनी चाहिए} क्योंकि जो लोग अज्ञात भाषा में बात करते हैं वे अन्य लोगों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बात करते हैं। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि कोई भी नहीं जान पाता कि वे क्या कह रहे हैं। बल्कि, जब पवित्र आत्मा उन्हें सशक्त करता है तो वे गुप्त बातें बोलते हैं। **3**दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं, वे दूसरे लोगों से बात करते हैं। वे अन्य विश्वासियों को दृढ़ होने में सहायता करते हैं, एवं अन्य विश्वासियों से उचित तरीके से व्यवहार करने का आग्रह करते हैं, और अन्य विश्वासियों को दिलासा देते हैं। **4**अज्ञात भाषा में बात करने वाले लोग स्वयं की ही दृढ़ होने में सहायता करते हैं। दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं, वे विश्वासियों के समूह की दृढ़ होने में सहायता करते हैं। **5**मैं चाहता हूँ कि तुम सब अज्ञात भाषाओं में बातें करो। हालाँकि, जो मैं और भी अधिक चाहता हूँ, वह यह है कि तुम परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करो। अज्ञात भाषाओं में बात करने की तुलना में परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करना अधिक महत्वपूर्ण और सहायक है। निःसन्देह, यदि कोई {अज्ञात भाषा की} व्याख्या करता है, तो यह {भी} विश्वासियों को दृढ़ करने में सहायता कर सकता है। **6**हे मेरे संगी विश्वासियों, यहाँ {जो मैं कहने की प्रयास कर रहा हूँ वह यह है}: {उदाहरण के लिए,} कल्पना करो कि मैं तुम से मिलने आया, और मैंने अज्ञात भाषाओं में बात की। तब मैं तुम्हारी बिलकुल सहायता नहीं कर पाऊँगा। वास्तव में तुम्हारी सहायता करने के लिए, मुझे उन बातों को {तुम पर} प्रकट करना होगा, उन बातों को जानने में तुम्हारी सहायता करनी होगी, परमेश्वर जो कहता है उसका {तुम पर} प्रचार करना होगा, या {तुम्हें} वह सिखाना होगा। **7**यहाँ तक कि ऐसी वस्तुएँ भी जो जीवित नहीं हैं परन्तु जिनका उपयोग हम आवाज निकालने के लिए करते हैं {वे भी उसका वर्णन करती हैं जो मैं कह रहा हूँ}। {जब कोई व्यक्ति} बाँसुरी या वीणा बजाता है, तो वह वाद्ययंत्र विभिन्न विशिष्ट ध्वनियाँ उत्पन्न करे। नहीं तो कोई नहीं समझ पाएगा कि वह व्यक्ति बाँसुरी या वीणा पर क्या बजाता है, {क्योंकि सभी ध्वनियाँ एक समान ही होंगी}। **8**इसके अलावा, कल्पना करो कि {जब कोई व्यक्ति एक तुरही का उपयोग दूसरों को

चेतावनी देने के लिए करता है} तो उस तुरही से स्पष्ट आवाज नहीं निकलती। तब किसी को भी मालूम नहीं होगा कि उन्हें शत्रु से लड़ने के लिए तैयार होने की
आवश्यकता है। 9जब कभी तुम बात करते समय ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं करते जिनको दूसरे लोग पहचानते हैं, तो तुम {एक ऐसे वाद्ययंत्र के समान होते हो
जो स्पष्ट ध्वनि उत्पन्न नहीं करता}। तुम जो कह रहे हो उसे कोई नहीं समझ पाएगा और तुम एक ऐसे व्यक्ति {के समान} ठहरोगे जो किसी से भी बात नहीं
करता। 10यह बात सच प्रतीत होती है कि भाषाओं की एक बड़ी विविधता अस्तित्व में है। उनमें से प्रत्येक स्पष्ट रूप से संवाद करती है। 11इसलिए, {उदाहरण
के लिए,} जब मैं यह नहीं समझता कि कोई भाषा कैसे संचार करती है, तो मैं उन सभी के लिए अजनबी हूँ जो {वह भाषा} बोलते हैं, और वे मेरे लिए अजनबी
हैं। 12इसलिए, जो तुम्हें करना चाहिए वह यह है: क्योंकि तुम चाहते हो कि पवित्र आत्मा तुम्हें विशेष रूप से सशक्त करे, इसलिए तुम्हें विश्वासियों के समूह को
दृढ़ होने में सहायता करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए {ताकि तुम उसका उपयोग करो जिसके लिए पवित्र आत्मा तुम्हें सशक्त करता है}।
13इसलिए, जो लोग अज्ञात भाषाओं में बात करते हैं, उन्हें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उनको उसकी व्याख्या करने में भी सक्षम करे {जो वे कह
रहे हैं}। 14{उदाहरण के लिए,} जब मैं किसी अज्ञात भाषा में {परमेश्वर से} प्रार्थना करता हूँ, तो मेरा केवल एक भाग प्रार्थना कर रहा होता है क्योंकि मैं जो कह
रहा हूँ उसके बारे में मैं सोच नहीं रहा हूँ। 15इसलिए, {तुम्हें और मुझे जो करना चाहिए} वह यह है। हमें केवल अपने कुछ भागों के साथ ही नहीं बल्कि हमें उस
बारे में विचार करके भी {परमेश्वर से} प्रार्थना करनी चाहिए कि हम क्या कह रहे हैं। हमें केवल अपने कुछ भागों के साथ ही नहीं बल्कि हमें उस बारे में विचार
करके भी गीत गाना चाहिए कि हम क्या गा रहे हैं। 16कल्पना करो कि जो लोग {अज्ञात भाषाओं को} नहीं समझते, और वे तुम्हें परमेश्वर की स्तुति करते हुए
सुनते हैं जब तुम अपने कुछ भागों का उपयोग कर रहे होते हो, {और तुम उस बारे में विचार नहीं कर रहे हो जो तुम कह रहे हो}। जब तुम परमेश्वर की स्तुति
करते हो तो वे लोग उसमें भाग इसलिए नहीं ले पाएँगे क्योंकि वे उस {अज्ञात भाषा} को नहीं समझते जिसे तुम बोल रहे हो। 17इस परिस्थिति में, तुम ही उचित
रूप से परमेश्वर की स्तुति करते हो। हालाँकि, तुम अन्य लोगों को दृढ़ होने में सहायता नहीं कर पाते। 18मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम सब से
अधिक अज्ञात भाषाओं में बात करता हूँ। 19हालाँकि, जब मैं परमेश्वर की आराधना करने के लिए संगी विश्वासियों के साथ इकट्ठा होता हूँ, तो मैं केवल उन कुछ
ही शब्दों को बोलना चाहता हूँ जिनके बारे में मैं विचार करता हूँ। इस रीति से, मैं {केवल स्वयं को ही नहीं परन्तु} अन्य विश्वासियों को भी सिखा सकता हूँ।
अज्ञात भाषा में लाखों शब्द {बोलने} की तुलना में {मेरे लिए ऐसा करना बेहतर है}। 20हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं नहीं चाहता कि तुम {इन बातों के बारे में} छोटे
बालकों के समान मूर्ख रहो। बल्कि, तुम्हें {इन बातों के बारे में} एक पूर्णतः विकसित वयस्क के समान बहुत कुछ मालूम होना चाहिए। जो बातें गलत हैं {केवल}
उन्हें न करने में तुम्हें छोटे बालकों {के समान} होना चाहिए। 21जो प्रभु कहता है उसे भविष्यद्वक्ता यशायाह ने पवित्रशास्त्र में लिखा है, “मैं अपनी प्रजा इस्राएल
से उन लोगों के द्वारा बात करूँगा जो विदेशी भाषा बोलते हैं। हालाँकि, इस तरीके से वे मेरी नहीं सुनेंगे।” 22इसलिए, अज्ञात भाषाओं में बात करना यह दर्शाता
है कि परमेश्वर उन लोगों का न्याय करता है जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करते, न कि उन लोग का जो {मसीह पर} विश्वास करते हैं। दूसरी ओर, परमेश्वर द्वारा
कही गई बातों का प्रचार करना {यह दर्शाता है कि परमेश्वर उन लोगों के प्रति दयालुता से कार्य करता है} जो {मसीह पर} विश्वास करते हैं, न कि उन लोगों के
प्रति जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करते। 23इसलिए, कल्पना करो कि विश्वासियों का पूरा समूह परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक साथ इकट्ठा हुआ,
और तुम सब ने अज्ञात भाषाओं में बातें की। आगे कल्पना करो कि जो {अज्ञात भाषाओं को} नहीं समझते या जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करते, वे लोग
तुम्हारे समूह में आते हैं। तब वे {दूसरों} को बताएँगे कि तुम लोग पागल हो। 24दूसरी ओर, कल्पना करो कि तुम सभी ने परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार
किया। आगे कल्पना करो कि कोई व्यक्ति जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करता या जो {अज्ञात भाषाओं को} नहीं समझता, वह तुम्हारे समूह में आता है। तुम जो
कुछ भी बोलोगे, वह उन बातों को उन पर प्रकट करेगा और उन बातों से उनका सामना करेगा {जो गलत काम उन्होंने किए हैं}। 25{इस रीति से,} सब लोगों को
वह बातें पता चल जाएँगी जो ये {आगंतुक} दूसरों से छिपाते हैं। प्रतिउत्तर में, वे घुटने टेक कर परमेश्वर की आराधना करेंगे। वे {दूसरों को} इस बात का प्रचार
करेंगे कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे साथ है। 26हे मेरे संगी विश्वासियों, जो मेरे कहने का अर्थ है वह यह है। जब कभी तुम {परमेश्वर की आराधना करने के लिए}
एक साथ इकट्ठा होते हो, तो प्रत्येक विश्वासी को {कुछ करना होता है}। कुछ गीत गाते हैं, अन्य लोग सिखाते हैं, दूसरे लोग बातों को प्रकट करते हैं, अन्य लोग
अज्ञात भाषा में बोलते हैं, दूसरे लोग अज्ञात भाषा का अनुवाद करते हैं। अन्य विश्वासियों को दृढ़ होने में सहायता करने के लिए विश्वास करने वालों को इन सभी
कामों को करना चाहिए। 27जब विश्वासी अज्ञात भाषाओं में बात कर रहे हों, तो अधिकतम दो या तीन लोग ही {बोलें}। वे एक के बाद एक बोलें, और कोई जन
यह व्याख्या करे कि {वे क्या कह रहे हैं}। 28दूसरी ओर, जब विश्वासी परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक साथ इकट्ठे होते हैं और अज्ञात भाषाओं की
व्याख्या करने वाला कोई व्यक्ति वहाँ नहीं है, तो जो कोई भी अज्ञात भाषाओं में बात कर सकता है, वह चुप रहे। {ऊँचे स्वर में बात करने के} बजाए, वे गुप्त में
{अज्ञात भाषाओं में} परमेश्वर से बात करें। 29इसी रीति से, वे {लगभग} दो या तीन लोग ही बोलें जो परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं। बाकी सब
यह निर्धारित करें कि {जो वे कहते हैं} वह सही है या गलत। 30अब, जब कभी परमेश्वर किसी व्यक्ति पर कुछ प्रकट करता है {जब विश्वास करने वाले एक
साथ इकट्ठा होते हैं तो जो किसी दूसरे व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हुए सुन रहा है}, तो जो व्यक्ति बोल रहा है उसे बोलना बंद कर
देना चाहिए। 31{तुम्हें ऐसा इसलिए करना चाहिए} ताकि हर किसी को एक के बाद एक, परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करने का अवसर मिले। इस
रीति से, हर कोई कुछ न कुछ सीखता है, और हर कोई दृढ़ हो जाता है। 32जो परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं, वे यह नियंत्रित करते हैं कि वे
इसका कैसे और कब प्रचार करें। 33{यह इसलिए सच है} क्योंकि जो शान्तिपूर्ण और व्यवस्थित है, वही परमेश्वर के गुण प्रकट करता है, न कि वह जो
अव्यवस्थित है। {मैं चाहता हूँ कि तुम भी वैसे ही व्यवहार करो} जैसे वे बाकी सब लोग व्यवहार करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने लिए अलग किया है, जब वे
परमेश्वर की आराधना करने के लिए इकट्ठे होते हैं। 34जब विश्वास करने वाले एक साथ इकट्ठे होते हैं {और जब उनके पति बोल रहे हों} तो पत्नियों को चुप
रहना चाहिए। उन्हें बात नहीं करनी चाहिए बल्कि {अपने पतियों का} सम्मान करना चाहिए और उनका आज्ञापालन करना चाहिए। {उन्हें ऐसा इसलिए करना
चाहिए} क्योंकि हम {परमेश्वर की} व्यवस्था में यही पाते हैं। 35अब, जब पत्नियाँ {जो उनके पति बोल रहे हैं उसके बारे में} अधिक जानना चाहती हैं, तो उन्हें
अपने घरों में अपने पति से प्रश्न पूछने चाहिए। {उन्हें ऐसा इसलिए करना चाहिए} क्योंकि जब विश्वास करने वाले एक साथ इकट्ठे होते हैं {और जब उनके पति
बोल रहे हों} तो जो पत्नियाँ बात करती हैं {वे स्वयं को और अपने परिवारों को} लज्जित करती हैं। 36{यदि तुम मेरे द्वारा कही गई बात को पसंद नहीं करते,} तो
स्मरण रखो कि परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का स्रोत तुम नहीं हो, और जिन्होंने सुना है {और जिन्होंने परमेश्वर द्वारा कही गई बातों पर विश्वास किया} ऐसे लोग
केवल तुम ही नहीं हो। 37वे सब लोग जो स्वयं को ऐसा मानते हैं जो परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं या जिन्हें पवित्र आत्मा ने विशेष रूप से
सशक्त किया है, उन्हें यह समझना चाहिए कि जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, वह प्रभु स्वयं चाहता है। 38दूसरी ओर, तुम्हें ऐसे किसी भी व्यक्ति को
{आधिकारिक} रूप में नहीं पहचानना चाहिए जो यह नहीं समझते {कि प्रभु को मेरे द्वारा कही गई बातों की आवश्यकता है}। 39अंत में, हे मेरे संगी विश्वासियों,

उत्सुकतापूर्वक परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करने की खोज करो। इसके अलावा, लोगों को अज्ञात भाषाएँ बोलने से मत रोको। 40अंत में, {जब तुम
परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक साथ इकट्ठे होते हो}, तो तुम्हें हमेशा सम्मानजनक और व्यवस्थित तरीकों से व्यवहार करना चाहिए।

Chapter 15

1हे संगी विश्वासियों, इसके बाद, मैं तुम्हें उस शुभ सन्देश के बारे में सूचित कर रहा हूँ जो मैंने तुम्हें बताया था। तुम ने यह शुभ सन्देश {मुझ से} जाना, और तुम
इस पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हो। 2जब तुम उस सन्देश पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करना जारी रखते हो जो मैंने तुम्हें सुनाया, तो परमेश्वर उस सन्देश के
माध्यम से तुम्हारा उद्धार भी करता है। अन्यथा, तुम ने बिना किसी कारण के {उस सन्देश} पर विश्वास कर लिया। 3पहली बात जो मैंने तुम्हें बताई, और जो मैंने
{प्रभु से} जानी वह यह है: जैसा कि पवित्र पुस्तकों {के लेखकों} {ने लिखा है} कि मसीह हमारे पापों को दूर करने के लिए {क्रूस पर} मरा। 4लोगों ने उसे गाड़
दिया, परन्तु {उसके बाद} तीसरे दिन, परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया, जैसा कि पवित्र पुस्तकों {के लेखकों} {ने लिखा है}। 5वह पतरस को और फिर
{यीशु के शेष} 12 {निकटतम अनुयायियों} को दिखाई दिया। 6उसके बाद, वह एक बार में 500 से अधिक संगी विश्वासियों को दिखाई दिया। हालाँकि इनमें से
कुछ लोगों की मृत्यु हो चुकी है, परन्तु लगभग सब के सब अभी भी जीवित हैं। 7उसके बाद, वह याकूब को और फिर उन सभी को दिखाई दिया, जिन्हें उसने
अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा था। 8अंत में, जब वह उन सभी को दिखाई दे चुका, उसके बाद वह मुझे भी दिखाई दिया। इसलिए, {क्योंकि मैं वह
व्यक्ति बन गया जिसे यीशु ने बाकी सब के बाद उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा था}, मैं उस बालक के समान हूँ जिसने असामान्य तरीके से जन्म लिया
था। 9वास्तव में, मैं हर उस व्यक्ति की तुलना में कम महत्वपूर्ण और सम्माननीय हूँ जिसे मसीह ने उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा था। सचमुच, चूँकि
मैंने उन लोगों को नष्ट करने की प्रयास किया था जो मसीह पर विश्वास करते हैं, इसलिए मैं इसके योग्य नहीं हूँ जब दूसरे लोग मुझे वह कहकर पुकारते हैं जिसे
मसीह ने उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा हो। 10हालाँकि, परमेश्वर ने अनुग्रहपूर्वक मुझे ऐसा व्यक्ति बनाया जिसे मसीह ने अपना प्रतिनिधित्व करने के
लिए भेजा। इसके अलावा, उसने मुझे जो कुछ सौंपा है, उसके परिणामस्वरूप बड़े-बड़े काम हुए हैं। वास्तव में, मैंने अन्य सभी {जिन्हें मसीह ने अपना
प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा} की तुलना में अधिक परिश्रम किया। निःसन्देह, यह असल में मैं नहीं था {जिसने इतना परिश्रम किया}। बजाए इसके, यह
परमेश्वर ही था {जिसने इतना कुछ किया} जो अनुग्रहपूर्वक मेरे माध्यम से काम कर रहा था। 11अन्त में, मैं और दूसरे प्रेरित, दोनों उस शुभ सन्देश का प्रचार
करते हैं जिसका वर्णन मैंने किया, और तुम ने उस शुभ सन्देश पर भरोसा किया। 12क्योंकि सभी विश्वासियों का कहना है कि परमेश्वर ने मसीह को फिर से
जीवित किया, इसलिए तुम्हारे समूह में कोई भी यह दावा नहीं कर रहा होगा कि जो लोग मर चुके हैं वे फिर से जीवित नहीं होंगे। 13कल्पना करो {कि यह सच
हो} कि जो लोग मर चुके हैं वे फिर से जीवित नहीं होंगे। {उस मामले में,} परमेश्वर ने मसीह को फिर से जीवित नहीं किया। 14कल्पना करो {कि यह सच हो}
कि परमेश्वर ने मसीह को फिर से जीवित नहीं किया। उस मामले में, हम ने बिना किसी कारण के {शुभ सन्देश} का प्रचार किया और तुम ने उस पर विश्वास
किया। 15इसके अलावा, हम ऐसे लोग ठहरेंगे जो परमेश्वर के बारे में झूठ बोलते हैं, क्योंकि हम ने परमेश्वर के सामने घोषणा की कि उसने मसीह को फिर से
जीवित किया, जबकि उसने वास्तव में ऐसा नहीं किया। यह सब तब सच होगा यदि परमेश्वर उनको फिर से जीवित न करे जो मर गए हैं। 16{तुम कह सकते हो
कि यह सच है जब तुम} कल्पना करते हो कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें परमेश्वर फिर से जीवित नहीं करता। {उस मामले में,} परमेश्वर ने मसीह को भी फिर से
जीवित नहीं किया। 17कल्पना करो {कि यह सच है} कि परमेश्वर ने मसीह को फिर से जीवित नहीं किया। {उस मामले में,} तुम ने बिना किसी कारण के {शुभ
सन्देश} पर विश्वास किया, और पाप तुम्हें नियंत्रित करना जारी रखता है। 18फिर से उस मामले में, जो विश्वासी मर चुके हैं वे फिर कभी जीवित नहीं होंगे।
19कल्पना करो कि केवल मरने से पहले ही हम विश्वास के साथ मसीह से {हमारी सहायता करने की} अपेक्षा कर सकते हैं। {उस मामले में,} सब लोगों को
किसी और के लिए {खेद प्रकट करने} की तुलना में हमारे लिए अधिक खेद प्रकट करना चाहिए। 20परन्तु जो सच है वह यह है: परमेश्वर ने मसीह को फिर से
जीवित किया, और वह उन लोगों में से पहला है जो मर चुके हैं {जिन्हें परमेश्वर फिर से जीवित करेगा}। 21{तुम कह सकते हो कि यह सच है,} क्योंकि एक
मनुष्य {आदम} ने जो किया, उसके माध्यम से लोग मरते हैं। वैसे ही जो लोग मर चुके हैं, वे उस एक मनुष्य (यीशु) के माध्यम से फिर से जीएँगे। 22मेरे कहने का
अर्थ यह है कि जिस प्रकार से सब लोग मर कर इसलिए समाप्त हो जाते हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें आदम के साथ एकजुट कर दिया, उसी रीति से सब {विश्वास
करने वाले} फिर से इसलिए जीवित हो जाएँगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें मसीह के साथ एकजुट करता है। 23अब, वे सब लोग {जो फिर से जीवित हो जाएँगे} बारी-
बारी से ऐसा करते हैं: पहले मसीह और फिर वे जो मसीह के हैं, जब वह {फिर से} वापस आएगा। 24उसके बाद, जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है, जिसकी वह
प्रतीक्षा कर रहे हैं वह {घटित होगा}। उस समय, मसीह हर उस व्यक्ति और हर उस बात से छुटकारा दिलाएगा जो शासन करती है और अधिकार करती है और
नियंत्रण करती है। फिर, वह परमेश्वर को, {जो हमारा पिता है} राज्य के साथ प्रस्तुत करेगा {ताकि परमेश्वर सब पर शासन करे}। 25जैसे {यह काम करता है}
वह यह है: परमेश्वर ने निर्णय लिया कि मसीह तब तक शासन करेगा जब तक कि वह उन सभी पर विजय प्राप्त नहीं कर लेता जो उसका विरोध करते हैं।
26अंतिम बात जो मसीह का विरोध करती है, जिससे वह छुटकारा पाएगा, वह यह है कि लोग मरते हैं। 27अब, {दाऊद ने लिखा,} “उसने उसे हर उस बात पर
विजय दिला दी जो उसका विरोध करती है।” निःसन्देह, “हर उस बात” में परमेश्वर शामिल नहीं है, जो वही है जिसने “उसे हर उस बात पर विजय दिला दी।”
28इसलिए जब वह हर बात पर विजय पा चुका है, तब परमेश्वर पुत्र उसके अधीन हो जाएगा, जिसने उसे हर उस बात पर विजय दिला दी। इस रीति से,
परमेश्वर सभी बातों पर विजय प्राप्त करेगा और शासन करेगा। 29अब, उन लोगों पर ध्यान दो जो उन लोगों की सहायता करने के लिए दूसरों को बपतिस्मा देते
हैं जो मर गए हैं। इसके अलावा, फिर से कल्पना करो कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें परमेश्वर फिर कभी जीवित नहीं करता। {उस मामले में,} लोगों के पास मरे
हुए लोगों की सहायता करने के लिए दूसरों को बपतिस्मा देने का कोई कारण नहीं है। 30और भी बढ़कर, {उस मामले में,} हमारे लिए {जो शुभ सन्देश का
प्रचार करते हैं} लगातार स्वयं को खतरे में डालने का कोई कारण नहीं है {जैसा कि हम करते हैं}। 31सचमुच, मैं बहुत बार मरने का जोखिम उठाता हूँ। हे संगी
विश्वासियों, जैसे मैं तुम पर घमण्ड करता हूँ उसके द्वारा मैं शपथ खाता हूँ {कि यह सच है}, जो मैं इसलिए करता हूँ क्योंकि परमेश्वर ने हम सब को मसीह के
साथ {जो} हमारा प्रभु यीशु है एकजुट किया है। 32कल्पना करो कि मैं उस समय पर केवल मानवीय बातों के बारे में सोच रहा था, जब मैं उन लोगों के विरुद्ध
संघर्ष कर रहा था जिन्होंने इफिसुस नगर का दौरा करते समय मेरा विरोध किया था। {उस मामले में, उनके विरुद्ध संघर्ष करने से} मुझे बिलकुल भी लाभ नहीं

होता। एक बार फिर से कल्पना करो कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें परमेश्वर फिर से जीवित नहीं करता है। {उस स्थिति में,} हमें {वही करना चाहिए जो कई लोग
करने के लिए कहते हैं}: {खाना} खाओ, और {दाखरस} पीओ, क्योंकि हम अति शीघ्र मर जाएँगे। 33जो गलत है उस पर तुम्हें विश्वास नहीं करना चाहिए। {यह
लोकप्रिय कहावत सच है:} “दुष्ट मित्र उस व्यक्ति को भटका देते हैं जो सामान्य रूप से उचित कार्य करता है।” 34मैं चाहता हूँ कि तुम सचेत होकर सही तरीके
से काम करना आरम्भ करो। जो गलत है उसे तुम्हें करते नहीं रहना चाहिए। {मैं इन बातों की आज्ञा इसलिए देता हूँ} क्योंकि तुम्हारे समूह के कुछ लोग परमेश्वर
को नहीं जानते हैं। मैं तुम्हें लज्जित महसूस करवाने के लिए यह कहता हूँ। 35अब कोई व्यक्ति इस बारे में पूछ सकता है कि जो लोग मर गए हैं वे फिर से किस
रीति से जीवित होंगे और इस बारे में कि वे कौन सा रूप धारण करेंगे। 36{यदि तुम उन प्रश्नों के उत्तर नहीं जानते हो,} तो तुम स्पष्ट रूप से विचार नहीं कर रहे
हो! {केवल इस बारे में विचार करो:} जो बीज तुम भूमि में डालते हैं, उसके उगने से पहले ही उसे मरना होगा। 37उस बीज {के बारे में बोलते हुए} जिसे तुम भूमि
में डालते हो, {तुम जानते हो कि} वह पौधे के रूप में नहीं है। बल्कि, वह केवल बीज है। यह बात सच है चाहे हम गेहूँ के बारे में बात कर रहे हों या किसी अन्य
फसल की। 38वास्तव में, परमेश्वर ही बीजों को उन रूपों में विकसित करता है जिन्हें वह चुनता है, और प्रत्येक प्रकार के बीज का एक विशिष्ट रूप होता है
{जिसमें वह बढ़ता है}। 39विभिन्न प्राणियों के शारीरिक अंग भिन्न-भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य, स्तनधारी, पक्षी और मछली सभी के भिन्न-भिन्न
प्रकार के शारीरिक अंग होते हैं। 40कुछ वस्तुओं का अस्तित्व स्वर्ग में है, और अन्य वस्तुओं का अस्तित्व पृथ्वी पर है। स्वर्ग की वस्तुओं के रूप एक तरीके से
महिमामय हैं, जबकि पृथ्वी पर की वस्तुओं के रूप दूसरे तरीके से महिमामय हैं। 41{इसके आगे,} सूर्य, चंद्रमा और तारे भिन्न-भिन्न तरीकों से महिमामय हैं।
वास्तव में, प्रत्येक तारा अपने विशिष्ट तरीके से महिमामय है। 42वह तरीका यह है {जो पूर्णरूप से इस बात पर लागू होता है कि} जो लोग मर चुके हैं वे फिर से
कैसे जीवित हो जाएँगे। लोग एक सड़ते हुए शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित कर देता है ताकि वह कभी मर न सके। 43लोग
उस शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, जिसका कोई आदर नहीं करता, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित करता है ताकि सब उसका आदर करें। लोग एक निर्बल
शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित कर देते हैं ताकि वह बलवान हो। 44लोग इस संसार के शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, परन्तु
परमेश्वर उसे फिर से जीवित करता है ताकि वह उस संसार का हो जाए जिसे परमेश्वर नया करेगा। जैसे कुछ शरीर इस संसार के हैं, वैसे ही कुछ शरीर उस
संसार के हैं जिसे परमेश्वर नया करेगा। 45{तुम कह सकते हैं कि यह सच है} क्योंकि मूसा ने लिखा, “परमेश्वर ने पहले मनुष्य, आदम की एक जीवित प्राणी के
रूप में सृष्टि की जो इस संसार का था।” {दूसरी ओर, यीशु, जो} दूसरे आदम के समान है, अब उस संसार का है जिसे परमेश्वर नया करेगा और वह दूसरों को
जीवन प्रदान करता है। 46अब {पहले आदम का} शरीर जो इस संसार का है, पहले अस्तित्व में आया, और उसके बाद ही {अंतिम आदम का शरीर} अस्तित्व में
आया जो उस संसार का है जिसे परमेश्वर नया करेगा। 47{आदम, जो} पहले {प्रकार के} मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है, पृथ्वी का था। {वास्तव में,} परमेश्वर ने
उसकी सृष्टि मिट्टी से की। {दूसरी ओर, यीशु, जो} दूसरे {प्रकार के} मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है, स्वर्ग का है। 48पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग आदम के
समान हैं। स्वर्ग में रहने वाले सभी लोग यीशु के समान हैं। 49वर्तमान में हमारे शरीर {आदम के शरीर} जैसे हैं जो इस संसार के हैं। उसी रीति से, हमें इस तरीके
से जीवन व्यतीत करना चाहिए कि हमारे शरीर अंत में {यीशु के शरीर} के समान हो जाएँ, जो उस संसार का है जिसे परमेश्वर नया करेगा। 50हे मेरे संगी
विश्वासियों, यह सुनो: मानवीय शरीर जैसे वे वर्तमान में अस्तित्व में हैं, वे परमेश्वर के राज्य में भाग नहीं ले सकते जो सदाकाल तक बना रहता है, चूँकि वे नाश
जाते हैं और मर जाते हैं। 51ध्यान दो! मैं तुम्हें कुछ ऐसा बताने जा रहा हूँ जिसे अब परमेश्वर ने प्रकट किया है। हम सभी नहीं मरेंगे, परन्तु परमेश्वर हम सभी को
बदल देगा। 52एक क्षण में {वह हमें बदल देगा}, जितनी तेजी से कोई व्यक्ति पलक झपकाता है। {यह तब घटित होगा} जब {एक स्वर्गदूत} उस तुरही को
फूँकेगा जो संकेत देती है कि यह संसार समाप्त हो रहा है। जब {एक स्वर्गदूत} उस तुरही को फूँकता है, तो परमेश्वर उन्हें फिर से जीवित कर देगा जो मर गए हैं
ताकि वे कभी मर न सकें, और वह उन सब को बदल देगा जो अभी जीवित हैं। 53इसलिए, जो शरीर नाश होकर मर जाते हैं, उन्हें ऐसे शरीर में बदल जाने की
आवश्यकता है जो सदाकाल तक बना रहता है और कभी नहीं मर सकता। 54जब हमारे शरीर जो नाश होकर मर जाते हैं, उन शरीरों में बदल जाएँगे जो
सदाकाल तक बने रहते हैं और कभी नहीं मर सकते, उस समय अंत में वह घटित होगा जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने लिखा है: “परमेश्वर ने इसकी सृष्टि की
है ताकि लोग अब न मरें।” 55{इसके आगे,} “जब लोग मरते हैं, तो यह उन्हें नष्ट नहीं करता या चोट नहीं पहुँचाता है।” 56लोग मरते हैं क्योंकि पाप के कारण
उनकी मृत्यु होती है, और ऐसा इसलिए घटित होता है क्योंकि व्यवस्था पाप के दण्ड के रूप में मृत्यु को निर्दिष्ट करता है। 57हालाँकि, मैं परमेश्वर की स्तुति
इसलिए करता हूँ क्योंकि उसने हमें {जैसे हम पाप करते हैं और जैसे हम मरते हैं} उस पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। {उसने यह उस काम के द्वारा
किया है} जो हमारे प्रभु यीशु मसीह ने किया है। 58इसलिए फिर, हे मेरे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ {जो तुम जानते हैं वह सत्य है}। लगातार अधिक
से अधिक प्रभु की सेवा करो। {तुम्हें इन कामों को इसलिए करना चाहिए} क्योंकि तुम जानते हो कि तुम {प्रभु की सेवा करने के लिए} जो कुछ करते हो उसका
परिणाम महान बातों में प्राप्त होगा, चूँकि परमेश्वर ने तुम्हें प्रभु के साथ एकजुट किया है।

Chapter 16

1अब मैं उस धन के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ जो मैं परमेश्वर के लोगों {जो यहूदी हैं} के लिए एकत्र कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम भी वही करो जो
मैंने गलतिया प्रान्त में {रहने वाले} विश्वासियों के समूहों को करने का निर्देश दिया था। 2प्रत्येक रविवार को, तुम में से प्रत्येक को जो कुछ भी तुम ने कमाया है
उसमें से कुछ धन निकालकर सहेजना चाहिए। इस रीति से, जब मैं तुम से मिलने आऊँगा तो मुझे धन इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। 3अपने समूह
से कुछ भरोसे के योग्य लोगों को चुन लो। जब मैं तुम से मिलने आऊँगा, तो {जो तुम ने इकट्ठा किया है} मैं उनसे ही यरूशलेम नगर ले जाने के लिए कहूँगा।
साथ ही, मैं उन्हें पत्रियाँ भी दूँगा {जिसमें लिखा हो कि मैंने उन्हें अधिकृत किया है}। 4तुम और मैं निर्धारित कर सकते हैं कि मुझे भी {यरूशलेम} जाना चाहिए।
उस मामले में, वे लोग {जिन्हें तुम चुनते हो} मेरे साथ यात्रा करेंगे। 5मकिदुनिया प्रान्त से होकर यात्रा करने के बाद जो मेरे मार्ग में ही है, मैं तुम से मिलने आ रहा
हूँ। 6वास्तव में, मैं तुम्हारे साथ कुछ समय, शायद पूरी सर्दी बिताऊँ। इस रीति से, तुम मुझे आगे कहीं भी जाने का निर्णय करने के लिए यात्रा करने में मेरी
सहायता कर सकते हो। 7{मैं ये योजनाएँ इसलिए बना रहा हूँ} क्योंकि मैं अभी थोड़े समय के लिए तुम्हारे पास आने के बजाए तुम्हारे साथ लम्बा समय बिताने
की प्रतीक्षा करूँगा। मुझे विश्वास के साथ ऐसा करने की अपेक्षा तब तक है जब तक कि यह वही कार्य है जो प्रभु चाहता है {कि मैं करूँ}। 8अभी के लिए, मैं

पिन्तेकुस्त के पर्व तक यहीं इफिसुस नगर में रहने की योजना बना रहा हूँ। 9{मैं यहाँ इसलिए रह गया हूँ} क्योंकि परमेश्वर ने मुझे प्रभावी ढंग से और स्वतंत्र रूप
से शुभ सन्देश का प्रचार करने की अनुमति दी है। {इसके अलावा, मुझे} बड़ी संख्या में ऐसे लोगों का विरोध करना पड़ेगा जो मेरे विरुद्ध काम कर रहे हैं। 10जब
कभी तीमुथियुस {तुम्हारे नगर में} आए, तो सुनिश्चित करो कि जब वह तुम्हारे साथ हो तो वह सुरक्षित महसूस करे। {तुम्हें यह इसलिए करना है} क्योंकि वह
{शुभ सन्देश का प्रचार करने के द्वारा} प्रभु की सेवा करता है, ठीक वैसे ही जैसे मैं करता हूँ। 11इसलिए उसके साथ अनादरपूर्वक बर्ताव न करना। बजाए
इसके, मेरे पास वापस यात्रा करने में उसकी सहायता करके एक मित्रतापूर्ण तरीके से कार्य करना। {तुम्हें यह इसलिए करना चाहिए} क्योंकि मुझे आशा है कि
वह अन्य विश्वासियों के साथ {जो मुझ से मिलने के लिए यात्रा कर रहे हैं} मेरे पास वापस आएगा।

12अब मैं अपने संगी विश्वासी अपुल्लोस के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ। मैंने उससे दृढ़तापूर्वक आग्रह किया कि वह अन्य विश्वासियों के साथ {जो
तुम से मिलने के लिए यात्रा कर रहे थे} तुम्हारे पास जाए। हालाँकि, उसने दृढ़तापूर्वक निर्णय लिया कि यह तुम से मिलने का सही समय नहीं है। बजाए इसके,
जब उसे लगेगा कि यह सही समय है तो वह तुम से मिलने आएगा। 13{जो गलत है} उसके विषय में सावधान रहो! दृढ़तापूर्वक {शुभ सन्देश पर} विश्वास करो!
साहसी बनो! दृढ़ निश्चयी रहो! 14जब भी तुम कुछ सोचो या करो तो तुम्हें दूसरों से प्रेम करने पर ध्यान देना चाहिए। 15तुम जानते हो कि स्तिफनास के घर में
रहने वाले लोग अखाया प्रान्त में सबसे पहले {शुभ सन्देश पर विश्वास करने वाले लोग} थे। इसके अलावा, वे परमेश्वर के लोगों की सेवा करने के लिए चुने गए
हैं। हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं तुम से विनती करता हूँ 16कि उनका और उनके जैसे अन्य लोगों का सम्मान करो और उनकी आज्ञा का पालन करो। वास्तव में,
हमारे साथ {शुभ सन्देश का प्रचार करने के लिए} कठिन परिश्रम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का {तुम्हें सम्मान करना चाहिए और उनका आज्ञापालन करना
चाहिए}। 17मैं प्रसन्न हूँ कि स्तिफनास, फूरतूनातुस और अखइकुस यहाँ पहुँच गए हैं। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि उन्होंने मुझे तुम सभी के साथ जुड़ने की
अनुमति दी है, भले ही तुम मेरे साथ नहीं हो। 18उन्होंने मुझे और तुम्हें दोनों को प्रोत्साहित और ऊर्जावान किया। इसलिए, तुम्हें उनका और उनके जैसे अन्य
लोगों का सम्मान करना चाहिए। 19यहाँ आसिया प्रान्त के विश्वासियों के समूह तुम्हें नमस्कार कहते हैं। अक्विला और प्रिस्किल्ला, उन लोगों के रूप में जिन्हें
परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है, प्रेमपूर्वक तुम्हें नमस्कार कहते हैं। जो विश्वास करने वाले उनके घर में इकट्ठा होते हैं {वे भी तुम्हें नमस्कार कहते हैं}।
20सब संगी विश्वासी {जो मेरे साथ हैं} तुम्हें नमस्कार कहते हैं। एक दूसरे का प्रेम से स्वागत करो। 21मैं, पौलुस, {तुम्हें} नमस्कार कहता हूँ। मैं {ये अंतिम शब्द}
{बजाए मेरे लेखक से उन्हें लिखवाने के} स्वयं लिख रहा हूँ। 22परमेश्वर उन सब को शाप दे जो प्रभु से प्रेम नहीं करते। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु शीघ्र वापस
आए। 23{मैं प्रार्थना करता हूँ कि} प्रभु यीशु तुम पर अनुग्रह करे। 24मैं तुम सब से प्रेम रखता हूँ, चूँकि परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के साथ एकजुट कर दिया है।
ऐसा ही हो!

2 कुरिन्थियों

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, {तुम्हें यह पत्री लिखता हूँ} और हमारा संगी विश्वासी, तीमुथियुस, {मेरे साथ ही है}। परमेश्वर ने मुझे चुनकर यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करने के
लिए इसलिए भेजा, क्योंकि परमेश्वर यही चाहता था। {मैं यह पत्री तुम्हें अर्थात् उन लोगों को भेजता हूँ} जो परमेश्वर पर विश्वास करने वालों की उस मंडली का
{भाग हैं}, जो कुरिन्थुस नगर में पाई जाती है। {मैं यह पत्री उन सब विश्वास करने वाले लोगों को भी भेजता हूँ} जो सम्पूर्ण अखाया प्रांत में रहते हैं। 2परमेश्वर
{जो} हमारा पिता भी है, और प्रभु यीशु मसीह तुम पर अपनी दया {बनाए रखें} और {तुम्हें} शांति प्रदान करें। 3हम हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता
की प्रशंसा हमेशा करते रहें— क्योंकि वही हमें हमेशा शांति प्रदान करने वाला दयालु पिता और हमारा परमेश्वर है। 4जब भी हम क्लेशों में पड़ते हैं उस समय
परमेश्वर हमें शांति प्रदान करता है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि हम भी उन लोगों को शांति प्रदान कर सकें जो किसी भी रीति से क्लेश भोग रहे हैं। जैसे
परमेश्वर हमें शांति प्रदान करता है उसी रीति से वह हमें भी उन लोगों को शांति प्रदान करने में सक्षम बनाता है। 5तुमने देखा, कि मसीह नें हमारे लिए बहुत दुःख
उठाया, और अब क्योंकि हम मसीह के हैं इसलिए हम भी उसके समान दुःख उठाते हैं। परन्तु अब मसीह भी हमें उसी असीम मात्रा में शांति प्रदान करता है।
6इसलिए जब भी लोग हमें सताते हैं, तो ऐसा इसलिए होता है ताकि परमेश्वर तुम्हें शांति प्रदान करे और आत्मिक रूप से तु्म्हारी रक्षा करे। जब भी परमेश्वर हमें
शांति प्रदान करता है, तो ऐसा इसलिए होता है ताकि वह तुम्हें भी शांति प्रदान करे। जैसे लोग हमें सताते हैं वैसे ही जब वे तुम्हें भी सताते हैं तो तुम्हारे धीरज के
साथ सह लेने के कारण परमेश्वर ऐसा करता है। 7हम जानते हैं कि जैसे हमने दुःख उठाया, वैसे ही तुम्हारे दुःख उठाने पर परमेश्वर तुम्हें भी शांति प्रदान करेगा।
इसलिए, हमें पूरा भरोसा है कि तुम {यीशु पर विश्वास} करते रहोगे। 8हे संगी विश्वासियों, उदाहरण के लिए हम चाहते हैं कि तुम उन बुरी बातों को जान लो जो
हमारे साथ आसिया प्रांत में घटित हुई थीं। वे बातें इतनी कठिन थीं कि हमें ऐसा लगा मानो हम उन्हें सह नहीं पाएँगे। हमें ऐसा पक्का महसूस हुआ कि हम मरने
वाले थे। 9हमें उस व्यक्ति के समान महसूस हुआ जिसने न्यायाधीश को यह कहते सुन लिया हो, “मैं तुझे मृत्युदंड देता हूँ।” परन्तु परमेश्वर ने हमें उस रीति से
इसलिए महसूस करवाया ताकि हम स्वयं पर नहीं, परन्तु, बजाए इसके, परमेश्वर पर भरोसा करना सीखें। वही मरे हुए हुए लोगों को फिर से जिलाता है। 10भले
ही हमें ऐसा लगा कि हम निश्चय ही मर जाएँगे, तब भी परमेश्वर ने हमें उन लोगों से बचाया जो हमें मार डालना चाहते थे, और वह हमें {ऐसे लोगों से} लगातार
बचाता रहेगा। हम भरोसे के साथ यह अपेक्षा करते हैं कि वह हमें फिर बचाएगा 11जब तुम हमारे लिए प्रार्थना करने के द्वारा हमारी सहायता करते हो। कृपा
करके हमारे लिए प्रार्थना करते रहो ताकि बहुत से लोग उस काम के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें जिसे वह अनुग्रहकारी होकर हमारे लिए इसलिए करेगा
क्योंकि कइयों ने हमारे लिए प्रार्थना की थी। 12हमें इस बात का घमंड है कि हम ईमानदारी के साथ यह कह सकते हैं कि जैसा करने के लिए परमेश्वर ने हमें
सक्षम किया, उसी रीति से हमने सब लोगों के साथ पवित्रता और सच्चाई के साथ बर्ताव किया। हम उस रीति से बर्ताव नहीं करते जिसे अविश्वासी लोग
बुद्धिमानी मानते हैं। बजाए इसके, जब हम तुमसे {बातचीत} करते हैं, तो उस समय विशेष रूप से परमेश्वर अनुग्रहकारी होकर हमारा मार्गदर्शन करता है।
13इस बात को देखने के लिए, मेरी पत्रियों पर ध्यान दो। तुम्हें भेजी गई मेरी सारी पत्रियों में मैंने केवल उन बातों को ही लिखा है जिनको तुम {आसानी} से पढ़
और समझ सकते हो। मुझे आशा है कि {शीघ्र ही} तुम {हमें भी} पूरी रीति से समझोगे 14जैसे तुम हमें {पहले से ही} थोड़ा-थोड़ा समझते हो। जब हमारा प्रभु
यीशु वापस आएगा, तब जैसे हम तुम पर घमंड करते हैं, वैसे ही तुम भी हम पर घमंड करोगे। 15-16क्योंकि मुझे भरोसा था कि तुम मुझ पर घमंड करते हो,
इसलिए एक बार मैंने मकिदुनिया प्रांत जाते हुए तुमसे मिलने की, और वहाँ से लौटते समय फिर से तुमसे मिलने की योजना बनाई। इस रीति से, तुम्हें मेरे साथ
होने का दो बार लाभ मिलता। इसके अलावा, मुझे तुम्हारे नगर से यहूदिया प्रांत तक जाने के लिए जो कुछ भी चाहिए, उसे प्रदान करने में तुम सहायता कर
सकते हो। 17मैंने दोनों ही बार तुमसे मिलने की मंशा की थी{, परन्तु तब मैं दूसरी बार नहीं आ पाया}। इसका अर्थ यह नहीं है कि मैंने अपनी योजना को हल्के
से बदल दिया। जिस समय पर मैं जो इच्छा करता हूँ उसके अनुसार मैं अपनी योजनाओं को बनाता या बदलता नहीं हूँ। मैं यह नहीं कहता कि “हाँ, मैं वह
करूँगा” और फिर तुरन्त ही कहूँ, “नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा।” 18जैसे परमेश्वर विश्वासयोग्य है, वैसे ही जो कुछ हम तुमसे कहते हैं उसमें हम भी पूरी रीति से
ईमानदार हैं। जब हमारा विचार “न” हो, तो हम “हाँ” कभी नहीं कहेंगे। 19मैंने और सिलवानुस और तीमुथियुस ने तुम्हें परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के बारे में
शिक्षा दी। {तुम जानते हो कि} यदि उसके कहने का अर्थ “नहीं” है, तो वह “हाँ” कभी नहीं कहेगा। जो वह है, उस कारण से उसके विषय में हमारा संदेश भी
सुसंगत और भरोसेमंद बना हुआ है। 20यीशु के कारण, हम परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं। यीशु ही उन सब प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।
इसलिए, यीशु ही वह जन है जो हमें परमेश्वर की प्रशंसा करते समय यह कहने में सक्षम बनाता है कि “हाँ, यह सत्य है।” 21वह परमेश्वर ही है जो तुम्हारे साथ-
साथ हमें भी दृढ़तापूर्वक मसीह पर भरोसा करते रहने के लिए प्रेरित करता है। परमेश्वर वह जन भी है जिसने हमें उसका आत्मा इसलिए दिया है ताकि हम
उसकी सेवा कर सकें। 22परमेश्वर ने हमारे साथ रहने के लिए पवित्र आत्मा दिया है। इससे यह दोनों बातें प्रकट होती हैं कि हम उसके हैं और यह कि वह हमारे
लिए उन सब बातों को भी करेगा जिसे उसने हमारे लिए करने की प्रतिज्ञा की है। 23इसलिए अब मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैंने अपना मन क्यों बदला और तुमसे
दोबारा मिलने नहीं आया जैसी मैंने मंशा की थी। यदि मैं झूठ बोलूँ तो परमेश्वर मुझे मार डाले, परन्तु वह जानता है कि जो मैं तुमसे कह रहा हूँ वह सत्य है। मैं
कुरिन्थुस में नहीं लौटा, इसका कारण यह था कि तुम्हारे द्वारा किए गए गलत कामों के बारे में तुमसे गम्भीर रूप से बात करके तुम्हें दुःखी न कर दूँ। 24जब मैं
ऐसा कहता हूँ, तो मेरा अर्थ यह नहीं है कि हम तुम्हारे मालिक हैं जो तुम्हें इस बारे में आदेश देते हैं कि किस बात पर विश्वास करो और क्या करो। बजाए इसके,
जो कुछ भी हम तुम्हें {परमेश्वर के लिए जीवन व्यतीत करने के बारे में} बताते हैं, वह इसलिए है कि तुम आनन्दित हो जाओ। हमें तुम्हें आज्ञा देने की
आवश्यकता इसलिए नहीं है, क्योंकि परमेश्वर स्वयं तुम्हें बताता है कि किस बात पर विश्वास करना है और क्या करना है।

Chapter 2

1{मैं तुमसे मिलने के लिए नहीं आया} क्योंकि तुमसे मिलने के लिए नहीं आने का चुनाव मैंने ही किया था ताकि यह पिछली बार के समान {जब मैं तुमसे मिलने
आया था} तुम्हें और मुझे दुःख न पहुँचाए। 2{मैंने दोबारा तुमसे मिलने के लिए नहीं आने का चुनाव इसलिए किया} क्योंकि, जब मैंने तुम्हें दुःख पहुँचाया, तो मैंने
उन लोगों को ही दुःख पहुँचाया जो मुझे आनन्दित कर सकते हैं। 3जो बातें मैं {तुमसे} अब कह रहा हूँ वह मैंने पहले ही {अपनी पिछली पत्री में} लिख दी थीं।
{वह बातें मैंने इसलिए लिखीं} ताकि, जब अगली बार मैं तुमसे मिलने आऊँ, तो तुम मुझे दुःख न पहुँचाओ, और मैं वैसा ही आनन्दित होऊँ जैसा मुझे तुम्हारे
बारे में आनन्दित होना चाहिए। {वह बातें मैंने तुम्हें इसलिए लिखीं क्योंकि} मुझे तुम सब के बारे में यह निश्चय था कि जब मैं आनन्दित हुआ तो तुम भी आनन्द
करोगे। 4जिस समय {वह पिछली पत्री} मैंने तुम्हें लिखी थी तब मैं बहुत दुःखी और भीतर से पीड़ित था। वास्तव में, मैं {उसे लिखते समय} रोया भी था। {मैंने
वह पत्री तुम्हें इसलिए भेजी} ताकि तुम यह जान लो कि मैं तुम्हारी कितनी चिंता करता हूँ। मेरी मंशा तुम्हें दुःखी करने की नहीं थी। 5हालाँकि, जिस व्यक्ति ने
दूसरों को दुःख दिया उसने वास्तव में मुझे दुःख नहीं पहुँचाया। बल्कि, उस व्यक्ति ने {तुम में से} कुछ को दुःख पहुँचाया। {मैं इस “कुछ” शब्द का उपयोग
इसलिए करता हूँ} ताकि मैं तुम सब को उनमें शामिल न करूँ {जिन्हें वह व्यक्ति दुःख पहुँचाता है}। 6तुम में से अधिकांश लोगों ने मिलकर उस व्यक्ति को
अनुशासित कर दिया है। तुम्हें कुछ और {करने की आवश्यकता नहीं है}। 7इसलिए, {उस व्यक्ति को अनुशासित करने के} बजाए, अब तुम्हें क्षमा करके उस
व्यक्ति को प्रोत्साहित करना चाहिए। नहीं तो, वह व्यक्ति बहुत उदास होकर हार मान लेगा। 8इसलिए, मैं तुम्हें इस बात को कि तुम उस व्यक्ति की चिंता करते
हो, सार्वजनिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। 9जिस दूसरे कारण से मैंने {उस पिछली पत्री को} लिखा था वह यह था कि मैं निश्चित रूप से
यह पता लगा सकूँ कि क्या तुम वह सब कुछ करोगे जो मैंने {तुम्हें करने के लिए} कहा है। 10अंत में, जब तुम किसी व्यक्ति को किसी बात के लिए क्षमा करते
हो, तो मैं भी उस व्यक्ति को क्षमा करता हूँ। वास्तव में, जो {उस व्यक्ति ने किया है} उसके लिए मैंने {उसे} क्षमा कर दिया है, भले ही यह मूल रूप से कुछ भी
नहीं था। मसीह की इच्छा के अनुसार तुम्हारी सहायता करने के लिए {मैंने ऐसा किया}। 11{हमें दूसरों को क्षमा करना चाहिए} ताकि शैतान हम पर नियंत्रण न
करे। वास्तव में, {हमें वश में करने की} उसकी योजना के बारे में हम सब कुछ जानते हैं। 12{जैसे मैंने यात्रा की थी उस पर वापस जाने के लिए} जब मैं त्रोआस
नगर में आया, तो प्रभु यीशु ने मेरे लिए मसीह के बारे में शुभ संदेश की प्रभावी ढंग से घोषणा करना सम्भव बनाया। 13परन्तु चूँकि मेरा संगी विश्वासी तीतुस
{त्रोआस नगर में} नहीं था, इसलिए मैं इस बात की चिंता करता रहा कि {जब वह तुम्हारे पास मिलने के लिए आया तो क्या घटित हुआ होगा}। इसलिए, मैं वहाँ
के विश्वासियों से विदा लेकर मकिदुनिया प्रांत की यात्रा के लिए निकल पड़ा। 14अब हम परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं! क्योंकि उसने हमें मसीह के साथ एकजुट
कर दिया है, इसलिए {वही है} जो उसके {अपने शत्रुओं} पर विजय प्राप्त करते हुए उसमें लगातार हमें भी शामिल करता है। इसके अलावा, वह कई जगहों पर
लोगों पर इस बात को प्रकट करने के लिए भी हमारा उपयोग करता है कि परमेश्वर कैसा है। 15वास्तव में, हम उस मनभावन सुगंध के समान हैं जो मसीह से
आती है और जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है। जब हम उन लोगों के साथ होते हैं जिन्हें परमेश्वर बचा रहा है और जब हम उन लोगों के साथ होते हैं जो मर रहे
हैं, {तो हम इस गंध के समान होते हैं}। 16जो {लोग मर रहे हैं वे सोचते हैं कि हम} उस गंध के समान हैं जो एक मृत शरीर से आती है और जिसके कारण लोग
मर जाते हैं। दूसरी ओर, जिन्हें {परमेश्वर बचा रहा है वे सोचते हैं कि हम} उस गंध के समान हैं जो एक सजीव वस्तु से आती है और जो लोगों को जीवित रखती
है। कोई भी व्यक्ति पूरी तरह {उस रीति से शुभ संदेश का प्रचार} नहीं कर सकता! 17{तुम बता सकते हो कि हम ऐसा पूरी तरह से इसलिए नहीं करते} क्योंकि
हम उस संदेश को धन के लिए नहीं बेचते जो परमेश्वर ने हमें दिया है, जैसा कि कई अन्य लोग करते हैं। बल्कि, हम केवल परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं,
और ऐसा हम कुछ पाने के लिए नहीं करते। वास्तव में, {हम शुभ संदेश की घोषणा इसलिए करते हैं} क्योंकि परमेश्वर ने हमें यही {करने के लिए} भेजा है।
इसलिए, उन लोगों के रूप में जिन्हें परमेश्वर ने मसीह के साथ एकजुट कर दिया है, {हम लोगों को नहीं,} बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए {शुभ संदेश}
का प्रचार करते हैं।

Chapter 3

1हम तुम पर इस बात को दूसरी बार साबित नहीं करेंगे कि हम भरोसेमंद हैं। जैसा कि तुम जानते हो कि तुम्हें ऐसी कोई पत्री लिखने या प्राप्त करने की कोई
आवश्यकता नहीं है जो इस बात को साबित करे कि हम भरोसेमंद हैं, भले ही तुम्हें दूसरे लोगों के लिए {उन कामों को करने की आवश्यकता पड़े}। 2यह तुम
सब लोग ही हो जो उस पत्री के समान कार्य करते हैं {जिससे यह साबित होता है कि हम भरोसेमंद हैं}। जब हम एक दूसरे की देखभाल करते हैं, तो सब लोग
यह जान लेते हैं कि हम भरोसेमंद हैं, जैसे कि मानो वे {तुम्हारी ओर से भेजी गई कोई पत्री} पढ़ते हैं। 3हर कोई जानता है कि तुम एक ऐसी पत्री के समान हो
जिसे मसीह ने लिखा और जिसे हमने पहुँचा दिया। {मसीह} ने स्याही का उपयोग करके {यह पत्री} पत्थर की पटियाओं पर नहीं लिखी। बल्कि, {ऐसा लगता है
कि मानो उसने} पवित्र आत्मा, {जो} एकमात्र वास्तविक परमेश्वर है, के माध्यम से कार्य करके {इसे लिखा}। 4मैं उन बातों को इसलिए कहता हूँ क्योंकि परमेश्वर
{हमारे विषय में जो सोचता है} उसके बारे में हम निश्चित हैं। और {हम निश्चित इसलिए हैं} क्योंकि मसीह {हमें निश्चित} करता है। 5निःसंदेह, हम अपने आप
{शुभ संदेश की घोषणा} अच्छे से नहीं कर सकते, और हमें नहीं लगता कि जो कुछ भी हम अच्छे से करते हैं वह हमारे कारण ही होता है। बल्कि, परमेश्वर ही
हमें {शुभ संदेश की घोषणा} अच्छे से करने में सक्षम बनाता है। 6उसी ने हमें नयी वाचा की ओर से कार्य करने में भी सक्षम बनाया है। पवित्र आत्मा {इस नयी
वाचा को} प्रदान करता है, इसलिए यह केवल ऐसे शब्द नहीं हैं जिन्हें किसी ने लिख दिया है। {यह महत्वपूर्ण इसलिए है} क्योंकि जो लोग पवित्र आत्मा पर
{भरोसा करते हैं} वे जीवित रहेंगे, परन्तु जो लोग उन शब्दों पर {भरोसा करते हैं} जिन्हें किसी ने लिख दिया है वे मर जाएँगे। 7इसके अलावा, जब मूसा ने {उस
पुरानी वाचा के अनुसार काम किया जो लोगों को मृत्युदंड का दोषी ठहराती थी}, तो परमेश्वर ने {उस वाचा के} शब्दों को पत्थर की पटियाओं पर उकेर दिया।
जो काम मूसा ने किया वह इतना तेजोमय था कि इस्राएली लोग बाद में उसके चेहरे की ओर देख भी नहीं पाए क्योंकि यह {उस बात को प्रतिबिंबित करता था
कि परमेश्वर कितना} तेजोमयी है, यद्यपि वह तेज अंत में मिट जाएगा। 8इसलिए, जब लोग पवित्र आत्मा {प्रदान करने वाली नयी वाचा} के अनुसार कार्य करते
हैं, तब वह और भी तेजोमयी हो जाती है। 9वास्तव में, जब मूसा ने {उस पुरानी वाचा के अनुसार काम किया जो परमेश्वर द्वारा} लोगों को दोषी ठहराने की ओर
अगुवाई करती थी, तब यह तेजोमयी थी। इसलिए, जब लोग {उस नयी वाचा के अनुसार काम करते हैं जो लोगों को} धर्मी जन बनने की ओर अगुवाई करती है,

तो यह और भी तेजोमय हो जाती है! 10वास्तव में, क्योंकि {नयी वाचा} अत्यन्त तेजोमय है इसलिए तेजोमय {पुरानी वाचा} बिलकुल भी तेजोमयी नहीं लगती।
11वास्तव में, {पुरानी वाचा} जो मिटने वाली थी, वह तेजोमय थी। इसलिए अब, {नयी वाचा} जो सर्वदा बनी रहेगी वह और भी तेजोमय है! 12इसलिए अब,
चूँकि हम आश्वस्त होकर इन {तेजोमयी} वस्तुओं को {प्राप्त करने की} अपेक्षा करते हैं, इसलिए हम साहसी होकर बर्ताव करते हैं। 13{हम} मूसा के समान तो
नहीं हैं, जिसने अपना मुँह छिपाने के लिए एक पर्दा डाल लिया था। उस रीति से, इस्राएली लोग यह नहीं देख पाए कि कैसे उसके चेहरे ने इस बात को
प्रतिबिंबित करना बंद कर दिया था कि परमेश्वर कितना तेजोमय है। 14वास्तव में, इस्राएली लोग यह नहीं समझ पाए थे कि {परमेश्वर ने क्या प्रकट किया था}।
वास्तव में, इस समय पर भी, जब कोई व्यक्ति {उस पवित्रशास्त्र को पढ़ता है जिसमें} पुरानी वाचा पाई जाती है, {तो ऐसा लगता है कि मानो} मूसा ने जो पर्दा
डाला हुआ था, वह लोगों को {इसे} समझने से रोकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई भी व्यक्ति {इस पवित्रशास्त्र} को तब तक नहीं समझ सकता जब तक
कि परमेश्वर उन्हें मसीह के साथ एकजुट नहीं कर देता। 15वास्तव में, इस समय पर भी जब कोई व्यक्ति मूसा की व्यवस्था को पढ़ता है, तो ऐसा लगता है कि
मानो वह पर्दा लोगों को इसे समझने से रोकता है। 16हालाँकि, जब लोग प्रभु {परमेश्वर} पर भरोसा करना आरम्भ करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें {मूसा की
व्यवस्था} को समझने में सक्षम बनाता है, जैसे कि मानो उसने उस पर्दे को हटा दिया हो। 17जब मैं प्रभु {परमेश्वर} की बात करता हूँ, तो मेरा अर्थ पवित्र आत्मा
से है। यह पवित्र आत्मा ही है जो {लोगों को पवित्रशास्त्र को समझने में} सक्षम बनाता है। 18इसलिए, हम सब {विश्वास करने वाले लोग} इस बात को प्रकट
करते हैं कि प्रभु {परमेश्वर} कितना तेजोमय है, और पर्दे से अपना मुँह ढाँपे बिना {हम ऐसा करते हैं}। परमेश्वर हमें बदल रहा है ताकि हम {मसीह} के समान हो
जाएँ। इस रीति से, तेजोमय प्रभु, जो पवित्र आत्मा हैं, हमें भी तेजोमय बनाता है।

Chapter 4

1उन बातों के कारण, और क्योंकि परमेश्वर ने दया करके हमें {इस नयी वाचा} की ओर से कार्य करने के लिए सक्षम किया, इसलिए हम हार नहीं मानते।
2बल्कि, हम ऐसा कुछ भी करने से इन्कार करते हैं जिसे हमें लज्जाजनक होने के कारण छिपाना पड़े। हम दूसरों को धोखा देने प्रयास नहीं करते, और परमेश्वर
की ओर से आए संदेश में बदलाव नहीं करते। बजाए इसके, हम उस सच्चे {संदेश} की घोषणा करते हैं, और सब लोगों पर इस बात को साबित करते हैं कि
परमेश्वर हमें भरोसेमंद मानता है। 3वास्तव में, केवल वे लोग ही जो उस शुभ संदेश को नहीं समझते जिसकी हम घोषणा करते हैं ऐसे लोग हैं जो मर रहे हैं।
4संसार पर प्रभुता करने वाले शैतान ने इस समय में इन विश्वास न करने वाले लोगों को समझ पाने से रोक रखा है। उस रीति से, तेजोमय मसीह के बारे में शुभ
संदेश, जो इस बात को प्रकट करता है कि परमेश्वर कैसा है, उन्हें नहीं बदल पाता। 5{शुभ संदेश मसीह के विषय में ही है इस बात को मैं इसलिए कहता हूँ}
क्योंकि हम दूसरे लोगों को अपने विषय में नहीं बताते। बल्कि, {हम उन्हें} यीशु मसीह, जो प्रभु है उसके बारे में बताते हैं, और इस बारे में भी बताते हैं कि उसके
कारण कैसे हम तुम्हारी सेवा करते हैं। 6{हम ऐसा इसलिए करते हैं} क्योंकि वह परमेश्वर ही है जिसने ये शब्द कहे: “जो अन्धकार है वह उजियाला हो जाएगा।”
उसने हमें इस सत्य बात को कि वह कितना तेजोमय है समझने में ऐसे सक्षम किया है, जैसे कि मानो उसने हम पर कोई ज्योति चमकाई हो। यीशु मसीह में
होकर {परमेश्वर ने इस बात को प्रकट किया है}। 7हम इन अद्भुत बातों का अनुभव और घोषणा करते हैं, परन्तु हम आप ही निर्बल और निकम्मे हैं। इस रीति से,
{यह बात स्पष्ट है कि} हम नहीं, बल्कि परमेश्वर ही इन बातों को अत्यन्त सामर्थी बनाता है। 8{हम} बहुत सी {कठिन बातों का अनुभव करते हैं}। लोग हमें
सताते तो हैं, परन्तु वे हम पर हावी नहीं होते। हम इस बात के लिए निश्चित तो नहीं हैं कि क्या करें, परन्तु हम हार नहीं मानते। 9लोग हमें हानि पहुँचाने का
प्रयास तो करते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें अकेला नहीं छोड़ता। लोग हमारे विरोध में काम तो करते हैं, परन्तु वे हमें पराजित नहीं कर पाते। 10हम लगातार
शारीरिक रूप से वैसे ही पीड़ित होते हैं, जैसे यीशु हुआ था। उसी रीति से, परमेश्वर हमें भी फिर से वैसे ही जीवित करेगा, जैसे उसने यीशु को फिर से जीवित
किया था। 11वास्तव में, जब तक हम जीवित हैं, परमेश्वर हमें यीशु के कारण लगातार दु:ख उठाने देता है। उस रीति से, भले ही हम मर जाएँ, तौभी परमेश्वर हमें
भी फिर से वैसे ही जीवित करेगा, जैसे उसने यीशु को फिर से जीवित किया था। 12जैसा कि तुम देख सकते हो कि परमेश्वर हमें तो दु:ख उठाने देता है, परन्तु
वह तुम्हें जीवित करेगा। 13अब हम ऐसे लोग हैं जो {परमेश्वर} पर भरोसा रखते हैं, ठीक उस व्यक्ति के समान जिसने {भजन संहिता} में लिखा है, “क्योंकि मैंने
{परमेश्वर} पर भरोसा रखा, इसलिए मैं बोला।” क्योंकि हम भी {परमेश्वर} पर भरोसा रखते हैं, इसलिए हम भी बोलते हैं। 14{हम ऐसा इसलिए करते हैं
क्योंकि} हम जानते हैं कि परमेश्वर ने ही यीशु को फिर से जीवित किया था, इसलिए वह हमें भी फिर से जीवित करेगा। तब हम यीशु के साथ और तुम्हारे साथ
परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे। 15हम उन सब कामों को तुम्हारी सहायता करने के लिए करते हैं। उस रीति से, परमेश्वर अनुग्रहकारी होकर अधिकाधिक
लोगों के प्रति कार्य करेगा। तब, लोग भी परमेश्वर का अधिकाधिक धन्यवाद करेंगे, जिससे कि परमेश्वर को सम्मान मिले। 16इसीलिए, हम हार नहीं मानते।
बजाए इसके, भले ही लोगों को दिखाई देने वाला हमारा भाग नष्ट होता जाता है, तौभी परमेश्वर हर दिन हमारे उस भाग को मजबूत कर रहा है जिसे लोग देख
नहीं सकते। 17{हम हार इसलिए नहीं मानते} क्योंकि जब हम अस्थायी और महत्वहीन तरीकों से पीड़ित होते हैं, तो यह हमें सदाकाल के लिए और महत्वपूर्ण
तरीकों से तेजोमय बना देगा, जो ऐसे तरीके हैं जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। 18इसलिए, हम जो देखते हैं उस पर ध्यान देने की अपेक्षा, हम उस पर
ध्यान देते हैं जो हम नहीं देखते। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि जो हम नहीं देखते वह सदाकाल तक बना रहेगा, परन्तु जो हम देखते हैं वह मिट जाएगा।

Chapter 5

1वास्तव में, हम यह जानते हैं कि हमारे शरीर जो इस पृथ्वी पर हैं वे मर जाएँगे। ये उन डेरों के समान हैं जिन्हें लोग नष्ट कर देते हैं। हालाँकि, परमेश्वर हमें ऐसे
नये शरीर देगा जो सदाकाल तक जीवित रहेंगे। वे उन भवनों के समान होंगे जिनका निर्माण परमेश्वर स्वर्गीय स्थानों में करता है। 2वास्तव में, जैसे हम इन शरीरों
में रहते हैं उससे हम शोक करते हैं। हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमें ऐसे नये शरीर दे, जैसे कि मानो वह हमें नये कपड़े पहना रहा हो। {ये नये शरीर} उन भवनों
{के समान होंगे जो परमेश्वर हमें} स्वर्ग से प्रदान करता है। 3जब कभी भी हम अपने उन नये शरीरों को ग्रहण करेंगे, तो वे उस वस्त्र के समान होंगे जो हमें नंगा
होने से बचाते हैं। 4इससे भी आगे, जबकि हमारे पास ये शरीर हैं जो डेरे के समान हैं, तो हम शोक करते हैं, और ये शरीर जीवन व्यतीत करना कठिन बना देते

हैं। उस कारण से, ऐसा नहीं है कि हम बिना शरीर के रहना चाहते हैं, जो कि बिना कपड़ों के होने के समान होगा। बल्कि, {हम} ऐसे नये शरीरों को प्राप्त करना
चाहते हैं, जो कि नये कपड़े पहनने के समान होगा। उस रीति से, हम मरने की अपेक्षा करने के बजाए सदाकाल तक जीवित रहेंगे। 5वह परमेश्वर ही है जो हमें
इन नये शरीरों के लिए तैयार करता है। उसने हमें पवित्र आत्मा दिया, जो इस बात को दर्शाता है कि वही हमें वह सब कुछ भी देगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है।
6तो फिर, {परमेश्वर हमें जो भी देगा उसके विषय में} हम हर समय आश्वस्त रहते हैं। इसके अलावा, हम जानते हैं कि जब हमारे पास ये शरीर हैं, तो हम प्रभु
{यीशु} के साथ नहीं हैं। 7वास्तव में, हम जो करते हैं वैसा इसलिए नहीं करते क्योंकि हम {उसे} देखते हैं, बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि हम {प्रभु यीशु} पर
भरोसा रखते हैं। 8जैसा मैंने कहा कि {परमेश्वर हमें जो भी देगा उसके विषय में} हम आश्वस्त रहते हैं। इसके अलावा, हम अपने शरीरों के बिना प्रभु {यीशु} के
साथ रहने का चुनाव करेंगे। 9तो फिर, चाहे हम उसके साथ हों या न हों, हम प्रभु यीशु को प्रसन्न करने का यत्न करते हैं। 10{हम ऐसा इसलिए करते हैं} क्योंकि
हम सभी को मसीह के सामने उपस्थित होना होगा और वही इस बात का निर्णय लेगा कि क्या हम में से हर एक व्यक्ति ने सही काम किया है या गलत काम
किया है। तब, मसीह हमें वह वस्तु प्रदान करेगा जिसके हम योग्य हैं, उस काम के अनुपात में जो हमने इन शरीरों में रहते हुए किया था। 11तो फिर, क्योंकि हम
इस बात का अनुभव करते हैं कि प्रभु {यीशु} का भय मानने का क्या अर्थ है, इसलिए हम दूसरों को {भी उसका भय मानने के लिए} राजी करते हैं। परमेश्वर
जानता है {कि हम भरोसेमंद हैं}, और मैं चाहता हूँ कि तुम भी इस बात को जान लो {कि हम भरोसेमंद हैं}। 12हम तुम्हारे सामने इस बात को दूसरी बार साबित
नहीं कर रहे हैं कि हम भरोसेमंद हैं। बल्कि, हम तुम्हें हमारे बारे में अच्छी बातें कहने में सक्षम बना रहे हैं। उस रीति से, तुम ऐसे किसी भी व्यक्ति को उत्तर दे
सकते हो जो इस बारे में बहुत अच्छी बातें कहता है कि लोग बाहर से कैसे दिखते हैं, न कि इस बारे में कि वास्तव में वे लोग अंदर से कौन हैं। 13इसलिए, जब
हम पागल प्रतीत होते हैं, तो हम परमेश्वर की सेवा कर रहे होते हैं। जब हम सामान्य रूप से सोचने वाले प्रतीत होते हैं, तो हम तुम्हारी सेवा कर रहे होते हैं।
14{वे बातें इसलिए सच हैं} क्योंकि मसीह हम से प्रेम करता है, और यही बात {इन तरीकों से कार्य करने की ओर} हमारा मार्गदर्शन करती है। इसके बारे में हम
जैसा सोचते हैं वह यह है: एक व्यक्ति{, अर्थात् मसीह} सब लोगों को बचाने के लिए मरा। उसी के कारण, {ऐसा लगता है कि मानो} सब लोग मर गए। 15इसके
अलावा, {यही कारण है कि} वह सब लोगों को बचाने के लिए मर गया: उस रीति से, जो आत्मिक रूप से जीवन व्यतीत करते हैं, वे अब आगे उस काम को नहीं
करेंगे जिसे वे करना चाहते हैं। बजाए इसके, {वे वही करेंगे} जो मसीह चाहता है, चूँकि वह उन्हें बचाने के लिए मर गया और परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर
दिया। 16उन सब बातों के कारण, हम अब किसी के बारे में केवल मानवीय तरीकों से नहीं सोचते हैं। वास्तव में, यद्यपि एक समय में हम मसीह के बारे में केवल
मानवीय तरीकों से सोचते थे, परन्तु अब हम उसके बारे में उन तरीकों से नहीं सोचते हैं। 17इसलिए फिर, जब भी परमेश्वर लोगों को मसीह के साथ एकजुट
करता है, तो वह उन्हें नये लोग बनाता है। जो वे हुआ करते थे वह अब मिट चुका है। देखो, इस समय पर वे जो हैं, वह कुछ नया है! 18वह परमेश्वर ही है जो हमें
ये सब वस्तुएँ देता है। मसीह के द्वारा काम करके, उसने हमें उसके साथ रहने के योग्य बनाया है। इसके अलावा, परमेश्वर हमें कार्य करने में सशक्त करता है
ताकि दूसरे लोग भी उसके साथ हो सकें। 19यह जैसे कार्य करता है वह यह है: परमेश्वर मसीह के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उसके साथ रहने में सक्षम करने के
लिए कार्य करता है। ऐसा करने में, वह लोगों को उनके द्वारा किए गए गलत कामों के लिए क्षमा करता है। इसके अलावा, वह हमें दूसरे लोगों को यह बताने का
आदेश देता है कि वे परमेश्वर के साथ कैसे रह सकते हैं। 20क्योंकि {परमेश्वर ने हमें आदेश दिया है}, इसलिए हम मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए,
परमेश्वर हमारे द्वारा दूसरे लोगों को प्रोत्साहित करता है। जब हम तुमसे {शुभ संदेश पर विश्वास करने के लिए} कहते हैं ताकि तुम भी परमेश्वर के साथ रह सको
तो हम मसीह के लिए बोलते हैं। 21यीशु ने पाप नहीं किया था। {उसके बावजूद,} हमारे निमित्त परमेश्वर ने उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसे कि मानो उसने
पाप किया था। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर हमें यीशु के साथ एकजुट करके धर्मी बनाता है।

Chapter 6

1परमेश्वर के साथ सेवा करने वालों के रूप में, हम तुम्हें प्रोत्साहित करते हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने अनुग्रहकारी होकर {तुम्हारे लिए} किया है, उसे पूर्ण रीति से
ग्रहण करो, ताकि {जिस रीति से तुम जीवन व्यतीत करते हो} यह उसे बदल दे। 2{तुम्हें ऐसा इसलिए करना चाहिए} क्योंकि {पवित्रशास्त्र में} परमेश्वर कहता है:
“जब मैंने इसे सही समय माना, तो मैंने तुम्हारी सुनकर {कार्य किया}। वास्तव में, जब मैं {लोगों को} छुड़ा रहा था, तब मैंने ही तुम्हारी सहायता की थी।” अभी
वह समय है जिसे परमेश्वर सबसे अच्छा समय मानता है! वास्तव में, अभी वह समय है जिसमें परमेश्वर {लोगों} को बचा रहा है! 3हम ऐसा कुछ भी करने से
बचते हैं जिससे दूसरों को ठेस पहुँचे। उस रीति से, कोई भी इस बात की आलोचना नहीं कर सकता कि हम {परमेश्वर} की सेवा कैसे करते हैं। 4बल्कि, परमेश्वर
की सेवा करते हुए हम इस बात को साबित करते हैं कि हम हर प्रकार से भरोसेमंद हैं। जब लोग हमें चोट पहुँचाते और सताते हैं, तब हम हमेशा दृढ़ बने रहते हैं।
5जब लोग हम पर प्रहार करते हैं, हमें बन्दीगृह में डाल देते हैं, और भीड़ को हमारे विरुद्ध भड़काते हैं, {तब हम दृढ़ बने रहते हैं}। जब हम कठिन परिश्रम करके
अधिक सो नहीं पाते, और भूखे रहते हैं, {तब भी हम दृढ़ बने रहते हैं}। 6हम बुरी बातों से स्वतंत्र हैं, और {जो सत्य है} उसे हम जानते हैं, और हम आसानी से
क्रोधित नहीं होते। हम {दूसरों की} चिंता करते हैं, हमारे पास पवित्र आत्मा है, और हम {लोगों} से ईमानदारी से प्रेम करते हैं। 7जो बात सत्य है हम उसी की
घोषणा करते हैं, और परमेश्वर हमें सामर्थी होकर काम करने में सक्षम बनाता है। हम ऐसे धर्मी हैं, जो एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में ढाल के समान है।
8कुछ लोग हमारा सम्मान करते हैं, और दूसरे लोग हमें लज्जित करते हैं। कुछ लोग हमारे बारे में बुरी बातें कहते हैं, और दूसरे लोग हमारे बारे में भली बातें
कहते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि हम झूठ बोलते हैं, परन्तु वास्तव में जो सच होता है हम वही बोलते हैं। 9कुछ लोग सोचते हैं कि हमें कोई नहीं पहचानता,
परन्तु वास्तव में, परमेश्वर तो हमें पहचानता है। कुछ लोग सोचते हैं कि हम मर रहे हैं, परन्तु वास्तव में, हम जीवित हैं! कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर हमें दंड दे
रहा है, परन्तु वास्तव में, उसने यह निर्णय नहीं लिया कि हम मर जाएँ। 10कुछ लोग सोचते हैं कि हम शोकित रहते हैं, परन्तु वास्तव में, हम निरन्तर आनन्दित
रहते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि हम आवश्यकता से ग्रस्त हैं, परन्तु वास्तव में, हम बहुत से लोगों को वह प्राप्त करने में सहायता करते हैं जो सच में मूल्यवान है।
कुछ लोग सोचते हैं कि हमारे पास कुछ भी नहीं है, परन्तु वास्तव में, हमारे पास सब कुछ है। 11हे कुरिन्थुस नगर में रहने वाले भाइयो, जो बात सत्य है वह हमने
तुम्हें बता दी है, और हमें तुम्हारी बड़ी चिंता रहती है। 12हम ऐसे लोग नहीं हैं जिन्होंने {तुम्हारी चिंता करना} बंद कर दिया है। बल्कि, तुम्हीं लोगों ने {हमारी}
चिंता करना छोड़ दिया है। 13अब मैं तुमसे इस रीति से बातें करूँगा {कि मानो तुम बच्चों के समान सरल तरीकों से विचार करते हो}: चूँकि हम तुम्हारी चिंता
करते हैं, इसलिए यह केवल तब ही उचित होगा जब बदले में तुम भी हमारी चिंता करो। 14उन लोगों में शामिल न होना जो {मसीह} पर विश्वास नहीं करते। {मैं

ऐसा इसलिए कहता हूँ} क्योंकि जो बात सही है और जो बात गलत है, उनमें कुछ भी एक जैसा नहीं होता। इसके अलावा, जो भली बात है उसका बुराई के
साथ कुछ भी साझा नहीं होता। 15मसीह {किसी भी बात के विषय में} शैतान बलियाल से सहमत नहीं होता। इसके अलावा, जो लोग {मसीह} पर भरोसा करते
हैं, वे {मसीह} पर भरोसा न करने वाले लोगों में शामिल नहीं होते। 16परमेश्वर का मन्दिर दूसरे देवताओं के संग मेल नहीं खाता। वास्तव में, यह ऐसा है कि मानो
हम {विश्वास करने वाले लोग} ही एकमात्र वास्तविक परमेश्वर का मंदिर हैं। {हम परमेश्वर के मंदिर हैं ऐसा तुम इसलिए कह सकते हो} क्योंकि परमेश्वर ने
{पवित्रशास्त्र में ये शब्द} कहे हैं: "मैं अपने लोगों के साथ रहूँगा। निश्चय ही, मैं उन्हें नहीं छोडूँगा। वे मुझे अपना परमेश्वर मानेंगे और मैं उन्हें मेरे लोग मानूँगा।"
17इसलिए फिर, {हमें भी वही करना चाहिए} जो प्रभु {परमेश्वर} {पवित्रशास्त्र में} कहता है: "{जो मेरी सेवा नहीं करते} उन लोगों से दूर हो जाओ। इस बात को
सुनिश्चित करो कि तुम {उनकी तुलना में} भिन्न हो। हर उस वस्तु से दूर रहो जो तुम्हें अशुद्ध करती है।" {वह कहता है,} "तब, मैं प्रसन्न होकर तुम्हें ग्रहण
करूँगा।" 18इससे आगे, सब बातों पर शासन करने वाला प्रभु {परमेश्वर} कहता है, "मैं तुम्हारा पिता ठहरूँगा; तुम मेरे बेटे और बेटियाँ ठहरोगे।"

Chapter 7

1इसलिए फिर, {हे संगी विश्वासियों} जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, क्योंकि परमेश्वर ने हमसे इन बातों की प्रतिज्ञा की है, इसलिए हमें हर उस वस्तु से छुटकारा पा लेना
चाहिए जो हमें बाहर से और भीतर से अशुद्ध करती है। जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं तो हमें पूर्ण रीति से पवित्र होना चाहिए। 2{हम तुमसे} हमारी चिंता
करने के लिए {विनती करते हैं}! हमने किसी को भी चोट नहीं पहुँचाई, किसी को धोखा नहीं दिया, या किसी को नष्ट नहीं किया। 3मैं ये बातें तुम पर दोष लगाने
के लिए नहीं कह रहा हूँ। वास्तव में, जैसा मैंने पहले ही {इस पत्री में} लिख दिया है कि चाहे कुछ भी हो जाए, हमें तुम्हारी बड़ी चिंता रहती है। 4मैं बहुत आश्वस्त
हूँ {कि} तुम {वही करोगे जो सही है}। {वास्तव में,} मैं अक्सर तुम्हारे बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहता हूँ। तुम मुझे बहुत प्रोत्साहित करते हो, और जब हम दुःख
उठा रहे होते हैं तब भी मैं {तुम्हारे विषय में} बहुत आनन्दित होता हूँ। 5अब {मैंने कैसे यात्रा की} इस पर वापस लौटते हुए, जब हम मकिदुनिया पहुँचे, तो हमारे
लिए सब बातें आसान नहीं थीं। बजाए इसके, हमने कई तरीकों से कष्ट सहा। दूसरे लोगों ने हमसे झगड़ा किया, और हम अक्सर डरे हुए थे। 6हालाँकि, परमेश्वर
निराश महसूस करने वाले लोगों को प्रोत्साहित करता है। उसने तीतुस को {हम} में शामिल करने के द्वारा हमें प्रोत्साहित किया। 7तीतुस के {हम} में शामिल होने
के द्वारा आंशिक रूप से {परमेश्वर ने हमें प्रोत्साहित किया}, परन्तु इससे भी अधिक तुमने जो किया उसने तीतुस को प्रोत्साहित किया। उसने हमें बताया कि तुम
{मुझसे मिलना} चाहते हो, क्योंकि {जो तुमने किया था उसका} तुम्हें खेद है, और यह कि तुम मेरा सम्मान करने के प्रयास में हो। उन बातों के कारण, मैं {पहले
से भी अधिक} आनन्दित हुआ हूँ। 8मुझे {मेरी लिखी हुई पिछली पत्री का} खेद नहीं है, भले ही मैंने मेरी लिखी हुई बातों से तुम्हें चोट पहुँचाई। वास्तव में, वह
एकमात्र कारण {कि मैंने उस पत्री को लिखा} जिसके लिए मैं खेद प्रकट करूँ वह यह है कि मुझे मालूम है कि यद्यपि केवल थोड़ी देर के लिए ही सही, परन्तु
उस पत्री ने तुम्हें चोट पहुँचाई है। 9हालाँकि, अब {जो बातें तीतुस ने तुम्हारे विषय में हमें बताई उनसे} मैं बहुत प्रसन्न हूँ। {मैं प्रसन्न इसलिए नहीं हूँ} क्योंकि मैंने
तुम्हें चोट पहुँचाई। बल्कि, {मैं प्रसन्न इसलिए हूँ} क्योंकि जब मैंने तुम्हें चोट पहुँचाई, तो {जो तुमने किया था उसके लिए} तुम्हें खेद हुआ और तुमने {उसे करना}
बंद कर दिया। वास्तव में, तुमने उस रीति से आहत महसूस किया जिससे परमेश्वर का सम्मान होता है। इसलिए, हमने भी तुम्हें किसी भली वस्तु से वंचित नहीं
किया। 10{ऐसा इसलिए है} क्योंकि, जब लोग उस रीति से आहत महसूस करते हैं जिससे परमेश्वर का सम्मान होता है, तो {उन्होंने जो किया था उसके लिए}
यह उन्हें खेदित होने के लिए और {उसे करना} बंद कर दने के लिए प्रेरित करता है। उन्हें खेद इसलिए नहीं होता {कि उन्होंने आहत महसूस किया}, क्योंकि {वे
जैसा महसूस करते हैं परमेश्वर उसका उपयोग} उन्हें बचाने के लिए करता है। हालाँकि, जब लोग उस रीति से आहत महसूस करते हैं जैसा कि अधिकांश लोग
करते हैं, तो {जैसा उन्हें महसूस होता है} वही अंत में उनके मर जाने का कारण बनता है। 11जहाँ तक तुम्हारी बात है, जब तुमने इस रीति से आहत महसूस
किया जिससे परमेश्वर का सम्मान होता है, तो निश्चय ही इसने तुम्हें {सही काम करने के लिए} बहुत उत्सुक होने के लिए प्रेरित किया। तुमने तर्क दिया कि तुम
दोषी नहीं थे। {जो कुछ घटित हुआ था उसके विषय में} तुम परेशान थे। {जो घटित हो सकता है} तुम उससे भयभीत थे। तुम {हम से मिलना} चाहते थे। तुमने
{हमें} सम्मान देने के प्रयास में थे। {जिस व्यक्ति ने गलत काम किया था उसे} तुमने दंडित किया। {उन सब कामों} को करने के द्वारा, तुमने दिखा दिया कि जो
घटित हुआ उसके उत्तर में तुमने सही काम किया है। 12इसलिए, जब मैंने तुम्हें [पिछली पत्री] भेजी, तो मैं मुख्य रूप से उस व्यक्ति से बात नहीं कर रहा था,
जिसने गलत काम किया था। साथ ही, मैं मुख्य रूप से उस व्यक्ति से भी बात नहीं कर रहा था जिसे उसने चोट पहुँचाई थी। बजाए इसके, मेरी तुम्हें यह दिखाने
की मंशा थी कि तुम हमारे प्रति {उचित रीति से कार्य करने में} कितने उत्सुक हो और परमेश्वर {इसे} मंजूरी देता है। 13चूँकि इन तरीकों से उत्तर देकर तुमने हमें
प्रोत्साहित किया है। वास्तव में, यद्यपि तुमने हमें प्रोत्साहित किया, परन्तु जैसे तुमने तीतुस को प्रसन्न किया, उसके विषय में हम उससे भी अधिक प्रसन्न हैं ।
{तुमने ऐसा तब किया} जब तुम सबने उसे दिलासा देकर मजबूत किया। 14{हम इतने आनन्दित इसलिए हुए} क्योंकि जब मैंने तीतुस से तुम्हारे विषय में बड़ी-
बड़ी बातें कहीं, तब तुमने मुझे लज्जित नहीं होने दिया। बजाए इसके, तीतुस ने पाया कि तुम्हारे बारे में हमने जो बड़ी-बड़ी बातें कही थीं, वे वास्तव में सच थीं।
{यह} ठीक वैसा ही है जैसे वह सब कुछ भी सच था जो हमने तुम्हें बताया था। 15तीतुस को यह स्मरण आता है कि तुम सबने किस रीति से हमारी बात मानी,
विशेष करके जब वह आया तो कैसे तुमने उसका भय माना। {उस कारण से,} वह अब तुम्हारी और भी अधिक चिंता करता है। 16मैं प्रसन्न हूँ क्योंकि मुझे पूर्ण
रूप से यह निश्चय है कि तुम {वही कर रहे हो जो सही है}।

Chapter 8

1हे मेरे संगी विश्वासियों, हम तुम्हें इस बारे में बताना चाहते हैं कि परमेश्वर ने अनुग्रहकारी होकर {यहाँ} मकिदुनिया प्रांत में रहने वाले विश्वासियों के समूहों को
क्या करने के लिए सक्षम बनाया है। 2भले ही उन्होंने बहुत कष्ट सहे, जिसने उनकी इस बात में परीक्षा ली कि {वे कैसे प्रतिक्रिया देंगे}, परन्तु वे अत्यंत उदार रहे।
भले ही उनके पास बहुत थोड़ा था, परन्तु {ऐसा करते हुए भी} वे बहुत आनन्दित थे। 3वास्तव में, मैं तुम्हें यह बता सकता हूँ कि जितनी उनकी सामर्थ्य थी उतना
{उन्होंने दिया}, और यहाँ तक कि जितनी उनकी सामर्थ्य थी उन्होंने उससे भी अधिक दिया। ये वही लोग थे जिन्होंने ऐसा करने का चुनाव किया था। 4जब

उन्होंने हम से उसे स्वीकार करने का आग्रह किया {वे जो दे रहे थे} तो वे बहुत हठ कर रहे थे। वे परमेश्वर के लोगों की सेवा करने में सहभागी होना चाहते थे।
5इसके अलावा, उन्होंने हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक बढ़कर किया। उन्होंने स्वयं को मुख्य रूप से प्रभु {यीशु} की {सेवा करने} और उसके बाद हमारी {सेवा
करने} के लिए भी समर्पित कर दिया। {यही तो} परमेश्वर चाहता है। 6उसी कारण से, हमने तीतुस को प्रोत्साहित किया कि तुम जो दे रहे हो उसे स्वीकार करना
समाप्त करे, विशेष करके जबकि उसने {ऐसा करना} पहले ही आरम्भ कर दिया था। 7जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम पहले से ही बहुत से तरीकों में अच्छा कर
रहे हो। {इसमें यह सब भी शामिल है} कि तुम {परमेश्वर} पर कैसे भरोसा करते हो, तुम क्या बोलते हो, तुम कितना जानते हो, {जो सही है उसे करने के लिए}
तुम हमेशा कैसे उत्सुक रहते हो, और हम तुमसे कितना प्रेम करते हैं। इसलिए, तुम्हें भी {संगी विश्वासियों के लिए पैसा} देने में अच्छा करना चाहिए। 8मैं तुम्हें
{पैसा देने के लिए} आदेश नहीं दे रहा हूँ। बजाए इसके, दूसरे लोग कैसे हमेशा {पैसे देने के लिए} उत्सुक रहते हैं, उसके साथ {जो तुम करते हो} उसकी तुलना
करने के द्वारा मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि तुम वास्तव में {संगी विश्वासियों की} चिंता करते हो। 9{तुम्हें पैसा देने के लिए उत्सुक इसलिए होना चाहिए} क्योंकि
तुम जानते हो कि हमारे प्रभु, यीशु मसीह ने दयालु होकर तुम्हारी सहायता करने के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया था। {उसने ऐसा किया भले ही} उसके पास
बहुत सी वस्तुएँ थीं। जो कुछ भी उसके पास था उसे त्याग कर वह तुम्हें बहुत कुछ देना चाहता था। 10पैसा देने के बारे में जो मैं सोचता हूँ, वह मैं तुम्हें इसलिए
बता रहा हूँ, क्योंकि मैं जो सोचता हूँ उसे सुनने से तुम्हें सहायता मिलती है। पिछले वर्ष, तुम दोनों ने {पैसा देने} की इच्छा की और पैसा देना आरम्भ भी किया।
11इस समय पर, जो काम तुमने आरम्भ किया था उसे तुम्हें पूरा भी करना है। उस रीति से, तुम जो काम पूरा करते हो वह उस बात से मेल खाता है जिसे तुम
उत्सुक होकर {करना} चाहते थे, {अर्थात् उसमें से कुछ देना} जो तुम्हारे पास है। 12अब {लोग जो देते हैं} उसे परमेश्वर उस आधार पर मंजूरी देता है जो कुछ
उनके पास है, उस आधार पर नहीं कि उनके पास क्या नहीं है। जब तक वे {देने के लिए} उत्सुक हैं तब तक {यह सच है}। 13इसलिए, ऐसा नहीं है कि मैं
चाहता हूँ कि जब दूसरे विश्वासी अच्छे से रहते हैं तो तुम कष्ट सहो। बल्कि, मैं चाहता हूँ कि {विश्वासियों के पास जो कुछ है वे उसे} समान रूप से साझा करें।
14इस समय, जितना तुम्हारे पास है वह उन लोगों की सहायता कर सकता है जिनके पास थोड़ा है। फिर, जब उन लोगों के पास बहुत होगा और तुम्हारे पास
थोड़ा होगा, तब वे तुम्हारी सहायता कर सकते हैं। उस रीति से, विश्वास करने वाले लोगों {के पास जो है} वे उसे समान रूप से साझा करते हैं। 15{हम चाहते हैं
कि यह वैसा ही हो} जैसा किसी ने उस समय लिखा {जब सामर्थी होकर परमेश्वर ने इस्राएलियों को भोजन प्रदान किया था}: "जिनके पास बहुत था उनके पास
आवश्यकता से अधिक न था। जिनके पास थोड़ा था उनके पास आवश्यकता से कम नहीं था।" 16हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि उसने तीतुस को हमारे
समान तुम्हारी {चिंता} करने के लिए उत्सुक बनाया। 17वास्तव में, वह आंशिक रूप से तुम्हारे पास इसलिए आया है, क्योंकि उसने {ऐसा करने के लिए} हमारी
विनती को सुन लिया है। हालाँकि, विशेष करके {वह तुमसे मिलने के लिए इसलिए आ रहा है} क्योंकि वह {तुम्हारी देखभाल करने के लिए} इतना उत्सुक है कि
उसने स्वयं ही {तुम्हारी पास आने का} चुनाव किया है। 18हमने तीतुस के साथ जाने के लिए एक संगी विश्वासी को चुना है। शुभ संदेश के निमित्त {जो वह
करता है उसके कारण} विश्वासियों के बहुत से समूह उसकी बड़ाई करते हैं। 19इससे भी बढ़कर, विश्वासियों के उन समूहों ने उसे मेरे साथ यात्रा करने के लिए
भी चुना है। जब हम {यरूशलेम में रहने वाले विश्वासियों के लिए पैसा} स्वीकार करने के लिए काम करते हैं तो वह इसमें हमारी सहायता कर रहा है। {इस पैसे
को स्वीकार करने से} प्रभु {परमेश्वर} का सम्मान होता है और यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि हम {संगी विश्वासियों की चिंता के लिए} कितने उत्सुक हैं।
20इसलिए, हम वह सब कुछ कर रहे हैं जिससे हम दूसरों को उस बात के लिए हमारी आलोचना करने से रोक सकें जो हम लोगों के द्वारा उदारता से दिए गए
{इस पैसे के साथ} करते हैं। 21जैसा कि तुम देख सकते हो कि {जब हमने यह पैसा इकट्ठा करना आरम्भ किया था}, उससे पहले हमने योजना बनाई थी कि
इस काम को अच्छे से कैसे किया जाए। {हमने इस पर विचार किया था} कि प्रभु {परमेश्वर} क्या सोचता है, परन्तु हमने इस बात पर भी {विचार किया था} कि
दूसरे लोग क्या सोचते हैं। 22हमने तीतुस और उस दूसरे पुरुष {जिसके विषय में मैं बता रहा था} के साथ जाने के लिए एक और संगी विश्वासी को चुन लिया है।
हमने उसकी परख करके निश्चय यह जान लिया है कि वह {परमेश्वर की सेवा करने के लिए} उत्सुक है। वास्तव में, क्योंकि वह पूर्ण आश्वस्त है कि तुम {वही
करोगे जो सही है}, इसलिए इस समय वह विशेष रूप से {तुम्हारे साथ सेवा करने के लिए) उत्सुक है। 23{मैं इन पुरुषों की सिफारिश करता हूँ।} {जो मैं करता
हूँ} उसमें तीतुस मेरे साथ शामिल है और तुम्हारी सहायता करने के लिए मेरे साथ काम करता है। विश्वासियों के समूह अन्य दो संगी विश्वासियों को भेजते हैं,
और वे मसीह का सम्मान करते हैं। 24इसलिए फिर, इन तीन पुरुषों को और साथ ही विश्वासियों के समूहों को भी दिखाओ कि तुम सच में {संगी विश्वासियों
की} चिंता करते हो और यह कि हम तुम्हारे विषय में जो बड़ी-बड़ी बातें कहते हैं वे वास्तव में सत्य हैं।

Chapter 9

1वास्तव में, यद्यपि, मुझे इस बारे में तुम से कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है कि हम {यरूशलेम में रहने वाले} परमेश्वर के लोगों की सेवा कैसे कर रहे हैं।
2{अर्थात्} क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम {देने के लिए} कितने उत्सुक हो। वास्तव में, मैं मकिदुनिया प्रांत में रहने वाले विश्वासियों से तुम्हारे विषय में बड़ी-बड़ी
बातें कहता हूँ। {मैं उन्हें बताता हूँ} कि अखाया प्रांत में रहने वाले तुम विश्वासी लोग पहले से ही पिछले वर्ष से {देने की} तैयारी कर रहे थे। {देने के लिए} तुम
लोग कितने उत्सुक थे, इस बात ने उनमें से भी बहुतों को {देने के लिए} प्रोत्साहित किया है। 3हालाँकि, {यद्यपि हम जानते हैं कि तुम उत्सुक हो}, इसलिए हमने
इन {तीन} संगी विश्वासियों को तुम्हारे पास आने के लिए चुना है ताकि इस बात को सुनिश्चित किया जा सके कि {देने के लिए} तुम कितने उत्सुक हो, इसके बारे
में हमने जो बड़ी-बड़ी बातें कही हैं, वे सच साबित हों। {वे तुम्हारे पास इसलिए आ रहे हैं} ताकि तुम {देने की} तैयारी पूरी कर सको और इस रीति से मैंने जो
बातें {मकिदुनिया के लोगों को तुम्हारे बारे में} बताई हैं, वे मेल खाएँ। 4दूसरी ओर, {इस विषय में सोचो क्या घटित होगा} यदि मकिदुनिया प्रांत के कुछ विश्वासी
मेरे साथ तुम्हारे पास आएँ और देखें कि तुमने {देने की} तैयारी पूरी नहीं की है। जैसा तुमने बर्ताव किया, उससे हम भी लज्जित होंगे, और {इससे} तुम्हें भी
निश्चित रूप से {लज्जित होना} पड़ेगा। 5उस कारण से, मैंने यह निर्णय लिया कि मुझे इन {तीनों} संगी विश्वासियों से यह कहने की आवश्यकता पड़ी कि इससे
पहले कि {मैं आऊँ}, वे तुम्हारे पास आएँ और जो तुमने कहा था कि तुम दोगे उसमें तुम्हारी सहायता करें। उस रीति से, जो तुम दे रहे हो उसे तुम पहले से ही
तैयार कर चुके होंगे, और क्योंकि तुम देना चाहते हो {इसलिए तुम इसे दोगे} और इसलिए नहीं कि हम तुमसे ऐसा करवा रहे हैं। 6यहाँ एक उदाहरण है {जो इस
बात को दर्शाता है कि तुम्हें कैसे देना चाहिए}। जब किसान केवल कुछ ही बीज बोते हैं, तो वे केवल थोड़ा सा भोजन ही प्राप्त कर पाते हैं। जब किसान बहुत
सारे बीज बोते हैं, तो वे बहुत अधिक भोजन प्राप्त करते हैं। ठीक उसी तरह, जब तुम दूसरे लोगों की सहायता करते हो, तो बदले में कोई तुम्हारी सहायता भी

करेगा। 7तुम में से हर एक व्यक्ति अपने लिए यह चुनाव कर ले {कि कितना देना है}। {कितना देना है इसका चुनाव इसलिए} मत करना, क्योंकि तुम आहत
महसूस करते हो या क्योंकि तुम्हें देना ही है। {मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ} क्योंकि परमेश्वर उन लोगों की चिंता करता है जो हर्ष से देते हैं। 8परमेश्वर अनुग्रहकारी
होकर तुम्हारी आवश्यकता से अधिक तुम्हें दे सकता है। उस रीति से, क्योंकि तुम्हारे पास हमेशा वह सब कुछ होता है जिसकी तुम्हें हर स्थिति में आवश्यकता
पड़ती है, इसलिए तुम हमेशा वह सब कुछ कर सकते हो जो सही है। 9{यह सच है ऐसा तुम इसलिए कह सकते हो} क्योंकि किसी ने पवित्रशास्त्र में {इस प्रकार
के व्यक्ति के बारे में} लिखा है, "वे बहुत लोगों को देते हैं। हाँ, वे उन लोगों की सहायता करते हैं जिनके पास बहुत कम है। वे हमेशा वही करेंगे जो सही है।"
10परमेश्वर बोने वाले को बीज देता है, और लोगों के खाने के लिए भोजन भी {वही देता है}। इसलिए, परमेश्वर तुम्हें वह वस्तु भी उपलब्ध करवाएगा जिसकी
तुम्हें आवश्यकता है और वह तुम्हें उससे भी अधिक देगा। इसके अलावा, जब तुम सही काम करते हो, तो वह उसका उपयोग अच्छे कामों को पूरा करने के लिए
करेगा। 11परमेश्वर निरन्तर तुम्हें तुम्हारी आवश्यकता से अधिक देता है, ताकि तुम हमेशा उदारता से {दूसरों को दे} सको। जब तुम उदारता से देते हो और हम
तुम्हारी भेंट {संगी विश्वासियों को} भेजते हैं, तो वे परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। 12वास्तव में, जब तुम {यरूशलेम में रहने वाले} परमेश्वर के लोगों की सेवा
{उन्हें} देने के द्वारा करते हो, तो इससे उन्हें वह वस्तु उपलब्ध हो जाती है जिसकी उन्हें आवश्यकता है। यद्यपि, इससे भी अधिक, यह उन्हें परमेश्वर का बहुत
अधिक धन्यवाद करने के लिए प्रेरित करता है। 13तुम {यरूशलेम में रहने वाले} परमेश्वर के लोगों की सेवा करके अपने आप को साबित करते हो। तो फिर, वे
परमेश्वर का सम्मान इसलिए करेंगे क्योंकि तुम वास्तव में वही करते हो जो मसीह के बारे में शुभ संदेश की मांग है, {जो वही शुभ संदेश है} जिसके बारे में तुम
कहते हो कि तुम उस पर विश्वास करते हो। {वे परमेश्वर का सम्मान इसलिए भी करेंगे} क्योंकि तुम उनके साथ और सभी विश्वासियों के साथ {जो कुछ तुम्हारे
पास है} उसे उदारता से साझा करते हो। 14इसके अलावा, वे तुम्हारे लिए प्रार्थना करते समय तुम्हें देखना भी चाहेंगे, चूँकि जब परमेश्वर तुम्हें ऐसा करने में सक्षम
करता है तो तुम बड़ी उदारता से देते भी हो। 15हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि उसने हमें ये वस्तुएँ दी हैं जो हमारे कहने से बढ़कर कहीं अधिक अद्भुत हैं!

Chapter 10

1अब मैं अपने, अर्थात् पौलुस {के बारे में बोलूँगा}। मैं विनम्र होकर और उचित रूप से तुमसे यह आग्रह कर रहा हूँ कि {जो सही है वही करो}, जिस प्रकार से
मसीह {विनम्र और तर्कसंगत था}। {कुछ लोग कहते हैं कि} जब मैं तुम्हारे साथ शारीरिक रूप में उपस्थित था, तब मैं तुम्हारे प्रति कोमल था, परन्तु अब, जब
दूर हूँ, तो मैं तुम्हारे साथ जबरदस्ती कर रहा हूँ। 2जब मैं इन लोगों के विरुद्ध साहसी होकर कार्य करता हूँ जो ऐसा सोचते हैं कि मैं और मेरे साथ {सेवा करने
वाले लोग} केवल मानवीय तरीकों से कार्य करते हैं, तो मैं जबरदस्ती करने की मंशा रखता हूँ। इसलिए, {जो सही है वही करने के लिए} मैं तुमसे निवेदन करता
हूँ ताकि जब मैं तुमसे मिलने आऊँ तो मुझे भी तुम्हारे साथ जबरदस्ती करने की आवश्यकता न पड़े। 3वास्तव में, यद्यपि हम मनुष्यों के रूप में कार्य तो करते हैं,
परन्तु हम अपना बचाव केवल मानवीय तरीकों से नहीं करते। 4वास्तव में, हम अपने बचाव के लिए जिन बातों का उपयोग करते हैं वे ऐसी बातें नहीं है जिनका
उपयोग मनुष्य सामान्य रूप से करते हैं। बल्कि, {जिनका उपयोग हम अपने बचाव के लिए करते हैं} उन्हें परमेश्वर सशक्त करता है ताकि हम उस बात को
पराजित कर सकें जिस पर दूसरे लोग शक्तिशाली रूप से बहस करते हैं। 5{हम} ऐसी किसी भी बात को {पराजित करते हैं} जिसके बारे में लोग यह दावा करते
हैं कि वह परमेश्वर को जानने से भी बढ़कर है। इसके अलावा, हम लोगों द्वारा सोचे जाने वाली हर बात पर प्रभाव डालने के लिए भी काम करते हैं जिससे कि वे
मसीह का आज्ञापालन करें। 6जिस समय तुम पूरी रीति से {मसीह} का आज्ञापालन करोगे, उस समय जो कोई भी उसकी आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसको दंड
देने के लिए हम तैयार रहेंगे। 7इस बारे में विचार करें कि कौन सी बात स्पष्ट है। मान लीजिए कि लोगों को यह निश्चय है कि वे मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं।
ऐसे लोगों को यह स्मरण रखना चाहिए कि हम भी मसीह का प्रतिनिधित्व वैसे ही करते हैं, जैसे वे करते हैं। 8वास्तव में, जब मैं इस बारे में बहुत सी बड़ी-बड़ी
बातें कहता हूँ कि कैसे प्रभु {यीशु} ने हमें उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए सशक्त किया है, तब मैं अपने आप का अपमान नहीं करता। {उसने ऐसा इसलिए
किया} ताकि हम {परमेश्वर पर और अधिक भरोसा करने के लिए} तुम्हें प्रोत्साहित कर सकें और तुम्हारी सहायता कर सकें, इसलिए नहीं कि हम {परमेश्वर पर
भरोसा करने से} तुम्हें हतोत्साहित कर सकें। 9इसलिए, {तुम यह बता सकते हो कि} जब मैं {जबरदस्ती} तुम्हारे पास पत्रियाँ भेजता हूँ तो मैं तुम्हें डराने का
प्रयास नहीं करता हूँ। 10{मैं वह पत्रियाँ इसलिए लिखता हूँ} क्योंकि कुछ लोग {मेरे बारे में} कहते हैं, "वह हमें कठोर और शक्तिशाली पत्रियाँ भेजता है, परन्तु
वह स्वयं तो कमजोर है और जब वह हमारे साथ होता है तो बहुत खराब बोलता है।" 11जो लोग ऐसी बातें कहते हैं उन्हें यह जानने की आवश्यकता है कि जो
बातें हम {तुम्हें भेजी गई} अपनी पत्रियों में लिखते हैं जिस समय हम तुम्हारे साथ नहीं होते, तो वही काम हम तुम्हारे साथ होने पर भी करते हैं। 12हम यह कहने
में बहुत विनम्र हैं कि हम उन लोगों जितने ही अच्छे हैं {जिनको तुम जानते हो}, और जो कहते हैं कि वे भरोसेमंद हैं। वे लोग मूर्ख हैं। {जब वे कहते हैं कि वे
महान् हैं} तो वे केवल अपने आप को ही देख रहे होते हैं। 13इसके विपरीत, हम वास्तव में जो करते हैं उससे बढ़कर हम अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें नहीं
कहते। बल्कि, {हम अपने बारे में ऐसी बड़ी-बड़ी बातें कहते हैं} जो उस काम से मेल खाए जिसे परमेश्वर ने हमें करने के लिए दिया है। इसमें वह काम भी
शामिल है जो हम तब करते हैं जब हम तुम्हारे साथ होते हैं। 14वास्तव में, यदि हम सचमुच तुम्हारे पास न आए होते, तो {जो कुछ परमेश्वर ने हमें करने के लिए
दिया है} उसमें तुम शामिल न होते। निःसंदेह, हम वास्तव में तुम्हारे पास पहले ही आ चुके हैं {और तुम्हें} मसीह के बारे में शुभ संदेश {बता दिया है}। 15दूसरे
लोग जो करते हैं उसके कारण हम अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें नहीं बोलते, बल्कि वास्तव में हम जो करते हैं उसके कारण बोलते हैं। वास्तव में, हम पूर्ण
आश्वस्त होकर यह अपेक्षा करते हैं कि परमेश्वर हमें तुम्हारे साथ करने के लिए और भी अधिक काम देगा। {वह बात तब घटित होगी} जब तुम {परमेश्वर} पर
और भी भरोसा करोगे। 16उस रीति से, हम उन लोगों को शुभ संदेश बता सकते हैं जो हमसे तुमसे भी अधिक दूर रहते हैं। परमेश्वर ने उन्हें जो करने के लिए
दिया था उसे दूसरे लोगों ने कैसे किया, उसके कारण अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहने के बजाए {हम यही करने की योजना बना रहे हैं}। 17{हर एक व्यक्ति
को वही करना चाहिए जो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा है,} "जो कोई भी बड़ी-बड़ी बातें कहे वह उन्हें प्रभु {परमेश्वर} के विषय में कहे।" 18{हर एक व्यक्ति
को ऐसा इसलिए करना चाहिए} क्योंकि प्रभु {यीशु} उन्हीं लोगों की सिफारिश करता है जिन्हें वह भरोसेमंद कहता है, न कि उन लोगों को जो स्वयं ही अपने
विषय में उन बातों को कहते हैं।

Chapter 11

1{अगली बात,} जब मैं कुछ ऐसी बातें कहूँ {जो मुझे} मूर्खतापूर्ण लगती हैं, तो मुझे आशा है कि तुम मेरे विषय में धीरज धरोगे। मैं जानता हूँ कि तुम मेरे विषय
में धीरज धरते हो! 2{मैं मूर्खतापूर्ण बातें इसलिए कहूँगा} क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा वैसे ही करता हूँ जैसे परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करता है। वास्तव में, जब मैंने तुम्हें
शुभ संदेश सुनाया, तो मैं उस पिता के समान था, जिसने एक पुरुष को उसकी पत्नी के रूप में तुम्हें देने की प्रतिज्ञा की हो। जैसे यह पिता चाहता है कि उसकी
पुत्री केवल एक ही पुरुष के साथ रहे, वैसे ही मैं चाहता हूँ कि तुम भी केवल मसीह पर भरोसा रखो। 3हालाँकि, मुझे डर है कि कोई {तुम्हें वैसे ही धोखा देगा},
जैसे शैतान ने चतुराई से हव्वा {, अर्थात् पहली स्त्री} को धोखा दिया था। {मुझे डर है कि ऐसा व्यक्ति} तुम्हें जो मसीह के प्रति पूर्ण रीति से वफादार हैं उन
तरीकों से बर्बाद कर देगा जैसा तुम सोचते हो। 4{मैं तुम्हारे लिए इसलिए डरता हूँ} क्योंकि {मैं जानता हूँ} कि लोग तुम्हारे पास आकर तुम्हें यीशु के बारे में बताते
हैं, परन्तु यह वह यीशु नहीं है जिसके बारे में हमने तुम्हें बताया था। दूसरे लोग तुम्हें कोई आत्मा देते हैं, परन्तु यह वह पवित्र आत्मा नहीं है जो हमने तुम्हें दिया
था। दूसरे लोग तुम पर शुभ संदेश की घोषणा करते हैं, परन्तु यह वह शुभ संदेश नहीं है जिस पर तुमने पहले विश्वास किया था। उसके बावजूद भी, {जब लोग
तुमको इन बातों के बारे में बताते हैं तब} तुम बहुत धीरज धरते हो। 5{मैं चाहता हूँ कि तुम उस बात पर विश्वास करो जो हमने तुम्हें सबसे पहले बताई थी}
क्योंकि मुझे लगता है कि मसीह मेरे माध्यम से उतना ही कार्य करता है जितना कि वह उन लोगों के माध्यम से भी करता है जो कहते हैं कि वे उसका सबसे
अच्छा प्रतिनिधित्व करते हैं। 6यद्यपि मैंने ठीक से बोलना नहीं सीखा, उसके बावजूद, {मैंने यह} जान लिया है {कि सत्य क्या है}। जब भी मैं कुछ कहता या
करता हूँ तो मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि यह सत्य है। 7तुम जानते हो कि जब मैंने तुम पर परमेश्वर की ओर से मिले शुभ संदेश की घोषणा करने के लिए मुझे भुगतान
करने के लिए नहीं कहा, तब मैंने तुम्हारे विरूद्ध पाप नहीं किया। {ऐसा करने के द्वारा,} मैंने तुम्हें अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए अपने आप को कम महत्वपूर्ण
बनाया। 8{वास्तव में,} मुझे विश्वासियों के अन्य समूहों से पैसा मिला है। मैंने उनका पैसा इसलिए स्वीकार किया ताकि मैं तुम्हारी सेवा कर सकूँ। 9इसके
अलावा, जब मैं तुम्हारे साथ था, तो मेरे पास वह सब कुछ नहीं था जिसकी मुझे आवश्यकता थी। हालाँकि, मैंने {पैसा मांगने के द्वारा} तुम में से किसी को भी
परेशान नहीं किया। {मैं ऐसा कर सकता था} क्योंकि मकिदुनिया प्रांत से {मेरे साथ} यात्रा करने वाले हमारे संगी विश्वासियों ने मुझे वह सब कुछ दिया था
जिसकी मुझे आवश्यकता थी। वास्तव में, मैंने हर परिस्थिति में, {अपने लिए पैसा मांगने के द्वारा} तुम्हें न तो परेशान किया और न कभी करूँगा। 10अखाया
प्रांत के किसी भी भाग में रहने वाला कोई भी व्यक्ति {इस बारे में कि मैंने तुम्हें परेशान नहीं किया} मुझे बड़ी-बड़ी बातें कहने से रोक पाने में सक्षम नहीं होगा। मैं
जो कह रहा हूँ वह उतना ही सच है जैसे कि मानो वह बात मसीह कह रहा हो। 11{तुमको परेशान न करने का} मेरा कारण यह नहीं है कि मुझे तुम्हारी चिंता
नहीं रही। परमेश्वर गवाही दे सकता है कि {कि मुझे तुम्हारी चिंता रहती है}। 12बल्कि, मैं तुमको परेशान नहीं करना जारी क्यों रखूँगा {इसके लिए मेरा कारण
यह है}। उस रीति से, मैं किसी को भी उसके स्वयं के बारे में ऐसी बड़ी-बड़ी बातें कहने से रोक सकता हूँ जैसी हम {अपने बारे में कहते हैं}। {मुझे पता है कि}
कुछ लोग ऐसा करना चाहते हैं। 13वे लोग वास्तव में ऐसे मनुष्य नहीं हैं जिन्हें मसीह ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा था। जो वे करते हैं उससे वे लोगों
को धोखा देते हैं, और वे केवल मसीह का प्रतिनिधित्व करने का ढोंग ही कर सकते हैं। 14उससे हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। शैतान भी एक तेजोमयी आत्मिक
प्राणी होने का ढोंग करता है। 15इसलिए फिर, हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि जो लोग उसकी सेवा करते हैं, वे भी लोगों की धर्मी बनने में सहायता करने का
ढोंग करें। उन्होंने जो कुछ किया है, उसके अनुपात में परमेश्वर अंत में उन्हें वही देगा जिसके वे योग्य हैं। 16जो बात मैंने पहले कही थी मैं उसी को दोहराता हूँ: मैं
नहीं चाहता कि कोई यह समझे कि मैं मूर्ख हूँ। हालाँकि, यदि तुम ऐसा {सोचते हो कि मैं मूर्ख हूँ}, तो तुम्हें कम से कम मुझे मूर्खतापूर्ण तरीकों से कार्य करने की
अनुमति तो देनी चाहिए। उस रीति से, मैं भी अपने बारे में कुछ बड़ी-बड़ी बातें बोल सकता हूँ। 17मैं जो कहने वाला हूँ वह यह नहीं है कि जब मैं प्रभु {यीशु} का
प्रतिनिधित्व करता हूँ तब मैं कैसे बोलता हूँ। बल्कि, जब मैं यह साबित करता हूँ कि मैं अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कह सकता हूँ तो मैं मूर्खतापूर्ण बातें कहने
वाला होता हूँ। 18बहुत से दूसरे लोग केवल मानवीय तरीकों से अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहते हैं। इसलिए, मैं भी अपने बारे में बहुत बड़ी-बड़ी बातें कहूँगा।
19{मुझे पता है कि तुम मेरी बात सुनोगे,} क्योंकि तुम अपने आप को बुद्धिमान लोग समझते हो, इसलिए मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाले दूसरे लोगों के विषय में
धीरज धरने में तुम प्रसन्न होते हो। 20वास्तव में, {जब लोग तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव करते हैं तो} तुम धीरज धरते हो। वे तुम्हें उनकी बात मानने के लिए विवश
कर सकते हैं। वे तुम्हारे पास जो कुछ है उसका उपयोग कर सकते हैं। वे तुम्हें धोखा दे सकते हैं। वे कह सकते हैं कि वे तुमसे बेहतर हैं। वे तुम्हारा अपमान कर
सकते हैं। {हालाँकि, तुम अभी भी उनके विषय में धीरज धरते हो।} 21{यदि शक्तिशाली लोगों का तुम्हारे साथ व्यवहार करने का यह सही तरीका है, तो} मैं
स्वीकार करता हूँ {कि जब हम तुम्हारे साथ थे उस समय पर हमने जैसा व्यवहार किया} उससे हमें शर्मिंदा हैं और इससे यह साबित होता है कि हम निर्बल हैं।
दूसरी ओर, दूसरे लोग जो कुछ भी करने का साहस करते हैं, उसे करने का साहस मैं भी कर सकता हूँ। निःसंदेह, मैं ये बातें केवल इसलिए कहता हूँ क्योंकि मैं
मूर्खतापूर्ण काम कर रहा हूँ। 22वे लोग कहते हैं कि वे इब्रानी बोलने वाले यहूदी हैं, तो मैं भी {इब्रानी बोलने वाला एक यहूदी हूँ}। वे कहते हैं कि वे इस्राएली हैं,
तो मैं भी {एक इस्राएली हूँ}। वे कहते हैं कि वे अब्राहम के वंशज हैं, तो मैं भी {अब्राहम का वंशज हूँ}। 23वे कहते हैं कि वे मसीह की सेवा करते हैं, तो मैं और
भी बढ़कर {मसीह की सेवा करता हूँ}। {निःसंदेह,} मैं एक पागल व्यक्ति के समान बात कर रहा हूँ। {हालाँकि,} मैंने {उनकी तुलना में} कठिन परिश्रम किया।
लोगों ने {उनसे अधिक} मुझे बंदीगृह में डाला। लोगों ने मुझे बहुत सी बार पीटा। बहुत बार मैं लगभग मर ही गया था। 24पाँच अलग-अलग बार यहूदी अगुवों ने
मुझे किसी से {अधिकतम संख्या में} 39 कोड़े लगवाए। 25तीन अलग-अलग बार अगुवों ने किसी से मुझे बार-बार छड़ी से पिटवाया। एक बार लोगों ने {मुझे
मार डालने के लिए} मुझ पर पत्थर फेंके। तीन अलग-अलग बार वह जहाज़ डूब गया {जिसमें मैं यात्रा कर रहा था}। मैं समुद्र के बीच में 24 घंटे जीवित रहा हूँ।
26मैं अक्सर यात्रा करता रहता हूँ। मैं खतरनाक स्थानों से होकर गुज़रता हूँ जिनमें नदियाँ, कस्बे, रेगिस्तान और महासागर शामिल हैं। मुझे हमेशा ऐसे लोग
मिलते हैं जो मुझे चोट पहुँचा सकते हैं, जिनमें चोर, यहूदी लोग, गैर-यहूदी लोग और संगी विश्वासी होने का ढोंग करने वाले लोग भी शामिल हैं। 27मैं बहुत
कठिन परिश्रम करता हूँ। मैं अक्सर अधिक नींद नहीं ले पाता। मेरे पास खाने या पीने के लिए पर्याप्त नहीं होता। मैं अक्सर भूखा रहता हूँ। कभी-कभी ठंड से
जम जाता हूँ और मेरे पास पर्याप्त कपड़े नहीं होते। 28बाकी सब कुछ के अलावा {जो मैं बता सकता हूँ}, मैं हर दिन विश्वासियों के सब समूहों के बारे में चिंता
के साथ विचार करता हूँ। 29जब कोई संगी विश्वासी कमजोर होता है, तो मैं भी कमजोर होता हूँ। जब कोई व्यक्ति किसी संगी विश्वासी को पाप करने के लिए
प्रेरित करता है, तो मुझे बहुत क्रोध आता है। 30चूँकि मुझे अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहने की आवश्यकता है, परन्तु मैं इस बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहने की
मंशा रखता हूँ कि मैं कितना कमजोर हूँ। 31हम सब सदाकाल तक प्रभु यीशु के परमेश्वर और पिता का सम्मान करेंगे। वही इस बात की गवाही दे सकता है कि

मैं जो कह रहा हूँ वह सत्य है। 32जब मैं दमिश्क नगर में था, तो राजा अरितास की सेवा करने वाले स्थानीय शासक के सैनिक मुझे पकड़ने के लिए नगर में मेरी
खोज कर रहे थे। 33हालाँकि, संगी विश्वासियों ने उस स्थानीय शासक से दूर जाने में मेरी सहायता की। एक बड़ी टोकरी में {उन्होंने मुझे बैठाकर} {उसे रस्सी से
बांध दिया, और} उसे शहरपनाह की एक खिड़की से नीचे लटका दिया।

Chapter 12

1मुझे भी अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहने की आवश्यकता है। {इसलिए,} यद्यपि यह सहायक तो नहीं है, परन्तु मैं {इस बारे में बात करने की ओर} आगे बढ़
रहा हूँ कि कैसे प्रभु {यीशु} विशेष रूप से {कुछ लोगों पर} उन बातों को प्रकट करता है। 2चौदह वर्ष पहले, परमेश्वर एक विशिष्ट मसीही व्यक्ति को स्वर्ग के
तीसरे {स्तर} पर ले गया। मुझे इस बात का निश्चय नहीं है कि क्या {परमेश्वर उसे वहाँ} शारीरिक रूप से ले गया था, या स्वप्न में ले गया था, या फिर आत्मिक
रूप से ले गया था। {यह कैसे घटित हुआ} इस बात को केवल परमेश्वर ही सुनिश्चित कर सकता है। 3अब उस विशिष्ट मसीही व्यक्ति {के बारे में मैं तुम्हें और भी
बातें बताऊँगा}। {फिर से,} मुझे निश्चय नहीं है कि क्या {परमेश्वर उसे स्वर्ग के तीसरे स्तर पर} शारीरिक रूप से ले गया था, या स्वप्न में ले गया था, या फिर
आत्मिक रूप से ले गया था। {यह कैसे घटित हुआ} इस बात को केवल परमेश्वर ही सुनिश्चित कर सकता है। 4परमेश्वर उस व्यक्ति को स्वर्गलोक में ले गया {जो
स्वर्ग का वह स्थान है जहाँ मरे हुए विश्वासी रहते हैं}। वहाँ पर, उसने ऐसी आश्चर्यजनक बातें सुनीं जिन्हें वह किसी के समाने नहीं दोहरा सकता था। 5मैं उसके
बारे में बड़ी-बड़ी बातें कह सकता हूँ {, चूँकि जिस व्यक्ति के बारे में मैं बात कर रहा हूँ वह मैं ही हूँ}। हालाँकि, मैं केवल इस बारे में ही बड़ी-बड़ी बातें कहूँगा कि
मैं कितना कमजोर हूँ। 6वास्तव में, मान लीजिए कि मैं अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहना चाहता था। चूँकि मैं सच बोल रहा हूँ, तब भी मैं मूर्खतापूर्ण काम नहीं
करूँगा। हालाँकि, मैंने {अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें न कहने का} निर्णय लिया है। {उस रीति से,} लोग जो मुझे कहते और करते हुए देखते हैं, वे केवल उसी के
द्वारा मेरी विशेषता बता सकते हैं। 7तो फिर, क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर ऐसी बड़ी-बड़ी बातें प्रकट की हैं इसलिए मैं घमंडी न हो जाऊँ, परमेश्वर ने मुझे दुःख
उठाने दिया। विशेष रूप से, शैतान द्वारा भेजे गए एक आत्मिक प्राणी ने मुझे सताया। उस रीति से, मैं घमंडी नहीं होऊँगा। 8मुझे उस रीति से कष्ट देना बंद करने
के लिए मैंने प्रभु {यीशु} से तीन अलग-अलग बार विनती की। 9उसने मुझे यह कहकर उत्तर दिया, “जब मैं दयालु होकर तेरे प्रति कार्य करता हूँ, तो क्या तुझे
बस इतना ही चाहिए। वास्तव में, जब लोग कमजोर होते हैं तब ही मैं उन्हें पूर्ण रीति से सामर्थी बनाता हूँ।” इसलिए, अत्यधिक प्रसन्न होकर मैं इस बारे में और
भी बड़ी-बड़ी बातें कहूँगा कि मैं कितना कमजोर हूँ। उस रीति से, मसीह हमेशा मुझे सामर्थी रूप से कार्य करने में सक्षम करेगा। 10इसलिए फिर, {जब मेरे साथ
बुरी बातें घटित होती हैं तो} मैं प्रसन्न इसलिए होता हूँ, क्योंकि मैं मसीह की सेवा करता हूँ। इसमें यह भी शामिल है जब मैं कमजोर होता हूँ, जब लोग मेरे बारे में
बुरी बातें कहते हैं, जब लोग मुझे चोट पहुँचाते हैं, जब लोग मुझे सताते हैं, और जब मैं संघर्ष करता हूँ। {मैं प्रसन्न इसलिए होता हूँ} क्योंकि जब मैं कमजोर होता
हूँ तब {परमेश्वर} मुझे सशक्त करता है। 11मैं मूर्खतापूर्ण रीति से बोलता आया हूँ, जैसा करने के लिए तुमने मुझे विवश किया है। क्योंकि तुम्हें कहना चाहिए था
कि मैं भरोसेमंद हूँ, {परन्तु तुम ऐसा नहीं कह रहे हो}, {इसलिए तुमने मुझे विवश किया है}। {तुम्हें ऐसा इसलिए कहना चाहिए था} क्योंकि मैं भी उन लोगों के
जितना ही अच्छा हूँ जो कहते हैं कि वे मसीह का प्रतिनिधित्व सबसे अच्छे तरीके से करते हैं। भले ही मैं बिलकुल भी अच्छा नहीं हूँ {परन्तु यह सत्य है}। 12मैं
उन तरीकों से कार्य करने में लगा रहा जो तुम पर इस बात को साबित करते हैं कि वास्तव में मैं वही हूँ जिसे मसीह ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा
था। मैंने सामर्थ्य से भरे और आश्चर्यजनक कार्य किए। 13इसके अलावा, मैंने तुम्हारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया कि तुम विश्वासियों के किसी भी अन्य समूह से
कम महत्वपूर्ण हो। {मैंने तुम्हारे साथ अलग प्रकार से काम किया} इसका केवल एक ही तरीका था कि मैंने {तुमसे पैसा मांगने के द्वारा} तुम्हें परेशान नहीं किया।
यदि वैसा करना असल में गलत था, तो कृपया मुझे ऐसा करने के लिए क्षमा करो! 14इस बात पर ध्यान दो! मैं तीसरी बार तुमसे मिलने के लिए आने वाला हूँ।
तब भी फिर से, मैं तुम्हें {पैसा मांगने के द्वारा} परेशान नहीं करूँगा। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि मैं चाहता हूँ {कि तुम मुझ पर और मसीह पर भरोसा रखो}। जो
वस्तुएँ तुम्हारे पास हैं {वे मुझे नहीं चाहिए}। वास्तव में, चूँकि मैं तुम्हारे माता-पिता के समान हूँ, इसलिए मुझे तुम्हारे लिए पैसा बचाना है। इसके अलावा, चूँकि
तुम मेरे बच्चों के समान हो, इसलिए तुम्हें मेरे लिए पैसा नहीं बचाना है। 15मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए कुछ भी बड़ी प्रसन्नता के साथ करूँगा और उसका
अनुभव करूँगा। जब मैं तुम्हें {पहले की तुलना में} और भी बढ़कर प्रेम करता हूँ, तो तुम्हें भी मुझसे {पहले की तुलना में} कम प्रेम नहीं करना चाहिए। 16फिर,
तुम इस बात पर सहमत हो सकते हो कि मैंने {पैसा मांगने के द्वारा} तुम्हें व्यक्तिगत रूप से परेशान नहीं किया। हालाँकि, सम्भवतः मैं एक चतुर व्यक्ति हूँ। और
{हो सकता है कि} मुझे {पैसा} देने के लिए मैंने किसी रीति से तुम्हारे साथ छल किया हो। 17{हालाँकि,} मैंने ऐसे किसी व्यक्ति को तुम्हारे पास नहीं आने दिया,
जिसने तुम्हें धोखा देकर मेरे लिए काम किया हो। 18{उदाहरण के लिए,} मैंने तीतुस से {तुमसे मिलने जाने के लिए} विनती की, और मैंने एक संगी विश्वासी को
उसके साथ जाने के लिए भेजा। {तुम जानते हो कि} तीतुस ने तुम्हें धोखा नहीं दिया। वह और मैं एक ही रीति से जीवन व्यतीत करते हैं और एक ही जैसे काम
करते हैं। 19तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हमने ये बातें क्यों कही हैं, इसका कारण तुम्हें यह समझाना नहीं है कि मैं और मेरे साथ सेवा करने वाले लोग भरोसेमंद
हैं। बल्कि, जिन्हें परमेश्वर ने मसीह के साथ एकजुट किया है, उनके समान हम वही बात कहते रहे हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। निःसंदेह, {हे संगी
विश्वासियों} जिनसे हम प्रेम करते हैं, हम जो कुछ भी कहते और करते हैं, उसमें हमारी मंशा उन्नति करने में तुम्हारी सहायता करने की है। 20{ये बातें मैंने
इसलिए कही हैं} क्योंकि जब मैं मिलने के लिए आता हूँ तो मुझे इस बात की चिन्ता रहती है कि {क्या घटित होगा}। {मुझे चिंता रहती है कि} मुझे पता चलेगा
कि जैसा मैं चाहता हूँ {कि तुम कार्य करो} तुम वैसा कार्य नहीं कर रहे हो और तुम्हें पता चलेगा कि जैसा तुम चाहते हो {कि मैं कार्य करूँ} मैं वैसा कार्य नहीं कर
रहा हूँ। {मुझे चिंता रहती है} कि तुम लोग {एक दूसरे से} लड़ रहे होंगे, {एक दूसरे से} ईर्ष्या कर रहे होंगे, {एक दूसरे से} क्रोधित हो रहे होंगे, {एक दूसरे को}
नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे होंगे, {एक दूसरे के बारे में} बुरी-बुरी बातें कह रहे होंगे, {दूसरों के बारे में} झूठी कहानियाँ सुना रहे होंगे, अपने बारे में बड़ी-
बड़ी बातें कह रहे होंगे, या {एक-दूसरे के विरुद्ध} भीड़ को भड़का रहे होंगे। 21जब मैं तीसरी बार तुमसे मिलने आऊँ तो {क्या घटित होगा} उस बारे में {मैं चिंता
करता हूँ}। हो सकता है कि परमेश्वर मुझे तुम्हारे बारे में लज्जित कर दे। इसके अलावा, हो सकता है कि मुझे कई ऐसे लोगों के बारे में बहुत दुःख हो जिन्होंने
अतीत में गलत काम किया है और अनुचित यौन सम्बन्ध बनाना बंद नहीं किया है।

Chapter 13

1{पवित्रशास्त्र कहता है:} “इससे पहले कि हम विश्वास कर सकें कि यह बात सत्य है, कम से कम दो या तीन गवाह {किसी के बारे में} एक ही बात बोलें।” {यह
बात जान लो कि} अगली बार जब मैं तुमसे मिलने आऊँ, तो वह तीसरी बार होगा {कि जो तुम कर रहे हो मैं उसका गवाह बनूँ}। 2जब मैं दूसरी बार तुमसे
मिलने आया था, तब मैंने तुम सब को चिताया था कि तुम्हारे बीच में से जितनों ने पाप किया है उन सब को मैं दंड देने जा रहा हूँ। और अब मैं तुमसे दूर रहते हुए
भी तुम्हें फिर से चेतावनी दे रहा हूँ। जब मैं इस तीसरी बार तुम्हारे पास आऊँ, तो जितनों ने पाप किया है उन सब को मैं दंड दूँगा। 3मैं तुमसे यह इसलिए कहता
हूँ, क्योंकि जब मैंने तुमसे बातें कीं, तब तुमने मुझसे यह साबित करने की मांग की थी कि मसीह तुमसे बातें करता है। {यह तुम्हें तब पता चलेगा जब वह तुम्हें
अनुशासित करेगा।} वह तुम्हारे साथ निर्बल नहीं होगा; बजाए इसके, वह तुम्हारे बीच सामर्थी रूप से काम करेगा। 4तुम देखते हो कि जब लोगों ने मसीह को
क्रूस पर ठोंक दिया तो {मनुष्य के रूप में} उसने अपने आप को निर्बल होने दिया। परन्तु परमेश्वर तो सामर्थी है, और उसने उसे फिर से जीवित कर दिया। जैसा
वह था, वैसे ही हम भी निर्बल मनुष्य हैं। परन्तु परमेश्वर हम में भी सामर्थी होकर काम करता है कि हम मसीह के समान जीवित रहें, इसलिए हम तुम्हारे बीच में
सामर्थी होकर काम करेंगे। 5तुम में से प्रत्येक को अपने आप से पूछना चाहिए: “क्या मैं मसीह पर भरोसा रखता हूँ और जैसा वह मुझे निर्देश देता है वैसा ही
जीवन व्यतीत करता हूँ?” तुम में से हर एक व्यक्ति {इस रीति से} अपनी जाँच करे। तब तुम जान पाओगे कि तुम असल में यीशु मसीह के साथ एक होकर
जीवन व्यतीत करते हो। निःसंदेह, यह तब तक सत्य है जब तक कि तुम इस जाँच में असफल नहीं हो जाते। 6जहाँ तक हमारी बात है, मुझे निश्चय है कि तुम
समझ जाओगे कि हम उस जाँच में सफल हुए हैं। 7हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई बुरा काम न करो। हम इसके लिए प्रार्थना इसलिए नहीं करते,
क्योंकि हम चाहते हैं कि लोग यह समझें कि हम {तुम्हें अनुशासित करने में} सफल रहे हैं, बल्कि इसलिए कि तुम अच्छे काम कर रहे हो। हम तुम्हारे लिए यही
चाहते हैं, भले ही इसका अर्थ यह हो कि लोग यह मानें कि हम इसलिए विफल हो गए {क्योंकि तुम्हें हमारी आवश्यकता नहीं थी}। 8हम चाहते हैं कि तुम अच्छे
काम करो {भले ही हम तुम्हें अनुशासित न कर सकें और सामर्थी न दिखें} क्योंकि हमें परमेश्वर के सच्चे संदेश का पालन करना चाहिए। हम ऐसा कुछ भी नहीं
कर सकते जो परमेश्वर के सच्चे संदेश के विपरीत हो। 9जब {लोग सोचते हैं} कि हम कमजोर हैं तो हम इसलिए प्रसन्न होते हैं, क्योंकि {हमारी ओर से
अनुशासन की आवश्यकता के बिना ही} तुम {परमेश्वर की आज्ञा मानने में} मजबूत हो। यह वही बात है जिसके लिए हम प्रार्थना करते हैं, कि तुम परमेश्वर पर
पूर्ण रूप से विश्वास करने और उसकी आज्ञा मानने का निर्णय ले सको। 10ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम पूर्ण रीति से परमेश्वर पर भरोसा रखो
और उसकी आज्ञा मानो, इसी कारण से मैं तुमसे अलग रहते हुए इन बातों के बारे में तुम्हें लिख रहा हूँ। जब मैं तुम्हारे पास आऊँ, तब मुझे तुम्हें कठोरता से
अनुशासित करना न पड़ेगा। प्रभु ने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने का अधिकार इसलिए नहीं दिया कि मैं {परमेश्वर पर भरोसा करने से} तुम्हें हतोत्साहित कर
सकूँ, परन्तु उसने ऐसा इसलिए किया ताकि मैं तुम्हें प्रोत्साहित कर सकूँ और {परमेश्वर पर और अधिक भरोसा करने में} तुम्हारी सहायता कर सकूँ। 11हे मेरे
संगी विश्वासियों, ये अन्तिम बातें हैं जो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ। आनन्दित रहो! उस रीति से जीवन व्यतीत करो जैसा परमेश्वर चाहता है कि तुम जीवन व्यतीत
करो। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे तुम्हें {परमेश्वर पर और अधिक भरोसा करने के लिए} प्रोत्साहित करें। {महत्वपूर्ण बातों के बारे में} एक दूसरे से सहमति
रखो। एक दूसरे के साथ शांति से जीवन व्यतीत करो। {यदि तुम ये काम करते हो} तो परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। वही है जो तुम्हें प्रेम करने और दूसरों के साथ
शांति से रहने में सक्षम बनाता है। 12एक दूसरे को स्नेहपूर्वक इस रीति से नमस्कार करो, जो परमेश्वर के परिवार के लोगों के लिए उचित हो। {यहाँ रहने वाले}
परमेश्वर के सब लोग तुम्हें नमस्कार भेजते हैं। 13प्रभु यीशु मसीह तुम्हारे प्रति दयालु होकर कार्य करे, परमेश्वर तुमसे प्रेम रखे, और पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ
बना रहे, और तुम सब को एक साथ जोड़े।

इफिसियों

Chapter 1

1मैं पौलुस हूँ। मसीह यीशु ने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है क्योंकि ऐसा परमेश्वर चाहता है। मैं यह पत्र उन लोगों को लिखता हूँ, जिन्हें परमेश्वर
ने अपने लिए अलग किया है, जो [इफिसुस के शहर में] रह रहे हैं और जो मसीह यीशु के प्रति विश्वासयोग्य हैं। 2मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारा पिता
और यीशु हमारा मसीह और हमारा प्रभु तुम्हारे प्रति निरन्तर दया बनाए रखें और तुम्हें एक शांतिपूर्ण आत्मा प्रदान करें। 3हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता
परमेश्वर की प्रशंसा हो! उसने हमें हर तरह का आत्मिक आशीष को दिया है जो स्वर्ग से आती है क्योंकि हम मसीह से संबंधित हैं। 4वास्तव में, इससे पहले कि
परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की, उसने हमें मसीह से संबंधित हो जाने के लिए चुना, ताकि मसीह हमें उसके लिए पूरी तरह से पवित्र बना सके। क्योंकि परमेश्वर
हमसे प्रेम करता है, 5उसने बहुत पहले ही यीशु मसीह के द्वारा अपने बच्चों के रूप में हमें गोद लेने का निर्णय लिया। ऐसा करने से उसे प्रसन्नता हुई, इसलिए
उसने वही किया जो वह करना चाहता था। 6यही वह कारण है कि, हम अब परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं कि वह हमारे प्रति इतना अधिक दयालु है, कि वह
उससे भी कहीं अधिक करता है जिसको पाने के हम योग्य नहीं हो सकते हैं, क्योंकि उसने हमें अपने पुत्र के द्वारा आशीषित किया है जिसे वह प्रेम करता है।
7जब यीशु हमारे स्थान मर गया, तो उसने हमारे पाप के मूल्य को चुका दिया। अर्थात्, जब वह हमारे लिए मर गया, तो परमेश्वर ने हमें हमारे पापों को क्षमा कर
दिया क्योंकि वह इसी तरह से भरपूर और उदारता से है। 8परमेश्वर जानता था कि हमें उसकी इस तरह से अत्यंत आवश्यकता होगी जिस तरीके में वह हमारे
प्रति अत्याधित दयालु हो क्योंकि परमेश्वर सब कुछ जानता है और पूरी तरह से बुद्धिमान है। 9इस तरह से, परमेश्वर ने अब हम पर अपनी योजना को प्रकाशित
किया है जिसे उसने पहले किसी को भी प्रकट नहीं किया था-एक ऐसी योजना जिसे वह मसीह के काम के द्वारा पूरा करने में प्रसन्न था। 10इस योजना में, जब
समय सही था, मसीह सभी चीजों को अपने अधीन कर लेगा, ताकि स्वर्ग की सभी चीजें और पृथ्वी की सभी चीजें मसीहा से संबंधित हों। 11मसीह ने जो कुछ
किया है, उसके कारण परमेश्वर ने भी हमें उसका अपना होने का दावा किया है। उसने बहुत पहले इसे करने की योजना बनाई थी, और वह सदैव सटीक वही
करता है जो वह करना चाहता है। 12परमेश्वर की योजना में, हम यहूदी, जो मसीह पर भरोसा करने वालों में पहले थे, परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिए जीवित
रहेंगे क्योंकि वह बहुत अधिक महान् है। 13तब तुम गैर-यहूदियों को भी सच्चा संदेश सुना, शुभ सन्देश कि परमेश्वर तुम्हें कैसे बचाता है, और तुमने मसीह पर
विश्वास किया। जब तुमने ऐसा किया, तब परमेश्वर ने तुम्हें पवित्र आत्मा देकर मसीह से संबंधित के रूप में चिह्नित किया, जैसा कि उसने करने की प्रतिज्ञा की
थी। 14पवित्र आत्मा एक ब्याने की तरह है जो यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर भी हमें वह सब कुछ देगा, जो उसने उस समय हमें देने की प्रतिज्ञा की थी,
जब वह सब कुछ को छोड़ देगा, जो उसके पास हमारे लिए है। परमेश्वर की प्रशंसा हो क्योंकि वह बहुत अधिक महान् है! 15क्योंकि परमेश्वर ने यह सब तुम्हारे
लिए किया है, और क्योंकि लोगों ने मुझे बताया है कि तुम कैसे प्रभु यीशु पर भरोसा करते हो और तुम सभी विश्वासियों से कितना अधिक प्रेम करते हो, 16मैं
तुम्हारे लिए परमेश्वर का निरन्तर धन्यवाद करता हूँ जब मैं तुम्हारे बारे में परमेश्वर से बात करता हूँ जब मैं उससे प्रार्थना हूँ। 17मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे प्रभु
यीशु मसीह का परमेश्वर, महिमामय पिता, तुम्हें अपना आत्मा बुद्धिमान बनाने और परमेश्वर को तुम्हारे सामने प्रकट करने के लिए देगा, ताकि तुम उसे निरन्तर
और उत्तम रीति से जान सको। 18मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें चीजों को देखने में सक्षम करें क्योंकि वे वास्तव में हैं ताकि तुम जान सको कि परमेश्वर के
पास हमारे लिए अद्भुत योजना है क्योंकि उसने हमें अपने लोग होने के लिए बुलाया है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम जान सको कि वह कितनी अधिक अद्भुत है
और वे बातें कैसी बहुतायत हैं जिसे उसने हमें और सभी विश्वासियों को देने की प्रतिज्ञा की है। 19और मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम यह जान जाओ कि परमेश्वर
हमारे लिए कितना अधिक सामर्थी तरीके में कार्य करता है जो मसीह में विश्वास करते हैं। वह हमारे लिए उतनी ही अधिक सामर्थी है 20जितना कि वह मसीह के
लिए था जब वह मरने के बाद मसीह के फिर से जीवित होने का कारण बना गया, और उसने उसे स्वर्ग में सर्वोच्च सम्मान पाने के लिए ऊँचा किया। 21मसीह
वहाँ शासक के रूप में हर शासक के ऊपर और अधिकार के हर स्तर के ऊपर पाई जाने वाली शक्तिशाली आत्मा और हर प्राणी के ऊपर शासन करता है
जिसके प्रति लोग श्रद्धा रखते हैं। वह न केवल अब उन पर, वरन् सदैव के लिए शासन करता है। 22परमेश्वर ने सब कुछ मसीह के अधीन किया है और सभी
स्थानों के सभी विश्वासियों के बीच मसीह को सब कुछ के ऊपर शासक के रूप में नियुक्त किया है। 23हम विश्वासी मसीह से संबंधित हैं वैसे ही जैसे एक
व्यक्ति के शरीर का भाग उसके सिर से संबंधित होता है। वह सभी विश्वासियों के लिए जिस चीज की कमी होती है उसकी आपूर्ति करता है ठीक वैसे ही जैसे
वह हर स्थान पर सब कुछ पूरा करता है।

Chapter 2

1इससे पहले कि तुम मसीह पर भरोसा करते, तुम आत्मिक रूप से मर हुए थे-तुम पाप करने से रूकने में असमर्थ थे। 2तुम एक पापी तरीके से रहते थे, इस
संसार की आत्मा से निर्देशित होते थे। तुम उन दुष्ट आत्माओं के शासकों द्वारा निर्देशित होते थे जो इस संसार के अधिकारियों को नियन्त्रित करती हैं। यह
शासक शैतान है, जो अब परमेश्वर की अवज्ञा करने वाले लोगों के माध्यम से काम करता है। 3हम सभी उसी तरह से रहते थे जैसे ये लोग जो परमेश्वर की
अवज्ञा करते हैं; हमने उन बुरे कामों को किया जिन्हें हम चाहते थे, ऐसे काम जो हमारे शरीर और हमारे मन को आमोदजनक प्रसन्नता देते थे। हम इस योग्य थे
कि परमेश्वर को हमारे साथ बहुत ही अधिक क्रोधित होना चाहिए था, ठीक वैसे ही जैसे वह अन्य लोगों के साथ है। 4परन्तु परमेश्वर हमारे प्रति बहुत अधिक
दयालु है क्योंकि वह हमसे बहुत अधिक प्रेम करता है। 5परमेश्वर हमसे इतना अधिक प्रेम करता है कि जब हम आत्मिक रूप से मरे हुए थे और लगातार पाप
कर रहे थे, तब भी उसने हमें मसीह के साथ जोड़कर हमें जीवित कर दिया। स्मरण रखें, जब परमेश्वर ने तुम्हें आत्मिक रूप से मृत होने से बचाया था, तब वह

तुम्हारे साथ एक तरह से बहुत दयालु रहा था, जिसके तुम योग्य नहीं थे। 6परमेश्वर ने हमें आत्मिक रूप से मृत होने से बचाया जैसे उसने यीशु को शारीरिक रूप
से मृत होने से बचाया था और उसने हमें आत्मिक रूप से उसके साथ जीवित कर दिया। फिर उसने हमें स्वर्ग में मसीह यीशु के साथ शासन करने के लिए
सम्मान के स्थानों को दिया। 7उसने भविष्य के सभी समय में सभी को यह दिखाने के लिए किया कि वह हमें मसीह यीशु के साथ जोड़ने के द्वारा कितना अधिक
दयालु है। 8इसलिए परमेश्वर तुम्हारे प्रति इस तरह से बहुत अधिक दयालु था कि तुम उस योग्य नहीं थे जब उसने तुम्हें आत्मिक रूप से मृत होने से बचाया था।
उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि तुम यीशु पर भरोसा करते हो। तुमने अपने को बचाया नहीं; यह परमेश्वर की ओर से एक उपहार है- 9एक उपहार जिसे कोई
भी नहीं कमा सकता है, इसलिए कि कोई भी घमंड नहीं कर सकता है और यह नहीं कह सकता है कि उसने अपने आप को बचाया है। 10इस तरह परमेश्वर हमें
वही बना रहा है, जो वह चाहता है; मसीह यीशु के माध्यम से उसने हमें भले कामों को करने के लिए नए लोगों के रूप में रचा है-ऐसे काम को करने के लिए
जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही हमारे लिए व्यवस्थित किया था। 11इसलिए स्मरण रखो कि पहले तुम गैर-यहूदी लोग थे जिसके अनुसार तुम्हारे पूर्वज परमेश्वर के
लोगों से संबंधित नहीं थे। यहूदियों ने तुम्हारा अपमान तुम्हें "खतनारहित" कहकर किया। वे अपने आप को "खतनावाले" कहते हैं। इससे उनके कहने का अर्थ
यह है कि वे, तुम नहीं, परमेश्वर के लोग हैं, यद्यपि खतना एक ऐसी चीज है जो मनुष्य ही करते हैं जो केवल शरीर को बदलता है, न कि कुछ ऐसा जिसे परमेश्वर
करता है जो आत्मा को बदलता है। 12स्मरण रखो कि, उस समय, तुम मसीह से अलग हो गए थे। तुम इस्राएल के लोगों के लिए विदेशी थे। तुमने उन चीज़ों में
भाग नहीं लिया जिनकी परमेश्वर ने उनके साथ अपने समझौतों में प्रतिज्ञा की थी। तुम्हें विश्वास नहीं था कि परमेश्वर तुम्हें बचाएगा। नहीं, तुम पूरी तरह से
परमेश्वर के बिना इस संसार में रह रहे थे। 13परन्तु अब, क्योंकि तुमने यीशु मसीह पर भरोसा किया है, परमेश्वर तुम्हें उसके परिवार में लाया है, यद्यपि इससे
पहले कि तुम उसे नहीं जानते थे। यह संभव था क्योंकि मसीह तुम्हारे लिए क्रूस पर मर गया। 14यह मसीह है जिसने यहूदियों और गैर-यहूदियों के लिए एक-
दूसरे के साथ शांति से रहना संभव बना दिया है। उसने दो भिन्न समूहों को एक समूह में बना दिया है। दोनों समूह एक-दूसरे से घृणा करते थे, परन्तु जब हम
सभी के लिए उसकी मृत्यु हुई तो उसने एक-दूसरे से घृणा करने के हर कारण को हटा लिया है। 15उसने हमें अपने निमित्त स्वीकार करने के लिए हमारे लिए
यहूदी कानून की आज्ञाओं और आवश्यकताओं का अब आगे के लिए और अधिक पालन करना आवश्यक नहीं बनाया। उसने यहूदियों और गैर-यहूदियों को
एक नए लोगों में शामिल करने के लिए ऐसा किया, जो उसके साथ उनके संबंधों के कारण शांति से एक साथ रहेंगे। 16उसने ऐसा उन सभी के लिए क्रूस पर मर
कर दोनों समूहों को एक समूह के रूप में परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करने के लिए किया। उनके लिए मर कर, यीशु ने उन्हें एक दूसरे से और परमेश्वर के प्रति
शत्रु होने से रोकने को संभव बना दिया। 17यीशु ने आकर शुभ सन्देश की घोषणा की कि हम परमेश्वर के साथ शांति के साथ रह सकते हैं; उसने इसकी घोषणा
तुम गैर-यहूदियों से की, जो परमेश्वर के बारे में नहीं जानते थे, और हमें यहूदियों को, जो परमेश्वर के बारे में जानते थे। 18क्योंकि यीशु ने हमारे लिए जो कुछ
किया, उसके कारण यहूदी और गैर-यहूदी, अब परमेश्वर के आत्मा की सहायता से पिता परमेश्वर के पास आ सकते हैं। 19इसलिए अब तुम गैर-यहूदी परमेश्वर
के लोगों से बाहर नहीं हो, परन्तु इसके बदले उनके संगी साथी हो जिन्हें परमेश्वर ने अपने लिए अलग किया है, और तुम परमेश्वर के परिवार से संबंधित हो।
20तुम उन पत्थरों की तरह हो जिन्हें परमेश्वर ने एक भवन में जोड़ दिया है, और प्रेरित और भविष्यद्वक्ता उस भवन की नींव के पत्थर की तरह हैं। तुम इस बात
पर निर्भर करते हो कि उन्होंने क्या सिखाया है, ठीक वैसे ही जैसे कि भवन के पत्थर नींव के पत्थरों के ऊपर टिके हुए होते हैं जो एक दीवार को बनाते हैं जो कि
सीधी और मजबूत होती है। मसीह यीशु आप ही आधारशिला की तरह है, जो भवन का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर होता है 21यीशु यह निर्धारित करता है कि
प्रत्येक व्यक्ति को कहाँ संबंधित होना है, ठीक वैसे ही जैसे आधारशिला निर्धारित करती है कि प्रत्येक पत्थर भवन में कहाँ सही बैठता है। ठीक वैसे ही जैसे
तरह एक भवन निर्माता पवित्र मन्दिर को बनाने के लिए एक साथ पत्थरों को जोड़ता है, यीशु अपने विश्वासियों के परिवार को एक पवित्र समूह बनने के लिए
इकट्ठा कर रहा है जो प्रभु की सेवा करता है। 22क्योंकि तुम यीशु से संबंधित हो, वह तुम्हें यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों के साथ मिलाकर एक परिवार बना
रहा है, जो एक भवन की तरह है जिसमें परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा वास करता है।

Chapter 3

1क्योंकि परमेश्वर तुम गैर-यहूदियों के लिए इस योजना को लेकर काम कर रहा है, मैं, पौलुस, तुम्हारे लिए पिता से प्रार्थना करता हूँ, यहाँ तक कि मैं जेल में हूँ
क्योंकि मैं तुम्हारे लिए मसीह यीशु की सेवा करता हूँ। 2मैं मानता हूँ कि लोगों ने तुम्हें मेरे बारे में बताया होगा, कि परमेश्वर ने तुम गैर-यहूदियों को अपनी योजना
बताने को लिए मुझे काम दिया है जो कि तुम्हारे प्रति अत्यंत दयालु है। 3परमेश्वर ने मुझे यह संदेश सुनाया जिसे लोग मुझ पर सीधे प्रकट किए जाने से पहले
नहीं समझ पाए थे, जैसा कि मैंने तुम्हें संक्षेप में पहले लिखा था। 4जब तुम उसे पढ़ते हो, तो तुम समझ सकते हो कि मैं उन बातों को स्पष्ट रूप से समझता हूँ
जिसे परमेश्वर ने मसीह के बारे में पहले नहीं बताई थीं। 5पूर्व में, परमेश्वर ने लोगों को इस संदेश को पूरी तरह से प्रकट नहीं किया था, परन्तु अब उसके आत्मा ने
अपने पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के सामने इसे प्रकाशित किया है। 6संदेश यह है: गैर-यहूदी अब यहूदियों के साथ परमेश्वर के आत्मिक धन के साथ
साझा करते हैं और परमेश्वर के लोगों के एक ही समूह से संबंधित हैं और परमेश्वर अपने लोगों को वह सभी चीजों को साझा करेगा क्योंकि वे मसीह यीशु से
शुभ संदेश पर विश्वास करने के परिणामस्वरूप जुड़े हुए हैं। 7मैं अब लोगों को इसी शुभ संदेश को सुनाते हुए परमेश्वर की सेवा करता हूँ। परमेश्वर मेरे प्रति बहुत
अधिक दयालु था और मुझे इस काम को करने के लिए दिया है यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ, और वह इसे शक्तिशाली रूप से मेरे द्वारा काम करने में मुझे सक्षम
बनाता है। 8यद्यपि मैं परमेश्वर के सभी लोगों में से सबसे छोटा हूँ, परमेश्वर ने मुझे उदारता से यह उपहार दिया है: उसने मुझे गैर-यहूदियों को शुभ संदेश की
चिरकालिक आत्मिक आशीषों की घोषणा करने के लिए नियुक्त किया है जो कि मसीह के पास हमारे लिए हैं 9और सभी को यह समझने में सक्षम बनाने के
लिए कि परमेश्वर की योजना क्या है। यह योजना कुछ ऐसी है कि परमेश्वर ने, जिसने सब कुछ रचा है, बहुत पहले से छिपा रखा है। 10परमेश्वर ने इस योजना
को इसलिए छुपाया ताकि जब वह अब इसे उन लोगों पर प्रकट करता है जो विश्वास करते हैं, तो वह साथ ही आत्मिक अधिकारियों के ऊपर भी उच्च स्तरों में
प्रकट करता है कि वह कितना अधिक बुद्धिमान है। 11यह वह योजना है जो परमेश्वर के पास सदैव से रही है, और यह वह है जिसे उसने हमारे प्रभु, मसीह यीशु
के कार्य के माध्यम से पूरा किया है। 12इसलिए अब, यीशु ने जो कुछ किया है, उसके कारण हम स्वतंत्रता और भरोसे के साथ परमेश्वर के पास आ सकते हैं,
क्योंकि जब हम यीशु पर भरोसा करते हैं, तो वह हमें स्वयं से जोड़ता है। 13इसलिए कृप्या उन बातों से हतोत्साहित न हों कि मैं तुम्हारी ओर से इस कैद में दुख
उठा रहा हूँ, क्योंकि वे तुम्हारे लिए एक महिमामय परिणाम को उत्पन्न करती हैं। 14क्योंकि परमेश्वर ने यह सब कुछ तुम्हारे लिए किया है, इसलिए मैं घुटने टेकता

हूँ और पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ। 15वह मूल पिता है, जिसने स्वर्ग में और पृथ्वी पर पालन करने के लिए हर परिवार को नमूना दिया है। 16मैं प्रार्थना
करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें उसका आत्मा तुम्हारी आत्मा को उस अनुपात में मजबूत करने के लिए देगा कि वह कितना अधिक महान् हैं। 17मैं प्रार्थना करता हूँ
कि मसीह उतना ही अधिक तुम्हारे निकट वास करे जितना कि तुम्हारा मन है क्योंकि तुम उस में भरोसा करते हो, और यह कि जो कुछ भी तुम करते हो और
कहते हो वह तुम और तुम्हारे लिए उसके अन्य लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम का परिणाम होगा। 18ताकि तुम परमेश्वर के सभी लोगों के साथ पूरी तरह से समझ
सको कि मसीह हमसे कितना अधिक प्रेम करता है। 19मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें पता चल जाए कि मसीह हमसे कितना अधिक प्रेम करता है, यद्यपि वह हम
से इतना अधिक प्रेम करता है कि हम उसे नहीं समझ सकते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें हर उस चीज का पूरा माप दे जो वह है। 20परमेश्वर की
प्रशंसा हो, जो उस बात से बहुत अधिक करने में सक्षम है जिसे हम उसे करने के लिए कहते हैं, या यहाँ तक कि हम सोचते हैं कि वह कर सकता है, क्योंकि वह
हमारे भीतर अत्याधिक सामर्थ्य से काम करता है! 21सभी विश्वासी उसकी प्रशंसा करें कि वह कितना अधिक महान् है और मसीह यीशु के द्वारा किए गए
विस्मयकारी कार्य के लिए उसकी प्रशंसा करें! वे सदैव सारी पीढ़ियों में उसकी प्रशंसा करें! ऐसा ही हो।

Chapter 4

1इन सब के कारण, मैं उसके जैसे जो बन्दीग्रह में है क्योंकि मैं प्रभु यीशु की सेवा करता हूँ, मैं तुमसे एक इस तरह जीवन जीने का आग्रह करता हूँ जो यीशु का
सम्मान करता है, जिसने तुम्हें उसके लिए जीने के लिए बुलाया था। 2सदैव विनम्र और दीन रहो। एक-दूसरे के साथ धैर्य रखो, परेशान करने वाले कामों को
सहन करते हुए जो दूसरे करते हैं क्योंकि तुम एक-दूसरे से प्रेम करते हो। 3चूँकि परमेश्वर के आत्मा ने तुम्हें एक किया है, इसलिए एक दूसरे के साथ एक बने
रहने के लिए सभी संभव काम को करो। एक-दूसरे की ओर शांति से व्यवहार करते हुए अपने आप को एक साथ जोड़े रखो। 4परमेश्वर के पास केवल
विश्वासियों का एक ही परिवार और एक पवित्र आत्मा है, ठीक वैसे ही जैसे उसने भी आप सभी को एक और केवल एक चीज प्राप्त करने के लिए बुलाया है,
जिसके लिए लोग आशा कर सकते हैं, जो तुमसे संबंधित है जिसे परमेश्वर ने बुलाया है। 5केवल एक ही प्रभु, यीशु, मसीह है, उस पर विश्वास करने का केवल
एक ही तरीका है, और उन्होंने हमें यह दिखाने के लिए बपतिस्मा दिया कि हम केवल उसी ही से संबंधित हैं। 6एक परमेश्वर है, जो हम सभी का पिता है, चाहे
वह यहूदी हो या गैर-यहूदी हो। वह हम सभी पर शासन करता है, हम सभी के माध्यम से काम करता है, और हम सभी में वास करता है। 7हम में से हर एक को
परमेश्वर ने आत्मिक उपहार दिए हैं जिस तरह से मसीह ने निर्धारित किया है कि ये हमारे पास होने चाहिए। 8इसीलिए पवित्रशास्त्र कहता है, जैसा कि वह ऊँचे
स्थान पर गया, वह अपने साथ कई लोगों को लाया जिन्हें उसने पकड़ लिया था, और अपने लोगों को उपहार दिए। 9शब्द "वह ऊँचे स्थान पर गया" निश्चित रूप
से हमें बताता है कि मसीह भी पहले पृथ्वी के निचले हिस्सों में गया था। 10मसीह, जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था, वह भी स्वर्ग में सबसे अधिक ऊँचे पद पर
लौट आया है ताकि वह सम्पूर्ण दुनिया को भर सके। 11अपने लोगों को उपहार के रूप में, उसने उनमें से कुछ को प्रेरित होने के लिए, कुछ को भविष्यद्वक्ता
होने के लिए, कुछ को लोगों को ढूढंने के लिए कि उन्हें यीशु के शुभ संदेश को बताया जाए और कुछ को देखभाल करने के लिए और कुछ को विश्वासियों के
समूहों को सिखाने के लिए नियुक्त किया। 12परमेश्वर ने उन सभी को नियुक्त किया कि वे परमेश्वर के लोगों को दूसरों की सेवा करने का काम करने के लिए
तैयार करें ताकि सभी लोग जो मसीह के हैं, वे आत्मिक रूप से मजबूत बन सकें। 13यह कार्य तब तक चलता रहेगा जब तक हम सब एक साथ वह नहीं बन
जाते जिसे परमेश्वर हमसे चाहता है: एक होकर हम परमेश्वर के पुत्र पर पूर्ण रूप से विश्वास करते हैं और हम में उसके कार्य का अनुभव करते हैं, और पूरी तरह
से विश्वासियों के एक समूह के रूप में परिपक्व होते हैं-जैसे कि परमेश्वर पर भरोसा करने और स्वयं को मसीह के रूप में जानने में पूरी तरह परिपक्व। 14तब
हम आगे के लिए आत्मिक रूप से अपरिपक्व नहीं रहेंगे, क्योंकि छोटे बच्चे अपरिपक्व होते हैं। हम आगे के लिए हर नई शिक्षा का पालन नहीं करेंगे, जो एक
नाव की तरह सदैव बदलते रहते हैं जो हवा के बहाव से इधर या उधर चलती है और लहरें इसकी दिशा को बदल देती हैं। हम चतुर लोगों को अनुमति नहीं देंगे
जो सिखाते हैं कि झूठ क्या है ताकि वे हमें अपने झूठ के साथ धोखा दें। 15इसके बदले, जैसे हम एक-दूसरे से प्रेम में होकर बात करते हैं कि सच क्या है,
इसलिए आओ हम हर तरह से मसीह के जैसे बनते चले जाएँ, जैसा कि वह हमें निर्देशित करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक व्यक्ति का सिर उस व्यक्ति के शरीर
को निर्देशित करता है। 16यह वही है जो हम सभी को एक साथ जोड़ता है और हमें एक-दूसरे से जोड़े रखता है। वह हमें सिखाता है कि एक दूसरे की सहायता
कैसे करें और एक समन्वित तरीके से कैसे काम करें जब वह उस क्षमता को देता है जो हममें से हर एक के लिए उचित है, ठीक वैसे ही जैसे कि एक व्यक्ति का
सिर उसके शरीर के कुछ अंगों के लिए करता है। इस तरह से, जैसे हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो हम एक साथ आगे बढ़ेंगे और एक-दूसरे को और अधिक
मज़बूत बनाएंगे। 17इस कारण, और प्रभु यीशु के अधिकार के साथ, मैं तुम्हें यह बताता हूँ: अब से आगे तुम्हें वैसा जीवन व्यतीत न करना चाहिए जैसा गैर-
यहूदियों करते हैं। जिस तरह से वे जीवन यापन करते है वह सोच के व्यर्थ तरीके से आता है। 18वे इस बारे में स्पष्ट रूप से सोचने में असमर्थ हैं कि सही या
गलत क्या है क्योंकि वे परमेश्वर से पूरी तरह से अलग रहने का प्रयास करते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या खो रहे हैं और क्योंकि
वे अपने हठ में परमेश्वर को मानने से इंकार करते हैं। 19यदि कुछ अच्छा या बुरा है तो इसे समझने में असमर्थ हो गए हैं, और इसलिए जो कुछ उनके शरीर
इच्छा करते हैं उसके अनुसार शर्मनाक कामों को करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया है। वे सभी प्रकार के अनैतिक कामों को करते हैं और उन्हें अधिक से
अधिक करना चाहते हैं। 20परन्तु यह वह तरीका नहीं है जिसे तुमने जीवन जीने के लिए सीखा है जब तुमने मसीह के बारे में सीखा था 21उस सीमा तक कि
तुमने यीशु के बारे में संदेश को सुना और समझा और उससे सीखा है, क्योंकि उसका तरीका ही जीवन जीने का सच्चा तरीका है। 22तुम्हारे शिक्षकों ने तुम्हें उस
तरीके से जीवन जीने को रोकने की शिक्षा दी थी जिस जिस तरह तुम जीना चाहते थे। क्योंकि तुमने बुरे कामों को करने की इच्छा की, इसलिए तुमने अपने
आप को यह सोचकर धोखा दिया कि वे काम अच्छे थे। उस तरह से जीना अपने आप को आत्मिक रूप से नष्ट करना था। 23इसलिए तुम्हें अपने आप को
परमेश्वर को एक नई आत्मा और एक नए तरीके से सोचने के लिए दे देना चाहिए, 24और तुम्हें नए व्यक्ति की तरह रहना आरम्भ करना चाहिए जिसे परमेश्वर ने
अपने स्वरूप में बनाने के लिए रचा है। उसने तुम्हें एक-दूसरे के साथ सही तरीके से रहने के लिए और यीशु के साथ सच्चे तरीके से जीने के लिए बनाया है।
25इसलिए एक दूसरे से झूठ बोलना बंद करो। एक-दूसरे से सच्चाई से बात करें क्योंकि हम एक-दूसरे के साथ परमेश्वर के परिवार के सदस्य के रूप में हैं।
26पापी व्यवहार के बारे में क्रोध तो करो, परन्तु पाप मत करो क्योंकि तुम क्रोधित हो। प्रत्येक दिन के अंत से पहले, जो कुछ भी तुम्हें क्रोध दिलाता है, उस से

निपटारा कर लो 27ताकि तुम शैतान को तुम्हारे साथ बुरे काम करने की अनुमति न दो। 28चोरी करने वालों को अब आगे चोरी नहीं करनी चाहिए। इसके बदले,
उन्हें कड़ी मेहनत करनी चाहिए, अपने प्रयासों से अच्छा काम करना चाहिए ताकि उनके पास जरूरतमंद लोगों को देने के लिए कुछ हो सके। 29हानिकारक
बातें न कहो। इसके बदले, अच्छी बातें कहो जो लोगों को प्रोत्साहित करें जब उन्हें सहायता की आवश्यकता हो ताकि परमेश्वर तुम्हारे शब्दों के माध्यम से सुनने
वालों को लाभ पहुँचा सके। 30परमेश्वर ने तुम्हें पवित्र आत्मा देकर अपने लोगों के रूप में चिह्नित किया है, जो उस दिन तक तुम्हारे साथ रहेगा जब तक कि
मसीह तुम्हें इस संसार से नहीं बचा नहीं लेता। इसलिए आपने जीवन जीने के तरीके से परमेश्वर के पवित्र आत्मा को उदास न करो। 31इन तरीकों से व्यवहार
करने को पूरी तरह से बंद करने का पूरा प्रयास करो: दूसरों के प्रति रोषपूर्ण या उग्र न हों और यहाँ तक कि दूसरों के ऊपर क्रोधित भी न हों। दूसरों पर अपशब्दों
के साथ न चिल्लाएँ और न ही दूसरों की निंदा करें। कभी भी किसी तरह की दुर्भावना से काम न करें। 32ऐसा व्यवहार करने के बदले, एक दूसरे के प्रति दयालु
रहें। एक दूसरे के प्रति कृपालुता के साथ कार्य करें। एक दूसरे को उसी तरह से क्षमा करें जिस तरह से परमेश्वर ने मसीह के द्वारा तुम्हारे लिए किए गए सब कुछ
के द्वारा तुम्हें क्षमा किया है।

Chapter 5

1परमेश्वर ने जो कुछ तुम्हारे लिए किया है, उसके कारण उसका अनुकरण उस तरह से करें जैसे बच्चे उस पिता का अनुकरण करते हैं जो उन्हें प्रेम करता है।
2सब कुछ इस तरह से करें जिससे कि यह पता चले कि तुम दूसरों से प्रेम करते हो। मसीह की तरह बनो, जो हमें इतना अधिक प्रेम करता था कि वह स्वेच्छा से
हमारे लिए क्रूस पर मर गया और हमारे स्थान पर परमेश्वर के सामने भेंट और बलिदान बन गया। इस बलिदान ने परमेश्वर को बहुत अधिक प्रसन्न किया। 3परन्तु
किसी के पास भी यह सुझाव देने का कोई कारण नहीं होना चाहिए कि तुम में से कोई भी यौन पाप या किसी भी तरह के अनैतिकता या आसक्ति भरे यौन
व्यवहार में शामिल है। ऐसे पाप परमेश्वर के लोगों से संबंधित नहीं हैं। 4जब तुम एक दूसरे से बात करते हो, तो अश्लील कहानियाँ न कहें या मूर्खतापूर्ण बातें न
कहें या पाप करने के बारे में ठट्ठा न करें। ये ऐसी बातें नहीं हैं जो लोग परमेश्वर से संबंधित हैं जिनके बारे में बात की जाए। इसके बदले, उन बातों को व्यक्त करें,
जिनके लिए तुम्हें आभारी होना है। 5यह एक बड़ी सीमा तक सत्य है कि इन लोगों को मसीह के राज्य से बाहर रखा जाएगा जो परमेश्वर है: हर कोई जो यौन
रूप से अनैतिक या अशोभनीय है, या जो यौन से ग्रसित है, जो कि एक मूर्ति की पूजा करने के बराबर है। 6कोई तुम्हें यह बताकर धोखा न दें कि परमेश्वर ऐसे
लोगों को दंडित नहीं करेगा जो ये काम करते हैं। इन्हीं बातों के कारण परमेश्वर उन लोगों को दण्डित करेगा जो उसकी अवज्ञा करते हैं। 7इसलिए इस प्रकार के
पाप करने में उन लोगों के साथ शामिल न हों। 8स्मरण रखें कि इससे पहले कि तुम प्रभु यीशु पर विश्वास करते, तुम नहीं जानते थे कि सत्य क्या था, ठीक वैसे
ही जैसे कि एक अंधेरे स्थान में रहने वाले लोग नहीं जानते कि उनके चारों ओर क्या है। परन्तु अब यह ऐसा है कि जैसे तुम प्रकाश में आ गए हो, क्योंकि प्रभु ने
तुम्हें दिखाया है कि सत्य क्या है। इसलिए उस तरीके से जियो, जैसा प्रभु ने तुम्हें दिखाया है। 9क्योंकि जिन लोगों के पास प्रकाश है वे सही तरीके से चलेंगे,
क्योंकि यीशु को जानने के परिणामस्वरूप तुम सदैव ऐसे तरीके से जीवन जी सकते हो जो अच्छा, सही और सच्चा हो। 10जब तुम इस तरह जीते हो, तो
सीखते रहिए कि प्रभु को क्या भाता है। 11इसलिए उन लोगों के साथ भागी न हो जो व्यर्थ कामों को कर रहे हैं जिन्हें वे आत्मिक अंधकार में करते हैं। इसके
बदले, सभी को उजागर करें कि उनके काम कितने अधिक व्यर्थ हैं। 12इसमें कोई सन्देह नहीं है कि परमेश्वर के लोगों के लिए यहाँ तक कि बुरी बातों के बारे में
बात करना शर्मनाक है, जिन्हें वे लोग गुप्त में करते हैं, 13परन्तु यह हमारे लिए आवश्यक है कि हम उन्हें उजागर करें ताकि लोग उन्हें जान सकें और समझ सकें
कि ये काम बुरे हैं। यह ऐसा होता है जब हम किसी चीज को प्रकाश में लाते हैं ताकि सभी को पता चल सके कि यह वास्तव में क्या है। तब लोग उस चीज़ की
जांच और न्याय कर सकते हैं जिसे प्रकाश ने उजागर कर दिया है। 14इससे पहले कि तुम परमेश्वर को जानते तुम ऐसे थे कि मानो कोई सोया हुआ है या किसी
अंधेरे स्थान पर मरा पड़ा है। यही तो विश्वासी बात करते हैं जब वे कहते हैं, "तुम जो सो रहे हो, जागो! तुम जो मरे हुए हो, अंधेरे से बाहर आओ और जियो!
मसीह तुम्हें दिखाएगा कि सच क्या है, ठीक वैसे ही जैसे प्रकाश लोगों को दिखाता है कि अंधेरे में क्या था।" 15इसलिए बहुत अधिक सावधान रहो कि तुम कैसे
जीते हो। मूर्ख लोगों जैसा व्यवहार न करो जैसा वे करते हैं। इसके बदले, बुद्धिमान लोग जैसा व्यवहार करो। 16अपनी ओर से सबसे अच्छा करो जो तुम उस
समय के साथ कर सकते हो जो तुम्हारे पास है, क्योंकि लोग हर दिन अधिक से अधिक बुरे काम कर रहे हैं। 17इसलिए समझदार बनो, अच्छी तरह से समझ
लो कि वह क्या है जिसे प्रभु यीशु चाहता है कि तुम करो, और उसे करो! 18मादक पेय पीने से मतवाले न बनो, क्योंकि लोग मतवाले होने पर अपने आप को
नियंत्रित नहीं कर सकते हैं। इसके बदले, परमेश्वर की आत्मा तुम्हें नियंत्रित करें कि तुम हर समय क्या करते हो। 19एक दूसरे के आगे मसीह के बारे भजन और
गीत गाओ और उन गीतों को जिन्हें परमेश्वर का आत्मा तुम्हें देता है। इस संगीत को अपने मन की गहराई से प्रभु के लिए गंभीर प्रशंसा के रूप में आने दो।
20हर समय सब बातों के लिए हमारे पिता परमेश्वर को उन बातों के कारण धन्यवाद दो जिन्हें प्रभु यीशु मसीह ने तुम्हारे लिए किया है 21नम्रतापूर्वक अपने आप
को एक दूसरे को सौंप दो क्योंकि तुम गहराई से मसीह का सम्मान करते हो। 22-23पत्नियों को अपने स्वयं के पति के नेतृत्व के अधीन होना चाहिए जैसा कि वे
प्रभु यीशु के लिए अधीन होते हैं क्योंकि पति पत्नी का अगुवा है ठीक वैसे ही जैसे मसीह विश्वव्यापी विश्वासियों की सभा का अगुवा है। वह उद्धारकर्ता है जिसने
सभी विश्वासियों को उनके पापों के लिए दण्डित होने से बचाया है। 24जहाँ तक पत्नियों की बात है, ठीक वैसे ही जैसे सभी विश्वासी स्वयं को मसीह के
अधिकार के अधीन करते हैं, उसी तरह से पत्नियों को भी अपने पति के अधिकार के अधीन स्वयं को पूरी तरह से दे देना चाहिए। 25तुम में से प्रत्येक पति,
अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम करे जैसा कि मसीह उन सभी से प्रेम करेगा जो उस पर विश्वास करेगा। यहाँ तक कि उसने हमारे लिए क्रूस के ऊपर अपने जीवन
के दे दिया 26ताकि वह हमें अपने लिए अलग कर सके। उसने हमें क्षमा करने की अपनी योजना बताकर और हमारे पापों को दूर करने के द्वारा ऐसे शुद्ध किया
है कि मानो उन्हें जल से धो दिया है। 27उसने ऐसा इसलिए किया ताकि वह सभी विश्वासियों के समूह को एक महिमामय समूह के रूप में प्रस्तुत कर सके,
जिसमें कोई पाप या नैतिक दोष न हो, वरन् वह पवित्र और सिद्ध हो, जैसे कि एक महिमामय दुल्हन अपने दूल्हे से मिलने के लिए तैयार हो। 28उसी तरह से,
प्रत्येक पुरूष को अपनी ही पत्नी से वैसा प्रेम करना चाहिए जैसा कि वह अपने शरीर से प्रेम करता है। जो पुरूष जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह ऐसा
करने से स्वयं से प्रेम करता है 29-30क्योंकि कोई भी अपने शरीर से कभी भी घृणा नहीं करता है। इसके बदले, वह अपने स्वयं के शरीर को भोजन खिलाता है
और उसकी देखभाल करता है, ठीक उसी तरह जैसे मसीह भी हम सभी विश्वासियों की देखभाल उसकी विश्वव्यापी सभा में करता है। हम विश्वासियों के एक

समूह बन गए हैं जो उसके हैं। 31पवित्रशास्त्र लोग विवाह करने वाले लोगों के बारे में यह कहता है: "इसलिए जो पुरूष अपने पिता और अपनी माता को छोड़
देगा और स्वयं अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे दोनों एक बन जाएंगे मानो कि वे एक व्यक्ति थे।” 32इसके बारे में बहुत कुछ है जिसे हम नहीं समझ सकते
हैं, परन्तु मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि पति और पत्नी का यह उदाहरण हमें मसीह और उसके साथ संबंध रखने वाले लोगों के समूह के बीच के संबंध को समझने में
भी सहायता करता है। 33तथापि, जहाँ तक तुम्हारी बात है, प्रत्येक पुरुष को अपनी पत्नी से उसी तरह प्रेम करना चाहिए जैसे वह स्वयं से प्रेम करता है, और
प्रत्येक स्त्री को अपने पति को गहरा सम्मान देना चाहिए।

Chapter 6

1जहाँ तक तुम्हारी बात है जो बच्चे हो, अपने अभिभावकों की आज्ञा पालन ऐसे करें कि मानो प्रभु यीशु की सेवा कर रहे हो क्योंकि ऐसा करना तुम्हारे लिए
उचित है। 2परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में आज्ञा दी है, "अपने पिता और माता का बहुत अधिक सम्मान करो।" यह पहला कानून है जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी थी
जिसमें उसने कुछ प्रतिज्ञा भी की है। उसने प्रतिज्ञा की है, 3"यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम समृद्ध होंगे, और तुम पृथ्वी पर लंबे समय तक रहोगे।" 4जहाँ तक
तुम जो पिता हो, अपने बच्चों के साथ इस तरह से व्यवहार न करें जिससे वे क्रोधित हो जाएँ। इसके बदले, उन्हें अच्छी तरह से निर्देश देकर और उन्हें उस तरीके
से अनुशासित करें, जिसे प्रभु यीशु तुम से चाहता है। 5जहाँ तक तुम जो दास हो, बहुत आदर और ईमानदारी से उन लोगों की आज्ञा पालन करें जो पृथ्वी पर
तुम्हारे ऊपर स्वामी हैं, ठीक वैसे जैसे तुम मसीह की आज्ञा पालन करते हो। 6उनकी आज्ञा तब ही न करें जब वे तुम्हें देख रहे हों, जैसा कि वे लोग करते हैं जो
केवल ऐसा दिखावा करते हैं कि मानो कड़ी मेहनत कर रहो हों। इसके बदले, ऐसे काम करें कि मानो तुम मसीह के दास हो, उत्साह से यह करते हुए कि
परमेश्वर तुमसे क्या करना चाहता है। 7अपने स्वामियों की सेवा स्वेच्छा से करें, ऐसे कि जैसे तुम लोगों के बदले प्रभु यीशु की सेवा कर रहे हो। 8ऐसा इसलिए
करो क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु यीशु प्रत्येक व्यक्ति को उस अच्छे कार्य के लिए पुरस्कृत करेगा जिसे उस व्यक्ति ने किया है। यह बात कोई अर्थ नहीं रखती
है कि वह व्यक्ति दास था या एक स्वतंत्र व्यक्ति। 9जहाँ तक तुम जो स्वामी हो तुम्हारी बात है, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे दासों को तुम्हारी सेवा अच्छी तरह से
करनी चाहिए, उसी तरह तुम्हें भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। उन्हें धमकी देना बंद करो। यह मत भूलो कि जो दोनों उनका प्रभु और तुम्हारा प्रभु
है वह स्वर्ग में है और वह सभी लोगों का न्याय समान रूप से करता है चाहे उनका पद ऊँचा हो या नीचा ही क्यों न हो। 10अंत में, आत्मिक रूप से स्वयं को
मजबूत करने के लिए पूरी तरह से प्रभु यीशु पर भरोसा करो क्योंकि वह अथाह सामर्थी है। 11ठीक वैसे ही जैसे एक सैनिक अपने शत्रु से लड़ने के लिए तैयार
होने के लिए अपने सभी हथियार को धारण करता है, तुम्हें हर आत्मिक संसाधन का उपयोग करना चाहिए जिसे परमेश्वर तुम्हें प्रदान करता है ताकि तुम शैतान
के विरूद्ध तब सफल हो सको जब वह तुम्हारे विरूद्ध चतुराई से योजना बनाये। 12स्मरण रखो कि हम अन्य मनुष्यों के विरूद्ध नहीं लड़ रहे हैं। इसके बदले,
हम उन दुष्टों के विरूद्ध लड़ रहे हैं, जिनके पास इस बुरे समय में बुरे काम करने वाले लोगों पर शासन करने का अधिकार है, अर्थात् उन दुष्ट आत्माओं के
विरूद्ध जो कि हवा में रहती हैं। 13इसीलिए तुम्हें उन सभी आत्मिक संसाधनों का अच्छी तरह से उपयोग करना चाहिए जो परमेश्वर ने तुम्हें दिए हैं, एक सैनिक
की तरह जो अपने सभी हथियार को धारण करता है। यदि तुम ऐसा करते हो, तो आप दुष्ट आत्माओं का विरोध करने में सक्षम होंगे जब वे तुम पर आक्रमण
करेंगी। तुम तब भी तैयार रहोगे जब वे फिर से तुम पर आक्रमण करेंगी और परमेश्वर के लिए अच्छा जीवन जीने के योग्य हो जाओगे। 14तुम्हें शैतान और
उसकी दुष्ट आत्माओं का विरोध करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जैसे कि सैनिकों को शत्रु का विरोध करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। ऐसा करने के
लिए, उन सच्ची बातों के बारे में सोचते रहिए जिन्हें परमेश्वर ने तुम्हें दिखाया है। इसके अतिरिक्त, धार्मिकता से भरे हुए व्यवहार को करते रहिए। यह तुम्हारी
रक्षा एक ऐसे सैनिक के हथियार के रूप में करेगा जो उसकी छाती की रक्षा करता है। 15एक सैनिक की तरह जो अपने जूते पहने रहता है, यदि आवश्यक हो
तो शुभ संदेश के लिए कहीं भी जाने के लिए तैयार रहो, जो लोगों को बताता है कि कैसे परमेश्वर के साथ शांति से रहना है। 16जिस प्रकार एक सैनिक अपने
शत्रु की ओर से आने वाले जलते तीरों को रोकने के ढाल को थामे रहते है जिसे उसका शत्रु उस पर चलाता है, वैसे ही तुम्हें हर समय प्रभु पर दृढ़ विश्वास को
बनाए रखना चाहिए। यह तुम्हें उन सभी चीजों से बचाएगा, जिसे तुम्हारा शत्रु, शैतान, दुष्ट, तुम्हें आत्मिक रूप से नुकसान पहुँचाने के प्रयास में करेगा। 17इसके
अतिरिक्त, एक सैनिक अपने सिर की रक्षा के लिए एक टोप को धारण करता है, इस बात पर भरोसा करें कि परमेश्वर ने तुम्हें बचाया है। और जिस तरह एक
सैनिक अपने शत्रुओं को पराजित करने के लिए एक तलवार का उपयोग करता है, उस हथियार का उपयोग करें जिसे परमेश्वर का आत्मा तुम्हें देता है, यह वह
सन्देश है जो परमेश्वर की ओर से आता है। 18जब भी तुम परमेश्वर से प्रार्थना करते हो और उससे चीजों का अनुरोध करते हो, तो सदैव परमेश्वर के आत्मा को
निर्देशित करने दें कि तुम्हें कैसे प्रार्थना करनी है और तुम्हें क्या प्रार्थना करनी है। अधिक प्रभावी होने के लिए, यह देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है, और धैर्य
बनाए रखें जब तुम परमेश्वर के सभी लोगों के लिए निरन्तर प्रार्थना में बने रहते हैं। 19मेरे लिए भी प्रार्थना करें, कि परमेश्वर मुझे बताएँ कि जब भी मैं बोलूँ, तो
मुझे क्या बोलना चाहिए, ताकि मैं दूसरों को मसीह के बारे में हियाव से शुभ सन्देश बता सकूँ, जिसे लोग पहले नहीं जानते थे। 20ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं
लोगों को मसीह के बारे में बताते आया हूँ कि मैं अब यहाँ कैद में उनका प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। प्रार्थना करें कि जब मैं दूसरों को मसीह के बारे में बताता हूँ, तो
मैं साहसपूर्वक बोल सकूँ, क्योंकि ऐसे ही मुझे बोलना चाहिए। 21अब इसी क्रम में कि तुम जान सकते हो कि मेरे साथ क्या हो रहा है और मैं क्या कर रहा हूँ,
तुखिकुस तुम्हें यहाँ पर घटित होने वाली हर बात के बारे में बताएगा। वह एक ऐसा साथी विश्वासी है, जिसे हम सभी बहुत प्रेम करते हैं, और वह प्रभु यीशु की
सेवा विश्वासयोग्यता से करता है। 22यही वह कारण है कि मैं उसे तुम्हारे पास इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ; मैं चाहता हूँ कि तुम यह जानों कि हम कैसे हैं, और
मैं चाहता हूँ कि वह तुम्हें सांत्वना और उत्साह दे। 23मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारा पिता और प्रभु यीशु मसीह तुम सभी साथी विश्वासियों को एक
शांतिपूर्ण आत्मा दे और तुम्हें एक दूसरे से प्रेम करने और निरन्तर परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिए सक्षम करे। 24मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारा पिता
निरन्तर उन सभी लोगों के बीच अनुग्रहपूर्वक कार्य करता रहेगा जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रति दृढ़ प्रेम रखते हैं।

फिलिप्पियों

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, {इस पत्र को लिख रहा हूँ} परमेश्वर के सब लोगों को जो फिलिप्पी {नगर} में मसीह यीशु से जुड़ गए हैं। तीमुथियुस मेरे साथ है। हम मसीह यीशु
के दास हैं। {हम विशेष रूप से इस पत्र को लिखते हैं} विश्वासियों के अगुवों के लिए और उनके लिए जो {उनकी} सहायता करते हैं। 2परमेश्वर हमारा पिता और
हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम पर दयालु बने रहना {जारी रखें} और {तुम्हें} शान्ति प्रदान करें। 3हर बार जब मैं तुम्हारे विषय में सोचता हूँ, तो {तुम्हारे कारण} मैं
अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ जिसकी मैं आराधना करता हूँ। 4हर बार जब मैं तुम सब के लिए प्रार्थना करता हूँ तो मैं सर्वदा आनन्दपूर्वक प्रार्थना करता
हूँ। 5{मैं आनन्दपूर्वक प्रार्थना करता हूँ इसका कारण यह है} क्योंकि तुम उस समय से मेरे साथ लोगों को वह शुभ सन्देश बताने में भागीदार हुए हो जब तुम ने
{इस पर} पहली बार विश्वास किया और तुम अब भी मेरे साथ भागीदारी करना जारी रखे हुए हो। 6परमेश्वर ने अपने भले काम को तुम में तब आरम्भ किया था
{जब तुम ने पहली बार विश्वास किया था} और मुझे भरोसा है कि वह उस काम को तब तक जारी रखेगा तब तक कि यीशु मसीह वापस न आए। 7मैं तुम सब
से बहुत ही अधिक प्रेम करता हूँ, इसलिए मेरे लिए यह सही है कि तुम्हारे विषय में इस रीति से विचार करूँ। परमेश्वर ने हम को {इस काम में} एक साथ
साझेदारी करने के लिए दयापूर्वक आशीषित किया है, दोनों में एक बन्दी होने के नाते {जैसे मैं सहता हूँ} और साथ ही जैसे मैं लोगों को समझाता हूँ कि {यीशु
के विषय में} शुभ सन्देश क्यों सत्य है। 8तुम सब के साथ होने की मेरी बड़ी इच्छा है, और मैं तुम सब से उसी रीति से प्रेम करता हूँ जैसे यीशु मसीह तुम से प्रेम
करता है। परमेश्वर जानता है कि यह सत्य है। 9मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें एक ऐसे तरीके से {परमेश्वर और दूसरों} को प्रेम करने के लिए सक्षम करेगा
जो बढ़ते रहना जारी रखता है। जैसे तुम वृद्धि करते हुए दूसरों को प्रेम करते हो, मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हारी सहायता इसमें भी करेगा कि तुम {उसे}
अच्छे से जानने पाओ और समझने पाओ कि सारी परिस्थितियों में {दूसरों से कैसे प्रेम करना है}। 10इस प्रार्थना को करने का मेरा कारण यह है ताकि तुम जाँच
लो और चुन लो कि {परमेश्वर के लिए} सर्वाधिक आनन्द प्रदान करने वाली बात क्या है ताकि जब मसीह वापस आए तो उस समय तुम कुछ भी गलत करने से
पूर्णरूप से मुक्त हो जाओ। 11{गलत कामों को करने के बजाए,} तुम उन वास्तविक अच्छे कामों को करने में व्यस्त हो जाओगे जिनको करने के लिए यीशु
मसीह हम को सक्षम करता है। ये काम लोगों को परमेश्वर का आदर और प्रशंसा करने में प्रेरित करेंगे। 12हे मेरे साथी विश्वासियों, मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो
कि जो बातें मेरे साथ घटित हुईं उन्होंने लोगों के शुभ सन्देश सुनने में बाधा नहीं डाली। बजाए इसके, यहाँ तक कि अधिकाधिक लोग शुभ सन्देश को सुनने में
इसलिए सक्षम हो गए क्योंकि मैं बन्दीगृह में हूँ। 13बल्कि, यहाँ के सारे सैन्य पहरुए और बहुत से अन्य लोग अब जानते हैं कि मैं बन्दीगृह में इसलिए हूँ क्योंकि
मैं मसीह के विषय में शुभ सन्देश की घोषणा करता हूँ। 14साथ ही, क्योंकि {यहाँ} विश्वास करने वालों ने देखा था जो प्रभु ने मेरे द्वारा बन्दीगृह में किया, उनमें से
अधिकांश अब यीशु के विषय में शुभ सन्देश की घोषणा करते हैं {जो उन्होंने पहले किया उसकी तुलना में} अधिक हियाव बाँध कर और निडरता से। 15-17कुछ
लोग मसीह के विषय में शुभ सन्देश की घोषणा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे {परमेश्वर की आज्ञा मानना} चाहते हैं और इसलिए क्योंकि वे {मुझ से और दूसरों
से} प्रेम करते हैं। वे मानते हैं कि परमेश्वर ने मुझे लोगों को यह समझाने के लिए नियुक्त किया है कि {यीशु के विषय में} शुभ सन्देश सत्य क्यों है। परन्तु कुछ
इस विषय में ईमानदार नहीं हैं कि वे मसीह के विषय में शुभ सन्देश की घोषणा क्यों कर रहे हैं। वे केवल इसलिए ऐसा करते हैं क्योंकि वे स्वयं को बढ़ावा देना
चाहते हैं। वे मुझ से ईर्ष्या करते हैं और मेरे लिए क्लेश उत्पन्न करना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि जब वे शुभ सन्देश की घोषणा करने से प्रसिद्ध हो जाएँगे तो मैं
बन्दीगृह में और भी अधिक पीड़ित होऊँगा। 18परन्तु यह महत्वपूर्ण नहीं है कि वे मेरे साथ क्या करना चाहते हैं! महत्वपूर्ण बात तो यह है कि चाहे भली वजहों
के लिए या बुरी वजहों के लिए, लोग मसीह {के विषय में शुभ सन्देश} की घोषणा कर रहे हैं। इसलिए मैं आनन्द करता हूँ कि लोग मसीह के विषय में सन्देश को
फैला रहे हैं! और मैं इसमें आनन्दित होना जारी रखूँगा! 19{मैं इसलिए आनन्दित होऊँगा} क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह स्थिति कैसी होगी: कि परमेश्वर मुझे
{बन्दीगृह से} छुड़ाएगा। वह ऐसा इसलिए करेगा क्योंकि तुम मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हो और इसलिए क्योंकि यीशु मसीह का आत्मा मेरी सहायता कर रहा है।
20{मैं जानता हूँ कि यह इसलिए घटित होगा, क्योंकि} मैं बहुत भरोसे के साथ आशा करता हूँ कि मैं विश्वासयोग्यता के साथ मसीह का आदर करना जारी
रखूँगा। {मैं आशा करता हूँ और इच्छा रखता हूँ कि} मैं हियाव बाँध कर मेरे कामों के द्वारा इस समय और सर्वदा मसीह का आदर करूँगा, चाहे मेरे जीवन जीने
के तरीके के द्वारा या मेरे मरने के तरीके के द्वारा। 21जहाँ तक मेरी बात है, मैं मसीह का आदर करने के लिए जीवित हूँ, और यदि मैं मर जाऊँ, तो यह मेरे लिए
और भी अच्छा होगा। 22परन्तु यदि मैं यहाँ अपने शरीर में रहना जारी रखता हूँ, तो मैं उत्पादक रूप से मसीह की सेवा करने में सक्षम होऊँगा। इसलिए मैं नहीं
जानता कि मैं किसे पसंद करता हूँ, {जीवित रहना या मर जाना}। 23मेरे लिए यह चुनाव करना कठिन है कि मैं किसे पसंद करता हूँ, {जीवित रहना या मर
जाना}। मैं {इस संसार को} त्याग देने और जाकर मसीह के साथ रहने की लालसा रखता हूँ, क्योंकि {यहाँ पर होने की तुलना में} मसीह के साथ होना कहीं
अधिक बेहतर है। 24परन्तु तुम्हारी सहायता करना जारी रखने की खातिर मुझे यहाँ पृथ्वी पर जीवित रहने की आवश्यकता है। 25चूँकि मुझे इस बात का यकीन
है, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं तुम सब के साथ जीवित रहूँगा ताकि जब तुम यीशु पर भरोसा रखना जारी रखते हो तो और भी अधिक आनन्दित होने में तुम्हारी
सहायता करूँ। 26{मैं ऐसा करूँगा} ताकि तुम मेरे कारण यीशु मसीह की और भी अधिक प्रशंसा करने पाओ, क्योंकि मैं आकर तुम से फिर से मिलूँगा।
27महत्वपूर्ण बात तो यह है कि तुम ऐसे तरीके से व्यवहार करते हो जिससे मसीह के विषय में शुभ सन्देश को आदर मिलता है। {ऐसा ही करो} ताकि लोग मुझे
बताएँ कि तुम एकजुट तरीके से एक साथ कड़ी मेहनत कर रहे हो जब तुम उन लोगों का प्रतिरोध करते हो जो मसीह के विषय में सन्देश का विरोध करते हैं और
जब तुम लोगों को शुभ सन्देश के अनुसार जीवन जीने में सहायता करते हो। {तुम को इस तरीके से व्यवहार करना चाहिए} चाहे मैं तुम से फिर मिलूँ या नहीं।
28जो तुम्हारे विरोध में हैं उन लोगों को ऐसी किसी बात के द्वारा {जो वे करते या कहते हैं} तुम्हें भयभीत मत करने दो। जब वे देखते हैं कि तुम उनसे भयभीत
नहीं हो, तो वे जान लेंगे कि परमेश्वर उनको नाश कर देगा, परन्तु वह तुम्हें बचा लेगा। यह सब परमेश्वर की ओर से है। 29परमेश्वर ने तुम्हारे लिए यह इसलिए
किया है क्योंकि उसने तुम्हें उस पर विश्वास करने के वरदान के साथ-साथ, मसीह के लिए दु:ख उठाने का वरदान दिया है। 30तुम ने देखा कि {जिस समय में

वहाँ फिलिप्पी में था} तब कैसे मैंने उन लोगों का प्रतिरोध किया था जो मेरे विरोध में थे। अब तुम को उन लोगों का प्रतिरोध करना है जो उसी तरीके से तुम्हारा विरोध कर रहे हैं। जैसा कि अब भी लोग तुम्हें बताते हैं, मैं इस समय पर भी ऐसे लोगों का प्रतिरोध करने में संघर्ष कर रहा हूँ।

Chapter 2

1चूँकि मसीह हमें प्रोत्साहित करता है, चूँकि वह उसके प्रेम से हम को सान्त्वना देता है, चूँकि आत्मा ने {तुम्हारे मध्य में} सहभागिता उत्पन्न की है, चूँकि {एक
दूसरे के प्रति} स्नेह और करुणा {परमेश्वर तुम को प्रदान करता है}, 2निम्नलिखित कामों को करने के द्वारा मुझे पूर्णरूप से प्रसन्न करो: एक दूसरे के साथ
सहमति रखो, एक दूसरे से प्रेम करो, एक दूसरे के साथ समीपता में होकर जुड़े रहो, तुम्हारे विचारों में एकजुट रहो। 3कभी भी स्वार्थी रूप से स्वयं को दूसरों की
तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बनाने का प्रयास मत करो, और स्वयं को दूसरों की तुलना में बेहतर मत समझो। बजाए इसके, विनम्र बनो, और स्वयं की तुलना में
अधिक महत्वपूर्ण के समान दूसरों के साथ व्यवहार करो। 4तुम में से प्रत्येक को केवल तुम्हारी आवश्यकताओं पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए। बजाए इसके, तुम
को अन्य लोगों और उनकी आवश्यकताओं पर भी ध्यान देना चाहिए। 5जैसे मसीह यीशु ने सोचा था उसी रीति से सोचो: 6यद्यपि वह हर रीति में परमेश्वर के
समान था, उसने परमेश्वर के तुल्य होने के सब विशेषाधिकारों को पकड़े रखने पर ज़ोर नहीं दिया। 7बल्कि, उसने ईश्वरीय विशेषाधिकारों को त्याग दिया और
दूसरों का दास बन गया और मनुष्य बन गया। जब वह मनुष्य बन गया, 8तो उसने स्वयं को और अधिक विनम्र किया। विशेष रूप से, मरने के लिए तैयार रहने
के लिए परमेश्वर की आज्ञा मानकर {उसने स्वयं को विनम्र किया}। यहाँ तक कि वह सूली पर चढ़ाकर मार डाले जाने के लिए भी तैयार था। 9क्योंकि {मसीह ने
विनम्रतापूर्वक परमेश्वर की आज्ञा मानी,} इसलिए परमेश्वर ने भी उसे अत्यधिक आदर प्रदान किया। उसने किसी अन्य व्यक्ति अथवा प्राणी से बढ़कर उसे आदर
प्रदान किया। 10ताकि यीशु के सामने, प्रत्येक प्राणी घुटने टिकाए और उसका आदर करे, वे प्राणी जो स्वर्ग में हैं और पृथ्वी के प्राणी तथा पृथ्वी के नीचे के
प्राणी; 11और प्रत्येक मुँह कहे, कि यीशु मसीह ही प्रभु है, ताकि परमेश्वर पिता का आदर हो। 12इन बातों के परिणामस्वरूप, हे मेरे परम प्रिय साथी विश्वासियों,
जैसे जब मैं तुम्हारे साथ था तुम ने सर्वदा परमेश्वर की आज्ञा मानी, अब जबकि मैं तुम से अलग हूँ, तो तुम को और भी अधिक उसकी आज्ञा माननी चाहिए। तुम
में से हर एक जन, तुम में होकर परमेश्वर के बचाव कार्य में उसके साथ काम करता है, और विनम्रतापूर्वक परमेश्वर का आदर करते हुए ऐसा करो। 13क्योंकि
परमेश्वर तुम में होकर कुछ कर रहा है ताकि तुम उन भले कामों को करना चाहो—और फिर वास्तव में करते भी हो—जो उसे प्रसन्न करते हैं। 14सब काम बिना
कुड़कुड़ाए या झगड़ा किए करो। 15इस प्रकार से व्यवहार करो जिससे कि तुम पूर्णरूप से दोषरहित, परमेश्वर की सन्तान हो जाओ, जो तुम को बुराई से
सुरक्षित रखता है जब तुम इस संसार के दुष्ट लोगों के मध्य में जीवन व्यतीत करते हो। फिर, जब तुम उनके मध्य में जीवन व्यतीत करते हो, तो तुम पाप के
अन्धकार के सामने चमकते हुए खड़े होओगे। 16अनन्त जीवन कैसे प्राप्त करना है इस विषय का सन्देश दूसरों को बताओ। {इन सब कामों को करो} ताकि उस
समय जब मसीह वापस आता है, तो मैं आनन्द करने में सक्षम होऊँगा कि मैंने तुम्हारे मध्य में कठोर परिश्रम बेकार में ही नहीं किया। 17और मैं आनन्दित हूँ
और मैं तुम सब के साथ आनन्द करूँगा, प्रतिदिन दुःख भुगतने या ऐसे समय से होकर गुजरने के बावजूद जब वे जो सुसमाचार का विरोध करते हैं मुझे मार
डालने का प्रयास करते हैं। मैं तुम्हारे साथ-साथ सहर्ष दुःख भोगूँगा, और तुम्हारी उस सेवा में और इजाफा करूँगा जो तुम इसलिए करते हो क्योंकि तुम उस पर
विश्वास करते हो। 18उसी रीति से भी, तुम में से हर एक को इन बातों की खातिर आनन्द करना चाहिए; तुम को मेरे साथ मिल कर आनन्द करना चाहिए! 19मैं
आशा करता हूँ कि प्रभु यीशु शीघ्र ही तीमुथियुस को तुम से मिलने के लिए भेजने में सक्षम होने हेतु मुझे अनुमति प्रदान करेगा। मैं चाहता हूँ कि यह मिलाप होने
पाए क्योंकि मुझे आशा है कि जब वह तुम्हारे समाचारों के साथ वापस आए तो वह मुझे प्रोत्साहित कर सकता है। 20मेरे पास तीमुथियुस के समान कोई अन्य
नहीं है जो वास्तविक रूप से तुम्हारी चिन्ता करता हो। 21अन्य सभी जिनको मैं तुम्हारे पास भेज सकता हूँ वे केवल उनके स्वयं के मामलों के विषय में चिन्तित
रहते हैं। वे इस विषय में पर्याप्त रूप से चिन्तित नहीं हैं कि यीशु मसीह किसे महत्वपूर्ण समझता है। 22परन्तु तुम जानते हो कि तीमुथियुस ने यह साबित किया
है कि वह प्रभु की और दूसरों की सेवा विश्वासयोग्यता के साथ करता है। तुम जानते हो कि लोगों पर शुभ सन्देश की घोषणा करने में उसने मेरे साथ समीपता में
होकर प्रभु की सेवा की है। 23मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास शीघ्र भेजने की आशा करता हूँ जैसे ही मुझे मालूम पड़े कि मेरे साथ क्या घटित होगा। 24और मुझे
भरोसा है कि प्रभु शीघ्र ही मुझे स्वतंत्र होने की अनुमति प्रदान करेगा, ताकि मैं स्वयं भी तुम्हारे पास आऊँ। 25मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि मुझे इपफ्रुदीतुस
को तुम्हारे पास वापस भेज देना चाहिए। वह एक संगी विश्वासी और मेरा सहकर्मी है, और वह मेरे साथ कठिनाइयों को वैसे ही सहता है जैसे सैनिक एक साथ
कठिनाइयों को सहते हैं। वह तुम्हारा सन्देशवाहक और दास है, जिसे तुम ने मेरी सहायता के लिए तब भेजा था, जब मुझे आवश्यकता थी। 26इपफ्रुदीतुस
उत्सुकतापूर्वक फिलिप्पी में तुम्हारे साथ रहने की इच्छा रखता है, और वह तुम्हारे लिए चिन्तित है {कि तुम उसके बारे में परेशान होंगे} जब से तुम को उसकी
बीमारी के बारे में मालूम चला। 27वास्तव में, वह इतना बीमार था कि वह लगभग मर ही गया था। परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की, और उसने मुझ पर भी दया
की, {और इसके परिणामस्वरूप, उसने उसे चंगा किया}। परमेश्वर ने मुझ पर दया की ताकि मैं और अधिक शोक न करूँ। 28इसलिए मैं उसे जितना जल्दी
सम्भव हो तुम्हारे पास वापस भेज रहा हूँ। मैं यह इसलिये करूँगा ताकि जब तुम उसे फिर से देखो, तो तुम आनन्द करो, और ताकि मेरा शोक कम हो।
29इपफ्रुदीतुस को संगी विश्वासी के समान आनन्दपूर्वक ग्रहण करो, और अन्य विश्वासियों का आदर करो जो उसके समान हैं। 30ऐसा इसलिए करो क्योंकि,
जब इपफ्रुदीतुस मसीह के लिए कार्य कर रहा था, वह लगभग मर चुका था। वह जानता था कि मेरी सहायता करने के परिणामस्वरूप वह मर सकता है, और
वह लगभग मर ही गया था। उसने उन वस्तुओं की आपूर्ति करने में मेरी सहायता की जिनकी मुझे आवश्यकता थी, कुछ ऐसा जो तुम नहीं कर सकते थे क्योंकि
तुम मुझ से बहुत दूर हो।

Chapter 3

1अन्ततः, हे मेरे संगी विश्वासियों, परमेश्वर जैसा है उसमें आनन्दित रहो, और इस बारे में आनन्दित रहो जो उसने किया और कर रहा है। यद्यपि इस समय पर मैं
तुम को उन्हीं बातों के विषय में लिखूँगा जिनका मैंने तुम से पहले भी उल्लेख किया था, मेरे लिए यह थकाने वाली बात नहीं है, और यह तुम को उन लोगों के

द्वारा भटकाए जाने से बचाएगी जो ऐसी बातों की शिक्षा देते हैं जो सत्य नहीं हैं। 2उनसे अपनी सुरक्षा करो जो गंदे कुत्तों के समान हैं। उनसे अपनी सुरक्षा करो
जो ऐसी शिक्षा देते हैं जो झूठी है। उनसे अपनी सुरक्षा करो जो अपने शरीरों को काटते हैं। 3लेकिन जहाँ तक हमारी बात है—हम स्वयं वही हैं जो सच में खतना
वाले होने का अर्थ है। परमेश्वर का आत्मा हमें सच में परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम करता है, और हम खतना जैसे धार्मिक कार्यों पर भरोसा करने के
बजाए मसीह यीशु में गर्व करते हैं। 4हालाँकि, यदि कोई सोचे कि वे धार्मिक कार्यों पर भरोसा कर सकते हैं, तो मैं भी कर सकता हूँ; और यहाँ तक कि मैं दूसरों
से अधिक कर सकता हूँ। {मैं तुम को बताऊँगा कि क्यों।} 5मेरे जन्म लेने के आठ दिनों के पश्चात मेरा खतना किया गया था। मैं इस्राएली लोगों में से हूँ और
बिन्यामीन के गोत्र का वंशज हूँ। मैं ऐसा इब्रानी हूँ जिसने इब्रानी भाषा और जीवनयापन के तरीके को बनाए रखा है। मूसा की व्यवस्था का पालन करने के
सम्बन्ध में, मैं एक फरीसी था, और इसलिए मैंने मूसा की व्यवस्था और फरीसियों की शिक्षाओं की सख्ती के साथ पालन किया है। 6मैं जो विश्वास करता था
उसके विषय में जोशीला होने के सम्बन्ध में, मैं जो विश्वास करता था उसके विषय में मैं इतना जोशीला था कि मैंने उन लोगों को पीड़ित किया जो यीशु का
अनुसरण करते थे। मूसा की व्यवस्था में जो कुछ परमेश्वर की मांग थी, उसे करने के संबंध में और उसके विषय में शास्त्रियों की जो मांग थी, उसे करने के संबंध
में, मैं निर्दोष था। 7परन्तु वह सब बातें जिन पर मैं पहले भरोसा करता था, उन्हीं बातों को मसीह के कारण मैं अब बेकार समझता हूँ। 8बजाए इसके, उससे भी
अधिक, मसीह, यीशु मेरे प्रभु को जानना कितना महान है, इसकी तुलना में मैं अब सभी चीजों को बेकार मानता हूँ। उसकी खातिर मैंने सब कुछ स्वेच्छा से
त्याग दिया है, और मैं उन्हें मल के समान समझता हूँ कि उसे फेंक दूँ जिससे कि मुझे मसीह मिल जाए। 9मैंने स्वेच्छा से उन बातों को त्याग दिया है जिन पर मैं
पहले भरोसा करता था ताकि उस पर विश्वास करने के द्वारा मैं मसीह के साथ पूर्णरूप से एकजुट हो जाऊँ, और उस व्यवस्था का पालन करने के द्वारा नहीं जो
परमेश्वर ने मूसा को दी थी। {मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ} कि परमेश्वर को प्रसन्न करने का एकमात्र तरीका मसीह पर विश्वास करने के द्वारा
है। 10मैं मसीह को बेहतर और बेहतर जानना चाहता हूँ। मैं उसे अपने जीवन में शक्तिशाली रूप से कार्य करते हुए लगातार अनुभव करना चाहता हूँ, ठीक वैसे
ही जैसे परमेश्वर ने तब शक्तिशाली रूप से कार्य किया जब उसने मसीह को मरने के बाद जीवित किया। मैं भी लगातार दुःख उठाने के लिए तैयार रहना चाहता
हूँ ताकि मैं परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकूँ, ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने दुःख उठाया ताकि वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सके। मैं उसकी मृत्यु में
उसके जैसा बनना चाहता हूँ। 11{मैं यह सब इसलिए चाहता हूँ क्योंकि} मैं किसी तरह से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद परमेश्वर मुझे फिर से जीवित कर दे।
12मैं यह दावा नहीं करता कि मैं इसे पहले ही प्राप्त कर चुका हूँ। और न ही मैं यह कहता हूँ कि मुझे यीशु के समान बनाने के लिए परमेश्वर ने मुझ में काम करना
पहले से ही समाप्त कर दिया है। परन्तु मैं यीशु की तरह बनने का अधिक से अधिक प्रयास करता हूँ, क्योंकि यही कारण है कि यीशु मसीह ने मुझे पकड़ लिया।
13हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं निश्चित रूप से नहीं सोचता कि मैं पूरी तरह से यीशु की तरह पहले से ही बन गया हूँ। और न ही उसे पूरी तरह से जाना है। बल्कि,
मैंने ठान लिया है उन बातों के विषय में भूल जाने के लिए जो अतीत में हैं और उन बातों के लिए कठिन परिश्रम करने के लिए जो मेरे सामने हैं। 14बजाए
इसके, मेरे मरने तक मैं केवल यीशु की तरह अधिक से अधिक बनते जाने पर ध्यान-केंद्रित करूँ। इसके परिणामस्वरूप, यीशु मसीह के साथ मेरे सम्बन्ध के
कारण, परमेश्वर मुझे स्वर्ग में प्रतिफल देगा। 15तो फिर, हम सभी जो परिपक्व विश्वासी हैं उन्हें भी इसी तरीके से सोचना चाहिए। परन्तु यदि तुम मेरे द्वारा लिखी
गई किसी भी बात के विषय में भिन्न प्रकार से सोचते हो, तो परमेश्वर तुम पर यह भी प्रदर्शित करेगा। 16हालाँकि, उन सच्ची बातों के विषय में जिन्हें परमेश्वर ने
हम पर पहले ही प्रकट कर दिया है, आओ हम सब इन बातों के अनुसार अपने जीवन का संचालन करें। 17हे मेरे संगी विश्वासियों, मेरा अनुकरण करने में
एकजुट हो जाओ, और उन लोगों को ध्यान से देखो जो हमारी तरह जीवन व्यतीत करते हैं। 18ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस तरह से कार्य करते हैं जो यह दर्शाता
है कि वे क्रूस पर मरने वाले मसीह के बारे में सन्देश का विरोध करते हैं। मैंने तुम को इन लोगों के विषय में पहले भी कई बार बताया है, और अब जब मैं तुम को
उनके विषय में फिर से बताता हूँ, तो मैं दुःखी हूँ, यहाँ तक कि रो भी रहा हूँ। 19परमेश्वर इन लोगों को कठोर दण्ड देगा। ये लोग परमेश्वर के बजाए अपनी
शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति करते हैं, और जिनके लिए उन्हें शर्म आनी चाहिए उन्हीं बातों पर उन्हें गर्व होता है। ये लोग स्वर्गीय वस्तुओं के बजाए केवल
सांसारिक वस्तुओं के विषय में सोचते हैं। 20जहाँ तक हमारी बात है, हम स्वर्ग के नागरिक हैं, और यह स्वर्ग की ओर से है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के
लौट आने और हमें बचाने के लिए उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। 21परमेश्वर उन निर्बल और विनम्र शरीरों को परिवर्तित कर देगा जो यीशु के महिमामय
पुनरुत्थित शरीर के समान शरीर हो जाने के लिए इस समय हमारे पास हैं। वह अपनी शक्ति के द्वारा ऐसा करेगा, जिसके द्वारा वह सभी वस्तुओं को नियंत्रित
करने में सक्षम है।

Chapter 4

1हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं तुम से प्रेम करता हूँ, और मैं तुम को देखने की बड़ी इच्छा रखता हूँ। मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ; परमेश्वर तुम्हारी वजह से मुझे
प्रतिफल देगा। हे मेरे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, {इस पत्र में} जिस तरीके का मैंने अभी तुम से वर्णन किया, उसी में लगातार प्रभु के प्रति
दृढ़तापूर्वक समर्पित बने रहो। 2हे यूओदिया, मैं तुम से आग्रह करता हूँ, और हे सुन्तुखे, मैं तुम से आग्रह करता हूँ, कि एक दूसरे के साथ फिर से शान्तिपूर्ण
सम्बन्ध इसलिए रखो, क्योंकि तुम दोनों प्रभु से जुड़ गए हो। 3और हे मेरे विश्वासयोग्य भागीदार, मैं तुझ से भी आग्रह करता हूँ, कि कृपया उन स्त्रियों की
सहायता कर। {उनकी सहायता इसलिए कर क्योंकि} उन्होंने शुभ सन्देश फैलाने में मेरी सहायता की थी, जैसे क्लेमेंस और बाकी के मेरे संगी कामगारों ने की
थी, जिनके नाम परमेश्वर ने उन लोगों की अपनी पुस्तक में लिख लिए हैं जो उसके साथ सर्वदा रहेंगे। 4परमेश्वर जैसा है और जो उसने किया और कर रहा है
उसमें सदा आनन्दित रहो! मैं फिर से कहता हूँ, आनन्दित रहो! 5ऐसे तरीके से व्यवहार करो कि सब लोग देखने पाएँ कि तुम सज्जन हो। {ऐसा इसलिए करो
क्योंकि} प्रभु शीघ्र ही लौटेगा। 6किसी भी बात के विषय में चिन्ता मत करो। बजाए इसके, हर परिस्थिति में परमेश्वर से प्रार्थना करो, और उसे सटीक रूप से
बताओ जो तुम्हारी आवश्यकता है, और तुम्हारी सहायता करने के लिए उससे निवेदन करो। और जो सब वह तुम्हारे लिए करता है उसके लिए परमेश्वर का
धन्यवाद करो। 7इसके परिणामस्वरूप किसी भी बात के विषय में चिन्ता न करने हेतु परमेश्वर तुम को सक्षम करेगा, और जब तुम मसीह यीशु से जुड़ गए हो तो
वह तुम्हारी रक्षा करेगा कि तुम कैसे सोचते और महसूस करते हो। 8अन्तत:, हे मेरे संगी विश्वासियों, जो कुछ भी सत्य है, जो कुछ भी आदर करने योग्य है, जो
कुछ भी सही है, जो कुछ भी दोषरहित है, जो कुछ भी प्रसन्न करने वाला है, जो कुछ भी सराहने योग्य हो, जो कुछ भी अच्छा है, जो कुछ भी प्रशंसा के योग्य है
उसके विषय में सोचो: यही वे बातें हैं जिनके विषय में तुम को हमेशा विचार करना चाहिए। 9लगातार उन बातों को करते रहो जो मैंने तुम को सिखाईं और वह

बातें जिनको तुम ने मुझे कहते हुए सुना और वह बातें जो तुम ने मुझे करते हुए देखीं। यदि तुम इन बातों को करते हो, तो जो हमें शान्ति से रहने को प्रेरित करता
है वह परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। [10]मैं बहुत ही आनन्दित हूँ और प्रभु का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि अब, कुछ समय के बाद, {मेरे पास धन भेजने के द्वारा}
तुम ने एक बार फिर से दिखा दिया है कि तुम मेरे विषय में चिन्ता करते हो। सचमुच, तुम हर समय मेरे विषय में चिन्तित थे, परन्तु तुम को इसे प्रदर्शित करने का
अवसर नहीं मिला। [11]ऐसा मत सोचना कि मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं किसी ऐसी वस्तु की कमी के विषय में चिन्तित हूँ जिसकी मुझे आवश्यकता है।
बल्कि, मैंने सीख लिया है कि प्रसन्न कैसे रहना है, इससे फर्क नहीं पड़ता कि मैं किस दशा में हूँ। [12]मैंने सीख लिया है कि कैसे प्रसन्न रहना है जब मेरे पास वह
न हो जिसकी मुझे आवश्यकता है और कैसे प्रसन्न रहना है जब मेरे पास मेरी आवश्यकता से बढ़कर हो। मैंने सीख लिया है कि कैसे प्रसन्न रहना है जब मैं भूखा
हूँ और जब मेरे पास खाने के लिए बहुत सारा भोजन हो। मैंने सीख लिया है कि सभी परिस्थिति में और सारे समयों में कैसे प्रसन्न रहना है। [13]क्योंकि मसीह
मुझे सामर्थ्य प्रदान करता है, इसलिए मैं प्रत्येक दशा में अच्छे से प्रतिक्रिया देने में सक्षम हूँ। [14]फिर भी, तुम ने मेरी कठिन दशा में मेरी सहायता करने के लिए
सही काम किया। [15]हे फिलिप्पी में रहने वाले मेरे मित्रों, तुम स्वयं जानते हो कि उस समय के दौरान जब मैंने पहली बार तुम पर सुसमाचार की घोषणा की थी,
जब मैं वहाँ मकिदुनिया प्रान्त से बाहर निकला, तुम्हारे अलावा विश्वासियों की किसी मण्डली ने न तो मुझे कोई रकम भेजी या किसी रीति से मेरी सहायता की!
[16]यहाँ तक कि जब मैं थिस्सलुनीके नगर में था, तो जो मेरी आवश्यकताएँ थीं उनकी आपूर्ति के लिए एक बार से अधिक तुम ने मेरे पास धन भेजा। [17]मैं यह
इसलिए नहीं बोलता क्योंकि मैं इच्छा करता हूँ कि तुम मुझे धन दो। बजाए इसके, मैं इच्छा करता हूँ कि {तुम्हारे मेरी सहायता करने के परिणामस्वरूप} परमेश्वर
तुम को बहुतायत से प्रतिफल देगा। [18]तुम ने मुझे एक बहुत ही उदार भेंट दी है, और उसके परिणामस्वरूप, मेरे पास वह सब कुछ है और उससे अधिक है
जिसकी मुझे आवश्यकता है। जिसकी मुझे आवश्यकता है मेरे पास उसकी आपूर्ति बहुतायत में इसलिए है, क्योंकि तुम ने अपनी भेंट के साथ इपफ्रुदीतुस को
मेरे पास भेजा है। परमेश्वर समझता है कि तुम्हारी भेंट अत्यन्त स्वीकार्य है, और वह इससे बहुत प्रसन्न हुआ है। [19]परमेश्वर, जिसकी मैं सेवा करता हूँ, तुम्हारी
आवश्यकता की हर वस्तु की आपूर्ति इसलिए करेगा, क्योंकि तुम यीशु मसीह के हो और क्योंकि वह सब वस्तुओं का स्वामी है। [20]अब, हमारे परमेश्वर और
पिता की प्रशंसा और आदर सदा होता रहे! आमीन! [21]वहाँ के सभी परमेश्वर के लोगों को मेरे लिए नमस्कार करना। वे सभी यीशु मसीह के हैं। मेरे साथ के
विश्वासी भी तुम को नमस्कार करते हैं। [22]यहाँ के सभी परमेश्वर के लोग अपनी शुभकामनाएँ तुम को भेजते हैं। जो सम्राट कैसर के महल में काम करते हैं वे
संगी विश्वासी विशेष रूप से अपनी शुभकामनाएँ तुम को भेजते हैं। [23]मैं इच्छा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम सब के प्रति
लगातार दयापूर्वक बर्ताव करेगा। आमीन।

कुलुस्सियों

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, {तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ,} और हमारा संगी विश्वासी तीमुथियुस {मेरे साथ है}। परमेश्वर ने मसीह यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिए मुझे
इसलिए भेजा, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यही करने के लिए चुना था। 2{मैं यह पत्र भेज रहा हूँ} तुम को जो परमेश्वर के लोग हो और मसीह में एकजुट
विश्वासयोग्य संगी विश्वासी हो, और जो कुलुस्से {नगर में रहते हो}। परमेश्वर हमारा पिता और प्रभु यीशु मसीह तुम पर {लगातार} दयालु बने रहें और तुम्हें शान्ति
प्रदान करें। 3हम तुम्हारे लिए बहुत बार प्रार्थना करते हैं। {और जब-जब हम प्रार्थना करते हैं तो} हम हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर का धन्यवाद करते
हैं, 4{इसलिए क्योंकि} यह जानकर कि तुम मसीह यीशु पर भरोसा करते हो और यह कि तुम परमेश्वर के सब लोगों से प्रेम करते हो। 5{तुम इन कामों को
इसलिए करते हो} क्योंकि तुम भरोसे के साथ उन सब वस्तुओं की प्रतीक्षा कर रहे हो जिनको तुम्हारे लिए परमेश्वर ने स्वर्ग में रखा हुआ है। जो परमेश्वर के पास
तुम्हारे लिए है तुम ने पहले से ही उन सब के विषय में जान लिया था जब तुम ने उस सच्चे सन्देश को सुना, {जो कि} मसीह के विषय में शुभ सन्देश है। 6जैसे
{कुलुस्से में} तुम ने इस शुभ सन्देश को सुना और इस पर विश्वास किया, वैसे ही बहुत से स्थानों में बढ़ती हुई संख्या में लोग इसे सुन रहे हैं और इस पर विश्वास
कर रहे हैं। ये लोग इस समय पर अलग तरीके से जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जिस प्रकार से तुम भी उस समय अलग तरीके से जीवन व्यतीत कर रहे थे जब तुम
ने पहली बार {इसके विषय में} जाना और वास्तव में अनुभव किया कि {हमारे प्रति} परमेश्वर कैसे दयालु होकर कार्य करता है। 7यही था जो इपफ्रास ने तुम्हें
बताया था {कि घटित होगा}। वह हमारे साथ मसीह के लिए कार्य करता है, और हम उससे प्रेम करते हैं। वह हमारे प्रतिनिधि के रूप में विश्वासयोग्यता के साथ
मसीह की सेवा करता है। 8उसी ने हमें बताया कि तुम {परमेश्वर के सब लोगों से} प्रेम करते हो, जिस प्रकार से परमेश्वर के आत्मा ने {करने के लिए तुम्हें सशक्त
किया है}। 9जो इपफ्रास ने हमें बताया उन सब बातों के कारण, जब उसने हमें पहली बार {तुम्हारे विषय में} बताया, उस समय से हम तुम्हारे लिए लगातार
प्रार्थना करने में उसके साथ जुड़ गए। {जब-जब हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं तो} तुम पर उन सब बातों को प्रदर्शित करने के लिए हम परमेश्वर से विनती
करते हैं जो वह चाहता है कि तुम करो और जो परमेश्वर का आत्मा {तुम को सिखा रहा है} उन सब बातों को समझने में वह तुम्हें सक्षम {करे}। 10{हम प्रार्थना
कर रहे हैं कि तुम जान लो कि परमेश्वर क्या चाहता है} ताकि तुम ऐसे तरीके से जीवन को व्यतीत करो जिससे प्रभु का आदर होता है और हर तरीके से वह उसे
प्रसन्न करता है। {जब तुम इस तरीके से जीवन व्यतीत करते हो, तो तुम} हर तरह के अच्छे काम को करने पाओगे और लगातार परमेश्वर को बेहतर तरीके से
जान पाओगे। 11{जब तुम इस तरीके से जीवन को व्यतीत करते हो तो} सभी परिस्थितियों को धैर्यपूर्वक सहन करने में सक्षम होने के लिए, और आनन्द के
साथ ऐसा करने में सक्षम होने के लिए परमेश्वर तुम्हें अत्यन्त सामर्थ्य प्रदान करेगा। परमेश्वर तुम्हें अत्यन्त सामर्थ्य इसलिए प्रदान कर सकता है क्योंकि वह
प्रतापी रूप से शक्तिशाली है। 12{तब तुम हमारे परमेश्वर पिता का लगातार इसलिए} धन्यवाद करोगे, {क्योंकि} उसने तुम्हें उन सब बातों में भाग लेने के योग्य
बनाया है जो उसे अपने लोगों को तब देनी है जब वे उसके संग हों। 13परमेश्वर हमारे पिता ने हमें उस दुष्ट के हाथ से छुड़ा लिया है, जो हम पर नियंत्रण किया
करता था, और उसने हमें अपना पुत्र दे दिया, जिससे वह प्रेम करता है, ताकि अब हम उसके पुत्र का आज्ञापालन करें। 14क्योंकि हम उसके पुत्र के साथ
एकजुट हो गए हैं, इसलिए परमेश्वर ने हम को स्वतंत्र कर दिया है; {अर्थात,} उसने हमारे पापों को क्षमा कर दिया है। 15परमेश्वर के पुत्र ने उत्तमता के साथ
प्रकट किया है कि परमेश्वर कौन है, यद्यपि कोई परमेश्वर को देख नहीं सकता है। इससे पहले कि परमेश्वर ने किसी भी वस्तु की सृष्टि की, पुत्र अस्तित्ववान था,
और जिनकी सृष्टि परमेश्वर ने की उन सब वस्तुओं के ऊपर उसका प्रथम स्थान था। 16{तुम जान सकते हो कि किसी भी अन्य वस्तु के अस्तित्व में आने से पहले
ही पुत्र अस्तित्ववान था और सब वस्तुओं के ऊपर उसका प्रथम स्थान इसलिए था} क्योंकि पिता और पुत्र ने मिलकर जो कुछ अस्तित्व में है उन सब वस्तुओं की
सृष्टि की। {इसमें शामिल हैं} वह सब वस्तुएँ जो स्वर्ग में हैं और वह सब वस्तुएँ जो पृथ्वी पर हैं, और वह सब वस्तुएँ जिनको हम देख सकते हैं और वह सब
वस्तुएँ भी जिनको हम देख नहीं सकते, {आत्मिक प्राणियों समेत} जैसे कि सिंहासन, प्रभुत्व, शासक, और अधिकारी। पिता और पुत्र ने मिलकर सब वस्तुओं
की सृष्टि की, और सारी वस्तुएँ पुत्र का आदर करने के लिए अस्तित्ववान हैं। 17किसी भी रचना के अस्तित्व में आने से पहले ही पुत्र अस्तित्ववान था, और वही
इन सब को बनाए रखता है और जोड़ता है। 18कलीसिया {अर्थात, सभी विश्वासियों} के सम्बन्ध में, वह उस पर शासन करता है जैसे लोगों के सिर उनकी देहों
पर शासन करते हैं। {जब वह} मरने के बाद फिर से जी उठने वाला पहला व्यक्ति था {कि फिर कभी न मरे} तो उसने कलीसिया के लिए यह आरम्भ करना
सम्भव किया। उसके विषय में इन बातों के कारण, वह किसी भी वस्तु से और अन्य किसी भी जन से बड़ा और अधिक महत्वपूर्ण है। 19{पुत्र सारी वस्तुओं पर
शासन इसलिए करता है} क्योंकि पुत्र ही पूर्णतः परमेश्वर है, जिस प्रकार से पिता ने आनन्दपूर्वक उसके होने की इच्छा की थी। 20{परमेश्वर पिता ने} भी पुत्र के
माध्यम से {आनन्दपूर्वक काम करने का चुनाव किया} ताकि सम्पूर्ण जगत की सारी वस्तुओं {और हर एक मनुष्य जिसकी उसने सृष्टि की} उनका स्वयं से
मेलमिलाप करवाए। जिस समय उसका पुत्र क्रूस पर मरा, तब अपने पुत्र के माध्यम से {परमेश्वर ने ऐसा किया}, जिसने परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच में
सारी बातों में शान्ति स्थापित की। 21इससे पहले कि {तुम ने मसीह पर विश्वास किया}, तुम ने {परमेश्वर के} निकट आना नहीं चाहा था, और तुम {उसके}
विरोधी थे क्योंकि जो कुछ भी तुम ने सोचा और किया वह बुरा था। 22परन्तु अब {यह पूर्ण रूप से बदल गया है} {कि तुम यीशु पर विश्वास करते हो!} जब
उसका पुत्र मनुष्य बना और मर गया तो अपने पुत्र के माध्यम से {काम करने के द्वारा} तुम्हारे और अपने बीच के सम्बन्ध की परमेश्वर पिता ने मरम्मत कर दी है।
{परमेश्वर पिता ने उस सम्बन्ध की मरम्मत कर दी} ताकि तुम उसके साथ उन लोगों के समान रह सको जो पाप से पूर्णरूप से स्वतंत्र हैं। 23{तुम्हारे विषय में यह
पूर्णतः सत्य है} जब तक तुम भरोसे के साथ {मसीह पर} विश्वास करना जारी रखो, और जब तक तुम भरोसे के साथ {परमेश्वर से वह करने की} आशा करना
छोड़ न दो {जिसकी उसने शुभ सन्देश में प्रतिज्ञा की है} जिसे तुम ने सुना है और जिसे सम्पूर्ण संसार के लोगों ने भी सुना है। मैं, पौलुस, उसी शुभ सन्देश का
{लोगों पर प्रचार करने के द्वारा} परमेश्वर की सेवा करता हूँ। 24वर्तमान समय में मैं आनन्द के साथ इसलिए दुःख उठाता हूँ {क्योंकि यह} तुम्हारे लाभ के लिए
है। मैं शारीरिक रूप से दुःख उठाता हूँ ताकि दुःख उठाने के {अपने हिस्से को} पूरा करूँ जिसे मसीह ने {अपने लोगों,} अर्थात कलीसिया के लिए आरम्भ किया,
जो मसीह की स्वयं की देह के समान है। 25परमेश्वर ने मुझे उसकी कलीसिया की सेवा करने के लिए बुलाया, और उसने {विशेष रूप से} मुझे उसकी उस

योजना को पूरा करने के लिए नियुक्त किया जो तुम्हारे विषय में है। {इस योजना में मेरा हिस्सा है} परमेश्वर की ओर से आए सम्पूर्ण सन्देश का {तुम गैर-यहूदियों पर} प्रचार करना। 26एक लम्बे समय तक इसे लोगों से छिपाए रख कर, परमेश्वर ने इस सन्देश को गुप्त रखा, परन्तु अब उसने इस सन्देश को अपने लोगों पर उजागर कर दिया है। 27परमेश्वर अपने लोगों को यह बहुत ही उत्तम सन्देश बताना चाहता था जो गुप्त था, जो गैर-यहूदियों पर {और साथ ही साथ यहूदियों पर भी} लागू होता है। रहस्य यह है कि मसीह तुम {गैर-यहूदियों} के साथ एकजुट हो गया है, जिसका अर्थ है कि तुम भरोसे के साथ मसीह के समान तेजस्वी प्राणी बनने की आशा कर सकते हो। 28{यह वही मसीह है} जिसका हम {सब लोगों पर} प्रचार करते हैं। {जब हम उसके विषय में बात करते हैं तो} जितना हम कर सकते हैं हम हर एक व्यक्ति को बुद्धिमानी से चेतावनी देते हैं और सिखाते हैं। {हम इन कामों को इसलिए करते हैं} ताकि इन लोगों में से एक-एक जन मसीह के साथ प्रत्येक व्यक्ति की एकता में आत्मिक रूप से परिपक्व हो जाए। 29जो कुछ भी मैं करता हूँ उसमें मैं कठिन परिश्रम करता हूँ ताकि उस लक्ष्य को पूरा करूँ। {मैं ऐसा इसलिए कर सकता हूँ} क्योंकि मसीह मुझे शक्तिशाली रूप से इसे करने के लिए सक्षम कर रहा है।

Chapter 2

1{मैं इन बातों को इसलिए लिख रहा हूँ} क्योंकि मैं तुम को इस विषय में सूचित करना चाहता हूँ कि मैं कितना कठिन परिश्रम कर रहा हूँ। {मैं कठिन परिश्रम करता हूँ} तुम्हारे लिए, उन संगी विश्वासियों के लिए जो लौदीकिया {नगर} में रहते हैं, और उन सब संगी विश्वासियों के लिए जो मुझ से शारीरिक रूप से नहीं मिले हैं। 2{मैं इतना कठिन परिश्रम इसलिए करता हूँ} ताकि तुम सब को प्रोत्साहित करूँ {जो मुझ से मिले भी नहीं हैं} जिससे कि तुम एक दूसरे के लिए प्रेम के साथ आपस में एकजुट हो जाओ। {मैं चाहता हूँ} कि तुम पूर्णरूप से और भरोसे के साथ उस रहस्य को समझ जाओ जिसे परमेश्वर ने बीते समय में छिपा रखा था। {यह रहस्य} मसीह के विषय में है। 3यह रहस्य {जो कि मसीह है,} बुद्धिमानी की सोच समेत अपने भीतर हर उस बात को समाहित करता है जो कि मूल्यवान है। 4मैं तुम को इस रहस्य के विषय में इसलिए बता रहा हूँ ताकि कोई व्यक्ति जो दृढ़तापूर्वक तर्क करता है वह तुम को उस बात पर विश्वास करने के लिए मजबूर न करे जो सत्य नहीं है। 5{तुम जान सकते हो कि जो दृढ़तापूर्वक तर्क करते हैं वे इसलिए गलत हैं} क्योंकि मैं तुम्हारी परवाह करता हूँ और तुम्हारे विषय में सोचता हूँ, भले ही मैं तुम्हारे साथ शारीरिक रूप में नहीं हूँ। मैं यह देख कर अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि तुम सही रीति से व्यवहार करते हो और यह कि तुम स्थिरता के साथ मसीह पर विश्वास करते हो। 6अब {जो सत्य मैंने तुम को शुभ सन्देश के विषय में और मेरे विषय में बताया था}, मैं चाहता हूँ कि तुम इस रीति से व्यवहार करो जो इस बात से मेल खाता हो कि परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ कैसे जोड़ा है। तुम को वैसा ही व्यवहार करते रहना चाहिए जैसा तुम ने तब किया था जब तुम ने मसीह यीशु को प्रभु ग्रहण किया था। 7{इस रीति से व्यवहार करने में सम्मिलित है} स्थिरतापूर्वक उसके साथ एकजुट बने रहना, जिस प्रकार से पौधे की जड़ें भूमि में उसे स्थिरतापूर्वक पकड़े रहती हैं। इसमें उस पर पूर्णरूप से आश्रित रहना {भी सम्मिलित है}, जिस प्रकार से कोई घर अपनी नींव पर खड़ा रहता है। इसमें विश्वासपूर्वक मसीह पर भरोसा रखना {भी सम्मिलित है}, जिस प्रकार से इपफ्रास ने तुम को सिखाया, और अधिकाधिक धन्यवाद करते रहो। 8सतर्क रहो ताकि कोई भी जन जो तुम्हें सत्य से दूर ले जाने का प्रयास करे वह सफल न हो। जो कोई भी तुम्हें दूर ले जाने का प्रयास करता है वह ऐसी मानवीय सोच का उपयोग करेगा जो अर्थहीन और भ्रामक है। {ऐसा झूठा सन्देश वहाँ से आता है} जो पुरानी पीढ़ी युवा पीढ़ी को सिखाती है और वहाँ से जो मनुष्य सामान्य रूप से संसार के विषय में सोचते हैं, न कि मसीह की ओर से। 9{मैं मसीह का उल्लेख इसलिए करता हूँ} क्योंकि वह, एक मनुष्य, पूर्णरूप से परमेश्वर है। 10इसके अतिरिक्त, तुम्हारे पास वह सब कुछ है जिसकी तुम्हें आवश्यकता है जब से परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ एकजुट कर दिया है, जो प्रत्येक शासक और प्रत्येक अधिकारी {समेत, आत्मिक प्राणियों} पर शासन करता है। 11जब परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ एकजुट किया, तो यह ऐसा था जैसे कि परमेश्वर पिता ने तुम्हारा खतना कर दिया हो। मेरा अर्थ यह नहीं कि कोई मनुष्य शारीरिक रूप से तुम्हारे मांस को काटकर निकाल दे। {बल्कि, मांस को काट देने के बजाए,} परमेश्वर ने तुम्हारे निर्बल और पापी अंगों को हटा दिया। जो मसीह ने पूरा कर दिया उसके माध्यम से {परमेश्वर ने} {इस रीति से तुम्हारा} खतना किया। 12{यहाँ यह समझने का एक और तरीका है कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए क्या किया है:} जब उन्होंने तुम्हें बपतिस्मा दिया, तो यह ऐसा था कि जैसे {तुम मर गए और} लोगों ने तुम को दफना दिया {क्योंकि परमेश्वर पिता ने तुम्हें उसमें सम्मिलित किया} जब {मसीह की मृत्यु हो गई और} लोगों ने उसे दफना दिया था। और यह ऐसा था मानो परमेश्वर पिता ने तुम्हें फिर से जीवित कर दिया {क्योंकि उसने तुम्हें उसमें सम्मिलित किया} जब उसने मसीह को फिर से जीवित किया था। {यह इसलिए घटित हुआ} क्योंकि तुम विश्वास करते थे कि परमेश्वर पिता शक्तिशाली रूप से कार्य करता है, विशेष करके जब उसने मसीह को फिर से जीवित कर दिया था। 13तुम तो आत्मिक रूप से मरे हुए थे, क्योंकि तुम ने {अक्सर} परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था और क्योंकि तुम गैर-यहूदी थे {और परमेश्वर के लोगों का भाग नहीं थे}। परन्तु परमेश्वर पिता ने तुम्हें आत्मिक रूप से फिर से जीवित इसलिए कर दिया {क्योंकि उसने तुम्हें उसमें सम्मिलित कर दिया} जब उसने मसीह को फिर से जीवित किया था। {इसका अर्थ है कि} उसने हमें उन सब गलत बातों के लिए क्षमा कर दिया है जो हम ने उसके विरोध में की थीं। 14यह ऐसा था कि जैसे परमेश्वर के पास उन कर्जों की आधिकारिक सूची थी जो हम पर बकाया थे, {जो कि हमारे पाप हैं}। {जब उसने हमें क्षमा कर दिया तो,} उसने पापों की उस सूची को मिटा दिया जो हमारे विरोध में गिने गए थे, और उसने इसे हमारे और उसके मध्य में आने से रोक दिया। परमेश्वर ने इसे तब पूरा किया जब {मसीह क्रूस पर मरा, इस निश्चितता के साथ जैसे कि} उसने उस सूची को क्रूस पर जड़ दिया। 15इसके अलावा, परमेश्वर ने उन आत्मिक प्राणियों को पराजित कर दिया जो संसार पर शासन करते हैं, और उसने सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित कर दिया {कि उसने उनको पराजित कर दिया है}, जैसे कि उसने बन्दियों के समान उनका चारों ओर जुलूस निकलवाया। {परमेश्वर ने यह तब किया जब मसीह} क्रूस पर मरा। 16इन बातों के कारण {जिनको परमेश्वर ने तुम्हारे लिए किया}, उस विषय में चिन्ता मत करना जो अन्य लोग कहते हैं कि तुम्हें करना चाहिए। इस विषय में {उनके अपने मत हो सकते हैं} कि क्या खाना है और क्या पीना है। {इस विषय में उनके अपने मत हो सकते हैं कि} किन विशेष दिनों को मानना है, परमेश्वर की आराधना करने के दिन, उत्सव मनाने के दिन जब नया चाँद होता है, या विश्राम करने के दिनों समेत। 17{परमेश्वर ने} इन वस्तुओं का यह इंगित करने {के लिए उपयोग किया} कि उसने भविष्य के लिए क्या योजना बनाई है, जो कि स्वयं मसीह का आगमन है। 18{तुम कुछ ऐसे लोगों से मिलोगे} जो विनम्र होने का ढोंग करने में आनन्दित होते हैं और स्वर्गदूतों की उपासना करते हैं और जो उन {अद्भुत} वस्तुओं के विषय में बातें करना पसन्द करते हैं जो उन्होंने देखी हैं। वे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि वे महान हैं—यद्यपि किसी भले कारण के बिना, क्योंकि वे केवल मानवीय रीति से सोचते हैं। ऐसे लोगों की मत सुनना जो उसे छीनने का प्रयास कर रहे हैं जो परमेश्वर ने तुम्हें देने के लिए तैयार कर रखा है। 19{ये लोग} मसीह के प्रति वफादार नहीं रहे हैं। वही है जो कलीसिया का नेतृत्व करता है, ठीक वैसे ही जैसे लोगों के सिर उनकी देहों का नेतृत्व करते हैं। सिर निर्देशित करता है कि कैसे पूरी देह को, एक-एक अंग को वह प्राप्त हो जिसकी उसे आवश्यकता होती है और

यह कैसे एक साथ काम करती है। इसी तरह से देह का विकास होता है। ठीक उसी तरह, मसीह कलीसिया को निर्देशित करता है ताकि वह वैसे ही बढ़े जैसे परमेश्वर चाहता है कि वह बढ़े। [20]यह ऐसा है जैसे कि तुम मर गए हो, {क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें उसमें सम्मिलित कर दिया} जब मसीह मर गया था। {यह तुम्हें स्वतंत्र करता है} उन आत्मिक प्राणियों से जो इस संसार पर शासन करते हैं। इसलिए, तुम्हें उन नियमों का पालन नहीं करना चाहिए {जो इन लोगों ने तुम्हें दिए हैं}। {ऐसा करने का अर्थ होगा कि} तुम वास्तव में अभी भी इस संसार का हिस्सा हो। [21]{इन नियमों में इस तरह के आदेश शामिल हैं:} "{कुछ वस्तुओं को} महसूस मत करो!" "{कुछ खाने की वस्तुओं का} स्वाद मत लो!" "{कुछ वस्तुओं} को मत पकड़ो!" [22]ऐसे सभी नियम उन वस्तुओं से सम्बन्धित हैं जो तब नष्ट हो जाती हैं जब लोग उनका उपयोग करते हैं। इससे हटकर, {परमेश्वर नहीं, परन्तु} लोग {इन नियमों को} सिखाते हैं और इनकी माँग करते हैं। [23]इन नियमों का पालन करना उन लोगों के लिए बुद्धि की बात जान पड़ती है जो परमेश्वर की आराधना वैसे करते हैं जैसे वे चाहते हैं, जो विनम्र होने का ढोंग करते हैं, और जो अपनी देहों के साथ {उनके धर्म के भाग के रूप में} बुरे तरीके से बर्ताव करते हैं। हालाँकि, {इन नियमों का पालन करना भी} पाप करने से रुक जाने में तुम्हारी सहायता नहीं करेगा।

Chapter 3

[1]{जो मैंने पहले कहा था उसी पर} वापस लौटते हुए, यह ऐसा है कि जैसे परमेश्वर ने तुम्हें फिर से जीवित इसलिए कर दिया {क्योंकि उसने तुम्हें उसमें सम्मिलित कर दिया} जब उसने मसीह को फिर से जीवित कर दिया था। {इस कारण से,} मैं चाहता हूँ कि जो वस्तुएँ स्वर्ग में है तुम उस पर ध्यान लगाए रहो, क्योंकि मसीह वहीं पर है। वह परमेश्वर पिता के बगल में सिंहासन पर बैठा हुआ है {और सारी वस्तुओं पर शासन करता है}। [2]मैं चाहता हूँ कि तुम उस वस्तु की इच्छा करो जो स्वर्ग में {परमेश्वर ने तुम्हारे लिए तैयार कर रखी है}, उस वस्तु की नहीं जो तुम पृथ्वी पर {यहाँ प्राप्त कर सकते हो}। [3]{तुम्हें इस रीति से इसलिए सोचना चाहिए} क्योंकि यह ऐसा है कि जैसे तुम मर गए हो। तुम आत्मिक रूप से केवल इसलिए जीवित हो क्योंकि परमेश्वर ने अपने साथ घनिष्ठ सम्बन्ध में तुम्हें मसीह के साथ एकजुट कर दिया है, और {इस समय पृथ्वी पर} इसे देखा नहीं जा सकता। [4]तुम इसलिए जीवित हो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ एकजुट कर दिया है। {इसलिए,} जब {वह पृथ्वी पर वापस लौटे और} हर एक जन उसे देखे, तो उस समय पर तुम उसके साथ होओगे। तब, हर एक जन देखने पाएगा कि तुम भी {उसके समान} तेजस्वी प्राणी बन गए हो। [5]क्योंकि {यही तुम्हारा भविष्य है}, इसलिए इस संसार में बुरे काम करने की इच्छाओं को शत्रु के समान समझो जिन्हें तुम्हें मारना ही है। {तुम जिन बुरे कामों की इच्छा कर सकते हो उनमें सम्मिलित हैं} अनुचित यौन-सम्बन्ध बनाना, अशुद्ध कार्य करना, गलत भावनाओं का आनन्द लेना, बुरे कामों की इच्छा करना, और जो तुम्हारी आवश्यकता है उससे अधिक चाहना, जो किसी दूसरे ईश्वर की उपासना करने के समान है। [6]क्योंकि लोगों में ये इच्छाएँ होती हैं, इसलिए परमेश्वर उन पर क्रोधित है और उन्हें दण्ड देगा। [7]उनकी ही तरह, तुम भी बुरे कामों को करने की इन इच्छाओं को रखते थे। {वह उस समय था} जब तुम ने इन इच्छाओं को पूरा किया। [8]परन्तु अब {जबकि तुम ने विश्वास किया है}, तुम्हें सब बुरे तरीकों से बर्ताव करना बन्द कर देना चाहिए। {इन बुरे तरीकों में सम्मिलित हैं} क्रोधित तरीकों से कार्य करना, दूसरों पर क्रोधित होना, दूसरों को चोट पहुँचाने की इच्छा रखना, दूसरों के बारे में बुरा बोलना और शर्मनाक बातों को बोलना। [9]तुम्हें एक दूसरे से झूठ नहीं बोलना चाहिए। तुम वह व्यक्ति नहीं हो जो तुम हुआ करते थे, एक ऐसा व्यक्ति जिसने सामान्य रूप से इन बुरे तरीकों से व्यवहार किया था। [10]अब तुम एक नए व्यक्ति हो, {ऐसा व्यक्ति} जिसमें परमेश्वर कार्य कर रहा है कि तुम्हें ऐसा बनाए कि तुम उसे और अधिक जानो। {तुम अब ऐसे व्यक्ति हो} जो परमेश्वर के समान है, जिसने तुम्हें इस नए व्यक्ति में बदल दिया है। [11]चूँकि {तुम बिलकुल नए लोग हो}, {यह महत्वपूर्ण नहीं है कि} चाहे कोई जन गैर-यहूदी है या यहूदी, या चाहे किसी का खतना हुआ हो या नहीं, या चाहे कोई विदेशी या असभ्य व्यक्ति है, या चाहे कोई दास है या नहीं। बजाए इसके, यह मसीह ही है जो सबसे महत्वपूर्ण है, और परमेश्वर ने उसे {तुम} सभी के साथ एकजुट किया है। [12]परमेश्वर ने तुम्हें चुना है, उसने तुम्हें अपने लोगों के रूप में अलग किया है, और वह तुम से प्रेम करता है। इन बातों के कारण और क्योंकि {तुम नए लोग हो}, तुम्हें हमेशा {दूसरों के प्रति} उचित व्यवहार करना चाहिए। {इसमें सम्मिलित है} उनकी परवाह करना, उनके प्रति दयालु होना, गर्व न करना, कठोर व्यवहार न करना और क्रोधित होने में लम्बा समय लेना। [13]तुम्हें आसानी से एक दूसरे से चिढ़ना नहीं चाहिए। जब तुम अन्य लोगों पर उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए दोष लगाते हो, तो तुम्हें उनको क्षमा कर देना चाहिए। तुम्हें {एक दूसरे को क्षमा करने के द्वारा} इसका अनुकरण करना चाहिए कि प्रभु ने तुम्हें कैसे क्षमा किया। [14]अन्त में, अब तक हर एक बात जो {मैंने कही} उससे अधिक महत्वपूर्ण {जो है}, वह यह है कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो। ऐसा करने के द्वारा तुम स्वयं को साथ में एकजुट कर लोगे, जैसा परमेश्वर ने तुम्हें करने के लिए बुलाया है। [15]तुम्हें उस शान्ति को स्थापित करना चाहिए जिसे मसीह ने तुम्हें ऐसे प्राथमिक कारक के रूप में तब दिया है जब तुम चुनाव करते हो कि क्या करना है। {तुम्हें यह अवश्य ही करना चाहिए} क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें शान्ति के लिए चुना है जब वह तुम्हें एक साथ समीपता में जोड़ता है, इतनी समीपता में जैसे कि तुम एक व्यक्ति की देह थे। साथ ही, तुम्हें परमेश्वर का धन्यवाद भी करना चाहिए। [16]जब तुम सोचते हो और कार्य करते हो, तो तुम्हें पूरी तरह से मसीह के बारे में सन्देश पर ध्यान देना चाहिए। तुम्हें एक दूसरे को पवित्रशास्त्र के गीतों, यीशु के बारे में गीतों और पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हें दिए गए गीतों का उपयोग करके बहुत बुद्धिमानी से सिखाना और निर्देश देना चाहिए। तुम्हें धन्यवाद के साथ और ईमानदारी से परमेश्वर के लिए गाना चाहिए। [17]जब भी तुम कुछ कहते या करते हो, तो हर स्थिति में {तुम्हें उन लोगों के समान व्यवहार करना चाहिए} {जो} प्रभु यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। साथ ही, तुम्हें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, {जो हमारा} पिता है। केवल मसीह के {कामों के} कारण {तुम ऐसा कर सकते हो}। [18]पत्नियों को अपने पतियों के साथ {अपने परिवारों के} अगुवों के रूप में व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि यह उनके लिए उपयुक्त व्यवहार है जिन्हें परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है। [19]पतियों को भी अपनी पत्नियों से प्रेम रखना चाहिए और उनके साथ कठोरता से व्यवहार नहीं करना चाहिए। [20]बच्चों को हर परिस्थिति में अपने माता-पिता का आज्ञापालन करना चाहिए। यह परमेश्वर को प्रसन्न करता है और उनके लिए {उपयुक्त है} जिन्हें परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है। [21]पिताओं को अपने बच्चों को क्रोधित नहीं करना चाहिए। अन्यथा, बच्चे हार मान जाना महसूस कर सकते हैं। [22]दासों को उनका आज्ञापालन करना चाहिए जो इस संसार में हर परिस्थिति में उनके स्वामी हैं। {उन्हें आज्ञापालन करना चाहिए} न केवल तब जब उनके स्वामी देख रहे हों, जो केवल मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहते हैं वे इसी तरह से व्यवहार करते हैं। बजाए इसके, {उन्हें अपने स्वामियों का आज्ञापालन इसलिए} ईमानदारी से करना चाहिए क्योंकि वे प्रभु के साथ श्रद्धापूर्वक व्यवहार करते हैं। [23]तुम्हें जो भी काम करना है उसे पूरी लगन से करो, जैसे कि केवल मानवीय स्वामियों के बजाए तुम प्रभु के लिए {काम कर रहे हो}। [24]{तुम्हें इस रीति से आज्ञापालन और सेवा इसलिए करनी है} क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें वह देने के द्वारा प्रभु

न्यायपूर्वक तुम्हें उसका भुगतान करेगा, जो उसने तुम्हारे लिए रखा हुआ है। {स्मरण रखो कि} प्रभु मसीह उनका {सच्चा स्वामी} है जिनके लिए तुम काम कर रहे हो। 25{तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि सच्चा स्वामी कौन है} क्योंकि जो कोई भी गलत करता है, उन गलत कामों के अनुपात में परमेश्वर उसे सजा देगा। {ऐसा इसलिए है क्योंकि} परमेश्वर लोगों का आंकलन इस आधार पर नहीं करता कि वे कैसे दिखते हैं या वे कौन हैं, परन्तु इस पर कि उन्होंने क्या किया है।

Chapter 4

1स्वामियों को अपने दासों के साथ न्यायपूर्ण और निष्पक्ष व्यवहार करना चाहिए। {तुम जो स्वामी हो यह अवश्य ही करो} क्योंकि तुम जानते हो कि तुम भी एक स्वामी की सेवा करते हो, {वह जो स्वर्ग में है}। 2लगातार {परमेश्वर से} प्रार्थना करो। प्रार्थना करते समय ध्यान लगाओ, और {परमेश्वर का} धन्यवाद करो। 3जब तुम प्रार्थना करते हो, तो हमारे लिए भी प्रार्थना करो। {प्रार्थना करो} कि परमेश्वर हमारे लिए हमारे सन्देश को स्वतंत्र रूप से प्रचार करना सम्भव बनाए, जो कि मसीह के बारे में रहस्य है जिसे अब हम दूसरों के साथ साझा करते हैं। क्योंकि इस सन्देश का {हम ने प्रचार किया था इसलिए}, मैं इस समय पर बन्दीगृह में हूँ।
4{प्रार्थना करो} कि मैं सुसमाचार को स्पष्ट रूप से समझाने में सक्षम होऊँ, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे ऐसा करने के लिए ही बुलाया है। 5आसपास के उन लोगों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो जो मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। हर अवसर का लाभ उठाओ {तुम्हें यह करना ही है}। 6{जब तुम उनसे बातें करते हो,} तो तुम्हें हमेशा सुखद और रोचक तरीके से बोलना चाहिए। {जब तुम ऐसा करते हो,} तो तुम प्रत्येक व्यक्ति को उत्तर देने का सबसे अच्छा तरीका जान जाओगे।
7तुखिकुस तुम्हें वह सब कुछ बता देगा जो मेरे साथ हो रहा है। {वह} एक ऐसा संगी विश्वासी है जिससे मैं प्रेम करता हूँ, जो विश्वासयोग्यता के साथ मेरी सहायता करता है, और जो मेरे साथ एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सेवा करता है जिसे परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है। 8{इस पत्र के साथ} मैं तुखिकुस को तुम्हारे पास इसलिए भेज रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हम किस हाल में हैं और क्योंकि तुखिकुस आत्मविश्वास से जीवन व्यतीत करने में तुम्हारी सहायता करेगा। 9{मैं उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ} उनेसिमुस के साथ, जो एक विश्वासयोग्य संगी विश्वासी है जिससे मैं प्रेम करता हूँ। वह तुम्हारे ही समूह से है। तुखिकुस और उनेसिमुस तुम्हें यहाँ {जो हो रहा है} उसके बारे में सब कुछ बताएँगे। 10अरिस्तर्खुस, जो मेरे साथ बन्दीगृह में है, और मरकुस, जो बरनबास का चचेरा भाई है, तुम्हें अपना अभिवादन भेजते हैं। तुम पहले से ही जानते हो कि तुम्हें मरकुस का स्वागत करना है यदि वह तुम से मिलने के लिए आता है। 11यीशु भी, जिसे तुम यूस्तुस के नाम से जानते होगे, {अपना अभिवादन भेजता है}। ये पुरुष {—अरिस्तर्खुस, मरकुस, और यूस्तुस—} ही केवल ऐसे यहूदी विश्वासी हैं जो परमेश्वर के राज्य की खातिर मेरे साथ काम कर रहे हैं। उन्होंने मुझे {इस काम में} प्रोत्साहित किया है। 12इपफ्रास, जो तुम्हारे ही समूह से है {और} जो मसीह यीशु की सेवा करता है, तुम्हें अपना अभिवादन भेजता है। वह तुम्हारे लिए बहुत बार ईमानदारी से प्रार्थना करता है। {वह प्रार्थना करता है} कि परमेश्वर तुम्हें वह बनने के योग्य करे जो होने के लिए परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया है और वह सब कुछ सुनिश्चित करने के लिए जो परमेश्वर चाहता है {कि तुम करो}। 13{तुम जानते हो कि वह तुम्हारे लिए इस रीति से इसलिए प्रार्थना करता है} क्योंकि मैं व्यक्तिगत रूप से उसके बारे में इस बात की पुष्टि कर सकता हूँ। {मैं तुम्हें बताता हूँ} कि वह तुम्हारे लिए, तथा उन लोगों के लिए जो लौदीकिया नगर में {रहते हैं}, और उन लोगों के लिए जो हियरापुलिस नगर में {रहते हैं} बहुत कठिन परिश्रम करता है। 14वैद्य लूका, जिससे मैं प्रेम करता हूँ, और देमास तुम्हें अपना अभिवादन भेजते हैं। 15जो लौदीकिया में रहते हैं उन संगी विश्वासियों को, नुमफास को, और विश्वासियों के उस समूह को जो नुमफास के घर में {मिलता है} हमारा अभिवादन देना। 16जो व्यक्ति इस पत्र को तुम्हारे लिए पढ़ता है, उसके इसे समाप्त कर लेने के बाद, {इसे लौदीकिया को} भेज देना ताकि कोई इसे वहाँ के विश्वासियों के समूह के लिए भी पढ़ सके। साथ ही, वह पत्र {माँग लेना} जो मैंने लौदीकिया में रहने वाले विश्वासियों को भेजा था ताकि उसे तुम भी पढ़ सको। 17{तुम्हें अवश्य ही} अरखिप्पुस को यह सुनिश्चित करने के लिए बोलना है कि वह उस कार्य को पूरा करे जो परमेश्वर ने उसे तब करने के लिए दिया था जब परमेश्वर ने उसे मसीह के साथ एकजुट किया था। 18मैं, पौलुस, अपना अभिवादन {तुम्हें} भेजता हूँ। {मेरे लिखने वाले से इन्हें लिखवाने के बजाए} मैं {ये अन्तिम शब्द} स्वयं लिख रहा हूँ। तुम्हें यह नहीं भूलना है कि मैं बन्दीगृह में हूँ। {मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर} तुम पर दयालु बना रहे।

1 थिस्सलुनीकियों

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, {इस पत्र को लिख रहा हूँ}। सीलास और तीमुथियुस {मेरे साथ हैं। हम इस पत्र को भेज रहे हैं} {तुम} मसीह में पाई जाने वाली थिस्सलुनीके नगर
की विश्वासियों की मण्डली को, जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह के साथ जुड़ गए हैं। {परमेश्वर तुम पर लगातार} कृपा करे और तुम्हें शान्ति प्रदान करे।
2हम बहुत बार तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं। {और जब हम करते हैं, तो} तुम सब के लिए हम सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। 3हमारे परमेश्वर और पिता
का हम उस काम के लिए धन्यवाद करते हैं जिसे तुम इसलिए करते हो क्योंकि तुम {उस पर} भरोसा करते हो। हम उस तरीके के लिए भी उसका धन्यवाद करते
हैं जिससे तुम ऊर्जापूर्ण रूप से लोगों की सहायता इसलिए करते हो क्योंकि तुम {उनसे} प्रेम करते हो। हम उस तरीके के लिए भी उसका धन्यवाद करते हैं
जिससे तुम धीरज के साथ इसलिए सह लेते हो क्योंकि तुम भरोसे के साथ हमारे प्रभु यीशु मसीह पर {अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की} आशा लगाए रहते
हो। 4हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, {हम परमेश्वर का इसलिए भी धन्यवाद करते हैं क्योंकि} हम जानते हैं कि वह तुम से प्रेम करता है,
और {उसके लोग होने के लिए} तुम्हारा चुनाव करता है। 5{हम जानते हैं कि परमेश्वर तुम्हारा चुनाव इसलिए करता है,} क्योंकि जिस समय हम ने {यीशु के
विषय में} तुम्हें शुभ सन्देश बताया, तो वह केवल वचनों के साथ ही नहीं था, परन्तु पवित्र आत्मा ने भी सामर्थी रूप से {हमारे माध्यम से} कार्य किया। उसने
दृढ़तापूर्वक हमें सुनिश्चित किया {कि उसने तुम्हें चुन लिया था}। उसी रीति से, तुम जानते हो कि हम किस प्रकार के मनुष्य हैं, क्योंकि जब हम तुम्हारे साथ थे,
तो जो कुछ भी हम ने किया वह तुम्हारे लाभ के लिए ही था। 6जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम वैसे ही जीवन व्यतीत करने लगे जैसे हम करते हैं और जैसे प्रभु
(यीशु) ने व्यतीत किया था। जब तुम ने {शुभ समाचार के} सन्देश पर विश्वास किया, तो लोगों ने तुम्हें इसलिए पीड़ित किया {क्योंकि तुम ने ऐसा किया था।
परन्तु भले ही तुम पीड़ित थे,} तौभी पवित्र आत्मा ने तुम्हें आनन्दित किया। 7क्योंकि सम्पूर्ण मकिदुनिया और अखाया के प्रान्तों में रहने वाले उन सब लोगों ने
जो {मसीह पर} भरोसा करते हैं यह सुना {कि जिस समय लोगों ने तुम्हें पीड़ित किया तब तुम कैसे आनन्दित बने रहे}, तो उन्होंने भी तुम्हारी ही तरह जीवन
व्यतीत करना चाहा। 8वास्तव में, बहुत से लोगों ने तुम्हें प्रभु {यीशु} के विषय में सन्देश बताते हुए सुना है। तब उन्होंने भी उस सन्देश की उन दूसरे लोगों पर
घोषणा की जो सम्पूर्ण मकिदुनिया और अखाया के प्रान्तों में रहते हैं। यहाँ तक कि इससे भी बढ़कर, बहुत से दूर-दराज वाले स्थानों में रहने वाले लोगों ने भी
इस विषय में सुना है कि तुम परमेश्वर पर कैसे भरोसा करते हो। इसके परिणामस्वरूप, हमें लोगों को कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है {उस विषय में जो
परमेश्वर ने तुम्हारे लिए किया है}। 9यही लोग {जो तुम से बहुत दूर रहते हैं} {दूसरों को} इस विषय में बता रहे हैं कि कैसे तुम ने {गर्मजोशी से} हमारा स्वागत
किया। वे {दूसरों को} यह भी बता रहे हैं कि तुम ने झूठे देवताओं की {प्राणरहित} मूरतों की उपासना करना बन्द कर दिया है ताकि तुम जीवित परमेश्वर की
आराधना कर सको और उसकी आज्ञाओं का पालन कर सको। वही {एकमात्र} सच्चा परमेश्वर है। 10{वे} {दूसरों को यह भी बता रहे हैं कि तुम ने झूठे देवताओं
की उपासना करना बन्द कर दिया है} ताकि तुम उत्सुकता के साथ परमेश्वर के पुत्र यीशु के स्वर्ग से {पृथ्वी पर वापस आने की} प्रतीक्षा कर सको। {जैसा कि तुम
जानते हो,} परमेश्वर ने यीशु को उसके मर जाने के पश्चात फिर से जिलाया, और वह यीशु ही है जो हम को {जो उस पर विश्वास करते हैं} उस समय बचाएगा
जब परमेश्वर लोगों को {उनके पापों के लिए} दण्ड देगा।

Chapter 2

1हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, तुम अच्छे से जानते हो कि जो समय हम ने तुम्हारे साथ व्यतीत किया वह कितना फलदायी था। 2जैसा
कि तुम जानते हो, फिलिप्पी नगर में रहने वाले लोगों ने पहले हमें पीड़ित किया और हमारे साथ दुर्व्यवहार किया, परन्तु हमारे परमेश्वर ने तुम्हें उसका शुभ
सन्देश बताने के लिए हमें निडर बनाया, इसके बावजूद कि हम ने कितना कठिन संघर्ष किया {उनके विरोध में जिन्होंने हमें} तुम्हें परमेश्वर का शुभ सन्देश बताने
से {रोकने का प्रयास किया था}। 3निश्चित रूप से, {जब} हम ने तुम को {परमेश्वर के शुभ सन्देश पर विश्वास करने के लिए} प्रोत्साहित किया, {तो हम ने} किसी
गलत सन्देश पर विश्वास करने के लिए तुम को राजी करने का {प्रयास} नहीं किया। {हम} स्वार्थी रूप से प्रेरित नहीं थे। {हम ने जो कहा उससे} {हम ने} तुम्हें
धोखा देने का {प्रयास} नहीं किया। 4असल में, हम परमेश्वर का शुभ सन्देश तब से बता रहे हैं जब से उसने हमें परखा और अनुमोदित किया कि हम ऐसा करने
के लिए भरोसेमंद हैं। जब हम परमेश्वर का शुभ सन्देश बताते हैं, तो हम लोगों को प्रसन्न करने का {प्रयास} नहीं करते। बजाए इसके, हम परमेश्वर को प्रसन्न
करने का {प्रयास करते हैं}। वह परमेश्वर ही है जो {लगातार} परखता है कि हमें {उसका शुभ सन्देश} बोलने के लिए क्या प्रेरित करता है। 5वास्तव में, जब हम
पहले आए थे, तो हम ने चापलूसी करने के द्वारा तुम्हें प्रसन्न करने का प्रयास नहीं किया। तुम जानते हो कि यह सत्य है। {हम} स्वार्थी रूप से प्रेरित नहीं,
इसलिए इसे छिपाने का प्रयास करने के लिए हमें कुछ बातों को कहने की आवश्यकता नहीं थी कि हम तुम्हारी ओर से कितने स्वार्थी हैं। परमेश्वर पुष्टि करता है
कि यह बात सत्य है! 6{हम ने} {आशा} नहीं की कि लोग {हमारा} आदर करें–न तुम और न दूसरे लोग{–} 7{तौभी,} हम तुम्हें अपने अधीन कर सकते थे, चूँकि
हम मसीह के अधिकृत प्रतिनिधि हैं। बजाए इसके, हम ने तुम्हारे साथ रहते हुए शिशुओं की तरह कोमल व्यवहार किया। हम ने {पालन-पोषण करने वाली} एक
माँ के समान {कोमलता से} व्यवहार किया {जो} अपने बच्चों को सांत्वना देती है। 8चूँकि हम तुम से बहुत प्रेम करते हैं, इसलिए हमें तुम्हारे साथ परमेश्वर के
शुभ सन्देश को साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इतना ही नहीं, परन्तु {हम} अपने स्वयं के जीवनों को {तुम्हारे साथ} {साझा करने में भी प्रसन्न हुए हैं}।
{ऐसा इसलिए है} क्योंकि हम तुम से {बहुत} प्रेम करने लगे हैं। 9हे {हमारे} संगी विश्वासियों, निश्चित रूप से तुम्हें स्मरण होगा कि हम ने कितनी कड़ी मेहनत की
थी। हम रात और दिन काम ही करते रहे। ऐसा इसलिए था ताकि हमें तुम में से किसी से भी हमारी आर्थिक सहायता करने के लिए कहने की आवश्यकता न
पड़े। भले ही हम काम कर रहे थे, {तब पर भी} हम ने तुम पर परमेश्वर के शुभ सन्देश की घोषणा की। 10तुम और परमेश्वर दोनों इस बात की गवाही देते हैं कि
हम ने तुम {सब के} प्रति जो {परमेश्वर पर} भरोसा करते हैं, कितनी ईमानदारी, धार्मिकता और निर्दोषता से व्यवहार किया। 11तुम में से हर एक जन यह

व्यक्तिगत रूप से जानता है: {हम ने} {तुम्हारे प्रति} वैसा ही {व्यवहार किया} जैसा एक पिता अपने स्वयं के बच्चों {के प्रति व्यवहार करता है}। **12**{हम लगातार} आग्रह करते रहे और प्रोत्साहित करते रहे और गवाही देते रहे कि तुम सब को उसी तरह से जीवन व्यतीत करना चाहिए जिस तरह से परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है कि वे ऐसे जीवन व्यतीत करें! ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर तुम्हें अपने महिमामय राज्य में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित {करता रहता है}। **13**हम इस कारण से भी लगातार परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं: जब हम ने तुम्हें इसकी सूचना दी तो तुम ने परमेश्वर के सन्देश को स्वीकार कर लिया। तुम ने इसे केवल एक मानवीय सन्देश नहीं माना। {तुम ने} उस सन्देश को {ऐसे स्वीकार किया} कि मानो परमेश्वर ने उसे स्वयं भेजा हो। और वास्तव में परमेश्वर ने पहुँचाने के लिए हमें वह सन्देश प्रदान किया है! {हम} {लगातार परमेश्वर का धन्यवाद भी करते हैं} कि तुम में से जो उस पर भरोसा करते हैं, उनके लिए जिस तरह से उसके लोगों को जीवन व्यतीत करना चाहिए वैसे जीने के लिए परमेश्वर तुम्हें प्रभावी रूप से बदल रहा है। **14-15**यहूदिया में रहने वाले {अविश्वासी} यहूदियों ने {बहुत पहले} न केवल भविष्यवक्ताओं को मार डाला, परन्तु उन्होंने {कुछ ही समय पहले} प्रभु यीशु को भी मार डाला। उन्होंने हम {प्रेरितों} के साथ भी बहुत बुरा दुर्व्यवहार किया। इन अविश्वासी यहूदियों ने मसीह में पाए जाने वाले यहूदिया के विश्वासियों को भी पीड़ा दी। हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, निश्चित रूप से तुम ने यहूदिया की परमेश्वर की उन मण्डलियों का अनुकरण किया जो तुम्हारे साथी देशवासियों की ओर से वैसी ही बातों में पीड़ित होने के द्वारा यीशु मसीह में जुड़े हुए हैं। परमेश्वर इन {अविश्वासी} यहूदियों से पूर्ण रूप से अप्रसन्न है। वे लोग पूरी मानवजाति के भी शत्रु हैं! **16**वे अविश्वासी यहूदी हमें उन लोगों को जो यहूदी नहीं हैं {परमेश्वर का शुभ सन्देश} बताने से रोकने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अविश्वासी यहूदी नहीं चाहते कि परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करे जो यहूदी नहीं हैं। ये अविश्वासी यहूदी इतना अधिक पाप करते रहते हैं कि वे लगभग उस सीमा तक पहुँच चुके हैं जिसकी परमेश्वर अनुमति देगा। वास्तव में, जब वे इसकी कम से कम आशा करते हैं, तब परमेश्वर उन्हें {समय के} अन्त में दण्ड देगा! **17**हे {हमारे} संगी विश्वासियों, इतनी दूर होने ने {हमें} तुम्हें थोड़े समय के लिए देखने से वंचित कर दिया। परन्तु, यद्यपि हम तुम से दूर थे, तौभी हम {तुम्हारे प्रति} कम स्नेही नहीं बने। हम तुम्हें व्यक्तिगत रूप से देखने के लिए और भी अधिक उत्सुक और गहन अभिलाषी हो गए। **18**वास्तव में, हम तुम से मिलना चाहते थे। यहाँ तक कि मुझ, पौलुस ने, दो बार {आने का प्रयास भी किया}, परन्तु {जब हम ने आने का प्रयास किया,} तो शैतान ने हमारा विरोध किया। **19**हम इसलिए आना चाहते थे क्योंकि हमें {परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास के विषय में} बहुत भरोसा है। {तुम्हारी उपस्थिति में होना} भी हमें आनन्द से भर देता है। {चूँकि तुम परमेश्वर के प्रति बहुत विश्वासयोग्य हो,} इसलिए हमें निश्चय है कि हम ने वह प्राप्त कर लिया है जो परमेश्वर हम से करवाना चाहता था। {निश्चित रूप से, हमें} भी {विश्वास है कि हम सब} हमारे प्रभु यीशु की उपस्थिति में {एक साथ होंगे} जब वह {फिर से} वापस आएगा! **20**तुम्हारे कारण, हम {परमेश्वर की} महिमा करते हैं और आनन्दित होते हैं!

Chapter 3

1इसलिए फिर, जब हम ने {ऐसा महसूस किया कि हम} अब और अधिक प्रतीक्षा सम्भवतः नहीं कर पाएँगे, तो हम ने सोचा कि केवल सीलास और मेरे लिए ही एथेंस नगर में पीछे रुक जाना उचित होगा। **2**परन्तु, फिर भी हम ने तीमुथियुस को {तुम्हारे पास} भेज दिया। वह हमारे ही साथ काम करता है और मसीह के विषय में शुभ सन्देश की {घोषणा करने} के द्वारा परमेश्वर की सेवा करता है। {सीलास और मैंने उसे भेजा} ताकि {परमेश्वर के प्रति} विश्वासयोग्य बने रहने में वह तुम्हारी सहायता करे और तुम्हें प्रोत्साहित करे। **3**{हम ने तीमुथियुस को तुम्हारे पास इसलिए भी भेजा} ताकि जब लोग हम {प्रेरितों} को सताएँ, तो {जैसे तुम परमेश्वर पर भरोसा करते हो} इस कारण से तुम में से कोई भी जन न डगमगाए। तुम तो अच्छे से जानते हो कि यह {परमेश्वर ने} ठान लिया है कि लोग हम {प्रेरितों} को पीड़ित करेंगे। **4**वास्तव में, यहाँ तक कि जब हम {प्रेरित} तुम से मिलने को आए, तब भी हम समय से पहले ही तुम्हें चेतावनी देते रहे। हम ने तुम्हें चिताया कि परमेश्वर ने यह ठान लिया है कि लोग हम {प्रेरितों} को पीड़ित करेंगे। तुम अच्छे से जानते हो कि वास्तव में ऐसा ही घटित हुआ था। **5**फिर इसलिए, जब मुझे {ऐसा महसूस हुआ कि मैं} अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता, तो मैंने {तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा। मैं} यह जान कर {चिन्तित था} कि क्या तुम अभी भी {परमेश्वर पर} भरोसा कर रहे थे। {मैं चिन्तित था कि} शैतान ने {परमेश्वर पर भरोसा करना बन्द करने के लिए} तुम्हारी किसी तरह परीक्षा की। {यदि तुम ने परमेश्वर पर भरोसा करना बन्द कर दिया होता,} तो सारा कठिन परिश्रम जो हम ने {तुम्हारे बीच में} पूरा किया वह बेकार हो जाता! **6**तीमुथियुस कुछ समय पहले ही सीलास और मेरे पास तुम्हारे साथ अपनी मुलाकात से लौटा है। उसने हमें शुभ सन्देश सुनाया कि तुम {परमेश्वर पर} कितना भरोसा करते हो और उससे कितना प्रेम करते हो। {उसने हमें यह भी बताया} कि जब भी तुम हमारे विषय में सोचते हो तो इससे तुम्हें खुशी होती है। {उसने हमें बताया} कि तुम हम से मिलने की कितनी इच्छा रखते हो। हमारी भी यही इच्छा है! **7**हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, उस सम्पूर्ण समय के दौरान लोगों ने हम से दुर्व्यवहार किया और हमें पीड़ित किया–तो परमेश्वर ने हमें तुम्हारे विषय में प्रोत्साहित किया। हमें {जब तीमुथियुस से मालूम हुआ} कि तुम {अभी भी} {परमेश्वर पर} भरोसा करते हो तो हम प्रोत्साहित हुए। **8**वास्तव में, जब से तुम ने प्रभु {यीशु} में {विश्वास करना} जारी रखा है, हम पुनर्जीवित महसूस करते हैं! **9**वास्तव में, जो कुछ उसने तुम्हारे लिए किया है उसके लिए हम परमेश्वर का पर्याप्त धन्यवाद नहीं कर सकते! {जब हम} अपने परमेश्वर से {प्रार्थना करते हैं}, तो हम इसलिए बहुतायत से आनन्द मनाते हैं क्योंकि तुम {उस पर कितना भरोसा करते हो}! **10**हम परमेश्वर से लगातार और अत्यधिक निवेदन करते हैं {कि हम तुम्हें व्यक्तिगत रूप से देखने में {सक्षम हों}। तुम {परमेश्वर पर} कितना भरोसा करते हो, {हम} इसमें उन्नति करने में तुम्हारी सहायता करने की भी {इच्छा} करते हैं! **11**अब, हम परमेश्वर हमारे पिता से और हमारे प्रभु यीशु से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें तुम से {फिर से} मिलने की अनुमति प्रदान करें! **12**{हम} प्रार्थना करते हैं कि जितना तुम अपने संगी विश्वासी से प्रेम करते हो, प्रभु {यीशु} तुम्हें उसमें अधिकाधिक उन्नति करने में प्रेरित करे। {हम} यह भी प्रार्थना करते हैं कि वह तुम्हें सभी लोगों से प्रेम करने में उत्कृष्ट होने में प्रेरित करे। यह ठीक उसी तरह से है जैसे हम तुम से प्रेम करते हैं! **13**{हम प्रार्थना करते हैं कि हमारा प्रभु यीशु} {एक दूसरे से प्रेम करने में} तुम को उतना सामर्थी बनाएगा जितनी तुम इच्छा करते हो। {हम प्रार्थना करते हैं कि हमारा प्रभु यीशु} तुम को इस तरह से जीवन व्यतीत करने में सक्षम करे जिसे परमेश्वर हमारा पिता उनके लिए निर्दोष मानता है जो उसके लोग हैं। {हम इन सब बातों के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि तुम तैयार रहो} जब हमारा प्रभु यीशु उन सभी को लेकर {दूसरी बार} आएगा जो उसके लोग हैं। सम्भवतः ऐसा ही हो!

Chapter 4

1-2हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, {इस पत्र का} सारांश यहाँ पर है। चूँकि हम प्रभु यीशु के प्रवक्ता हैं, इसलिए जो कुछ हम ने तुम को
सिखाया है उसे व्यवहार में लाते रहने के लिए हम तुम से आग्रह करते हैं और तुम्हें प्रोत्साहित करते हैं। तुम्हारे लिए इस प्रकार से जीवन व्यतीत करना और
परमेश्वर को प्रसन्न करना आवश्यक है। तब तुम और भी श्रेष्ठ इसलिए हो जाओगे, क्योंकि तुम उन आज्ञाओं के जानकार हो जिन्हें तुम्हें देने के लिए प्रभु यीशु ने
हमें कहा था। **3**निश्चित रूप से, परमेश्वर चाहता है कि तुम ऐसी रीति से जीवन व्यतीत करो जिससे यह प्रदर्शित हो कि तुम पूरी तरह से उसके हो: {वह इच्छा
करता है} कि तुम {कोई} यौन अनैतिक कार्य करने से बचो। **4**{परमेश्वर चाहता है} कि तुम में से हर एक जन केवल अपनी ही पत्नी से यौन सम्बन्ध बनाए।
{परमेश्वर चाहता है} कि तुम अपनी पत्नियों से ऐसा बर्ताव करो जैसे कि वे परमेश्वर की हैं, और उनका आदर करो। **5**वासना से सन्तुष्टि के लिए {तुम्हें अपनी
पत्नी का उपयोग नहीं करना चाहिए} जिसकी तुम इच्छा करते हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो जातियाँ परमेश्वर के लोग नहीं हैं वे इसी रीति से जीवन व्यतीत
करती हैं। **6**{परमेश्वर यह भी चाहता है} कि कोई भी जन इस तरह से मसीह में पाए जाने वाले अपने संगी विश्वासी की {पत्नी} का न उल्लंघन करे और न
उसका लाभ उठाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु {यीशु} इन सभी {यौन अनैतिक} कृत्यों का पलटा लेगा। प्रभु {यीशु} ठीक वैसा ही पलटा लेगा जैसा हम ने
पहले बताया था और तुम्हें कड़ी चेतावनी दी थी। **7**निश्चय ही परमेश्वर हम (मसीह में पाए जाने वाले विश्वासियों को अपने महिमामय राज्य में) अशुद्ध {जीवन
व्यतीत करने} के उद्देश्य से नहीं बुलाता है। बजाए इसके, परमेश्वर चाहता है कि हम उन लोगों की तरह जीवन व्यतीत करें जो उसके हैं। **8**इसी कारण से, {मैं तुम
में से प्रत्येक को सावधान करता हूँ। चूँकि परमेश्वर ने हमें ये बातें कहने के लिए कहा है, इसलिए यदि कोई जन जो हम कहते हैं उसे {निरन्तर} अस्वीकार करता
है, तो तुम {साधारण रूप से} मनुष्य को अस्वीकार नहीं कर रहे हो। नहीं, तुम स्वयं परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे हो! तुम उस परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे
हो जो तुम सब के साथ {निरन्तर} अपनी पवित्र आत्मा साझा करता है! **9**अब, {तुम्हारे प्रश्न के विषय में,} तुम्हें यह {स्मरण दिलाने} के लिए {वास्तव में} {किसी
जन को} लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है कि मसीह में पाए जाने वाले संगी विश्वासियों को एक-दूसरे के प्रति कैसे स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। ऐसा
इसलिए है क्योंकि यह निश्चित है कि तुम पहले ही वह सीख चुके हो जो परमेश्वर सिखाता है कि, "एक दूसरे से प्रेम करो।" **10**निश्चय ही तुम {पहले से ही} मसीह
में पाए जाने वाले उन सभी संगी विश्वासियों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार कर रहे हो जो सम्पूर्ण मकिदुनिया में रहते हैं। फिर भी, हे मसीह में पाए जाने वाले हमारे
संगी विश्वासियों, हम तुम सब से आग्रह {करना चाहते हैं} कि {एक दूसरे को} और भी अधिक प्रेम करने में उत्कृष्टता प्राप्त करो! **11**{हम} {तुम से यह आग्रह भी
करते हैं} कि शान्ति से जीवन व्यतीत करने की महत्त्वाकांक्षा रखो। {हम तुम से आग्रह करते हैं} कि अपने स्वयं के मामलों में व्यस्त रहो। {हम तुम से आग्रह
करते हैं} कि जीवन व्यतीत करने के लिए जिस वस्तु की तुम्हें आवश्यकता है उसे अर्जित करने के लिए काम करने पर ध्यान दो। वही करो जिसका हम ने तुम्हें
पहले से ही आदेश दिया है। **12**{हम तुम से इन कामों को करने का आग्रह इसलिए करते हैं,} ताकि तुम उन लोगों के लिए {कि तुम कितनी विनम्रता से जीवन
व्यतीत करते हो इसके द्वारा} एक अच्छा उदाहरण स्थापित कर सको जो मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। तब तुम्हें {दूसरों पर} निर्भर नहीं रहना पड़ेगा कि
{जीवन व्यतीत करने के लिए} तुम्हें जिस वस्तु की आवश्यकता है वह उपलब्ध कराएँ। **13**साथ ही, हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, हम
चाहते हैं कि तुम इस विषय में जानकार रहो कि मसीह में पाए जाने वाले उन विश्वासियों {के साथ क्या घटित होगा} जो मर गए हैं। तुम्हें उन बाकी मनुष्यों की
तरह नहीं बनना चाहिए, जो मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। वे इसलिए बहुत दु:खी हैं क्योंकि वे विश्वास के साथ यह आशा नहीं करते हैं कि लोग मृत्यु के बाद
फिर से जीवित होंगे। **14**निश्चय ही, हम {प्रेरितों} को विश्वास है कि यीशु मरा और फिर से जीवित हुआ। यही कारण है कि हमें यह भी विश्वास है कि परमेश्वर उन
मरे हुओं को {फिर से जीवित} करेगा जो यीशु से जुड़े हुए हैं। तब परमेश्वर उन्हें यीशु के साथ वापस भेज देगा {जब वह फिर से पृथ्वी पर लौटेगा}। **15**वास्तव में,
जो हम {प्रेरित} अब तुम्हें बता रहे हैं वह {स्वयं यीशु} प्रभु का सन्देश है। जब प्रभु {यीशु} फिर से आएगा, {तो मसीह में पाए जाने वाले सभी विश्वासी उसे
नमस्कार करेंगे}। सबसे पहले, {मसीह में पाए जाने वाले वे विश्वासी} जो {पहले से ही} मर चुके हैं, वे निश्चित रूप से उसे नमस्कार करेंगे, और फिर हम {मसीह
में पाए जाने वाले वे विश्वासी} जो अभी भी जीवित हैं। **16**{इस तरह से} प्रभु {यीशु} स्वर्ग से नीचे आएगा: प्रभु {यीशु} स्वयं व्यक्तिगत रूप से {सभी को फिर से
जीवित करने के लिए} आदेश देगा। प्रधान स्वर्गदूत चिल्लाएगा। परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी। फिर {सभी} मरे हुए जो मसीह से जुड़े हुए हैं, वे सबसे पहले
{पृथ्वी से निकलकर} फिर से जीवित होंगे। **17**उसके बाद, परमेश्वर हम सभी मसीह में पाए जाने वाले विश्वासियों को उठा लेगा जो अभी भी पृथ्वी पर जीवित हैं
ताकि हम हवा में प्रभु {यीशु} से मिल सकें। मसीह में पाए जाने वाले विश्वासियों के दोनों समूह बादलों पर एक साथ मिलेंगे। इस तरह हम हमेशा के लिए प्रभु
{यीशु} के साथ रहेंगे! **18**इसके परिणामस्वरूप, इस सन्देश से तुम्हें एक दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए!

Chapter 5

1{अब मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे प्रभु के पृथ्वी पर लौटने के समय के विषय में जानकार रहो} हे मसीह में पाए जाने वाले हमारे संगी विश्वासियों, हमें {हमारे प्रभु
के लौटने के} उस विशिष्ट समय के विषय में तुम्हें {कुछ भी} लिखने की {वास्तव में} कोई आवश्यकता नहीं है। **2**ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम स्वयं उस समय के
विषय में पहले से ही ठीक-ठीक जानते हो जब प्रभु {यीशु} वापस आएगा। तुम यह भी जानते हो कि वह {अप्रत्याशित रूप से} आएगा, जैसे रात में जब कोई
लुटेरा आए। **3**{प्रभु यीशु} ऐसे समय पर आएगा जब लोग कह रहे होंगे, "{हम} सुरक्षित और सकुशल हैं!" फिर, अचानक से, परमेश्वर उन पर हावी हो जाएगा
और उन्हें नष्ट कर देगा! यह ठीक वैसा ही होगा जब एक गर्भवती स्त्री प्रसव पीड़ा से अभिभूत होने से बच नहीं सकती है। उसी तरह, {जब परमेश्वर नष्ट करता
है} तो वे लोग कभी नहीं बच सकते! **4**हालाँकि, हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, तुम ऐसे लोग नहीं हो जो इस बात से बेखबर हैं कि क्या
घटित होगा, जैसे कि जब लोग अंधेरे में होते हैं। यही कारण है, कि जब प्रभु यीशु उन लोगों को दण्ड देने के लिए पृथ्वी पर लौटेगा जो उसके नहीं हैं, तो वह तुम्हें
ऐसे आश्चर्यचकित नहीं करेगा जैसे कि वह कोई चोर हो। **5**{चूँकि} तुम सब परमेश्वर की सन्तान हो, {इसलिए तुम्हें यीशु के पृथ्वी पर लौट आने के लिए जीवन
व्यतीत करना चाहिए}, जैसे वे लोग जो ज्योति में रहते हैं या दिन के दौरान जागते हैं, जानकार हैं कि क्या घटित हो रहा है। हम {शैतान की सन्तान} नहीं हैं, जो
इस बात से बेखबर जीवन व्यतीत करते हैं कि क्या घटित होगा, जैसे रात में या अंधेरे में रहने वाले लोग {जो अच्छी तरह से नहीं समझ सकते हैं}। **6**अत:, इसी
कारण से, {परमेश्वर की सन्तान के रूप में, जो कुछ घटित होगा उसके लिए हमें तैयार रह कर जीवन व्यतीत करना चाहिए। हमें} इस बात से बेखबर जीवन

व्यतीत नहीं करना चाहिए कि उन बाकी मनुष्यों के साथ क्या घटित होगा, जो ऐसे लोगों के समान है जो सो रहे हैं। बजाए इसके, हमें {यीशु के पृथ्वी पर लौटने
की आशा करते हुए} सतर्क रहना चाहिए और चौकस बने रहना चाहिए। 7यह सब जानते हैं कि जब लोग उस बात से बेखबर होते हैं जो घटित होगी, तो यह
{आमतौर पर} रात में होता है, जब वे सो रहे होते हैं। और जब लोग मतवाले हो जाते हैं, तो वे उसके लिए तैयार नहीं होते जो घटित होगा। वे {आमतौर पर} रात
में मतवाले हो जाते हैं, {जब वे बातों को भी नहीं समझ पाते हैं}। 8परन्तु {हम जो प्रभु यीशु के पृथ्वी पर लौटने के लिए तैयार हैं इस बात से बेखबर जीवन
व्यतीत नहीं करते कि इस तरह के लोगों के साथ क्या घटित होगा। चूँकि} हम तैयार हैं, इसलिए हमें चौकस बने रहना चाहिए। हमें अपने आप को {सैनिकों की
तरह} पूरी तरह से हथियारबंद करना होगा। {परमेश्वर के प्रति} विश्वासयोग्य प्रेम से एक झिलम की तरह {हमारी छाती ढँपी होनी चाहिए}। {परमेश्वर} हमारा
उद्धार करेगा इससे आश्वस्त होना एक टोप की तरह {हमारे सिर की पूरी तरह से रक्षा करे}। 9चूँकि {हम उसके लोग हैं,} इसलिए परमेश्वर ने यह निर्धारित नहीं
किया था कि वह हमें {हमारे पापों के लिए} दण्ड देगा। बजाए इसके, उसने निर्धारित किया कि हमारा प्रभु, यीशु मसीह, हमारी रक्षा करेगा और हमारा उद्धार
करेगा। 10यीशु हमारे स्थान पर मरा ताकि हम उसके साथ {हमेशा का} जीवन व्यतीत करें। {यह सत्य है,} कि {जब वह पृथ्वी पर लौटेगा} चाहे हम जीवित रहें
या मर जाएँ। 11चूँकि यह सच है, इसलिए स्वभाव के अनुसार {मसीह में पाए जाने वाले तुम्हारे हर एक संगी विश्वासी} को प्रोत्साहित करना और समर्थन करना
जारी रखो! 12अन्त में, हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, हम अनुरोध करते हैं कि तुम अपने उन आत्मिक अगुवों को मान्यता प्रदान करो जो
तुम्हारे मध्य में कड़ी मेहनत करते हैं, इसी रीति से तुम प्रभु {यीशु} को भी मान्यता प्रदान करोगे। तुम्हें उनको इसलिए भी मान्यता प्रदान करनी चाहिए क्योंकि
{मसीह में पाए जाने वाले विश्वासियों की तरह जीवन व्यतीत करने के विषय में} वे तुम्हें लगातार चेतावनी देते हैं और निर्देश देते हैं। 13क्योंकि वे {तुम्हारे लिए
इतनी कड़ी मेहनत करते हैं}, इसलिए हम यह भी अनुरोध करते हैं {कि} तुम अपने आत्मिक अगुवों का ध्यान रखते हुए उनसे भरपूर प्रेम करो। {हम यह भी
आग्रह करते हैं} कि तुम एक-दूसरे के साथ शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहो। 14हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, अब हम आग्रह करते
हैं कि तुम उन लोगों को चेतावनी दो और निर्देश दो जो अनुपयुक्त रीति से जीवन व्यतीत करते हैं। हम यह आग्रह {भी} करते हैं कि तुम उन लोगों को उत्साहित
करो जो निराश हैं। हम यह आग्रह {भी} करते हैं कि तुम उन लोगों का समर्थन करो जो निर्बल हैं। हम यह आग्रह {भी} करते हैं कि {मसीह में पाए जाने वाले
तुम्हारे प्रत्येक संगी विश्वासी} के साथ तुम धैर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करो। 15यदि कोई तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करता है, तो सुनिश्चित करो कि तुम बदले में
उनके साथ बुरा व्यवहार न करो। बजाए इसके, जब भी {तुम कर सको,} तो {मसीह में पाए जाने वाले प्रत्येक संगी विश्वासी} के साथ सक्रिय रूप से कृपापूर्ण
व्यवहार करने के तरीकों की खोज करो। 16हर समय आनन्दित रहो! 17निरन्तर प्रार्थना करो! 18हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो! वास्तव में,
परमेश्वर यही इच्छा करता है कि तुम सब जो यीशु मसीह के साथ जुड़ गए हो इन सब बातों को करो। 19{पवित्र} आत्मा को {तुम्हारे मध्य में काम करने से रोकने
का प्रयास} मत करो। {यह कुछ ऐसा होगा जैसे कोई व्यक्ति आग को} बुझाने का {प्रयास कर रहा हो}! 20{दूसरे शब्दों में,} उन भविष्यवाणियों का तिरस्कार
मत करो {जिनको पवित्र आत्मा मसीह में पाए जाने वाले अन्य विश्वासियों को देता है}! 21{बजाए इसके,} सभी {भविष्यवाणियों का} मूल्यांकन करते रहो और
{केवल} उन्हीं को रखो जो उत्कृष्ट साबित होती हैं। 22ऐसी किसी भी बात से दूर रहो जो बुरी प्रतीत होती हो! 23संक्षेप में, हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर
व्यक्तिगत रूप से तुम्हें ऐसे लोगों की तरह जीवन व्यतीत करने वाला बनाए जो पूरी तरह से उसके हैं। वह परमेश्वर ही है जो अपने लोगों को शान्ति प्रदान करता
है। हम यह प्रार्थना भी करते हैं कि परमेश्वर तुम्हें पूरी तरह से निर्दोष ठहराकर उस समय के लिए सुरक्षित रखे जब हमारा प्रभु यीशु मसीह फिर से पृथ्वी पर
आए। 24विश्वासयोग्य परमेश्वर तुम सभी को {ऐसे लोगों के समान जीवन व्यतीत करने के लिए निरन्तर} बुलाता है {जो पूरी तरह से उसके हैं। इसलिए, तुम
निश्चित हो सकते हो कि} वह उसे भी करेगा {जो कुछ तुम्हारे लिए उन लोगों के समान जीवन व्यतीत करने में सक्षम होने के लिए आवश्यक है जो पूरी तरह से
उसके हैं}। 25हे मसीह में पाए जाने वाले {हमारे} संगी विश्वासियों, हम यह विनती भी करते हैं कि मेरे लिए, सीलास के लिए, और तीमुथियुस के लिए तुम
प्रार्थना करते रहो! 26जब तुम एक साथ {आराधना करने के लिए} मिलते हो, तो मसीह में पाए जाने वाले तुम्हारे प्रत्येक संगी विश्वासी को स्नेहपूर्वक इस तरह से
नमस्कार करो जैसा उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो परमेश्वर के हैं। 27मैं चाहता हूँ कि तुम प्रभु {यीशु} की शपथ खाओ, कि तुम इस पत्र को {तुम्हारे मध्य में}
मसीह में पाए जाने वाले सभी विश्वासियों के लिए पढ़ोगे! 28हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम सब के प्रति {लगातार} कृपापूर्वक कार्य करता रहे!

2 थिस्सलुनीकियों

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, {इस पत्र को लिख रहा हूँ।} सीलास और तीमुथियुस {मेरे साथ में हैं। हम इस पत्र को तुम को भेज रहे हैं,} अर्थात विश्वासियों के उस समूह को
जो थिस्सलुनीके नगर में है, और जो हमारे परमेश्वर पिता के एवं {हमारे} प्रभु यीशु मसीह के लोग हैं। 2हमारा परमेश्वर पिता और हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम पर
{निरन्तर} दयालु बने रहें और {तुम को} शान्ति प्रदान करें। 3हे हमारे संगी विश्वासियों, हमें तो तुम्हारे कारण बार-बार परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए{, और
हम निश्चित रूप से ऐसा करते भी हैं}! यह बहुत सही है कि हमें ऐसा इसलिए करना चाहिए, क्योंकि तुम प्रभु यीशु पर अधिकाधिक विश्वास कर रहे हो, और
क्योंकि तुम में से प्रत्येक जन दूसरों लोगों से अधिकाधिक प्रेम कर रहा है। 4जिसके परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर के विश्वासियों के अन्य समूहों से घमण्ड के
साथ तुम्हारे विषय में बातें करते हैं। हम उनको बताते हैं कि कैसे तुम ने {सताव को} धीरज के साथ सहा और कैसे तुम प्रभु यीशु पर विश्वास में बने रहे, भले ही
दूसरे लोगों ने तुम को लगातार सताया। 5{हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि जब लोगों ने तुम को सताया उस समय परमेश्वर ने यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहने
में तुम्हें सक्षम किया।} उसी से हम ने जाना कि परमेश्वर धार्मिकता के साथ न्याय करता है, क्योंकि इसका अर्थ यह है कि उसने तुम्हें उसके लोगों में सदाकाल का
भाग होने के योग्य समझा। और इसी के लिए तुम दुःख उठा रहे हो। 6चूँकि परमेश्वर धार्मिकता के साथ न्याय करता है, इसलिए निश्चित रूप से वह उन लोगों को
भी दुःख देगा जो तुम को दुःख दे रहे हैं। 7जो तुम को क्लेश दे रहे हैं वह उनको ऐसा करने से भी रोक देगा। वह हमारे लिए वैसा अवश्य ही करेगा। यह उस
समय पर घटित होगा जब हमारा प्रभु यीशु स्वयं को अपने शक्तिशाली स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से लौटकर सब लोगों पर प्रकट करेगा। 8उस समय धधकती आग
में वह उन लोगों को दण्ड देगा जिन्होंने परमेश्वर को ठुकरा दिया और जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु के शुभ सन्देश को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। 9ये लोग
{परमेश्वर को ठुकराने के} सीधे परिणाम को भुगतेंगे। ये लोग सदाकाल के लिए प्रभु {यीशु} से दूर हो जाएँगे, जहाँ वे कभी नहीं जान पाएँगे कि वह कितनी
अद्भुत रीति से शक्तिशाली है, और वहाँ वे हमेशा मरते रहेंगे। 10{यह तब घटित होगा} जब प्रभु यीशु स्वर्ग से उस समय वापस आएगा जिसे परमेश्वर ने निर्धारित
किया है। जिसके परिणामस्वरूप, हम सब जो उसके लोग हैं उसकी प्रशंसा करेंगे और उस पर अचम्भा करेंगे। {तुम भी वहाँ पर इसलिए रहोगे,} क्योंकि जब हम
ने तुम को यीशु के बारे में वह बातें बताईं जिनको हम जानते हैं कि वे बातें सच्ची हैं तो तुम ने हम पर विश्वास किया। 11हम बार-बार परमेश्वर से {तुम को
आत्मिक रूप से मजबूत करने के लिए} विनती करते हैं ताकि तुम भी इस प्रकार से यीशु की बड़ाई करो। हम प्रार्थना करते हैं कि जिस परमेश्वर की हम
आराधना करते हैं वह तुम को ऐसे नये लोग बनने के योग्य करे जैसे बनने के लिए उसने तुम को बुलाया है। हम प्रार्थना करते हैं कि वह तुम्हें हर उस भले काम
को पूरा करने में सशक्त करे जिसे तुम करना चाहते हो क्योंकि उसे करने के लिए परमेश्वर ने तुम को उबारा है। 12हम यह प्रार्थना इसलिए करते हैं क्योंकि हम
चाहते हैं कि तुम हमारे प्रभु यीशु की बड़ाई करो, और हम चाहते हैं कि वह तुम्हारा सम्मान करे। ऐसा इसलिए घटित होगा क्योंकि परमेश्वर जिसकी हम
आराधना करते हैं और हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम पर अत्यन्त दयालु हुए हैं।

Chapter 2

1अब उस समय के विषय में {मैं तुम्हें लिखना चाहता हूँ} जब हमारा प्रभु यीशु मसीह वापस लौटेगा और हमें अपने पास इकट्ठा करेगा। हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं
तुम से आग्रह करता हूँ 2कि किसी भी ऐसे सन्देश के बारे में जो तुम्हारे पास आ सकता है शान्ति से विचार करो जो कहता हो कि प्रभु यीशु पहले ही पृथ्वी पर
लौट आया है। इस प्रकार का सन्देश तुम्हें परेशान न कर दे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह सन्देश आत्मा की ओर से आया हो या किसी व्यक्ति की ओर से
आया हो या फिर वह किसी पत्री में हो जिसके लिए कोई दावा करे कि उसे मैंने लिखा है। 3किसी को भी इस प्रकार के किसी भी सन्देश पर विश्वास करने के
लिए तुम्हें राजी कर लेने की अनुमति मत दो। यह सच इसलिए नहीं है, क्योंकि वे अन्य बातें {जो अभी तक घटित नहीं हुई हैं} {प्रभु की वापसी से} पहले घटित
हैं। प्रभु के लौटने से पहले, परमेश्वर के विरुद्ध बड़ी संख्या में लोग विद्रोह करेंगे। वे एक ऐसे व्यक्ति को स्वीकार करके उसकी बातें मानेंगे जो परमेश्वर द्वारा कही
गई हर बात का विरोध करेगा। (कुछ समय बाद, परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा।) 4यह व्यक्ति कहेगा कि वह उन सभी वस्तुओं से बढ़कर है जिन्हें लोग परमेश्वर
मानते हैं और उन सब से जिनकी लोग उपासना करते हैं। वह दोनों ही का विरोध करेगा। जिसके परिणामस्वरूप, वह परमेश्वर के मन्दिर में {परमेश्वर के स्थान
पर} यह घोषणा करने के लिए भी बैठ जाएगा कि वह स्वयं ही परमेश्वर है! 5मुझे निश्चय है कि तुम को स्मरण होगा कि जब मैं {वहाँ थिस्सलुनीके में} तुम्हारे साथ
ही था उस समय मैंने तुम को इन सब बातों के बारे में बताया था। 6तुम यह भी जानते हो कि अब इस व्यक्ति को सब के सामने स्वयं को दिखाने से कौन रोक
रहा है। वह उस समय तक स्वयं को प्रकट करने में सक्षम नहीं होगा जो परमेश्वर ने उसके लिए निर्धारित किया हुआ है। 7स्पष्ट रूप से, लोग पहले से ही परमेश्वर
द्वारा कही हुई बातों का विरोध उन कारणों के लिए कर रहे हैं, जिनको केवल विश्वासी लोग ही समझ सकते हैं। परन्तु अब कोई इस व्यक्ति को {स्वयं को प्रकट
करने से} रोक रहा है, और वह इस व्यक्ति को तब तक रोकता रहेगा जब तक कि परमेश्वर उसे इस व्यक्ति को रोकना बंद करने के लिए नहीं कहता। 8यह तभी
होगा जब परमेश्वर उस व्यक्ति को जो परमेश्वर के निर्देशों को पूरी तरह से अस्वीकार कर देता है अनुमति देगा कि वह स्वयं को सब के सामने प्रकट करे। (अंत
में, यीशु वापस आ जाएगा। जब यह व्यक्ति यीशु को देखेगा, तो यह व्यक्ति पूरी तरह से शक्तिहीन हो जाएगा। तब प्रभु यीशु एक आदेश देगा जो इस व्यक्ति
को नष्ट कर देगा।) 9{परन्तु इससे पहले कि यीशु इस व्यक्ति को नष्ट कर दे,} शैतान इस व्यक्ति के द्वारा बहुत सामर्थी रूप से काम करेगा। शैतान इस व्यक्ति
को उन सभी प्रकार के अलौकिक कार्यों को करने में सशक्त करेगा जो परमेश्वर के चमत्कारों की तरह दिखते हैं। 10यह व्यक्ति बहुत ही दुष्ट होगा और बहुत
सारे लोगों को धोखा देगा। ये लोग इसलिए नाश हो जाएँगे क्योंकि उन्होंने यीशु के बारे में सच्चे सन्देश को अत्यधिक मूल्यवान स्वरूप ग्रहण नहीं किया था, इसी
कारण से परमेश्वर भी उन्हें नहीं बचाएगा। 11क्योंकि ये लोग यीशु के बारे में सच्चे सन्देश को अस्वीकार कर देते हैं, इसलिए परमेश्वर उन्हें झूठी बातें सोचने में

सक्षम बनाता है ताकि वे इस व्यक्ति के झूठ पर विश्वास कर सकें। 12परमेश्वर ऐसा इसलिए भी करता है ताकि वह उन सभी लोगों को न्यायोचित दोषी ठहरा
सके जिन्होंने यीशु के बारे में सच्चे सन्देश पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया था, अर्थात वे लोग जो बजाए इसके दुष्ट काम करना पसंद करते थे। 13परन्तु हे
हमारे संगी विश्वासियों, हमें हमेशा तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, अर्थात जिन्हें हमारा प्रभु यीशु प्रेम करता है। हमें ऐसा इसलिए भी करना
चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें यीशु के बारे में सच्चे सन्देश पर विश्वास करने वाले प्रथम लोगों में से चुना है। परमेश्वर ने तुम को उन प्रथम लोगों में होने के लिए
चुना है जिन्हें वह अपनी आत्मा के द्वारा बचाएगा और अपने लिए अलग करेगा। 14परमेश्वर ने तुम्हें अपने लोग होने के लिए इसलिए आमंत्रित किया क्योंकि हम
ने तुम्हें यीशु के बारे में शुभ सन्देश सुनाया था ताकि परमेश्वर उसी प्रकार के तरीकों से तुम्हारा सम्मान करे जैसे वह हमारे प्रभु यीशु मसीह का सम्मान करता है।
15इसलिए, हे हमारे संगी विश्वासियों, मसीह पर दृढ़ विश्वास लगातार बनाए रखो। उन सच्ची शिक्षाओं पर विश्वास करना जारी रखो जो हम ने तुम को तब दीं
जब हम ने तुम से बातें कीं और तुम को एक पत्री लिखी। 16-17हमारा परमेश्वर पिता हम से प्रेम करता है। क्योंकि वह हम पर बहुत दयालु है, इसलिए वह हमें
हमेशा प्रोत्साहित करता रहेगा, और हम उससे भली वस्तुएँ प्राप्त करने की अपेक्षा कर सकते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि वह और हमारा प्रभु यीशु मसीह स्वयं
तुम्हें प्रोत्साहित करें और तुम को हर प्रकार के भले काम करने और अच्छी बातें कहने में सक्षम बनाएँ।

Chapter 3

1मैं जो कहना चाहता हूँ उसका यह अंतिम भाग है। हे हमारे संगी विश्वासियों, हमारे लिए प्रार्थना करो कि शीघ्र ही अधिकाधिक लोग हमारे प्रभु यीशु के बारे में
सन्देश को सुनें और उसका सम्मान करें, जिस प्रकार से तुम ने किया है। 2और हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर बहुत से दुष्टों को हमें हानि पहुँचाने से
बचाए। जैसा कि तुम जानते हो, अधिकांश लोग प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य नहीं हैं। 3फिर भी, प्रभु यीशु तुम्हारे प्रति विश्वासयोग्य है! वह तुम्हें आत्मिक रूप से
मजबूत करेगा और दुष्ट शैतान से तुम्हारी रक्षा करेगा। 4क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु के साथ जुड़े हुए हो, इसलिए हमें यह भी भरोसा है कि अब तुम उन बातों का
पालन कर रहे हो जिनकी हम ने तुम को आज्ञा दी थी, और यह कि तुम उन बातों का पालन भी करोगे जिनकी हम {इस पत्री में} तुम को आज्ञा दे रहे हैं। 5हम
प्रार्थना करते हैं कि हमारा प्रभु यीशु तुम्हें यह अनुभव करने में सहायता करता रहे कि परमेश्वर तुम से कितना प्रेम करता है और साथ ही उस धीरज का अनुभव
भी कराए जो मसीह तुम को प्रदान करेगा। 6हे हमारे संगी विश्वासियों, अब हम जो कहते हैं उसे ऐसे स्वीकार करो जैसे कि हमारा प्रभु यीशु मसीह स्वयं इस बात
को कह रहा हो: हम तुम्हें आज्ञा देते हैं कि हर उस संगी विश्वासी के साथ संगति करना बंद कर दो जो आलसी है और काम करने से इन्कार करता है। ये लोग
उस रीति से जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं जैसा यीशु ने हमें सिखाया था और जैसा हमारी बारी आने पर हम ने तुम को सिखाया। 7हम तुम को यह इसलिए
बताते हैं क्योंकि तुम स्वयं ही जानते हो कि जैसा व्यवहार हम ने किया वैसा ही तुम को भी व्यवहार करना चाहिए। जब हम तुम्हारे मध्य में रह रहे थे, तब हम
बिना काम किए केवल वहाँ बैठे ही नहीं थे। 8कहने का अर्थ यह है कि यदि हम ने भुगतान नहीं किया तो हम किसी का भोजन भी नहीं खाया। बजाए इसके,
हम ने {स्वयं को सहारा देने के लिए} हर समय बहुत परिश्रम किया। हम ने ऐसा इसलिए किया ताकि हमें {उसके लिए जो हमें चाहिए} तुम में से किसी पर
निर्भर न रहना पड़े। 9परमेश्वर ने निश्चय ही हमें यह अधिकार दिया है कि हम अपने लोगों से वह प्राप्त करें जिसकी हमें आवश्यकता है। परन्तु तुम से वस्तुओं की
माँग करने के बजाए, हम ने कठिन परिश्रम किया ताकि तुम देख सको कि परमेश्वर कैसे चाहता है कि उसके लोग जीवन व्यतीत करें, और फिर तुम भी उसी
रीति से जीवन व्यतीत कर सको। 10यह स्मरण रखना कि जब हम तुम्हारे साथ थे, तब तुम्हें आज्ञा देते थे कि यदि कोई विश्वासी काम करने से इन्कार करे, तो
तुम उसे खाने को भोजन न देना। 11अब हम तुम को यह फिर से इसलिए बताते हैं, क्योंकि लोगों ने हमें बताया है कि तुम में से कुछ आलसी हैं और बिलकुल
भी काम नहीं करते। इतना ही नहीं, दूसरे लोग जो कर रहे हैं तुम में से कुछ उसमें हस्तक्षेप कर रहे हैं। 12अब हम जो कहते हैं उसे ऐसे स्वीकार करो जैसे कि
प्रभु यीशु मसीह स्वयं यह कह रहा हो: हम उन संगी विश्वासियों को जो काम नहीं कर रहे हैं आज्ञा देते हैं और उनसे आग्रह करते हैं कि वे अपने स्वयं के
व्यवसाय और काम पर ध्यान लगाएँ ताकि उनके पास वह हो जिसकी उन्हें जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यकता है। 13जहाँ तक तुम संगी विश्वासियों की
बात है जो कठिन परिश्रम कर रहे हैं, जो सही काम है उसे करने से कभी मत थको! 14यदि कोई संगी विश्वासी इस पत्री में हमारे द्वारा लिखी गई बातों का पालन
नहीं करता, तो सार्वजनिक रूप से उस व्यक्ति की पहचान करो। फिर उसके साथ संगति न करना, जिससे कि वह लज्जित हो जाए {कि वह काम नहीं कर रहा
है}। 15उसे ऐसा न समझो कि मानो वह तुम्हारा शत्रु हो; बजाए इसके, उसे वैसे ही चेतावनी दो जैसे तुम अपने अन्य साथी विश्वासियों को चेतावनी दोगे। 16मैं
प्रार्थना करता हूँ कि हमारा प्रभु, जो एकमात्र ऐसा प्रभु है जो वास्तव में किसी को भी शान्ति प्रदान कर सकता है, तुम को हर रीति से और सारी परिस्थितियों में
शान्ति प्रदान करेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा प्रभु यीशु तुम सब की सहायता करता रहे। 17{अब मैंने अपने लेखक से कलम ले ली है, और} मैं, पौलुस,
यह नमस्कार स्वयं लिखकर तुम्हें भेज रहा हूँ। मैं अपनी सभी पत्रियों में ऐसा इसलिए करता हूँ ताकि तुम जान सको कि यह पत्री वास्तव में मैंने ही भेजी है। मैं
हमेशा इसी प्रकार से अपनी पत्रियों को समाप्त करता हूँ। 18मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम सभी पर दयालु होकर कार्य करता रहे।

1 तीमुथियुस

Chapter 1

1पौलुस {की ओर से}, एक व्यक्ति जो यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है। परमेश्वर, जो हमें बचाता है, और {हमारा} प्रभु यीशु मसीह, जिसमें हम आशा करते हैं, ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी। 2हे, तीमुथियुस, तू एक सच्चे साथी विश्वासी की तरह मेरे लिए एक सच्चे पुत्र के {जैसे}है। मेरी इच्छा यह है कि परमेश्वर पिता और प्रभु मसीह यीशु तुझ पर दया और अनुग्रह करते रहें और तुझे शांति मिलती रहे। 3जैसा कि मैंने तुझ से आग्रह किया था जब मैं मकिदुनिया प्रान्त को जा रहा था, कि तू इफिसुस के शहर में ही रहे। {वहीं रह} ताकि तू वहाँ के कुछ निश्चित लोगों को आज्ञा दे सके कि वे लोगों को सत्य {से} भिन्न {बातें} न सिखाएँ। 4उन्हें व्यर्थ की पुरानी कहानियों और पूर्वजों की अंतहीन सूचियों पर ध्यान केन्द्रित करने से रोकने के लिए निर्देश दे, जो केवल लोगों को एक-दूसरे के साथ बहस करने का कारण बनती हैं। वे बातें परमेश्वर की योजना को बढ़ावा नहीं देती हैं-ऐसा तब होता है जब हम परमेश्वर में भरोसा करते हैं। 5हम इन बातों पर ज़ोर देते हैं ताकि {परमेश्वर के} लोग {एक दूसरे से} प्रेम रखें। वे ऐसा तभी करेंगे जब वे उसी की इच्छा करें जो अच्छा है, जब वह विश्वास के साथ ये जानें कि वह सही कर रहे हैं, और जब वे सच्चाई से परमेश्वर पर भरोसा रखें। 6कुछ लोगों ने इन अच्छी बातों को अस्वीकार कर दिया है। इसके स्थान पर, वे व्यर्थ बातों चीजों को सिखाना पसन्द करते हैं। 7वे व्यवस्था के ऐसे शिक्षक बनने की इच्छा रखते हैं {जिसे परमेश्वर ने मूसा को दिया था}, परन्तु वे उन बातों को नहीं समझते हैं, जिनके बारे में वे बात करते हैं, या ऐसी बातें जिन पर जोर देते हैं कि सच्ची हैं। 8परन्तु हम जानते हैं कि परमेश्वर ने {जो व्यवस्था मूसा को दी है} अच्छी है यदि लोग उनका सही तरीके से उपयोग करें। 9हम जानते हैं कि परमेश्वर अच्छे लोगों का न्याय करने के लिए कानूनों की स्थापना नहीं करता है, वरन् ऐसे लोगों का न्याय करने के लिए जो ऐसे व्यवहार करते हैं कि मानो कोई कानून है ही नहीं और जो किसी को भी मानने से इनकार कर देते हैं। {परमेश्वर कानूनों की स्थापना} उन लोगों के लिए करता है जो परमेश्वर का सम्मान नहीं करते हैं और जो पाप करते हैं, उन लोगों के लिए जो परमेश्वर को सम्मान नहीं देते हैं और जो उसकी ओर किसी तरह का कोई ध्यान नहीं देते हैं। {वह कानूनों की स्थापना} उन लोगों के लिए करता है जो अपने पिताओं की हत्या करते हैं, उन लोगों के लिए करता है जो अपनी माताओं की हत्या करते हैं, जो अन्य लोगों की हत्या करते हैं। 10{परमेश्वर ऐसे लोगों का न्याय करने के लिए कानूनों की स्थापित करता है} जो लैंगिक रूप से अनैतिक हैं, ऐसे पुरुष जो दूसरे पुरुषों के साथ यौन संबंध रखते हैं, जो लोगों का अपहरण करते हैं {और उन्हें दास के रूप में बेचते हैं}, झूठों के लिए, जो {कानून की अदालतों में} झूठे गवाह होते हैं, और हर वैसी गतिविधि के लिए जो {हमारी} सच्ची शिक्षा के विपरीत है। 11यह सब इस अद्भुत शुभ सन्देश से सहमत है जिसे परमेश्वर, जिसकी हम प्रशंसा करते हैं, ने मुझे दिया है {कि दूसरों को इसकी घोषणा करूँ।} 12मैं यीशु हमारे प्रभु मसीह का आभारी हूँ जिसने मुझे इस काम को करने में सक्षम किया, क्योंकि उसने विचार किया कि मुझ पर भरोसा किया जा सकता है। इसलिए उसने मुझे उसकी सेवा करने के लिए नियुक्त किया। 13भूतपूर्व में मैंने उसके बारे में झूठी बातें कही थीं, मैंने उसके लोगों को सताया था, और मैंने {उनके प्रति} बहुत हिंसक व्यवहार किया। परन्तु मसीह ने मेरे प्रति दया के साथ व्यवहार किया क्योंकि मुझे नहीं पता था कि मैं जो कर रहा था वह गलत था, क्योंकि मुझे उस पर विश्वास नहीं था। 14परन्तु हमारे प्रभु ने {मेरे लिए} भरपूरी के साथ वह किया जिसके लिए मैं योग्य नहीं था, उसने मुझे मसीह यीशु पर विश्वास करने और उससे प्रेम करने की अनुमति किसी ऐसे की तरह दी जो उससे संबंधित हो। 15हर एक को इस कथन पर भरोसा करना और स्वीकार करना चाहिए: “यीशु मसीह इस संसार में पापी लोगों को बचाने के लिए आया था {ताकि परमेश्वर उन्हें उनके पापों के लिए दंडित न करें।”} {जहाँ तक मेरी बात है,} मैंने अन्य सभी से अधिक पाप किया है 16परन्तु यही कारण है कि मसीह यीशु ने मुझ पर अपनी दया से भरे हुए व्यवहार को किया। वह लोगों को यह दिखाना चाहता था कि वह उनके साथ पूरी तरह से धीरज रखता है। मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने अन्य सभी से अधिक बुरे पाप को किया है। इसलिए उसने मुझे ऐसे लोगों के लिए एक उदाहरण के रूप में उपयोग किया जो बाद में उस पर विश्वास करेंगे और परिणामस्वरूप, सदैव के लिए जीवित रहेंगे। 17इसलिए जो अनन्तकालीन राजा है, उसकी हम सम्मान और प्रशंसा करें। जिसे कोई देख नहीं सकता और जो कभी नहीं मर सकता! वह एकमात्र परमेश्वर है। हम सदैव उसकी प्रशंसा करें! ऐसा ही हो! 18हे तीमुथियुस, तू मेरे लिए एक पुत्र की तरह है। लोगों द्वारा तेरे बारे में पहले की गई भविष्यद्वाणी के साथ सहमत होते हुए, मैं तुम्हें ये बातें करने के लिए कहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह सन्देश तुझे परमेश्वर की यत्न से सेवा करने के लिए उत्साहित करें जैसे एक सैनिक अपने सेना के सरदार की करता है। 19{प्रभु यीशु में} निरन्तर भरोसा करता रह और केवल वही कर जो तू जानता है कि सही है! कुछ लोगों ने ऐसा करना बंद कर दिया है और इसलिए उन्होंने परमेश्वर के साथ अपने संबंध को नष्ट कर दिया है। 20जिन लोगों ने ऐसा किया है उनमें हुमिनयुस और सिकन्दर हैं। मैंने उन्हें शैतान के नियंत्रण में दे दिया है, ताकि {जब शैतान उन्हें दण्ड दे तो} वे परमेश्वर का अपमान करना न सीख सकें।

Chapter 2

1सबसे पहली बात जिसका मैं आग्रह करता हूँ कि{विश्वासी निरन्तर) सभी लोगों की ओर से परमेश्वर से प्रार्थना करें। उन्हें परमेश्वर से पूछना चाहिए कि उन्हें क्या चाहिए, और यह भी कि अन्य लोगों को क्या चाहिए, और उन्हें परमेश्वर {जो कुछ वह करता है} का धन्यवाद करना चाहिए। 2{उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए} राजाओं के लिए और उन सभी के लिए जिनके पास दूसरों के ऊपर अधिकार है, ताकि हम शान्ति और चैन से रह सकें। {इस तरह से हम वह} सब कर सकते हैं जिसे परमेश्वर और अन्य लोग सही और उचित मानते हैं। 3इस तरह प्रार्थना करना अच्छा है, और यह परमेश्वर को प्रसन्न करता है, जो हमें बचाता है। 4परमेश्वर सभी लोगों को बचाने की इच्छा रखता है। वह चाहता है कि हर कोई उसे पूरी तरह से जानें उसके सच्चे संदेश को पूरी तरह स्वीकार करे। 5केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है और केवल एक ही व्यक्ति है जो लोगों और परमेश्वर को इकट्ठा ला सकता है। वह व्यक्ति मसीह यीशु है, जो स्वयं एक पुरूष है! 6उसने स्वेच्छा से सभी लोगों को{बचाने के लिए} एक बलिदान के रूप में दे दिया। {वह मर गया} सही समय पर, और उसकी मृत्यु ने दिखाया कि {परमेश्वर सभी लोगों को बचाने

की इच्छा रखता है।} 7इस संदेश की घोषणा के लिए परमेश्वर ने मुझे उसकी ओर से बोलने के लिए नियुक्त किया है और उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए
भेजा है। जैसा कि निश्चित है कि मैं मसीह से संबंधित हूँ, मैं सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ! {परमेश्वर ने मुझे भेजा} उन लोगों को शिक्षा देने के लिए
जो यहूदी नहीं हैं कि उन्हें परमेश्वर के सच्चे संदेश पर विश्वास करना चाहिए। 8इसलिए, मैं चाहता हूँ कि हर जगह में पुरुष {जहाँ विश्वासी आराधना करते हैं}
परमेश्वर से प्रार्थना करें। जब वे प्रार्थना में अपने हाथों को उठाते हैं और ऐसा जीवन जीते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है, तो उन्हें किसी से क्रोधित नहीं होना
चाहिए और उन्हें किसी के साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए। 9इसी तरह से, {जब परमेश्वर की आराधना करने को इकट्ठे होते हुए} स्त्रियों को उचित कपड़े पहनने
चाहिए जो सभ्य और अर्थपूर्ण हों। उन्हें अपने बालों को विस्तृत तरीके से नहीं संवारना चाहिए, या सोने के गहने, या मोती, या महंगे कपड़ों के साथ सजने की
कोशिश नहीं करनी चाहिए। 10इसके स्थान पर, {उन्हें स्वयं को सुशोभित करना चाहिए} ऐसे कामों से जिन्हें ऐसी स्त्रियाँ करती हैं, जो परमेश्वर की आराधना
करने का दावा करती हैं। अर्थात्, उन्हें अच्छे काम {अन्य लोगों के लिए} करने चाहिए। 11स्त्रियों को {मण्डली के अगुवों से,} चुपचाप सीखना चाहिए, और हर
समय उनके अधीन रहना चाहिए। 12परन्तु मैं यह अनुमति नहीं देता हूँ कि स्त्रियाँ पुरुषों को शिक्षा दे, न ही पुरुषों के ऊपर अधिकार रखें। इसके स्थान पर,
स्त्रियों को शान्त रहना चाहिए। 13आखिरकार, परमेश्वर ने पहले आदम को बनाया था, और बाद में उसने हव्वा बनाई, 14और साँप ने आदम को धोखा नहीं
दिया। साँप ने स्त्री को धोखा दिया {जिससे उसने वही किया जिसे परमेश्वर ने उसे नहीं करने के लिए कहा था,} और वह एक पापिन बन गई। 15परन्तु {हालांकि
उसने ऐसा किया,} परमेश्वर स्त्रियों को बचाएगा, हालांकि {उन्हें} बच्चों को जन्म देने {का दर्द सहन करना पड़ेगा} यदि वे परमेश्वर में निरन्तर भरोसा रखती हैं,
और दूसरों को प्यार करती हैं, और ऐसे जीवन को व्यतीत करती हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है, और समझदारी से व्यवहार करती हैं।

Chapter 3

1सभी को इस कथन पर भरोसा करना चाहिए: "यदि कोई विश्वासियों का अगुवा बनने की इच्छा रखता है, तो वह एक अच्छा कार्य करने की इच्छा रखता है।"
2क्योंकि इस कारण, एक अगुवे को विश्वासियों में एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिस पर कोई किसी तरह की बुराई का दोष न लगा सके। उसे अपनी पत्नी के
प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए। उसे अत्याधिक कुछ नहीं करना चाहिए। उसे बुद्धिमानी से भरे तरीकों में सोचना चाहिए। उसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
और उसे अनजानों का स्वागत करना चाहिए। उसे दूसरों को सिखाने में सक्षम होना चाहिए। 3उसे एक शराबी नहीं होना चाहिए और झगड़ा करने में शीघ्रता नहीं
करनी चाहिए। इसके स्थान पर, उसे कोमल होना चाहिए और झगड़ालू नहीं होना चाहिए। उसे धन से प्रेम नहीं करना चाहिए। 4उसे अपने परिवार को अच्छी
तरह से अगुवाई देनी चाहिए और उसकी देखभाल करना चाहिए। उसके बच्चों को उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए और उसका पूरा सम्मान करना चाहिए,
5आखिरकार, यदि किसी को नहीं पता है कि उसे कैसे अच्छी तरह से अगुवाई देनी चाहिए और लोगों की देखभाल अच्छी तरह से करनी चाहिए जो उसके
अपने घर में रहते हैं, तो वह निश्चित रूप से परमेश्वर की मण्डली की देखभाल नहीं कर सकता है! 6एक नए विश्वासी को {विश्वासियों का अगुवा होने के लिए} के
लिए नियुक्त न कर, क्योंकि वह घमण्डी हो सकता है। तब परमेश्वर उसी कारण से उसका न्याय करेगा जिस कारण से उसने शैतान का न्याय किया था।
7विश्वासियों के एक अगुवे का भी आचरण ऐसा होना चाहिए कि गैर-विश्वासी भी उसके लिए अच्छा बोलें। तब लोग उसके बारे में बुरी बातें नहीं कहेंगे, और
शैतान उसे बंदी नहीं बना पाएगा जैसे एक जानवर को फंदे में फंसा लेते हैं। 8ठीक उसी तरह से, जिन लोगों को अगुवों की सहायता के लिए {नियुक्त किया
गया} है ऐसे लोग होने चाहिए जो गंभीर हैं। जब वे बोलते हैं तो उन्हें ईमानदार होना चाहिए। उन्हें बहुत अधिक दाखमधु नहीं पीनी चाहिए, और उनमें धन को
पाने की तीव्र इच्छा नहीं होनी चाहिए। 9उन्हें सदैव उस संदेश पर विश्वास करना चाहिए जो परमेश्वर ने अब हम पर उसमें विश्वास करने के बारे में प्रकट किया है,
जबकि अपने भीतर यह जानते हुए कि वे जो कुछ कर रहे हैं उसे परमेश्वर स्वीकार कर रहा है। 10परन्तु {जैसा तुम अगुवों के लिए करते हो,} वैसा ही तुम्हें पहले
इन सहायकों के व्यवहार के तरीके की जाँच करनी चाहिए। फिर, यदि तुम उनमें कोई दोष नहीं पाते हो, तो तुम उन्हें {सहायकों के रूप में} सेवा दे सकते हो।
11वैसे ही उनकी पत्नियों को गंभीर होना चाहिए, उन्हें लोगों के बारे में बुरी तरह से बात नहीं करनी चाहिए, और उन्हें सब कुछ संयम से करना चाहिए। उन्हें
अपने हर उस काम के प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए जिसे वे करती हैं। 12एक सहायक को अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए, और उसे अपने
बच्चों और अपने घर के शेष लोगों को अच्छी तरह से अगुवाई देनी चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए। 13जो सहायक अच्छी तरह से सेवा करते हैं, उन्हें
{इस तरह से सेवा करने से} फायदा होगा क्योंकि लोग उनका सम्मान करेंगे, और वे मसीह यीशु के बारे में जो विश्वास करते हैं, उसके बारे में बहुत साहसपूर्वक
बोलना सीखेंगे। 14मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही तेरे पास आऊँगा। परन्तु मैं अब इन बातों को तुझे लिखता हूँ 15कि यदि मैं शीघ्र नहीं आ पाता हूँ, मैं चाहता हूँ
कि तू जान ले कि विश्वासियों को परमेश्वर के परिवार में कैसे व्यवहार करना चाहिए, जो उन सभी लोगों का समूह है जो यीशु पर विश्वास करते हैं और जीवित
परमेश्वर से संबंधित हैं। इस समूह के लोग सच्चे संदेश पर विश्वास करते हैं और सिखाते हैं। 16अब सभी को इस बात पर सहमत होना चाहिए कि यह सत्य
सन्देश जो परमेश्वर ने हमारे ऊपर प्रकट किया है वह अद्भुत है: “मसीह परमेश्वर था जो मानवीय शरीर में इस संसार में आया था। पवित्र आत्मा ने प्रमाणित कर
दिया कि वह वास्तविक था। परमेश्वर के सन्देशवाहकों ने उसे देखा। विश्वासियों ने घोषणा की कि वह राष्ट्रों के लिए कौन था। संसार के कई हिस्सों के लोगों ने
उस पर विश्वास किया। परमेश्वर ने उसे प्रभावशाली रीति से ऊपर {अपने निमित्त स्वर्ग में} उठा लिया।"

Chapter 4

1अब परमेश्वर का आत्मा हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि आने वाले समय में कुछ लोग यीशु के बारे में सही संदेश पर विश्वास करना बंद कर देंगे। इसके स्थान
पर, वे बुरी आत्माओं को सुनेंगे जो लोगों को धोखा देती हैं, और झूठी शिक्षाओं को जिन्हें ये दुष्ट आत्माएँ सिखाती हैं। 2दुष्टात्माएं यह चीज़ें झूठ बोलने वालों
और केवल सही करने का दिखावा करने वालों के द्वारा सिखाती हैं। वे लोग इसके बारे में दोषी महसूस भी नहीं करते जब वे झूठी शिक्षा देते हैं। 3वे लोगों को
विवाह करने से रोकते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि उन्हें कुछ निश्चित प्रकार के भोजन नहीं खाने चाहिए। परन्तु परमेश्वर ने उस भोजन को कुछ ऐसा बनाया जिसे हम
उससे प्राप्त कर सकते हैं और उसके लिए धन्यवाद कर सकते हैं। उसने इसे हमारे लिए बनाया जो उस पर विश्वास करते हैं और जो जानते हैं कि सच क्या है।

4परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया है वह अच्छा है। किसी भी तरह का भोजन खाने के लिए स्वीकार्य है यदि हम इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं जब हम
इसे खाते हैं। 5जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और विश्वास करते हैं कि उसने क्या कहा, {कि उसने जो कुछ भी बनाया वह अच्छा था,} तब तो हम जिस
भोजन को खाते हैं वह उसके लिए ग्रहणयोग्य है। 6यदि तू अपने साथी विश्वासियों को ये बातें सिखाता रहेगा, तो तू यीशु मसीह की अच्छी तरह से सेवा करेगा।
तू आत्मिक रीति से दृढ़ बन जाएगा क्योंकि तू उस सच्चे संदेश का पालन करेगा जिसमें हम सभी विश्वास करते हैं। {वह सच्चा संदेश यह है} अच्छी शिक्षा
जिसका तू पालन कर रहा है। 7परन्तु व्यर्थ, मूर्खतापूर्ण कहानियों से कोई लेना-देना न रख। इसके स्थान पर, स्वयं को उन कामों को करने के लिए प्रशिक्षित कर
जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। 8याद रखें "क्योंकि शारीरिक व्यायाम करना तुझे थोड़ी ही सहायता देता है, परन्तु उन बातों को करना सीखना जो परमेश्वर को
प्रसन्न करती हैं तुझे हर तरह से सहायता देता है। {यह तेरे लिए अच्छा है} दोनों समयों में जब तू पृथ्वी पर रहता है और जब तू भविष्य में परमेश्वर के साथ रहेगा।
9सभी को इस कथन पर भरोसा करना चाहिए और इसे पूरी तरह से स्वीकार करना चाहिए। 10इस कारण से हम अत्याधिक कठिन परिश्रम करते हैं, उतना
अधिक कि जितना हम कर सकते हैं, क्योंकि हम पूरे निश्चय के साथ अपेक्षा करते हैं कि जीवित परमेश्वर उन बातों को करेगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है। वह
सारी मानवता का उद्धारकर्ता है, अपितु विशेष रूप से उन लोगों का उद्धारकर्ता है जो विश्वास करते हैं। 11इन बातों की आज्ञा दे और इन बातों की शिक्षा दे।
12कोई यह न कहने पाए कि तेरे कोई मूल्य नहीं है क्योंकि तू जवान है। इसके स्थान पर, दूसरे विश्वासियों को दिखा दे कि कैसे जीवन जीना है। उन्हें यह दिखा
कि तू कैसे बोलता है, तू कैसे व्यवहार करता है, तू दूसरों से कैसे प्यार करता है, परमेश्वर पर तेरा भरोसा कैसा है, और कैसे तू अपने आप को यौन रूप में शुद्ध
रखता है। 13जब तक मैं तेरे पास वापस नहीं आता, तब तक परमेश्वर के वचन को पढ़ता रहना {विश्वासियों के लिए जब तुम एक साथ इकट्ठे होते हो
{विश्वासियों को वचन की शिक्षा देता रहना} और आग्रह करता रहना {उन्हें इसका पालन करने के लिए} सुनिश्चित कर। 14उस वरदान के उपयोग को सुनिश्चित
कर जो तुझ में है, जिसे परमेश्वर ने तुझे तब दिया था जब कलीसिया के अगुवों ने तुझ पर हाथ रखे थे और बताया था कि परमेश्वर ने तेरे बारे में उनसे क्या कहा
है। 15उन सभी बातों को करना सुनिश्चित कर {जो मैंने तुझे करने के लिए कही हैं!} उन पर ध्यान केंद्रित कर ताकि हर कोई यह देख सके कि तू उन्हें {यीशु के
अनुयायी की तरह कैसे} सुधार रहा है। 16अपने आप को अत्याधिक सावधानी से नियंत्रित रख और उन बातों से जिसकी तू शिक्षा देता है। इन कामों को करता
रह, क्योंकि परमेश्वर न केवल तुझे वरन् उन लोगों को बचाने के लिए उनका उपयोग कर रहा है जो तेरी बात सुनते हैं।

Chapter 5

1किसी ऐसे व्यक्ति से कठोरता से बात न कर, जो तुझ से बड़ा है। इसके स्थान पर, उसे एेसे सलाह दें मानो कि वह तेरा पिता हो। छोटे पुरुषों को ऐसे सलाह दें
मानो कि वे तेरे भाई हो। 2जो तुझ से बड़ी है उस स्त्री को ऐसे सलाह दे मानो कि वह तेरी माँ हो। छोटी स्त्रियों को ऐसे सलाह दें मानो कि वे तेरी बहनें हो। {जब
तू यह सब कुछ करे, तो तुझे ऐसे व्यवहार करना चाहिए} जो पूरी तरह से उचित हो। 3सुनिश्चित कर कि {मण्डली} विधवाओं की देखभाल करती हो जिनके पास
वास्तव में उनकी देखभाल करने वाला कोई और नहीं है। 4परन्तु यदि किसी विधवा के बच्चे या पोते हैं, तो इन बच्चों या पोते को सबसे पहले यह सीखना चाहिए
कि उन्हें उनके अपने परिवार की देखभाल करनी है। {इसी तरह से} वे अपने माता-पिता {और दादा-दादी} को उन चीजों का बदला चुका सकते हैं {जिन्हें उन्होंने
उनके लिए उनके युवा होने तक किए थे,} क्योंकि ऐसा करने से परमेश्वर प्रसन्न होता है। 5एक विधवा जो वास्तव में अकेली है और उसके पास निश्चियपूर्ण रीति
से सहायता करने वाला कोई नहीं है अपेक्षा करती है कि परमेश्वर उसकी सहायता करेगा। इसलिए वह निरन्तर प्रार्थना करती है, और ईमानदारी से परमेश्वर से
उसकी सहायता करने के लिए कहती है। 6परन्तु एक विधवा जो केवल ऐसा जीवन व्यतीत करती है कि मानो स्वयं को प्रसन्न करने वाला हो आत्मिक रूप से
मरी हुई है, भले ही वह अभी भी शारीरिक रूप से जीवित है। 7इन बातों की भी शिक्षा दे, ताकि कोई यह न कहने पाए कि विश्वासी बुरा व्यवहार कर रहे हैं।
8परन्तु यदि कोई भी अपने रिश्तेदारों, और विशेष रूप से अपने ही घर में रहने वाले लोगों की देखभाल नहीं करता है, तो उसने उसे अस्वीकार कर दिया है
जिसमें हम विश्वास करते हैं। वह उस व्यक्ति से भी बुरा है जो मसीह में विश्वास नहीं करता है। 9एक विधवा को {सच्ची विधवाओं की} सूची में जोड़ यदि वह
कम से कम साठ वर्ष की है। वह भी अपने पति के प्रति विश्वासयोग्य भी रही हो। 10लोग उसके बारे में बोलें कि उसने अच्छे काम किए हैं। {उन्हें बताना चाहिए}
कि उसने अपने बच्चों का पालन पोषण अच्छी तरह से किया है, कि उसने अनजानों का स्वागत किया, कि उसने विनम्रतापूर्वक विश्वासियों की सेवा की है, कि
उसने लोगों की सहायता की है जो दुख उठा रहे थे, और यह कि वह सभी प्रकार के अच्छे काम करने के लिए उत्सुक थी। 11परन्तु सच्ची विधवाओं की सूची में
युवा विधवाओं को न जोड़। जब वे दृढ़ लालसाओं को महसूस करती हैं, तो वे केवल मसीह के प्रति ही समर्पित होने के बारे में अपने मन को बदल लेंगी और वे
फिर से विवाह करना चाहेंगी। 12{जब वे ऐसा करती हैं,} तब वे {विधवा रहने की} अपनी पूर्व प्रतिबद्धता को तोड़ने की ओर वापस जाने की दोषी बन जाती हैं।
13{परन्तु भले ही वे अपनी पहली प्रतिबद्धता नहीं तोड़ती हैं,} वे कुछ भी नहीं करने के आदी हो जाते हैं। वे एक घर से दूसरे घर में जाती हैं, कुछ नहीं करती हैं,
वरन् लोगों के बारे में भी बात करती हैं और दूसरे लोगों मामलों में दखल देती हैं। वे ऐसी बातें कहते हैं जो उन्हें नहीं कहनी चाहिए। 14इसलिए, {कलीसिया युवा
विधवाओं को सच्ची विधवाओं की सूची में जोड़े इसके स्थान पर,} मैं युवा विधवाओं के पुनर्विवाह करने और बच्चों को जनना पसंद करता हूँ। इन स्त्रियों को
अपने घरों का प्रबंधन अच्छी तरह से करना चाहिए। इस तरह वे शत्रु, {शैतान,} को बदनाम करने का आरोप लगाने का कोई अवसर न देंगी। 15{मैं ये बातें
इसलिए लिखता हूँ} क्योंकि कुछ {जवान विधवाएँ} पहले से ही {मसीह की आज्ञा का पालन करना बंद चुकी हैं और इसके बजाय} शैतान की आज्ञा पालन कर
रही हैं। 16यदि किसी भी विश्वास करने वाली स्त्री के पास {उसके रिश्तेदारों के बीच} में विधवाएँ हैं, तो उन्हें उनकी सहायता करनी चाहिए। इस तरह से,
विश्वासियों के समूह को अधिक विधवाओं की देखभाल करने में सक्षम नहीं होना पड़ेगा, जितना कि वे इसके योग्य हैं। विश्वासियों का समूह तब सच्ची विधवाओं
की सहायता करने में सक्षम होगा {जिनके पास देखभाल के लिए परिवार का कोई सदस्य नहीं है।} 17विश्वासियों को उन बुजुर्गों को सम्मान और अदायगी देनी
चाहिए जो उनकी अगुवाई अच्छी तरह से करते हैं, और विशेष रूप से उन बुजुर्गों को जो उपदेश और शिक्षा देने में {जैसा वचन कहता है} कड़ा परिश्रम करते हैं
। 18{हम जानते हैं कि यह सही है} क्योंकि हम पवित्रशास्त्र में निम्नलिखित को पढ़ते हैं {कि मूसा ने लिखा है}: "जब एक बैल अनाज दाव रहा होता है, तो तुम्हें
उसका मुँह नहीं बाँधना चाहिए जिससे कि वह अनाज खा सके।" और {हम यह भी जानते हैं कि यह सही है क्योंकि यीशु ने कहा, "लोगों को उनके परिश्रम की
अदायगी करनी चाहिए जो उनके लिए काम करते हैं।" 19केवल उस व्यक्ति की सुन जो एक बुजुर्ग पर गलत करने का आरोप लगाता है यदि दो या तीन लोग

विषय के बारे में गवाही देते हैं। 20{जब तुम आराधना करने के लिए इकट्ठे होते हो,} तो उन लोगों को सुधार जो सबके सामने पाप करते हैं, ताकि बाकी {लोग}
{पाप करने के लिए} डरें। 21परमेश्वर और मसीह यीशु और परमेश्वर के चुने हुए स्वर्गीय सेवकों के साथ जो मुझे देख रहे हैं और मेरी बात सुन रहे हैं, मैं तुझसे
केवल उन निर्देशों का पालन करने के लिए सत्यनिष्ठा से कहता हूँ जो मैंने तुझे अभी-अभी दिए हैं। हर विषय का निष्पक्षता से न्याय कर और एक व्यक्ति की
तुलना में दूसरे के साथ पक्षपात न कर। 22किसी की {समूह के अगुवे के रूप में} नियुक्त करने की शीघ्रता न कर।} {यदि वह पाप करता है,} तो तू इसके लिए
आंशिक रूप से जिम्मेदार होगा। तूझे अपने आप को बिना किसी दोष के रखना होगा। 23अब केवल पानी को ही पीने वाला न रह{तीमुथियुस।} इसके स्थान
पर, अपने पेट की निरन्तर बीमारियों की चंगाई के लिए थोड़ी सी दाखमधु पीया कर। 24जब कुछ लोग पाप करते हैं, तो हर कोई इसके बारे में जानता है और
{जानता है कि परमेश्वर} {इसके लिए} उनका न्याय करेगा। परन्तु जब दूसरे लोग पाप करते हैं, तो कोई भी इसके बारे में देर तक नहीं जानता है। 25ठीक उसी
तरह, हर कोई {अधिकांश} उन अच्छी चीजों के बारे जानते हैं जिन्हें लोग करते हैं। परन्तु जब लोग गुप्त रूप से अच्छे काम करते हैं, तब हर कोई उन्हें बाद में
पता लगा लेते हैं।

Chapter 6

1सभी {विश्वासी} जो दास हैं अपने स्वामी का हर तरह से सम्मान करना चाहिए। तब लोग परमेश्वर की प्रतिष्ठा का अपमान नहीं करेंगे या उन बातों का जिनकी
शिक्षा हम देते हैं। 2जिन दासों के स्वामी मसीह में विश्वास करते हैं, उन्हें उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि उनके स्वामी साथी विश्वासी हैं। इसके स्थान
पर, उन्हें अपने स्वामियों की सेवा सर्वोत्तम तरीके से करनी चाहिए क्योंकि वे जिनकी सेवा करते हैं, वे भी मसीह में विश्वास करते हैं और परमेश्वर उनसे प्रेम
करता है। इन बातों को सिखा और {अपने लोगों से उन्हें करने का आग्रह कर।} 3कुछ लोग ऐसी बातें सिखाते हैं जो सच्ची नहीं हैं। वे हमारे प्रभु यीशु के मसीह
के बारे में विश्वसनीय शिक्षा को स्वीकार नहीं करते हैं और वे इस शिक्षा को स्वीकार नहीं करते हैं कि ऐसे जीवन को कैसे व्यतीत किया जाए जो परमेश्वर को
प्रसन्न करता हो। 4इन लोगों को अभिमान है, परन्तु वे कुछ भी नहीं समझते हैं। इसके स्थान पर, वे असामान्य रूप से महत्वहीन विषयों और कुछ निश्चित शब्दों
के बारे में बहस करने की इच्छा रखते हैं। उनका व्यवहार उन्हें अन्य लोगों से ईर्ष्या करने का कारण बनता है। वे दूसरों के साथ झगड़ा करते हैं, दूसरों के बारे में
बुरी बातें कहते हैं, और संदेह करते हैं कि दूसरों के उद्देश्य बुरे है। 5वे लगातार दूसरे लोगों के साथ झगड़ा करते हैं। उनका सोचने का पूरा तरीका ही पूरी तरह से
गलत हो गया है। उन्होंने सच्ची शिक्षा को अस्वीकार कर दिया है। परिणामस्वरूप, वे सोचते हैं कि भक्तिपूर्ण रीति से जीवन जीने का उद्देश्य भौतिक चीजों को
प्राप्त करना है। 6परन्तु जब हम भक्तिपूर्ण रीति से जीवन व्यतीत करते हैं तब हम अत्याधिक लाभ को प्राप्त करते हैं और जब हमारे पास जो कुछ होता है तब
हम उससे संतुष्ट होते हैं। 7यह सच है क्योंकि हम संसार में कुछ भी नहीं लाए थे {जब हम पैदा हुए थे,} और हम इसमें से कुछ भी साथ ले जाने के योग्य नहीं
होते {जब हम मरते हैं।} 8इसलिए यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं, तो हमें उन चीज़ों से संतुष्टि प्राप्त होनी चाहिए। 9परन्तु कुछ लोग धनवान बनने की
प्रबल इच्छा रखते हैं। परिणामस्वरूप, वे पैसा पाने के लिए गलत काम करते हैं। फिर उनके साथ बुरी बातें होती हैं, जिनसे वे बच नहीं सकते। वे मूर्खतापूर्ण
रीति से कई चीजों की इच्छा रखते हैं जो उन्हें नुकसान पहुँचाएँगी और, अन्त में, ये चीजें उन्हें नष्ट करती हैं। 10तुम देखते हो, जब लोग बहुत सारा धन पाने की
इच्छा रखते हैं तो वे हर तरह के बुरे काम करते हैं। कुछ लोग पैसे के अभिलाषी हो गए हैं और इसलिए उन्होंने यीशु का अनुकरण करने की अभिलाषा करना
बंद कर दिया है। ऐसा करने के द्वारा, उन्होंने स्वयं को हर तरीके से उदास कर लिया है। 11परन्तु तू, जो परमेश्वर की सेवा करता है, इन बुरी बातों से बच। इसके
स्थान पर, यह निर्धारित कर कि तू वही करेगा जो सही है, और यह कि तू परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जीवन व्यतीत करेगा। परमेश्वर पर भरोसा रख, और
दूसरों से प्रेम कर। कठिन परिस्थितियों में धैर्य धर। सदैव लोगों के प्रति नम्र बना रह। 12तू जिसमें विश्वास करता है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिए
अपने पूरे प्रयास को यह जानते हुए लगा कि यह अच्छी चीज़ है। सुनिश्चित कर कि तेरे पास अनन्त जीवन का वरदान है जिसे परमेश्वर ने तेरे लिए चुना है जब
तूने कई गवाहों के सामने खुले आम कई गवाहों के सामने घोषणा की थी कि तू मसीह से संबंधित है। 13{हम उपस्थिति में हैं} परमेश्वर की जो सभी चीजों को
जीवन देता है। {हम उपस्थिति में हैं} मसीह यीशु की जिसने साहसपूर्ण रीति से जो सच था की घोषणा की जब उसकी जाँच पुन्तियुस पिलातुस के सामने हो रही
थी। {उस उपस्थिति में,} मैं यह आज्ञा तूझे देता हूँ। 14मसीह ने हमें जो आज्ञा दी है, उसका पालन कर। कुछ भी गलत न कर। इससे कोई तेरी आलोचना करने
के योग्य न होगा। {निरन्तर आज्ञा का पालन कर} जब तक हमारा प्रभु यीशु मसीह फिर से वापस नहीं आ जाता। 15परमेश्वर सही समय पर यीशु को फिर से
वापस भेजेगा। हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वही एकमात्र शासक है! वह अन्य सभी राजाओं के ऊपर राजा है और अन्य सभी शासकों पर प्रभु है! 16परमेश्वर
ही एकमात्र ऐसा है जो कभी नहीं मरेगा, और वह {स्वर्ग में}ज्योति में रहता है जो इतनी अधिक उज्ज्वल है कि कोई भी उस तक नहीं पहुँच सकता है! वह ऐसा
है जिसे किसी व्यक्ति ने कभी नहीं देखा है और उसे कोई भी व्यक्ति देखने में सक्षम नहीं है! मेरी इच्छा यह है कि सभी लोग उसका सम्मान करें और वह सदैव
के लिए सामर्थ्य के साथ शासन करेगा! ऐसा ही हो! 17उन विश्वासियों को कह जो इस वर्तमान संसार में धनी हैं कि उन्हें घमण्डी नहीं होना चाहिए। उन्हें अपनी
कई तरह की संपत्तियों पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे निश्चित नहीं हो सकते हैं कि यह उनके पास कितनी देर तक रहेगी। इसके स्थान पर, उन्हें
परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। क्योंकि यह वही है जो हमें प्रचुर मात्रा में वह सब कुछ देता है जो हमारे पास है, और वह चाहता है कि हम उसका आनन्द ले
सकें। 18इन धनी विश्वासियों को अच्छे कामों को करने के लिए कह। उन्हें {बहुत सारे धन को इक्ट्ठा करने के स्थान पर}बहुत सारे अच्छे काम करने की इच्छा
रखनी चाहिए। उन्हें {अपनी संपत्ति के साथ}उदार होना चाहिए और {जो कुछ उनके पास है इसे दूसरों} के साथ साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
19{यदि वे ऐसा करते हैं, तो यह ऐसा होगा कि मानो} वे स्वर्ग में अपने भविष्य के जीवन के लिए कई अच्छी चीजों का भंडारण कर रहे हैं। तब वे उस जीवन को
प्राप्त करने के लिए अच्छी तरह तैयार होंगे जिसे परमेश्वर उन्हें देने जा रहा है। वही वास्तविक जीवन है। 20हे तीमुथियुस, उस सच्चे संदेश की रक्षा कर जिसे
परमेश्वर ने तुझे दिया है। उन लोगों से बच जो उन कामों के बारे में बात करना चाहते हैं जो परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं। ऐसे लोगों से भी बच, जो झूठा
दावा करते हैं कि उनके पास सच्चा ज्ञान है, परन्तु ऐसी बातों को कहते हैं जो हमारे द्वारा सिखाई गई सच्ची बातों का विरोध करती हैं। 21कुछ निश्चित लोग इन
बातों में विश्वास करते हैं और उन्होंने परमेश्वर के बारे में सच्चाई पर विश्वास करना बंद कर दिया है। परमेश्वर तुम सभी के ऊपर दया करे।

2 तीमुथियुस

Chapter 1

1पौलुस की ओर {से}, एक व्यक्ति जो यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि यह वह है जिसे परमेश्वर चाहता है {कि मैं करूँ} । मैं दूसरों को बताता हूँ
कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि हम मसीह यीशु के साथ {सदैव} जीवित रह सकते हैं। 2तीमुथियुस को। मैं तुझसे ऐसे प्रेम करता हूँ जैसे कि तू मेरा अपना पुत्र
हो। परमेश्वर हमारा पिता और मसीह यीशु हमारा प्रभु तुझ पर अनुग्रह करे और तेरे प्रति दयालु रहे, और तुझ पर अपनी शांति बनाए रखें।

3मैं अपने पूर्वजों की तरह ही परमेश्वर की सेवा करता हूँ, क्योंकि मैं वास्तव में वही करना चाहता हूँ जिसे वह चाहता है। जब मैं तेरे लिए प्रार्थना करता हूँ तो मैं
परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। मैं सदैव अपनी प्रार्थनाओं में हर समय तेरा उल्लेख करता हूँ। 4जैसा कि मुझे स्मरण है कि तू {जब हम अलग हुए थे} कैसे रोया
था, मैं वास्तव में तुझे {फिर से} देखना चाहता हूँ। तब मैं आनन्द से भर जाऊँगा। 5मुझे यह भी स्मरण है कि तू सच में {यीशु में} कैसे विश्वास करता है। तेरी दादी
लोइस ने सबसे पहले विश्वास किया, और फिर तेरी माँ यूनीके ने भी विश्वास किया। मुझे पता है कि तू भी सच में उसी तरह विश्वास करता है जैसे वे करती हैं!

6क्योंकि तू यीशु में दृढ़ता से विश्वास करता है, मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू फिर से उस {आत्मिक} वरदान का उपयोग करना शुरू कर दे जिसे परमेश्वर ने तुझे
दिया है। जब मैंने तुझ पर हाथ रखा {और तेरे लिए प्रार्थना की} था तब तुझे यह वरदान मिला था {जो तुझे उस काम को करने में योग्य बनाता है जिसे करने के
लिए परमेश्वर ने तुझे चुना है}। 7{इस वरदान का उपयोग निधड़क कर,} क्योंकि परमेश्वर ने हमें भयभीत करने के लिए अपना आत्मा नहीं दिया है। इसके
बजाय, उसका आत्मा हमें प्रेम {उसे और दूसरों को} करने के लिए, और अपने आप पर नियंत्रित रखने के लिए सामर्थी बनाता है {जब हम परमेश्वर के लिए
काम करते हैं}।

8इसलिए लोगों को हमारे प्रभु के बारे में बताने में लज्जित न हो। मेरे लिए लज्जित न हो, भले ही मैं कैदी हूँ, क्योंकि मैं उसके बारे में प्रचार करता हूँ। इसके
बजाय, मेरे साथ क्लेश सहने के लिए तैयार रह जब तू {भी} दूसरों को सुसमाचार के बारे में बताता है, क्योंकि परमेश्वर तुझे {इन क्लेशों को सहन करने के लिए}
सामर्थी करेगा। 9{वह ऐसा इसलिए करेगा क्योंकि} उसने हमें बचाया है और हमें एक ऐसे लोगों के रूप में बुलाया जिसे वह {उसके अपनों के रूप में} अलग
करता है। परमेश्वर ने हमें हमारे द्वारा किये गये अच्छे कामों के कारण नहीं बचाया है.। इसके बजाय, उसने हमें इसलिए बचाया क्योंकि यह हमारे प्रति उसके
दयालु होने की योजना थी, भले ही हम इसके लायक नहीं थे। जो कुछ यीशु जो मसीह है हमारे लिए करेगा उसकी योजना उसने संसार के आरम्भ होने से पहले
हमारे लिए बनाई थी। 10अब यीशु जो मसीह है, वह जन जो हमें बचाता है, आया है। परिणामस्वरूप, हर कोई {हमें बचाने के लिए परमेश्वर की अनुग्रहकारी
योजना} को जान सकता है। {विशेषकर}, यीशु ने सुसमाचार की घोषणा की है कि मरने के बाद हम मरे हुए नहीं रहेंगे। इसके बजाय, हम सदैव के लिए ऐसे
शरीरों में जीवित रहेंगे जो नाश नहीं होंगे! 11परमेश्वर ने मुझे प्रचार करने और इस सुसमाचार को सिखाने के लिए लोगों के बीच अपने प्रतिनिधि के रूप में जाने
के लिए नियुक्त किया है। 12यही कारण है कि मैं यहाँ {इस कारागार में} दु:ख उठा रहा हूँ, पर मैं {यहाँ होने में}, शर्मिंदा नहीं हूँ, क्योंकि मैं मसीह यीशु को
जानता हूँ और मुझे उस पर भरोसा है। मुझे दृढ़ निश्चय है कि वह मुझे उस दिन {जब तक वह वापस नहीं आ जाता} तक विश्वासयोग्य बनाए रखने में योग्य है।

13सुनिश्चित कर ले कि तू दूसरों को वही सटीक संदेश बतानेवाला है जिसे तूने मुझसे सुना है। {जैसा तू इसे बताता है,} मसीह यीशु में भरोसा करता रह और
दूसरों से प्रेम करता रह क्योंकि मसीह यीशु तुझे ऐसा करने में योग्य करता है। 14इस सुसमाचार की रखवाली कर जो परमेश्वर ने तुझे {उसके लोगों के लिए}
सौंपा है। हम में वास करनेवाला पवित्र आत्मा तेरी मदद {ऐसा करने के लिए} करेगा।

15तू जानता है कि एशिया {माइनर} के {प्रांत} के लगभग सारे विश्वासियों ने मुझे छोड़ दिया है, जिसमें फूगिलुस और हिरमुगिनेस भी शामिल हैं। 16{पर} मैं
प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु उनेसिफुरूस के परिवार पर दया करे, क्योंकि उसने अक्सर मेरी मदद की, और वह शर्मिंदा नहीं था कि मैं कारागार में हूँ। 17इसके
विपरीत, जब वह रोम आया तो वह मुझे तब तक ढूँढता रहा जब तक कि वह मुझे नहीं मिल गया। 18तुझे यह भी अच्छी तरह से स्मरण होगा कि उसने इफिसुस
{के शहर} में {मेरी जब मैं वहां था} कितनी मदद की थी। {इसलिए} मैं प्रार्थना करता हूँ कि {अंतिम} दिन {जब प्रभु सभी का न्याय करेंगे} उनेसिफुरूस के प्रति
दयालु रहे।

Chapter 2

1इसलिए {जहाँ तक} तेरी बात है, {तीमुथियुस,} मसीह यीशु तुझे सामर्थी बनाए जब वह तेरे प्रति दयालुता भरा व्यवहार दिखाता है। तू मेरे लिए एक पुत्र के
जैसा है। 2तूने मेरी शिक्षाओं को बहुत से लोगों की मौजूदगी में सुना है जो उनकी पुष्टि कर सकते हैं। {अब तुझे} इन बातों को सावधानी से {कुछ अन्य लोगों को
सिखाना होगा। ये होने चाहिए} विश्वसनीय लोगों सिखाना होगा, जो बदले में, दूसरों को सिखाने के लिए योग्य होंगे।

3{मेरे} साथ दु:ख में शामिल हो जैसे कि हम यीशु मसीह की आज्ञा पालन करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक अच्छा सैनिक दु:ख उठाता है {जब वह अपने
सेनापति की आज्ञा पालन करता है}। 4{तू जानता है कि} जो लोग अपने सेनापति को प्रसन्न करने के लिए सैनिकों के रूप में सेवा करते हैं, वे नागरिक
व्यवसायों में शामिल नहीं होते हैं। 5इसी तरह से, खेलों में प्रतिस्पर्धा करने वाले खिलाड़ी तब तक नहीं जीत सकते जब तक वे नियमों का पालन नहीं करते हैं।

6परिश्रम करने वाले किसान को फसल में से पहले अपना हिस्सा मिलना चाहिए। 7जो मैंने अभी-अभी लिखा है उसके बारे में सोच, क्योंकि {, यदि तू ऐसा
करता है,} तो प्रभु तुझे {इसे} पूरी तरह से समझने में योग्य करेगा। 8{जब तू क्लेशों को सहता है,} तो यीशु जो मसीह है को स्मरण रख, जिसे परमेश्वर ने मरे
हुओं में से जिलाया। वह राजा दाऊद का वंशज है। यह सुसमाचार है जिसका मैं प्रचार करता हूँ। 9इसके लिए {सुसमाचार} मैंने बहुत सी बातों को सहा है,
जिसमें अब यह भी शामिल है कि सैनिकों ने मुझे एक अपराधी के रूप में कैद किया हुआ है। पर परमेश्वर के सन्देश को कोई भी कैद नहीं कर सकता है!
10इसलिए मैं स्वेच्छा से परमेश्वर के चुने हुए लोगों के कारण यह सब सहता हूँ जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। मैं यह इसलिए करता हूँ कि मसीह यीशु उन्हें भी बचाए,
और यह कि वे उसकी महिमामयी उपस्थिति में सदैव उसके साथ रहें। 11तू इस संदेश के ऊपर निर्भर हो सकता है {जिसका हम प्रचार करते हैं}:

“जब यीशु हमारे लिए मरा, तो यह मानो ऐसा था कि वह पुराना, पापी व्यक्ति अर्थात् हम भी उसके साथ मर गए। यदि हमने ऐसा किया है, तो हम भी उसके साथ रहेंगे।

12यदि हम दु:ख को स्वीकार करते हैं {जो इस जीवन में यीशु की आज्ञा पालन करने से आता है}, तो हम भी {अगले जीवन में} उसके साथ {हर चीज के ऊपर}
राज्य करेंगे।

पर यदि हम कहें कि हम उसे नहीं जानते, तो वह भी यह कहेगा कि वह हमें नहीं जानता है।

13यदि हम {यीशु के प्रति} अविश्वासयोग्य हैं, तो वह {हमारे प्रति} निरन्तर विश्वासयोग्य बना रहता है,

क्योंकि वह अपने आप में झूठा नहीं हो सकता है।

14इन बातों के बारे में {विश्वासियों} को स्मरण दिलाता रह {जो मैंने तुझे बताईं हैं}। उन्हें चेतावनी दे कि परमेश्वर सुन रहा है और उन्हें {कौन से} शब्द {परमेश्वर
के संदेश को व्यक्त करने के लिए सही हैं} के ऊपर झगड़ा नहीं करना चाहिए। इस तरह तर्क-वितर्क करने से कुछ भी मदद नहीं मिलती है और जो लोग सुनते हैं
वे यीशु के पीछे चलना छोड़ सकते हैं।

15ऐसा व्यक्ति बनने के लिए भरसक प्रयास कर जिसे परमेश्वर स्वीकृति देता है। एक ऐसे काम करने वाले तरह बन जो जानता है कि वह भला काम कर रहा है
जब तू सच्चे संदेश की सही शिक्षा देता हैं।

16व्यर्थ के ऐसे वार्तालापों से दूर रह जो परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं, क्योंकि इस प्रकार की बातों से लोग परमेश्वर का अनादर अधिकाधिक करते हैं। 17इस तरह
बोलना संक्रामक रोग की तरह फैलेगा। हुमिनयुस और फिलेतुस इस तरह से बात करने वाले पुरुषों के दो उदाहरण हैं। 18ये लोग उन बातों पर विश्वास करते हैं
और सिखाते हैं जो सच्ची नहीं हैं। वे {गलत तरीके से} कहते हैं कि परमेश्वर पहले से ही अपने लोगों को मरे हुओं में से जिला चुका है {और ऐसा फिर कभी नहीं
करेगा}। इस तरह वे कुछ {विश्वासियों} को {मसीह पर} भरोसा ना करने के लिए मना लेते हैं। 19तौभी, परमेश्वर के बारे में सत्य अभी भी विद्यमान है। यह एक
भवन की दृढ़ नींव की तरह है, जिस पर किसी ने ये शब्द लिखे हैं: "प्रभु उन्हें जानता है जो उससे संबंधित हैं" और "जो कोई कहता है कि वह प्रभु का है उसे बुरे
कामों को करना बंद कर देना चाहिए।"

20एक धनवान के घर में न केवल सोने और चाँदी के पात्र होते हैं, बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी पात्र होते हैं। मालिक बड़े और आदर से भरे हुए अवसरों पर
सोने और चांदी के पात्रों का उपयोग करता है। पर वह लकड़ी और मिट्टी के पात्रों का उपयोग साधारण और अनादर वाले कामों के लिए करता है। 21इसलिए,
अपने जीवन में बुराई से छुटकारा पाने वाला हर एक उस पात्र की तरह होगा जिसे किसी ने पूरी तरह से साफ कर दिया है ताकि इसका मालिक इसे किसी भी
अवसर, यहाँ तक कि सबसे विशेष के लिए उपयोग कर सके। उसी तरह से, जब एक व्यक्ति अपने जीवन में बुराई से छुटकारा पाता है, तो परमेश्वर उसे योग्य
जानता है और वह किसी भी भले काम के लिए उसका उपयोग कर सकता है। 22इसलिए उन पापी कामों को करने से बच जिसकी इच्छा अक्सर युवा लोग
करते हैं। इसके बजाय, उन लोगों के साथ सही काम करने का प्रयास कर, परमेश्वर पर भरोसा कर और उससे और दूसरों से प्रेम कर, और दूसरे लोगों के साथ
शांति के साथ रह, जो ईमानदारी से प्रभु की आराधना करते हैं।

23किसी को भी अपने साथ उन विषयों पर तर्क-वितर्क न करने दें, जिनके बारे में केवल अशिक्षित और मूर्ख लोग ही बात करते हैं। तू जानता है कि जब लोग
ऐसी बातों के बारे में बात करते हैं, तो वे झगड़ा करने लगते हैं। 24पर जो प्रभु की सेवा करता है उसे झगड़ा नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, उसे सभी लोगों के
प्रति दयालु होना चाहिए। उसे {अच्छी तरह से परमेश्वर के सत्य को} सिखाने में योग्य होना चाहिए। उसे लोगों के साथ धैर्य रखना चाहिए। 25उसे उन लोगों को
कोमलता से निर्देश देना चाहिए जो उसके विरुद्ध तर्क-वितर्क करते हैं। हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें [उनकी गलत सोच के लिए] पश्चाताप करने और सत्य को
जानने के लिए अगुवाई दे। 26इस तरह से वे फिर से सही सोच सकते हैं। उन्हें एहसास होगा कि शैतान उन्हें भरमा रहा है और उन्हें नियंत्रित कर रहा है ताकि वे
वही करें जिसे वह चाहता है।

Chapter 3

1पर तुझे यह महसूस करने की जरूरत है कि अंतिम समय की अवधि {मसीह के लौटने से पहले} {विश्वासियों के लिए} बहुत ही खतरनाक होगी। 2ऐसा
इसलिए है क्योंकि लोग अपने आप को किसी दूसरे से ज्यादा प्रेम करेंगे। वे धन से प्रेम करेंगे। वे अपने बारे में डींगे हाँकेंगे। उन्हें घमण्ड होगा। वे दूसरों का
अपमान करेंगे। वे अपने माता-पिता की बात नहीं मानेंगे। वे किसी को किसी भी बात के लिए धन्यवाद नहीं देंगे। वे परमेश्वर का आदर नहीं करेंगे। 3वे दूसरों से
प्रेम नहीं करेंगे। वे किसी के साथ भी शांति से रहने से इंकार कर देंगे। वे दूसरों को बदनाम करेंगे। वे अपने आप पर नियंत्रण नहीं रखेंगे। वे दूसरों के प्रति क्रूर

होंगे। वे किसी भी चीज से घृणा करेंगे जो अच्छी है। 4वे उसी के साथ विश्वासघात करेंगे {जिनकी उन्हें रक्षा करनी चाहिए}। वे बिना सोचे खतरनाक कामों को
करेंगे। उन्हें घमण्ड होगा। वे परमेश्वर से प्रेम करने के बजाय वही करेंगे जो उन्हें प्रसन्न करता है। 5वे धार्मिक होने के {बाहरी} दिखावे को बनाए रखेंगे, पर वे
परमेश्वर को वास्तव में अपने सामर्थी कार्य को {उनके भीतर} करने की अनुमति देने से इंकार कर देंगे। ऐसे लोगों से दूर रह। 6उनमें से कुछ लोगों को भरमा कर
उन्हें उनके घरों में आने देते हैं, जहाँ पर वे मूर्ख स्त्रियों की सोच को नियंत्रित करना आरम्भ कर देते हैं। ये वे स्त्रियाँ हैं जो निरन्तर पाप करती रहती हैं, और जो
कुछ भी उनका करने का मन करता है उसे करती रहती हैं। 7भले ही ये स्त्रियाँ सदैव नई बातें सीखना चाहती हैं, पर वे कभी भी यह नहीं पहचान पाती हैं कि
वास्तव में सत्य क्या है। 8जिस तरह यन्नेस और यम्ब्रेस {फिरौन के जादूगर,} ने {फिरौन को उस पर विश्वास करने से रोकने का प्रयास किया था जिसे} मूसा {उसे
बता रहा था}, ठीक वैसे ही ये लोग भी {यीशु के बारे में} सच्चे सन्देश में {लोगों को विश्वास करने से} रोकने का प्रयास करते हैं। ये लोग जिस तरह से सोचते हैं
उसी में नाश हो जाते हैं। {वे शिक्षक बनने के योग्य नहीं हैं क्योंकि} वे केवल यीशु में विश्वास करने का दिखावा मात्र करते हैं। 9इसलिए भले ही वे कुछ लोगों को
गलत बातें सिखाने में सक्षम रहे हैं, वे लगातार सफल नहीं होंगे, क्योंकि अधिकांश दूसरे लोग स्पष्ट समझ जाएंगे कि ये लोग कुछ भी नहीं समझते हैं। यह उनके
साथ ठीक वैसे ही होगा जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस के साथ हुआ था, जब लोगों को पता चला कि वे मूर्ख हैं।

10पर जहाँ तक तेरी बात हैं, तू अच्छी तरह से जानता है कि मैं क्या शिक्षा देता हूँ और यही तू सिखाता है। तू जानता है और मेरी जीवन शैली की नकल करता है
और यह कि मैं कैसे परमेश्वर की सेवा करने के लिए सब कुछ करता हूँ। तूने मेरी ही तरह परमेश्वर पर भरोसा किया है। तूने देखा है कि मेरे पास तब भी शांति है
जब मैं दुःख उठा रहा हूँ। तूने देखा है कि मैं परमेश्वर और विश्वासियों से प्रेम करता हूँ। तूने देखा है कि मैं परमेश्वर की सेवा तब भी करता हूँ जब ऐसा करना
अत्याधिक कठिन होता है। 11तूने लोगों को मुझे सताते हुए देखा है। जब मैं अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा {के शहरों} में था, तब तूने देखा कि मैंने क्या सहा
है। {तूने देखा है कि कैसे} मैंने उन तरीकों को सहा जिनसे लोग मुझे {उन स्थानों में} सताते थे, पर प्रभु ने मुझे उन सभी परिस्थितियों से बचने में योग्य किया।
12यह सच है कि लोग उन सभी विश्वासियों को सताएँगे जो इस तरह से जीवन जीना चाहते हैं जिसमें वे मसीह यीशु के साथ अपने संबंध के द्वारा परमेश्वर का
आदर करते हैं। 13बुरे लोग जो {विश्वासी होने का} बहाना बनाते हैं वे अधिक से अधिक बुरे होते चले जाएंगे। वे लोगों को उन बातों पर विश्वास करने के लिए
प्रेरित करेंगे जो सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे स्वयं अधिक से अधिक उन बातों पर विश्वास करते हैं जो सत्य नहीं हैं। 14परन्तु, इसके विपरीत, तूने जो सीखा है और
जिसमें दृढ़ता से विश्वास करता है उसमें निरन्तर विश्वास करता रह। {तू भरोसा कर सकता है कि ये बातें सत्य हैं,} क्योंकि तू जानता है {कि} जिन लोगों ने तुझे
ये बातें सिखाई हैं वे {भरोसेयोग्य हैं}। 15{तू} यह भी {जानता है कि ये बातें सत्य हैं} क्योंकि जब तू एक बालक ही था तब से तू जानता है कि परमेश्वर
पवित्रशास्त्र में क्या कहता है। पवित्रशास्त्र तुझे यह समझने में सक्षम बनाता है कि जब हम मसीह यीशु पर भरोसा करते हैं तो परमेश्वर हमें कैसे बचाता है।
16सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर के आत्मा से आता है। वह {लोगों को परमेश्वर के बारे में सत्य की} शिक्षा देने के लिए उपयोगी है। वह {लोगों} यह जानने में मदद
करता है कि वे कब गलती कर रहे हैं और {उन्हें} यह समझने में मदद करता है कि सही क्या है, और वह {लोगों} को सही क्या है को कैसे करने है का प्रशिक्षण
देने में उपयोगी हैं। 17इन तरीकों से, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की सेवा करने वाले विश्वासियों को पूरी तरह से तैयार होने और हर तरह के भले काम को करने के
लिए आवश्यक सब कुछ को प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

Chapter 4

1{तीमुथियुस,} अब मैं तुझे दृढ़तापूर्वक {कुछ काम करने के लिए, और} सुधि दिलाता हूँ जब परमेश्वर और मसीह यीशु हमें देखता और सुनता है {, वे भी तुझसे
उसे करने की अपेक्षा करेंगे}। {स्मरण रख कि} मसीह यीशु उन सभी लोगों का न्याय करने के लिए आ रहा है जो अभी तक रहे हैं। जितनी दृढ़ता से तू यीशु को
देखना चाहता है और उसके राज्य का हिस्सा बनना चाहता है जब वह फिर से राजा के रूप में राज्य करने के लिए आएगा, उतनी ही दृढ़ता से मैं तुझे सुधि
दिलाता हूँ 2{मसीह के बारे में} संदेश की घोषणा करने के लिए। ऐसा करने के लिए तैयार रह जब ऐसा करना आसान हो और जब ऐसा करना आसान न हो।
लोगों को सुधार जब उन्होंने गलत किया है। उन्हें {पाप न करने की} चेतावनी दें। उन्हें सही काम करने के लिए उत्साहित कर। {जब तू ये सब बातें करता है,} तो
उन्हें अत्याधिक धैर्य से शिक्षा दे। 3{मैं तुझे ये बातें इसलिए कहता हूँ क्योंकि} बाद में लोग सटीक शिक्षा सुनना नहीं चाहेंगे। इसके बजाय, वे जितना हो सके
उतने शिक्षकों को इकट्ठा कर लेंगे जो उन्हें बताएंगे कि वे उस सब कुछ को कर सकते हैं जिसे वे करना चाहते हैं। यह वही है जिसे वे सुनने के लिए उत्सुक होंगे।
4इसलिए वे न केवल सत्य को सुनना बंद कर देंगे, वरन् वे इन शिक्षकों को उनकी मूर्खतापूर्ण कहानियों से उन्हें धोखा देने देंगे। 5पर जहाँ तक तेरी बात है, हे
तीमुथियुस, चाहे कुछ हो जाए, अपने आप पर नियंत्रण रख। कठिन बातों को {सहने के लिए तैयार रह}। सुसमाचार का प्रचार करने का काम कर। प्रभु की सेवा
करने के लिए जो काम तुझे करना है उसे अवश्य पूरा कर।

6{मैं तुझे ये बातें इसलिए कहता हूँ} क्योंकि मेरा जीवन परमेश्वर को चढ़ाए जाने वाले अर्घ की तरह है जिसे याजक ने लगभग उण्डेल लिया है। मेरी मृत्यु का
समय निकट है। 7मैं एक खिलाड़ी की तरह हूँ जिसने एक प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। मैं उस धावक की तरह हूँ जिसने अपनी दौड़ पूरी कर
ली है। {इन तुलनाओं से, मेरे कहने का अर्थ है कि} मैंने सदैव परमेश्वर की आज्ञा का निरन्तर पालन किया है। 8इसलिए {, एक धावक की तरह जिसने अपनी
दौड़ जीत ली है,} अब मेरे लिए जो कुछ बचा है वह उस प्रतिफल को {प्राप्त करना} है जिसके लिए मैंने परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन व्यतीत किया है।
प्रभु, जो धार्मिकता से न्याय करता है, ने इस प्रतिफल को मेरे लिए रखा है, और जब वह फिर से आएगा, तब वह इसे मुझे देगा। वह न केवल मुझे, वरन् उन
सभी को भी देगा जो उसके फिर से आने की उत्सुकता से प्रतिक्षा करते हैं। 9{तीमुथियुस,} शीघ्र मेरे पास आने का प्रयास कर 10क्योंकि देमास ने मुझे छोड़
दिया है, और थिस्सलुनीके {के शहर} को चला गया है। वह इस संसार में जीवन {बहुत ज्यादा} से प्रेम करता है। क्रेसकेंस गलातिया {के प्रांत} को और तीतुस
दलमतिया {जिले} को {चला गया है}। 11केवल लूका अभी भी मेरे साथ है। मरकुस को ढूंढ और उसे अपने साथ ले आ। {ऐसा कर} क्योंकि वह मेरी उन बातों
में मदद कर सकता है जिसकी मुझे जरूरत है। 12जहाँ तक तुखिकुस की बात है, मैंने {उसे} इफिसुस {के शहर में} भेज दिया है। 13जब तू आए, तो उस बाहरी
वस्त्र को लेते आना जिसे मैंने त्रोआस {शहर} में करपुस के पास छोड़ा था। साथ ही चर्मपत्र भी लाना, विशेषकर चमड़े वाले।

14सिकन्दर ठठेरे ने मेरे प्रति बहुत से बुरे काम किए। जो कुछ उसने किया है उसके लिए प्रभु उसे दण्ड देगा। 15तूझे भी उससे अपनी रखवाली करनी चाहिए
क्योंकि उसने हमें प्रचार करने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया था।

16पहली बार मैंने {अदालत में} अपना बचाव किया था, कोई भी विश्वासी मेरा समर्थन करने नहीं आया। वे सब दूर ही रहे। परमेश्वर इसके लिए उन्हें उत्तरदायी न
ठहराएँ। 17पर प्रभु मेरे साथ था। उस ने मुझे सामर्थ्य दी, ताकि मैं उसका वचन पूरी रीति से कह सकूँ, और सब अन्यजाति उसे सुन सकें। परमेश्वर ने मुझे एक
बहुत ही खतरनाक स्थिति से बचाया मानो कि उसने मुझे शेर के मुँह से बचाया हो। 18प्रभु मुझे उन सब बुरे कामों से बचाएगा जिसे वे करते हैं। वह मुझे उस
सुरक्षित स्थान पर पहुँचाएगा जहाँ से वह स्वर्ग में राज्य करता है। लोग उसकी सदा और सर्वदा स्तुति करें। आमीन।

19प्रिस्किल्ला और अक्विला को नमस्कार। उनेसिफुरूस के घराने के लोगों को नमस्कार। 20इरास्तुस कुरिन्थुस के {शहर} में रह गया है। जहाँ तक त्रुफिमुस की
बात है, उसे मैंने मीलेतुस के {शहर} में छोड़ दिया है क्योंकि वह बीमार था। 21सर्दी से पहले आने की पूरी कोशिश कर। यूबूलुस, और पूदेंस, और लीनुस और
क्लौदिया, और {कई} {अन्य} विश्वासी {यहाँ} तुझे नमस्कार कहते हैं। 22प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे {, तीमुथियुस}। वह तुम सभों {वहाँ पर रहने वाले
विश्वासी} के प्रति दयालु रहे।

तीतुस

Chapter 1

1मैं, पौलुस, यह पत्र तुझे लिखता हूँ, तीतुस। मैं परमेश्वर का एक सेवक हूँ और यीशु मसीह का एक प्रेरित हूँ। परमेश्वर ने मुझे उन लोगों को शिक्षा देने के लिए
भेजा, जिन्हे उसने अपने लिए चुन लिया है कि वे उस पर अधिक विश्वास करें। मैं उसके लोगों की सहायता करने का काम करता हूँ कि वे जान सकें सच क्या है,
ताकि वे परमेश्वर को प्रसन्न करने के तरीके से जी सकें। 2उसके लोग सीख सकते हैं कि ऐसा कैसे जीना है क्योंकि उन्हें विश्वास है कि परमेश्वर उन्हें अनन्त
जीवन देगा। परमेश्वर झूठ नहीं बोलता। यहाँ तक कि, संसार के आरम्भ से पहले, उसने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह हमें अनन्त जीवन जीने देगा। 3फिर, सही
समय पर, उसने अपनी योजना को इस सन्देश के द्वारा बताया, जिसका प्रचार करने के लिए उसने मुझ पर विश्वास किया। मैं यह परमेश्वर की आज्ञा का पालन
करने के लिए करता हूँ, जो हमें बचाता है।

4मैं तुझे यह लिख रहा हूँ, तीतुस; तू मेरे लिए वास्तविक पुत्र के समान बन गया है, क्योंकि अब हम दोनों यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। पिता परमेश्वर और
मसीह यीशु, जो हमें बचाता है, तुझ पर कृपा करता रहे और शान्तिमय आत्मा दे। 5मैंने तुझको इस कारण से क्रेते द्वीप पर छोड़ा था: कि तू वो कार्य करे जो
अभी अधूरा है और प्रत्येक शहर के विश्वासियों के समूह के लिए अगुवों को भी नियुक्त करे जैसा मैंने तुझको करने के लिए कहा था। 6अब हर अगुवा ऐसा हो
जिसकी कोई आलोचना न कर सके। उसकी केवल एक पत्नी होनी चाहिए, उसके बच्चे परमेश्वर पर भरोसा करते हों और लोग यह न समझे की उसके बच्चे
नियंत्रण से बाहर या हठीले हैं। 7हर कोई जो परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व करता है वह ऐसे व्यक्ति के समान होता है जो किसी और के नौकरों और संपत्ति का
प्रबंधन करता है, परन्तु वह परमेश्वर के लिए ऐसा कर रहा है। तो यह आवश्यक है कि उस व्यक्ति की अच्छी प्रतिष्ठा हो। उसे घमण्डी नहीं होना चाहिए और उसे
जल्दी गुस्सा नहीं आना चाहिए। उसे बिलकुल भी शराब पीने वाला नहीं होना चाहिए, न कोई ऐसा जो लड़ना और विवाद करना पसन्द करता हो और न ही
लालची हो।

8इसके बजाय, उसे अजनबियों का स्वागत करना चाहिए और वो उन बातों से प्रेम रखे जो भली हैं। उसे सदा समझदारी से कार्य करना चाहिए और अन्य लोगों
के साथ निष्पक्षता और ईमानदारी से पेश आना चाहिए। उसे सदा इस प्रकार का कार्य करना चाहिए जो परमेश्वर को समर्पित व्यक्ति के लिए उचित है और उसे
सदा अपनी भावनाओं को नियंत्रित रखना चाहिए। 9उसे उन सच्ची बातों पर विश्वास करना चाहिए जो हमने उसे सिखाई हैं, और उसे उनके अनुसार जीवन
जीना चाहिए। उसे ऐसा ही करना चाहिए जिससे कि लोगों को ऐसा ही जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सके और यदि लोग इस तरह से जीना नहीं चाहते, तो उन
लोगों को सुधार सके।

10मैं तुझे इसलिए ऐसा कहता हूँ कि बहुत से ऐसे लोग हैं, जो उन पर अधिकार रखने वालों की आज्ञा का पालन करने से इन्कार करते हैं। ऐसे लोगों की बातों
का कोई मूल्य नहीं होता। वे लोगों को गलत बातों पर विश्वास करने के लिए मनाते हैं। इस तरह के लोग अधिकतर उनके समान हैं, जो मसीह के सभी
अनुयायियों को खतना करने के लिए कहते हैं। 11तुझे और उन अगुवों को, जिन्हे तू नियुक्त करता है, ऐसे लोगों को विश्वासियों को शिक्षा देने से रोकना चाहिए।
ऐसे लोग उन बातों को सिखा रहे हैं, जो उन्हें सिखाना नहीं चाहिए, पूरे परिवारों को गलत बातों पर विश्वास करने का कारण होते हुए। वे ऐसा केवल इसलिए
करते हैं कि लोग उन्हें पैसा दें। यह बड़ी शर्म की बात है।

12क्रेते का एक व्यक्ति, जिसे उसके लोग भविष्यद्वक्ता मानते थे, उसने कहा, “क्रेती लोग सदा एक दूसरे से झूठ बोलते हैं। वे खतरनाक जंगली पशुओं के
समान हैं। वे आलसी हैं और सदा बहुत अधिक खाना खाते हैं।” 13उसने जो कहा वह सच है, इसलिए उन्हें बलपूर्वक सुधार, ताकि वे विश्वास करें और परमेश्वर
के बारे में सही चीज़ें सिखाएँ।

14उन्हें यहूदियों और आज्ञाओं द्वारा आविष्कृत कहानियों के अनुसार जीना बंद कर देना चाहिए जो परमेश्वर की ओर से नहीं आए थे। ये आज्ञाएँ उन लोगों से
मिलीं जिन्होंने सत्य को मानने से रोका है।

15अगर कुछ लोग केवल अच्छा काम करने के बारे में सोचना या करना चाहते हैं, तो वे जो कुछ भी करते हैं, वह अच्छा होता है। लेकिन अगर लोग दुष्ट हैं और
मसीह यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं, तो वे जो कुछ भी करते हैं वह बुरा है। ऐसे लोगों का सोचने का तरीका बर्बाद हो गया है। जब वे बुराई करते हैं तो वे भी
दोषी महसूस नहीं करते हैं। 16भले ही वे दावा करते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, परन्तु जो कार्य वे करते हैं, उससे यह दिखता है कि वे परमेश्वर को नहीं
जानते। वे घृणित हैं। वे परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं और परमेश्वर के लिए कुछ भी अच्छा नहीं कर सकते।

Chapter 2

1परन्तु तेरे लिए, तीतुस, तुझे लोगों को यह सिखाना चाहिए कि जो लोग परमेश्वर के बारे में सच्चाई को मानते हैं उनके लिए उचित व्यवहार क्या है। 2वृद्ध पुरुषों
को बता कि उन्हें हर समय अपने पर नियंत्रण रखना चाहिए और वे ऐसा जीवन जिएं जिसका दूसरे लोग सम्मान करें और उनको समझदारी से कार्य करना

चाहिए। उन्हें बता कि उन्हें परमेश्वर के विषय में सच्ची बातों पर दृढ़ता से विश्वास करना चाहिए, दूसरों से सच्चा प्रेम करना चाहिए और वे इन सब बातों को तब
भी करें जब ऐसा करना कठिन हो।

3पुरुषों के समान, वृद्ध स्त्रियों को बता कि वे भी ऐसा जीवन जीएँ जिससे सब जानें कि वे परमेश्वर का बहुत आदर करतीं हैं। उन्हें बता कि उन्हें अन्य लोगों के
विषय में ओछी या झूठी बातें नहीं कहनी चाहिए, और वे बहुत सी दाखरस पीने की आदी बिलकुल न हों। इसकी अपेक्षा, उन्हें दूसरों को यह सिखाना चाहिए कि
अच्छा क्या है। 4इस प्रकार, वे युवा स्त्रियों को अपने पति और बच्चों से प्रेम करने की सलाह दे पाएँगी। 5वृद्ध स्त्रियों को युवा स्त्रियों को उनकी बातों और कार्यों
को नियंत्रित करना भी सिखाना चाहिए, किसी भी पुरुष के प्रति अनुचित व्यवहार न करें, घर का कार्य अच्छे से करें, और जो उनके पति कहें, वही करें। उन्हें इन
सब कार्यों को करना चाहिए ताकि कोई भी परमेश्वर के सन्देश का हम पर उपहास न करे।

6युवा पुरुषों के लिए, उनसे वैसे ही स्वयं को नियंत्रित करने का आग्रह कर। 7तुझे स्वयं निरन्तर अच्छा कार्य करना चाहिए कि दूसरे देखें कि उन्हें भी क्या करना
चाहिए। जब तू विश्वासियों को सिखाता है, तो सुनिश्चित कर कि जो कुछ तू कहता है वह सच हो और इस तरीके से कह कि वो तेरा सम्मान करे। 8सही क्या है
सन्देशों के द्वारा लोगों को सिखा जिसकी कोई आलोचना न कर सके, जिससे कि, यदि कोई तुझको रोकना चाहे, तो अन्य लोग उसे लज्जित करें, क्योंकि उनके
पास हममें से किसी के बारे में उचित रूप में कुछ भी बुरा कहने के लिए नहीं होगा।

9उन विश्वासियों के लिए जो दास हैं, उन्हें सिखा कि वे सदा अपने स्वामीओं के अधीन रहें। उन्हें ऐसा जीवन जीने के लिए कह, जो उनके स्वामियों को हर प्रकार
से प्रसन्न करता हो और वे उनसे विवाद न करें। 10उन्हें अपने स्वामियों की छोटी सी वस्तु की भी चोरी नहीं करनी चाहिए; इसकी अपेक्षा, उन्हें उनके प्रति
विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए और उन्हें सब कुछ इस रीति से करना चाहिए जिससे लोग उन सब बातों की प्रशंसा करें जो हम परमेश्वर के विषय में सिखाते हैं,
जो हमें बचाता है ।

11विश्वासियों को इन अच्छी बातों में ऐसे पेश आना चाहिए क्यूंकि परमेश्वर हर एक को बचाने की पेशकश करता है, एक उपहार के रूप में जिसके लायक कोई
भी नहीं है। 12इस निशुल्क उपहार के माध्यम से, परमेश्वर हमें गलत करने से और संसार के लोग जो करना चाहते हैं उससे रोकने के लिए प्रशिक्षित करता है।
वह हमें समझदार बनना सिखाता है, कि जो सही है उसे करें, और इस वर्तमान समय में रहते हुए उसका पालन करें। 13इसके साथ ही, परमेश्वर हमें उसकी
प्रतीक्षा करना सिखाते हैं जिस कार्य को वह भविष्य में निश्चय ही करेंगे, जो कि कुछ ऐसा है जो हमें बहुत प्रसन्न करेगा। अर्थात्, यीशु मसीह, हमारे उद्धारकर्ता
और सामर्थी परमेश्वर, महान वैभव के साथ हमारे पास लौट आएँगे।

14उसने स्वयं को हमारी जगह मरने के लिए दे दिया ताकि हम उस तरह से जीने के लिए स्वतंत्र हो सकें जैसा कि परमेश्वर चाहता है कि हम रहें, और हमसे
हमारे पाप को दूर करने के लिए ताकि हम उन लोगों का एक विशेष समूह बन सकें जो केवल उसी के हैं, और जो उत्सुकता से अच्छा करने की इच्छा रखता है।

15तीतुस, इन बातों के विषय में बोल। विश्वासियों से ऐसा जीवन जीने के लिए आग्रह कर, जैसा मैंने वर्णन किया है और जब वे ऐसा नहीं करते तो उन्हें सुधार,
यदि आवश्यक हो तो उन्हें आदेश देने के लिए अपने अधिकार का उपयोग कर। सुनिश्चित कर कि वे सब तेरी बातों पर ध्यान दे।

Chapter 3

1तीतुस, हमारे लोगों को फिर से बताना जारी रख कि उन्हें उन लोगों का पालन करना चाहिए जो उन पर शासन करते हैं। जब भी वे सक्षम हों, उन्हें अच्छा करने
के लिए तैयार रहने की जरूरत है। 2उन्हें किसी के विषय में अपमानजनक बातें नहीं कहनी चाहिए। उन्हें शान्त होना चाहिए। उन्हें सब के साथ कोमलता से और
अपने से अधिक महत्वपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

3हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि एक ऐसा समय था जब हम स्वयं मूर्ख थे और परमेश्वर के पालन के लिए अनिच्छुक थे। हमारी अपनी अभिलाषाएँ और सुख-
विलास के प्रति हमारी इच्छा हमें गलत दिशा की ओर ले गई थी और हमने उनकी सेवा की जैसे की हम उनके दास हों। हम निरंतर एक दुसरे से डाह कर रहे थे
और दूसरी बुरी चीज़ें कर रहे थे। हम लोगों के लिए घृणा करने का कारण हुए और हम एक दूसरे से घृणा करते थे। 4परन्तु जब परमेश्वर ने हमें दिखाया कि वह
हमें बचाने के लिए उदारता से कार्य कर रहा था क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है, 5उसने हमारे पाप को दूर करके हमें बचाया जैसे उसने इसे धोया दिया हो जैसे
पवित्र आत्मा ने हमें नया बनाया और हमें अपने जीवन को फिर से शुरू करने के लिए सक्षम किया, परमेश्वर के लिए एक नए तरीके से जीने के लिए। उसने हमें
इसलिए नहीं बचाया क्योंकि हम अच्छे काम करते हैं, बल्कि उसने हमें इसलिए बचाया क्योंकि वह दयालु है। 6परमेश्वर ने उदारता से हमें अपना पवित्र-आत्मा
दिया, जब यीशु मसीह ने हमें बचाया। 7इस मुफ्त दान के द्वारा, परमेश्वर ने घोषणा की है कि उसके और हमारे बीच में सब कुछ सही बना दिया गया है। उसने
हमें पवित्र आत्मा दिया ताकि हम सब कुछ में भागीदार हों जो प्रभु यीशु ने हमें देना है, विशेषकर उसके साथ अनन्त जीवन।

8यह एक ऐसा कथन है जिस पर हर कोई भरोसा कर सकता है। मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों पर लगातार जोर दे ताकि परमेश्वर पर भरोसा रखने वाले लोग
स्वयं को निरन्तर उन कार्यों को करने के लिए समर्पित कर सकें जो अच्छे हैं और जो दूसरों की सहायता करते हैं। यह बातें सबके लिए उत्तम और लाभकारी हैं।

9परन्तु बहुत से लोग तेरे साथ बेहूदी चीज़ों के बारे में बहस करना चाहेंगे, जैसे कि यहूदी पूर्वजों की सूची के बारे में। वे तुझसे बहस करना चाहेंगे और धार्मिक
कानून के बारे में तुझसे विवाद करेंगे। उस सब से दूर रह। उस प्रकार की चीजें बेकार हैं और वे तेरी किसी भी तरह से मदद नहीं करती हैं। 10यदि कोई इन
बाँटनेवाली गतिविधियों में सहभागी होने पर बल देता है तेरे एक या दो बार इसे बन्द करने की चेतावनी देने के बाद भी, तो उनके साथ कोई सम्बन्ध न रख,
11क्योंकि तू जानता है कि ऐसे किसी ने सच को अस्वीकार कर दिया है; वह पाप कर रहा है और स्वयं को दोषी ठहराता है।

12जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूँ, तो मेरे पास निकुपुलिस शहर में आने के लिए पूरी कोशिश करना, क्योंकि मैंने सर्दियों में वहाँ रहने का
निर्णय किया है। 13जेनास जो कानून-विशेषज्ञ है और अपुल्लोस को उनकी यात्रा में भेजने के लिए वो सब कर जो तू कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि
उनके पास वो सब है जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

14उसी तरीके से, सुनिश्चित कर कि हमारे लोग उन लोगों के लिए जिन्हें सहायता की आवश्यकता है स्वयं को भले कार्य करने के लिए व्यस्त रखना सीखें । ऐसा करने से, वे परमेश्वर के लिए एक उपयोगी रीति से जी रहे हैं।

15तीतुस, वे सभी जो मेरे साथ हैं, तुझको नमस्कार करते हैं। कृपया वहां सब को जो हमें अपने साथी विश्वासियों के समान प्रेम करते हैं, नमस्कार कहना। परमेश्वर तुम सभी पर कृपा करता रहे।

फिलेमोन

Chapter 1

1{मैं,} पौलुस, जो यीशु मसीह की सेवा करने के कारण इस समय बन्दीगृह में हूँ। मैं यहाँ पर हमारे साथी विश्वासी, तीमुथियुस के साथ हूँ। हे फिलेमोन, {तुझे}
{मैं यह पत्र लिख रहा हूँ}। तू भी मसीह की सेवा करता है, और हम तुझ से प्रेम करते हैं। 2और {मैं इन्हें भी लिखता हूँ} अफफिया को, जो हमारी साथी
विश्वासिनी है, और अरखिप्पुस को, {जिस रीति से वह मसीह की सेवा करता है} वह हमारे साथ एक सैनिक {के समान} है। और {मैं इन्हें भी लिखता हूँ}
विश्वासियों का वह समूह जो तेरे घर में संगति करता होता है। 3{मैं प्रार्थना करता हूँ कि} हमारा पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम सब पर निरन्तर
दयावन्त बने रहें और तुम्हें शान्ति प्रदान करें। 4जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तो {हे फिलेमोन,} तेरे लिए मैं सर्वदा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, 5क्योंकि
{लोग मुझे बताते हैं कि} तू प्रभु यीशु पर कितना भरोसा रखता है और तू उससे तथा परमेश्वर के सारे लोगों से कितना प्रेम करता है। 6मैं यह प्रार्थना भी करता हूँ
कि जिस प्रकार से तू मसीह पर भरोसा रखता है, जैसे कि हम भी उस पर भरोसा रखते हैं, तू उन सब भली बातों को और भी अच्छे से समझने पाए जो मसीह
ने उसकी सेवा करने के लिए हमें दी हैं। 7हे मेरे प्रिय मित्र, तूने मुझे बहुत अच्छे से प्रोत्साहित किया है और मुझे बहुत ही आनन्दित किया है। क्योंकि तू परमेश्वर
के लोगों को अत्याधिक प्रेम करने के द्वारा उन्हें प्रोत्साहित करता रहा है। 8इसलिए {क्योंकि तू परमेश्वर के लोगों से प्रेम करता है,} और क्योंकि मैं मसीह का
{प्रेरित} हूँ, मुझे पूरा भरोसा है कि मसीह मुझे तुझे वह करने का आदेश देने की अनुमति प्रदान करेगा जो तुझे करना चाहिए। 9परन्तु {तुझे आदेश देने के
बजाए,} {क्योंकि हम एक दूसरे के प्रेम करते हैं,} मैं, पौलुस, जो बूढ़ा हूँ और इस समय बन्दी भी हूँ क्योंकि मैं मसीह, यीशु की सेवा करता हूँ, केवल निवेदन
करता हूँ {कि तू ऐसा करे।} 10मैं तुझ से विनती करता हूँ कि तू उनेसिमुस के लिए कुछ कर। {जब से मैंने यहाँ पर उसे मसीह के विषय में बताया है} बन्दीगृह में
वह मेरे लिए एक पुत्र के समान हो गया है। 11बीते समय में वह तेरे लिए बेकार था, परन्तु इस समय पर वह तेरे और मेरे दोनों के लिए उपयोगी है! 12यद्यपि वह
मुझे अत्यन्त प्रिय है, मैं उसे तेरे पास वापस भेज रहा हूँ। 13मैं उसे यहाँ पर अपने पास रखना चाहता था ताकि वह तेरे स्थान पर मेरी सेवा करे, विशेष रूप से
जबकि {मसीह के विषय में} शुभ सन्देश प्रचार करने के कारण से मैं अभी भी बन्दीगृह में हूँ। 14तब पर भी, {मैं उसे तेरे पास वापस भेज रहा हूँ} क्योंकि तूने
मुझ से नहीं बोला कि मैं उसे यहाँ पर रख सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तू मेरी सहायता करे {क्योंकि तू मेरी सहायता करना चाहता है,} और इसलिए नहीं कि मैंने
तुझे मेरी सहायता करने के लिए विवश किया है। 15हो सकता है कि इस छोटी सी अवधि के दौरान {तुझ से} अलग होने की {परमेश्वर ने उनेसिमुस को अनुमति
दी हो} ताकि {एक विश्वासी के रूप में} वह तेरे पास वापस आए और सदा के लिए तेरे साथ रहे। 16ऐसा इसलिए है क्योंकि {उनेसिमुस} अब दास जैसा नहीं रह
गया है, परन्तु वह एक दास से भी बढ़कर है। क्योंकि अब तू उससे एक साथी विश्वासी के समान प्रीति रख सकता है! वह मुझे अत्यन्त प्रिय है, परन्तु निश्चय ही
वह तुझे और भी अधिक प्रिय है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब {एक दास के रूप में} वह केवल तेरा ही नहीं है, परन्तु वह प्रभु का भी है। 17इसलिए यदि {उस
काम को करने में जो परमेश्वर ने हम को सौंपा है} तू मुझे अपना संगी मानता है, तो फिर जिस रीति से तू मेरा स्वागत करेगा वैसे ही अपने घर में उनेसिमुस का
स्वागत कर। 18परन्तु यदि उसने तेरा कुछ ले लिया है, या किसी वस्तु में उस पर तेरा कर्ज है, तो मैं तुझे चुका दूँगा। 19मैं, पौलुस, अपने हाथ से तुझे यह लिख
रहा हूँ: जो कुछ भी उस पर तेरा बकाया है मैं तुझे चुका दूँगा। मैं निश्चित हूँ कि मुझे तुझे स्मरण करवाने की आवश्यकता नहीं कि तुझ पर तेरा जीवन मेरा कर्ज है
{उससे भी बढ़कर जितना शायद उनेसिमुस पर तेरा कर्ज हो,} {क्योंकि परमेश्वर ने तेरा जीवन बचाया} {जब मैंने तुझे मसीह के विषय में बताया था।} 20हाँ, हे
मेरे साथी विश्वासी, {मैं वही कह रहा हूँ जो तुझे लगता है कि मैं कह रहा हूँ}। मैं चाहता हूँ {कि तू मेरे लिए ऐसा ही करे} उस कारण से जो प्रभु ने {तेरे लिए}
किया। मुझे प्रसन्न होने का एक और कारण दे कि हम दोनों मसीह में जुड़ गए हैं। 21जब मैं {यह पत्र} तुझे लिख रहा हूँ, तो मुझे भरोसा है कि जिस काम को
करने के लिए मैं तुझ से विनती कर रहा हूँ तू उसे करेगा। बल्कि, मैं जानता हूँ कि जिस काम को करने के लिए मैं तुझ से विनती कर रहा हूँ तू उससे भी बढ़कर
करेगा। 22{जिस काम को करने के लिए मैं तुझ से विनती कर रहा हूँ जब तू उसे करे}, तो मैं तुझ से यह भी विनती करता हूँ कि तू अपने घर में मेरा स्वागत करने
की भी तैयारी कर। क्योंकि तुम सब लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हो, इसलिए मैं भरोसे के साथ इस बात की आशा करता हूँ {कि परमेश्वर मुझे बन्दीगृह से बाहर
निकलने की} और तुम सब के पास आने की अनुमति प्रदान करेगा। 23इपफ्रास, जो यीशु मसीह {की सेवा करने के कारण} मेरे साथ बन्दीगृह में {पीड़ित हो
रहा} है, तुझे नमस्कार करता है। 24मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास, और लूका, जो मेरे सहकर्मी यहाँ पर हैं, {वे भी तुझे नमस्कार करते हैं।} 25{मैं प्रार्थना करता
हूँ} कि हमारा प्रभु यीशु मसीह तुझ पर निरन्तर दयावन्त बना रहे। आमीन।

याकूब

Chapter 1

1मैं, याकूब, परमेश्वर और प्रभु मसीह यीशु की सेवा करता हूँ। मैं यह पत्र तुमको लिख रहा हूँ जो यीशु पर विश्वास करते हैं और रोमी साम्राज्य के अलग-अलग
हिस्सों में रहते हैं। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। 2मेरे साथी विश्वासियों, जब तुम अलग-अलग प्रकार के क्लेशों का अनुभव करो तो इसे बहुत ही बड़े आनंद की
बात समझो। 3यह जान लो कि जिस तरह तुम क्लेशों में परमेश्वर पर भरोसा रखते हो, तो यह तुम्हें एक दृढ़ व्यक्ति बनने में सहायता करता है। 4क्लेशों को
उनके अंत होने तक सहते रहो, ताकि तुम हर प्रकार से मसीह के पीछे चल सको। तो तुम भलाई करने में असफल नहीं होगे। 5यदि तुम में से किसी को जानने
की आवश्यकता हो कि क्या करना है, तो वह परमेश्वर से मांगे, और परमेश्वर उसे बताएगा। परमेश्वर सभी को उदारता से देता है। परमेश्वर लोगों को डांटता नहीं
है {जो योग्य बात के लिए मांग करते हैं} 6लेकिन जब तुम परमेश्वर से प्रार्थना करो, तो तुम्हें उत्तर पाने के लिए उसपर भरोसा रखना चाहिए। यह संदेह न करना
कि वह तुम्हें उत्तर देगा या सहायता करेगा। जो लोग परमेश्वर पर संदेह करते हैं वे पहले एक काम करने का फैसला करते हैं, लेकिन फिर वे कुछ और करना
चाहते हैं। वे कभी भी एक ही प्रकार के काम पर स्थिर नहीं रहते हैं। 7वास्तव में, संदेह करने वाले लोगों को नहीं सोचना चाहिए कि प्रभु परमेश्वर उन्हें देंगे जो
कुछ वे मांगते हैं {बहुतायत से} 8इस तरह के लोग कभी भी तय नहीं कर पाते कि क्या करना है। वे एक योजना बनाते हैं, लेकिन वे तब भी इसके अनुसार नहीं
चलते हैं। 9लेकिन जिन विश्वासियों के पास बहुत धन नहीं है उन्हें खुश होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर उन्हें आदर देगा। 10लेकिन वे विश्वासी जिनके पास बहुत
धन है उन्हें खुश होना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें नम्र बनाया है {उन्हें यह दिखाकर कि उनका धन उन्हें अन्य लोगों से बेहतर नहीं बनाता है}। आखिरकार,
जंगली फूलों की तरह {जोकि थोड़े समय के लिए ही खिलते हैं और फिर मुर्झा जाते हैं}, धनी विश्वासी मर जायेंगे {अन्य लोगों की तरह}। 11एक जंगली फूल
थोड़े समय का ही होता है क्योंकि जब सूरज उगता है, तो उसकी झुलसानेवाली गर्मी पौधों को सुखा देती है इसलिए उनके फूल झड़ जाते हैं। उनकी सुन्दरता
ज्यादा समय की नहीं है। जिस तरह से फूल मुर्झा जाते हैं, धनी लोग मर जायेंगे जबकि वे धन इकठ्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं। 12परमेश्वर उन्हें आदर देगा
जो कठिन परीक्षाओं में भी उसके प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं। निश्चय ही, परमेश्वर उन्हें उपहार के रूप में अनंत जीवन देगा। यह वही है जो परमेश्वर ने सभी के
लिए वायदा किया है जो उससे प्यार करते हैं। 13जब हम पाप करने के लिए आकर्षित होते हैं, तो हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यह परमेश्वर ही है जो हमारी
परीक्षा कर रहा है। नहीं, कोई भी परमेश्वर को पाप करने के लिए दबाव नहीं डाल सकता है, और ना ही परमेश्वर किसी को पाप करने के लिए दबाव डालता है।
14लेकिन लोग अपनी ही इच्छाओं के कारण पाप करना चाहते हैं। जब वे करते हैं, तो यह ठीक वैसा है जैसा कि वे एक जाल में फंस गये हों। 15तौभी, क्योंकि
वे बुरे काम करने की इच्छा करते हैं, और उन्हें करना शुरू कर देते हैं, और अंततः वे उन्हें स्वाभाविक रूप से करते रहते हैं। {अगर वे अपने पापमय व्यवहार से
नहीं फिरते हैं, तो} वे परमेश्वर से हमेशा के लिए दूर हो जायेंगे। 16मेरे साथी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, स्वयं को धोखा देना बंद करो। 17हर एक
वास्तविक अच्छा और उत्तम वरदान परमेश्वर पिता की ओर से आता है, जो स्वर्ग में है। उसी ने सूर्य, चन्द्रमा और तारों को रचा है। लेकिन परमेश्वर बदलता नहीं
करता, जैसे छाया अदल बदल करके बदलती हैं। परमेश्वर कभी नहीं बदलता है। वह हमेशा भला करता है! 18परमेश्वर हमारा आत्मिक पिता बन गया है जब से
हमने उसके सच्चे सन्देश पर विश्वास किया है। यह वही है जो वह करना चाहता था। इसलिए अब यीशु पर विश्वास करनेवाले प्रथम लोग बन गये हैं जिन्होंने
परमेश्वर के साथ इस तरह के रिश्ते का अनुभव किया है जो भविष्य में बहुत से और लोगों के पास होगा। 19मेरे साथी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, मैं
चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि तुममें से हर एक को धीरज के साथ सुनना चाहिए {कि दूसरों के पास कहने के लिए क्या है} तुम्हें {अपने स्वयं के विचारो को}
सावधानी से बोलना चाहिए। तुम्हें अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए, 20क्योंकि जब हम क्रोध में होते हैं तो हम उन भले कामों को नहीं कर सकते हैं जो
परमेश्वर चाहते हैं कि हम करें। 21इसलिए सब प्रकार के पाप करना बंद कर दो। बिना घमण्ड और रूकावट के, वही करो जो परमेश्वर ने तुमसे करने के लिए
कहा है। परमेश्वर तुम्हें इसे याद करने और समझने में सहायता करेगा। यह तुम्हें दिखायेगा कि तुम परमेश्वर की ओर से हो। 22यह आवश्यक है कि परमेश्वर जो
आज्ञा देता है, उस को सिर्फ सुनें नहीं। जो लोग इसे सिर्फ सुनते हैं और पालन नहीं करते हैं, वे स्वयं को मूर्ख बना रहे हैं {ऐसा सोच रहे हैं कि इससे उनका उद्धार
होगा}। 23अब कुछ लोग परमेश्वर के सन्देश को सुनते हैं, लेकिन जैसा यह कहता है वे नहीं करते। वे लोग उस व्यक्ति के समान है जो अपने चेहरे को दर्पण में
देखता है। 24हालांकि वह स्वयं को देखता है, वह {दर्पण से} दूर चला जाता है और तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिखता है। 25लेकिन अन्य लोग परमेश्वर के
वचन को ध्यानपूर्वक समझते हैं। यह सत्य है और यह लोगों को हर रूप से सक्षम बनाता है {परमेश्वर उनसे क्या चाहते हैं कि करें}। यदि वे लोग जो सुना है उसे
याद रखते हैं और वही करते हैं जो परमेश्वर उनसे करने को कहता है, तो जो वे करते हैं उसके कारण परमेश्वर उन्हें आशीष देगा। 26कुछ लोग सोचते हैं कि वे
परमेश्वर की आराधना अच्छी रीति से करते हैं, लेकिन वे गंदी बातें बोलते हैं। वो लोग जो विचार कर रहे हैं वे उसमें गलत हैं। अगर हम लगातार गंदी बातें बोलते
रहते हैं तो परमेश्वर हमारी आराधना गतिविधियों से प्रसन्न नहीं होते हैं। 27{कुछ कामों को जो कि परमेश्वर ने हमसे करने को कहा है ये हैं} कि अनाथों और
विधवाओं और जो क्लेशों से गुजर रहे हैं उनकी देखभाल करो। जो लोग ऐसा करते हैं वे परमेश्वर की सच्ची आराधना करते हैं, जो हमारा पिता है। लोग वास्तव
में इस प्रकार आराधना करते हैं यदि वे दूसरों की तरह अनैतिक रूप से सोचते या काम नहीं करते हैं जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते हैं। तो परमेश्वर ऐसे लोगों
को ग्रहण करता है।

Chapter 2

1मेरे साथी विश्वासियों, किसी एक व्यक्ति को दूसरों से अधिक आदर ना दो, और साथ ही हमारा प्रभु यीशु मसीह जो महान उसपर भरोसा रखो। 2उदहारण के
लिए, मान लो कि एक व्यक्ति सोने की अंगूठियाँ और अच्छे कपड़े पहने हुए आराधना में तुम्हारे साथ जुड़े। और मान लो कि एक गरीब व्यक्ति भी जो मैले

कुचैले कपड़े पहने हुए तुम्हारे साथ जुड़े। 3और मान लो कि तुम अच्छे कपड़े पहने हुए व्यक्ति पर विशेष ध्यान दो। तुम उससे कहो, "कृपया यहाँ इस अच्छे
स्थान में बैठ!" लेकिन तुम गरीब व्यक्ति से कहते हो {कम सम्मानजनक स्थान पर जाने के लिए, कहते हो}, "तू उस स्थान पर खड़ा हो जा," या, "जमीन पर बैठ
जा!" 4यह ये दिखाता है कि तुम सोचते हो कि धनी व्यक्ति गरीब से अच्छा है। यह ये दिखाता है कि तुम बुरी सोंच के आधार पर {लोगों के साथ कैसा व्यवहार
करें} अपने निर्णय ले रहे थे। 5मेरे साथी विश्वासियों, जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, मेरी सुनो। परमेश्वर ने गरीब लोगों को चुन लिया है जो उस पर भरोसा रखने के लिए
कुछ भी मूल्यवान नहीं समझते हैं। जब वह हर जगह राज्य करेगा तो वह उन्हें बहुत वस्तुएं देगा। यह वही है जो उसने सबके लिए करने का वायदा किया है जो
उससे प्यार करते हैं। 6लेकिन तुम गरीबों के साथ अपमानजनक व्यवहार करते हो! इसके विषय में सोचो! यह धनी लोग ही हैं, ना कि गरीब लोग, जो तुम पर
दोष लगाते हैं! यह धनी लोग ही हैं जो तुम को जबरदस्ती अदालत में ले जाते हैं {न्यायधीशों के सामने तुम पर दोष लगाने के लिए}! 7और ये वही हैं जो तुम्हारा
अनादर करते हैं क्योंकि तुम मसीही हो! 8{इसलिए तुम्हें धनी लोगों के साथ गरीबों से अधिक अच्छा व्यवहार नहीं करना चाहिए} इसके बदले में, तुम्हें उस आज्ञा
का पालन करना चाहिए जो यीशु ने कही थी यह बहुत महत्वपूर्ण थी। यह मूसा की व्यवस्था में से है कि: "अपने पडोसी से प्रेम रखो जिस तरह तुम स्वयं से प्रेम
रखते हो। " यदि तुम सबको एक समान प्रेम दिखाते हो, तो तुम वही करोगे जो उचित है। 9लेकिन यदि तुम कुछ लोगों को दूसरों से अधिक आदर देते हो, तो तुम
बुरा कर रहे हो। और {तुम वह नहीं कर रहे जो परमेश्वर ने आज्ञा दी है,} तो परमेश्वर कहेगा कि तुमने उसकी व्यवस्था को तोड़ा है। 10{परमेश्वर ऐसा कहेगा}
क्योंकि यदि तुम परमेश्वर के नियमों में से एक को तोड़ते हो, भले ही यदि तुम अन्य सभी का पालन करते हो, यह ठीक वैसा ही है जैसे कि तुमने उसके सभी
नियमों को तोड़ दिया हो। 11उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने कहा है कि, "व्यभिचार न करना," लेकिन उसने यह भी कहा है कि, "किसी की हत्या न करना।"
इसलिए यदि तुमने व्यभिचार नहीं किया हो, लेकिन तुमने किसी की हत्या की हो, तो तुम एक ऐसे व्यक्ति बन गए हो जो परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करता
है। 12{हमेशा} दूसरों के प्रति यह जानते हुए बोलो और काम करो कि परमेश्वर तुम्हारा न्याय उस आज्ञा के अनुसार करेगा जो उसने हमें दी है {दूसरों से प्यार
करने के लिए}। जब हम उस आज्ञा का पालन करते हैं, तो हम स्वतंत्र रूप से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। 13तुम्हें इसी तरह से बोलना और काम
करना चाहिए क्योंकि जब परमेश्वर हमारा न्याय करेगा, तो वह उनपर दया नहीं करेगा जो दूसरों पर दया नहीं करते। लेकिन यदि हम दूसरों पर दया करते हैं, तो
हम भी उम्मीद कर सकते हैं कि जब वह हमारा न्याय करेगा तो परमेश्वर हम पर भी दया करेगा। 14मेरे साथी विश्वासियों, कुछ लोग कहते हैं, "मैं प्रभु यीशु
मसीह पर विश्वास करता हूँ," लेकिन वे अच्छे काम नहीं करते हैं। वे जो कहते हैं उससे उनका कुछ भी भला नहीं होगा। यदि वे सिर्फ शब्दों से विश्वास करते हैं,
तो निसंदेह परमेश्वर उनका उद्धार नहीं करेगा। 15{उदाहरण के लिए} मान लो कि एक साथी विश्वासी चाहे पुरुष हो या स्त्री, को कपड़ों और प्रतिदिन के भोजन
के लिए निरंतर घटी हो। 16और मान लो कि तुममें से कोई उनसे कहे, "चिंता मत करो, गर्म हो जाओ, और अपनी जरूरत का भोजन खा लो।" लेकिन मान लो
कि बाद में तुम उन्हें कोई कपड़ा या खाना नहीं देते हो। तो इससे उनकी कोई सहायता नहीं होगी! 17इसी तरह, यदि तुम सिर्फ यह कहते हो कि तुम यीशु पर
विश्वास करते हो, लेकिन तुम ऐसा कुछ नहीं करते हो जो यह प्रदर्शित करता हो, कि तुम वास्तव में यीशु पर विश्वास नहीं करते हो। 18लेकिन कोई कह सकता है
{तुमसे} कि तुम विश्वास रखते हो, जबकि मेरे पास काम हैं। {वह दावा कर सकता है कि कोई व्यक्ति अपने धर्म को या तो विश्वास या कामों के माध्यम से व्यक्त
कर सकता है और उसके लिए दोनों की आवश्यकता नहीं है।} {लेकिन मैं उत्तर में कहूंगा कि तुम नहीं सकते} मुझे अपना विश्वास बिना कामों के दिखा। मैं {,
दूसरी ओर,} अपने कामों के द्वारा तुझे अपना विश्वास दिखा सकता हूँ। 19{मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि परमेश्वर जो चाहता है, उसे किए बिना परमेश्वर पर
विश्वास करना तुम्हें किसी तरह से नहीं बचा सकता।} तुम विश्वास करते हो कि सिर्फ एक ही सच्चा परमेश्वर है। तुम्हारा यह विश्वास करना सही है। लेकिन
दुष्टात्माएं भी यह विश्वास करती हैं, और वे {डर से} कांपती हैं क्योंकि वे यह भी जानते हैं कि एक सच्चा परमेश्वर उन्हें दंड देने वाला है। 20इसी तरह, हे मूर्ख
व्यक्ति, मैं तुझे प्रमाण दूंगा कि यदि कोई कहता है कि वह यीशु पर विश्वास करता है, लेकिन वह ऐसा कुछ नहीं करता है जो उसे प्रदर्शित करता है, तो वह जो
कहता है वह किसी भी तरह से उसकी सहायता नहीं करता है। 21{यहां सबूत है।} अब्राहम, जिसमें से हम आये हैं, दिखाता है कि वह अपने बेटे इसहाक को
{परमेश्वर को} बलिदान के रूप में देने के लिए तैयार था {यदि परमेश्वर उससे ऐसा करवाना चाहता था} परमेश्वर ने इब्राहीम को एक धर्मी व्यक्ति ठहराया क्योंकि
उसने दिखाया कि वह उसकी आज्ञा का पालन करेगा {और इससे साबित होता है कि वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करता था}। 22इस तरह से, अब्राहम ने
परमेश्वर की आज्ञा मानी क्योंकि उसने उस पर विश्वास किया। जब उसने उसकी आज्ञा मानी, तो इससे उसे पूरी तरह से परमेश्वर पर विश्वास करने में मदद
मिली। 23इस तरह वह वचन सच हुआ जो कहता है, "क्योंकि इब्राहीम ने वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास किया था, परमेश्वर ने उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में
देखा जिसने वही किया जो सही था।" और पवित्रशास्त्र कहता है कि अब्राहम परमेश्वर का मित्र था। 24{अब्राहम के उदाहरण से,} तुम्हें यह पहचानना चाहिए कि
परमेश्वर लोगों को उनके कामों के कारण धर्मी ठहराता है, सिर्फ इसलिए नहीं कि वे उस पर विश्वास करते हैं। 25जैसे उसने इब्राहीम के लिए किया, वैसे ही
परमेश्वर ने राहाब को भी उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया। वह एक वेश्या थी, लेकिन उसने दूतों की सेवा टहल की {यहोशू ने देश की जासूसी करने के लिए
भेजा था}। फिर उसने उन्हें सुरक्षित रास्ते पर वापस भेजकर भागने में मदद की थी। 26यह सब एक महत्वपूर्ण सच्चाई को दर्शाता है। जिस प्रकार किसी एक
व्यक्ति का शरीर जीवित नहीं होता यदि वह सांस नहीं ले रहा है, उसी तरह से, एक व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता है यदि वह अपने कामों के
द्वारा उस विश्वास को व्यक्त नहीं करता है।

Chapter 3

1मेरे साथी विश्वासियों, तुममें से बहुतों को {परमेश्वर के वचन के} शिक्षक बनने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। जैसा कि तुम जानते हो, परमेश्वर हम शिक्षकों का
न्याय और अधिक कड़ाई से करेगा {अन्य लोगों का न्याय करने की अपेक्षा}। 2{मैं तुम्हें बताऊंगा कि तुममें से बहुतों को शिक्षक क्यों नहीं बनना चाहिए।} हम
सभी ज्यादातर ऐसे काम करते हैं जो बुरे हैं। लेकिन यदि कोई बुरी बातें बोलने से बचने में सक्षम है, तो वह वह व्यक्ति बन गया है जिसे परमेश्वर चाहता है। वह
अपने सभी कामों को भी नियंत्रित करने में सक्षम होगा। 3उदाहरण के लिए, हम घोड़े के मुंह में धातु की एक छोटी लगाम लगा सकते हैं और उसका उपयोग
घोड़े को वहां ले जाने के लिए कर सकते हैं जहां हम उसे ले जाना चाहते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम घोड़े के विशाल शरीर को मोड़ सकते हैं {बस उस
छोटे से यंत्र के द्वारा}। 4जहाजों के विषय में भी सोचो। एक जहाज शायद बहुत बड़ा हो सकता है और हवायें जो इसे आगे बढ़ाती हैं बहुत तेज हो सकती हैं।
फिर भी, एक छोटी पतवार का प्रयोग करके, मांझी उस जहाज को जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकता है। 5इसी तरह, हालांकि हमारी जीभ बहुत छोटी होती हैं, हम

उसका प्रयोग डींगें मारने में करते हैं कि हमने बहुत महान काम किए हैं। इसपर भी ध्यान दो कि एक छोटी सी लौ के रूप में शुरू होने वाली आग एक वन को
जला सकती है। 6जैसे आग जंगल को जला देती है, वैसे ही जब हम बुरी बातें कहते हैं, तो हम बहुत से लोगों को चोट पहुँचाते हैं। {हम जो कहते हैं उससे पता
चलता है कि} हमारे भीतर बहुत बुराई है। जब हम बुरी बातें कहते हैं, तो इससे वह सब अपवित्र हो जाता है जो हम सोचते और करते हैं। यह हमारे पूरे जीवन
को बर्बाद कर सकता है। यह स्वयं शैतान है जो हमें बुरा बोलने के लिए प्रेरित करता है। 7एक और उदाहरण देने के लिए, लोग बहुत प्रकार के जंगली जानवरों,
पक्षियों, सरीसृपों और पानी में रहने वाले जानवरों को वश में करने में सक्षम हुए हैं। 8लेकिन अपनी बोली पर कोई नियंत्रण नहीं रख सकता। लोग जो बातें
कहते हैं वह एक खतरनाक प्राणी की तरह है जो अपने जहर से लोगों को मारना कभी बंद नहीं करता है। 9हम मुंह का प्रयोग {परमेश्वर, जो है} हमारे प्रभु और
पिता की स्तुति करने के लिए करते हैं। लेकिन हम मुंह का प्रयोग यह कहने के लिए भी करते हैं कि हम चाहते हैं कि लोगों के साथ बुरा हो। {यह बहुत गलत है,
क्योंकि} परमेश्वर ने लोगों को अपने स्वरुप की तरह बनाया है। 10कोई अपने मुंह का प्रयोग परमेश्वर की स्तुति करने के लिए कर सकता है। लेकिन फिर वह
उसी मुंह का प्रयोग इस चाहत के लिए करेगा कि लोगों के साथ बुरा हो। मेरे साथी विश्वासियों, ऐसा नहीं होना चाहिए! 11निश्चय ही अच्छे स्वाद वाला पानी और
खराब स्वाद वाला पानी एक ही सोते से नहीं आता है! 12मेरे साथी विश्वासियों, एक अंजीर का पेड़ जैतून नहीं उत्पन्न कर सकता। और एक अंगूर की बेल अंजीर
नहीं उत्पन्न कर सकती। न ही एक खारा सोता अच्छा पानी उत्पन्न कर सकता है। {इसी तरह, हमें सिर्फ वही बोलना चाहिए जो अच्छा है, और हमें वह नहीं
बोलना चाहिए जो बुरा है।} 13यदि तुममें से कोई बहुत समझदार है, तो तू अपना जीवन सही ढंग से जीने के द्वारा यह साबित करेगा। बुद्धिमान होना हमें दूसरों
के प्रति कोमलता से व्यवहार करने में अगुवाई करता है। 14लेकिन यदि तुम अन्दर से कुड़कुड़ाते हुए दूसरे लोगों से ईर्ष्या रखते हो और तुम्हें लगता है कि तुम
उनसे अधिक महत्वपूर्ण हो, तो तुम्हें बुद्धिमान होने का दावा नहीं करना चाहिए। इसका मतलब यह होगा कि जो झूठ है वह वास्तव में सच है। 15जो लोग
ईर्ष्यालु और स्वार्थी होते हैं बुद्धिमान नहीं होते हैं जैसा परमेश्वर चाहता कि वे हों। इसके बदले में, वे ऐसे लोगों की तरह सोच रहे और काम कर रहे हैं जो परमेश्वर
का आदर नहीं करते हैं। वे अपनी बुरी अभिलाषाओं के अनुसार चल रहे हैं। वे वही कर रहे हैं जो दुष्टात्माएं करती हैं। 16हम कह सकते हैं कि जो लोग क्रोधी
और स्वार्थी हैं बुद्धिमान नहीं होते, क्योंकि वे स्वयं पर नियंत्रण नहीं रखते हैं। वे बहुत सी अलग-अलग पापपूर्ण गतिविधियों में भाग लेते हैं। 17लेकिन जिस
व्यक्ति को परमेश्वर ने बुद्धिमान होने के लिए बताया है, सबसे पहले, नैतिक रूप से शुद्ध होगा। ऐसा व्यक्ति दूसरों के साथ भी शांति स्थापित करता है। वह
उनके प्रति दयालु होता है और उनके साथ अच्छा व्यवहार करता है। वह उन लोगों के लिए उदार होता है जो इसके लायक नहीं हैं, और वह दूसरों की मदद करने
के लिए क्रियात्मक काम करता है। वह एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अधिक महत्व नहीं देता है, और वह कुछ ऐसा होने का दिखावा नहीं करता है जो वह नहीं
है। 18जब लोग दूसरों के साथ मिलाप कराने में मदद करने के लिए चुपचाप काम करते हैं, वे दूसरों को भी अच्छे संबंधों को बनाने में मदद कर सकते हैं।

Chapter 4

1मैं तुम्हें बताऊंगा कि तुम आपस में क्यों लड़ रहे हो और एक दूसरे के साथ झगड़ रहे हो। ऐसा इसलिए है कि तुममें से हर एक आतंरिक रूप से बुरे कामों को
करना चाहता है। वो अभिलाषाएं तुम्हें लड़ने के लिए प्रेरित करती हैं {उन कामों को करने में सक्षम होने के लिए}। 2तुम चीजों को पाने की इच्छा रखते हो,
लेकिन तुम नहीं पाते {उन्हें}। यह तुम्हें उन लोगों के प्रति कड़वाहट और क्रोध से भरता है जिनके पास है। लेकिन तुम्हें {फिर भी} नहीं मिलता {जो तुम चाहते
हो}, इसलिए तुम झगड़ते हो और {दूसरों के साथ} लड़ते हो। यदि तुम {परमेश्वर से} इसके बदले में {उन चीजों के लिए जो तुम चाहते हो} प्रार्थना करो, तो
परमेश्वर तुम्हें {जो तुम्हें वास्तव में चाहिए} देगा। 3लेकिन जब तुम परमेश्वर से कुछ मांगते हो, तब भी वह तुम्हें नहीं देता, क्योंकि तुम बुरी उद्देश्य से मांगते हो।
तुम चीजों को सिर्फ इसलिए मांग रहे हो ताकि तुम अपने भोगविलास के लिए अनुचित रीति से उनका प्रयोग कर सको। 4तुम परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हो
रहे हो {उसकी आज्ञा न मानने के द्वारा}! तुम्हें यह अवश्य समझना चाहिए कि जो लोग दुष्ट लोगों की तरह व्यवहार करते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी हैं। इसलिए
यदि तुम इसी तरह जीने का निर्णय लेते हो, तो तुम परमेश्वर के विरोधी होने का चुनाव कर रहे हो। 5तुम्हें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने उद्देश्य के साथ हमें
इस बारे में पवित्र पवित्रशास्त्र में बताया है। वहाँ हमें सिखाता है कि जिस आत्मा को उसने हम में रखा है हमारे लिए उत्सुक है, वह चाहता है कि हम अपना
जीवन इस तरह से जिएँ जिससे वह प्रसन्न हो। 6यदि हम ऐसे तरीकों से जी रहे हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते हैं, वह हमारे लिए बहुत दयालु है। {यदि हम
नम्रता से स्वीकार करते हैं कि हमने पाप किये हैं, तो वह हमें अलग ढंग से जीने में मदद करेगा।} इस कारण से यह शिक्षा बाइबल में है: “जो घमण्ड करते हैं
परमेश्वर उनकी सहायता नहीं करता है, लेकिन उनकी सहायता करता है जो नम्र हैं।” 7इसलिए नम्रता से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का चुनाव करो।
शैतान के प्रलोभनों के आगे न झुकने का दृढ़ निश्चय करो। इससे शैतान तुम्हें लुभाने की कोशिश करना छोड़ देगा। 8परमेश्वर के साथ ईमानदार और सीधे रहो।
यदि तुम ऐसा करते हो, तो वह अपनी उपस्थिति में तुम्हारा स्वागत करेगा। तुम जो पापी हो, जो गलत है उसे करने से मुंह मोड़ो और वही करो जो सही है। तुम
तब तक यह तय नहीं कर सकते हो जब तक स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित नहीं कर देते, गलत विचारों को सोचना बंद कर दो और सिर्फ सही विचारों को
ही सोंचो। 9दुःखी होओं और उदास होओ और रोओ {तुम्हारे द्वारा किए गए बुरे कामों के कारण}। तुम स्वयं भोगविलास कर रहे हो, लेकिन तुम्हें गंभीर होना
चाहिए {और महसूस करो कि तुम्हें कितना बदलने की जरूरत है}। 10नम्रता से प्रभु को दिखाओ कि तुम अपने पापों के लिए कितने खेदित हो। यदि तुम ऐसा
करोगे तो वह तुम्हारा आदर करेगा। 11मेरे साथी विश्वासियों, एक दूसरे पर बुरा करने का दोष लगाना बंद करो। जो कोई एक साथी विश्वासी पर दोष लगाता है
और निंदा करता है, वह वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा पर दोष लगा रहा है और निंदा कर रहा है {कि हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए}। परन्तु यदि तुम उस
आज्ञा के विरुद्ध बोलते हो, तुम इसका पालन नहीं कर रहे हो। इसके बदले में, तुम एक न्यायाधीश की तरह काम कर रहे हो जो इसकी निंदा करता है। 12सिर्फ
एक है जो लोगों का न्याय कर सकता है {व्यवस्था के अनुसार} वही है जिसने व्यवस्था दी है। वह परमेश्वर है, जो न सिर्फ लोगों को {व्यवस्था तोड़ने के लिए}
अपराधी ठहराने में सक्षम है, बल्कि उन्हें क्षमा भी कर सकता है {भले ही उन्होंने व्यवस्था को तोड़ा हो}। तुम निश्चित रूप से परमेश्वर का स्थान लेने और दूसरों
का न्याय करने के हकदार नहीं हो। 13तुममें से कुछ लोग {अहंकार से} कह रहे हैं, "आज या कल हम किसी खास शहर में जाएंगे। हम वहां एक साल बिताएंगे
और हम चीजें खरीदेंगे और बेचेंगे और बहुत पैसा कमाएंगे। ” अब तुम मेरी बात सुनो! 14तुम्हें इस तरह की बात नहीं करनी चाहिए, क्योंकि तुम नहीं जानते कि
कल क्या होगा। वास्तव में, तुम यह भी नहीं जानते कि तुम कितने समय तक जीवित रहोगे! सब होते हुए भी, तुम्हारा जीवन छोटा है, भाप की तरह जो कुछ
समय के लिए दिखाई देती है लेकिन फिर लोप हो जाती है। 15इसके बदले में {तुम जो कह रहे हो,} तुम्हें कहना चाहिए, " यदि प्रभु की इच्छा हो, तो हम बहुत

समय तक जीवित रहेंगे और हम एक काम को या दूसरे को करने में समर्थ होंगे।" [16]लेकिन तुम जो कर रहे हो उन सभी बातों के बारे में डींगें मारना है तुम जो
करने की योजना बना रहे हो। इस तरह की डींग मारना पापपूर्ण है। [17]इसलिए यदि कोई व्यक्ति कुछ काम नहीं करता है भले ही वह जानता हो कि यह सही
काम है जो उसे करना चाहिए, तो वह पाप करता है।

Chapter 5

[1]अब मुझे तुम धनी लोगों से कुछ कहना है {जो कहते हैं कि तुम यीशु पर विश्वास करते हो}। मेरी बात सुनो! तुम्हें रोना और जोर-जोर से विलाप करना चाहिए
क्योंकि तुम भयानक पीड़ाओं का अनुभव करने जा रहे हैं! [2]तुम्हारा धन व्यर्थ है, मानो वह सड़ गया हो। तुम्हारे सुन्दर वस्त्र व्यर्थ हैं, मानो कीड़ों ने उन्हें नष्ट कर
दिया हो। [3]तुम्हारा सोना और चाँदी व्यर्थ हैं, मानो वे गल गए हों। {जब परमेश्वर तुम्हारा न्याय करेगा,} तुम्हारी यह बेकार संपत्ति प्रमाण होगी कि तुम {लालची
होने के} दोषी हो। ठीक जैसे जंग और आग चीजों को नष्ट कर देते हैं, परमेश्वर तुम्हें कड़ी सजा देगा। तुम्हें यह जानकर धनी और अधिक धनी बनने की कोशिश
नहीं करनी चाहिए कि यीशु वापस आने वाला है। {जब वह लौटेगा, तो तुम्हारी संपत्ति बेकार हो जाएगी।} [4]तुमने जो किया है उसके विषय में सोचो। तुमने
मजदूरों से वायदा किया था तुमने मजदूरी का भुगतान नहीं किया जिन्होंने तुम्हारे खेतों की कटाई की थी। ये बिना भुगतान की हुई मजदूरी दर्शाती है कि तुम इन
मजदूरों के साथ कितने अन्यायपूर्ण थे। जिस प्रकार तुमने उनके साथ व्यवहार किया है, उसके कारण वे परमेश्वर की दोहाई दे रहे हैं। प्रभु महान सामर्थी परमेश्वर
है, और वह उनकी ऊँची पुकार सुन रहा है {और तुमने जो किया है उसके लिए वह तुम्हें दण्ड देगा।} [5]तुमने वह सब भोगविलास के लिए खरीदा है जो तुम अपने
लिए चाहते थे। जैसे जानवर स्वयं को मोटा करते हैं, यह महसूस नहीं करते कि उन्हें मार दिया जाएगा, तुम सिर्फ चीजों के भोगविलास के लिए जीते हो, यह
नहीं जानते कि परमेश्वर तुम्हें कठोर सजा देगा। [6]तुमने औरों को ईमानदार लोगों की निंदा करने के लिए नियुक्त किया है। तुमने औरों को उन लोगों को मारने के
लिए नियुक्त किया है जिन्होंने कुछ भी बुरा नहीं किया था। वे तुम्हारे विरुद्ध अपना बचाव करने में सक्षम नहीं थे। {लेकिन परमेश्वर न्याय करेगा और इन सब
कामों के लिए तुम्हें दण्ड देगा।} [7]इसलिए, मेरे साथी विश्वासियों, {भले ही धनी लोग तुम्हें क्लेश दें,} धीरज धरे रहो जब तक यीशु मसीह वापस न आ जाए। याद
रखो कि जब किसान एक खेत बोता है, वे अपनी बहुमूल्य फसलों के बढ़ने का इंतजार करते हैं। वे बुवाई के मौसम में आने वाली उस बारिश के लिए और कटाई
के मौसम से ठीक पहले आने वाली उस अधिक बारिश के लिए धैर्यपूर्वक इंतजार करते हैं। {यह बारिश फसलों के बढ़ने और पकने के लिए जरूरी है ताकि
किसान उन्हें काट सकें।} [8]इसी तरह, तुम्हें भी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए और यीशु मसीह पर दृढ़ता से भरोसा करना चाहिए, क्योंकि वह जल्द ही वापस
आ रहा है {और वह सभी लोगों का न्याय करेगा}। [9]मेरे साथी विश्वासियों, एक दूसरे के विषय में न कुड़कुड़ाओ। इस प्रकार प्रभु यीशु को तुम्हें दण्ड नहीं देना
पड़ेगा। वही एक है जो हमारा न्याय करेगा, और वह ऐसा करने के लिए शीघ्र ही वापस आएगा। [10]मेरे साथी विश्वासियों, एक उदाहरण के रूप में {धैर्य कैसे
रखें}, उन भविष्यद्वक्ताओं पर विचार करो जिन्हें प्रभु परमेश्वर ने अपने संदेशों का प्रचार करने के लिए बहुत पहले भेजा था। हालाँकि लोगों ने उन्हें बहुत पीडाएं
पहुँचायीं, लेकिन उन्होंने इसे धैर्यपूर्वक सहन किया। [11]ध्यान दीजिये कि कैसे, जब लोग {धैर्य और विश्वास के साथ} दुख सहने में सक्षम होते हैं, तो हम कहते हैं
कि परमेश्वर ने उन्हें प्रतिफल दिया है। {इसका एक उदाहरण है उस पुरुष का नाम था} अय्यूब। तुम उसके बारे में {पवित्रशास्त्र से} जानते हो। तुम जानते हो कि
उसने धैर्यपूर्वक बहुत सी बातों का सामना किया। तुम यह भी जानते हो कि परमेश्वर ने योजना बनाई थी {अय्यूब ने जो क्लेश सहे हैं, उसके द्वारा अच्छे काम
करे}। और इससे तुम कह सकते हो कि परमेश्वर बहुत करुणा करने वाले और दयालु है। [12]अब, मेरे साथी विश्वासियों, यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है जिसे
तुम समझ सकते हो। तुम्हें कभी भी स्वर्ग या पृथ्वी या किसी अन्य चीज का नाम लेकर शपथ नहीं लेनी चाहिए कि तुम जो वायदा करते हो उसके आश्वासन के
लिए। तुम्हें सिर्फ "हां" या "नहीं" कहने की आवश्यकता है। परमेश्वर तुम्हारा न्याय करेगा {यदि तुम उससे आगे बढ़कर शपथ लेते हो लेकिन फिर अपना वायदा
नहीं निभाते}। [13]तुममें से कोई व्यक्ति जो परेशानी का सामना कर रहा हो, उसे प्रार्थना करनी चाहिए {कि परमेश्वर उसकी सहायता करे}। जो कोई आनंदित हो
{परमेश्वर के लिए} स्तुति के गीत गाने चाहिए। [14]तुम में से जो कोई बीमार हो, उसे मण्डली के अगुवों को आने के लिए बुलाना चाहिए और उसके लिये प्रार्थना
करें {ठीक होने के लिए}। उन्हें उस पर जैतून का तेल लगाना चाहिए (उसे ठीक होने में मदद करने के लिए) और, प्रार्थना करें, प्रभु के अधिकार के साथ। [15]जब
ये अगुवे विश्वास के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर उस प्रार्थना का उत्तर देगा और चंगा करेगा जो व्यक्ति बीमार है। प्रभु उसके स्वास्थ्य को अच्छा
करेगा। यदि उस व्यक्ति ने पाप किया है, परमेश्वर उसे {उन पापों के लिए} क्षमा कर देगा। [16]क्योंकि प्रभु बीमारों को चंगा करने और पापों को क्षमा करने में
सक्षम है, एक-दूसरे के प्रति किये गये पापमय कामों को तुम स्वीकार करो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो। तब परमेश्वर तुम्हें चंगा करेगा। यदि जो लोग
परमेश्वर के साथ धर्मी हैं प्रार्थना करें, परमेश्वर शक्तिशाली तरीके से उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। [17]भविष्यवक्ता एलिय्याह हमारी तरह एक साधारण
व्यक्ति था। लेकिन जब उसने गिड़िगड़ा प्रार्थना की कि वर्षा न हो, तो (इस्राएल के) देश में साढ़े तीन साल तक वर्षा नहीं हुई। [18]तब एलिय्याह ने फिर प्रार्थना
की{, परमेश्वर से वर्षा भेजने के लिए कह कर}, और परमेश्वर ने वर्षा की और पौधे बढ़े और फिर से फसलें पैदा हुईं। [19]मेरे साथी विश्वासियों, यदि तुममें से एक
परमेश्वर के सच्चे संदेश का पालन करना बंद कर देता है, तो तुम्हें उस दूसरे व्यक्ति को एक बार फिर से वह करने के लिए मनाना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें
करने के लिए कहा है। [20]मैं चाहता हूं कि जो कोई एक पापी को पश्चाताप करने में मदद करे, यह जानने के लिए कि उसने जो किया है उसके कारण, परमेश्वर
पापी को आत्मिक मृत्यु से बचाएगा और उसके बहुत से पापों को क्षमा करेगा।

1 पतरस

Chapter 1

1{मैं} पतरस {हूँ}, जिसे यीशु मसीह ने {उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए} भेजा है। {मैं यह पत्र तुम को लिख रहा हूँ} जिनको परमेश्वर ने अपने लोग होने के
लिए चुन लिया है। {मैं तुम को लिख रहा हूँ} जो {अपने स्वर्गीय सच्चे घर से} दूर अस्थायी रूप से पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया, आसिया, और बितूनिया प्रान्तों
में रह रहे हैं। 2परमेश्वर हमारे पिता ने पहले से ही जो निर्धारित किया हुआ था उसी के अनुसार {तुम को चुना}। उसने अपने आत्मा के द्वारा {ऐसा किया}, और
तुम को इसलिए अलग किया ताकि तुम {उसकी} आज्ञा का पालन करो, जिससे कि यीशु मसीह की मृत्यु तुम को परमेश्वर की वाचा का सदस्य बना दे। {मैं
प्रार्थना करता हूँ कि} परमेश्वर तुम पर अपने दयालु कार्यों की बढ़ौत्तरी करे तथा तुम को और अधिक शान्ति प्रदान करे। 3परमेश्वर की स्तुति हो, जो हमारे प्रभु
यीशु मसीह का पिता है! क्योंकि वह हम पर अत्यन्त कृपालु है, इसलिए उसने यीशु मसीह के मर जाने के पश्चात उसे फिर से जीवित करके हमें नये जन्म का
अनुभव करवाया। {परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया} ताकि हमें वह आशा प्राप्त हो जो हमें कभी निराश नहीं करेगी, 4{अर्थात,} जिससे कि हम उस वस्तु के
वारिस ठहरें जो नष्ट नहीं हो सकती, अपवित्र नहीं हो सकती, या मुरझा नहीं सकती, और जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए स्वर्ग में रखा हुआ है। 5{यीशु पर} तुम्हारे
भरोसे के माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ्य तुम्हारी सुरक्षा कर रही है। {वह तुम्हारी सुरक्षा इसलिए कर रहा है} ताकि अंतिम समय में {जब यीशु हर एक जन का
न्याय करने के लिए वापस आएगा} तो तुम्हारा उद्धार प्रकट हो। 6जो उस समय घटित हुआ था उसके कारण तुम बहुत आनन्दित हुए थे, भले ही अब थोड़े समय
के लिए विभिन्न कठिनाइयों ने तुम को दु:खी किया हो। 7{ये कठिनाइयाँ} इस बात को साबित करने के लिए घटित हुईं कि तुम वास्तव में {यीशु पर} भरोसा
करते हो। {वह भरोसा} परमेश्वर के लिए उस सोने से भी अधिक मूल्यवान है, जिसे किसी जन के आग में {से गुजार कर} परखने के बाद भी कोई मनुष्य नष्ट
कर सकता है। क्योंकि तुम यीशु पर भरोसा करते हो, इसलिए जब यीशु मसीह {आएगा और} स्वयं को प्रकट करेगा तो उस समय परमेश्वर तुम्हारी प्रशंसा
करेगा, तुम्हारी बड़ाई करेगा, और तुम्हारा सम्मान करेगा। 8यद्यपि तुम ने उसे देखा भी नहीं, तुम यीशु से प्रेम करते हो। यद्यपि तुम उसे इस समय पर नहीं देखते,
तुम उस पर भरोसा करते हो और उस हर्ष के साथ आनन्दित होते हो जिसे तुम बड़ी कठिनता के साथ प्रकट कर पाते हो। 9क्योंकि तुम उस पर भरोसा करने के
परिणाम का अनुभव कर रहे हो: इसलिए परमेश्वर तुम्हारे पापों के दोष से तुम्हारा उद्धार कर रहा है। 10{बहुत समय पहले} भविष्यद्वक्ताओं ने अत्यन्त
सावधानीपूर्वक परमेश्वर द्वारा तुम्हारा उद्धार करने के बारे में जाँच-पड़ताल की। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा तुम्हारा उद्धार करने के बारे में परमेश्वर ने उनको जो
कुछ बताया उन्होंने वही बोला। 11वे यह खोजने का प्रयास कर रहे थे कि मसीह का आत्मा जो उनके भीतर था वह किसकी ओर संकेत कर रहा था, और वह
आत्मा किस समय की ओर संकेत कर रहा था। {वह आत्मा इन बातों की ओर संकेत कर रहा था} जब उसने उनको समय से पहले ही बता दिया था कि मसीह
दु:ख उठाएगा और उसके पश्चात वह महिमामयी बातें घटित होंगी। 12परमेश्वर ने इन भविष्यद्वक्ताओं को बता दिया कि यह उनके लाभ के लिए नहीं था कि वह
उन पर इन बातों को प्रकट कर रहा था, परन्तु यह तुम्हारे लाभ के लिए था। जिन लोगों ने तुम को सुसमाचार सुनाया था, अब उन्होंने ही पवित्र आत्मा के द्वारा,
जिसे परमेश्वर ने {उनको ऐसा करने में सक्षम करने के लिए} स्वर्ग से भेजा इन बातों को तुम को बता दिया है। जो बातें इन लोगों ने तुम को बताईं उनके बारे में
स्वर्गदूत और भी अधिक जानने के इच्छुक होंगे। 13इन सब बातों के परिणामस्वरूप, अपने मनों को कार्रवाई के लिए तैयार करो। सतर्क रहो। और पूर्णरूप से
आश्वस्त रहो कि जब यीशु मसीह {आएगा और} स्वयं को प्रकट करेगा तब अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर तुम्हारा उद्धार करेगा। 14क्योंकि तुम परमेश्वर का
आज्ञापालन उसी रीति से करते हो जिस प्रकार से बालकों को अपने पिताओं का आज्ञापालन करना चाहिए, अपने आप पर {पापी} इच्छाओं को हावी होने की
अनुमति मत दो जैसे तुम पहले करते थे जब तुम {परमेश्वर के बारे में सत्य} नहीं जानते तो। 15बजाए इसके, जैसे परमेश्वर पवित्र है, जिसने तुम को {अपने लोग
होने के लिए} चुना, इसलिए जब भी तुम कुछ करो तो पवित्र रीति से करो। 16पवित्र बनो, क्योंकि मूसा ने {पवित्रशास्त्र में लिखा कि परमेश्वर ने कहा}, “क्योंकि
मैं पवित्र हूँ, इसलिए तुम भी पवित्र बनो।” 17वह परमेश्वर ही है जो उन सब बातों का न्याय करता है जो प्रत्येक व्यक्ति करता है, और वह बिना पक्षपात किए
न्याय करता है। चूँकि तुम उसे ‘पिता’ कहते हो, इसलिए जबकि तुम {अपने सच्चे स्वर्गीय घर से दूर} अस्थायी रूप से जीवन व्यतीत कर रहे हो तो उस रीति से
बर्ताव करो जिससे प्रकट हो कि तुम उसका भय मानते हो 18{उस रीति से बर्ताव इसलिए करो} क्योंकि तुम जानते हो कि मूर्खतापूर्वक बर्ताव करने से {परमेश्वर
ने तुम को स्वतंत्र करने के लिए दाम चुका दिया है}, जैसा {बर्ताव करने की} तुम्हारे पूर्वजों ने तुम को शिक्षा दी थी। परमेश्वर ने तुम को चांदी या सोने जैसी
वस्तुओं से स्वतंत्र करने के लिए दाम नहीं चुकाया जो सदाकाल तक बनी नहीं रहेंगी। 19बजाए इसके, {क्रूस पर} मसीह की अनमोल मृत्यु के द्वारा {तुम को
स्वतंत्र करने के लिए परमेश्वर ने दाम चुकाया है}। {वह मृत्यु} उन पूर्णतः सिद्ध मेम्नों की {मृत्यु} के समान थी {जिनको यहूदी याजकों ने बलि चढ़ाया था}।
20परमेश्वर ने इस काम को करने के लिए संसार की सृष्टि करने से पहले ही उसे चुन लिया था। परन्तु इस अंतिम समय की अवधि में {यह अब हुआ,} कि
परमेश्वर ने उसे तुम पर प्रकट किया। 21जो मसीह ने किया उसके कारण तुम परमेश्वर पर भरोसा करते हो। उसी ने मसीह को उसके मर जाने के पश्चात फिर से
जीवित किया और यह प्रकट किया कि वह कितना महान है। जिसके परिणामस्वरूप, तुम परमेश्वर पर भरोसा करते हो और {उससे बड़े-बड़े कामों को करने
की} आशा करते हो। 22क्योंकि तुम ने अन्य विश्वासियों से सच्चा प्रेम करने के लिए {यीशु की} खरी शिक्षाओं का पालन करके अपने आप को पवित्र किया है,
इसलिए एक-दूसरे से ईमानदारी से और उत्साहपूर्वक प्रेम करो। 23{ऐसा इसलिए करो} क्योंकि परमेश्वर ने तुम को नये जन्म का अनुभव करवाया है। {तुम ने
इस नये जन्म का अनुभव} किसी ऐसी वस्तु के द्वारा नहीं पाया जो नष्ट हो जाएगी। बजाए इसके, {तुम ने इसका अनुभव} किसी ऐसी वस्तु के द्वारा पाया है जो
नष्ट नहीं होगी: अर्थात {यीशु के बारे में} वह संदेश जो परमेश्वर की ओर से आया है और वास्तव में सदाकाल तक बना रहता है। 24{हम जानते हैं कि यह सत्य
है} क्योंकि, {जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा है,} “सब लोग घास के समान हैं, और सब बातें जो मनुष्यों के बारे में बड़ाई की हैं वे घास के फूलों के समान
हैं। जिस प्रकार से घास सूख जाती और फूल मुर्झा जाते हैं, {वैसे ही लोग मर जाते हैं और उनके बारे में जो बड़ाई की बातें हैं वे थोड़े समय ही रहती हैं}, 25परन्तु
परमेश्वर का संदेश सदाकाल तक बना रहेगा।” यही संदेश {जो सदाकाल तक बना रहेगा} {मसीह के बारे में} सुसमाचार है जो हम ने तुम को सुनाया था।

Chapter 2

1क्योंकि {यह बातें सत्य हैं इसलिए}, किसी भी रीति से दूसरों के साथ दुष्टतापूर्ण व्यवहार मत करो या उनको धोखा मत दो। पाखंडी मत बनो, और दूसरों से
डाह मत करो। किसी के बारे में कपटपूर्वक बुरी बातें मत बोलो। 2जिस प्रकार से नये जन्मे बालक दृढ़तापूर्वक अपनी माता के शुद्ध दूध की लालसा करते हैं, वैसे
ही तुम को भी परमेश्वर की सच्ची बातों को सीखने की दृढ़तापूर्वक लालसा करनी चाहिए, ताकि उनको {सीखने के} द्वारा तुम आत्मिक रूप से परिपक्व हो
जाओ। उस समय तक {तुम को ऐसा अवश्य करना चाहिए} जब {इस पापी संसार से} परमेश्वर तुम्हारा पूर्णरूप से उद्धार करेगा। 3{तुम को ऐसा इसलिए करना
चाहिए} क्योंकि तुम ने तो इसका अनुभव भी किया है कि प्रभु {तुम्हारे प्रति} अत्यन्त दयालु होकर कार्य करता है। 4तुम प्रभु यीशु के पास आ गए हो। {वह} ऐसे
पत्थर {के समान है} {जो किसी भवन का भाग तो है, परन्तु वह} जीवित है। यद्यपि लोगों ने उसे ठुकरा दिया, परमेश्वर ने उसे चुना और उसे बहुत महत्व प्रदान
किया। 5और तुम भी ऐसे पत्थरों के समान हो जो जीवित हैं। {जैसे मनुष्य पत्थरों से घरों का निर्माण करते हैं,} वैसे ही परमेश्वर भी तुम को एक ऐसे भवन के
रूप में एक साथ जोड़ रहा है जिसमें उसका आत्मा निवास करता है। {साथ ही वह तुम को} उन याजकों के समान बना रहा है जिनको उसने यीशु मसीह के
माध्यम से उन आत्मिक कार्यों को करने के लिए अलग किया है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। 6{जो परमेश्वर ने कहा था} और {यशायाह ने} पवित्रशास्त्र में जो
लिखा वह हम पर प्रकट करता है कि यह सत्य है: "ध्यान दो! मैं यरूशलेम में किसी ऐसे व्यक्ति को रख रहा हूँ जो भवन के सबसे महत्वपूर्ण पत्थर के समान है।
मैंने उसे चुना है। वह बहुत मूल्यवान है। और जो कोई उस पर भरोसा करेगा, वह निश्चय ही कभी अपमानित न होगा।" 7इस कारण से, तुम जो यीशु मसीह पर
भरोसा करते हो {परमेश्वर} तुम्हारा सम्मान करेगा। हालाँकि, जो उस पर भरोसा करने से इन्कार कर देते हैं {वे ऐसे राजमिस्त्रियों के समान हैं जिनके बारे में
भजन में किसी ने लिखा है}: "जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया, वही भवन का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया।" 8{यशायाह ने} {पवित्रशास्त्र में यह
भी लिखा कि मसीह ऐसा होगा अर्थात} "एक ऐसे पत्थर के समान जिससे लोग ठोकर खाते हैं, और एक ऐसी चट्टान के समान जो लोगों को आहत करती है।"
{जिस प्रकार से लोग चट्टान पर चढ़ने से घायल हो जाते हैं,} वैसे ही लोग इसलिए आहत हो जाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के संदेश की अवज्ञा करते हैं; यह वही है
जो परमेश्वर ने निर्धारित किया है कि उनके साथ घटित होगा। 9{उनके विपरीत}, तुम {विश्वासी लोग} ऐसे लोग हो जिनको परमेश्वर ने {अपने लिए} चुन लिया
है। {तुम} याजकों के उस समूह के समान हो {जो परमेश्वर की आराधना करते हैं} और {उसके साथ} शासन करता है। {तुम} लोगों का ऐसा समूह हो जिसे
परमेश्वर ने {अपने लिए} अलग कर लिया है। {तुम} ऐसे लोग हो जो परमेश्वर के हैं ताकि तुम उन प्रशंसनीय कामों की घोषणा कर सको जो उसने किए हैं। जब
तुम पापी थे और परमेश्वर के विषय में अज्ञानी ही थे, तब उसने तुम को तुम्हारे पुराने जीवन से बाहर निकाला, और उसने तुम को अपने बारे में अद्भुत सच्ची बातें
समझाईं। 10{जो होशे ने लिखा वह तुम्हारे बारे में सत्य है} जो पहले "प्रजा नहीं" हुआ करते थे, परन्तु अब "परमेश्वर की प्रजा" हो। किसी समय पर "परमेश्वर ने
तुम्हारे साथ दयालु होकर व्यवहार नहीं किया था," परन्तु अब "उसने तुम्हारे साथ दयालु होकर व्यवहार किया है।" 11हे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ,
तुम उन परदेशियों के समान हो {जिनका वास्तविक घर स्वर्ग में है}। इसलिए मैं तुम से उन कामों को न करने का आग्रह करता हूँ जिनको तुम्हारा पापी मानवीय
स्वभाव करना चाहता है। वे अभिलाषायें तुम्हें नष्ट कर देंगीं। 12जो परमेश्वर को नहीं जानते, उनके मध्य में अच्छा व्यवहार इसलिए करो ताकि, जिन कामों को
तुम कर रहे हो, और जिनको वे कपटपूर्वक बुरा कहते हैं, तो वे देखेंगे कि तुम {वास्तव में} अच्छे काम कर रहे हो, और जब परमेश्वर सबका न्याय करने के लिए
आएगा तब वे उसका सम्मान करेंगे। 13प्रभु यीशु का सम्मान करने के लिए, उस हर एक जन की आज्ञा का पालन करो जिनके पास {लोगों पर शासन करने का}
अधिकार है। इसमें राजा भी सम्मिलित है, क्योंकि उसके पास सर्वश्रेष्ठ {मानवीय} अधिकार है। 14इसमें राज्यपाल भी सम्मिलित हैं, क्योंकि राजा ने उन्हें बुरे
काम करने वालों को दंडित करने और अच्छे काम करने वालों की प्रशंसा करने के लिए भेजा है। 15{जो लोगों पर शासन करते हैं उनकी आज्ञा का पालन करो,}
क्योंकि परमेश्वर यही चाहता है: {वह चाहता है कि तुम} अच्छे काम करो ताकि मूर्खों को {जो परमेश्वर को नहीं जानते} अज्ञानतापूर्वक यह कहने से रोक दो कि
तुम ने बुरे काम किए हैं। 16{जो लोगों पर शासन करते हैं उनकी आज्ञा का पालन करो} उन लोगों के रूप में जो स्वेच्छा से ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं, परन्तु
बुरे कामों को छिपाने के लिए स्वतंत्र लोगों के रूप में अपने पद का उपयोग करने का प्रयास मत करो। बजाए इसके, ऐसे लोगों के रूप में {आज्ञा का पालन
करो} जैसा परमेश्वर की सेवा करने वालों को करना चाहिए। 17सभी के प्रति आदरभाव रखो। {अपने} सब संगी विश्वासियों से प्रेम रखो। परमेश्वर का भय मानो।
राजा के प्रति आदरभाव रखो। 18हे घरेलू दासों तुम {जो विश्वासी हो}, सम्पूर्ण भक्तिभाव से अपने स्वामियों के अधीन रहो। {ऐसा} न केवल उन {स्वामियों} के
साथ करो जो तुम्हारे प्रति बहुत दयालु होकर व्यवहार करते हैं, बल्कि उनके साथ भी जो तम्हारे प्रति अन्याय के साथ व्यवहार करते हैं। 19{अपने स्वामियों के
अधीन रहो,} क्योंकि यह एक ऐसी बात है जिसे परमेश्वर पसंद करता है—यदि कोई व्यक्ति कठिनाइयों को सहन करता है और अयोग्य रूप से इसलिए पीड़ित
होता है क्योंकि वह व्यक्ति जानता है कि परमेश्वर कौन है {और वह क्या चाहता है}। 20{अपने स्वामियों के अधीन रहो,} क्योंकि उस समय यदि तुम सह लेते हो
जब कोई तुम को इसलिए पीटता है क्योंकि तुम ने पाप किया है तो निश्चित रूप से तुम्हारे लिए कोई सम्मान नहीं है। हालाँकि, यह कुछ ऐसा है जिस पर परमेश्वर
अनुग्रह करता है: यदि तुम दुःख उठाते हुए सह लेते हो, भले ही तुम ने वह किया हो जो भला है। 21{इस पर परमेश्वर इसलिए अनुग्रह करता है} क्योंकि उसने
तुम को भलाई करते हुए दुःख उठाने के लिए बुलाया है। {उसने तुम को इसके लिए इसलिए बुलाया है} क्योंकि तुम्हारे लिए एक उदाहरण बनने को मसीह ने भी
तुम्हारी खातिर दुःख उठाया ताकि जो उसने किया तुम उसका अनुकरण करो। 22"उसने कभी पाप नहीं किया। और उसने लोगों को धोखा देने के लिए कभी
कुछ भी नहीं कहा।" 23जब लोगों ने उसे अपमानित किया, तो उसने उलटा उनको अपमानित नहीं किया। जब उसने दुःख उठाया, तो उसने {उनको जिन्होंने
उसे पीड़ित किया} कभी धमकी नहीं दी। बजाए इसके, उसने परमेश्वर पर, जो हमेशा सच्चा न्याय करता है भरोसा किया, {यह साबित करने के लिए कि वह
निर्दोष था}। 24मसीह ने स्वयं अपनी देह में हमारे पापों के लिए दंड सहा, {जब वह} क्रूस पर उस उद्देश्य के लिए मरा कि हम सही तरीके से जीवन व्यतीत करें
क्योंकि हम अब पाप के द्वारा नियंत्रित नहीं हैं। परमेश्वर ने तुम्हें इसलिए चंगा किया क्योंकि लोगों ने मसीह को घायल किया था। 25{परमेश्वर ने तुम को इसलिए
चंगा किया} क्योंकि तुम खोई हुई भेड़ के समान {परमेश्वर से विमुख} हो गए थे, परन्तु अब परमेश्वर तुम को यीशु के पास वापस लेकर आया है, जो तुम्हारी
चिन्ता करता है और तुम्हारी रखवाली ऐसे करता है {जैसे कोई चरवाहा अपनी भेड़ों की चिन्ता करता है}।

Chapter 3

1उसी रीति से, हे स्त्रियों {तुम जो विश्वासिनी हो}, अपने-अपने पतियों के अधीन रहो। {ऐसा ही करो} ताकि तुम ऐसे पतियों को उनसे बिना कुछ कहे विश्वासी
बनने के लिए सहमत कर लो जो {मसीह के बारे में} संदेश पर विश्वास नहीं करते। 2{वे मसीह पर विश्वास इसलिए करेंगे} क्योंकि वे तुम को ईमानदारी से बर्ताव
करते हुए और {उनके प्रति} आदरपूर्वक {व्यवहार करते हुए} देखते हैं। 3अलबेले केशविन्यास बनाकर या सोने के गहने या बढ़िया कपड़े पहनकर अपने शरीर
के बाहरी हिस्से को सुंदर मत बनाओ। 4बजाए इसके, अपने अनदेखे मन को इस तरह से सुंदर बनाओ कि वह कभी फीका न पड़े। मेरा अर्थ है, विनम्र और
शान्तिपूर्ण मनोवृत्ति अपनाओ। यह एक ऐसी बात है जिसे परमेश्वर बहुत महत्व देता है। 5{ऐसा इसलिए करो} क्योंकि यह वह तरीका है जिससे बहुत समय
पहले पवित्र जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रिओं ने अपने आप को सुंदर बनाया। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया और अपने पतियों के अधीन हो गईं। 6उदाहरण
के लिए, सारा ने अपने पति अब्राहम की आज्ञा का पालन किया और उसे {अपना} स्वामी कहा। यदि तुम अच्छे कर्म करती हो और तुम को किसी भी भयानक
घटना के होने का भय नहीं होगा तो परमेश्वर तुम को अपनी पुत्रियाँ समझेगा। 7उसी रीति से, हे पुरुषों {तुम जो विश्वासी हो}, अपनी-अपनी पत्नियों के साथ
सही समझ के साथ जीवन व्यतीत करो। {उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो} जैसा तुम किसी ऐसे जन के साथ {व्यवहार करोगे} जो {तुम्हारी तुलना में} दुर्बल
है। उनका आदर ऐसे लोगों के रूप में करो जो तुम्हारे साथ परमेश्वर का अनुग्रहकारी उपहार, अर्थात अनन्त जीवन भी प्राप्त करेंगे। {ऐसा ही करो} ताकि कोई
भी बात तुम्हें प्रार्थना करने से न रोके। 8{मेरे पत्र के इस भाग को} समाप्त करने के लिए, मैं तुम सब से {कहता हूँ}, कि {अपने मध्य में} एक जैसी मानसिकता
रखो। {एक-दूसरे के प्रति} सहानुभूति रखो। संगी विश्वासियों के रूप में एक दूसरे से प्रेम करो। {एक-दूसरे के प्रति} करुणा के साथ व्यवहार करो। विनम्र बनो।
9जब लोग तुम्हारे साथ बुराई करें अथवा तुम्हारा अपमान करें, तो उनके साथ वैसा ही मत करना। बजाए इसके, उनको आशीष देना, क्योंकि परमेश्वर ने तुम को
ऐसा ही करने के लिए चुना है ताकि वह तुम को आशीष दे। 10{हम जानते हैं कि यह इसलिए सत्य है} क्योंकि, {जैसा कि दाऊद ने लिखा था,} "उन लोगों के
लिए जो सचमुच अच्छे जीवन का आनन्द लेना चाहते हैं, उनको बुरी बातें नहीं बोलनी चाहिए और न ही छल की बातें कहनी चाहिए। 11{बजाए इसके} वे बुराई
करने से इन्कार करें, और भलाई करें। उन्हें अन्य लोगों के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए लगन से प्रयास करना चाहिए। 12{उनको इन बातों को अवश्य
करना चाहिए,} क्योंकि परमेश्वर धर्मी लोगों पर दृष्टि रखता है। वह धर्मी लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता है {और उत्तर देता है}, परन्तु वह बुराई करने वाले लोगों
का विरोध करता है।" 13यदि तुम भले काम करने के लिए उत्सुक हो तो इसकी सम्भावना नहीं है कि कोई तुम को हानि पहुँचाएगा। 14हालाँकि, भले ही यदि तुम
को इसलिए दुःख उठाना पड़े क्योंकि तुम ने जो किया वह सही था, परमेश्वर तुम को आशीष देगा। "उन बातों से मत डरो या परेशान मत हो जिनसे दूसरे लोग
डरते हैं।" 15बजाए इसके, अपने-अपने मनों में यह स्वीकार कर लो कि प्रभु मसीह पवित्र है। सर्वदा उत्तर देने के लिये तैयार रहो जो कोई भी इस विषय में बताने
के लिए तुम से पूछे कि इतनी दृढ़ता से तुम क्या आशा रख रहे हो {जिसे परमेश्वर तुम्हारे लिए पूरी करेगा}। 16परन्तु विनम्रतापूर्वक और आदरपूर्वक तथा कोई
दुष्ट काम न करते हुए {उनको उत्तर देना}, ताकि परमेश्वर उन लोगों को लज्जित करे जो उन भले कामों को तुच्छ जानते हैं जिनको तुम मसीह के साथ जुड़े हुए
लोगों के रूप में करते हो। {परमेश्वर उनको लज्जित करेगा} उन बातों के विषय में जिनको वे तुम्हारे विरोध में कपटपूर्वक बोल रहे हैं। 17{इन बातों को इसलिए
करो} क्योंकि, यदि परमेश्वर चाहता है {कि तुम दुःख उठाओ}, तो तुम ने वह किया जो भला है, क्योंकि यह तुम्हारे लिए दुःख उठाना उसकी तुलना में बेहतर है
कि तुम इसलिए {दुःख उठाओ} क्योंकि तुम ने वह किया जो बुरा है। 18{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि मसीह ने भी दुःख उठाया। {अन्य लोगों} के पापों की
खातिर एक समय पर {उसने दुःख उठाया}। वह एक धर्मी मनुष्य होकर अधर्मी लोगों के लाभ के लिए {मरा}। तुम को परमेश्वर के साथ रहने में सक्षम करने के
लिए {वह मरा}। यद्यपि लोगों ने उसकी हत्या कर दी, परमेश्वर के आत्मा ने उसे फिर से जीवित कर दिया। 19उसी आत्मा ने उसे जाकर उन {बुरी} आत्माओं पर
{परमेश्वर की विजय} की घोषणा करने के लिए भी सक्षम किया जिनको परमेश्वर ने बंदी बना रखा था। 20{उन बुरी आत्माओं ने} बहुत समय पहले, नूह के
जीवनकाल में परमेश्वर की अवज्ञा की थी। जिस समय नूह एक बड़ी नाव बना रहा था, तब परमेश्वर ने {यह देखने के लिए धीरज धरकर इन्तजार किया कि क्या
मनुष्य बुराई करने से रुकेगा}। उस नाव में {केवल} कुछ ही लोग {बचाए गए}। विशेष रूप से, परमेश्वर ने {जलप्रलय के} पानी से केवल आठ लोगों को सुरक्षित
निकाला। 21वह पानी एक प्रतीक है जो बपतिस्मे का प्रतिनिधित्व करता है जिससे इस समय में तुम्हारा उद्धार होता है। {यह बपतिस्मा} तुम्हारी देह के मैल को
नहीं धोता। बजाए इसके, यह दर्शाता है कि हम परमेश्वर से हमें आश्वस्त करने के लिए कह रहे हैं कि उसने हमारे पापों को क्षमा कर दिया है। {यह बपतिस्मा}
परमेश्वर के यीशु मसीह को फिर से जीवित करने के माध्यम से तुम्हारा उद्धार करता है। 22परमेश्वर द्वारा प्रत्येक दुष्ट और शक्तिशाली आत्मा को उसके अधीन
करने के बाद, मसीह स्वर्ग में चला गया, जहाँ वह परमेश्वर के साथ सर्वोच्च सम्मान के स्थान पर विराजमान है।

Chapter 4

1इसलिए, क्योंकि मसीह ने शारीरिक रूप से दुःख उठाया, अपने आपको {मसीहियों के रूप में दुःख उठाने के लिए} तैयार करो। {उस दुःख के बारे में} विचार
करने के द्वारा जिस तरह से यीशु ने {उस दुःख के बारे में} विचार किया था {ऐसा इसलिए करो} क्योंकि जो लोग शारीरिक रूप से दुःख उठाते हैं वे अब पाप में
सम्मिलित नहीं हैं 2ताकि वे उन कामों को न करें जो पापी लोग अपने शेष जीवन में करना चाहते हैं। बजाए इसके, वे उन कामों को करने के लिए जीवन व्यतीत
करते हैं जिनको परमेश्वर चाहता है कि वे करें। 3{मैं तुम से यह इसलिए कहता हूँ} क्योंकि तुम पहले ही अपने जीवन का बहुत अधिक समय उन कामों को करने
में लगा चुके हो जिनको परमेश्वर को नहीं जानने वाले लोग करना पसंद करते हैं। {उनकी तरह,} तुम ने यौन अनैतिक और वासनापूर्ण कार्य किए, नशे में धुत हो
गए, अनैतिक समारोहों और मद्यपान वाले समारोहों में भाग लिया, और मूर्तियों की पूजा की, जिसे परमेश्वर ने मना किया हुआ है। 4उन बातों के सम्बन्ध में, जो
लोग परमेश्वर को नहीं जानते, वे इस बात से चकित हैं कि जब वे ये लापरवाही वाले अनैतिक काम करते हैं तो तुम {अब} उनके साथ सम्मिलित नहीं होते हो।
इसके परिणामस्वरूप, वे {तुम्हारे बारे में} बुरी बातें बोलते हैं। 5{एक दिन} इन लोगों को परमेश्वर के सम्मुख {जो कुछ उन्होंने किया है} उसे स्वीकार करना
पड़ेगा। वही है जो सब लोगों का न्याय करेगा। 6यही कारण है कि क्यों {लोगों ने} {उन विश्वासियों को जो उस समय} मर चुके थे {यीशु के बारे में} सुसमाचार
प्रचार किया: ताकि {उन विश्वासी को} जिन्हें, यद्दपि लोगों ने उनके जीवनकाल के दौरान मानवीय {मानकों} के अनुसार उनका आंकलन किया, वे पवित्र आत्मा
के माध्यम से {अब} परमेश्वर के {मानकों} के अनुसार {सदाकाल का} जीवन व्यतीत करते हैं। 7{इस पृथ्वी पर की} सब बातें शीघ्र ही समाप्त हो जाएँगी।

इसलिए अच्छी तरह से प्रार्थना करने के लिए समझदारी से और स्पष्ट रूप से विचार करो। 8सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक-दूसरे से ईमानदारी से प्रेम करो,
क्योंकि यदि तुम दूसरों से प्रेम करते हो, तो तुम उनको उन बहुत से पापों के लिए क्षमा कर दोगे {जिनको वे तुम्हारे विरोध में कर सकते हैं}। 9उन संगी मसीहियों
के लिए भोजन और सोने के लिए जगह उपलब्ध करवाओ {जो तुम्हारे पास आते हैं}, और इसे हर्ष के साथ करो। 10परमेश्वर ने तुम को जो वरदान दिए हैं, उनसे
अपने संगी विश्वासियों की सेवा करो। उन विभिन्न वरदानों का अच्छी तरह से प्रबन्धन करो जो परमेश्वर ने तुम को दिए हैं। 11जो बोलते हैं {उनको ऐसे बोलना
चाहिए} कि मानो वे उन बातों को {बोल रहे हों} जो परमेश्वर ने बोली हैं। वे जो {दूसरों की} सेवा करते हैं उनको {उनकी सेवा} उस सामर्थ्य से करनी चाहिए जो
परमेश्वर उनको देता है। {ऐसा ही करो} ताकि वह सब कुछ {करने} के द्वारा तुम परमेश्वर की महिमा करो जिसे करने में यीशु मसीह तुम को सक्षम बनाता है। मैं
प्रार्थना करता हूँ कि हर कोई देखे कि वह सदाकाल तक कितना महिमामय और शक्तिशाली है। ऐसा ही हो! 12हे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, उन
कष्टदायक बातों से चकित मत हो जिनका तुम अनुभव कर रहे हो। {वे बातें} तुम्हारी परीक्षा ले रही हैं {जैसे लोग धातु को आग में डालकर परीक्षण करते हैं}।
{ऐसा मत सोचो कि} तुम्हारे साथ कुछ असामान्य घटित हो रहा है। 13बजाए इसके, इस हद तक आनन्दित रहो कि तुम भी उसी तरह का दुःख उठा रहे हो जो
मसीह ने उठाया था। {दुःख उठाने पर आनन्दित रहो,} ताकि जब मसीह वापस आकर सब पर यह प्रकट करे कि वह कितना गौरवशाली है, तो तुम भी अत्यन्त
प्रसन्न हो जाओ। 14यदि अन्य लोग तुम्हारा अपमान इसलिए करते हैं क्योंकि तुम मसीह पर विश्वास करते हो, तो परमेश्वर ने तुम को आशीष दी है, क्योंकि
{तुम्हारा दुःख} दर्शाता है कि परमेश्वर का आत्मा तुम्हारे भीतर वास करता है, अर्थात वह आत्मा जो प्रकट करता है कि परमेश्वर कितना महान है। 15सुनिश्चित
करो कि तुम को इसलिए कष्ट न हो क्योंकि तुम ने किसी की हत्या की है या कुछ भी चुराया है या किसी अन्य प्रकार की बुराई की है या तुम ने किसी अन्य के
मामलों में हस्तक्षेप किया है। 16परन्तु यदि तुम इसलिए दुःख उठाते हो क्योंकि तुम मसीही हो, तो लज्जित न हो। बजाए इसके, परमेश्वर की स्तुति करो कि तुम
"मसीही" कहलाते हो। 17{मैं यह इसलिए कहता हूँ} क्योंकि अब समय आ गया है कि परमेश्वर लोगों का न्याय करना आरम्भ करे, और सर्वप्रथम वह अपने
लोगों का न्याय करेगा। चूँकि सर्वप्रथम वह हम विश्वासियों का {न्याय करेगा}, तो इस बारे में विचार करो कि अंत में उन लोगों के लिए कितनी {भयानक बात}
होगी जो उस सुसमाचार का पालन नहीं करते जो उसकी ओर से आता है! 18{सुलैमान} ने भी {पवित्रशास्त्र में लिखा}, "यदि धर्मी लोगों को स्वर्ग जाने से पहले
कई कठिन परीक्षाओं का सामना करना अवश्य है, तो अधर्मी और पापी लोगों को निश्चित रूप से कितना अधिक दुःख उठाना पड़ेगा!" 19अतः, जो लोग इसलिए
दुःख उठाते हैं क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि {वे दुःख उठाएँ} तो भला काम करते रहना जारी रखते हुए उनको अपने जीवनों से परमेश्वर पर भरोसा करना
चाहिए। परमेश्वर ही है जिसने उनकी सृष्टि की, और जो करने का वह वादा करता है उसे वह हमेशा करता है।

Chapter 5

1अब मैं {, पतरस,} तुम्हारे मध्य में उन लोगों से आग्रह करता हूँ जो प्राचीन हैं {अर्थात जो विश्वासियों की सभाओं का नेतृत्व करते हैं}; {मैं भी} एक प्राचीन हूँ।
मैंने व्यक्तिगत रूप से मसीह को दुःख उठाते देखा है, और मैं उसके महिमामय स्वभाव में सहभागी होऊँगा जिसे परमेश्वर शीघ्र ही प्रकट करेगा। 2{हे प्राचीनों,}
तुम्हारे साथ के विश्वासियों की देखभाल ऐसे करो जैसे कि तुम चरवाहे हो जो अपने भेड़ों के झुंड की देखभाल करते हैं। {उनकी देखभाल करो} इसलिए नहीं कि
तुम को यह करना चाहिए, बल्कि इसलिए कि तुम वास्तव में वह चाहते हो, जैसा परमेश्वर चाहता है। लालची होकर {ऐसा न करो} कि {ऐसा करके धन प्राप्त
करो}, बल्कि इसे उत्साहपूर्वक करो। 3परमेश्वर ने तुम को जो लोग सौंपे हैं, उन पर प्रभुता करने वाले अधिकारियों की तरह काम मत करो। बजाए इसके, {तुम
अपने जीवनों को कैसे संचालित करते हो इसके द्वारा} उन विश्वासियों के लिए {अच्छे} उदाहरण बनो। 4{यदि तुम उन कामों को करते हो,} तो जब यीशु, जो
हमारा शासक चरवाहे के समान है, प्रकट हो, तो वह तुम में से प्रत्येक {अगुवे} को पुरस्कार देगा। {वह पुरस्कार} महिमामय होगा और सदाकाल तक बना
{रहेगा}। 5उसी रीति से, हे जवानों, तुम उन प्राचीनों की आज्ञा का पालन करो {जो विश्वासियों की सभाओं का नेतृत्व करते हैं}। अब तुम सभी {विश्वासियों} को
एक-दूसरे के प्रति विनम्रतापूर्वक कार्य करना चाहिए क्योंकि {जो सुलैमान ने पवित्रशास्त्र में लिखा वह सत्य है:} "परमेश्वर अभिमानी लोगों का विरोध करता है,
परन्तु वह विनम्र लोगों के प्रति दयालु होकर कार्य करता है।" 6चूँकि यह सच है, इसलिए परमेश्वर के सामने, जिसके पास {लोगों को बचाने और दण्ड देने का}
अधिकार है, स्वयं को दीन बनाओ ताकि वह उचित समय पर तुम्हारा सम्मान करे। 7परमेश्वर पर भरोसा रखो कि जिन बातों से तुम चिन्तित होते हो वह उन सब
की देखभाल इसलिए करेगा क्योंकि उसे तुम्हारी चिन्ता है। 8स्पष्ट रूप से और सतर्क रूप से विचार करो, {क्योंकि} तुम्हारा शत्रु शैतान है, और लोगों को नष्ट
करने की खोज में वह चारों ओर घूम रहा है। वह उस सिंह के समान है जो गर्जता है और मारकर खाने के लिए लोगों को ढूँढ़ता है। 9{मसीह और उसके संदेश
में} दृढ़तापूर्वक भरोसा करते हुए शैतान का विरोध करो। {ऐसा इसलिए करो} क्योंकि तुम जानते हो कि सम्पूर्ण संसार में तुम्हारे संगी विश्वासी इसी रीति से दुःख
उठाते हैं। 10परन्तु जब तुम थोड़े समय के लिए दुःख उठाते हो, तो परमेश्वर जो हर तरह से {तुम्हारे प्रति} दयालु होकर कार्य करता है, वह स्वयं ही {जो तुम ने
खो दिया है} उसे पुनर्स्थापित कर देगा और तुम को हर तरह से पूर्णतः मजबूत करेगा। परमेश्वर ही है जिसने तुम को सदाकाल तक स्वर्ग में उसकी महिमामय
उपस्थिति का अनुभव करने के लिए चुना है क्योंकि तुम मसीह से जुड़ गए हो। 11मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह सदाकाल तक सामर्थी रूप से शासन करे। ऐसा ही
हो! 12सीलास ने {जैसा कि मैंने उसे बताया} यह पत्र मेरे लिए लिखा है। मैं उसे एक विश्वासयोग्य संगी विश्वासी मानता हूँ। मैंने तुम को यह संक्षिप्त पत्र इसलिए
लिखा ताकि तुम को प्रोत्साहित किया जा सके और तुम को यह बताया जा सके कि मैंने जो लिखा है वह परमेश्वर के सच्चे और अनुग्रहकारी संदेश के बारे में है।
इस संदेश पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करना जारी रखो! 13{यह नगर जिसे हम} बेबीलोन कहते हैं, इसमें से जिन विश्वासियों को परमेश्वर ने {उसके लोग होने के
लिए} वैसे ही चुना, जैसे उसने तुम को चुना, तुम को अपना अभिवादन भेजते हैं। मरकुस, जो मेरे लिए एक पुत्र के समान है, वह भी {तुम को अपना अभिवादन
भेजता है}। 14प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को चुम्बन देकर यह दर्शाने के लिए नमस्कार करो कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करते हो। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम
सभी को जो मसीह से जुड़ गए हैं, शांति का अनुभव करवाता रहे।

2 पतरस

Chapter 1

1{मैं,} शमौन पतरस, जो यीशु मसीह की सेवा करता हूँ, और एक प्रेरित हूँ {जिसे उसने नियुक्त किया है}। {मैं यह पत्र लिख रहा हूँ} तुम लोगों को जिन्हें
परमेश्वर ने {मसीह पर} वैसे ही विश्वास करवाया जिस प्रकार से उसने हम {प्रेरितों} को {मसीह पर} विश्वास करवाया था। उसके धार्मिकता के कामों के द्वारा
{यीशु ने यह किया है}। यीशु मसीह हमारा परमेश्वर है, और वही है जो हमारा उद्धारकर्ता है। 2मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हारे प्रति अपने दयालु कार्यों को
बढ़ाएगा तथा तुम को और अधिक शान्ति इसलिए प्रदान करेगा क्योंकि तुम परमेश्वर को और यीशु को, {जो} हमारा प्रभु है, जानते हो। 3परमेश्वर ने हम को वह
सब कुछ दिया है जिसकी हमें एक ऐसा जीवन व्यतीत करने हेतु आवश्यकता है जिससे उसे आदर मिले। परमेश्वर होकर अपनी सामर्थ्य के द्वारा {वह ऐसा
करता है}। जो हम उसके विषय में जानते हैं उसके द्वारा {वह ऐसा करता है}। परमेश्वर ही है जिसने अपने तेजस्वी और उत्कृष्ट चरित्र के द्वारा {उसकी प्रजा होने
के लिए} हमें चुना है। 4{अपने तेजस्वी और उत्कृष्ट चरित्र के द्वारा,} परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमारे लिए अनमोल और महान कार्यों को करेगा। {उसने
ऐसा इसलिए किया है} ताकि जो प्रतिज्ञा उसने की है उस पर {विश्वास करने के} द्वारा, तुम भी परमेश्वर के समान कामों को करने के योग्य हो जाओ, {और}
पापपूर्ण कार्यों को करने की इच्छा के द्वारा संसार में जो नैतिक भ्रष्टता है, तुम अब उससे पीड़ित नहीं होगे। 5क्योंकि परमेश्वर ने वह सब किया है, इसलिए न
केवल मसीह पर विश्वास करने के लिए, {परन्तु साथ ही} भले कामों को करने के लिए भी अपना सर्वोत्तम प्रयास करो। {और सुनिश्चित करो कि तुम न केवल}
भले कामों को करो, {परन्तु यह कि साथ ही में तुम} परमेश्वर के विषय में और अधिक जानो। 6{और सुनिश्चित करो कि तुम न केवल} परमेश्वर के विषय में और
अधिक जानो, {परन्तु यह कि साथ ही में तुम} {जो कुछ तुम करते और कहते हो उसमें} स्वयं को नियंत्रित करो। {और सुनिश्चित करो कि तुम न केवल} {जो
कुछ तुम करते और कहते हो उसमें} स्वयं को नियंत्रित करो, {परन्तु यह कि साथ ही में तुम} कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहो। {और
सुनिश्चित करो कि तुम न केवल} कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहो, {परन्तु यह कि साथ ही में तुम} उसका आदर करो। 7{और
सुनिश्चित करो कि तुम न केवल} परमेश्वर का आदर करो, {परन्तु यह कि साथ ही में तुम} परिवार के सदस्यों के रूप में एक दूसरे के प्रति स्नेह दिखाओ। {और
सुनिश्चित करो कि तुम न केवल} परिवार के सदस्यों के रूप में एक दूसरे के प्रति स्नेह दिखाओ, {परन्तु यह कि साथ ही में तुम} दूसरों से प्रेम करो। 8{इन कामों
को इसलिए करना,} क्योंकि यदि तुम इन सब कामों को अधिकाधिक करो, तो ये तुम को हमारे प्रभु यीशु मसीह को जानने के सम्बन्ध में सम्मान सहित उत्पादक
बना देंगे। 9{इन कामों को इसलिए करना,} क्योंकि वह मनुष्य जो इन कामों को नहीं करता है {वह इस विषय में अनभिज्ञ है कि यह बातें महत्वपूर्ण हैं।} {वह
मनुष्य ऐसा है जैसे कि} एक अंधा मनुष्य {जो देख नहीं सकता है कि उसके आसपास क्या है,} {या ऐसा जैसे कि} कोई धुंधली दृष्टि वाला मनुष्य {जो केवल
उन्हीं वस्तुओं को देख सकता है जो उसके समीप होती हैं।} {यहाँ तक कि ऐसा मनुष्य} भूल गया है कि परमेश्वर ने उसे उसके उन पापमय कामों के लिए क्षमा
कर दिया है जो {उसने} बीते समय में किए थे। 10इस कारण से, हे साथी विश्वासियों, यह सुनिश्चित करने के लिए और अधिक प्रयत्न करो कि परमेश्वर ने तुम्हें
उसकी प्रजा होने के लिए चुन लिया है। यदि तुम इन कामों को करो जिनके विषय में मैंने तुम को अभी बताया है, तो तुम निश्चित रूप से कभी भी परमेश्वर से
अलग नहीं किए जाओगे। 11{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि, {तुम्हारे कर्मों के द्वारा} उसी प्रकार से, परमेश्वर तुम को पूर्णरूपेण उस स्थान में प्रवेश करने की
अनुमति प्रदान करेगा जहाँ पर हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह सदाकाल के लिए {अपनी प्रजा पर} शासन करेगा। 12इसी कारण से, {क्योंकि यह बातें
अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं,} मैं तुम को इन बातों के विषय में स्मरण दिलाने के लिए सर्वदा तैयार रहता हूँ। {मैं तुम को स्मरण दिलाता रहूँगा} भले ही तुम {उनको}
पहले से जानते हो और उस सच्ची शिक्षा के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त हो जो इस समय तुम्हारे पास है। 13तौभी, जब तक मैं जीवित हूँ, मैं तुम को {इन बातों के
विषय में} स्मरण दिलाना मेरे लिए सही मानता हूँ। 14{मैं तुम को ये बातें इसलिए स्मरण दिलाना चाहता हूँ,} क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा।
ठीक वैसे ही {मैं मर जाऊँगा} जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझ पर {पहले से ही} स्पष्ट कर दिया है। 15इसके अतिरिक्त, मैं {इन बातों को लिखने के द्वारा} हर
सम्भव प्रयास करूँगा कि मेरे मरने के बाद भी तुम इन बातों को स्मरण करते रहो। 16{मैं ऐसा इसलिए करूँगा} क्योंकि, जब हम प्रेरितों ने तुम को बताया था कि
हमारा प्रभु यीशु मसीह {किसी दिन} अपनी सामर्थ्य में वापस आ रहा है, तो {जो हम ने तुम को बताया था} हम ऐसी कहानियों पर आधारित नहीं थे, जिनको
हम ने चतुराई से रचा था। इसके विपरीत, {हम ने तुम को वह बताया था} जिसको हम ने अपनी आँखों से देखा था, अर्थात ईश्वरत्व में प्रतापी यीशु। 17{मैं ऐसा
कह सकता हूँ कि हम तो प्रत्यक्षदर्शी थे} क्योंकि {हम वहीं पर थे जिस समय पर} परमेश्वर पिता ने उसे आदर प्रदान किया और उसे महिमान्वित किया, {जब
यीशु ने} महाप्रतापी महिमामय परमेश्वर की ओर से एक वाणी को सुना। {और उस वाणी ने कहा,} “यह मेरा पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रेम करता हूँ। मैं उससे
अति प्रसन्न हूँ।” 18हम ने भी परमेश्वर की उस वाणी को सुना जो आकाश से आई थी जिस समय हम यीशु के साथ उस पवित्र पर्वत पर थे। 19और हमारे पास
वह है जो भविष्यद्वक्ताओं ने {पहले ही} लिख दिया था, {जो कि} वास्तव में विश्वसनीय है। जो उन्होंने लिखा है उस पर ध्यान दो, क्योंकि वह उस दीए के समान
है जो अंधियारे स्थान में चमक रहा है {जो लोगों की यह देखने में सहायता करता है कि वे कहाँ जा रहे हैं}। {वह ज्योति} उस समय तक चमकेगी जब तक कि
{मसीह की वापसी के} दिन की भोर न हो और {यीशु}, वह तारा जो दिन निकलने से पहले चमकता है, तुम्हारे मनों में बहुतायत की समझ न प्रदान करे।
20सबसे बढ़कर, तुम को जान लेना चाहिए कि कोई भी भविष्यद्वक्ता अपनी ही कल्पना के द्वारा {उसकी भविष्यद्वाणी का} अनुवाद नहीं कर पाया है। 21{यह
इसलिए सत्य है} क्योंकि किसी ने भी कभी ऐसी {सच्ची} भविष्यद्वाणी को उस बात के अनुसार नहीं बोला है जिसकी कोई मनुष्य इच्छा करता था। इसके
विपरीत, जिन लोगों ने परमेश्वर की ओर से {भविष्यद्वाणियों को} बोला उन्होंने पवित्र आत्मा के उनका मार्गदर्शन करने के द्वारा ऐसा किया।

Chapter 2

1परन्तु ऐसे मनुष्य जिन्होंने झूठ बोलकर {परमेश्वर की ओर से आए हुए सन्देशों की} घोषणा की थी वे इस्राएलियों के मध्य में से ही थे। उसी रीति से तुम्हारे मध्य
में ऐसे मनुष्य भी होंगे जो झूठे {सन्देशों की} शिक्षा देते हैं। वे ऐसे विचारों को लेकर आएँगे {जिनका परिणाम} अनन्त दण्ड होगा। यहाँ तक कि वे अपने स्वामी
{यीशु} का इन्कार कर देंगे, जिसने उनको खरीद लिया था। {इसके परिणामस्वरूप,} परमेश्वर शीघ्र ही उनको {अनन्तकाल के लिए} दण्ड देगा। 2और बहुत से
{लोग} {इन झूठे शिक्षकों के समान} वैसे ही असंयमित अनैतिक कृत्यों को करेंगे। इन झूठे शिक्षकों के कारण, {अविश्वासी लोग} मसीहियत के विषय में बुरी
बातें बोलेंगे। 3और अपने लालची हृदयों की वजह से, {ये झूठे शिक्षक} तुम से झूठी बातें बोलने के द्वारा तुम्हारा लाभ उठाएँगे। परमेश्वर ने बहुत समय पहले
उनको दण्ड दिया था, और परमेश्वर निश्चित रूप से उनका विनाश करेगा। 4{यह दण्ड इसलिए निश्चित है} क्योंकि परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को भी दण्डित किए
बिना नहीं छोड़ा जिन्होंने पापपूर्ण कृत्य किए थे। इसके विपरीत, उसने उनको नरक में डाल दिया {जहाँ पर वे} अंधकार में जंजीरों में जकड़े हुए हैं। परमेश्वर ने
{इन पापी स्वर्गदूतों को} वहाँ पर बन्धक बना दिया और उनको वहीं पर रखे हुए है ताकि उनका न्याय करे। 5और परमेश्वर ने {उन लोगों को भी जो} बहुत समय
पहले संसार में रहते थे दण्डित किए बिना नहीं रखा। तब पर भी, उसने आठ लोगों को नूह समेत बचाए रखा, जो एक धर्मी अग्रदूत था, जब उसने जलप्रलय के
द्वारा {उस समय के} संसार {में रहने वाले} भक्तिहीन लोगों नष्ट कर दिया था। 6और परमेश्वर ने सदोम और अमोरा {नाम के} नगरों को पूर्णरूप से जलाकर
राख करने के द्वारा नष्ट करके दण्डित किया था। {इसका परिणाम परमेश्वर में यह हुआ कि} {उन नगरों को} इस बात का एक उदाहरण बना दिया कि उन लोगों
के साथ क्या होगा जो परमेश्वर का अनादर करते हैं। 7और परमेश्वर ने लूत को बचा लिया, जो कि एक धर्मी मनुष्य था। लूत उन लोगों के असंयमित अनैतिक
कृत्यों के कारण अत्यन्त दुःखी था जो {सदोम में} अधर्म के काम करते थे। 8(जिस समय वह {सदोम में} उन दुष्ट लोगों के साथ रहता था, तो वह धर्मी मनुष्य
लूत जो कुछ वह देखता और सुनता था उसके द्वारा वह प्रतिदिन बहुत दुःखी हुआ करता था। {उसने ऐसा} उन कामों के कारण किया जो उन लोगों ने किए थे
जो कि परमेश्वर की व्यवस्था के विरोध में थे।) 9{जबकि यह बातें पूर्णतः सत्य हैं, तो तुम निश्चित हो सकते हो कि} प्रभु जानता है कि उन लोगों को परीक्षा में
पड़ने से कैसे बचाना है जो उसका आदर करते हैं। और {प्रभु यह भी जानता है कि कैसे} उन लोगों को {तैयार} रखना है जो अधर्म के कामों को करते हैं {ताकि}
उनको उस समय पर दण्डित करे जब वह न्याय करेगा। 10और विशेष करके उनको {वह दण्डित करेगा} जो वही करते रहते हैं जो उनके पापी हृदय करना
चाहते हैं, {जो ऐसे-ऐसे काम हैं जिनके द्वारा वे} परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं। {ये लोग} ईश्वरीय अधिकार का भी तिरस्कार करते हैं। {ये लोग} कितने ढीठ हैं! वे
जो चाहते हैं उसे करते हैं! यहाँ तक कि वे परमेश्वर के तेजस्वी स्वर्गदूतों का अपमान करने से भी नहीं डरते हैं। 11परन्तु {परमेश्वर के} स्वर्गदूत, {यद्यपि} वे उन
लोगों से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, वे परमेश्वर के सम्मुख अपमानजनक शैली से महिमामय प्राणियों पर दोष नहीं लगाते हैं! 12तब पर भी, ये {झूठे शिक्षक}
ऐसे पशुओं के समान हैं जो तर्कशक्ति से सोच नहीं सकते हैं। जिस रीति से वे प्राकृतिक रूप से व्यवहार करते हैं उसके अनुसार, उन्होंने इसलिए जन्म लिया
ताकि अन्य लोग उनको बन्धक बना लें और नाश कर दें। वे उन बातों के विषय में बुरे वाक्यों को बोलते हैं जिनको वे जानते भी नहीं हैं। निश्चय ही परमेश्वर तब
उनका विनाश करेगा जब उनके नष्ट किए जाने का समय आएगा। 13{ये झूठे शिक्षक} उनके हानिकारक कार्यों के लिए उचित दण्ड के समान हानि उठाते हैं।
{यहाँ तक कि} दिन के समय में भी {वे} अनैतिक ढंग से दावत करने से प्रसन्न होते हैं। {जिस प्रकार से} {किसी जन के वस्त्रों पर} भद्दे दाग होते हैं, {वे तुम्हारी
सभाओं के लिए लज्जाजनक हैं}! {यहाँ तक कि वे} तुम्हारे साथ {भोजन} खाते समय अपने कपटपूर्ण कार्यों का आनन्द मनाते हैं! 14{जिस किसी} स्त्री को {वे
देखते हैं} उसके साथ वे अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाने की निरन्तर इच्छा रखते हैं। वे पाप करने से रुक नहीं सकते हैं। वे आत्मिक रूप से निर्बल लोगों को {पाप
में पड़ने का} प्रलोभन देते हैं। {जिस प्रकार से धावक खेलों के लिए प्रशिक्षण लेते हैं, वैसे ही ये झूठे शिक्षक} स्वयं को लालची होने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।
{परमेश्वर ने} उनको शापित किया हुआ है! 15वे उस तरीके से जीवन जीने से इन्कार करते हैं जैसे परमेश्वर उनसे चाहता है। वे दुष्टतापूर्ण कार्य कर रहे हैं। जैसा
बोसोर के पुत्र, बिलाम ने {बहुत समय पहले} किया था वे उसकी ही नकल कर रहे हैं। उसने दुष्ट कार्यों के लिए भुगतान {स्वरूप धन पाने} से प्रीति की। 16तब
पर भी, परमेश्वर ने उसे {इस्राएल के विरोध में} उसके दुष्ट कार्यों के लिए डाँटा। {और यद्यपि गदहे बोलते नहीं हैं}, परमेश्वर ने {बिलाम की} गदही को उससे
मनुष्य की वाणी में बात करने के लिए उपयोग किया और उसके मूर्खतापूर्ण कार्य को रोका। 17ये {झूठे शिक्षक} {ऐसे निकम्मे} हैं, {जिस प्रकार से} वो सोते होते
हैं जो जल प्रदान नहीं करते हैं। {वे} ऐसे बादलों के समान हैं जिनको {उनके बरसने से पहले ही} आँधी दूर बहा ले जाती है। {परमेश्वर ने} उनके लिए {नरक के}
अंधकार को आरक्षित किया हुआ है। 18{यह इसलिए सत्य है} क्योंकि वे उन लोगों को पाप करने के लिए मना लेते हैं जो कुछ समय पहले ही {विश्वासी बने हैं
और} उन कामों को करना बन्द कर दिया है जो दुष्ट अविश्वासी लोग करते हैं। {ये झूठे शिक्षक} उन अभिमानी बातों को बोलने के द्वारा ऐसा करते हैं जिनका
कोई मोल नहीं है। {वे उन लोगों को पाप करने के लिए} कुछ भी ऐसा करने के द्वारा मना लेते हैं जो उनके पापी स्वभाव करना चाहते हैं। 19{वे} अपने श्रोताओं
को यह बताने के द्वारा भी ऐसा करते हैं कि वे कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं जो वे वहाँ, उसी समय पर करना चाहते हैं, वे स्वयं {उनकी पापमय अभिलाषाओं
के द्वारा} नियंत्रित हैं जो उनका विनाश कर देंगी। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि कोई भी बात जो किसी व्यक्ति की इच्छा पर प्रबल होती है वह उस पर नियंत्रण
कर लेती है। 20और यदि वे उस यीशु मसीह को जानने के द्वारा जो हम पर प्रभुता करता है और हमारा उद्धार करता है, उन कामों को करने से रुक तो गए जो
पापी मानवीय समाज को अशुद्ध करते हैं, परन्तु वे {अशुद्ध करने वाले काम} उन पर फिर से नियंत्रण करना {आरम्भ कर} देते हैं, {उस समय पर} उनकी स्थिति
जैसी पहले {थी} उससे भी बुरी हो जाती है। 21{ऐसा इसलिए है क्योंकि} यह उनके लिए बेहतर होता यदि उन्होंने यह कभी जाना ही नहीं होता कि उस तरीके
से जीवन को कैसे जीना है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है, बजाए इसके वे {इस तरीके को} सीखते और {परमेश्वर की} पवित्र आज्ञाओं को अस्वीकार करते जो
{प्रेरितों ने} उनको सिखाए थे। 22यह एक सच्ची कहावत है {जो बताती है} कि {इन झूठे शिक्षकों के साथ} क्या हुआ है: "वे उन कुत्तों के समान हैं जो अपनी ही
उल्टी को खाने के लिए वापस चले जाते हैं," और, "वे ऐसे सूअरों के समान हैं जिन्होंने स्वयं को धोकर साफ कर लिया है और उसके पश्चात फिर से मिट्टी में लोट
गए हैं।"

Chapter 3

1हे साथी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, यह {पत्र} जिसे मैं इस समय पर तुम को लिख रहा हूँ वह दूसरा पत्र है {जो मैंने तुम को लिखा है}। {मैंने इन} दोनों
{पत्रों को तुम को इसलिए लिखा है ताकि तुम को} उन बातों का स्मरण कराऊँ जिनको तुम्हारे निष्कपट मन पहले से जानते हैं। 2{मैंने इन पत्रों को इसलिए
लिखा है} ताकि तुम को उन भविष्यद्वाणियों का स्मरण कराऊँ जिनको पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत समय पहले बोला था। {मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम} उसे
स्मरण रखो जो हम पर प्रभुता करने वाले और हमारा उद्धार करने वाले ने तुम को उन प्रेरितों की शिक्षा के माध्यम से आदेश दिया था {जिनको हम ने तुम्हारे
पास भेजा था}। 3तुम्हारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि ठठ्ठा करने वाले लोग आएँगे और यीशु की वापसी के थोड़े समय पहले वे {यीशु के आगमन का}
ठठ्ठा करेंगे। {ये लोग} वह सब करेंगे जो वे करना चाहते हैं। 4{ये ठठ्ठा करने वाले} कहेंगे, “यीशु की वापसी की प्रतिज्ञा सच्ची नहीं है! {हम यह इसलिए जानते हैं}
क्योंकि जब से इस्राएल के पूर्वज मरे हैं, तब से सब कुछ वैसा का वैसा ही है। जब से परमेश्वर ने सब कुछ बनाया तब से यह वैसा ही है!” 5{वे ऐसा इसलिए
कहेंगे} क्योंकि वे जानबूझकर इस बात को अनदेखा करते हैं कि परमेश्वर ने बहुत समय पहले ऐसा होने का आदेश देने के द्वारा आकाश को विद्यमान किया,
और उसने {ऐसा होने का आदेश देने के द्वारा} पृथ्वी को पानी में से और पानी के माध्यम से ऊपर निकाला। 6और परमेश्वर ने, अपने आदेश से और पानी से,
उस समय के विद्यमान संसार का विनाश कर दिया। उसने पृथ्वी को पानी में डुबोकर {ऐसा किया}। 7तब पर भी, परमेश्वर ने, उसी आज्ञा के द्वारा, आकाश और
पृथ्वी को जो इस समय विद्यमान हैं, आग के लिए अलग किया है। परमेश्वर उन्हें उस समय के लिए रखे हुए है जब वह उन लोगों का न्याय करेगा और उन्हें नष्ट
करेगा जो दुष्ट कार्य करते हैं। 8हे साथी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, इस सत्य को अनदेखा मत करना: परमेश्वर के दृष्टिकोण से समय की एक छोटी सी
अवधि समय की लम्बी अवधि से भिन्न नहीं है! 9यीशु की वापसी की उसकी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए प्रभु धीरे-धीरे कार्य नहीं कर रहा है। कुछ लोग सोचते
हैं {कि यह ऐसे ही है}। इसके विपरीत, परमेश्वर तुम्हारे लिए धीरज धरता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि तुम में से कोई भी अनन्त दण्ड का भागी हो। बल्कि, वह
चाहता है कि हर एक जन पश्चाताप करे। 10{वे ठठ्ठा करने वाले जो कहते हैं} उसके विपरीत, जब प्रभु की वापसी होगी वह समय अचानक से आएगा। उस
समय एक बड़े गर्जन की ध्वनि होगी और आकाश का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। प्रकृति के मूल अवयवों को भी परमेश्वर आग से नाश कर देगा। उसके पश्चात
परमेश्वर पृथ्वी को और सब कुछ जो इसमें किया गया है उजागर करेगा। 11जब परमेश्वर इन सब वस्तुओं को {जिनका मैंने अभी उल्लेख किया} उस रीति से
{जिसका मैंने वर्णन किया} विनाश कर देगा, तो तुम को निश्चित रूप से पवित्र ढंग से व्यवहार करना अवश्य है और वही करना है जो उसे प्रसन्न करे। 12यीशु की
वापसी के समय की आशा करते हुए और उसे तेज करने का प्रयास करते हुए {इन कामों को करना}। उस दिन के कारण, परमेश्वर आग से आकाश को नष्ट कर
देगा और प्रकृति के मूल अवयवों को गर्मी से पिघला देगा। 13{यद्यपि वे सभी घटनाएँ घटित होंगी,} हम उस नए आकाश और नई पृथ्वी की आशा कर रहे हैं
जिसे बनाने की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है। उस नए जगत में हर कोई धर्मी होगा। 14क्योंकि यह सत्य है, हे साथी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, जब तुम इन
बातों {के घटने} की प्रतीक्षा करते हो, तो यह सुनिश्चित करने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करो कि यीशु देखेगा कि तुम पापमय जीवन नहीं जी रहे हो {और
यह कि तुम} शान्ति से {परमेश्वर के साथ} हो। 15और इस विषय में विचार करो: हमारा प्रभु यीशु इसलिए धीरज धरता है ताकि अधिक लोग उद्धार पा सकें।
पौलुस, एक साथी विश्वासी जिससे हम प्रेम रखते हैं, जब उसने तुम को लिखा तो उसने भी यही कहा है। उसने उस बुद्धिमानी का उपयोग करते हुए लिखा जो
परमेश्वर ने उसको प्रदान की थी। 16उन सभी पत्रों में जो पौलुस ने लिखे, उसने इन बातों के विषय में भी लिखा {जिनका मैंने अभी उल्लेख किया था}। उसके
पत्रों में भी कुछ {शिक्षाएँ} ऐसी हैं जिनको समझना कठिन है। जिन लोगों के पास ज्ञान और स्थिरता की कमी है वे उन कठिन शिक्षाओं के साथ-साथ बाकी
पवित्रशास्त्र की भी गलत व्याख्या करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप {परमेश्वर} उनको दण्ड देगा। 17हे साथी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, क्योंकि ये सारी
बातें सत्य हैं, और क्योंकि तुम इन बातों के विषय में पहले से जानते हो, इसलिये स्वयं को विश्वासयोग्यता से जीवन जीना छोड़ देने से सुरक्षित रखो, क्योंकि तुम
उन लोगों की गलत शिक्षा देते हो जो ऐसे जीवन जीते हैं जैसे कि कोई व्यवस्था नहीं है जो तुम्हें पाप में पड़ने के लिए धोखा देते हैं। 18बजाए इसके, इस ढंग से
जीवन व्यतीत करो कि तुम उसके दयालु कार्यों का अधिक से अधिक अनुभव करो, यीशु मसीह, जो हम पर प्रभुता करता है और हमारा उद्धार करता है। और
इस ढंग से जीवन व्यतीत करो कि तुम उसके विषय में अधिक से अधिक जानो। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हर एक जन इस समय और सर्वदा यीशु की महिमा
करेगा। वास्तव में ऐसा ही हो!

1 यूहन्ना

Chapter 1

1{मैं, युहन्ना, तुम्हें यीशु के बारे में लिख रहा हूँ}, परमेश्वर {का वचन}, वह जिसने जीवन दिया। इससे पहले कुछ और था वह अस्तित्व में था। हम {प्रेरितों} ने उसे
ध्यानपूर्वक सुना {जैसा उसने लोगों को सिखाया था}। हमने उसे व्यक्तिगत रूप से देखा। हमने उसे देखा और उसे छुआ। {ताकि हम गवाही दे सकें कि वह एक
वास्तविक मनुष्य था।} 2क्योंकि वह यहाँ पृथ्वी पर आया और हमने उसे देखा, हम स्पष्ट रूप से तुमसे उसकी घोषणा कर रहे हैं। वह जो हमेशा से अस्तित्व में
था, जो अपने पिता के साथ स्वर्ग में था, यहाँ हमारे पास आया।) 3हम चाहते हैं कि तुम हमारे साथ सहभागी हो जाओ, हम उसकी घोषणा कर रहे हैं कि जो
हमने {यीशु से} देखा और सुना है । {यदि तुम उस पर विश्वास करते हो,} तो तुम उसके साथ जीवन साँझा करोगे, जिस तरह हम परमेश्वर हमारे पिता के साथ
और उसके पुत्र मसीह यीशु के साथ करते हैं । 4मैं तुम्हें इन बातों के बारे में इसलिए लिख रहा हूँ ताकि {तुम यह जान सको कि ये सत्य हैं, और यह एक प्रतिफल
की तरह होगा} हम पूरी तरह से एक साथ आनन्दित होंगे। 5जो संदेश हमने यीशु से सुना है और तुमको सुना रहे हैं वह यह है: परमेश्वर हमेशा वही करता है जो
उचित है और वह कदापि, कभी कुछ भी अनुचित नहीं करता है। वह उस ज्योति के समान है जिसमें रत्ती भर भी अन्धकार नहीं है। 6यदि हम कहते हैं कि हम
परमेश्वर के साथ जीवन साँझा करते हैं, लेकिन हम अपने जीवन को बुरे ढंग में जी रहे हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं। हम सच्चाई में नहीं जी रहे हैं। यह इस प्रकार
से है जैसे हम अन्धकार में जी रहे हों। 7लेकिन यदि हम पवित्र तरीके से रहते हैं, जैसे परमेश्वर हर तरह से पवित्र है, तो हम एक दूसरे के साथ जीवन साँझा कर
सकते हैं। यह परमेश्वर की पवित्र ज्योति में जीने जैसा है। तब परमेश्वर हमें क्षमा करता है और ग्रहण करता है क्योंकि उसका पुत्र यीशु हमारे लिए मरा। 8यदि
हम कहते हैं कि हम पाप नहीं करते हैं, हम स्वयं को धोखा दे रहे हैं। हम सच्ची बातों पर विश्वास करने से इंकार कर रहे हैं {जो परमेश्वर हमारे बारे में कहता है}।
9लेकिन परमेश्वर हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा, और वह जो करता है वह हमेशा सही होता है। इसलिए यदि हम उसके सामने स्वीकार
करते हैं कि हमने पाप किया है,{और उस पाप को ठुकरा देते हैं} वह हमें हमारे पापों के लिए क्षमा करेगा और वह हमें हर एक अपराध से मुक्त करेगा जो हमने
गलत किया है। 10{क्योंकि परमेश्वर कहता है कि सभी ने पाप किया है,} यदि हम कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया, तो हम इस तरह बोल रहे हैं जैसे कि
परमेश्वर झूठा हो! परमेश्वर ने हमारे बारे में जो कहा है, हम उसे अस्वीकार रहे हैं!

Chapter 2

1तुम मुझे उसी प्रकार प्रिय हो जैसे कि तुम मेरे निज बालक हो। इसलिए, मैं तुमको पाप करने से दूर रखने के लिए यह लिख रहा हूँ। लेकिन तुममें से यदि कोई
पाप करता है, {याद रहे कि} धर्मी यीशु मसीह, पिता से विनती करता है {और हमें क्षमा करने के लिए उससे प्रार्थना करता है} 2यीशु ही वह है जिसने हमारे लिए
अपना जीवन बलिदान कर दिया ताकि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर दे। और यह सत्य न सिर्फ हमारे पापों के लिए है, परन्तु सभी पापों के लिए भी जो सब
लोगों ने हर जगह किये हैं! 3यदि हम उन आज्ञाओं का पालन करते हैं जो परमेश्वर हमसे करने के लिये कहता है, तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम परमेश्वर
के साथ गूढ सम्बन्ध में हैं। 4यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर के साथ गूढ सम्बन्ध में जी रहा हूं," लेकिन जो आज्ञा परमेश्वर ने दी है वह व्यक्ति उसका पालन
नहीं करता है, तो वह एक झूठा है। वह परमेश्वर के सच्चे संदेश के अनुसार अपने जीवन को नहीं जी रहा है। 5लेकिन यदि कोई उसका आज्ञापालन करे जो
परमेश्वर करने को कहता है, तो वह व्यक्ति सब प्रकार से परमेश्वर से प्रेम रखता है। इस तरह हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम परमेश्वर के साथ गूढ सम्बन्ध हैं।
6यदि कोई कहता है कि वह परमेश्वर के साथ गूढ सम्बन्ध में है, तो उसे अपना जीवन यीशु की तरह जीना चाहिए {जब वह यहाँ पृथ्वी पर था}। 7प्रिय मित्रों, मैं
तुमको कुछ नया करने के लिए बोलते हुए नहीं लिख रहा हूँ। इसके बदले में, मैं तुमको कुछ ऐसा करने के लिए बोलते हुए लिख रहा हूं जिसे तुम जानते हो कि
तुमको करना चाहिए जो तुम्हें तब पता चला था जब तुमने पहली बार यीशु में विश्वास किया था। यह उस संदेश {का भाग} है जिसे तुमने हमेशा से {उसके बारे
में} सुना है। 8हालांकि, अन्य तरीके से देखो तो, मैं वास्तव में तुम्हें कुछ नया करने के लिए कह रहा हूं। यह नया है क्योंकि मसीह ने जो किया वह नया था, और
जो तुम कर रहे हो वह नया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम बुराई करना बंद कर रहे हो और तुम अधिक से अधिक भलाई कर रहे हो। यह ऐसा है जैसे तुम एक
अंधेरी जगह से बाहर आ गए हो और परमेश्वर से प्रकाश में रहना शुरू कर दिया है। 9यदि कोई कहता है कि वह वही कर रहा है जो परमेश्वर चाहता है। यह
परमेश्वर से प्रकाश में रहने जैसा है। लेकिन वह अपने किसी भी साथी विश्वासी से घृणा करता है, तो वह अभी भी वही कर रहा है जो परमेश्वर नहीं चाहता, यह
उस मनुष्य जैसा है जो अन्धकार में जीवन व्यतीत करता है। 10लेकिन यदि कोई अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करता है, तो वह सचमुच वही कर रहा है जो
परमेश्वर चाहता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो परमेश्वर की ओर से आने वाली ज्योति मैं जीवन व्यतीत करता है। उसके पास बुराई करने का कोई भी
कारण नहीं होगा {जैसा वह तभी करता यदि वह अपने साथी विश्वासी से घृणा करता}। यह उस व्यक्ति के समान है जिसे दिन के उजियाले में ठोकर खाने का
कारण नहीं होता। 11परन्तु जो कोई अपने साथी विश्वासी से घृणा करता है, वह पूरी तरह से गलत तरीके से जी रहा है। उसे समझ में नहीं आता कि उसे कैसे
जीना चाहिए, क्योंकि वह जो गलत काम कर रहा है, वह उसे परमेश्वर के मार्ग को समझने से रोक रहा है। ऐसा लगता है जैसे वह अंधेरे में चल रहा है, और नहीं
देख सकता कि कहाँ जाना है। 12मैं तुम्हें लिख रहा हूं, जिन्हें मैं प्रेम करता हूं जैसे कि तुम मेरे निज बालक हो, क्योंकि यीशु ने तुम्हारे लिए जो कुछ किया है,
उसके कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पापों को क्षमा कर दिया है। 13मैं तुम्हें भी लिख रहा हूँ जो औरों से अधिक समय से विश्वासी रहे हैं। मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूं
क्योंकि तुम्हारा {यीशु} के साथ, जो हमेशा जीवित रहा है, एक गूढ सम्बन्ध है । मैं तुम्हें नए लेकिन दृढ़ विश्वासियों के लिए लिख रहा हूं क्योंकि शैतान, उस दुष्ट
प्राणी ने तुम्हें गलत करने के लिए लुभाने की कोशिश की है, लेकिन तुम ने उसका सफलतापूर्वक विरोध किया है। 14मैं तुम्हें लिख रहा हूं, जिन्हें मैं प्रेम करता हूं
जैसे कि तुम मेरे निज बालक हो, क्योंकि परमेश्वर पिता के साथ तुम्हारा गूढ सम्बन्ध है। मैंने तुम्हें लिखा है जो दूसरों की तुलना में अधिक समय तक विश्वासी रहे

हैं क्योंकि तुम्हारा {यीशु,} जो हमेशा जीवित रहा है, के साथ गूढ सम्बन्ध है । मैंने तुम्हें नए लेकिन दृढ़ विश्वासियों के लिए लिखा है क्योंकि तुम आत्मिक रूप से
मजबूत हो। मैंने तुम्हें इसलिए भी लिखा है क्योंकि आप परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जारी रखते हैं, और क्योंकि तुमने {शैतान,} उस दुष्ट प्राणी का
सफलतापूर्वक विरोध किया है{,} जब उसने तुम्हें गलत करने के लिए प्रलोभित करने का प्रयास किया था। **15**उन लोगों की तरह व्यवहार न करो जो लोग
परमेश्वर का आदर नहीं करते हैं। उन चीजों की इच्छा न करो जो वे चाहते हैं। यदि कोई उन लोगों की तरह व्यवहार करता है, {वह यह प्रमाणित कर रहा है कि}
वह पिता परमेश्वर से प्रेम नहीं करता। **16**{मैं कहता हूं कि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम नहीं करता} क्योंकि जिस तरह से अधर्मी लोग कार्य करते हैं, वह वैसा
नहीं है जैसा कि हमारा पिता परमेश्वर चाहता है कि वे जियें । वे अपनी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। वे जो कुछ देखते हैं उसे अपने लिए प्राप्त
करना चाहते हैं। वे अपनी हर एक वस्तुओं पर घमंड करते हैं। ये सब बातें स्वार्थी और अधर्मी सोच से आती हैं। **17**जो लोग परमेश्वर का आदर नहीं करते, वे उन
सभी चीजों के साथ, जिनकी वे इच्छा करते हैं, गायब हो जाएंगे। लेकिन जो लोग वह करते हैं जो कि परमेश्वर चाहता है वे हमेशा जीवित रहेंगे! **18**मैं तुम्हें लिख
रहा हूं, जिन्हें मैं प्रेम करता हूं जैसे कि तुम मेरे निज बालक हो, {मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो} यह समय यीशु के पृथ्वी पर लौटने से ठीक पहले का है। तुम
पहले ही सुन चुके हो कि एक व्यक्ति आ रहा है जो मसीह का कड़ा विरोध करेगा। वास्तव में, ऐसे बहुत से लोग, जो सच्चे मसीह के विरुद्ध हैं, पहले से ही यहाँ
हैं। इस कारण से, हम जानते हैं कि यह वह समय है। **19**ऐसे लोगों ने हमारी सभाओं में रहने से इनकार कर दिया। हालांकि, वे वास्तव में हमारे साथ कभी नहीं
थे। फिर, यदि वे हमारे साथ होते, तो वे हमें नहीं छोड़ते। लेकिन {जबकि उन्होंने हमें छोड़ दिया,} तब हमने स्पष्ट रूप से देखा कि वे सभी वास्तव में हमारे साथ
कभी शामिल नहीं हुए थे। **20**परन्तु तुम्हारे लिए मसीह ने जो पवित्र है, उसने तुम्हें अपना आत्मा दिया है। फलस्वरूप, तुम सब {सच} जानते हो। **21**मैं तुम्हें यह
पत्र इसलिए नहीं लिख रहा हूं क्योंकि तुम उन सच्ची बातों को नहीं जानते हो {जो परमेश्वर ने हमें बताई हैं}, बल्कि इसलिए कि तुम उन्हें जानते हो। तुम हर उस
झूठ को पहचानने और अस्वीकार करने के लिए भी पर्याप्त जानते हो जो सच्ची बातों में से एक नहीं है {परमेश्वर ने हमें बताया है}। **22**सबसे बुरे झूठे वे हैं जो
इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है। जो ऐसा करते हैं वे सब मसीह के विरोधी हैं। वे पिता परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु दोनों में विश्वास करने से
इनकार कर रहे हैं। **23**वे जो यह मानने से इनकार करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वे किसी भी तरह से पिता परमेश्वर के साथ सहभागी नहीं हैं। परन्तु वे जो
यह स्वीकार करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वे पिता परमेश्वर के साथ सहभागी हो गए हैं। **24**यहाँ तुम्हें क्या करना चाहिए, {उन लोगों के विपरीत जो यीशु
को अस्वीकार करते हैं}। तुम्हें यीशु मसीह के बारे में सच्चाई के साथ विश्वास करना और जीना जारी रखना चाहिए जिसे तुमने पहली बार सुना था। यदि तुम
यीशु मसीह के बारे में सच्चाई के साथ विश्वास करना और जीना जारी रखते हो तो तुम लगातार पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के साथ जीवन साँझा करते रहोगे।
25और परमेश्वर ने हमसे जो वायदा किया है वह यह है कि वह हमें सदा के लिए जीवित रहने के लिए सक्षम करेगा! **26**मैं तुम्हें यह पत्र उन लोगों के बारे में
चेतावनी देने के लिए लिख रहा हूं जो तुम्हें {यीशु के बारे में} धोखा देना चाहते हैं। **27**यहाँ तुम्हें {उन लोगों के बारे में जो तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं}
यह करना चाहिए । परमेश्वर का आत्मा, जिसे तुमने यीशु से प्राप्त किया था, तुम में सदा रहता है। इसलिए तुम्हें नहीं चाहिए कि कोई और तुम्हारा शिक्षक हो।
परमेश्वर का आत्मा तुम्हें वह सब कुछ सिखा रहा है जो तुम्हें जानना आवश्यक है। वह हमेशा सत्य सिखाता है, और कभी भी कुछ भी झूठ नहीं कहता है।
इसलिए उस तरह से जियो जो उसने तुम्हें सिखाया है, और यीशु के साथ जीवन साँझा करते हो। **28**अब, मेरे प्रियो, {मैं तुमसे आग्रह करता हूं कि} लगातार यीशु
के साथ जीवन साँझा करते हो। इस तरह, जब वह फिर से वापस आएगा तो हमें दृढ़ निश्चय होगा {कि वह हमें स्वीकार करेगा}। {यदि हम ऐसा करते हैं,}जब
वह लौटेगा तो हमें उसके सामने खड़े होने में शर्म नहीं आएगी। **29**जबकि तुम जानते हो कि परमेश्वर हमेशा वही करता है जो सही होता है, तुम जानते हो कि वे
सभी जो लगातार वही कर रहे हैं जो सही है वे जो परमेश्वर की आत्मिक संतान बन गए हैं।

Chapter 3

1इस बारे में सोचें कि हमारा पिता परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है! वह कहता है कि हम उसकी संतान हैं। आत्मिक तौर से, यह वास्तव में सच है। लेकिन
जो लोग अविश्वासी हैं वे यह नहीं समझ पाए हैं कि परमेश्वर कौन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे यह नहीं समझ पाए हैं कि परमेश्वर कौन है {, और हम उसका
पालन वैसे ही करते हैं जैसे बच्चे अपने माता-पिता का पालन करते हैं}। **2**प्रिय मित्रों, भले ही वर्तमान में हम परमेश्वर की आत्मिक संतान हैं, लेकिन उसने हमें
अभी तक यह नहीं दिखाया है कि हम {भविष्य में} क्या होंगे। {हालांकि,} हम जानते हैं कि जब यीशु फिर से वापस आएगा, तो हम उसके समान हो जाएंगे,
क्योंकि हम उसे आमने-सामने देखेंगे। **3**इसलिए वे सभी जो हियाव के साथ यीशु को आमने-सामने देखने की आशा रखते हैं, स्वयं को पाप करने से दूर रखते हैं,
ठीक वैसे ही जैसे स्वयं यीशु, जो कभी पाप नहीं करता है। **4**लेकिन हर एक जो लगातार पाप करता रहता है वह परमेश्वर के नियमों का पालन करने से इंकार
कर रहा है, क्योंकि परमेश्वर के नियमों का पालन करने से इनकार करना, यही पाप है। **5**तुम जानते हो कि यीशु हमें हमारे पापों से मुक्त करने के लिए आए ।
{तुम} यह भी {जानते हो} {कि} उसने खुद कभी पाप नहीं किया। **6**जो लोग यीशु के साथ जीवन साँझा करते हैं वे लगातार पाप करते नहीं रहते हैं लेकिन वे
सभी जो लगातार पाप करते हैं, यह नहीं समझ पाए हैं कि यीशु कौन है और वे वास्तव में उससे परिचित नहीं हैं। **7**इसलिए मैं तुमसे जो मेरे बहुत प्रिय हो, आग्रह
करता हूं कि तुम्हें कोई भी धोखा न देने पाए {तुम्हें यह बताकर कि पाप करना ठीक है}। यदि तुम वही करते रहो जो सही है, तो वह परमेश्वर को भाएगा, जिस
तरह यीशु हमेशा वही करता है जो परमेश्वर को भाता है। **8**लेकिन जो कोई भी लगातार पाप करता रहता है शैतान की तरह व्यवहार कर रहा है, क्योंकि जब से
दुनिया शुरू हुई है, शैतान हमेशा से पाप करता रहा है । परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बनने का कारण शैतान के इस कार्य को पूर्ववत करना था {जिससे लोग लगातार
पाप करते रहे}। **9**लोग लगातार पाप नहीं करते रहते हैं यदि वे परमेश्वर के आत्मिक संतान बन गए हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपने जैसे बनने के लिए बनाया
है। वे नित्य पाप नहीं कर सकते, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपनी आत्मिक सन्तान बनाया है। **10**जो लोग परमेश्वर से सम्बन्ध रखते हैं वे स्पष्ट रूप से उन लोगों से
भिन्न हैं जो शैतान से सम्बन्ध रखते हैं। वे जो सही है नहीं करते हैं परमेश्वर से सम्बन्ध नहीं रखते हैं। जो अपने साथी विश्वासियों से प्रेम नहीं करते, वे परमेश्वर से
सम्बंध नहीं रखते हैं। **11**{तुम्हें यह जानना चाहिए क्योंकि} जब तुमने पहली बार यीशु पर विश्वास किया तो तुमने जो संदेश सुना वह यह है कि हमें एक दूसरे से
प्रेम करना चाहिए। **12**हमें दूसरों से बैर नहीं रखना चाहिए जैसा कि {आदम के पुत्र} कैन ने किया था। वह उस दुष्ट व्यक्ति {शैतान,} का था। कैन ने अपने {छोटे}
भाई {हाबिल} की हत्या की। मैं तुम्हें बताऊंगा कि उसने ऐसा क्यों किया। ऐसा इसलिए था क्योंकि कैन ने बुरे तरीके से व्यवहार किया था, और {वह अपने छोटे
भाई से नफरत करता था क्योंकि} उसके छोटे भाई ने सही तरीके से व्यवहार किया था। **13**इसलिए, मेरे साथी विश्वासियो, जब अविश्वासी तुमसे नफरत करते हैं

तो तुम्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। 14हम अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करते हैं, और यह हमें विश्वास दिलाता है कि परमेश्वर ने हमें आत्मिक रूप से जीवित
किया है। लेकिन यदि कोई {अन्य विश्वासियों} से प्रेम नहीं करता है, तो आत्मिक रूप से मरा हुआ है। 15जो कोई अपने साथी विश्वासियों से बैर रखता है, वह
हत्या करने के समान ही बुरा काम कर रहा है। और तुम जानते हो, यदि कोई दूसरे व्यक्ति की हत्या करता है, वह उस नए तरीके से नहीं जी रहा है जिस तरह से
परमेश्वर हमें जीने देता है। 16यीशु ने अपनी ही इच्छा से हमारे लिए मरके हमें सिखाया की कैसे सच्चा प्यार करना है । उसने हमें दिखाया है कि कैसे अपने
साथी विश्वासियों से सच्चा प्रेम करना है। अपनी ओर से, हमें अपने साथी विश्वासियों के लिए बहुत कुछ करना चाहिए, यहाँ तक कि उनके लिए मर भी जाना
चाहिए। 17हममें से कई लोगों के पास इस दुनिया में जीवन के लिए जरूरी चीजें हैं। लेकिन मान लीजिए कि हम इस बात को जान जाते हैं कि एक साथी
विश्वासी के पास वह नहीं है जिसकी उसे आवश्यकता है। और मान लीजिए कि हम उसके लिए प्रदान करने से इनकार करते हैं। तब हम उससे उस तरह प्रेम
नहीं कर रहे हैं जैसे परमेश्वर ने हमें {लोगों से} प्रेम करना सिखाया है। 18तुम मुझे उसी प्रकार प्रिय हो जैसे कि तुम मेरे निज बालक हो, हम {सिर्फ} यह न कहें
कि हम {एक दूसरे से} प्रेम करते हैं। आओ हम {एक-दूसरे से} सच्चा प्रेम करें {एक-दूसरे की} मदद करके। 19-20ऐसा करने से, हम जान सकते हैं कि हम
परमेश्वर के हैं, जो हर सत्य का स्रोत है। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं तो हम महसूस कर सकते हैं कि हम अपने पापों के कारण परमेश्वर के नहीं हैं।
जब ऐसा होता है, तो हम अपने आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम वास्तव में उसके हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमारी भावनाओं से अधिक भरोसेमंद
है और वह हमारे बारे में सब कुछ जानता है{, जिसमें हमने उस पर भरोसा किया है}। 21प्रिय मित्रों, यदि हमारा मन हम पर {पाप करने का} आरोप नहीं लगाता
है, तो हम निश्चिंत होकर परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। 22हम जान पाते हैं कि जब हम विश्वास के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और जो कुछ मांगते हैं, तो
वह हमें देता है। {हम इस तरह पूरे हियाव के साथ प्रार्थना करते हैं} क्योंकि {जो लोग उसके हैं,} हम वही करते हैं जो वह हमें करने की आज्ञा देता है और हम
वही करते हैं जो उसे भाता है। 23मैं तुम्हें बताऊंगा कि परमेश्वर ने हमें क्या करने की आज्ञा दी है। हमें यीशु मसीह उसके पुत्र पर विश्वास करना चाहिए । हमें एक
दूसरे से भी प्रेम करना चाहिए जैसे परमेश्वर ने हमें ऐसा करने की आज्ञा दी है। 24जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं वे परमेश्वर के साथ जीवन साँझा
करते हैं, और परमेश्वर उनके साथ साथ जीवन साँझा करता है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि हम कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ जीवन साँझा करता
है। हम इसके बारे में निश्चित हो सकते हैं क्योंकि हमारे पास परमेश्वर का आत्मा है, जिसे उसने हमें दिया है।

Chapter 4

1प्रिय मित्रों, बहुत से लोग हैं जिनके पास एक झूठा संदेश है, वे इसे दूसरों को सिखा रहे हैं। इसलिए हर शिक्षक पर भरोसा न करें। इसके बजाय, ध्यान से सोचें
कि प्रत्येक शिक्षक क्या कहता है और तय करें कि क्या यह परमेश्वर की आत्मा से आया है {या किसी अन्य आत्मा से}। 2मैं तुम्हें बताऊंगा कि कैसे पता लगाया
जाए कि कोई व्यक्ति सत्य की शिक्षा दे रहा है जो परमेश्वर की आत्मा से आता है {या यदि वह नहीं है}। जो लोग इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु मसीह
परमेश्वर की ओर से आया और हम जैसा इंसान बन गया, वे एक संदेश सिखा रहे हैं जो परमेश्वर की ओर से है। 3लेकिन जो लोग इस बात की पुष्टि नहीं करते हैं
{कि} यीशु {एक वास्तविक इंसान बन गया} वे परमेश्वर का संदेश नहीं सिखा रहे हैं। वे शिक्षक हैं जो मसीहा का विरोध करते हैं। आपने सुना है कि ऐसे लोग आ
रहे होंगे {हमारे बीच}। अब भी वे पहले से ही यहां हैं। 4तुमजो मुझे इतने प्रिय हो मानो मेरी अपनी सन्तान हो, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उन लोगों की
शिक्षा को ठुकरा दिया है। तुमने ऐसा इसलिए किया है क्योंकि परमेश्वर, जो तुमको वह करने में सक्षम बनाता है जो वह चाहता है, शैतान से अधिक शक्तिशाली
है, जो हर किसी को प्रेरित करता है जो परमेश्वर का सम्मान नहीं करता है। 5जो लोग असत्य की शिक्षा देते हैं, वे सोचते हैं और ऐसे जीवन जीते हैं जो परमेश्वर
का सम्मान नहीं करते। इसलिए वे जो कहते हैं वह भी परमेश्वर का सम्मान नहीं करता है, और इसलिए अन्य लोग जो परमेश्वर का सम्मान नहीं करते हैं, वे जो
कहते हैं उस पर विश्वास करते हैं। 6हमारे लिए, परमेश्वर ने हमें भेजा है। जो कोई भी परमेश्वर के साथ संबंध में रहता है वह हमारी शिक्षा पर विश्वास करता है
और उसका पालन करता है। जो कोई परमेश्वर के साथ संबंध में नहीं रहता है, हम जो शिक्षा देते हैं उस पर न तो विश्वास करते हैं और न ही उसका पालन करते
हैं। यह अंतर हमें उन लोगों के बीच अंतर करने में सक्षम बनाता है जो परमेश्वर की आत्मा से सच्चे संदेश सिखाते हैं और जो लोग शैतान से झूठे संदेश सिखाते
हैं। 7प्रिय मित्रों, हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए, यह वही है जो परमेश्वर हमारे लिए चाहता है, और यह इसलिए है क्योंकि वह {हम} से प्रेम करता है जिससे
हम {दूसरों} से प्रेम कर सकते हैं। जो लोग {अपने साथी विश्वासियों} से प्रेम करते हैं, वे परमेश्वर के आत्मिक बच्चे बन गए हैं और उसके साथ संबंध में रह रहे
हैं। 8परमेश्वर का चरित्र {लोगों} से प्रेम करना है। इसीलिए जो कोई (दूसरों) से प्रेम नहीं करता वह परमेश्वर के साथ संबंध में नहीं रह रहा है। 9मैं तुमको बताऊंगा
कि कैसे परमेश्वर ने हमें दिखाया है कि वह हमसे प्रेम करता है। उसने अपने इकलौते बेटे को इस धरती पर भेजा ताकि उसका बेटा हमें अनंतकाल तक जीने के
लिए सक्षम करे क्योंकि उसने हमारे लिए क्या किया। 10मैं तुमको बताऊंगा कि प्रेम करने {किसी} का वास्तव में क्या अर्थ होता है। परमेश्वर से प्रेम करने के
हमारे प्रयास यह परिभाषित नहीं करते हैं कि {किसी से} प्रेम करने का क्या अर्थ है। नहीं, स्वयं परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम करके ऐसा किया कि उसने अपने बेटे
को बलिदान के रूप में भेजा दिया, हमारे स्थान पर। जब यीशु ने ऐसा किया, तो परमेश्वर उन लोगों के पापों को क्षमा कर सकता था जो यीशु पर विश्वास करते
हैं, बजाय उन्हें दंडित करने के। 11प्रिय मित्रों, उस समय से परमेश्वर हमसे इस तरह से प्रेम करता है, हमें निश्चय ही एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए! 12परमेश्वर
को कभी किसी ने नहीं देखा। फिर भी, जब हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तो हम देख सकते हैं कि परमेश्वर हमारे भीतर रहता है और वह वही है जो हमें दूसरों
से प्रेम करने में सक्षम बनाता है, जैसा कि उसने हमसे करने का इरादा किया था। 13इस प्रकार हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम परमेश्वर के साथ सहभागिता
कर रहे हैं और परमेश्वर हमारे साथ सहभागिता कर रहा है: उसने अपनी आत्मा हमारे भीतर रखी है। 14हम (प्रेरितों) ने परमेश्वर के पुत्र {यीशु को पृथ्वी पर}
देखा है, और हम दूसरों को सत्यनिष्ठा से बताते हैं कि पिता ने उन्हें दुनिया में लोगों को बचाने के लिए भेजा था {उनके पापों के लिए अनंत काल तक पीड़ित होने
से}। 15इसलिए परमेश्वर उन लोगों के साथ लगातार सहभागिता रखता है जो यीशु के बारे में सच कहते हैं। वे कहते हैं, "वह परमेश्वर का पुत्र है।" और इसलिए
वे परमेश्वर के साथ लगातार सहभागिता रखते हैं। 16हमने अनुभव किया है कि परमेश्वर हमसे कैसे प्रेम करता है और हमें विश्वास हैं कि वह हमसे प्रेम करता है।
क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव लोगों से प्रेम करना है, जो दूसरों से लगातार प्रेम रखते हैं वे परमेश्वर के साथ सहभागिता रखते हैं, और परमेश्वर उनके साथ
सह्भागिता रखता है। 17जब हम परमेश्वर के साथ जीवन साझा करना जारी रखते हैं, तब परमेश्वर ने हमसे प्रेम करने के अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लिया है।
परिणामस्वरूप, जब परमेश्वर का न्याय करने का समय आएगा, तो हमें विश्वास होगा {कि वह हमारी निंदा नहीं करेगा}। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम इस दुनिया

में {दूसरों से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हम रहते हैं} ठीक वैसे ही जैसे यीशु करते हैं। **18**यदि हम उससे सच्चा प्रेम करते हैं तो हम {परमेश्वर से} नहीं डरेंगे, क्योंकि
जो लोग {परमेश्वर से} पूरी तरह से प्रेम करते हैं, वे उससे डर नहीं सकते। हम तभी डरेंगे जब हम सोचेंगे कि वह हमें दण्ड देगा। तो जो लोग {परमेश्वर से} डरते हैं
वे पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं कि वह उनसे कितना प्रेम करता है, और वे पूरी तरह से (परमेश्वर) से प्रेम नहीं कर रहे हैं। **19**हम {परमेश्वर और हमारे साथी
विश्वासियों} से प्रेम करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया। **20**लोग झूठ बोल रहे हैं अगर वे कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं लेकिन वे एक
साथी विश्वासी से घृणा करते हैं। आख़िरकार, हम अपने साथी विश्वासियों को देख सकते हैं। लेकिन हमने परमेश्वर को नहीं देखा है। सो जो लोग अपने एक
साथी विश्वासी से प्रेम नहीं करते, वे निश्चय ही परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते, {क्योंकि जिसे देख सकते हैं उससे प्रेम करना उससे कहीं अधिक आसान है, जिसे
आप नहीं देख सकते}। **21**ध्यान रखो कि परमेश्वर ने हमें यह आज्ञा दी है: यदि हम उससे प्रेम करते हैं, तो हमें अपने साथी विश्वासियों से भी प्रेम करना चाहिए।

Chapter 5

1वे सभी जो यह विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह हैं, आत्मिक रूप से परमेश्वर की सन्तान हैं। अब, जो कोई किसी से प्रेम करता है, जो एक पिता है {निश्चित
रूप से} अपनी संतान को भी प्रेम करता है। {इसलिए यदि हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और इसलिए हमें अपने संगी
विश्वासियों से भी प्रेम करना चाहिए।} **2**जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और वह करते हैं जो वह करने की आज्ञा देता है, तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम
वास्तव में दूसरों से प्रेम करते हैं जो विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह है। **3**मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि परमेश्वर से प्रेम करने का वास्तव में अर्थ यह है
कि हम वही करते हैं जो वह हमें करने की आज्ञा देता है। और जो करने की आज्ञा वह हमें देता है उसे करना कठिन नहीं है। **4**यही कारण है कि परमेश्वर की
आज्ञा को पूरा करना हमारे लिए कठिन नहीं है। हम सभी जो परमेश्वर के आत्मिक संतान बन गए हैं, वह करने से इंकार करने में सक्षम हो गए हैं जो अविश्वासी
हमसे करना चाहते हैं। एक कारण है कि हम हर उस चीज़ से अधिक शक्तिशाली हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम यीशु पर भरोसा करते
हैं। **5**मैं तुम्हें बताऊंगा कि जो कुछ भी परमेश्वर के विरुद्ध है उससे दृढ़ कौन है: वह वही है जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। **6**यीशु मसीह
वह है जो {परमेश्वर की ओर से पृथ्वी} पर आया, {उसके बपतिस्मे का} जल और {क्रूस पर उसकी मृत्यु का} रक्त का अनुभव कर रहा था। परमेश्वर ने दिखाया
कि उसने वास्तव में यीशु को न केवल {जब यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा दिया} पानी में भेजा था, बल्कि तब भी जब यीशु का लहू उसके शरीर से बह रहा था
{जब वह मर गया था}। और परमेश्वर का आत्मा घोषणा करता है {सच्चाई से कि यीशु मसीह ने ये काम किया था}, क्योंकि आत्मा हमेशा सच कहता है। **7**तो
ऐसे तीन तरीके हैं जिनके द्वारा हम जानते हैं {कि यीशु ही वह मसीह है जो परमेश्वर की ओर से आया है}। **8**{वे तीन तरीके हैं:} परमेश्वर का आत्मा हमें क्या
बताता है, क्या हुआ {जब यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा दिया} पानी में, और क्या हुआ जब {यीशु का} खून बह गया {उसके शरीर से जब वह क्रूस पर मर गया}।
ये तीनों बातें हमें एक ही बात बताती हैं{, कि यीशु परमेश्वर की ओर से आया था}। **9**जब हमें किसी चीज़ के बारे में निर्णय लेना होता है तो लोग हमें जो कहते हैं
उस पर हम भरोसा करते हैं। लेकिन हम निश्चित रूप से उस पर अधिक भरोसा कर सकते हैं जो परमेश्वर हमें बताता है। इसीलिए मैं आपको बताता हूं कि
परमेश्वर ने हमें क्या बताया है कि उसका बेटा कौन है। **10**{सर्वप्रथम, हालांकि, मैं यह कह दूं कि} जो परमेश्वर के पुत्र पर भरोसा करते हैं, वे पहले से ही जानते हैं
कि परमेश्वर उसके विषय में जो कहता है वह सच है। परन्तु जो परमेश्वर की कही हुई उस पर विश्वास नहीं करते, वे उसे झूठा कहते हैं, क्योंकि उन्होंने उस पर
विश्वास करने से इन्कार किया है जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है। **11**अब यह वही है जो परमेश्वर ने हमें बताया है {उसका पुत्र कौन है}: "मैंने
तुम्हें अनन्त जीवन दिया है, और मेरा पुत्र वह है जो इस जीवन को संभव बनाता है। **12**जो लोग परमेश्वर के पुत्र {यीशु} के साथ जीवन साझा करते हैं, वे हमेशा
के लिए {परमेश्वर के साथ} रहने लगे हैं। जो लोग परमेश्वर के पुत्र के साथ जीवन साझा नहीं करते हैं, उन्होंने हमेशा के लिए जीना शुरू नहीं किया है। **13**क्योंकि
मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि तुम सदा जीवित रहोगे, मैंने तुम्हें यह पत्र लिखा है। यह तुम्हारे लिए है जो यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।
14मैं यह भी चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि हम पूर्ण रूप से सुनिश्चित हो सकते है कि जब हम उसकी इच्छा के लिए प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर वही करना
चाहता है जो हम उससे माँगते हैं। **15**क्योंकि हम जानते हैं, कि परमेश्वर जो कुछ हम उस से मांगते हैं, वह हमें देना चाहता है, {यदि वह चाहता है,} तो हम यह
भी जानते हैं कि जो कुछ हम उस से मांगते हैं, वह परमेश्वर हमें दे ही रहा है। **16**उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कोई अपने किसी साथी विश्वासी को इस
प्रकार पाप करते हुए देखता है जो उसे अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग नहीं करेगा। फिर उसे {पाप करने वाले को पुनर्स्थापित करने के लिए परमेश्वर} से
प्रार्थना करनी चाहिए। यदि वह ऐसा करता है, तो परमेश्वर उस व्यक्ति को अपने साथ आत्मिक जीवन में वापस लाएगा। हालाँकि, मैं यह केवल उन लोगों के
विषय में कह रहा हूँ जो इस तरह से पाप कर रहे हैं जो उन्हें हमेशा के लिए परमेश्वर से अलग नहीं करेंगे। ऐसा पाप है जिसके कारण लोग परमेश्वर से हमेशा के
लिए अलग हो जाते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो इस तरह से पाप कर रहे हैं। **17**हर गलत काम जो लोग करते हैं वह
पाप {परमेश्वर के विरुद्ध} है, लेकिन कुछ पाप ऐसे भी हैं जो किसी व्यक्ति को परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग नहीं करेगे । **18**हम जानते हैं कि हर कोई जो
परमेश्वर का आत्मिक पुत्र या पुत्री बन गया है, वह लगातार पाप नहीं करता है। इसके बजाय, परमेश्वर का पुत्र उस व्यक्ति की रक्षा करता है ताकि शैतान, वह
दुष्ट प्राणी, उसे नुकसान न पहुंचाए। **19**हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। हम यह भी जानते हैं कि शैतान, वह दुष्ट प्राणी, उन सभी लोगों को नियंत्रित कर रहा
है जो अविश्वासी हैं। **20**हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र हमारे बीच आया और हमारे लिए यह समझना संभव किया है कि {क्या सत्य है}। उसने ऐसा
इसलिए किया ताकि हम सच्चे परमेश्वर को सही मायने में जान सकें। और हम वास्तविक परमेश्वर के साथ जीवन साझा कर रहे हैं, {अर्थात,} उसके पुत्र, यीशु
मसीह के साथ। यीशु वास्तव में परमेश्वर हैं, और वही हमें {यह नया,} अनन्त जीवन देते हैं। **21**मैं तुम लोगों से यह कहता हूं, जो मुझे अपनी संतान के समान
प्रिय हैं: " सावधान रहो, कि तुम अपने आप को किसी भी चीज़ के लिए कभी न देना जो कि एक झूठा ईश्वर है।"

2 यूहन्ना

Chapter 1

1प्राचीन {यूहन्ना की ओर से,}। तुझे {मैं यह पत्र लिख रहा हूँ}, {लोगों की} उस मंडली को जिसे परमेश्वर ने {उससे संबंधित होने के लिए} चुना है। मैं तुम सभी
विश्वासियों से सच्चे मन से प्रेम करता हूँ। केवल मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, वरन् वे सभी जो सच्चे संदेश को जानते हैं और स्वीकार करते हैं {जिसे यीशु ने सिखाया
है} भी तुमसे प्रेम करते हैं। 2{हम तुमसे प्रेम करते हैं} क्योंकि हम सभी ने परमेश्वर के सच्चे संदेश को स्वीकार किया है। यह सच्चा संदेश हमारा हिस्सा बन गया
है और सदैव हमारे साथ रहेगा। 3पिता परमेश्वर और यीशु जो मसीह है, पिता का पुत्र है, हम पर {निरन्तर} अनुग्रह और दया करते रहेंगे और हमें शांति प्रदान
करेंगे। {वे ऐसा इसलिए करेंगे क्योंकि} वे सच्चे हैं और वे {हमें} प्रेम करते हैं।

4मैंने जान लिया है कि तुम्हारी मंडली के कुछ विश्वासी सच्चे संदेश के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं {जिसकी शिक्षा परमेश्वर ने हमें दी है}। जिससे मैं बहुत
आनन्दित हुआ हूँ। यह तो वही है जिसकी हमारे पिता ने हमें करने की आज्ञा दी है।

5और अब, हे प्रिय मण्डली, मैं तुझसे {वह करने के लिए जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है:} कहता हूँ कि हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। मैं तुम्हें यह कोई नई
बात के रूप में नहीं लिख रहा हूँ जिसकी परमेश्वर ने {हमें करने के लिए} आज्ञा दी है। इसके बजाय, हमने एक दूसरे से प्रेम करने की इस आज्ञा को तब से जाना
है जब हमने पहली बार मसीह पर विश्वास किया था। 6{परमेश्वर और एक दूसरे से} प्रेम करने का यही अर्थ होता है। हमें उसका पालन करना चाहिए जिसकी
आज्ञा परमेश्वर ने दी है। जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है, वह यह है, {एक दूसरे से प्रेम करना,} इस कारण तुम्हें यह करने की आवश्यकता है। तुमने यह तब से
सुना है जब तुमने पहली बार मसीह पर विश्वास किया था।

7मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इस संसार में बहुत से ऐसे लोग हैं जो इधर-उधर घूमते हुए, लोगों को भरमाते हैं। भरमानेवाले ये लोग इस बात का इंकार
करते हैं कि यीशु मसीह पृथ्वी पर आया और वह एक मनुष्य था। यह {शिक्षा} {वास्तविक} भरमानेवाले की ओर से आती है, जो मसीह का विरोध करता है।
8सावधान रहो ताकि तुम कहीं उस प्रतिफल को न {कहीं वे शिक्षक भरमा न दें! यदि तुम उन्हें अपने आपको भरमाने देते हो, तो तुम} खो दो जिसके लिए हमने
काम किया है। इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए चौकस रहो कि तुम पूरा प्रतिफल प्राप्त करो! 9जो लोग मसीह द्वारा दी गई शिक्षा की बातों पर विश्वास करने
और शिक्षा देने में नहीं बने रहते, वरन् दूसरी बातों पर विश्वास करते और सिखाते हैं, परमेश्वर {के साथ उनका संबंध सच्चा} नहीं है। पर जो लोग मसीह ने जो
कुछ शिक्षा दी है उस पर विश्वास करते रहते है और निरन्तर सिखाते रहते हैं, उनका {एक सच्चा संबंध} दोनों {परमेश्वर,} हमारे पिता{,} और उसके पुत्र {यीशु के
साथ} होता है। 10इस कारण जब कोई तुम्हारे पास आए जो मसीह द्वारा दी हुई शिक्षा से अलग ही सिखाए, तो उसे अपने घरों में स्वागत न करना! उसे
अभिवादन भी ना करना {या किसी भी तरह से उसकी भलाई की कामना न करना, जिससे कि तुम उसे उत्साहित न करो}। 11यदि तुम इन लोगों का
सत्कारपूर्वक अभिवादन करते हो, तो तुम उनके द्वारा किए जाने वाले बुरे कामों में उनकी मदद करते हो।

12मेरे पास और भी बहुत कुछ है जो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ। पर मैंने उन्हें तुम्हें एक पत्र में नहीं लिखने का निर्णय लिया है। इसके बजाय, मुझे आशा है कि मैं
जल्द ही तुम्हारे साथ होऊँगा और तुमसे व्यक्तिगत रूप से बात करूँगा। तब हम एक साथ मिलकर पूरी तरह से आनंदित होंगे। 13यहाँ की मण्डली में तुम्हारे
संगी विश्वासी, जिन्हें परमेश्वर ने भी चुना है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

3 यूहन्ना

Chapter 1

1तुम मुझे प्रमुख अगुवे के रूप में जानते हो। मैं तुमको यह पत्र लिख रहा हूँ, मेरे प्रिय मित्र गयुस, जिसे मैं सही मायने में प्रेम करता हूँ। 2प्रिय मित्र, मैं परमेश्वर से
माँगता हूँ कि वह ऐसा करे कि तेरे लिए सब कुछ अच्छी तरह से हो, और तू शारीरिक रूप से स्वस्थ रहे, जैसा कि तू परमेश्वर के सम्बन्ध में भी स्वस्थ है। 3मैं
जानता हूँ की तू परमेश्वर के सम्बन्ध में स्वस्थ है क्यूँकि कुछ साथी-विश्वासी यहाँ आये और मुझे बताया कि तू किस प्रकार सत्य के मार्ग पर चलता है, उन्होंने
कहा कि तू मसीह के सत्य सन्देश के अनुसार जीता है। यह मुझे बहुत आनन्दित करता है। 4मुझे यह बात बहुत आनन्दित करती है-जब मुझे कोई यह बताता है
कि जिन लोगों को मैंने मसीह का पालन करने में सहायता की है, वे ऐसी रीति से जी रहे हैं जो परमेश्वर के सत्य से मेल खाते हैं! 5प्रिय मित्र, जब भी तू साथी
विश्वासियों की सहायता करने के लिए कुछ भी करता है तो तू वफ़ादारी से यीशु की सेवा करता है, यहाँ तक कि उनकी भी जिन्हें तू नहीं जानता है, जो परमेश्वर
का कार्य करने के लिए यात्रा कर रहे हैं। 6उनमें से कुछ ने यहाँ मण्डली के सामने सूचना दी कि तूने किस प्रकार यह दिखाया है कि तू उनसे प्रेम करता है। यह
तेरे लिए एक अच्छी बात है कि तू ऐसे लोगों की उदारता से मदद करना जारी रखे ताकि इससे परमेश्वर का आदर हो।

7वे इस कारण से यात्रा कर रहे हैं कि लोगों को यीशु के बारे में बता सकें, और जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं, उन्होंने उनकी सहायता नहीं की है।
8इसलिए हम जो मसीह पर विश्वास करते हैं, उन लोगों को वह सब देना चाहिए जिसकी उन्हें आवश्यकता है तो यह इस प्रकार होगा जैसे हम उनके साथ काम
कर रहे हैं क्योंकि वे दूसरों को परमेश्वर के सच्चे सन्देश को जानने में सहायता करते हैं।

9मैंने तेरे विश्वासियों के समूह को एक पत्र लिखा था उन्हें ये बताने के लिए कि उन अन्य विश्वासियों की सहायता करें। हालाँकि, दियुत्रिफेस जो मैं कहता हूँ कुछ
भी स्वीकार नहीं करता क्योंकि वह तुम्हारे समूह पर अधिकार जमाना चाहता है। 10इसलिए जब मैं वहाँ आऊँगा तो मैं सार्वजनिक रूप से सभी को बता दूँगा
कि वह क्या करता है। वह दूसरों से झूठ बोलता है कि हम बुरे काम करते हैं। वो ऐसा इसलिए करता है ताकि जो वो कहता है उससे हमें नुक्सान पहुंचे । ये करने
के साथ ही साथ वो साथी विश्वासियों का स्वागत करने से भी मना करता है जो परमेश्वर का कार्य करने के लिए यात्रा कर रहें हैं। बल्कि वो उन्हें भी रोकता है जो
उनका स्वागत करना चाहते हैं और उन्हें मंडली से निकाल देता है।

11प्रिय मित्र, इस प्रकार के बुरे उदाहरण का अनुकरण मत कर। इसके बजाय, अच्छे उदाहरणों का अनुकरण करता रह। याद रख जो लोग अच्छे कार्य करते हैं,
वे वास्तव में परमेश्वर के हैं। परन्तु जो कोई भी वो करता रहता है जो कि बुरा है उसने कभी परमेश्वर को नहीं जाना।

12सभी विश्वासी जो दिमेत्रियुस को जानते हैं वे कहते हैं कि वह एक अच्छा मनुष्य है। जैसा वह रहता है परमेश्वर के सच्चे वचन के अनुसार तुझे यह भी दिखाता
है कि वो एक अच्छा इंसान है। हम भी यह पुष्टि करते हैं कि वह एक अच्छा मनुष्य है, और तू जानता है कि जो हम कहते हैं वो सच है।

13जब मैंने इस पत्र को लिखना आरम्भ किया, मेरे पास बहुत कुछ था जो मैं तुझे लिखने का इरादा रखता था। परन्तु मैं उसे तुझे पत्र में नहीं लिखना चाहता।
14बल्कि, मैं आशा करता हूँ कि आकर जल्दी तुझसे मिलूंगा। फिर हम एक दूसरे के साथ सीधे बात करेंगे। 15मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तेरी आत्मा को
शांतिमय बनाना जारी रखे। यहाँ के मित्र तुझे नमस्कार कहते हैं। कृपया हमारे लिए वहाँ हमारे सभी मित्रों को निजी तौर पर और उनके नाम ले कर नमस्कार
कहना।

यहूदा

Chapter 1

1{मैं,} यहूदा, जो यीशु मसीह की सेवा करता हूँ, और याकूब का भाई हूँ। {मैं लिख रहा हूँ} तुम्हें जिनको परमेश्वर ने बुलाया है, तुम्हें जिनको परमेश्वर पिता प्रेम
करता है, तुम्हें जिनको यीशु मसीह ने {अपने लिए} सुरक्षित रखा है। 2मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे प्रति परमेश्वर अपने कृपालु व्यवहार को बढ़ाएगा एवं तुम्हें
और अधिक शान्ति प्रदान करेगा तथा तुम्हें उसके प्रेम का और अधिक अनुभव कराएगा। 3{हे साथी विश्वासियों} जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, मैंने तुम्हें इस विषय में
{यह पत्र} लिखने का अपना सबसे उत्तम प्रयास किया कि कैसे परमेश्वर ने हम सब को {जो विश्वास करते हैं} बचाया। तब पर भी, {बजाए इसके यह पत्र} मुझे
तुम्हें लिखना पड़ा ताकि उन सच्ची बातों का बचाव करने के विषय में तुम से आग्रह करूँ जिन पर हम विश्वास करते हैं। {यही वे बातें हैं} जिनको परमेश्वर ने सब
कालों में उन सब लोगों को सौंपा है जिनको उसने पवित्र ठहराया है। 4{मैं तुम से ऐसा ही करने का आग्रह करता हूँ} क्योंकि कुछ मनुष्य चुपके से {तुम्हारी
सभाओं में} घुस गए हैं। {वे ऐसे मनुष्य हैं} जिनको परमेश्वर ने बहुत समय पहले से दण्ड देने के लिए चुना हुआ है। वे भक्तिहीन कामों को करते हैं। वे सोचते हैं
कि हमारा परमेश्वर लोगों को कामुकतापूर्वक अनैतिक होने की अनुमति इसलिए प्रदान करता है क्योंकि वह तो दयावन्त है। {इसके साथ ही वे} उस बात का
विरोध करते हैं जो यीशु मसीह के विषय में सत्य है, जो कि हमारा एकमात्र स्वामी है और हम पर प्रभुता करता है। 5यद्यपि तुम पहले से ही इन सब बातों को
जानते थे, मैं तुम को {उनका} स्मरण करवाने की इच्छा रखता हूँ। {स्मरण रखो} कि यीशु के {इस्राएल के} लोगों को मिस्र देश से छुड़ा लेने के पश्चात, उसने
{उनके मध्य में से} ऐसे लोगों को नाश कर दिया जिन्होंने उस पर भरोसा नहीं रखा था। 6इसके साथ ही, {कुछ} स्वर्गदूत अपने उन स्थायी पदों पर बने नहीं रहे
जहाँ पर उनके पास अधिकार था परन्तु उनको त्याग दिया। {क्योंकि उन्होंने ऐसा किया इसलिए} परमेश्वर ने उनको बन्धक बनाकर सदाकाल के लिए अंधकार
में {नरक में} डाल दिया। {परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया} ताकि उस महत्वपूर्ण दिन पर उनका न्याय करे {जिस दिन वह सब बातों का न्याय करेगा}। 7यही बात
उन लोगों के लिए भी सत्य है जो सदोम और अमोरा के नगरों में और उनके आसपास के नगरों {में रहा करते थे}। उन्होंने कामुकतापूर्वक अनैतिक रीति से वैसा
ही व्यवहार किया जैसा उन स्वर्गदूतों ने किया था। उन्होंने सब प्रकार के अनुचित यौनाचार के कामों में भाग लिया। इन {स्वर्गदूतों और मनुष्यों} को नरक की
आग में अनन्तकाल के लिए पीड़ित करने के द्वारा, परमेश्वर उन्हें एक उदाहरण ठहरा रहा है {उनके लिए जो उसे अस्वीकार कर देते हैं}। 8उसी प्रकार से, ये
{झूठे शिक्षक} ऐसे स्वप्नदर्शी हैं जो अनैतिकतापूर्ण जीवन जीने के द्वारा न केवल अपने शरीरों को दूषित करते हैं, परन्तु प्रभु के आदेशों को भी अस्वीकार करते
हैं। यहाँ तक कि वे परमेश्वर के तेजस्वी स्वर्गदूतों का भी तिरस्कार करते हैं। 9यहाँ तक कि प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल भी शैतान के विरुद्ध उस समय पर
निन्दात्मक आरोप लगाने में इतना साहसी नहीं था जब उसने उसके साथ मूसा के शव के विषय में वाद-विवाद किया था। बजाए इसके, उसने {केवल यही}
कहा, “प्रभु तुझे ताड़ना दे!” 10इसके विपरीत, ये {झूठे शिक्षक} उन आत्मिक बातों के विषय में बुरे वाक्यों को बोलते हैं जिनको वे समझते नहीं हैं। वे ऐसे
पशुओं के समान हैं जो तर्कशक्ति से सोच नहीं सकते हैं। जिन बातों को वे प्राकृतिक रूप से समझने में सक्षम हैं वे ही उनका नाश कर रही हैं। 11यह उनके लिए
कितना दुःखद है! वे कैन के जैसे कृत्य करते हैं, {जिसने अपने भाई की हत्या की थी}। उन्होंने स्वयं को उसी पाप को करने के लिए समर्पित कर दिया है जो धन
प्राप्त करने के लिए बिलाम ने किया था। परमेश्वर निश्चित रूप से उनका उसी प्रकार से नाश करेगा जैसे उसने कोरह और उन लोगों को नाश किया था जिन्होंने
{उसके साथ मूसा के विरुद्ध} बलवा किया था। 12ये लोग लज्जाहीन होकर तुम्हारे साथ खाते हैं। तुम्हारे प्रीतिभोजों में वे लोग पानी में छिपी हुई चट्टानों के
समान हैं जिनसे जहाज टकरा जाते हैं। वे केवल स्वयं की ही देखभाल करते हैं। वे लोग ऐसे बादलों के समान {निकम्मे हैं,} जिनको हवा अपने साथ बहाए ले
जाती है इससे पहले कि वे बरसें। वे लोग ऐसे पेड़ों के समान {निकम्मे हैं,} जो फसल के समय पर फल नहीं देते। {वे ऐसे पेड़ों के समान हैं} जो दो बार इसलिए
मरेंगे क्योंकि परमेश्वर उनको जड़ से उखाड़ देगा। 13वे समुद्र की प्रचण्ड लहरों के समान {अनियंत्रित} हैं। वे अपने घिनौने कृत्यों को वैसे ही प्रदर्शित करते हैं जैसे
लहरें झाग उठाती हैं। वे ऐसे तारों {के समान हैं} जो आसमान में वहाँ नहीं रहते जहाँ उन्हें रहना चाहिए। परमेश्वर उनके लिए सदाकाल का {नरक का} घना
अंधकार आरक्षित कर रहा है। 14यहाँ तक कि हनोक, जो आदम के वंशजों के लोगों की पीढ़ी में सातवाँ व्यक्ति था, उसने भी इन झूठे शिक्षकों के विषय में बात
की थी जब उसने कहा: “इसे ध्यानपूर्वक सुनो: निश्चित रूप से प्रभु अपने असंख्य पवित्र {स्वर्गदूतों} के साथ आएगा। 15{वे आएँगे} सब का न्याय करने और उन
सब को उनके अभक्ति के कामों के लिए डाँटने जो उन्होंने भक्तिहीन रीतियों से किए हैं, और उन सब कठोर अपमानों के लिए जो यीशु के विरुद्ध इन लोगों ने
बोले हैं, जो पाप करते हैं और परमेश्वर का अनादर करते हैं।” 16ये {झूठे शिक्षक} {स्वयं ही} कुड़कुड़ाते हैं और {दूसरों से} शिकायत करते हैं। वे अपनी पापमय
अभिलाषाओं के अनुसार जीवन जीते हैं और अपनी ही बड़ाई करते हैं। वे जो चाहते हैं उसे {उनसे} पाने के लिए वे लोगों की चापलूसी करते हैं। 17परन्तु तुम {हे
साथी विश्वासियों} जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, स्मरण रखो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों ने बहुत समय पहले कहा था। 18{स्मरण रखो} कि उन्होंने तुम से
कहा था, “अन्त के दिनों में {यीशु की वापसी से पहले,} ऐसे लोग होंगे जो {उन सच्ची बातों का जो परमेश्वर ने हम को बताई हैं} ठट्ठा करेंगे। {वे} अपनी उन
पापमय अभिलाषाओं के अनुसार जीवन जीएँगे जिनसे परमेश्वर का अनादर होता है।” 19ये {ठट्ठा करने वाले} वे लोग हैं जो विश्वासियों को एक दूसरे के प्रति
क्रोध दिलाते हैं। वे अपनी प्राकृतिक प्रवृत्ति {के अनुसार जीवन जीते हैं}। उनके भीतर {पवित्र} आत्मा वास नहीं करता है। 20तब पर भी, तुम {हे साथी
विश्वासियों} जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, परमेश्वर में अपने विश्वास को बढ़ाने के द्वारा और पवित्र आत्मा की सहायता से प्रार्थना करने के द्वारा, 21उस रीति से जीवन
व्यतीत करते रहो जो तुम को परमेश्वर के प्रेम को अनुभव करने में सक्षम करता है। {ऐसा ही करो} जब तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा सहित वापसी की
आशा करते हो, {जिसका परिणाम होगा} {उसके साथ} अनन्तकाल का जीवन। 22और उनके प्रति कृपालु बनो जो परेशानी में हैं {इस विषय में कि उन्हें किस
पर विश्वास करना चाहिए}। 23परन्तु शीघ्रतापूर्वक अन्य लोगों को ऐसे बचाओ, जैसे कि तुम उन को नरक की आग में से बाहर निकाल रहे हो। और कुछ अन्य
लोगों पर दया करो, परन्तु उनके प्रति ऐसे सावधान रहो, जैसे कि उनके वस्त्रों को छू लेने भर से ही तुम पापी हो जाओगे। 24परमेश्वर तुम को पापी जीवन की
ओर लौट जाने से रोकने में सक्षम है। {वह इस बात में भी सक्षम है} कि तुम को पापरहित करके अपनी महिमामय उपस्थिति में ले जाए। बड़े आनन्द के साथ
{तुम वहाँ पर खड़े होगे}। 25केवल एक ही परमेश्वर है। हमारे प्रभु यीशु मसीह ने जो {हमारे लिए किया} उसके परिणामस्वरूप उसने हमारा उद्धार किया है। मैं

प्रार्थना करता हूँ कि हर एक जन यह जान ले कि परमेश्वर महिमामय, प्रतापी, सामर्थी है, और बड़े अधिकार के साथ प्रभुता करता है। समय के आरम्भ के पहले से {वह ऐसा ही था}। आज भी {वह ऐसा ही है}, और सर्वदा {वह ऐसा ही रहेगा}! वास्तव में ऐसा ही हो!

योगदानकर्ताओं

Hindi GST - Greek Aligned योगदानकर्ताओं

Acsah Jacob
Amos Khokhar
Dr. Bobby Chellapan
Hind Prakash
Jinu Jacob
M.V Sunny
Robin
Vipin Bhadran
Zipson George